श्री विजयलक्ष्मीसूरिविरचित

श्री

उपदेश प्रासाद भाषांतर.

विभाग ४ थो.

स्थंभ १५–१६–१७–१८–१९

(व्याख्यान २११ थी २८५)

जिनपूजा, दान, शियळ, विवेक, व्रतपालन, सत्संग, अंतरंग शत्रुओ, लेश्या
पांच कारण, नव नियाणा, नव निन्हवो, दश प्रत्याख्यान, चार कषाय
कषायपिंड, मिथ्यात्व, पर्वोनी कथाओ, अने ज्ञानाचारादि आचारोनु
स्वरूप, रहस्य, दृष्टांता विगरे

जैनवधुओने खास उपयोगी होवाथी संस्कृत गद्यपद्यात्मक
ग्रंथनुं शुद्ध गुर्जरगिरामां भाषांतर करावी
तपासी शोधीने

प्रसिद्ध कर्ता

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा

भावनगर.

आवृत्ति बीजी

विक्रम संवत १९८१ वीर संवत २४५१ शाके १८४६

किं रु. २–८–०

पालीताणा–बहादुरसिंहजी प्रीन्टींग प्रेसमां शा अमरचंद बेहेचरदासे छाप्यो

प्रथमावृत्तिनी प्रस्तावना

आ उपदेश प्रासाद ग्रंथ खरेखर प्रासाद एटले महेलनी गरज सारे तेवो छे. महेलनी अंदर जेम जेम उंचे चढीए तेम तेम हवा प्रकाश विशेष तेमज स्वच्छता अने सुंदरता पण विशेष होय छे, तेम आ ग्रंथमां कर्त्ता श्री विजयलक्ष्मीसूरिए आगळ आगळ आत्माने विशेष विशेष हितकारक तेमज बुद्धिना विषयमां पण आगळ वधेला मनुष्यो समजीने तेनुं रहस्य धारण करी शके एवा व्याख्यानो दाखल कर्यां छे. कर्त्ताए अनेक ग्रंथोनुं वांचन बहु सारी रीते करेलुं हशे एम आ संग्रह स्पष्ट बतावी आपे छे कथानुयोग तो तेमना हृदयमां रमीज रहेलो हशे एम जणाय छे दरेक व्याख्यानमां तेनी अंदर लीधेला विषयने अनुकूळ कथाओ दाखल करी ते विषयने बहुज दृढ करेलो छे. वांचनार बंधुओने गमत साथे ज्ञान मळे तेवा सरल अने सुंदर उपायनी कर्त्ताए योजना करेली जणाय छे

आ विभागनी अंदर अमे १५ माथी १९ मा सुधी पांच स्थंभोनु एटले ७९ व्याख्यानोनु भाषांतर आप्युं छे. आ व्याख्यानो प्रथमना स्थंभोनी अंदरना व्याख्यानो करता लगभग दोढा मोटा होवाथी आ विभाग बीजा त्रीजा विभाग करतां लगभग दोढो थयो छे दरेक व्याख्यानमां जे जे सूत्र के ग्रंथोनी सहाय कर्त्ताए आपी छे ते अमे मूळ अने अर्थ सहित दाखल करेलो छे के जेथी वाचकोने ते शोधवाना प्रयासमां उतरवुं न पडे. भाषामां कहेला दुहा चोपाइ पण तेना अर्थ साथे लखीने समजाव्या छे. टुंकामां दरेक रीते आ विभाग वधारे उपयोगी थइ पडे तेवो प्रयत्न करेलो छे.

आ विभागनी अदर आपवामां आवेला ७९ व्याख्यानोमां एटला बधा जुदा जुदा विषयो कर्त्ताए दाखल करेला छे के ते दरेकनां नाम मात्र लखतां पण अनुक्रमणिका जेटलुंज पूर थइ जाय तेम छे, तेथी तेने माटे आ साथे आपेली अनुक्रमणिकाज साद्यंत वांची जवानी भलामण करवामां आवे छे; परतु तेनी अंदर खास ध्यान आपवा लायक विषयो शा शा छे तेनु मात्र टुंकामां दिग्दर्शन करावीए छीए.

व्याख्यान २१५-२२५ ने २५१ मां ज्ञानपंचमी, कार्तिकी पुनम अने मौन एकादशी ए त्रण पर्वनी कथाओ ते पर्वनुं आराधन करनारनां दृष्टांतो सहित आपवामां आवेलो छे. व्याख्यान २१८ मां धन्नानु चरित्र आपेलुं छे के जे शालिभद्रना बनेवी थता हता. आ चरित्र खास छे. व्याख्यान २१९ मां विजयशेठ ने

विजयाराणीनो जेवाज थयेला बीजा महा पुरुष—अपूर्व ब्रह्मचारी जिनदास ने सौभाग्यदेवीनु टुकु चरित्र आपेलु छे के जे दपनीने जमाडवानु फळ, लाख स्वधर्मी वधुने जमाडवा जेटलु श्री गुरुमहाराजाए कहेलु छे व्याख्यान २२० मा कपिल कवळीनु चरित्र खास लोभवृद्धिने अगे वाचवा योग्य छे. व्याख्यान २२४ मा थावच्चापुत्र, शुकाचार्य ने सेलकाचार्यनु चरित्र छे, तेमां थावच्चापुत्र आचार्य ने शुक परिव्राजकनो सवाद खास वाचवा लायक छे. व्या २२९ थी २३२ ना चार व्याख्यान पाच कारणोनी सिद्धिना सवधना छे ए जरुर वाचवा योग्य छे. ए वाचवाथी कर्म, उद्यम के भावीभाव विगेरेनो एकांत पक्ष निरास पामी कोइ पण कार्य पाच कारणोवडेज सिद्ध थाय छे, एम हृदयमा ठसी शके छे. व्याख्यान २३३ मा विद्वानोनी वाणीनो विलास वाचवा लायक छे. तेनी अदर निर्गुणी पुरुष तुच्छ उपमाने पण योग्य नथी एम सिद्ध कर्यु छे व्याख्यान २३८–३९–४० मां ७ मा ८ मा ने ९ मा ए त्रण निह्नवो (गोष्ठामाहिल्ल, दिगबर ने ढुढकमति) नां चरित्रो उत्पत्ति विगेरे छे उपरांत व्याख्यान २६२–२६३–२६८ ने २६९ मां ३ जा, ६ ठा, ५ मा ने ४ था निन्हवनां चरित्रो छे ते दरेक वाचवा लायक छे. फक्त पहेला ने बीजा निह्नवनी कथाज आनी अंदर नथी. साते निह्नवना नाम विगेर व्याख्यान २६२ मा आपेला छे. व्याख्यान २४१ थी २४५ चार कषायो उपर छे तेनी अदर ते ते कषायोथी दुःख पामेला अमरदत्त ने मित्रानंद, बाहुबलि, अपाढभूति अने सागरश्रेष्ठी तथा सुभूम चक्रीना दृष्टांतो छे. व्याख्यान २४६–४७ ने ४१मा क्रोधपिंड, मानपिंड, मायापिंड ने लोभपिंड मुनिने अग्राह्य छे एम सिद्ध करी तेनी उपरना दृष्टांतो आपेला छे व्याख्यान २४६ मामा छ प्रकारना स्त्रीने आधीन पुरुषोनु स्वरूप बताववामा आव्यु छे, ते वाचवा लायक छे व्याख्यान २४८ ने २४९ दश प्रकारना प्रत्याख्यान संबंधी छे. ते प्रत्याख्याननी शुद्धिना इच्छक बधुओए खास वाचवा लायक छे व्याख्यान २४३ मा मिथ्यात्वना तमाम भेदोनु स्पष्टीकरण करेलु छे. मिथ्यात्वने विषवत् समजी तेने तजवा इच्छनार आ स्वरूप खास ध्यानमा राखवा लायक छे - व्याख्यान २९६ मांथी ज्ञानाचारादि आचारोनुं स्वरूप शरु करवामा आव्यु छे पाछळना बने स्थभ (३० व्याख्यान) ते सबधीज छे तेमा पण हजु ज्ञानाचार, दर्शनाचार ने चारित्राचारनु स्वरूप पूर्ण आवेलु छे, तपाचारनु तो अधुरु छे. ते हवे पछीना विभागमां आवनार छे, अने वीर्याचारनु तो बीलकुल बाकीमाज छे, ते पण हवे

पछीना विभागमां आवनार छे. आ ३० व्याख्यान पैकी १२ ज्ञानाचार संबंधी. १० दर्शनाचार संबधी, ५ चारित्राचार संबंधी ने ३ तपाचार संबंधी छे. तेमां तपाचारना बार भेदो पैकी प्रथमना त्रण भेदनु स्वरूप आपेलु छे. आ ३० व्याख्यानोनी अंदर अनेक हकीकतो खास ध्यान आपवा लायक समाववामा आवी छे व्या० २६५ मां कुंडलिक श्रावकनु दृष्टांत ने व्या० २७० मा भोगसार श्रेष्टीनु दृष्टांत तेमज व्या० २७१ मां लेप श्रेष्टीनु दृष्टांत वाचवा लायक छे. लेप श्रेष्ठीना दृष्टांतमा त्रण प्रकारना (दुःखगर्भित, मोहगर्भित, ज्ञानगर्भित) वैराग्यनु स्वरूप सारी रीते समजावेलु छे. व्या० २७५ मां धर्मनु स्वरुप, पाच प्रकारना अनुष्ठान विगेरे खास वांचवा लायक छे. चारित्रना इच्छक मुनिमहाराजाओए पण चारित्राचारना स्वरूपवाळा ५ व्याख्याननी अंदर समिति गुप्तिनु बतावेलु स्वरूप ने तेनी उपर आपेलां दृष्टांतो वांचवा लायक छे. व्या० २७८ मां स्त्रीचरित्र बतावी आप्युं छे. जुदा जुदा अनेक व्याख्यानोमा कुमारपाळ महाराजा अने श्री हेमचंद्राचार्यनो संबंध आवेलो छे. एकंदर रीते आ आखो विभाग जैनशास्त्रना रहस्योथी भरपूर होवाने लीधे ते साद्यंत वांचवा लायक छे. छतां मात्र नमुना तरीके केटलाक व्याख्यानोनी टुंकी हकीकत अहीं आपी छे.

आ दरेक व्याख्याननी अंदर आपेली दरेक नानी मोटी कथाओ रसिक होवाथी वांचनां प्रीति उत्पन्न करे तेवी छे. भाषांतर करवामा तेनी रसिकता जाळवी राखवा उपर पूरतु ध्यान आपवामा आव्यु छे अमे अगाउ जणावी गया छीए ते प्रमाणे आ ग्रंथनी जेटली प्रतो मळी शके छे ते बधी मायें एटली बधी अशुद्ध होय छे के तेनुं भाषांतर कोइना विश्वास उपर करावीने छपावी शकाय तेम नथी तेथी कोइ पण प्रकारनी भूल दृष्टिगोचर थाय तो तेने माटे क्षमा करी अमारी तरफ लखी मोकलवा कृपा करवी के जेथी तेने माटे उचित उपाय लेवामा आवशे

आनी पछीनो पांचमो विभाग के जेनी अंदर आ ग्रंथ पूर्ण थवानो छे ते हवे थोडा वखतमा बहार पाडवामा आवशे त्यारपछी पहेलो विभाग के जेनी अंदर चार स्थंभनु भाषांतर घणी भूलोवाळु प्रगट थयेलुं छे, वळी तेनी कापी हालमा मळी पण शकती नथी, ते अमारा तरफथी खास भाषांतर करावी अक्षरशः तपासीने प्रगट करवामां आवशे. ते कार्य पण थोडा वखतमांज जैन बंधुओनी समक्ष रजु करवा इच्छा छे के जेथी पाने विभाग के जेनी अंदर एक वर्षना दिवसो जेटला (३६०) व्याख्यानो छे, अने जेमा सुमारे ५०० उपरांत नानी मोटी कथाओ छे, तेटलो अपूर्व संग्रह एक साथे जैन बंधुओने हस्तगत थइ शके

विजयाराणीनी जेवाज थयेला बीजा महा पुरुष—अपूर्व ब्रह्मचारी जिनदास ने सौभाग्यदेवीनु टुकु चरित्र आपलु छे के जे टपनीने जमाडवानु फळ लाख स्वधर्मी बधुने जमाडवा जेटलु श्री गुरुमहाराजाए कहेलु छे व्याख्यान २२० मा कपिल केवळीनु चरित्र खास लोभवृद्धिने अगे वाचवा योग्य छे. व्याख्यान २२४ मा थावच्चापुत्र, शुकाचार्य ने सेलकाचार्यनु चरित्र छे, तेमा थावच्चापुत्र आचार्य ने शुक परिव्राजकनो सवाद खास वाचवा लायक छे. व्या २२९ थी २३२ ना चार व्याख्यान पाच कारणोनी सिद्धिना सबधना छे ए जरुर वाचवा योग्य छे. ए ग्रंथवाथी कर्म, उद्यम के भावीभाव विगेरेनो एकांत पक्ष निरास पामी कोइ पण कार्य पाच कारणोवडेज सिद्ध थाय छे, एम हृदयमा ठसी शके छे व्याख्यान २३३ मा विद्वानोनी वाणीनो विलास वाचवा लायक छे. तेनी अदर निर्गुणी पुरुष तुच्छ उपमाने पण योग्य नथी एम सिद्ध कर्यु छे व्याख्यान २३८–३९–४० मा ७ मा ८ मा ने ९ मा ए त्रण निह्नवो (गोष्ठामाहिल, दिगबर ने ढुढकमति) ना चरित्रो उत्पत्ति विगेरे छे उपरात व्याख्यान २६२–२६३–२६८ ने २६९ मां ३ जा, ६ ठ्ठा, ५ मा ने ४ था निन्हवनां चरित्रो छे ते दरेक वाचवा लायक छे. फक्त पहेला ने बीजा निह्नवनी कथाज आनी अंदर नथी. साते निह्नवना नाम विगेरे व्याख्यान २६२ मा आपेला छे व्याख्यान २४१ थी २४५ चार कषायो उपर छे तेनी अदर ते ते कषायोथी दुःख पामेला अमरदत्त ने मित्रानंद, बाहुबलि, अषाढभूति अने सागरश्रेष्ठी तथा सुभूम चक्रीनां दृष्टांतो छे. व्याख्यान २४६–४७ ने ४३मा क्रोधपिंड, मानपिंड, मायापिंड ने लोभपिंड मुनिने अग्राह्य छे एम सिद्ध करी तेनी उपरना दृष्टातो आपेला छे व्याख्यान २४६ मामा छ प्रकारना स्त्रीने आधीन पुरुषोनु स्वरूप बतावरामा आव्यु छे, ते वांचवा लायक छे व्याख्यान २४८ ने २४९ दश प्रकारना प्रत्याख्यान संबंधी छे. ते प्रत्याख्याननी शुद्धिना इच्छक बधुओए खास वाचवा लायक छे व्याख्यान २४३ मा मिथ्यात्वना तमाम भेदोनु स्पष्टीकरण करेलु छे. मिथ्यात्वने विषवत् समजी तेने तजवा इच्छनारे आ स्वरूप खास ध्यानमा राखवा लायक छे. व्याख्यान २५६ मांथी ज्ञानाचारादि आचारोनु स्वरूप शरु कर्वामा आव्यु छे पाछळना बने स्थभ (३० व्याख्यान) ते सबधीज छे तेमा पण हजु ज्ञानाचार, दर्शनाचार ने चारित्राचारनु स्वरूप पूर्ण आवेलु छे, तपाचारनु तो अधुरु छे ते हवे पछीना विभागमा आवनार छे, अने वीर्याचारनु तो बीलकुल बाकीमाज छे, ते पण हवे

पछीना विभागमां आवनार छे. आ ३० व्याख्यान पैकी १२ ज्ञानाचार संबंधी, १० दर्शनाचार संबंधी, ५ चारित्राचार संबंधी ने ३ तपाचार संबंधी छे. तेमां तपाचारना बार भेदो पैकी प्रथमना त्रण भेदनु स्वरूप आपेलु छे. आ ३० व्याख्यानोनी अंदर अनेक हकीकतो खास ध्यान आपवा लायक समाववामां आवी छे व्या० २६५ मां कुंडलिक श्रावकनु दृष्टांत ने व्या० २७० मा भोगसार श्रेष्ठीनुं दृष्टांत तेमज व्या० २७१ मां लेप श्रेष्ठीनु दृष्टांत वांचवा लायक छे. लेप श्रेष्ठीना दृष्टांतमा त्रण प्रकारना (दुःखगर्भित, मोहगर्भित, ज्ञानगर्भित) वैराग्यनु स्वरूप सारी रीते समजावेलु छे. व्या० २७५ मां धर्मनु स्वरूप, पांच प्रकारनां अनुष्ठान विगेरे खास वांचवा लायक छे. चारित्रना इच्छक मुनिमहाराजाओए पण चारित्राचारना स्वरूपवाळा ५ व्याख्याननी अंदर समिति गुप्तिनुं बतावेलु स्वरूप ने तेनी उपर आपेलां दृष्टांतो वांचवा लायक छे व्या० २७४ मां स्त्रीचरित्र बताव्यु आव्यु छे. जुदा जुदा अनेक व्याख्यानोमां कुमारपाळ महाराजा अने श्री हेमचंद्राचार्यनो संबंध आवेलो छे. एकंदर रीते आ आखो विभाग जैनशास्त्रना रहस्योथी भरपूर होवाने लीधे ते साद्यंत वांचवा लायक छे. अत्रे मात्र नमुना तरीके केटलाक व्याख्यानोनी टुंकी हकीकत अहीं आपी छे.

आ दरेक व्याख्याननी अंदर आपेली दरेक नानी मोटी कथाओ रसिक होवाथी वांचना प्रीति उत्पन्न करे तेवी छे. भाषांतर करवामा तेनी रसिकता जाळवी राखवा उपर पूरतु ध्यान आपवामा आव्यु छे. अमे अगाउ जणावी गया छीए ते प्रमाणे आ ग्रंथनी जेटली प्रतो मळी शके छे ते तथी मावे एटली बधी अशुद्ध होय छे के तेनुं भाषांतर कोइनां विश्वास उपर करावीने छपावी शकाय तेम नथी, तेथी कोइ पण प्रकारनी भूल दृष्टिगोचर थाय तो तेने माटे क्षमा करी अमारी तरफ लखी मोकलवा कृपा करवी के जेथी तेने माटे घटित उपाय लेवामा आवशे

आनी पछीनो पांचमो विभाग के जेनी अंदर आ ग्रंथ पूर्ण थवानो छे ते हवे थोडा वखतमा बहार पाडवामा आवशे त्यारपछी पहेलो विभाग के जेनी अंदर चार स्थंभनु भाषांतर घणी भूलोवाळु प्रगट थयेलुं छे, वळी तेनी कापी हालमां मळी पण शकती नथी, ते अमारा तरफथी खास भाषांतर करावी अक्षरशः तपासीने प्रगट करवामां आवशे. ते कार्य पण थोडा वखतमां जैन बंधुओनी समक्ष रजु करवा इच्छा छे के जेथी पांचे विभाग के जेनी अंदर एक वर्षना दिवसो जेटला (३६०) व्याख्यानो छे, अने जेमा सुमारे ५०० [illegible] मोटी कथाओ छे, तेटलो अपूर्व संग्रह एक साथे जैन बंधुओने ५

आ विभाग बहार पाडता बहु लांबो वखत व्यतीत थयेलो छे, कारण के तेने बे प्रेसोमा उपाडीने पूरो करवो पड्यो छे प्रथमना ३० फारमो मुंबइमा जगदीश्वर प्रेसमा छपाव्या छे, तेमा तमणे वखत घणो काढ्यो अने पाछळनो भाग ताकीदे पूरो करी आपे तेम न लाग्युं, तेथी पाछळनो आ विभाग भावनगर आनंद प्रीन्टींग प्रेसमा छपावी ताकीदे संपूर्ण करवामा आवेलो छे हवे पछीना विभागमा तेवो विलंब थवानो बीलकुल संभव नथी

आ विभाग प्रथमना ३ विभागो करता बहु वधो जवाथी किंमतमा काइक वधारो करवो पड्यो छे, परतु ते प्रयास अने खरचादिकनु प्रमाण गणता वधारे नथी, एम सहजे समजी शकाय तेवु छे

आ विभागमां आपेला अमूल्य रहस्य विगेरेनु दिग्दर्शन करावी आ प्रस्तावना समाप्त करवामा आवे छे, ते साथे आशा राखवामा आवे छे के जो आ साथे आपेली अनुक्रमणिका साद्यंत वाचवामा आवशे, तो पछी आ ग्रथनी अमूल्यतानुं स्वयमेव ज्ञान थशे, अने तेथी ग्रंथ वाचवा सर्वे ललचाशे के जेथी अमारो प्रयास अवश्य फळिभूत थशे तथास्तु

संवत् १९६५ }
अषाड शुदि १५ }

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा

भावनगर

बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना

प्रथमावृत्ति करता आ आवृत्तिमा विशेष फेरफार करवामा आव्यो नथी. मात्र सहज सुधारोज करवामा आव्यो छे खास वाचवा लायक छे ते विषे उपरनी हकीकत वाचवाथीज असर थाय तेम होवाथी फरी लखेल नथी कागळने छपामण विगेरेना भाव वधी जवाथी किंमतमा वधारो करवो पड्यो छे परतु ते वाचीने सार ग्रहण करवाथी जणाय तेम नथी

संवत् १९८१ }
श्रावण शुदि १५ }

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा.

भावनगर

श्री उपदेशप्रासाद भाषांतर भाग ४ थो.

स्थंभ १५ थी १९ ना

व्याख्यान २११ थी २८५ सुधीनी

अनुक्रमणिका

स्थंभ १५ मो

स्थंभ १६ मो

स्थंभ १७ मो

स्थंभ १७ मो.

१९ मो स्थंभ संपूर्ण



१९ मो स्थंभ संपूर्ण



श्री उपदेश प्रासाद भाषांतर.

भाग ४ थो

स्थंभ १५ मो.

व्याख्यान २११ मुं.

(जुहारनु स्वरूप)

" बेसते वर्षे परस्पर जुहार करवाना रिवाजनी उत्पत्ति. "

अन्योऽन्यं जनजोत्कारा जवंति प्रतिपत्प्रगे ।
तत्स्वरूपं तदा पृष्ट पुनर्जगाद साधुप ॥ १ ॥

भावार्थ—पडवाने दिवसे प्रातःकाले लोको परस्पर जुहार करे छे, तेनु स्वरूप राजाए पूछयुं, एटले गुरुमहाराज फरीने बोल्या के—

हे संप्रतिराजा ! परस्पर जुहार करवामां एक हेतु ए छे के **गौतम गणधरने** अमावास्या (दीवाळी) नी रात्रीना प्रांत भागे केवळज्ञान उत्पन्न थयु, तेथी प्रभाते नवा राजानी जेम तेने सर्व गणधरोए आवीने वांद्या, तेथी प्रणामनो विधि शरु थयो. हवे बीजो हेतु सांभळोः— पूर्वे अवंती नगरीमा धर्म नामे राजा हतो. तेने नमुचि नामनो प्रधान हतो. एक दिवसे ते नगरीमां मुनिसुव्रतस्वामीना शिष्य श्रीसुव्रतसूरि पधार्या. तेने वंदन करवा माटे नमुचि प्रधानने साथे लइने श्री धर्मराजा त्यां गयो. देशना समये ते सचीवे आ प्रमाणे वाद कर्यो के "आ सकळ विश्व स्वप्न जेवुं छे, जीव नाश पामवाथी सर्व नाश पामे छे, जीव कांइ परलोकमा गति पामतो नथी, अर्थात् जीव ते पंचभूतना पिंडनुंज नाम छे, अने परलोक नथी." आ प्रमाणे पोताना मतने स्थापन करता सचीवने सूरिना शिष्ये जीती लीधो. त्यार पछी क्रोधने वश थइने रात्रिने वखते हाथमां तरवार लइने ते निर्दय सचीव ते मुनिने हणवानी इच्छाथी तेनी पासे गयो. ते वखत शासनदेवीए तेने स्तभित कर्यो. जाणे चित्रमां आळेख्यो हाय तेवी स्थितिमां प्रातःकाळे राजा विगेरए तेने जोयो. पछी शासनदेवीने अने गुरुने खमावीने राजाए तेने मुक्त कराव्यो. पौरलोकोए तेने घणो धिक्कार्यो, तेथी लज्जा पामीने ते नगरमांथी नीकळी नमुचि भमतो भमतो

हस्तिनापुर गयो. त नगरमा पद्मोत्तर नामे राजा हतो. तेने उत्तम शियळथी शोभित ज्वालादेवी नामे पट्टराणी हती. तेओने विष्णुकुमार अने महापद्म नामे बे पुत्रो हता. राजाए विष्णुकुमारने राज्यपद आप्यु, अने नाना पुत्रने यौवराज्यपद आप्यु.

अन्यदा नमुचि मधाने पोतानी कळाकुशळता युवराजने देखाडी, तेथी हर्ष पामीने तणे नमुचिने पोतानु प्रधानपद आप्यु. एक वखत ते नमुचिए सिंहरथ नामना मोटा योद्धाने जीत्यो, तेथी संतोष पामेला युवराजे तेने वरदान आप्यु. नमुचिए ते वरदानने थापण रूप राखाव्यु. एक दिवसे ज्वालादेवीए हर्षथी रथयात्रा करवानी इच्छावडे सुवर्ण अने रत्नोथी शोभित जैनरथ कराव्यो ते वखते तेनी शोक इर्ष्याथी ब्रह्मरथ कराव्यो. पछी ते बने रथो रस्तामा परस्पर सामा मळ्या. ते बनेनो वादविवाद थयो. बने पक्षमाथी कोइ रथ खेंचनार पुरुषो बीजा रथने मार्ग आपी आगळ चाल्या नहीं, त्यार क्लेशनी निवृत्तिने माटे राजाए बने रथने पाछा वळाव्या, एटले महापद्म आवी रीते पोतानी मातानु अपमान करलु जोइने पोताना मनमा दुःखी थयो अने परदेश चाल्यो गयो. ते अनुक्रमे चक्रवर्ती योग्य समृद्धि मेळवीने जन्मभूमिमा आव्यो. तेना पिताए मोटा उत्सवथी तेने पुरमा प्रवेश कराव्यो. पछी बत्रीश हजार राजाओए बार वर्ष सुधी महापद्मनो राज्याभिषेक कर्यो

त्यार पछी विष्णुकुमार सहित पद्मोत्तर राजाए सुव्रताचार्य पासे दीक्षा लीधी अने पोते स्वर्गे गया विष्णुकुमारने छ हजार वर्ष सुधी तीव्र तप करवाथी वैक्रियादिक अनेक लब्धिओ प्राप्त थइ.

महापद्म राजाए पोतानी मातानो रथयात्रानो मनोरथ मोटा ओछव-पूर्वक पूर्ण कर्यो. त्यार पछी पोताना पाप नाश करवा माटे माताना कहेवाथी समग्र पृथ्वीने जिनेश्वरोना चैत्योथी भूषित करी.

एकदा सुव्रताचार्य हस्तिनापुरमा घणा साधु सहित चातुर्मासनो अभिग्रह धारण करीने रह्या, त वखते पूर्वनु वैर संभारीने नमुचिए चक्री पासे पोतानु वरदान माग्यु क "हे राजेंद्र! कार्तिक मासनी पूर्णिमा सुधी मने छ खंडनु राज्य आपो." राजाए तेने सर्व राज्य सोंपी दीधुं अने तेटला वखतने माटे पोते अंतःपुरमां रह्या.

त्यार पछी निरंकुशपणे सर्व धर्मनो द्वेषी नमुचि छ खंड राज्यनु पालन करवा लाग्यो. समग्र पृथ्वीनो नमुचि नवो राजा थवाथी सर्व राजाओए भेटणा आपीने

तेनी आज्ञा अंगीकार करी. पछी नमुचिए जीवहिंसावाळो यज्ञ आरभ्यो. सर्व ब्राह्मणो आशीर्वाद आपीने तेना यज्ञकर्मनी प्रशंसा करवा लाग्या. ते वखते तेणे सुव्रताचार्यने बोलावीने कह्युं के-" तमो मुंडाओने मुकीने बीजा सर्व वेषधारीओ अने ब्राह्मणो मने चक्रवर्ती तथा यज्ञरूप धर्मकार्य करनार जाणीने नमे छे अने प्रशंसा करे छे तमे तेम करता नथी, तो शुं तमे माराथी पण मोटा छो? माटे मारी पृथ्वीमां कोई पण साधुए रहेवु नहि, जो मारी भूमिमां सात दिवसथी वधारे कोई साधु रहेशे तो तेमने हुं मारी नाखीश, तेमा मने दूषण आपशो नहीं." आ प्रमाणे साभळीने नगरना लोकोए तेने साम वाक्योथी समजाव्यो, पण तेणे पोतानो आग्रह छोड्यो नहीं, त्यार आचार्यमहाराजे विचार्युं के "आनु राज्य तो सर्व स्थळे छे, तेथी अमे चोमासाना समयमां सात दिवसमां क्यां जइए?" ए प्रमाणे विचारीने तेणे बीजा साधुओने पूछ्युं के "आमा कोई गगनगामिनी लब्धिवाळो छे के जे मेरुपर्वतना शिखर उपर रहेला विष्णुकुमार मुनिने अहीं बोलावी लावे?" एक शिष्ये पोतानी तेवी शक्ति जणावी, अने गुरुनी आज्ञा लइने ते मेरुपर्वतपर गया विष्णुकुमार मुनिए चोमासामां तेने अकस्मात् आववानुं कारण पूछ्युं, एटले तेणे यथार्थ सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी विष्णुमुनि ते साधुनी साथे नमुचिनी सभामा आव्या. त्या एक नमुचि विना सर्व राजाओए तेमने वंदना करी. पछी विष्णु मुनिए नमुचिने कह्यु-" हे राजन! एक स्थाने चोमासुं रहेवाना अभिग्रहवाळा मुनिओ हमणा क्यां जशे? माटे तेमने रहेवा सारु केटलीक पृथ्वी आपो." नमुचिए त्रण पगलां पृथ्वी आपवा कह्युं. ते सांभळीने क्रोधातुर थयेला विष्णु मुनिए वैक्रिय लब्धिथी लाख योजन प्रमाण शरीर विकुर्वीने एक पग पूर्व दिशानी जंबूद्वीपनी जगती उपर अने बीजो पग पश्चिम दिशानी जगती उपर मुकीने कह्यु के-" हे पापी! हवे त्रीजो पग मुकवानी जग्या क्यां आपे छे?" ते सांभळीने भयभ्रांत थयेलो नमुचि मौन रह्यो, एटले विष्णुमुनिए त्रीजु पगलु नमुचिना पृष्ठ उपर मुक्यु, तेथी जेम त्रिविक्रमे बलीराजाने पातालमां पेसाडी दीधो हतो, तेम ते नमुचि पण द्रव्यथी अने भावथी बने प्रकार पातालमां गयो. ते समये पर्वतो पण कपवा लाग्या, ग्रहो भयभीत थया, अने इंद्रादिक देवो पण "आ शुं?" एम सभ्रांत थई गया. पछी अवधिज्ञानवडे तेनु कारण ... इंद्रे विष्णुमुनिना क्रोधने शांत करवा माटे

१ द्रव्यथी शरीर ... थी मरीने नानमां नरके गयो

संगीत जाणनारा गंधर्वोने मोकल्या. तेओए मुनिना कर्ण पासे शांतता रूप अमृतमय गीतनृत्यनो आरंभ कर्यो, तेथी मुनिनो कोपाग्नि शांत थयो, अने तेओ मूळ स्वरूप स्थित थया. महापद्म चक्री पण लज्जा सहित आवीने नम्यो. तेने मुनिए ओळभो दीधो के "तुं राज्य पाळता छता शासननी आवी हीलना अने पीडा थाय, तो पछी बीजा क्षुद्र राजाओना राज्यमां तेम थाय तो तेनो शो दोष ?" इत्यादिक चक्रवर्तीने उपदेश आपीने आचार्य पासे आवी यथार्थ कहेवावडे आलोचना करी, अने प्रायश्चित्त लइने प्रतिक्रमण कर्युं. आ ठेकाणे शासननी भक्तिने माटे तेमणे कर्युं छे तेथी तेमने काइ दोष नथी, तोपण सज्झायध्यानादिकमां किंचित् भ्रंशत्व[1] अने विभाव[2] प्रसंगत्व थवाथी ते गुरुनी समक्ष ईर्यापथिकि पडिकमवावडे आलोच्युं. अंते विष्णुमुनि मोक्षगति पाम्या.

आ प्रमाणे महा उत्पात शांत थवाथी जाणे फरीथी जन्म अने चैतन्य पाम्या होय तेम सर्व मनुष्योए शुभ वस्त्र अन्नपान विगेरे ग्रहण कर्यां अने परस्पर जुहार कर्या. ते उपरथी मनुष्यो दर वर्षे पडवाने दिवसे उत्तम वस्त्र, अन्न, पान, जुहार अने घरनी शोभा विगेरे महोत्सव करे छे.

जे साधुओनी निंदा करे छे ते मनुष्य छता पण पशु समानज छे, तेथु सर्व स्थाने प्रसिद्धिमां लाववा माटे अने जणाववा माटे राजाए घेरघेर गोहिसो[3] कराव्यो. हजु पण मारवाड विगेरमां छाणनो गोहिसो करवामां आवे छे

"जुहार करवाने दिवसे पहला गणधर श्रीगौतमस्वामीए श्रीवीतराग शब्दना अर्थने विचारता केवळज्ञान रूप लक्ष्मीने, जिनेंद्र शासनना राज्यने अने गुणना समूहनी शक्तिने प्राप्त करी हती "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंच-
दशस्तम्भस्य द्विशतएकादशतम प्रबंध ॥

---

१ बाह्य भ्रम या ध्यानादिकमां हानि आववी २ विभाव पामवा प्रसंग बनवा ३ गोहिसो गु ? ते कांइ समजातुं नथी

व्याख्यान २१२ मुं.

हवे पूजानो विधि कहे छे

निश्चयाद्भव्यजीवेन, पूजा कार्या जिनेशितु ।
दमयन्त्येव कल्याणसुखसततिदायिनी ॥ १ ॥

भावार्थ—" भव्य प्राणीए दमयंतीनी जेम कल्याण अने सुखनी श्रेणि आपनारी जिनेश्वरनी पूजा अवश्य करवी. "

दमयतीनी कथा

कोसला नगरीमा निषध नामे राजा हतो. तेने नळ अने कुबर नामना बे पुत्रो हता. ते अरसामा विदर्भ देशमां भीम नामे राजा हतो. तेने दमयंती नामनी एक पुत्री हती. तेनां सर्वे अंगो सुंदर हता, अने ते समग्र कळाओमां कुशळ हती अनुक्रमे वृद्धि पामती ते पुत्री अढार वर्षनी थइ, त्यारे भीमराजाए पुत्रीने योग्य वर मेळववानी इच्छाथी स्वयंवरनो आरंभ कर्यो. त्यां नळ अने कुबर सहित निषध विगेरे घणा राजाओ गया. पछी पोतानी दासीए करेल वर्णन सांभळी दमयंतीए नळना कंठमां वरमाला आरोपण करी.पछी शुभ दिवसे पाणिग्रहणना उत्सवमां भीमराजाए नळने हाथी, घोडा, रथ, रत्न विगेरे आप्युं. केटलाक दिवस त्यां रहीने पछी पुत्रो अने वहु सहित निषध राजा कोसला नगरी तरफ चाल्यो. ते वखते भीमराजा पुत्रीने शिखामण आपीने पाछो वळ्यो.

मार्गे चालता तेओ एक मोटा जंगलमां आवी पहोंच्या. ते वखते सूर्य अस्त पाम्यो, गाढ अंधकारथी मार्ग पण देखावा न लाग्यो, तेथी तेनुं सैन्य पगले पगले वारंवार स्खलना पामतु दिग्मूढ थइ गयुं. ते वखते दमयंतीए पोतानु कपाळ लुहीने अगाउथी देखायेलु स्वाभाविक तिलक तेजस्वी कर्युं. तेना तेजथी ते दंपतीए नजीकमा प्रतिमा धारण करी रहेला[१] एक मुनिने जोया..ते साधुना शरीर साथे एक मदोन्मत्त वननो हाथी पोतानी मुंढ घसतो हतो, तेथी हाथीनो मद साधुना शरीर चोटेलो हतो, तेना गंधथी भमराओ गुंजारव करीने निःस्पृह एवा ते मुनिने पीडा करता हता. आ प्रमाणे मुनिनु स्वरूप जोइने निषधराजा विगेरे सर्वे पोतपोताना वाहनमाथी उतरीने तेमने नम्या, अने तेमणे कहेली धर्मदेशना सांभळ्या पछी तेमने पूछ्यु के–'हे स्वामी !–दमयंतीना कपाळमांथी

१ कायोत्सर्ग रहेला

उद्योत शी रीते प्रगट थयो ? ' त्यार मुनिए तेना पूर्व जन्मनुं वृत्तांत कयुं के- " पूर्व भवमा तेणे पांचसो आंबिल कर्यां हतां, भावी तीर्थंकर श्री शांतिनाथनी पूजा करी हती, तपनी समाप्तिमा विधिपूर्वक उद्यापन कर्युं हतु, अने चोवीश तीर्थंकरोना भालस्थळमा रत्नजडित सुवर्णना तिलको करावीने चडाव्या हतां, ते पुण्यना प्रभावथी आ भवे तना भालस्थळमा तिलकने आकारे सूर्यना खडनी जेवो स्वाभाविक उद्योत थयो छे "

आ प्रमाणे अमृत समान वाणी सांभळीने हर्ष पामेला निषध विगेरे पोताना पुरमा आव्या. त्यारपछी निषधराजा नळने राज्याभिषेक करी, पोते दीक्षा ग्रहण करीने स्वर्गमा गया, अने नळराजा अनुक्रमे त्रण खडनो स्वामी थया.

हवे तेनुं राज्य लेवानी इच्छाथी कुबर हमेशा तेना छिद्र जोवा लाग्यो. नळ पण भाइनी साथे द्युत रमवा लाग्यो. ते संबधमां घणा आप्त जनोनी शिखामण पण तेणे मानी नहीं, अने रमता रमता अनुक्रमे दैवयोगे नळराजा पोतानी पृथ्वी अने स्त्रीने पण हारी गयो, एटले कुबरे आनद पामीने कह्यु के- " हे भाइ ! हवे पृथ्वीने अने स्त्रीने मुकी दे " त्यार नळ मात्र एकज वस्त्र धारण करीने कोसला नगरीमाथी एकलो निकळ्यो नगरना लोकोए तथा प्रधानोए कुबरनी प्रार्थना करीने दमयतीने साथे मोकली ते स्त्री पुरुष चालता चालता एक मोटा अरण्यमा आवी पहोंच्या मध्यान्ह समय फळनो आहार करीने रात्रे कोइ लतागृहमा विश्राति लइने रात्रि निर्गमन करी. पछी नळे प्रवासमा स्त्रीने महा बंधनरूप धारीने तेने सुती तजी देवानी इच्छाथी आखमा आसु लावी, हाथमा छरी लइने पोताना लोहीथी तेना वस्त्रने छेडे आ प्रमाणे अक्षरो लख्या के- " हे प्रिया ! अहींथी वटवृक्षनी तरफ कुडिनपुर जवानो रस्तो छे, अने जमणी तरफ केसुडाना झाड पासे थइने कोसला नगरी जवानो रस्तो छे. तेथी ज्या तारी इच्छा होय त्या जजे, हु आवी स्थितिमा लज्जा पामु छु, तेथी तने अहीं मुकीने जाउं छु "

उपर प्रमाणे लखी दमयतीने एकली मुकीने आगळ चालता नळराजाए प्रातःकाळे समीपना भागमा चोतरफ बळतो दावानळ जोयो. तेमा थता अनेक प्राणीओना आक्रंदमा तेणे आ प्रमाणेनी मनुष्यवाणी साभळी के-" हे इक्ष्वाकु कुळना मुगट समान नळ ! मारु रक्षण कर, रक्षण कर " आ प्रमाणे साभळीने आम तेम जोता तेणे एक लताना गुच्छामा सर्पने जोइने कह्यु के-" हे सर्पराज !

तुं मारा नामने तथा मनुष्यभाषाने शीरीते जाणे छे ? " तेणे कह्युं के-" पूर्व भवना संस्कारथी जाणु छुं, माटे मारु रक्षण कर, रक्षण कर. " नळे तेने त्यांथी खेंचीने बहार काढ्यो के तरतज ते सर्पे राजाने डस्यो. तेनुं झेर व्यापवाथी पोतानु शरीर कुबडु थइ गयेलुं जोइने खेदपूर्वक नळे विलाप कर्यो. त्यारे ते सर्पे तेने कह्युं के-" हे पुत्र ! हुं तारो पिता छु, में मायावडे तने तारा लाभ माटे छेतर्यो छे. हु ब्रह्मदेवलोकथी तारापरना स्नेहवडे आव्यो छु. हे पुत्र ! तुं हज भरतार्धनु राज्य भोगवनार छे, तेथी आ श्रीफळ अने करंडीओ तु ग्रहण कर. श्रीफळमांथी वस्त्र काढीने पहेरीश अने करंडीआमां रहेला अलंकारो धारण करीश, एटले तु तारु मूळ स्वरुप पामीश." इत्यादि कहीने तेमज नळनी प्रार्थनाथी तेने सुसुमारपुरी पासे मुकी दइने देव अदृश्य थयो.

नळराजा सुसुमारपुरीए आव्यो ते वखते त्या प्रजानो संहार करनार मदोन्मत्त हाथीनो उपद्रव थयो हतो. ते हाथीने कोइ वश करी शकतु नहोतु तेने पोतानी बुद्धिथी वश करी तेने स्थाने बांधीने नळ पुरजनोनी साथे दधिपर्ण राजा पासे आव्यो. राजाए ते कुबडानो यथायोग्य सत्कार करीने तेनो वंश विगेरे पूछ्युं. एटले कुबडाए कह्यु के-" हु नळराजानो रसोइओ छु, अने सूर्यपाक रसवती जाणु छु. नळराजा द्यूतमां सर्वस्व हारीने पोतानी स्त्री सहित क्यांक चाल्या गया एटले हु अहीं आव्यो छु." आ प्रमाणे सांभळीने दधिपर्ण राजाए शोकसहित नळ राजानु मृतकार्य कर्युं, अने कुबडाने पोतानी पासे राख्यो.

एक दिवस उपवननी शोभा जोवा नीकळेला कुबडाने एक ब्राह्मणे आवीने संगीतमां आ प्रमाणेना बे श्लोक कह्या—

> अनार्याणामलज्जानां, दुर्बुद्धीनां हतात्मनां।
> रेखां मन्ये नलस्यैव, य. सुप्तामत्यजत्प्रियां ॥ १ ॥
> विश्वास्य वल्लभां स्निग्धां, सुप्तामेकाकिनीं वने।
> त्यक्तुंकामोपि जात किं, तत्रैव हि न भस्मसात् ॥२॥

" जे नळराजानी जेम सुतेली स्त्रीनो त्याग करे ते माणसने अनार्य पुरुषोमां, निर्लज्जमां, दुर्बुद्धिमां अने आत्मघ्नमां प्रथम रेखा समान जाणवो. स्नेहवाळी प्रियाने विश्वास पमाडी छेतरीने वनमां एकली सुती मुकी तजी जवानी इच्छावाळो नळ तेज वखत भस्मीभूत केम नहीं ? " आ प्रमाणेना श्लोक

सांभळीने कुबडाए "बहु सारुं गायु" एम कही तेनी प्रशंसा करीने "तुं कोण छे ? तें शी रीते अने क्यांथी नळराजानुं वृत्तांत सांभळ्युं ? अने नळना गया पछी दमयंतीनुं शुं थयुं ?" ए प्रमाणे तेने पूछ्युं, एटले ते ब्राह्मण बोल्यो के-"दमयंती प्रातःकाळे पोताना पतिने पासे नहीं देखवाथी शोकथी विव्हळ थइ आमतेम शोधवा लागी. एम करतां अकस्मात् वस्त्रने छेडे लखेला अक्षरो तेना वांचवामां आव्या. तेनो अर्थ जाणीने 'वट वृक्ष तरफना मार्गवडे पिताने घेर जाउं' एम विचारी ते त्यांथी चाली. आगळ जतां कोइ सार्थने लूटवाने प्रवर्तेला चोरोने तेणे हुंकार मात्रथी त्रास पमाड्या. पछी सार्थपतिए कुळदेवीनी जेम तेने नमीने तेना मुखथी सर्व वृत्तांत सांभळ्युं. ते परथी तेणे नळनी स्त्री जाणीने पोतानी बहेन समान मानी पोतानी साथे राखी. पछी वर्षाऋतु आववाथी 'सार्थने बहु विलंब थशे' एम जाणीने सार्थवाहनी रजा लीधा विना दमयंती त्यांथी एकली नीकळी गइ. आगळ चालतां कोइ राक्षसे तेने उपद्रव कर्यो. पण ते तेनाथी क्षोभ पामी नहीं, एटले तेना सत्वथी संतुष्ट थयेला राक्षसे कह्युं के-'हे देवी ! तुं दुःखी थइश नहीं बार वर्षने अंते तने तारा पतिनो समागम थशे.' पछी दमयंती कोइ पर्वतनी गुफामां रही श्री शांतिनाथनुं माटीनुं बिंब करीने तेनी पूजा करवा लागी, अने स्वभावथीज पाकीने भूमिपर पडेला फळोथी उपशमान्त तपनुं पारणुं करीने धर्माराधन करवा लागी. चोमासाने अंते पेलो सार्थवाह तेनी शोध करतो ते गुफामां तेने श्री शांतिनाथनी पूजामां तत्पर जोइ एटले ते बहु हर्ष पाम्यो, अने तेना उपदेशथी जैनधर्मी थयो. ते वनमां रहेला पांचसो तापसो पण दमयंतीनी वाणीथी प्रतिबोध पाम्या त्यां तापसपुर नामनुं नगर थयुं. एकदा यशोभद्र नामना सूरि त्यां पधार्या. दमयंतीना पूछवाथी तेमणे तेनो पूर्व भव कह्यो के-"पूर्व भवमां तुं मम्मण नामना राजानी वीरमती नामनी स्त्री हती. एक दिवसे ते दंपती कोइ ठेकाणे जतां हतां, तेवामां सामे आवता एक मुनिने जोया. एटले अपशुकन धारीने तेमने बार घडी सुधी तेमणे रोकी राख्या. पछी पाछा ते दंपतीए मुनिने खमाव्या. ए कारणथी आ भवमां बार वरस सुधीनो तमारे बन्नेने विरह पड्यो." आ प्रमाणे कही आचार्य विहार करी गया.

१ एक दिवसे कोइए आवीने दमयंतीने कह्युं के-"तारा पतिने में अमणां अहीं नजीकमांज जोया हतां" एवुं सांभळीने ते तत्काळ तेने जोवाने वनमां गइ.

त्यां कोइ राक्षसीनो उपद्रव थयो. ते तेणे पोताना शियळ व्रतना प्रभावथी शांत कर्यो. पछी अनुक्रमे ते अचलपुरमां आवी. ते नगरमां चंद्रयशा नामनी दमयंतीनी मासी त्यांना राजानी राणी हती. ते दमयंतीने सुशील जोइने पोताने घेर लइ गइ. त्यां तेनी दानशाळामां दमयंती नित्य दान देवा लागी. पींगल नामना चोरने त्यां रह्या सता मोतमांथी बचाव्यो.

एक वखत हरिभद्र नामे ब्राह्मण कुंडिनपुरथी त्यां आव्यो. तेणे दानशाळाए दान लेवा जतां दमयंतीने जोइने ओळखी, एटले तेनी माशीने मूळथी सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी चंद्रयशा तेने पोतानी बहेननी दीकरी जाणी राजमहेलमां लइ गइ अने पोताने ओळखाण न पाड्या बाबत ठपको आप्यो. पछी घणी युक्तिथी तेनो सत्कार करीने मोटा आडंबरथी तेने तेना पिताने घेर कुंडिनपुर मोकली.

एकदा भीमराजानो दूत पोताने कामे दधिपर्ण राजा पासे आव्यो हतो. त्यां "नळनो रसोइओ कुबडो सूर्यपाक रसवतीने जाणनारो छे." एम पुरमां पगले पगले तेना वखाण सांभळीने अने तेने जाते जोइने पोताने नगरे जइ पोताना राजा भीमने ते वृत्तांत निवेदन कर्यो. दूतनु वाक्य सांभळीने भीमराजाए तेनी विशेष तजवीज करवा एक ब्राह्मणने सुसुमारपुर मोकल्यो. ते ब्राह्मणे कुबडाने मळीने कह्युं के-"तने जोइने मने खेद थाय छे, केमके हुं अहीं नळराजा होवानी शंकाए आव्यो हतो, पण कल्पवृक्ष क्यां अने एरंडानुं झाड क्यां? माणिक्य क्यां अने पथ्थर क्यां? एम आजे तने कुबडाने जोवाथी मारा मनमां रहेलो दमयंतीनो मनोरथ पण कुबडो थइ गयो.' आ प्रमाणे सांभळीने कुबडो रोयो अने ते ब्राह्मणने सूर्यपाक रसवती जमाडी तेने घणु सुवर्ण आपी विदाय कर्यो. ते ब्राह्मणे भीमराजा पासे आवीने लक्ष सुवर्णनु दान, रोवु अने सूर्यपाक रसवतीनुं जमाडवु विगेरे सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी दमयंती बोली के-"हे पिता! आ बाबतमां काइ पण विचार करवा जेवु नथी, जरुर कुबडाने रुपे रहेलो ते तमारो जमाइज छे एम जाणवु." पछी भीमराजाए दमयंतीनो खोटो स्वयंवर आरंभीने सुसुमारपुरना राजा दधिपर्णने बोलाववा माटे माणसो मोकल्या केमके तेम करवाथी ते वात सांभळीने दधिपर्णनी साथे नळराजा जो त्यां हशे तो ते जरूर आवशे कारणके पशुओ पण स्त्रीनो पराभव सहन करी शकता नथी.

दधिपर्ण राजा दमयंती परना अनुरागथी मुदत मात्र एकज दिवसनो बाकी छतां कुबडा सारथीनी सहायथी तेज दिवसे कुंडिनपुरमां आव्यो. अने कुबडा पासे सूर्यपाक रसवती करावी [illegible] सहित भीमराजाने [illegible] र पछी "आ निषध राजानो [illegible] कुबडाने स्वरूप छे, [illegible]

वचन मिथ्या होय नहीं. " एम धारीने लज्जापूर्वक दमयतीए पोताना पतिने कह्यु के–"हे नाथ! ते वखत जनमा तो मुती मुकीने गया हता, पण आजे जागती शी रीते मुकी शकशो?" आ प्रमाणे साभळी नळे, पोतानु रुप प्रगट कर्युं. पछी भीमराजा नळने पोताना सिंहासनपर बेसाडी हर्षथी हाथ जोडीने बोल्यो के–" आ सर्व राज्यने अने आपत्ति विनानी आ सपत्तिने तमे आनदे भोगवो अने तमारी आज्ञामा रहेता एवा अमने मरजी प्रमाणे आपो." दधिपर्ण राजा पण नळने जोइ तेने नमस्कार करीने आश्चर्यथी बोल्यो के–"हे देव! में अज्ञानताथी जे काइ अयोग्य आचरण कर्युं होय ते सर्व क्षमा करजो "

पछी नळराजा सर्व राजाओ अने तेना सैन्य सहित पृथ्वीने कपावतो कोसला नगरी तरफ चाल्यो. त्या युद्ध करता क्रीडामात्रमां कुबरने जीतीने पोते राज्याधिपति थयो पछी भरताधना सर्व राजाओए नळने भेटो आपी. नळे पण पोतानी आज्ञामा रहे त्या सुधी तेमने अभयदान आप्यु. अनुक्रमे पुष्कल नामना पोताना पुत्रने राज्य सोंपीने दमयती सहित नळराजाए शास्त्रानुसार जैनी दीक्षा ग्रहण करी. नळराजाना शरीरमा स्वाभाविक कोमलता होवाथी सयममा ते अतिचार लगाडवा लाग्या, एटले तेना पिता निषध देवताए आवीने फरीथी दृढ कर्या. पछी दमयंतीना भोगनी इच्छावाळा छता पण मनने बलात्कार रोकीने, दीक्षानु पालन करवामा असमर्थ थवाथी अनशन अगीकार करी मृत्यु पामीने कुबेर नामे उत्तर दिशाना लोकपाल थया. दमयती पण अनशनथी मृत्यु पामीने तेनी प्रिया थइ. पछी कालक्रमे करीने दमयती द्वारका नगरीमा कनकवती नामे वसुदेवनी प्रिया थइ. त्यां जैनधर्ममा आसक्त थइ सती सासारिक सुख भोगवती हती, तेवामा श्रीनेमिनाथ प्रभु त्या समोवसर्या. कृष्ण तेने वादवाने परिवार सहित गया. भगवाने धर्मदेशना आपी. पछी देशनाने अंते कृष्णे पृछ्यु के–"हे स्वामी! आ नगरी अक्षय छे के तेनो क्षय थशे?" त्यारे भगवाने कह्यु के–"हे कृष्ण! आ नगरीनो द्वैपायन ऋषिना शापथी नाश थशे." आ प्रमाणे श्रीनेमिनाथना मुखथी द्वारकानो दाह साभळीने घणा जादवकुमार तथा तनी स्त्रीओए दीक्षा लीधी ते समये वसुदेवनी ७१९९८ स्त्रीओए पण प्रभुनी पास दीक्षा लीधी मात्र देवकी ने रोहिणी बे घेर रही. कनकवती चारित्र लइ उत्कृष्ट भावना भावी शुक्लध्यान धरीने केवलज्ञान पामी पछी देवताए आपेला साधुना वेषने धारण करी घणा जीवोने प्रतिबोध पमाडी माते सर्व कर्मनो क्षय करीने मुक्ति पामी

॥ इत्यब्दन्निपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पचदशस्तंभस्य
२१२ द्वादशाधिकद्विशततम' सवंध ॥

व्याख्यान २१३ मुं.

दीपपूजा.

जिनेन्द्रस्य पुरो दीपपूजां कुर्वन् जनो मुदा ।
लभते पृथुराज्यादिसंपदं धनकुंस्यवत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जिनेश्वरनी पासे हर्षथी दीपपूजा [illegible] धनानी जेम मोटी राज्यसमृद्धि पामे छे. "

दीपपूजा विषे धनानु दृष्टांत

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां आवेला दक्षिणा [illegible] विषे पद्मपुर नामे नगर छे. ते नगरमां कलाकेलि नामे [illegible] जाणी लेवु. ते राजाने पांच लाख अश्वो, छसें मदो [illegible] रथ तथा पत्तिओ हता. ए प्रमाणे ते राजाने पुण्यना [illegible] थइ हती. तेवा राज्यने करतो अने सुखभोग भोगव[illegible] सुखे दिवसो निर्गमन करतो हतो.

एकदा पद्मवन नामना चैत्यथी शोभित पद्मवन [illegible] त्योमां केवली, सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी आदेयनाम [illegible] श्री पार्श्वनाथ स्वामी अनेक गणधर तथा मानुना [illegible] भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि अने विमानवासी दे[illegible] देवताओए समवसरण रच्यु. अहीं समवसरणनु [illegible] द्वारे समवसरणमां प्रवेश करीने भगवान सिंहा[illegible] ओ आवीने स्वस्व स्थाने बेठी. ते वखते [illegible] लोको पण भगवानने वांदवा माटे आव्या [illegible] धणा आव्या हता. [illegible] भगवाने नीचे प्रमा[illegible]

मन्ह जिणाणं आणं. मिच्छं [illegible]
छव्विह आवस्सयंमि. उज्जु[illegible]

भावार्थ-" हे भव्य जीवो ! [illegible]
त्वने तजो. सम्यक्त्वने [illegible]
उद्यमी थाओ, " तथा

पव्वेसु पोसहवयं, दाण सील तवो अ भावो अ।
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥

भावार्थ-" पर्वतिथिए पौषध व्रत करो तथा दान, शील, तप, भावना, स्वाध्याय, नमस्कार, परोपकार अने यतना करो " तथा

जिणपूआ जिणथुणिण, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
सव्वविरइमणोरह एमाइ सड्ढकिच्चाइं ॥ ३ ॥

भावार्थ-" जिनपूजा, जिनेश्वरनी स्तुति, गुरुनी स्तुति, साधर्मिक वात्सल्य अने सर्वविरतिनो मनोरथ करो इत्यादि श्रावकना कर्तव्य छे. "

हे भव्य प्राणीओ! मोहनी आदि आठ कर्मना वशथी संसारी जीव जन्म मरणादि अनेक दुःखोथी व्याप्त एवा चतुर्गतिरूप भयंकर संसारकान्तारमा वारंवार परिभ्रमण करे छे. ते जीव प्रथम अकाम निर्जराथी थयेला पुण्यना उदयथी अव्यवहार राशिमांथी नीकळीने व्यवहार राशिमा आवे छे, पछी [1]यथाप्रवृत्ति करण करवाथी [1]आयुविना साते कर्मनी उत्कृष्ट स्थिति खपावीने पल्योपमना असंख्यातमे भागे उणी एक कोडाकोडी सागरोपमनी करे छे. तेटली लघु स्थिति पर्वत उपरथी पडतो पाषाण कुटातो पीटातो गोळ थाय ते न्याये कर छे, तथा शुभभाव थाये छे. यथाप्रवृत्ति करणवडेज जीव प्रथम बादर पृथ्वीकायमा पर्याप्त भावे उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी कोइक भव्य जीव अनुक्रमे संज्ञी पंचेंद्रिय मनुष्यपणु पामी अल्प संसारी थइने आर्यक्षेत्रमा उच्च कुळने विषे उत्पन्न थाय छे. एवी रीते आर्यक्षेत्र, मनुष्यभव, उच्च कुळ, सुगुरुनी जोगवाइ विगेरे धर्मनी सामग्री पामीने जीव आत्माना शुद्ध स्वभावे करीने अथवा गुरुना उपदेशे करीने आ प्रमाणे आत्मस्वरुपनु चिंतवन करे के-" आ मारो आत्मा असंख्यात प्रदेशवाळो छे. ते द्रव्यार्थिक नये करीने एक छे, अने पर्यायार्थिक नये करीने अनेक परिणामवाळो छे. ज्ञान, दर्शनरूप शुद्ध गुणना पर्यायवाळो छे. ते आत्माना अनंता अस्ति धर्मो छे, अनंता नास्ति धर्मो छे अने तेमां सामान्य विशेष धर्मो पण अनेक रहेला छे. वळी ते समग्र पुद्गल भावथी रहित छे. वस्तुगत भाव प्रमाणे काळ अनंती कर्मप्रकृतिथी रहित छे. साकारोपयोग (ज्ञान) तथा अनाकारोपयोग (दर्शन) ना स्वभाववाळो छे. कदाचित् पण चैतन्य भावने तजतो नथी. आ मारो आत्मा शाश्वत छे, शरीर, लेश्या, योग, कषाय अने क्लेश रहित छे, अर्थात्

१ आयुष्य विना

अशरीरी, अलेशी, अयोगी, अकषायी अने अवेदी छे परम चिदानंद स्वरूपी छे, द्रव्यार्थिक नयनी मुख्यताए नित्य छे, अने पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाए अनित्य छे. रत्नत्रयी (ज्ञान, दर्शन, चारित्र) मय छे. श्रद्धा, भासन अने रमणता लक्षणवाळो छे, तथा उत्तम निमित्तकारणे करीने तेनु उपादान सुन्दर छे, तेथी आ प्रमाणेनु तेनु शुद्ध स्वरूप निरंतर ध्यावु. '

आवी अमृत सरखी पार्श्वनाथ स्वामीए धर्मदेशना आपी, ते सांभळीने राजादिक सर्व लोकों हृष्ट तुष्ट थया, चित्तमां आनंद पाम्या, प्रीतियुक्त थया, परम शांतभाव पाम्या अने हर्षथी उल्लास पामेला हृदयवाळा थया. वर्षादनी धाराए हणेला कदंबना पुष्पोनी जेम तेमना रोमाच प्रफुल्लित थया, यावत् अस्थि मज्जा पर्यंत धर्मना रागथी रंगाइ गया, तेमांथी केटलाक जीवोए चारित्र ग्रहण कर्यु, केटलाके बार प्रकारनो श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो, अने केटलाके रात्रीभोजननी विरति, अनंतकायनो त्याग, अभक्ष्य भोजननो परिहार अने वासी विदल नुं वर्जन, इत्यादिक पच्चख्खाण कर्यो. त्यारपछी पर्षदा स्वस्व स्थाने गइ. पछी कलाकेली राजाए हस्तकमळ जोडीने नम्रताथी भगवानने आ प्रमाणे पूछयुं के-" हे करुणासागर, परम दयाना भंडार अने त्रिभुवनमां सूर्य समान भगवंत ! आप जयवंता वर्तो. हे प्रभो ! कया कर्मे करीने मने आवी राज्यसंपदा प्राप्त थई ते कृपा करीने कहो. " त्यारे पार्श्वनाथ स्वामीए कह्युं के-" हे राजन् ! तारा पूर्व भवनुं वृत्तांत सांभळ.

आ जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रमां दक्षिणार्ध भरतने विषे अंग नामे देश छे. तेमां रमा नामे नगरी छे. त्या जितारी नामे राजा राज्य करतो हतो. ते नगरीमां एक धना नामनो निर्धन वणिक रहेतो हतो, ते जेवा तेवा प्रकारना उद्योगथी आजीविका (उदरपूर्णा) करतो हतो. एकदा रमापुरीनी समीपना उद्यानमां बावीशमा तीर्थंकर बाळब्रह्मचारी श्रीनेमिनाथ भगवान अढार गणधर, अढार हजार साधु अने छत्रीश हजार साध्वीओना परिवार सहित समवसर्या. तेमना देहनी कांति श्याम कमळना जेवी हती, देहनु प्रमाण दश धनुष्य उंचु हतु, अने [1]चारे प्रकारना देवताओ तेमना चरणकमळनी सेवा करता हता. उद्यानमां देवताओए समवसरण रच्युं, तेना मध्यभागमा सिंहासन उपर ते नेमिनाथ स्वामी बिराज्या अने सर्व पर्षदा पण आवी. ते वखते तेमणे नीचे प्रमाणे धर्म देशना आपी.

---

१ भुवनपति, व्यंतर, [ज्योतिषी,] वैमानिक

सवे जीवा वि वज्झति, मुच्चति य तहेव य ।
सव्वकम्म खवेऊण, सिद्धि गच्छइ नीरया ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम जीवो ससारने विषे बधाय छे तेमज ससारथी मुक्त पण थाय छे, अने १सर्व कर्मनो क्षय करीने आसक्ति रहितपणे सिद्धिपदने पामे छे."

आ प्रमाणे धर्मदेशना चालती हती. ते समये पेलो धना नामे वाणीओ त्यां आव्यो, ते वखते भगवाने एवो उपदेश कर्यो के—" जे भव्य प्राणी जिनेंद्रनी पासे दीपपूजा करे छे ते राज्यलक्ष्मी पामीने यावत् मोक्षे जाय छे. " ए प्रमाणेनो धर्मोपदेश सांभळीने हर्ष पामेला धनाए आ प्रमाणे मनमां विचार्यु के—" हु जिनेश्वरनी पासे निरतर दीपपूजा करीश." पछी एवो अभिग्रह धारण करी श्रीनेमिनाथने वांदीने ते धनो पोताने घेर गयो. त्यार पछी जीवहिंसा न थाय तेवी रीते पोताना ज्ञानादिक त्रण रत्नना उद्योतने निमित्ते ते विधिपूर्वक हमेशा दीपपूजा करवा लाग्यो. तेम करवाथी मनुष्यनु आयुष्य बाधी मरण पामीने कलाकलि नामनो तु राजा थयो छे, अने आवी राज्यसमृद्धि पाम्यो छे. "

आ प्रमाणे श्री नेमिनाथ स्वामी पासथी पोतानो पूर्वभव सांभळीने आनद पामेलो कलाकलि राजा प्रतिदिन द्रव्यपूजा तथा भावपूजा विशेष प्रकार करवा लाग्यो अने सुखे सुखे रहेवा लाग्यो ते राजा अनेक भवाग्ना सुख भोगवीने अनुक्रमे सिद्धिपदने पामशे.

" हे भव्य प्राणीओ । पोतानु अज्ञान नाश करवा माटे कलाकलि राजानी जेम ज्ञानना विकास करनार एवी द्रव्य अने भावथी विधिपूर्वक दीपपूजामा आदर करो "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पचदशस्तभस्य
२१३ त्रयोदशाधिकद्विशततमः सवधः ॥

१ शुभ तथा अशुभ

व्याख्यान २१४ मुं.

हवे थोडा अक्षर शिखवाथी पण सुख थाय छे ते विषे कहे छे.

ज्ञानं शिक्षयेदल्प हि, नवेत्तन्न निरर्थकम् ।
स्वल्पाक्षरमहिम्नापि, यवेन जीव रक्षित. ॥ १ ॥

भावार्थ—" थोडु ज्ञान शीखवाथी पण ते निरर्थक थतु नथी, केमके थोडा ज्ञानना महिमाथी पण यव नामना राजर्षिए पोताना जीवनी रक्षा करी हती.

यव ऋषिनी कथा

विशाला नामनी नगरीमां यव नामे राजा हतो. तेने गर्दभिल्ल नामनो पुत्र, अणुल्लिका नामनी पुत्री अने दीर्घपृष्ठ नामनो प्रधान हतो. एक दिवस रात्रिना पाछला भागमां जागेला राजाए विचार्यु के–" में पूर्व भवमां कांइ पण अद्भुत सुकृत कर्यु हशे के जेथी ते सुकृतना प्रभावे समुद्र पर्यंत समग्र पृथ्वीने स्वतंत्रताथी भोगवु छु. माटे आ भवमां पण हवे एवु सुकृत करुं के जेथी आवतो भव पण सुधरे." आ प्रमाणे विचारीने प्रातःकाळे पोताना पुत्रने राज्यपर बेसाडी तथा तेने केटलीक हितशिक्षा आपीने उपवनमां आवेला गुरुने वांदी तेमनी पासे चारित्र ग्रहण कर्यु. पछी वैयावच्चमां तत्पर रह्या छतां तेमणे तीव्र तप करवा मांडयु, अने गुरुमहाराजनी साथे विहार करवा लाग्या. गुरुए शास्त्रनो अभ्यास करवा माटे बहु कह्युं, तोपण ते कांइ शीख्या नहीं, अने " हुं वृद्ध छुं तेथी मने पाठ आवडशे नहीं " एम कहेवा लाग्या.

एकदा लाभनुं कारण जोइने गुरुमहाराजे ते यव मुनिने तेना पुत्रने प्रतिबोध करवा माटे विशालानगरीए मोकल्या गुरुना वचनने पुष्पमाळानी जेम मस्तक पर चडावीने ते चाल्या. रस्तामां तेणे विचार्यु के–" मने किंचित् पण शास्त्रनुं ज्ञान नथी, तो हु पुत्रने तथा बीजाओने शुं उपदेश आपीश ? " आ प्रमाणे विचार करे छे तेवामां नजीकना कोइ खेतरमां जव खावानी इच्छाथी आवता पण मायावडे चोतरफ जोता गधेडाने ते खेतरना रक्षके नीचे प्रमाणे गाथा कही-

ओहावसि पहावसि, ममं चेव निरक्खसि ।
लक्खिओ ते अभिप्पाओ, जवं जखेसि गद्दहा ॥ १ ॥

भावार्थ-" हे गर्दभ ! तुं उतावळो उतावळो आवे छे, अने मने जुए छे, पण में तारो अभिप्राय जाण्यो के क तारे जवनु भक्षण करवानी इच्छा छे."

आ प्रमाणेनी गाथा साभळीने यवमुनिए जाणे अमोघ शस्त्र मार्युं होय तेवी ते गाथा मानी, अने तेने महाविद्यानी जेम संभारता संभारता आगळ चाल्या. केटलेक दूर जता कोइएक गामनी नजीकमा केटलाएक छोकराओ रमता हता. तेमा एक छोकराए लाकडाना कडकानी अणुल्लिका (मोइ) फेंकी, ते बीजा बालकोए शोधी, पण जडी नहि त्यारे कोइ छोकराए नीचे प्रमाणे गाथा कही—

अओ गया तओ गया, जोइज्जंति न दीसइ ।
अम्हे न दिट्ठि तुम्हे न दिट्ठि, अगडे तुटा अणुल्लिया ॥ १ ॥

भावार्थ-"अहींथी गइ, त्याथी गइ, शोध करता पण मळी नहीं. अमे जोइ नथी, तेम तमे पण जोइ नथी. पण ते अणुल्लिका (मोइ) खाडामा पडी छे."

आ गाथा पण यवमुनिने तत्काल कंठे थइ गइ पछी तेनु वारंवार स्मरण करता आगळ चाल्या केटलेक दिवसे ते विशालानगरी समीप आव्या. त्या एक कुंभारने घेर रात्रिवासो रह्या ते कुभारना घरमा एक उंदर आम तेम भमतो हतो, तेने ते कुंभार नीचे प्रमाणे गाथा कही—

सुकुमालय कोमल भद्दलया, तुम्हे रत्ति हिंडणसीलणया ।
अम्ह पसाओ नत्थि ते भय दिहपिट्ठाओ तुम्ह भय ॥ १ ॥

भावार्थ-" कोमळ अगवाळा हे भद्र ! तारे रात्रे चालवाना स्वभाव छे, पण तारे अमारा तरफना भय नथी, दीर्घपृष्ट (सर्पथी) तारे भय छे."

आ गाथा पण यवमुनिए कठ करी पछी ए त्रण गाथाने कल्पवृक्ष, चिंतामणि रत्न अने कामधेनु समान मानीने तेनु वारंवार आवर्तन करवा लाग्या. हवे ते विशालानगरीमा दीर्घपृष्ट मत्रीए "गर्दभिल्लराजाने कोइ पण उपायथी मारीने तेना राज्यपर मारा पुत्रने बेसाडीश ने तेने अणुल्लिका परणावीश." एम धारीने ते राजानी बहेन अणुल्लिकाने पोताना घरना भोंयरामा गुप्त रीते संताडी छे राजाना सुभटोए तेने घणी शोधी पण तेनो पत्तो लाग्यो नहि तेवामा मत्रीए यव मुनिने आव्या साभळीने विचार्यु के-" आ यव मुनिने तपना प्रभावथी ज्ञान प्राप्त थयु हशे, अने तेथी मारु सर्व काम जाणीने ते जो राजाने कहेशे तो राजा मने मारा कुटुब सहित हणी नाखशे, माटे हु कांइ पण आगळथी तेनो उपाय करु

एम विचारीने ते रात्रिने वखतेज गर्दभिल्ल राजा पासे गयो. राजाए तेने अवसर विना आववानुं कारण पूछ्युं एटले ते बोल्यो के–"चारित्रथी भ्रष्ट थयेला आपना पिता अहीं आव्या छे ने कुंभारने घेर रात रह्या छे, ते प्रातःकाळे आवीने आपनुं राज्य लइ लेशे." आ प्रमाणे सांभळीने राजा बोल्यो के– "जो पिताश्री राज्य लेशे तो हुं मारुं मोटुं भाग्य मानीश." मंत्रीए कह्युं के "पोताने मळेलुं राज्य आपी देवुं ते योग्य नथी. कोणिक राजानी जेम एवा पिताने तो हणी नाखवा तेज योग्य छे." आ प्रमाणे कही विविध प्रकारनी युक्तिथी कपटी मंत्रीए राजाने समजाव्यो, एटले रात्रीमांज पिताना वध करवा माटे गर्दभिल्ल राजा हाथमां खड्ग लइने कुंभारने घेर गयो. अने बारणानी सांधमांथी पिताने जोवा लाग्यो, तेटलामां यवमुनि सहज बुद्धिथी पहेली गाथा बोल्या. ते सांभळीने राजाए विचार्युं के–"अहो! मारा पिताए मारो अभिप्राय जाण्यो, केम के ते कहे छे के–हे गद्दहा! एटले हे गर्दभिल्ल! तुं यवं एटले यवकणने भक्षण करवा इच्छे छे." आ प्रमाणे राजाए पोतानी बुद्धिथी ते गाथानो अर्थ कर्यो, अने पाछो विचारवा लाग्यो के–"आम तेम जोतां मने मारा पिताए ज्ञानवडे जाण्यो, पण जो ते खरेखरा ज्ञानी हशे तो मारी बहेनना समाचार कहेशे." आ प्रमाणे विचारे छे तेवामां तेज वखते यवमुनि बीजी गाथा बोल्या ते सांभळी तेणे ते गाथानो एवो अर्थ कर्यो के–"में मारी बहेन अणुल्लिकानी सर्वत्र शोध करी. पण ते अणुल्लिकाने कोइए भोंयरामां संताडी छे." आ प्रमाणे अर्थ चिंतवीने वळी विचारवा लाग्यो के–"जो हवे मारी बहेनने जेणे संताडी होय तेनुं नाम प्रकाश करे तो सारुं." तेवामां मुनि त्रीजी गाथा बोल्या. ते सांभळीने तेनो अर्थ तेणे एवो धार्यो के "तुं कोमळ छे. रात्रीए चालवानो तारो स्वभाव छे. तुं अमाराथी बीहे छे, पण अमाराथी तने भय नथी. दीर्घपृष्ठ नामना मंत्रीथी तारे भय राखवानो छे." आवो अर्थ धारी तमाम शंका दूर थवाथी ते बारणुं उघाडी अंदर आव्यो अने पोताना ज्ञानी पिताने मारवानी इच्छा करनारा एवा पोतानी निंदा करतां छतां गर्दभिल्ले अश्रुपात सहित पिता मुनिने वांदीने पोतानो अपराध निवेदन करवा पूर्वक खमाव्या. ते सर्व सांभळी मुनि तो मौनज रह्या, केमके "मौनं सर्वार्थसाधकम्."

पछी राजा पोताने [illegible] आव्यो. रात्री गया पछी प्रातःकाळे तेणे पोताना भटो (सिपाइओ) [illegible] ननी तपास करावीने भोंयरामांथी

बहेनने मेळवी. मंत्रीने तेना कुटुंब सहित देशमांथी काढी मूक्यो, अने ज्ञानी मुनिनी प्रशंसा करी तेमने नमीने तणे कहेलो धर्म अंगीकार कर्यो.

आ प्रमाणे पुरना लोक सहित पोताना कुटुंबने प्रतिबोध करीने यवराजर्षि गुरुमहाराज पासे आव्या. गुरुमहाराज पण सर्व वृत्तांत सांभळीने विस्मय पाम्या. पछी यवमुनि पण आळस छोडीने विनय सहित श्रुतनो अभ्यास करवा लाग्या. भणवानुं फळ प्रत्यक्ष जोवाथी ज्ञानाभ्यास करी तप तपीने अनुक्रमे मोक्षे गया.

हवे आ दृष्टांतनु व्यतिरेकी दृष्टांत कहे छे.

यैर्नाधीत श्रुतग्रंथ, कर्णाधातेन यच्छ्रुतम् ।
स्वमतिकल्पनापूर्व, वदेत् स मौढ्यमश्नुते ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेणे श्रुतग्रंथनो अभ्यास कर्यो नथी, अने काने साभळीने पछी पोतानी मतिकल्पनाथी जवाब आप छे ते मूर्खपणाने पामे छे. "

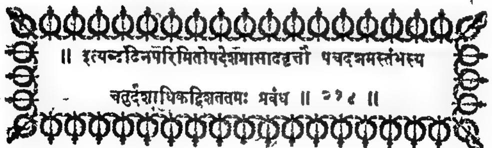
आ विषे एक दृष्टांत छे के- कोइ गच्छना आचार्ये पोताना आयुष्यनो अंत जाणीने उपदेशथी काइक सिद्धांतने अने स्थूल सामाचारीने जाणनारा कोइ साधुने आचार्यपदे स्थापन कर्या ते आचार्य आगमनु ज्ञान नहीं छता पण गुरुना महिमाथी प्रसिद्धिने पाम्या अन्यदा विहार करता करता ते पृथ्वीपुर नामना नगर गया. त्याना श्रावकोए मोटा ओच्छवथी तेमने पुरप्रवेश कराव्यो ते नगरमा पूर्वे जैनाचार्योए राजसभामा अनेक परवादीओने घणीवार पराभव पमाड्या हता ते परवादीओए फरीथी पण तेमनी उन्नति जोइने इर्ष्यांध थया सता पूर्वे पराभव पामेला होवाथी फरीथी पोताना महत्वनी हानि थशे, एवा भयथी आ नवीन आचार्यना शास्त्र संबंधी ज्ञाननी परीक्षा करवा माटे पोताना धर्मनाथी एक सेवकने तेनी पासे मोकल्यो तेणे सूरिने प्रश्न कर्यो के-" हे भगवन्! पुद्गलने केटली इंद्रियो होय ? " त्यार सिद्धांतना ज्ञान रहित सूरिए घणीवार सुधी विचार्यु तो " पुद्गल एक समये लोकात सुधी जाय छे " एवु कोइक स्थळे साभळेलु ते तेमना स्मरणमां आव्यु पछी " पंचेंद्रिय विना आटली शक्ति क्याथी होय ? " एम पोताना मनमा निश्चय करीने सिद्धांतादिकनी अपेक्षा विनाज स्वमतिकल्पनाथी तेणे प्रत्युत्तर आप्यो के-" हे भद्र ! पुद्गलने पांच इंद्रियो होय " आवो उत्तर सामळीने " आने पोताना [१] आचार्य पण ज्ञान

१ सिद्धांतना

नथी, तो पछी अन्य शास्त्रनुं ज्ञान तो क्यांथीज होय ? " एम विचारीने तेणे परवादीओने सर्व हकीकत कही; एटले तेओए नवीन आचार्यना ज्ञाननुं प्रमाण जाणीने राजसभामां तेनो पराभव कर्यो, तेथी जैन-धर्मनी मोटी हीलना थइ, अने घणा लोको धर्मभ्रष्ट थया. पछी संघे ते आचार्यने त्यांथी दूर देश मोकली दीधा आ प्रमाणे कल्पवृत्तिमां दृष्टांत कह्युं छे

आवा गुरुओ चारित्र पाम्या छतां अने उपदेश देवाने तत्पर थया छतां पण शास्त्र संबंधी उत्सर्ग अपवादनुं ज्ञान नहीं होवाथी उत्सूत्र प्ररूपणा पण करे छे, अने पोताना आश्रितोने उलटा भवसमुद्रमां डुबावे छे तेथी तेवा 'अबहुश्रुतोने' उत्सूत्र बोलाइ जवानो भय होवाथी धर्मनो उपदेश देवो ते पण योग्य नथी

" आ प्रमाणे विविध दृष्टांतोथी जाणीने संसाररूपी शत्रुना विजयने माटे ज्ञानी गुरुना आश्रयथी हे विवेकी भव्य जीवो ! प्रत्यक्ष गुणवाळा सिद्धांतना विचारनो आश्रय करो. "



व्याख्यान २१५ मुं.

ज्ञाननी विराधना तजवा विषे.

जघन्योत्कृष्टभेदाभ्यां, त्याज्या ज्ञानविराधना ।
ज्ञानस्य ज्ञानिनां भक्तिर्वृद्धिं नेया च धार्मिकैः ॥ १ ॥

भावार्थ—"धर्मिष्ट पुरुषोए जघन्य तथा उत्कृष्ट भेदे करीने ज्ञाननी विराधनानो त्याग करवो, अने ज्ञान तथा ज्ञानीनी भक्तिमां वृद्धि करवी."

ज्ञाननी जघन्य विराधना आ प्रमाणे छे—

पुस्तक, पाटी, ठवणी, रुमाल (पोथीबंधन), स्तवण विगेरे ज्ञानना उपकरणोने चरण विगेरे कनिष्ट अवयवोथी स्पर्श करवो, मुख पासे वस्त्र राख्या सिवाय भणवुं भणाववुं, अने पुस्तकने काखमां राखवुं, सिवाय आहार, नीहार तथा भोग आदि समय ज्ञानना उच्चार करवा विगेरेथी मोटा ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध थाय छे. पुस्तक के तेना पाना अथवा लखेला कागल विगेरे पासे होय अने लघुशंका विगेरे करे, तो तेथी पण मोटा ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध थाय छे, तेथी तेने महा आशातना जाणवी नवकारवाली, पुस्तक विगेरे पूज्य उपकरणनी साथे दुर्गंधि तथा चरवळानो स्पर्श न करवो. मुहपत्ति थुंक विगेरेथी उच्छिष्ट थयेली होय छे, माटे तेने पुस्तकनी साथे तथा स्थापनाचार्यनी साथे राखवी नहीं, जूदीज राखवी. पुस्तक बंधनना रुमाल पण केवळ पृथ्वीपर राखवो नहीं, अन्यथा मोटी आशातना थाय छे, अने ज्ञानावरणीय कर्म बंधाय छे. लखेला कागळना कटका पण उच्छिष्ट भूमिपर पड्या होय, तो ते लइने सारी उंची जग्याए पगथी चपाय नहीं तेवी रीते मूकवा, तेम करवाथी ज्ञाननी स्फूर्ति थाय छे. तेनो महिमा चालता समयमां पण प्रत्यक्ष दीठो छे. लखेला कागळो कोइ पण कारणथी वेचवा नहीं. लोभी थइने लखेला पाना कूटो करीने तेनी कांइ वस्तु बनाववा माटे पण आपवा नहीं, तथा दिवाळीना पर्वमां गंधक, दारू विगेरे भरीने फटाकीआ, फुलकणी, टेटा विगेरे करवामां आवे छे तेना उपयोगमां पण आपवा नहीं. केम के तेमांना सर्व अक्षरो बळीने भस्म थाय छे. तेम करवाथी महा ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध थाय छे. पुस्तकादिक उपकरणोने ओसीके राखवा नहीं, तेमज तेनापर बेसवु नहीं. आ प्रमाणे ज्ञाननी आशातना करवाथी महा ज्ञानावरणीय कर्म बंधाय छे. ज्ञाननी विराधनाना उपर जणावेला सिवायना बीजा प्रकारो विद्वान पुरुषोए पोतानी मेळे समजी लेवा.

हवे ज्ञाननी उत्कृष्ट विराधना बतावे छे-

श्रीमत् जिनागमना सूत्र, तेनो अर्थ तथा उभयनु वितथ करण-उत्सूत्र भाषण, मरीचि, जमालि, लक्ष्मणा साध्वी तथा सावद्याचार्य विगेरेनी जेम करवु नहीं तेम करवाथी महा ज्ञानावरणीय कर्म बंधाय छे.

हवे ज्ञाननी तथा ज्ञानीनी भक्ति तथा वृद्धि आ प्रमाणे करवी- जिनागम तथा जिनेश्वरादिनां चरित्रवाळा पुस्तको विगेरे न्यायथी मेळवेला द्रव्यवडे सारा कागळ उपर विशुद्ध अक्षरोथी लखाववां, तथा गीतार्थ मुनिनी पासे वंचाववां. तेना प्रारंभादि प्रसंगे मोटा ओछव करवा अहर्निश पूजादिक बहुमानपूर्वक गुरु पासे व्याख्यान सांभळवु, के जेथी अनेक भव्य जीवोने बोधिलाभ थाय. ज्ञानना पुस्तको वांचनारने तथा भणनारने अन्न, वस्त्र विगेरेनु उपष्टंभ आपवुं.

एवुं संभळाय छे के- दुषम काळना वशथी ज्यारे बारवर्षी दुष्काळ पड्यो, त्यारे सिद्धांतने उच्छिन्न प्राय थयेल जाणी तेनो तद्दन विच्छेद थशे एम धारीने नागार्जुन, स्कंदिल विगेर आचार्योए एकठा थइने तेना पुस्तको लखाव्यां. तेथी पुस्तको लखाववां अने उत्तम वस्त्र विगेरेथी तेनी पूजा करवी.

श्रीधर्मघोष सूरिना उपदेशथी संघवी पेथडे तेमना मुखथी एकादशांगी सांभळवानो आरंभ कर्यो, तेमा पांचमा अंगमा ज्यां ज्यां 'गोयमा (हे गौतम!) एवुं पद आवे त्यां त्यां सुवर्ण मोहोरथी तेणे पुस्तकनी पूजा करी, एम दरेक प्रश्ने सोनामोहोर मूकवाथी छत्रीश हजार सोनामोहोर थइ पछी एटलुं द्रव्य खरचीने तेणे समग्र आगमना पुस्तको लखाव्यां, अने तेने रेशमी वस्त्रनां वेष्टन करावीने भरूच, सुरगिरि, माडवगढ, अर्बुदाचल विगेरे स्थानोमां सात ज्ञानना भंडारो कर्या.

श्री कुमारपाळ राजाए सातसो लहीया पासे छ लाख अने छत्रीश हजार श्लोक प्रमाण आगमनी सात प्रतो सोनेरी अक्षरथी लखावी, अने श्रीहेमाचार्ये रचेला साडा त्रण करोड श्लोकनी एकवीश प्रतो लखावीने एकवीश ज्ञानना भंडार कर्या. कह्युं छे के—

कालानुभावान्मतिमांद्यतश्च, तच्चाधुना पुस्तकमंतरेण ।
न स्यादतः पुस्तकलेखनं हि, श्राद्धस्य युक्तं नितरां विधातुम् ॥१॥

भावार्थ—"हालना समयमां काळना अनुभावथी तथा मतिनी मंदताथी पुस्तक विना ज्ञान रही शकतुं नथी, माटे श्रावकोए निरंतर पुस्तको लखाववां ते अत्यंत योग्य छे."

" जिनप्रतिमा कराव्या करतां पण सिद्धांतोने लखाववामां तथा तेनुं श्रवण करवामा मोटुं पुण्य छे, केमके ज्ञान विना प्रतिमानुं महत्व शी रीतें जाणी शकाय? तेथी ज्ञानना भंडारो धर्मनी दानशालानी जेवा शोभे छे. गुरु विना शिष्यनी जेम पुस्तको विना विद्या पण आवती नथी." इत्यादि उपदेश सांभळीने वस्तुपाल मंत्रीए अढार करोड द्रव्य खरचीने त्रण ज्ञानभंडार लखाव्या.

धरादना संघवी आभु नामना श्रेष्ठीए त्रण करोड द्रव्य खरचीने सर्व सूत्रनी एक एक प्रत सोनेरी अक्षरथी अने बीजा ग्रंथोनी पण एक प्रत शाहीथी लखावी हती. कह्युं छे के—

न ते नरा दुर्गतिमाप्नुवन्ति, न मूकतां नैव जडस्वभावम् ।
नैवांधतां बुद्धिविहीनतां च,ये लेखयन्त्यागमपुस्तकानि॥१॥

भावार्थ—" जे मनुष्य सिद्धान्तना पुस्तको लखावे छे तेओ दुर्गतिने, मूकपणाने, जडताने, अंधताने अने बुद्धिरहितपणाने पामता नथी."

वळी कोइक प्रकारे जिनागमनुं (श्रुतज्ञाननुं) केवलज्ञान करता पण अतिशायीपणुं देखाय छे. ते विषे कह्युं छे के—" श्रुतना उपयोगमां वर्तता छद्मस्थ मुनिए लावेलो आहार कदि अशुद्ध होय तो पण केवली वापरे छे, कारण के तेम न करे तो श्रुतनुं अप्रमाणपणुं थइ जाय "

तेथी सम्यक् प्रकारे सूत्रार्थना उपयोग पूर्वक निरंतर सर्व अनुष्ठान करवां उपयोग विनानी क्रिया द्रव्य क्रियापणाने पामे छे.

ज्ञाननी विराधना करवाथी बंधायेल पापकर्म ज्ञानपंचमीनुं आराधन करवाथी नाश पामे छे कह्युं छे के—

उत्सूत्रजल्पाच्छ्रुति शब्दव्यत्ययात्,क्रोधादनाभोगहठाच्च हास्यत ।
बद्धानि यज्ज्ञानविराधनोद्भवात्,कर्माणि यांति श्रुतपंचमीव्रतात्॥२।

भावार्थ—" उत्सूत्रनी प्ररूपणाथी, सूत्रना अर्थ विपरीत करवाथी, क्रोधथी, अनाभोगथी, हठथी अने हास्यथी ज्ञाननी विराधना थवावडे बंधायेलां कर्मो ज्ञानपंचमीना व्रतथी नाश पामे छे "

आनुं तात्पर्य गुणमंजरी अने वरदत्तना दृष्टांतथी जाणवुं.

गुणमंजरी ने वरदत्तनी कथा

आ भरतक्षेत्रमां पद्मपुर नामे नगर छे. तमां अजितसेन नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने शियळ व्रतने धारण करनारी अति प्रिय यशोमती

नामनी राणी हती. तेने वरदत्त नामे एक पुत्र थयो ते आठ वर्षनो थयो, एटले तेने भणवा माटे अध्यापक पासे मोकल्यो त्यां ते हमेशां भणवा लाग्यो, पण तेना मुखमां एक अक्षरनी पण स्फूर्ति थइ नहीं. अनुक्रमे ते युवावस्थाने पाम्यो, एटले पूर्व कर्मना उदयथी तेने कुष्ट (कोढ) नो व्याधि थयो, तेथी तेनुं शरीर क्षीण थवा लाग्युं.

तेज नगरमां सात करोड सोनामोहोरनो अधिपति सिंहदास नामनो श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने कर्पूरतिलका नामे पत्नी हती. तेमनी पुत्री गुणमंजरी नामनी बाल्य वयथीज रोगी अने मुंगी हती. तेना रोगनी निवृत्तिने माटे श्रेष्ठीए अनेक उपायो कर्या, पण ते सर्वे उखर भूमिमां वृष्टिनी जेम, खळ पुरुषना वचननी जेम अने शरद् ऋतुनी मेघगर्जनानी जेम निष्फळ गया. ते सोळ वर्षनी थइ तो पण तेनी साथे कोइए लग्न कर्या नहीं.

एकदा ते नगरमां चार ज्ञानने धारण करनार, बारसें छत्रु गुणना निधि अने धैर्यवडे मेरु पर्वतने पण तिरस्कार करनार एवा विजयसेन गुरु पधार्या. वनपाळना मुखथी तेमनुं आगमन सांभळी तेने पारितोषिक आपीने पौरजन सहित राजा गुरुने वांदवा गयो. गुरुने विधिपूर्वक वांदी नमीने गुरुनी पासे बेसी आ प्रमाणे देशना साभळी–

क्षपयेन्नारकः कर्म, बह्वीभिर्वर्षकोटिभिः ।
यत्तदुच्छ्वासमात्रेण, ज्ञानयुक्तस्त्रिगुप्तवान् ॥ १ ॥

भावार्थ—" नारकीना जीवो जेटलां कर्मने घणा करोडो वर्षे खपावे छे तेटलां कर्मने [1]त्रिगुप्तिमान ज्ञानी मात्र एक श्वासोच्छ्वासमा खपावे छे." वळी " छठ अठम दशम दुवाल्स विगेरे तप करनार अबुध जीवना आत्मानी जेटली शुद्धि थाय छे ते करतां अनेकगणी शुद्धि दररोज जमता एवा ज्ञानीना आत्मानी थाय छे. "ते ज्ञान पांच प्रकारनुं कहेलुं छे, तेमां पण श्रुत ज्ञान पोताने तथा परने उपकारी होवाथी श्रेष्ठ छे. बीजां चार ज्ञान मुंगा छे. एटले के तेओ पोताना स्वरूपने कहेवा पण समर्थ नथी, अने श्रुतज्ञान तो पोताने तथा परने प्रकाश करवामा दीवानी जेम समर्थ छे. वळी श्रुतज्ञान कोइने आपी शकाय छे अने कोइ पासेथी लइ पण शकाय छे, बीजां चार ज्ञान कोइने आपी शकातां नथी अने कोइनी पासेथी लइ पण शकातां नथी. तीर्थंकरनामकर्म पण धर्मो-

[1] मन, वचन अने कायानी गुप्ति

पदवडे करीनेज निर्जरा पामे छे. तथी अध्ययन, श्रवण विगेरथी निरंतर श्रुत ज्ञाननी आराधनामां यत्न करवो. जे अज्ञानी जीवो मन, वचन अने कायाना योगे करीने ज्ञाननी आशातना करे छे तेओ शरीर रोगी तथा शून्य मनवाळा तेमज मुगा विगेर थाय छे, अने अनेक भवमां परिभ्रमण करे छे कह्युं छे के—

अज्ञानतिमिरग्रस्ता, विषयामिषलंपटा ।

भ्रमंति शतशो जीवा, नानायोनिषु दुःखिता. ॥ १ ॥

भावार्थ—" अज्ञानरूपी अंधकारथी ग्रस्त अने विषयरूपी आमिष (मांस) मां लंपट एवा सेंकडो जीवो नाना प्रकारनी योनिमां दुःखीपणे परिभ्रमण करे छे. "

इत्यादि धर्मदेशना सांभळीने सिंहदासे विज्ञप्ति करी के—" हे भगवन ! मारी पुत्रीना शरीरमां क्या कर्मथी व्याधिओ थया छे ? " त्यारे सूरि महाराज बोल्या के—" श्रेष्ठी ! तारी पुत्रीए पूर्व भवमां बांधेला कर्मोनो संबंध सांभळ—धातकी खंडमां खेटकपुर नामना नगरने विषे जिनदेव नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने सुंदरी नामे प्राणप्रिया हती तेमने पांच पुत्रो तथा चार पुत्रीओ थइ हती. श्रेष्ठीए पांच पुत्रोने भणवा माटे मोटा उत्सवपूर्वक अध्यापक पासे मूकया. परंतु तेओ परस्पर चपळता, आळस अने अविनय करता सता त्यां रहेवा लाग्या. कह्युं छे के—

आरोग्यबुद्धिविनयोद्यमशास्त्ररागा

पञ्चान्तरा पठनसिद्धिकरा नराणाम् ।

आचार्यपुस्तकनिवाससहायवस्त्रा

बाह्याश्च पञ्च पठनं परिवर्धयन्ति ॥ १ ॥

भावार्थ—" आरोग्य, बुद्धि, विनय, उद्यम अने शास्त्रपर प्रीति—ए पांच अभ्यंतर कारणो मनुष्योना अभ्यासनी सिद्धि करनारां छे, अने अध्यापक, पुस्तक, निवास, सहाय तथा खावा पीवानी सगवड—ए पांच बाह्य कारणोथी विद्या वृद्धि पामे छे. "

एकदा ते उन्मत्त छोकराओने पंडित शिक्षा करी, अने " कराग्रे वसति विद्या " एटले " सोटीना अग्र भागने विषे विद्या वसे छे " एम विचारीने तेओने सोटीवती मार्या, तथी तेओ रोता रोता घेर आव्या, अने सोटीथी शरीर

उपर पडेला क्षतने पोतानी माने बताव्या. ते जोइने तेनी मा सुंदरी बोली के–" हे पुत्रो! भणवाथी शुं विशेष छे? केमके जन्म, जरा अने मृत्यु तो भणेल के अभण कोइने छोडता नथी." कह्युं छे के–

पठितेनापि मर्तव्यं, शठेनापि तथैव च।
उभयोर्मरणं दृष्ट्वा, कंठशोषं करोति कः ॥ १ ॥

भावार्थ—" भणेलो माणस पण मृत्यु पामे छे अने मूर्ख पण मृत्यु पामे छे; ते बन्नेनुं मरण जोइने कयो माणस फोकट भणीने कंठनु शोषण करे?" वळी–

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पंडितः स श्रुतिमान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेनी पासे द्रव्य छे ते पुरुष कुलीन छे, ते पंडित छे, ते शास्त्रनो जाणनार छे, ते गुणज्ञ छे, ते वक्ता छे अने तेज दर्शन करवा लायक छे, अर्थात् सर्वे गुणो कंचननोज आश्रय करे छे."

वळी धनवाळा महा मूर्ख माणसनी पासे पण पंडितो दैन्य वचनो बोले छे वळी बहुधा पंडितो निर्धनज होय छे. माटे हे पुत्रो! मूर्खताज श्रेष्ठ छे, तेथी हवे आजथी तमारे भणवा जवु नहीं. कदाच तमारो महताजी तमने तेडी जवा आवे तो तेने दूरथी पथ्थरवडे मारजो अने तमने मार्यानु फळ एक वखतमांज बतावी देजो, इत्यादि शीखामण आपीने पुत्रपरना रागथी अने ज्ञानपरना द्वेषथी लेखण, पाटी, पुस्तक विगेरे सर्व अग्निमां नांखी बाळी दीधां.

एक दिवस आ व्यतिकर जाणीने श्रेष्ठीए पोतानी स्त्रीने कह्युं के–" हे भद्रे! तें आवी मूर्खता भरेली चेष्टा केम करी? आ मूर्ख रहेला पांचे पुत्रोनो विवाह अने उद्धार शी रीते थशे?" कह्युं छे के–

क्षणं रक्ता विरक्ताश्च, क्षणं सर्वेषु वस्तुषु।
अज्ञानेनैव कार्यंते, प्राणिनः कपिचापलम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" क्षणवारमां सर्व वस्तुओपर आसक्ति अने क्षणवारमां विरक्ति, ए प्रमाणेनी कपिना जेवी चपलता अज्ञानवडेज प्राणीओ करे छे." वळी–

माता वैरी पिता शत्रु, येन बाला न पाठिताः।
सभामध्ये न शोभन्ते, हंसमध्ये बको यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेणे पोताना बाळकोने भणाव्या नथी ते मातापिता तेमना वैरी अने शत्रुज समजवा, केमके हंसमां बगलानी जेम ते अज्ञानी पुत्रो विद्वाननी सभामां शोभता नथी."

आ प्रमाणे सांभळी सुंदरी क्रोधीने बोली के-" तमे पंडित छो, तेथी शुं थयुं ? शुं तमे जगतनुं दारिद्र्य कार्युं ? बाकी सुख तो पुण्यथीज मळे छे, कांइ भणवा भणाववाना जंजाळथी मळतुं नथी." आवुं मूर्खताभरेलुं पोतानी स्त्रीनुं भाषण सांभळीने श्रेष्ठीए ते वखत तो मौन धारण कर्युं. कह्युं छे के—

उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शांतये ।
पय पान भुजंगानां, केवलं विषवर्धनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मूर्खने उपदेश आपवो, ते तेना क्रोधने माटेज थाय छे, शांतिने माटे थतो नथी केमके सर्पने दूध पावाथी केवळ विषनीज वृद्धि थाय छे."

एक दिवसे श्रेष्ठीए पोतानी स्त्रीने कह्युं के-" हे प्रिया ! आपणा पुत्रोने कोइ कन्या आपतुं नथी. परंतु उलटा एम कहे छे के-

मूर्खनिर्धनदूरस्थ, शूर मोक्षाभिलाषिणाम् ।
त्रिगुणाधिकवर्षाणामेषां कन्या न दीयते ॥ १ ॥

भावार्थ—" मूर्खने, निर्धनने, दूर देशमां रहेनारने, शूरवीरने, मोक्षना अभिलाषीने अने कन्या करतां त्रणगणी उम्मरथी अधिक वयवाळाने[१] कोइ कन्या आपतुं नथी. माटे हे प्रिया ! तें आ पुत्रोनो अवतार व्यर्थ कर्यो." सुंदरी बोली के-" एमां मारो कांइ पण दोष नथी, तमारोज दोष छे. केमके पुत्रो पिताना जेवा होय छे, अने पुत्रीओ माताना जेवी होय छे." आ वचन सांभळीने श्रेष्ठीने क्रोध चड्यो एटले बोल्या के-"हे दुर्भागी! हे पापणी! हे शंखणी ! तुं मारा सामुं बोले छे ?" सुंदरी बोली के-" हे मूर्ख ! पापी तो तारो बाप के जेणे कुतरानी पूछडी जेवा वक्र बुद्धिवाळा तने उत्पन्न कर्यो." आ प्रमाणे सांभळी क्रोध पामेला श्रेष्ठीए तेने पथ्थर मार्यो, ते तेना मर्मस्थानमां वागवाथी तत्काळ मरण पामी. हे शेठ ! ते सुंदरी मरीने तारे घेर पुत्रीपणे अवतरी छे. तेणे पूर्व भवे ज्ञाननी विराधना करवाथी ते आ भवमां घणुं दुःख भोगवे छे."

---

१ कन्या दश वर्षनी कहेवाय ॥ एटले त्रीश वर्षथी अधिक वयवाळाने

आ प्रमाणेनां गुरुनां वचनो सांभळीने गुणमंजरीने जातिस्मरण थयु, तेथी ते बोली के-" हे भगवन् ! आपनां वचनो सत्य छे. में पूर्व भवमां स्वेच्छाए वर्ती जे कर्म बांध्यु छे तेनु आ फळ मने प्राप्त थयु छे. ते विलाप करवाथी के खेद करवाथी नाश पामे तेम नथी." पछी श्रेष्ठीए गुरुने कर्यु के-" हे भगवन् ! जेणे व्याधिनुं आदान निदान कर्यु होय छे तेज तेनु औषध पण बतावी शके छे. आपना विना अभ्यंतर कारण कोण जाणी शके तेम छे ? माटे हवे आपज कृपा करीने तेना निवारणनो उपाय बतावो." त्यारे गुरु बोल्या के-" हे श्रेष्ठी ! विधिपूर्वक ज्ञानपंचमीनु आराधन करवाथी सर्व प्रकारनु सुख प्राप्त थाय छे. तेनो विधि आ प्रमाणे छे-

कार्तिक शुद्धि पांचमने दिवसे ठवणी अथवा नांदीनु स्थापन करीने तेनी सन्मुख आठ स्तुतिवडे देव वांदवा. पछी ज्ञानपंचमीनो तप अंगीकार करवानो आलावो गुरुमुखे सांभळीने ते तप अंगीकार करवुं. ते तप पांच वर्ष ने पांच महिना सूधी करवानो छे. ते तपने दिवसे बे वखत एटले सांज सवार प्रतिक्रमण करवुं, त्रिकाल देववंदन करवुं, तथा उपवास करीने संपूर्ण पौषधव्रत ग्रहण करवु. अने पांच मूळभेद तथा एकावन उत्तर भेदनां नाम ग्रहणपूर्वक एकावन लोगस्सनो कायोत्सर्ग करवो. ठवणी उपर पुस्तक स्थापीने तेनी एकावन प्रदक्षिणा देवी तथा एकावन खमासमण देवां. अने ते दिवसे नवुं शास्त्र भणवु, भणाववुं तथा श्रवण करवुं. कह्युं छे के-

अपूर्वज्ञानग्रहणं, महती कर्मनिर्जरा ।
सम्यग्दर्शननैर्मल्यात्, कुरुते तत्त्वप्रबोधतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" अपूर्व ज्ञान ग्रहण करवाथी मोटी कर्मनी निर्जरा थाय छे, अने सम्यग् दर्शननी निर्मळता थवाथी तत्त्वनो पण बोध थाय छे."

ज्ञानपंचमीने दिवसे जो पोसह कर्यो न होय तो पाट उपर पुस्तकनी स्थापना करीने तेनी जमणी बाजु पांच दीवेटनो दीवो करवो तथा सन्मुख पांच स्वस्तिक (साथीया) करवा, ज्ञानना भंडारोनी पूजा करवी, ज्ञान द्रव्यनी वृद्धि करवी अने "ॐ ह्रीं नमो नाणस्स" ए मंत्रनो बेहजार[1] जाप करवो. आ प्रमाणे कदाच दर मासे करी शके नहीं, तो जीवन पर्यंत कार्तिक शुदि पांचमे तो जरुर ए प्रमाणे ज्ञाननी आराधना करवी. अथवा ते दिवसे जिनेश्वरनी पासे

१ वीश नोकारवाळी.

अने पुस्तकनी समीपे चैत्यवन्दन करी अंतस्तव कहीने " मतिज्ञानाराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग " एम कही वंदण० अने अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमोर्हत्० कही नीचेनुं काव्य गंभीर स्वरथी बोलवुं.

अष्टाविंशतिभेदभिन्नगदित ज्ञान शुभाय मति
सप्रज्ञाभिनिबोधिकश्रुतनिभेर्हेतुश्च बुद्धिप्रज्ञे ।
पर्याया कथिता इमे बहुविधा ज्ञानस्य चैकार्थिन
सम्यग्दर्शिनिस्तःक्रमात्तकथितं वदामि तद्भावतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" पहेलुं मतिज्ञान अठावीश प्रकारनुं कहेलुं छे, ते शुभकारी छे, चार प्रकारनी प्रज्ञा सहित छे, आभिनिबोधिक छे, श्रुतज्ञाननो हेतु छे. बुद्धि, प्रभा विगेरे तेना पर्यायो बहु प्रकारना कहेला छे. ते ज्ञान समकितधारीने होय छे, एवा तीर्थंकरे कहेला मतिज्ञानने हुं भावथी वांदुं छुं."

पछी चैत्यवन्दन विगेरे पूर्वे कह्या प्रमाणे करीने श्रुतज्ञानाराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग कही वंदण० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नीचेनुं काव्य भणवुं.

अन्यज्ज्ञानचतुष्टय स्वविषयनैवाभिधातुक्षम
श्रीमत्केवलिनोऽपि वर्णनिकरज्ञानेन तत्त्व जगु ।
स्पष्ट स्वात्मपरप्रबोधनविधौ सम्यक् श्रुत सूर्यव-
द्भेदा पूर्वमिता श्रुतस्य गणिभिर्वैद्या स्तुवे तान्मुदा ॥२॥

भावार्थ—" श्रुतज्ञान शिवायना बीजा चारे ज्ञान पोताना विषयने कहेवा समर्थ नथी श्रीमान केवळी पण वर्णसमुदायना ज्ञानवडेज तत्त्व जणावे छे. वळी सम्यग् श्रुतज्ञानज सूर्यनी जेम पोताने तथा परने बोध करवामां स्पष्ट छे ते ज्ञानना चौद भेद छे, अने तेने गणधरो वांदे छे आवा श्रुतज्ञानने हुं हर्षथी स्तुति करुं छुं "

पछी त्रीजुं चैत्यवन्दन करीने " अवधिज्ञानाराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग " विगेरे पूर्वोक्त प्रकार कही काउस्सग्ग पारी नीचेनुं काव्य भणवुं

अल्प तत्पनकावगाहनसमं चासख्यलोकाग्रग
ज्ञान स्यादवधेश्च रूपिविषय सम्यग्दृशां तद्भुजम् ।

देवादौ जवप्रात्तिज नृपु तथा तिर्यक्षु जावोद्भवं
षड् जेदा प्रजुजिश्च यस्य कथिता ज्ञानं जजे तत्सदा ॥ ३ ॥

भावार्थ—"त्रीजु अवधिज्ञान जे छे तेनी अवगाहना जघन्य [1]पनकना जेटली छे, अने उत्कृष्टी असंख्य लोकाकाश प्रमाणे छे, ते ज्ञान रूपी द्रव्यने जाणी शके छे; सम्यग्दृष्टि जीवने शुभकारी होय छे. ते देव तथा नारकीने भव प्रत्यये होय छे, अने मनुष्य तथा तिर्यंचने भावथकी एटले गुणप्रत्यये उत्पन्न थाय छे. प्रभुए तना छ भेद कह्या छे. एवा अवधिज्ञानने हुं निरंतर भजुं छु."

पछी चोथु चैत्यवदन करी "मनःपर्यवज्ञानाराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग" एम बोली बीजु बधु पूर्वोक्त प्रकारे कहीने नीचेनुं काव्य भणवुं.

साधूनामप्रमादतो गुणवतां तूर्यं मनःपर्ययं
ज्ञानं तद्द्विविधं त्वनिंद्रियजवत्तत्स्वात्मकं देहिनाम् ।
चेतोद्रव्यविशेषवस्तुविषयं द्वीपे च सार्धद्विके
सकृज्ज्ञानगुणांचितान् व्रतधरान् वंदे सुयोगैर्मुदा ॥ ४ ॥

भावार्थ—"अप्रमत्त गुणस्थाने रहेला साधुओने चोथुं मनःपर्यवज्ञान होय छे, तेना बे भेद छे. ते इंद्रियना विषयवाळुं नथी पण आत्मविषयी छे. अढीद्वीपमां रहेला प्राणीओनां चित्त द्रव्यमां रहेली सर्व वस्तुना विषयने जाणे छे. ते ज्ञानने धारण करनारा गुणी मुनीओने हुं हर्षथी भावे करीने वांदुं छुं."

पछी पांचमु चैत्यवंदन करी "केवलज्ञानाराधनार्थं करेमि काउस्सग्ग" विगेरे सर्व पूर्वोक्त रीते कही नीचेनु काव्य भणवुं.

निर्भेदं विशदं करामलकवज्ज्ञेयं परिच्छेदकं
लोकालोकविजासक चरमचिन्नात्यं व्रजेत्स्वात्मतः ।
निद्रास्वप्नसुजागरातिगदशा तुर्या दशा संगत
वंदे कार्तिकपंचमीसितदिने सौजाग्यलक्ष्म्यास्पदम् ॥ ५ ॥

भावार्थ—"छेल्लुं (पांचमुं) केवलज्ञान छे, ते एकज प्रकारनुं छे, करामलकनी जेवुं निर्मल छे, सर्व वस्तुनो परिच्छेद करनारुं छे, लोक तथा अलोकने प्रकाश करनार छे, ज्ञानवाळाना आत्माथकी कोइ वखत पण नाश थता नथी

1 मूळ पनकशरीरावगाह शरीर

जइ पडतुं ज नथी, अने जे ज्ञान निद्रा, स्वप्न अने जाग्रत ए त्रण दशाने उल्लं-घीने चोथी उजागर दशाने पामेलु छे. एवा सौभाग्यलक्ष्मीना स्थान रूप केवल-ज्ञानने हुं कार्तिक शुदि पंचमीने दिवसे वादुं छुं."

आ प्रमाणे पांचे ज्ञाननी आराधनानो विधि जाणवो.

ए रीते ६७ मास सुधी आराधना करवावडे तप पूर्ण थाय त्यारे चैत्य-ना तथा ज्ञान दर्शन अने चारित्रना उपयोगी दरेक उपकरणो पांच पांच मेळवीने उद्यापन करवुं. कह्युं छे के—

उद्यापनं यत्तपसः समर्थने, तच्चैत्यमौलौ कलशाधिरोपणम्।
फलोपरोपोऽक्षतपात्रमस्तके, तांबूलदानं कृतभोजनोपरि॥ १॥

भावार्थ—"तपना समर्थन माटे उद्यापन करवुं ते चैत्यना शिखरपर कलश चडाववा जेवुं छे, अक्षत पात्र उपर फळ मूकवा जेवुं छे, अने भोजन करावीने तांबूल आपवा जेवुं छे"

इत्यादि गुरुनो उपदेश सांभळीने विधिपूर्वक गुणमंजरीए ज्ञानपंचमीनुं तप अंगीकार कर्युं.

त्यारपछी अजितसेन राजाए सूरिने पूछयुं के—"हे स्वामी! मारा पुत्र वरदत्तने कया कारणथी कुष्ठ व्याधि थयो छे? अने शा कारणथी अभ्यास कर्या छतां काइ आवडतुं नथी?" गुरुए कह्युं के—"तेनो पूर्व भव सांभळो—

आ भरतक्षेत्रमां श्रीपुर नामना नगरने विषे वसु नामे एक श्रेष्ठी रहतो हतो. तेने वसुसार अने वसुदेव नामना बे पुत्रो हता. तेओ एक दिवस क्रीडा करवाने माटे वनमां गया. त्यां गुरुना मुखथकी धर्मदेशना सांभळी. पछी घेर आवीने पितानी रजा लइ ते बन्ने भाइओए चरित्र ग्रहण कर्युं. तेमां नानो भाइ वसुदेवमुनि सिद्धांतरूपी समुद्रनो पारगामी थयो, अने अनुक्रमे आचार्यपद पाम्यो. ते हमेशां पांचसें साधुओने वाचना आपतो हतो. एक दिवस ते आचार्य संथारामां सुता हता, ते वखते कोइ मुनिए आगमनो अर्थ पूछयो. तेना गया पछी बीजा मुनि आव्या, ते पण अर्थ पूछीने गया. एम एक पछी एक घणा साधुओ आवी पूछी पूछीने गया. आचार्यने काइक निद्रा आवी, तेवामां वळी बीजा कोइ साधुए आवीने पूछयुं के—"हे पूज्य! आनो आलावो पद, वाक्य कहो अने तेनो अर्थ समजावो." त्यारे सूरिए मनमां विचार कर्यो

१ उजमणुं

के-" अहो ! मारो मोटो भाइ तो मूर्ख सुखे छे, भावे त्यारे भोजन करे छे, अने स्वेच्छाए बोले छे, आवुं सुख कोइ पण प्रकारे मने मळे तो सारुं. केमके-

> मूर्खत्वं हि सखे ममापि रुचितं तस्मिन् यदष्टौ गुणा
> निश्चिंतो बहुभोजनोऽत्रपमना नक्तंदिवाशायकः ।
> कार्याकार्यविचारणांधबधिरो मानापमाने समः
> प्रायेणामयवर्जितो दृढवपुर्मूर्खः सुखं जीवति ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे मित्र ! मूर्खपणु मने पण रुचे छे. केमके तेमां आठ गुणो रह्या छे. ते आ प्रमाणे—प्रथम तो मूर्खने कांइ पण चिंता होती नथी १. घणुं भोजन करे छे २. लज्जा रहित होय छे, ३ रात्रिदिवस सुवानो वखत मळे छे ४. कर्तव्य तथा अकर्तव्यना विचारमा अंध तथा बधिर होय छे ५. मान तथा अपमानने विषे समान होय छे ६. घणु करीने व्याधि रहित होय छे ७. अने शरीरे पुष्ट होय छे ८. माटे मूर्ख माणस सुखे जीवे छे.

माटे मारे आजथी भणवा भणाववानु कामज करवुं नहीं. आ प्रमाणेनो विचार करीने ते आचार्ये पुण्यरूपी अमृतनो भरलो घडो भांगी नाख्यो, अने पापनो घडो भरीने बार दिवस सुधी मौन रह्या. पछी ते पापनी आलोचना कर्या विना रौद्रध्यानवडे मृत्यु पाम्या. ते आ तारा पुत्रपणे उत्पन्न थयेला छे, अने पूर्वे बांधेला कर्मथी मूर्ख तथा कोढी थयेल छे ते सूरिनो मोटो भाइ मरण पामीने मानससरोवरमा हंस थयो छे.

आ प्रमाणे गुरु महाराजे कहेल पूर्व भव सांभळीने वरदत्तने जातिस्मरणज्ञान थयुं. एटले ते बोल्यो के-" अहो ! भगवंतनुं वचन अक्षरे अक्षर सत्य छे. अहो ! केवुं ज्ञान !," पछी राजाए कह्युं के-" हे भगवन् ! आ मारा पुत्रना रोगो शी रीते जशे ? " गुरुए कह्यु के-" पूर्वे कहेला विधि प्रमाणे यथाशक्ति पंचमी तप करवाथी सर्व सारु थशे. " पछी कुमारे पण गुणमंजरीनी जेम विधिपूर्वक ते तप अंगीकार कर्युं. तेना आराधनथी ते बंनेना सर्व व्याधिओ नाश पाम्या.

वरदत्त कुमार स्वयंवर आवेली एक हजार राजकन्याओने परण्यो, अने अनुक्रमे राज्यसुख भोगवी पोताना पुत्रने राज्य सोंपीने दीक्षा ग्रहण करी.

गुणमंजरी पण उत्तम सौंदर्य पामी. तेनुं पाणिग्रहण जिनचंद्र नामना श्रेष्ठीपुत्र साथे थयुं. तेणे घणा काळ सुधी संसारसुख भोगवी विधिपूर्वक तपनुं उद्यापन करीने दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे वरदत्त ने गुणमंजरी बन्ने काळ करीने

वैजयन्त नामना अनुत्तर विमानमां उत्तम देवता थया

आयुष्यना क्षये वैजयंत विमानमांथी च्यवीने वरदत्तनो जीव जंबूद्वीपना विदेह क्षेत्रमां पुंडरीकिणी नगरीमां अमरसेन राजानी भार्या गुणवतीनी कुक्षिथी शूरसेन नामे पुत्रपणे उत्पन्न थयो. युवावस्था पाम्ये सते ते सो राजकन्याओने परण्यो. तेना पिता तेने राज्य सोंपीने परलोकमां गया. एकदा ते नगरीनी समीपना उद्यानमां श्री सीमंधर स्वामी समवसर्या, ते वात सांभळीने शूरसेन राजा त्यां गया, अने विधिपूर्वक भगवानने वांदीने देशना सांभळी. देशनामां भगवाने कह्युं के–" हे भव्य प्राणीओ ! सौभाग्यपंचमी एटले ज्ञानपंचमीनुं तप वरदत्तनी जेम करवुं." ते सांभळीने शूरसेन राजाए पूछ्युं के–" हे भगवन् ! आपे जेनी प्रशंसा करी ते वरदत्त कोण हतो ?" त्यारे भगवाने तेनुं सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने राजा हर्षित थयो. पछी ते भवमां पण तेणे घणा पौरजनो सहित ज्ञानपंचमीनुं व्रत अंगीकार कर्युं. दश हजार वर्ष सुधी राज्यनुं प्रतिपालन कर्या पछी पोताना पुत्रने राज्य सोंपी पोते सीमंधरस्वामी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. ते राजर्षि एक हजार वर्ष सुधी विधिपूर्वक चारित्र पाळी केवळज्ञान प्राप्त करीने मोक्षे गया.

हवे गुणमंजरीनो जीव वैजयन्त विमानमांथी च्यवीने जंबूद्वीपना महाविदेह क्षेत्रमां रमणी नामना विजयमां अमरसिंह राजानी पत्नी अमरवतीना गर्भमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. प्रसव थया बाद पिताए तेनुं सुग्रीव नाम पाड्युं. ते वीश वर्षनो थयो त्यारे तेने राज्य सोंपीने तेना पिताए दीक्षा ग्रहण करी.

सुग्रीव राजाए घणी राजकन्याओनुं पाणिग्रहण कर्युं. तेने चोराशी हजार पुत्रो थया. पछी तेणे पुत्रने राज्य आपीने दीक्षा ग्रहण करी. यथाविधि चारित्र पाळवावडे अने तपवडे तेमणे केवळज्ञान प्राप्त कर्युं. देशनामां सर्वत्र पोतानुं चरित्र कहेवा लाग्या. आ प्रमाणे ते राजर्षि एक लाख पूर्व सुधी चारित्रनुं सेवन करीने अंते परम ज्ञानमय, चिद्रूप, चिदानन्द अने चिद् घन एवा मोक्ष मह्ये पाम्या.

" जे ज्ञानपंचमीनुं आराधन करवाथी वरदत्त तथा गुणमंजरीने बन्ने प्रकारनी सौभाग्य लक्ष्मी प्राप्त थइ ते ज्ञानपंचमी जेवो बीजो कोइ पण दिवस ज्ञाननी वृद्धि करवामां श्रेष्ठ नथी, माटे आत्मानुं हित इच्छनार पुरुषोए विधिपूर्वक ज्ञानपंचमीनुं आराधन करवुं "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तम्भस्य
पञ्चदशाधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २१५ ॥

व्याख्यान २१६ मुं

अभयदानविषे

अभयं सर्वसत्त्वेभ्यो, यो ददाति दयापरः ।
तस्य देहाद्विमुक्तस्य, भयं नास्ति कुतश्चन ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे दयालु मनुष्य सर्व प्राणीओने अभयदान आपे छे ते मनुष्य देहथी मुक्त थाय, अर्थात् मृत्यु पामे त्यारे पण तेने कोइथी भय रहतो नथी."

अभयदान उपर दृष्टांत

जयपुर नामना नगरमां धना नामनो एक माळी रहतो हतो तेणे पेंद्री एवा पांच पूरानुं दयाथी रक्षण कर्युं. अनुक्रमे ते माळी मरीने कुलपुत्र थयो. बाल्यावस्थामांज तेना माबाप मरी गया, तेथी ते परदेश जवा नीकळ्यो. रस्तामां रात्रीनो समय थवाथी ते कोइ अरण्यमां एक वटवृक्षनी नीचे रात्रीवासो रह्यो. ते वृक्ष उपर पांच यक्षो रहेता हता तेओए तेने दीठो, एटले ज्ञानवडे " आ आपणो पूर्व भवनो उपकारी छे " एम ओळखीने तेओए तेने कह्युं के—" तने आजथी पांचमे दिवसे राज्य मळशे " एवुं सांभळीने ते कुलपुत्र खुशी थयो. प्रातःकाळे त्यांथी चालतां ते पांचमे दिवसे वाराणसी नगरीए जइ पहोंच्यो त्यांनो नरपाळ नामनो राजा पुत्ररहित मरण पाम्यो हतो. तेनुं राज्य तेने मळ्युं. पछी ते प्रधान उपर राज्यनो भार आरोपण करीने सुखमांज मग्न रहेवा लाग्यो. अन्यदा सीमाडाना राजाओ तेनुं राज्य उच्छेदन करवा माटे चडी आव्या, त्यारे प्रधाने आवीने तेने द्यूतक्रीडा करतां अटकावी ते वात करी अने द्यूत तजी दइ लडाइ करवा माटे आववा कह्युं, पण तेणे मान्युं नहीं. पछी तेनी स्त्रीए पण रमतमां पासा नांखतां अटकवानुं कह्युं, त्यारे ते बोल्यो के—

स वटः पंच ते यक्षाः, ददति च हरंति च ।
अक्षान् पातय कल्याणि, यद्भाव्यं तद्भविष्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे कल्याणी ! वट वृक्षपर रहेला ते पांच यक्षोए राज्य आप्युं छे, अने तेने लेवुं हशे तो लइ लेशे, माटे हे स्त्री ! तुं तारे पासा नांख, जे थवानुं हशे ते थशे. "

आ प्रमाणे कह्युं, एटले ते यक्षोए ते शत्रुओने बांधी-लावीने तेने पगे लगाड्या. ते जोइने लोको पण आश्चर्य पाम्या.

एक दिवस ज्ञानी गुरुनो समागम थवाथी राजाए पोतानो पूर्व भव पूछ्यो. तेना उत्तरमा गुरुए कह्यु के–" पूर्व भवमा तें पांच पूरानु रक्षण कर्युं हतुं, ते पांचे मरीने ५ पुरुने यतो थया छे, तेओएज तारा राज्यनु रक्षण कर्युं छे. " ते सांभळीने राजाए वाव, कुवा, तलाव विगेरे जळाशयोमा गळणीओ मुकावी, अने सर्वत्र अमारीरोपणा कराबी.

हवे जे पापी मनुष्यो मांस खाय छे तेना प्रत्ये उपदेश करे छे के– एकदा श्रेणिकराजाए सभामा पूछ्यु के–" हालमा आपणा नगरने विषे कइ वस्तु सोंथी सोंघी छे ? " त्यार निर्दय एवा क्षत्रियो बोल्या के–" हे महाराजा ! हालमां मांस सस्तु छे. " आ प्रमाणे सांभळीने अभयकुमार मंत्रीए चिंतव्यु के–" आजे हु आ लोकोनी परीक्षा करु के जेथी फरीने आवु बोले नहीं. " एम विचारी रात्रीने वखते अभयकुमार सर्व क्षत्रियोने घेर पृथक् पृथक् गयो, अने तेमने कह्यु के–" हे राजपुत्रो ! आजे राजाने महा व्याधि उत्पन्न थयो छे, वैद्योए घणा प्रकारनी औषधिओ आपी पण कांइ फेर पड्यो नहीं, तेथी तेमणे कह्युं छे के ' जो मनुष्यना कलेजानु मात्र बे टांक जेटलु मांस मळे तो राजा जीवे तेम छे, नहीं तो मरी जशे, माटे तमे तेना ग्राममांथी आजीविका करनार छो, तो शुं एटलु काम पण नहीं करो ? " आ प्रमाणे सांभळी जेने त्यां प्रथम गयो ते राजपुत बोल्यो के–" हजार महोर लइने मने तो छोडो, अने बीजे ठेकाणे जाओ. " त्यार अभयकुमारे तेटलु द्रव्य लीधु, अने बीजे स्थळे जइने त्या पण ते प्रमाणेज कर्युं, त्यार तेणे पण हजार सोनामहोर आपी, पण मांस आप्यु नहीं. एवी रीते सर्व स्थळे भमता भमता आखी रात्री निर्गमन करीने एक लाख सोनामहोर एकठी करी. पछी प्रात काळे सभामा आवी सर्व क्षत्रियोने ते द्रव्य देखाडीने अभयकुमार बोल्यो के–" हे क्षत्रियो ! तमे बोल्या हता के हालमां मांस सोंघी सस्तु छे, परतु मने तो आटला बधा द्रव्यथी पण बे टांक मांस मळ्यु नहीं. " ते सांभळीने सर्वे क्षत्रियो लज्जित थइने मौन रह्या. त्यारे अभयकुमार बोल्यो के–" सर्वने पोतानो आत्मा वहालो होय छे. तमे मात्र पारका मांसना लोलुपी थइने एवुं अन्यथा वाक्य बोल्या छो. कह्यु छे के–

अमेध्यमध्ये कीटस्य, सुरेन्द्रस्य सुरालये ।
समाना जीविताकाङ्क्षा, समं मृत्युभयं द्वयोः ॥ १ ॥

भावार्थ–" विष्टामा रहेला कीडाने अने स्वर्गमा रहेला सुरेन्द्रने जीववानी आकांक्षा सरखीज छे, अने ते बन्नेने मृत्युनो भय पण सरखोज छे." वळी

दुर्योनिमपि संप्राप्तः, प्राणी मर्तुं न वांछति ।
स्वादुवन्तो भवन्ति स्वस्वाहाराः कुक्षितावपि ॥ २ ॥

भावार्थ—"दुष्ट योनिमां जन्मेलो जंतु पण मरवाने इच्छतो नथी, केमके खराब पृथ्वीमां पण प्राणीओने पोतपोताना आहार स्वादवाळाज लागे छे." वळी जे मनुष्य हिंसा करे छे ते अति दुःखी थाय छे. जेम—

गोपो बब्बूलशूलाग्रे, प्रोतयूकोत्थपातकात् ।
अष्टोत्तरशत वारान्, शूलिकारोपणान्मृतः ॥ १ ॥

भावार्थ—"एक गोवाळे बावळनी शूळ उपर जू परोवी हती, ते पापथी ते गोवाळ एकसो ने आठ वार शूळीए चडवानी शिक्षाथी मरण पाम्यो" तेनुं दृष्टांत आ प्रमाणे—

नागपुर नामना नगरमां माधव नामे एक गोवाळ रहेतो हतो. ते एक दिवस गायो चारवा माटे मोटा अरण्यमां गयो. त्यां सूर्यनो प्रचंड ताप लागवाथी एक बावळना झाड नीचे बेठो, तेवामां तेना माथामांथी एक जू तेना खोळामां पडी. ते जोइने ते निर्दय गोवाळे तेने "आ जू मारा देहनुं सत्त्व (लोही) पी जाय छे." एम विचारीने बावळनी तीक्ष्ण शूळ उपर तेने परोवी. ते पापना उदयथी तेज भवमां ते गोवाळ चोरीना गुन्हामां आवी शूळीनी शिक्षा पामीने मरण पाम्यो त्यां रपछी ते एज प्रमाणे एकसो ने सात वार जुदा जुदा भवोमां चोरी विगेरेना दोषथी शूळीनुं दुःख भोगवीने मरण पाम्यो एकसो आठमा भवमां ते पापकर्मनो उदय थोडो रह्यो, त्यारे तेणे तापसी दीक्षा ग्रहण करी, अने सदा वनमां रहीने सुका पांदडां, फळ, फूल विगेरेनुं भक्षण करवा लाग्यो. ए प्रमाणे निःसंगपणे व्रतनुं पालन करतां तेने विभंग ज्ञान उत्पन्न थयुं. अन्यदा ते अरण्यनी नजीकना नगरमांथी राजाना अलंकारानी पेटी फोड चोरे उपाडी तेने पकडवा माटे राजाना सिपाइओ पाछळ दोडया. तेओने पाछळ आवता जोइने चोर ते रत्नालंकारनी पेटी अरण्यमां बेठा तापस पासे मूकी ने ते वड-वृक्ष उपर चडी गयो. सिपाइओ त्यां आव्या, तो तापस सुतेलो हतो, अने पासे पेटी पडेली हती. तेओ पेटी सहित तापसने पकडीने राजा पासे लइ गया. तापस विभंगज्ञानथी सर्व हकीकत जाण्या छतां पोताना पूर्वकृत कर्मने निंदतो सतो मौनज रह्यो. अन्यायी राजाए तेने शूळीपर चडाव्यो पूर्व कर्मना क्षयथी ते मरण पामीने देवता थयो

इति अभयदाने दृष्टांत

आ जगतमां दानना पांच प्रकार छे, ते आ प्रमाणे-

अभय सुपत्तदाणं, अणुकंपा उचिय कित्तिदाणं च।

दोहिंपि मुक्खो भणिओ, तिन्नि भोगाइ दियंति ॥ १ ॥

भावार्थ—" अभय दान, सुपात्र दान, अनुकंपा दान, उचित दान, अने कीर्ति दान, ए पांच प्रकारना दान छे. तेमा पहेला बे प्रकारना दान मोक्षने आपनार छे, अने पाछला त्रण प्रकारना दान सांसारिक सुखभोग आपनार छे. "

तेमा पहेलु हनन बंधन विगेरना भयथी भयभीत थयेला जंतुओना प्राणनु रक्षण करीने तेमने निर्भय करवा ते अभय दान कहेवाय छे. तेनुं स्वरूप उपर कहेवामां आव्यु छे

बीजु सुपात्र दान तेमा सु एटले सारु, अने पात्र एटले ज्ञानादि त्रण रत्ननुं स्थान. अथवा सु एटले अतिशये करीने अने पात्र एटले पापथी रक्षण करनार आ प्रमाणे अन्वर्थ संज्ञावाळु सुपात्र दान दुर्लभ छे.

त्रीजु अनुकंपा दान एटले दीन अने दु खी लोकोने पात्र तथा अपात्रनो विचार कर्या विना मात्र दयावडे अन्नादिक आपवुं ते कयु छे के—

दानकाले महेभ्यानां, किं पात्रापात्रचिंतया।

दीनाय देवदूष्यार्धं, यथादात् कृपया प्रभु ॥ १ ॥

भावार्थ—" दातारने दान देती वखते पात्र तथा अपात्रनो विचार शुं काम करवो ? जुओ, महावीर भगवाने कृपाथी अर्धु देवदूष्य गरीब (ब्राह्मण) ने आप्युं छे. "

आ दुषम कालने विषे जगडुशा नामना श्रावक नीचेना श्लोकमा लख्या प्रमाणे धान्यना मुंडा मात्र दयावडे बीजा राजाओने आप्या हता

अट्ठ य मुडसहस्स, विसलरायस्स बार हम्मीरे।

इगवीसय सुरत्ताणे, दुब्भिक्खे जगडुसाहुणा दिन्ना ॥ १ ॥

भावार्थ-जगडुशाह नामना श्रावक दुकाळना वखतमा विसलराजाने आठ हजार मुंडा, हमीरराजाने बार हजार मुडा अने दील्लीना सुल्तानने एकवीश हजार मुंडा धान्य आप्यु हतुं

१ धान्यनुं एक प्रकारनुं माप

नवकारवालि मणिअका, ते पर व्यलगा चार।
दानशाला जगडु तणी, दीसे पुढवी मुझार ॥

अर्थात्–ते दुकाळना वखतमां जगडुशाह ११२ दानशाळाओ स्थापी हती. दररोज प्रभातकाळे जगडुशाह जे ठेकाणे बेसीने यथेष्ट दान आपता हता त्यां कोइ लज्जावान कुलस्त्रीओ विगेरे प्रगटपणे दान लइ शके नहीं, तेमने प्रच्छन्न-पणे दान आपवा सारु एक पडदो बांधी राखवामां आवतो हतो के जेथी तेओ तेमां हाथ नाखीने दान लइ शके. एक दिवस विसलराजा पोताना भाग्यनी परीक्षा करवा माटे वेष बदलीने एकलो त्यां गयो, अने पडमांथी हाथ लांबो कर्यो. जगडुशाए शुभ लक्षणवाळो भाग्यशाळी हाथ जोइने विचार्युं के "जगतना मनुष्योने मानवा लायक कोइ राजानो आ हाथ छे हालमां दैवयोगे ते आवी स्थिति पामेलो जणाय छे माटे ते जींदगी पर्यंत सुखी थाय तेम हुं करूं." ए प्रमाणे विचारीने पोताना हाथनी आगळीमांथी मणिजडित्र मुद्रिका (वींटी) काढीने हाथमां मूकी ते जोइने राजा आश्चर्य पाम्यो क्षणवार पछी वळी तेणे डाबो हाथ पडदामांथी लांबो कर्यो, एटले जगडुशाए ते हाथमां पण बीजी वींटी आपी. ते बन्ने मुद्रिका लइने विसलराजा पोताना महेलमां गयो. बीजे दिवसे जगडुशाने बोलावीने " आ शुं छे? " एम कहीने ते बन्ने मुद्रिको बतावी. ते जोइने जगडुशा बोल्या के–

सर्वत्र वायसाः कृष्णाः, सर्वत्र हरिता शुकाः।
सर्वत्र सुखिनां सौख्यं, दुःखं सर्वत्र दुःखिनाम् ॥ १ ॥

भावार्थ—कागडाओ सर्वत्र काळाज होय छे, पोपटो सर्वत्र लीलाज होय छे, सुखी पुरुषोने सर्वत्र सुख होय छे, अने दुःखी पुरुषोने सर्वत्र दुःख होय छे."

आ प्रमाणे साभळीने खुशी थयेला राजाए जगडुनो प्रणाम[1] निषेध करीने तेने हाथी उपर बेसाडी तेने घेर मोकल्यो. आ प्रमाणे धार्मिकपणुं अनुकंपा दानवडेज शोभे छे. ए त्रीजुं अनुकंपा दान कह्युं

हवे चोथुं उचित दान कहे छे–योग्य अवसरे इष्ट अतिथि (प्राहुणा) ने, देवगुरुना आगमननी तथा नवा करेला प्रासादनी अने बिंबनी वधामणी आप-नारने, तेमज काव्य, श्लोक, कोइ सुभाषित के विनोदवाळी कथा विगेरे कहेनारने प्रसन्न चित्तथी जे दान आपवुं ते उचित दान कहेवाय छे. जेम चक्रवर्ती निरंतर

१ जगडुए राजाने

प्रभातकाळे विहार करता तीर्थंकरनी स्थितिना खबर आपनारने वर्षासन करी आपे छे. कह्युं छे के-"बार कोटी सुवर्ण अथवा बार लाख द्रव्य अथवा ■ लाख द्रव्य एटलुं चक्रवर्ती एक वखत प्रीतिदानमा आपे छे. सांप्रत काळमां पण श्रीसिद्धाचळ उपर प्रासाद पूरो थयानी वधामणी आपनारने वाग्भट्ट मंत्रीए सुवर्णनी बत्रीश जीभो आपी हती.

एकदा जुनागढनो खंगार नामनो राजा शीकार करवा गयो हतो त्यां घणा ससलाओनो वध करी तेने घोडाना पुंछडा साथे बांधीने पाछो आवतां ते मार्गथी तेमज परिवारथी भ्रष्ट थयो, अर्थात् एकलो भूलो पड्यो तेवामां एक बावळना वृक्षनी शाखा उपर चडीने बेठेला दुद्दळ नामना चारणने जोइने तेने पूछ्युं के-" अरे ! तुं मार्ग जाणे छे? " त्यारे ते दयाळु चारणे कह्युं के-(भाषा)

जीव वधता नरग गइ, अवधता गइ सग्ग ।

हुं जाणुं दो वाटडी, जिण भावे तिण लग्ग ॥ १ ॥

अर्थ—" जीवनो वध करनार नर्के जाय छे अने त्या पाळनारा स्वर्गे जाय छे, आ हुं तो ए बे मार्ग जाणुं छुं, तने गमे ते मार्गे जा "

आ प्रमाणे पेय करे तेवी दूध जेवी तेनी वाणी साभळीने ते राजाने तत्काळ विवेक उत्पन्न थयो तेथी तेणे त्यांज जीवनपर्यंत प्राणीवध करवानो नियम ग्रहण कर्यो, तथा ते चारणनो अश्वो तथा गाम विगेरे आपीने गुरुनी जेम सत्कार कर्यो.

विक्रम राजाए सिद्धसेन गुरुने मनवडे प्रणाम कर्यो, ते जाणीने गुरुए तेने धर्मलाभ आप्यो राजाए पूछ्युं के-" हे पूज्य गुरु ! आ धर्मलाभथी शुं लाभ थाय ? " त्यारे गुरुए कह्युं के-

दुर्वारा वारणेन्द्रा जिनपवनजवा वाजिनः स्यंदनौघा

लीलावत्यो युवत्यः प्रचलितचमरैर्भूषिता राज्यलक्ष्मी ।

उच्चैः श्वेतातपत्रं चतुरुदधितटीसंकटा मेदिनीयं

प्राप्यन्ते यत्प्रभावात्त्रिभुवनविजयी सोऽस्तु ते धर्मलाभः ॥२॥

भावार्थ—" जेना प्रभावथी मदोन्मत्त हस्तीओ, पवनना वेगने जीतनारा घोडाओ, रथना समूह, विलासवाळी स्त्रीओ, चलायमान श्वेत चामरोथी शोभती राज्यलक्ष्मी, मोटुं श्वेत छत्र अने चार समुद्र पर्यंतनी समग्र पृथ्वी प्राप्त थाय छे. तेवो त्रिभुवनने जीतनारो धर्मलाभरूप आशीर्वाद तने हो "

आ प्रमाणे सूरिनां वचन सांभळी तेमना गुणथी हर्ष पामेला राजाए तेमने एक करोड सोनामहोर आपी, परंतु सूरि निःस्पृह होवाथी तेमणे ते धर्मस्थानमा स्थापन करावी.

इत्यादि अनेक दृष्टांतो उचित दान सबधी जाणवां.

हवे कीर्ति दान एटले कीर्तिवडे करीने भिक्षुकादिकने जे दान आपवुं ते कहे छे तेना दृष्टांतो नीचे प्रमाणे—

एकदा सपादलक्ष देश (माळवा) ना अधिपति अर्ण नामना राजा उपर दिग्विजय माटे नीकळेला कुमारपाळे चढाइ करी, ते वखते घोडाना पलाणने स्वारो पासे पुंजाव्या ते जोइने तेनी सायेना रोतेर सामंतराजाओए मश्करी करी के-" आ वाणीया जेवो कुमारपाल लडाइमां शुं (सामर्थ्य) करशे ? " आवो तेओनो अभिप्राय जाणीने कुमारपाळे मोळ मण सोपारीनी गोणी मार्गमां पडी हती, तेने भालाना अग्र भागवडे उंची करीने उछाळी अने लोढाना सात मोटां कडायाने परस्पर अथडावीने लोढाना भालावडे फोडी नांख्यां ते अवसरे योग्य वचन बोलवामां चतुर एवा आम्रभट्टे कह्युं के–

रे रखे लहु जीवडा, रणे मयगळ मारे,
न पीये अणगळ नीर, लेही राय सहारे,
अवर न वधे कोइ, सधर रयणायर बंधे,
वगे राय परमार, अपर राय निरुंधे,
ए कुमारपाळ कोपे चड्यो, फाडी सात कडाह,
तीम जे जिणधम्म न मन्नशे, तेहनी तेहवी चाह ॥ १ ॥

आ कवित सांभळीने राजाए तेने कवितना प्रत्यक्षर अर्थात् अक्षर जेटला घोडा आप्या

एकदा कुमारपाळ राजा श्रीहेमाचार्य गुरुने द्वादशावर्त वंदनापूर्वक वंदन करीने खमावता हता ते वखते गुरुए तेना पृष्ठ उपर हाथ मूक्यो ते जोइने रागलि नामनो कवि बोल्यो–

हेम तुमारा करमहीं, दीसे अद्भुत सिद्धि;
जे चंपे हेठा मुहा, ते पामे हरी सम ऋद्धि ॥ १ ॥

आ दुहो सांभळी कुमारपाळे तेने पोताना हाथनां कडां आप्यां इत्यादि अनेक प्रबंधो कीर्ति दान उपर जाणी लेवा.

" सुपात्र दान ने अभय दानथी मुक्ति पामे, अनुकंपा दानथी सुख पामे, उचित दानथी प्रशंसा पामे अने कीर्ति दानथी सर्वत्र मोटाइ पामे "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तंभस्य षोडशाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २१६ ॥

व्याख्यान २१७ मुं

दान धर्मनी देशना

श्राद्धानां पात्रभक्तानां, कार्पण्यदोषमुक्तये ।
देशना दानधर्मस्य, देया तीर्थहितेच्छुभिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" सुपात्रनी भक्ति करनारा श्रावकोने कृपणतारूपी दोषनु निवारण करवा माटे तीर्थना हितेच्छु साधुओए दानधर्मनी देशना आपवी. "

ते दानधर्मनी देशना नीचे प्रमाणे—

कालेऽल्पमपि पात्राय, दत्तं भूयो भवेद्यथा ।
जिनाय चंदनादत्ता, कुल्माषाः कल्मषच्छिदे ॥ २ ॥

भावार्थ—" योग्य समये सुपात्रने थोडुं पण दान आप्युं होय तो ते मोटुं फळ आपे छे. जेम चंदनबाळाए वीर भगवानने अडदना बाकळा आप्या, ते तेना पापनो नाश करनार थया "

श्रीवीर भगवाने करेलो अभिग्रह ● मास पूरा थयो ते वखते देवोए साडा बार क्रोड सुवर्णनी वृष्टि करी, तेनाथी धनावह श्रेष्ठीनु घर भराइ गयु, ते जोइने तेनी पडोशमां रहनारी एक डोशीए विचार्युं के-" मात्र अडदना बाकळा आपवाथी दुर्बल तपस्वी जो आटली बधी समृद्धि आपे छे, तो हु कोइ पुष्ट अंगवाळा मुनिने घी तथा साकर सहित परमान्नवडे संतोष पमाडीने अपार लक्ष्मी ग्रहण करु. " पछी ते कोइ हृष्टपुष्ट शरीरवाळा मुनिनो वेष धारीने बोलावी क्षीरनु दान देती सती वारवार आकाश सामु जोवा लागी, ते जोइने पेला वेशधारी साधुए ते डोशीनो अभिप्राय जाणी तेने कह्यु के-" हे मुग्धा! मारा तपवडे अने तारा भाववडे तेमज आधार्मिक आहारना दानवडे तारा घरमा आकाशथी पथ्थरनी वृष्टि थशे, रत्ननी वृष्टि थशे नहीं, कमके दान आपनारनी के लेनारनी तेवी शुद्धि नथी. " इत्यादिक कहीने ते डोशीने प्रतिबोध पमाड्यो

वळी जे नामने योग्य गुणवान होय तेज श्रेष्ठ पात्र छे, बीजो नहीं. पात्रनी परीक्षाना संबंधमां युधिष्ठिर अने भीमना संवादमां कह्यु छे के- हस्तीनापुर नगरने विषे एकदा धर्मपुत्र (युधिष्ठिर) सभामां बेठा हता, ते वखते दरवाजे उभेला भीमसेने सभामां आवीने धर्मराजाने कह्युं के-

मूर्खतपस्वी राजेन्द्र, विद्वांश्च वृषलीपतिः ।
उभौ तौ तिष्ठतो द्वारे, कस्य दानं प्रदीयते ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे राजन्! एक मूर्ख छे पण तपस्वी छे, अने बीजो विद्वान् छे पण वृषलीनो पति छे (भ्रष्ट छे).ते बन्ने द्वारमां उभा छे, तेमां कोने दान आपवुं?" त्यारे युधिष्ठिरे कह्युं के-

सुखसेव्यं तपो भीम, विद्या कष्टदुराचरी ।
विद्यां संपूजयिष्यामि, तपोभिः किं प्रयोजनम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे भीम ! तपनुं सेवन सुखेथी थइ शके छे, पण विद्या तो महा कष्टथी भणाय छे, माटे हुं विद्यानो सत्कार करीश, मात्र तपनु शुं प्रयोजन छे?" ते सांभळी भीमसेन बोल्यो के-

श्वानचर्मगता गंगा, क्षीरं मद्यघटस्थितम् ।
कुपात्रे पतिता विद्या, किं करोति युधिष्ठिर ॥ ३ ॥

भावार्थ—"हे राजा युधिष्ठिर ! जेम कुतराना चामडानी मसकमां भरेलुं गंगाजळ अने मदिराना घडामां भरेलु दूध काम आवतु नथी, तेम कुपात्रने विषे रहेली विद्या पण शुं कामनी छे ?" भीमसेनना आवा वचन सांभळी सभामां बेठेला कृष्ण द्वीपायन बोल्या के-

न चैकविद्यया पात्रं, तपसापि च पात्रता ।
यत्र विद्या चरित्रं च, तद्धि पात्रं प्रचक्ष्यते ॥ ४ ॥

भावार्थ—"केवळ विद्यावडे पात्र कहेवाय नहीं, तेमज केवळ तपवडे पण पात्रता कहेवाय नहीं, परंतु ज्यां विद्या अने आचार बन्ने रह्या होय छे, तेज पात्र कहेवाय छे."

आ प्रमाणे होवाथी पात्रने दान आपवुं तेज कल्याणकारी छे. ते दान पण भावपूर्वक आपवुं. कह्युं छे के-

दातव्यमिति यद्दानं, दीयतेऽनुपकारिणे[1] ।
क्षेत्रे काले च भावे च, तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥ ५ ॥

भावार्थ—" देवा योग्य एवुं दान पण जे अनुपकारीने देवाय अने यथायोग्य क्षेत्र, काळ अने भावनो विचार करीने अपाय ते दान सात्त्विक कहेलुं छे."

आवुं सात्त्विक दान शालिभद्र विगेरेए आप्युं छे.

यस्तु प्रत्युपकाराय, फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
प्रदीयते परिक्लिष्टस्तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥ ६ ॥

भावार्थ—"जे दान उपकारना बदलामां प्रत्युपकारने माटे देवामां आवे अथवा जे दान कांइ पण फळनी इच्छाए आपवामां आवे ते दान राजस कहेलुं छे." आ बाबतमां चंदनबाळानी वृद्ध पाडोशणनुं दृष्टांत छे ते पूर्वे कहेलुं छे.

क्रोधाद्बलान्नियोगाद्वा, मनोभावं विनापि वा ।
यद्दीयते हितं वस्तु, तद्दानं तामसं स्मृतम् ॥ ७ ॥

भावार्थ—" क्रोधथी, बळात्कारथी अथवा मनना भाव विना जे सारी वस्तु पण दानमां अपाय छे ते दान तामस कहेलुं छे " आ संबंधमां श्रेणिक राजानी कपीला दासीनुं दृष्टांत जाणी लेवुं. कांइ पण इच्छा विना दान करनारा दुर्लभ छे. कह्युं छे के—

दुल्लहाओ मुधादाई, मुधाजीविवि दुल्लहा ।
मुहादायी मुहाजीवि, दोवि गच्छंति सुग्गई ॥ ८ ॥

भावार्थ—"कोइ प्रकारनी इच्छा विना दान करनारा दुर्लभ छे, अने निष्कपटपणे आजीविका चलावनारा पण दुर्लभ छे, बाकी एवा दातार अने एवा आजीविका करनार बन्ने सद्‌गतिने पामे छे."

आ विषय उपर भागवत नामना कणबीनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कोइ एक तापसे कोइक भक्तिवाळा पुरुषने कह्युं के—" तारे घेर मने चातुर्मास रहेवा दे. " ते पुरुष कह्युं के—जो तमे पाछो मारो कांइ पण प्रत्युपकार न करो तो खुशीथी रहो. " तापसे ते अंगीकार कर्युं, एटले पेलाए तेने रहेवा माटे आवास आप्यो, अने आहारादिकवडे तेनी भक्ति करवा लाग्यो.

1 पोतानी उपर जेणे उपकार करेलो होय तेवाने नहीं पण मात्र पात्रता जोइने

एकदा चोरोए आवीने तेनो घोडो हरण कर्यो, पण गामनी बहार नीकळतां प्रातःकाळ थइ जवाथी चोरोए विचार्यु के-" हवे अत्यारे आ घोडो आपणाथी लइ जवाशे नहीं. " एम धारीने घणा वृक्षोनी घटामां ते घोडाने बांधी दइने तेओ जता रह्या. प्रातःकाळे पेलो तापस स्नान करवा माटे तळाव उपर गयो, त्यां तळावनी समीपे सांकडी गलीमां पेलो घोडो बांधेलो तेणे जोयो. एटले " मारा उपकारी भागवत पटेलनो चोरोए हरण करेलो आ घोडो छे" एम तेणे ओळख्यो. तेथी ते पोतानुं धोयेलुं वस्त्र त्यां भूली जवाने मिषे मूकी दइ घेर जइने भागवत पटेलने कह्युं के-" मारुं धोयेलुं वस्त्र हुं तळाव उपर भूली गयो छुं ते मंगावी द्यो " तेणे पोताना चाकरने ते लेवा मोकल्यो. तेणे त्यां जइने वस्त्र लीधुं, तो पासे पोताना शेठनो घोडो बांधेलो जोयो, एटले तेने पण लेतो आव्यो, अने घरधणीने ते वृत्तांत कह्यो. घरधणीए मनमां विचार्यु के-" अहो ! आ तपस्वीए बीजुं मिष करीने पण मारापर उपकार कर्यो. " पछी तेणे तापसने बोलावीने कह्युं के-" हे भद्र ! हवे तमे अहींथी पधारो, कारणके उपकारीने आपेलुं दान निष्फळ जाय छे. "

हवे मुधाजीवी (निष्कपट जीवनार) नुं दृष्टांत कहे छेः

कोइएक राजाने वैराग्य उत्पन्न थयो, तेथी तेणे धर्मनी परीक्षा करवा माटे विचार कर्यो के-" वास्तविक रीते दान लइने कोण भोजन करे छे ? तेनी हुं तपास करुं." एम विचारी तेणे पोताना सेवकने हुकम कर्यो के-" राजा लाडु आपे छे ते आवीने लइ जाओ" एवी सर्वत्र आघोषणा करावो. तेणे तेम करवाथी घणा भिक्षुको लाडु लेवा माटे आव्या. तेमने राजाए पूछ्युं के-" तमे शावडे जीवो छो ?" त्यारे तेमांथी एक जण बोल्यो के-"हुं मुखवडे जीवुं छुं." बीजाए कह्युं के-" हुं पगवडे जीवुं छुं. " त्रीजाए कह्युं के-" हुं हाथवडे जीवुं छुं. " चोथाए कह्युं के-" हुं लोकोनी कृपाथी जीवुं छुं. " अने पांचमा जैन साधुए कह्युं के-" हुं मुधा जीवुं छुं." पछी राजाए फरीथी तेमने पूछ्युं के-" शी रीते ! " त्यारे पहेलाए कह्युं के-" हुं कथा कहेनार छुं, तेथी माणसोने रामायण विगेरेनी कथा कहुं छुं, तेथी मारी आजीविका चाले छे, माटे मुखवडे जीवुं छुं." बीजाए कह्युं के-" हुं कासद छुं, तेथी लोकोनुं कासदीयुं करीने आजीविका चलावुं छुं, तेथी पगवडे जीवुं छुं." त्रीजाए कह्युं के-" हुं लहियो छुं, तेथी लखवावडे आजीविका चलावुं छुं; माटे हाथवडे जीवुं छुं." चोथाए कह्युं के-" हुं भिक्षुक छुं, तेथी लोकोनी कृपाथी भीख मांगीने आजीविका चलावुं छुं." जैन साधुए

कह्युं के-" हुं गृहस्थनो पुत्र छु, पण संसारनी असारता जोइने में वैराग्यथी दीक्षा ग्रहण करी छे, तेथी यथाकाळे जेजो आहार मळी जाय तेवा आहारथी चलावी लउं छुं, माटे सुखी जीवु छुं." आ प्रमाणे सांभळीने राजाए विचार्युं के " अहो ! आ धर्मज सर्व दुःखनो नाश करनार अने मोक्षने साधनार छे." आ प्रमाणेनो निश्चय करीने तेणे जैनधर्म अंगीकार कर्यो.

वळी दानरूपी अलंकार विनानी लक्ष्मी पथ्थर अने मळरूपज छे. जुओ, नव नंदराजाए कृपणतादोषथी पात्रदान कर्या विना मात्र प्रजाने अत्यंत पीडा करीने सुवर्णनी नव डुंगरीओ करी, ते दुर्भाग्य योगे काळे करीने पथ्थरमय थइ गइ. हजु सुधी ते डुंगरीओ पाटलिपुर नगर पासे गंगानदीने कांठे पीळा पथ्थरमय देखाय छे. राजगृही नगरीमां मम्मण श्रेष्ठीए मणिमंडित बे बळद कर्या हता. तेमां एक बळदनु शींगडु अधुरु हतु ते पूर्ण करवा माटे ते अनेक प्रकारना कष्ट सहन करतो हतो परंतु पात्रदान नहीं करवाथी ते बळद पृथ्वीमां ने पृथ्वीमांज विनाश पामी गया तेथी मळेला धननु सुपात्रमां दान करवु जोइए.

दान शत्रुने आप्यु होय तो वैरनो नाश करे छे, सेवकने आपवाथी ते विशेष भक्तिमान थाय छे, राजाने आपवाथी उत्कृष्ट सन्मान पामी शकाय छे, अने भाट, कवि के चारण विगेरेने आपवाथी सर्वत्र यश फेलाय छे. दान कोइ पण स्थाने निष्फळ थतु नथी. तेमां पण सुपात्रने दान आपवाथी विशेष कल्याणकारी थाय छे. कह्यु छे के-

जले तैलं खले गुह्यं, पात्रे दानं मनागपि ।
प्राज्ञे शास्त्रं सतां प्रीतिर्विस्तारं यात्यनेकधा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जळमां तेल, खळ पुरुषमां छानी वात, सुपात्रमां थोडुं पण दान, डाह्या पुरुषमां विद्या अने सत्पुरुष साथे प्रीति-ए अल्प होय छे तो पण अनेक प्रकारे विस्तार पामे छे."

अहीं कोइ शंका करे के-" पात्र अने अपात्रनो विचार तो कृपण माणस करे छे, पण उदार माणस करतो नथी. ते विषे कह्यु छे के-

पत्त परिक्खह किं करुं, दिजे मग्गताहिं ।
किं वरिसंतो अंबुहर, जोवे सम विसमाइं ॥ १ ॥

भावार्थ—" पात्रनी परीक्षा शामाटे करवी ? जे मागे तेने आपवु. केमके शुं मेघ सम विषम प्रदेश जोइने वृष्टि करे छे ? ना, ना, सर्वत्र करे छे." आ शंकानो उत्तर कहे छे-

वरिसो वरिसो अंबुहर, वरसीनां फळ जोइ।
धंतुरे विष इरकुरस, एवडो अंतर होय ॥ १ ॥

" हे वरसाद! भले, तुं गमे त्यां वरस, पण वरस्यानां फळ जो, धंतुरामां तो तारा जळथी विष उत्पन्न थशे, अने शेरडीमां इक्षुरस उत्पन्न थशे. एटलुं पात्रने अपात्रमां अंतर पडशे."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशमस्तंभस्य सप्तदशाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २१७ ॥

व्याख्यान २१८ मुं.

सुपात्रदान उपर दृष्टांत

पात्रे यच्छति यो वित्त, निजशक्त्या सुभक्तितः।
सौख्यानां भाजनं स स्याद्यथा धन्योऽत्रवरपुरा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मनुष्य पोतानी शक्ति प्रमाणे भक्तिपूर्वक पात्रविषे दान आपे छे ते धनानी जेम सर्व सुखनुं स्थान थाय छे. "

धनानुं दृष्टांत.

पृथ्वीपुर नामना नगरथी एक वणीक पोताना कुटुंब सहित दैवयोगे प्रतिष्ठानपुर नामना नगरमां आव्यो. तेना कुळमांथी एक डोसीनो छोकरो लोकोनां वाछरडां चारीने निर्वाह करतो हतो. एक दिवस कोइक पर्व होवाथी दरेक घेर खीरनुं भोजन करता लोकोने जोइने ते छोकराने खीर खावानी इच्छा थइ. तेथी ते घेर आवीने पोतानी माने वारंवार कहेवा लाग्यो के " मने खीर आप. " कह्युं छे के—

चोरा वल्लका वि य, दुज्जण विज्जाय विप्प पाहूणया।
वेसाणि धुत्त नरिंदा, परस्स पीडं न याणंति ॥ १ ॥

भावार्थ—" चोर, बालक, दुर्जन, वैद्य, ब्राह्मण, परोणो, वेश्या, धूर्त अने राजा बीजानां दुःखने जाणता नथी. "

पुत्रनां वचन सांभळीने डोशी दरिद्री होवाथी खीर करी शके तेम नहोतुं, तेथी ते शोकथी रोवा लागी, त्यारे तेनी पाडोशनी स्त्रीओए दयाथी तेने दूध, खांड, घी अने चोखा विगेरे सर्व सामग्री आपी, एटले डोशीए दूधने चो-

खानी खीर बनावी अने तेमां खांड तथा घी नांखी पुत्रने पीरसी. ते कोइ कार्यने माटे बीजे घेर गइ, तेटलामां एक महात्मा मुनि-मासखमणने पारणे त्यां पधार्या. तेमने जोइने पेलो छोकरो बहु खुशी थयो अने बोल्यो के–“ हे दयाना भंडार मुनि ! आ खीर ग्रहण करो. ” मुनिए पात्र धर्युं, एटले तेणे मुनिना पात्रामां खीर वहोरावी ते वखत तेणे मनुष्यनु आयुष्य बांध्यु. पछी तेनी माए बहारथी आवीने फरीने बाकी रहली खीर तेने पीरसी, ते सर्व खाइ जवाथी तेने विसूचिकानो व्याधि थयो. तेथी तेज रात्रीए मरण पामीने ते तेज नगरमा धनसार नामना श्रेष्ठीनो पुत्र थयो तेना मोटा त्रण भाइओ परणेला हता, त्यारपछी आ चोथो पुत्र धना नामनो थयो. एनो जन्म थयो त्यारथी धनसार श्रेष्ठीनु धन अधिक वृद्धि पामवा लाग्यु. धनो योग्य वयनो थतां समग्र कळाओ शीख्यो, अने उत्तम गुणोथी मातापितानो अति प्रीतिपात्र थयो. ते वखते तेना मोटा त्रण भाइओ पोताना मातपिताने कहवा लाग्या के–“ आ लघु छता तमे तेनो अत्यत आदर केम करो छो ? ” त्यारे तेमणे कह्युं के–“ तेना गुणोथी ते विशेष सत्कारने लायक छे ” ते सांभळी त्रणे जणा बोल्या के–“ एम होय तो तेना अने अमारा गुणोनी परीक्षा करो ” पिताए परीक्षा करवामाटे चार पुत्रोने बत्रीश बत्रीश सोनामोहोरो आपी, अने कह्यु के–“ आटला द्रव्यवडे वेपार करीने नफो करी लावो. ”

धनाए ते दिवसे पशुव्यापारमा लाभ थवा जाणीने ते द्रव्यनो एक बळवान मेंढो लीधो. पछी राजपुत्रना मेंढा साथे लडाववा माटे हजार सोनामोहोरनी सरत करीने तेनी साथे लडाव्यो. तेमां राजपुत्रनो मेंढो हार्यो, तेथी एक हजार सोनामोहोर मेळवीने ते पोताने घेर गयो. तेना मोटा त्रणे भाइओए पोतपोताने मळली बत्रीश बत्रीश सोनामहोरवडे जुदा जुदा वेपार कर्या, पण तेमांथी कांइ नफो मेळव्यो नहीं

ए प्रमाणे अनेक उपायो धनाना सफळ थया, अने मोटा त्रण भाइओना निष्फळ थया. हवे ते गाममा एक धनाढ्य श्रेष्ठी रहतो हतो. ते अति कृपण होवाथी तेणे घरमा खाडो खोदीने तेमा केटलुक धन दाट्यु हतुं. बाकीना द्रव्यना अमूल्य रत्नो लइने सुवाना खाटलाना पाया विगेरेमा गुप्त रीते छुपाव्या हता, अने पेला खाडा उपर ते खाटलो राखी तेना उपर निरंतर सुइ रहेतो हतो. पछी ज्यारे ते मरवा पड्यो, त्यारे तेणे तेना पुत्रोने कह्युं के–“ ज्यारे हुं मरी जाउं, त्यारे आ खाटला सहित मारो अग्निसंस्कार करजो. ” अनुक्रमे काइ

पण पुण्य दान कर्या विना ते वृद्ध मृत्यु पाम्यो, एटले तेने तेना पुत्रो खाटला सहित स्मशानमां लइ गया. केमके तेओ ते खाटलामा रत्नो छे एवुं जाणता नहोता. स्मशानमां चांडाले पोतानो हक होवाथी ते खाटलो माग्यो; तेने आपवानी ना कहेवाथी तेनी साथे कजीओ थयो. छेवटे तेमना संबंधीओना कहेवाथी तेओए ते खाटलो चांडाळने आप्यो, एटले चांडाळ ते खाटलो वेचवा माटे चौटामां लइ गयो. ते वखते लक्षणलक्ष धनाए केटलाक चिन्होथी ते खाटलाने द्रव्यसंयुक्त जाणीने योग्य मूल्य आपीने ते खाटलो खरीद कर्यो. घेर जइने खाटलो भांग्यो, तो मांहथी अमूल्य रत्नो नीकळ्यां, तेथी धनो मोटो धनाढ्य थयो. तेना भाइओने आ जोइने तेना पर घणी इर्ष्या थइ, तेथी तेओ तेने मारी नाखवा सुधीना उपायो चिंतववा लाग्या. ते वृत्तांत ते भाइओनी वहुओए पुत्रना जेवी प्रीतिथी धनाने एकांतमां कह्या. ते सांभळी धनो घरमांथी एकलोज नीकळी गयो, अने पृथ्वी उपर भमतो भमतो राजगृही नगरीनी समीपे पहोंची तेनी बहारना एक उद्यानमां विश्राम लेवा माटे बेठो. ते उद्यान प्रथम दैवयोगे केवळ सुकाइ गयु हतुं, ते धनाना पुण्यप्रभाववडे तत्काळ नवपल्लवित अने पुष्पफळवाळुं थइ गयुं, ते जोइने उद्याननना रक्षके ते वृत्तांत तेना धणी कुसुमपाळ श्रेष्ठीने कयों. ते सांभळी कुसुमपाळ श्रेष्ठी विस्मय पाम्यो, अने धनाने घेर तेडी लावी पोतानी पुत्री तेने आपी. ते वखते ते नगरीमां श्रेणिक राजा राज्य करता हता, तेणे पण हर्षित थइने पोतानी पुत्री धनाने आपी. राजपुत्रीनी सखी सुभद्रा नामनी शालिभद्रनी बहेन हती, तेने पण तेना स्वजनोए धनाने आपी ते त्रणे पुत्रीना लग्न मोटी समृद्धिपूर्वक श्रेणिक महाराजाए कर्या. पछी राजाए तेने रहेवा माटे मोटो महेल आप्यो, तेमां रहीने धनो पूर्वजन्ममां आपेला सुपात्रदाननुं फळ भोगवचा लाग्यो. श्रेणिक राजाए केटलांक गामो पण तेने आप्यां.

एक वखते धनो पोताना महेलनी बारीमां बेठो हतो, ते समये तेणे पोताना कुटुंबने गरीब हालतमां ते शहेरमां फरतुं जोयुं. एटले तेमनो सत्कार करी घेर लइ आवी, केटलांक गाम विगेरे आपीने फरीथी सुखी कर्या. केटलोक काळ गया पछी धनाना मोटा त्रण भाइओए एक दिवस तेमना पिताने कह्युं के-" हे पिता! घरनुं समग्र द्रव्य आज ने आज वहेंचीने अमारो भाग अमने आपो " पिताए कह्युं के-" हे मूर्खो! हाल तो तमे बधुं धनानुं मेळवेलुं द्रव्यज भोगवो छो तेमां मारु शुं छे के हुं तमने वहेंची आपुं?" त्यारे तेओ बोल्या के-"ज्यारे धनो

घेरथी नासी गयो हतो, त्यारे चोरनी जेम घरमांथी रत्नादिक सार सार वस्तुओ लइने गयो हतो, तेथी घनाना पुत्रो भले राज्य भोगवे, पण अमे तो अमारो द्रव्यनो भाग लीधा विना आवती काले जमवाना नथी." आ प्रमाणे कुटुंबमां क्लेश थतो जाणीने धनो तज रात्रीए एकलो घर छोडीने चाल्यो गयो.

चालता चालता धनो कौशांबी नगरीए पहोंच्यो. त्यां मृगावती राणीना पति शतानिक राजा राज्य करता हता. धनो नगरीना चौटामां गयो, त्यां तेणे राजाए करावेली आघोषणा सांभळी के–राजाना भंडारमां एक अमूल्य रत्न छे, तेनी जे कोइ परीक्षा करशे तेने राजा आ प्रमाणेनी वस्तुओ आपशे—

हस्तिनां शतमेकं च, वाजिनां शतपंचकम् ।
सौभाग्यमंजरीं पुत्रीं, ग्रामपंचशतीयुताम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" एकसो हाथी, पांचसो घोडा अने पांचसो गाम सहित सौभाग्यमंजरी नामनी पुत्री (आपशे) "

आवी उद्घोषणा सांभळीने धनो तेनुं निवारण करीने राजसभामां गयो, अने रत्ननी परीक्षामां निपुण होवाथी तेणे ते रत्ननी परीक्षा करी. तेथी विस्मय पामेला राजाए घणा द्रव्य सहित पोतानी पुत्री तेने परणावी. त्यां सुखमां निमग्न थयेलो धनो काल निर्गमन करवा लाग्यो.

एक दिवस पोतानी कीर्तिने माटे लोकरीतिने अनुसरीने धनाए नगरीना समीप भागमां एक तळाव खोदाववा मांड्युं.

अहीं धनसार श्रेष्ठीना घरमांथी धनो गया त्यारथी तेनी नबळी स्थिति थवा लागी. छेवटे एवी स्थिति थइ के—

घृतं नास्ति तैलं नास्ति, नास्ति मुद्गो युगंधरी ।
वल्लार्थं लवणं नास्ति, तन्नास्ति यत्प्रभुज्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" घी नथी, तेल नथी, मग के जुवार पण नथी, वालमां नाखवा लुण पण नथी अर्थात् एवु काइ पण नथी के जे खाइ शकाय." आवी स्थिति थवाथी धनसार शेठे धनानी त्रे पत्नीओने तो तेमने पियर मोकली, अने शालिभद्रनी बहनने कह्युं के—

सुखे च त्रिजवोल्लासे, सेव्यं स्त्रीभिः पितुर्गृहम् ।
श्वशुरस्य गृहं दुःखे, सुखे दौःस्थ्येऽपि सर्वदा ॥ १ ॥

भावार्थ-" सुखना वखतमां अने वैभवना समयमां स्त्रीओए पिताने घेर जवु, अने सासराना घरमां तो सुखमां, दुःखमां अने खराब स्थितिमां सर्वदा रहवु. "

आ प्रमाणे ते वहुनु वचन सांभळीने धनसार हर्षित थयो. पछी पुत्रोने अने वहुओने लइने ते रात्रीए गाममांथी नीकळी गयो. अनुक्रमे फरतो फरतो ते कौशांबी नगरीमां आव्यो. त्यां तेणे सांभळ्यु के-" अहीं एक तळाव खोदाय छे." ते सांभळी पोतानी आजीविका चलाववा माटे ते कुटुंब सहित त्यां गयो. त्यां पुरुषोने हमेशा बे दीनार अने स्त्रीओने एक दीनार मळतो, उपरांत रांधेलुं अन्न खावा मळतुं तेथी ते सरोवरमां बीजा मजुरोनी साथे ते पण कुटुंब सहित मजुरी करवा रह्यो, अने पोतानो निर्वाह करवा लाग्यो. एक दिवस धन्नो घोडापर चढीने ते तळाव जोवा आव्यो. त्यां मजुरोनी साथे काम करतुं पोतानुं कुटुंब जोइने ते विचार करवा लाग्यो के-" अहो ! आ दैवे शु कर्यु ?

गोभद्रो जनको यस्या, भद्रा यस्या जनन्यहो ।
शालिभद्रानुजा सेय, शीर्षे वहति मृत्तिकाम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेनो पिता गोभद्र छे, अने जेनी माता भद्रा छे, ते आ शालिभद्रनी नानी वहेन मस्तक उपर माटी वहन करे छे "

आ प्रमाणे विचारीने धनाए अजाण्या थइने तेमने पूछ्यु के-" तमे क्यां रहो छो ? अने क्यांथी आव्या छो ? " त्यारे श्रेष्ठीए लज्जा सहित पोताना कुटुंबनो सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी कह्यु के-" हे जगत्पालक ! मारा कुटुंबने छाश विना बहु अडचण पडे छे.तेथी छाश आपवानी कृपा करो." त्यारे धनाए कह्युं के-" छाश लेवाने माटे खुशीथी तमारी वहुओने मारे घेर मोकलजो." पछी हमेशा चारे वहुओ तेने घेर छाश लेवा माटे वाराफरती जवा लागी. एक दिवस सुभद्रानो वारो होवाथी ते गइ, तेने धनाए पूछ्यु के-" हे भद्रे ! तुं कोण छे ? " ते लज्जाथी नीचु मुख राखीने बोली के-" तमे मने वारंवार पूछशो नहीं हुं गोभद्रशेठनी पुत्री अने शालिभद्रनी बहेन छुं. तमारा नामना एक श्रेष्ठीना पुत्रने हु परणी हती, परंतु घरमां क्लेश थवाथी, ते मने तजीने कोइक स्थाने जता रह्या छे " ते सांभळी धनाए कह्यु के-" हे भद्रे ! पतिना वियोगे तु शी रीते रही शके छे ? माटे तु पतिव्रत छोडीने मारी साथे भोग भोगव." ते सांभळीने सुभद्रा बोली के-

गतियुगलकमेवोन्मत्तपुष्पोत्करस्य
त्रिनयनतनुपूजा वाथवा भूमिपात.।
विमलकुलजयानामंगनानां शरीरं
पतिकरपरसो वा सेवते सप्तजिह्व ॥ १ ॥

भावार्थ-" खीलेला पुष्पोनी बेज गति होय छे, यथा तो महादेवना शरीरनी पूजाना उपयोगमां आव छे अथवा तो खरीने भूमिपर पडे छे, तेवीज रीते निर्मळ कुळमां उत्पन्न थयेली स्त्रीओना शरीरने पण पोताना स्वामीना हाथनो स्पर्श थाय छे अथवा तो अग्नि तेनुं सेवन कर छे "

आ प्रमाणे घणी रीते तेनी परीक्षा करता तेने दृढ शीलवाळी जाणीने धनाए पूर्वनो सर्व वृत्तांत तेने जणाव्यो, एटले सुभद्रा तेमने पोताना भर्त्तार तरीके ओळखीने लज्जाथी नीचु जोइ रही पछी धनाए तेने घरमा मुख्य पत्नी आपी सर्वनी स्वामिनी करी.

आ वृत्तांत धनसारे साभळ्युं, तेथी लोको पासे धनानी निंदा करता करता ते धनाने घेर गया धनाए पोतानी ओळखाण आपी नमस्कार करीने तेमने घरमा राख्या. एवीज रीते अनुक्रमे पोतानी मा तथा मोटा भाइओने पण सत्कार करीने घरमा राख्या पछी ते मोटा भाइओनी त्रण वहुओ रही तेमणे विचार्युं के-" आपणा सासुससराने तथा स्वामीने धनाए केद कर्या छे, माटे तेनी फर्याद करवा माटे आपणे शतानीक राजानी सभामा जइए." आम निश्चय करीने ते वहुओए राजसभामा जइ राजाने आशीर्वाद दइने कर्युं के-" अमे उदरनिर्वाहने माटे तमारा नगरमा आव्यां छीए परंतु तळाव खोदावनार धनाए अमारा आखा कुटुंबनु हरण कर्युं छे, तेने जीवतुं राख्युं छे के मारी नाख्युं छे तेनी पण खबर नथी, माटे हे पांचमा लोकपाळ'[1] तमे तेनी शोध करो " आवी फर्याद साभळीने शतानीक राजाए पोताना सेवकोने मोकली धनाने कहवराव्यु के-" आ फर्यादणोना कुटुंबना माणसोने जल्दी छोडी मूको " धनाए जवाबमा कहेवराव्यु के-" हु कदापि अन्याय करतो नथी, अने कदाच करुं तो तेमां राजाने वचमा आववानी शी जरुर छे ? " आ प्रमाणेना तेनां गर्विष्ठ वचनो सांभळीने ते जमाइ हतो, तो पण तेने हणवा माटे राजाए सेना मोकली. धनो पुण्यवाळो होवाथी लडाइमा जय पाम्यो. त्यारे प्रधानोए राजाने विनति करी के-" हे राजेंद्र ! आ धनो

[1] राजा पांचमा लोकपाळ कहेवाय छे

कदापि अनीति करे तेवो नथी, महा धर्मात्मा छे, अने परस्त्रीनो सहोदर छे. माटे आ स्त्रीओनेज विशेष पूछवाथी कांइक खबर पडशे. " एम कही राजाना मनने शांत करी प्रधानोए ते स्त्रीओने पूछ्युं के–" धना नामनो तमारो कोइ स्वजन छे?" तेओ बोली के–" हा, अमारो दियर धना नामे हतो पण ते घरनी समग्र लक्ष्मीनो त्याग करी अमने मुकीने क्यांइक जतो रहलो छे. ते जीवे छे के नहीं तेनी पण अमने खबर नथी." प्रधानोए पूछ्यु के–" तमे तमारा दियर धनाना शरीरनुं कांइ पण चिन्ह जाणो छो?" तेओ बोली के–" हा, ते ज्यारे नानो हतो त्यारे तेने नवरावतां अमे तेना पगमां पद्मनुं चिन्ह जोयु हतुं." ते सांभळीने प्रधानोए धनाने त्यां बोलाव्यो धनो त्यां आवी पोतानी भाभीओने नमीने बोल्यो के–" शुं! श्रेणिक राजानी पुत्रीना पति धनाने धारीने तमे मने बोलाव्यो छे?" ते स्त्रीओ बोली के–" अमे भक्तिपूर्वक तमारा पग धोइने अमारा दीयर तमे छो के नहीं, तेनी खात्री करीशु " धनाए कह्युं के–" परस्त्रीनो स्पर्श करवाथी पाप लागे छे, हु परस्त्री साथे बोलतो पण नथी, तो स्पर्शनी तो वातज शी करवी?" पछी प्रधानोना अने राजाना कहेवाथी धनाए हास्य करवुं तजी दइने पोतानी भाभीओने आदरसत्कार पूर्वक पोताने घेर मोकली. पछी पोताना पांचसें गामो पोताना भाइओने आपी पत्नी-ओने साथे लइने धनो राजगृह नगरे गयो त्यां बीजा श्रेष्ठीओनी चार कन्या-ओने ते परण्यो. आ प्रमाणे धनाने आठ स्त्रीओ थइ.

अहीं धनाना भाइओए पांचसें गामोमां अहंकारथी पोतानी आज्ञा प्रवर्तावी. तेमना दुर्भाग्यवडे ते बधा गामोमा दुकाळ पड्यो, लोको कागडानी जेम नासी गया पछी ते दुर्भागी त्रणे भाइओ घउंना पोठीया भरीने राजगृह नगरीमां वेचवा माटे आव्या. धनाए तेमने जोया, एटले तेमनो सत्कार करीने पोताने घेर लइ गयो. परंतु तेमने नाना भाइने घेर रहेवानु पसंद पड्युं नहीं तेथी तेओना कहेवाथी धनाए सर्व द्रव्यना सरखा भाग पाडी तेमने चौद चौद करोड सोनामहोरो आपी. ते द्रव्य लइने तेओ नगर बहार जता हता, तेवामां गामना सीमाडामांज धनना अधिष्ठायक देवोए तेमने रोक्या, अने कह्युं के–" आ धन तमारा भाग्यनुं नथी. ए धननो भोक्ता तो भाग्यशाळी धनोज छे." आवा वचनो सांभळीने तेओ गर्व रहित थया, अने पाछा वळीने धनाने शरणे गया. धनाए सत्कार करीने तेमने घरमां राख्या, एटले तेओ त्यां सुखे रहेवा लाग्या.

एकदा चार ज्ञानने धारण करनारा धर्मघोष नामना सूरि त्यां पधार्या. धनो पोताना भाइओ सहित सूरिने वांदवा गयो सूरिने वांदी देशना सांभळीने

धनाए नम्रता पूर्वक पूछ्युं के–" हे भगवान् ! मारा त्रणे भाइओ केम पूर्वथी निर्धन रह्या ? " ते सांभळी गुरुए तेमनो पूर्व भव आ प्रमाणे कह्यो के—

"कोइ एक गाममां त्रण भाइओ काष्ठना भारा वेचीने आजीविका चलावता हता. एक दिवस लाकडां लेवा माटे तेओ साथे खावानुं भातुं लइने वनमां गया. मध्यान्हकाळे खावा बेठा ते वखते कोइ साधु मासक्षमणने पारणे त्यां आव्या. तेमने जोइने दान आपवानी इच्छा थवाथी तेमणे पोताना भातामांथी दान दीधुं. मुनि गया पछी तेओ पश्चाताप करवा लाग्या के "आपणे भूल करी, आ साधु फोगटनुं लइने जता रह्या अने आपणे भूख्या रह्या. ए साधु कांइ उत्तम कुळनो नहोतो, पण एमां तेनो दोष नथी, आपणेज मूर्ख के फोगट भूखे मर्या." आ प्रमाणे पश्चात्ताप करता करता पोताने घेर गया. अनुक्रमे आयुष्यना क्षये मरण पामीने अल्पऋद्धिवान् व्यंतरपणुं पामी त्यांथी चवीने अहीं उत्पन्न थया छे. पूर्वे मुनिराजने दान आपीने पश्चात्ताप करवाथी आ भवमां वारंवार निर्धनपणुं पाम्या छे. कह्युं छे के—

पश्चात्तापो न तत्कार्यो, दत्ते दाने मनीषिभिः ।
किं तु पुण्यद्रुमो भावजलेन परिषिच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" तथी दान दइने सुज्ञ पुरुषोए पश्चात्ताप करवो नहीं. परंतु भावरूपी जळवडे पुण्यरूपी वृक्षनुं सिंचन करवुं. "

पछी शालिभद्रनी बहेन सुभद्राए गुरुने पूछ्युं के–" हे गुरु ! क्या कर्मे करीने में माटीनुं वहन कर्युं ? " गुरु बोल्या के–" च्यार पूर्व भवमां धनो एक डोशीनो पुत्र हतो अने गायो चारतो हतो, त्यारे तमे चारे स्त्रीओ तेनां पाडोशमां रहेनारी पाडोशणो हती. धनाए खीर मागी अने तेनी माता रोइ, ते वखते तमे चारे दयाळु पाडोशणो भेगी थइ अने तेने खीर करी आपवा माटे तमारामांथी एके दूध, बीजीए चोखा, त्रीजीए खांड अने चोथीए घी आप्युं हतुं. ते कार्यथी तमे चारेए जे पुण्य उपार्जन कर्युं हतुं तेना प्रभावथी आ भवमां राजपुत्री विगेरे थया छो. हवे हे सुभद्रा ! तें माथे माटी वहन करवानुं जे कर्म बांध्युं हतुं तेनुं कारण सांभळ–पूर्वे तारी दासीए माथे छाण उपाडतां वखते भार लागवा संबंधी तने कांइक अरज करी, एटले तें तिरस्कार पूर्वक तेने कह्युं के-" तुं तो मोटी छेगणी मरीने ! ताराथी कांइ भार उपडे ? " आवां शब्दो कहेवाथी तेने बहु दुःख लाग्युं ते कर्मवडे तुं शालिभद्रनी बहेन थइ छतां तारे माटी उपाडवी पडी."

आ प्रमाणे सर्वना संशय छेदीने गुरुए विहार कर्यो पछी धनो सदा सुखमां मग्न रह्यो सतो दिवसो निर्गमन करवा लाग्यो. छेवटे तेने जे रीते वैराग्य प्राप्त थवाथी तेणे दीक्षा ग्रहण करी ते विगेनुं सर्व वृत्तांत शालिभद्रनी कथामांथी सुज्ञ पुरुषोए जाणी लेवुं

"जे निर्भाग्य माणसो प्रथम मुनिने दान दइने पछी पश्चात्ताप करे छे ते दैवयोगे पामेला श्रेष्ठ वहाणनो त्याग करीने उंचेथी समुद्रमां अपापात करवा जेवुं करे छे."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तंभस्य अष्टादशाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २१८ ॥

व्याख्यान २१९ मुं

धर्मना चार प्रकार

दानं सुपात्रे विशदं च शील, तपो विचित्रं शुभभावना च ।
भवार्णवोत्तारणयानपात्रं, धर्मं चतुर्धा मुनयो वदन्ति ॥ १ ॥

भावार्थ—"सुपात्रदान, निर्मळ शील, विचित्र प्रकारनो तप अने शुभ भावना-ए संसारसमुद्रने तरवामां वहाण समान धर्मना चार प्रकार मुनिओए कह्या छे.

दाननुं वर्णन पूर्वे करी गया छे हवे शीलनुं वर्णन करे छे-

ऐश्वर्यराजराजोऽपि, रूपमीनध्वजोऽपि च ।
सीतया रावणश्चेव, त्याज्यो नार्या नरः परः ॥ १ ॥

भावार्थ—"ऐश्वर्यवडे चक्रवर्ती जेवो होय अने रूपवडे कामदेव जेवो होय तो पण परपुरुषने, रावणने जेम सीताए तज्यो तेम उत्तम स्त्रीओए तजी देवो."

रावणे सीताने राज्य, अलंकार विगेरे आपवानो अनेक प्रकारनो लोभ बताव्यो, तो पण ते महासती पोताना शीलव्रतथी भ्रष्ट थइ नहीं. कह्युं छे के-

सीतया दुरपवादभीतया, पावके स्वतनुराहुतीकृता ।
पावकस्तु जलता जगाम यत्तत्र शीलमहिमा विजृंभितः ॥१॥

भावार्थ—"अपवादथी भय पामेली सीताए अग्निमां पोतानो देह झपलाव्यो, परंतु ते वखते अग्नि जळ जेवो शीतळ थइ गयो तेमां मात्र उल्लसायमान शीलनो महिमाज कारणभूत छे. माटे बीजाओए पण शीलव्रत पाळवाने विषे यत्न करवो."

शील पाळवा उपर दृष्टांत.

वसंतपुरमां शिवकर नामनो व्रतधारी एक श्रावक रहतो हतो. त्यां एक वखते धर्मदास नामना सूरि पधार्या. तेने वांदवा माटे शिवकर गयो. वांदीने गुरु पासे केटलीक आलोयण लीधी. पछी हर्षपूर्वक बोल्यो के-" हे भगवन् ! मारा मनमां लाख साधर्मी भाइओने भोजन करावयानो मनोरथ छे, परंतु तेटलुं धन मारी पासे नथी, माटे हुं शुं करुं के जेथी मारो ते मनोरथ पूर्ण थाय?" गुरुए कह्यु के-" तुं मुनिसुव्रत स्वामीने वांदवा माटे भरुच जा त्यां जिनदास नामनो श्रावक रहे छे, तेनी भार्या सौभाग्यदेवी नामे छे, ते बन्नेने तारी सर्व शक्तिथी भोजन, अलंकार विगेरे आपीने प्रसन्न कर. तेना वात्सल्यथी तने लाख साधर्मीने भोजन आप्या जेटलुं पुण्य थशे." आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळीने तेणे ते प्रमाणे कर्युं भोजनादिक भक्तिवडे जिनदासनी सेवा करी.

त्यारपछी ते शिवंकर गाममां जइने लोकोने पूछ्युं के-" आ जिनदास केवो उत्तम छे? सत्य छे के दांभिक छे?" त्यारे लोकोए कह्यु के-" हे भाइ! सांभळ, आ जिनदास सात वर्षनो हतो, त्यारे एक दिवस उपाश्रये गयो हतो त्यां गुरुना मुखथी शीलोपदेशमाळानुं व्याख्यान सांभळीने तेणे एकांतरे ब्रह्मचर्य पाळवानो नियम ग्रहण कर्यो. एज प्रमाणे सौभाग्यदेवीए पण बाल्यावस्थामां साध्वी पासे एकांतर शील पाळवानु अंगीकार कर्युं. दैवयोगे ते बन्नेनुं परस्पर पाणिग्रहण थयुं. परंतु शील पाळवाना क्रममां जे दिवस जिनदासने छुटो हतो ते दिवस सौभाग्यदेवीने नियम हतो, अने जे दिवस सौभाग्यदेवीने छुटो हतो ते दिवस जिनदासने नियम हतो. आवी हकीकत बनवाथी सौभाग्यदेवीए जिनदासने कह्यु के-" हे स्वामी! हुं तो निरंतर शील पाळीश, तमे खुशीथी बीजी स्त्री साथे लग्न करो." तेणे कह्युं के-" मारे तो फरी लग्न करवा नथी, परंतु हु तो योग्य अवसरे दीक्षा लइश" पछी ते दंपतीए गुरु पासे जइने जीवन पर्यंत हंमेशने माटे ब्रह्मचर्य अंगीकार कर्युं अने पहेरामणी विगेरे करीने श्रीसंघनो पण सत्कार कर्यो. माटे ते दंपतीना जेवा बाळब्रह्मचारी असे तो कोइ पण सांभळ्या नथी" आ प्रमाणेनुं वृत्तांत सांभळीने शिवकर ते जिनदासनी विशेष प्रकारे सेवाभक्ति करीने पोताने गाम गयो.

आ प्रमाणे द्रौपदी, कलावती, शीलवती, सुभद्रा, सुदर्शन शेठ अने जंबूस्वामी विगेरेना सेंकडो दृष्टांतो शीलोपदेशमाळा, शीलकुलक विगेरेथी शीलव्रतना माहात्म्य विषे जाणवा.

हवे तप धर्मनुं वर्णन करे छे

तपना जेवुं भावमंगळ बीजुं एक पण नथी. केमके तेज भवमां नियमथी मुक्ति पामनारा तीर्थंकरोए पण तप कर्युं हतुं. ते विषे कह्युं छे के—

संवच्छरमुसभजिणो, छम्मासा वद्धमाणजिणचंदो ।
इअ विहरिआ निरसणा, जइज्जए उवमाणेण ॥ १ ॥

भावार्थ—" ऋषभ स्वामीए एक वर्ष सुधी अने जिनोने विषे चंद्र समान श्रीवर्धमान स्वामीए छ मास सुधी निरशनपणे (उपवास करीने) विहार कर्यो हतो,तेथी बीजाओए पण यथाशक्ति तपने विषे प्रयत्न करवो."

तपथी इष्ट मनोरथनी सिद्धि थाय छे. चक्रवर्ती राजाओ अष्टम तप करीनेज मागध, वरदाम, गंगा, सिंधु अने प्रभास विगेरेना अधिष्ठायक देवोने जीते छे. तथा हरिकेशी विगेरे मुनिनी जेम तपथी देव सांनिध्य थाय छे. श्री ऋषभदेव स्वामीनी पुत्री बाहुबलीनी बेन सुंदरीनी जेवुं तप करवुं. तेनुं तप नीचेनी गाथाथी जाणवुं

सट्ठि वाससहस्सा, अविसव आंबिलाइ विहिआइं ।
जीए निक्कमण कए, सा सुंदरी साविआ धन्ना ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेणे दीक्षा लेवाने माटे साठ हजार वर्ष सुधी निरंतर आंबेल कर्या ते सुंदरी श्राविकाने धन्य छे " वळी तपथी कोढ विगेरे व्याधिओ पण नाश पामे छे.

उज्जइ सणंकुमारो, तवबल खेलाइलद्धिसंपन्नो ।
निट्ठुअखरिअंगुलि, सुवन्नसोहं पयासंतो ॥ १ ॥

भावार्थ—" छ खंडने जीतनार सनत्कुमार चक्रीने तपना प्रभावथी खेलौषधि आदि अनेक लब्धिओ प्राप्त थइ हती, तेथी पोतानी कोढवाळी आंगळी उपर थुंक चोपडीने तेमणे सुवर्ण समान कांतिवाळी करी देखाडी हती (सनत्कुमारे दीक्षा लीधा पछी तेमना शरीरनी चिकित्सा करवाना मिषथी वैद्यनां रूप धारण करीने बे मिथ्यात्वी देवो परीक्षा करवा आव्या हता, ते वखतनी आ वात छे.) माटे तप अवश्य करवुं. कह्युं छे के–

विरज्य विषयेभ्यो यैस्तेपे मोक्षफलं तपः ।
तैरेव फलमगस्य, जगृहे तत्त्ववेदिभिः ॥१॥

भावार्थ—" विषयोथकी विरक्त थइने जेओए मोक्षफळ आपनारुं तप कर्युं छे, तेवा तत्त्वज्ञानीओएज मनुष्यदेहनुं फळ ग्रहण कर्युं छे. "

जे कारण माटे त्रस अने स्थावर अनेक प्राणीओनो क्षय करनारुं, वज्र जेवा कठण लोढाना तपाव्या गोळा समान ज्यां त्यां विनाश करनारुं अने वस्त्रादिक अनेक वस्तुओनो पण विनाश करनारुं एवुं पुष्ट शरीर तद्दन असारज छे, तेमां सार मात्र तेना वडे तप साधवो तेज छे. केमके–

अथिरेण थिरो समलेण निम्मलो परवसेण साहिणो ।
देहेण जइ विढप्पइ धम्मो ता किं न पज्जुत्त ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ देह अस्थिर, मलिन अने पराधीन छे, तेनावडे जो स्थिर, निर्मळ अने स्वाधीन एवो धर्म साधी शकाय छे तो तेने विषे शा माटे उपयुक्त न थवुं ? "

ते तप शरीरनी समाधि वडे करवो कह्युं छे के–

सो अ तवो कायव्वो, जेण मणोमगुणं न चिंतेइ ।
जेण न इंदियहाणि, जेण य जोगा न हायंति ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे तप करवाथी मन अवगुणनुं चिंतन न करे, जेना वडे इंद्रियो हानि न पामे, अने जेनावडे मन, वचन अने कायाना जोग क्षीण न थाय एवो तप करवो "

आवो तप पण मात्र कर्मनिर्जराने माटेज करवो.

कह्युं छे के–" आ लोक संबंधी सुखसंपत्तिने अर्थे तप न करवो, परलोकमां सुखप्राप्ति थवाने अर्थे तप न करवो, लोको प्रशंसा करशे एवी इच्छावडे पण तप न करवो, मात्र निर्जराने अर्थेज तप करवो " विवेक विना करेलुं तप मात्र शरीरने कष्टकारीज थाय छे जुओ, तामली तापसे जेटलो तप कर्यो हतो तेटलो तप, जो जैन शासनविधि प्रमाणे निरिच्छ भावे कर्यो होय तो तेथी सात जीव सिद्धिने पामे, परंतु अज्ञानना दोषथी ते इशान देवलोकेज गयो हतो.

वळी तपस्वीए क्रोधनो त्याग करवो जोइए. केमके क्रोध रूपी अग्नि घणा ताने पण चंदनना काष्ठसमूहनी जेम एक क्षणमां बाळी नाखे छे, कह्युं छे के–

एकेन दिनेन तेजोव्यूह षण्मासिक ज्वरो हन्ति ।
कोपः क्षणेन सुकृत, यदर्जितं पूर्वकोट्यापि ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम एक दिवसनो ज्वर छ मासना तेजसमूहने हणे छे, तेम कोप कोटीपूर्ववडे उपार्जन करेलां सुकृतनो पण एक क्षणमां नाश करेछे." वळी—

द्रुमोद्भवं हति विषं न हि द्रुम, न वा भुजंगप्रभव भुजंगमम् ।
अत. समुत्पत्तिपद दहत्यहो, महोल्बण क्रोधहलाहल पुन' ॥२॥

भावार्थ—" वृक्षमाथी उत्पन्न थतुं विष वृक्षनो नाश करतुं नथी, अने सर्पथी उत्पन्न थतुं विष सर्पनो नाश करतुं नथी, परंतु अहो ! क्रोधरूपी महा भयंकर हलाहल विष तो पोताना उत्पत्तिस्थाननेज बाळे छे." वळी—

कषाया देहकारायां, चत्वारो यामिका इव ।
यावज्जाग्रति पार्श्वस्थास्तावन्मोक्षः कुतो नृणाम् ॥ ३ ॥

भावार्थ—" देहरूपी केदखानामां चार कषायरूपी चार चोकीदारो ज्यां सुधी समीप भागे जागता रहेला छे, त्यां सुधी मनुष्योनो मोक्ष क्याथी थाय ?"

अहीं शुष्कांगुली भग्नकारकनु दृष्टांत छे ते अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवुं.

यथाविधि तप करनारा श्रावकोने माटे तेनु उद्यापन करवाथी मोटुं फळ थाय छे. कह्यु छे के—

वृक्षो यथा दोहदपूरणेन, कायो यथा षड्रसभोजनेन ।
विशेषशोभां लभते यथोक्तेनोद्यापनेनैव तथा तपोऽपि ॥१॥

भावार्थ—" जेम दोहद पूर्ण करवाथी वृक्ष अने छ रसना भोजनथी शरीर विशेष शोभा पामे छे, तेम विधिपूर्वक उद्यापन करवाथी तप पण विशेष शोभा पामे छे." वळी—

लक्ष्मीः कृतार्था सफल तपोऽपि, ध्यानं सदोच्चैर्जिनबोधिलाभः ।
जिनस्य भक्तिर्जिनशासनश्रीर्गुणाः स्युरुद्यापनतो नराणाम् ॥२॥

भावार्थ—" विधिपूर्वक उद्यापन (उजमणु) करवाथी लक्ष्मी कृतार्थ थाय छे, तप सफळ थाय छे, उंचा प्रकारनुं ध्यान प्राप्त थाय छे, जिनेश्वर संबंधी बोधिरत्ननो लाभ थाय छे, जिनेश्वरनी भक्ति थाय छे, अने जिनशासननी शोभा वधे छे, विगेरे अनेक गुण थाय छे. "

श्री पेथड संघवीए नवकार मंत्रना आराधनमाटे उजमणुं कर्युं हतुं. तेमां सुवर्णमुद्रिका, मणि, मुक्ताफळ, प्रवाळा, सर्व जातिना फळ, सर्व जातिनु सोनैया विगेरे द्रव्य, सर्व जातिनी सुखडी विगेर पक्वान, चद्रवा, मडा वजाओ विगेर अडसठ अडसठ मूकीने अति विस्तारवाळुं समग्र जनने विस्मय करनारु उद्यापन कर्युं हतु, ए प्रमाणे बीजाए पण शक्ति प्रमाणे करवु.

हवे भावधर्मनु वर्णन करे छे

दान तपस्तथा शील, नृणा भावेन वर्जितम् ।
अर्थहानि क्षुधापीडा, कायक्लेशश्च केवलम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"भाव विना दान करवाथी केवल द्रव्यनी हानिज थाय छे, भावविनाना तपथी मात्र क्षुधानी पीडाज सहवाय छे, अने भावविनाना शीलव्रतथी तो फक्त कायानेज क्लेश थाय छे, ते विना बीजु कांइ फळ थतु नथी "

भावना भरत चक्रीना जेवी भाववी, क जेथी भोग भोगव्या छता पण मुक्ति आपनारी थाय. मरुदेवा माता कोइ वखत एकासणु पण नहीं कर्या छता मात्र भावनाथीज मुक्ति पाम्या हता, तथा प्रसन्नचंद्र मुनिने, वल्कलचीरीने अने गौतमस्वामीए प्रतिबोधेला पंदरसो तापसोने मात्र भावथीज केवलज्ञान थयुं हतु. कह्युं छे क–

थोव पि अणुट्ठाण, भावविसुद्ध हणइ कम्ममल ।
लहुओ वि सहस्सकिरणो, तिमिरसमूह पणासेइ ॥ १ ॥

भावार्थ—"थोडु पण अनुष्ठान जो भावनी विशुद्धिपूर्वक कर्युं होय तो ते कर्ममळने हणे छे. केमक नानो (उदय पामतो) पण सूर्य अधकारसमूहनो नाश करे छे."

भाव बे प्रकारनो छे. प्रशस्त अने अप्रशस्त तेमा जिनाज्ञामा तत्परपणे, काइ पण नियाणुं कर्या विना, इच्छा रहितपणे, मात्र संसारनो पार पामवा माटे दानादि धर्मनो विस्तार करवाथी प्रशस्त भाव थाय छे, अने काइ पण आशंसादि दोष सहित दानादिक अनुष्ठान करवाथी अप्रशस्त भाव थाय छे.

भावथी चित्तनी एकाग्रता राखवा वडे घणा जीवो मोक्षे गया छे. परंतु भाव रहित अनेक प्रकारना दानादिक करवाथी एक पण जीव मोक्षे गयो नथी. साराश ए छे क–

चित्तसाध्यमिह दानमुत्तमं, शीलमप्यविकल सुदुर्द्धरम् ।
दुष्कराणि च तपांसि भावना, स्वीयचित्तवशगेति भाव्यताम् ॥१॥

भावार्थ—" मनना भाव सहित उत्तम दान देवुं, दुःखथी पाळी शकाय एवुं निर्मळ शील पाळवु, कष्टथी करी शकाय एवुं तप करवुं, अने पोताना चित्तने स्थिर राखीने भावना भाववी "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशमस्तंभस्य नवदशाधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २१९ ॥

व्याख्यान २२० मुं.

विवेकीनु कर्तव्य

विवेकवान्नरः कश्चित्, स्वभावाद्धर्मतत्त्वताम् ।
शीघ्रं विज्ञाय गृह्णाति, कपिलाह्वगुरोरिव ॥ १ ॥

भावार्थ—" कोइक विवेकी पुरुष स्वभावथीज धर्मनुं तत्त्व जाणीने कपिल नामना गुरुनी जेम तत्काळ तेने ग्रहण करे छे. "

कपिल मुनिनी कथा

कौशांबी नामनी नगरीमा जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने चौद विद्यानो पारगामी काश्यप नामनो ब्राह्मण पुरोहित हतो. तेने यशा नामनी पत्नी हती, अने कपिल नामे पुत्र हतो. ते पुत्रनी बाल्यावस्थामांज तेनो पिता मरण पाम्यो. एटले कपिलने बाळक तथा अज्ञानी जाणीने राजाए तेना बापने स्थाने बीजा कोइ योग्य ब्राह्मणने पुरोहितपदे स्थापन कर्यो. ते हमेशां घोडा पर बेसी माथे छत्र धरावी घणा सेवको सहित राजद्वारमां जतो, त्यारे तेने जोइने कपिलनी माता रुदन करती हती. एकदा पोतानी माताने रोती जोइने कपिले तेनुं कारण पूछ्युं के–" हे माता ! तुं आ ब्राह्मणने जोइने केम रुवे छे ? मारी पासे तेनुं खरखरुं कारण कह. " त्यार तेनी माताए कह्युं के–" हे पुत्र ! तारा पिताने स्थाने राजाए आ ब्राह्मणने राख्यो छे. अत्यारे जेवो आ संपत्तिवाळो देखाय छे, तेवाज तारा [illegible] प्रथम हता. तेथी आने जोइ तारा पितानुं स्मरण थवाथी खेद [illegible] रोउं छुं. तुं अभण होवाथी आ मारा

पितानी लक्ष्मी पाम्यो छे." कपिल बोल्यो के–" हे माता! मारा पितानुं स्थान मने शी रीते मळे?" ते बोली के–" तुं विद्याभ्यास कर, तो पछी राजा तने तारा पिताने स्थाने स्थापन करशे" ते बोल्यो के–" हे माता! हुं कोनी पासे अभ्यास करुं?" त्यारे तेणे कह्युं के–" आ नगरीमां तो सर्व तारा द्वेषी छे, तेथी तुं श्रावस्ती नगरीए जा. त्यां तारा पितानो मित्र इन्द्रदत्त नामनो पंडित ब्राह्मण रहे छे ते तने समग्र कळामां निपुण करशे." ते सांभळीने कपिल श्राव-स्ती नगरीए गयो. त्यां इन्द्रदत्तना चरणने नमीने तेणे नम्रताथी विनति करी के–" हे पूज्य काका! मारी माताए मने तमारी पासे मोकल्यो छे, तेथी हुं अभ्यास करवा आव्यो छुं" ते सांभळी इंद्रदत्ते तेने पुत्रनी जेम खोळामां बेसा-डी खुशी खबर पूछ्या पछी तेने जमाडीने कह्युं के–"हुं तने विद्याभ्यास करावीश, पण तारा भोजनने माटे शुं थशे? कमके मारा घरनी स्थिति एवी नथी के हुं तने जमाडी शकुं." त्यारे कपिल बोल्यो के–"हुं भिक्षावृत्ति करीने निर्वाह चलावीश." इन्द्रदत्ते कह्युं के–" हे वत्स! भिक्षा माटे भमवाथी विद्याभ्यास थइ शके नहीं अने भोजन विना पण अभ्यास बनी शके नहीं, केमके भोजन विना मृदंग[1] पण वागतुं नथी. माटे प्रथम भोजन माटे विचार करीए." एम कहीने ते बाळकने लइ इंद्रदत्त शालिभद्र नामना कोइ शेठने घेर गयो. तेना घर पासे उभो रहीने मोटे स्वरे गायत्री मंत्र बोलीने पोते ब्राह्मण छे एम जणाव्युं एटले शालिभद्र श्रेष्ठीए तेने बोलावीने पूछ्युं के–" हे ब्राह्मण! तमारे शुं जोइए छे? जे इच्छा होय ते मागो." इंद्रदत्ते कह्युं के–" आ ब्राह्मणनो पुत्र विद्यानो अर्थी छे तेने हमेशां आप भोजन आपो, एटले एने हुं भणावीश मारी पासे धन नथी, माटे हुं आपनी पासे तेनुं हमेशनुं भोजन मागुं छुं" आ प्रमाणे सांभळीने श्रेष्ठीए तेने हमेशां भोजन कराववानुं अंगीकार कर्युं. पछी ते दिवसथी कपिल इन्द्रदत्तनी पासे अभ्यास करवा लाग्यो, अने शालिभद्रने घेर जमवा जवा लाग्यो.

शालिभद्र शेठने घेरे कपिल ज्यारे जमवा बेसतो, त्यारे तेने पीरसवा एक दासी आवती, तेनी साथे हास्य विनोद करतां अनुक्रमे ते दासी उपर आसक्त थयो, अने दासी पण तेना पर आसक्त थइ. पछी ते बन्ने स्त्रीपुरुषनी जेम क्रीडा करवा लाग्यां. "अहो! विषयने धिक्कार छे! कमके विषयमां आसक्त थयेलो पुरुष काइ पण कृत्याकृत्यने जाणतो नथी" हवे ए प्रमाणे क्रीडा करतां तेमने केट-लाक दिवसो व्यतीत थया. एकदा दासीए कपिलने कह्युं के–" मारा स्वामी

---

१ मृदंग उपर आगळ पाछळ चोंगाड छे त्यारे ते बराबर अवाज करे छे.

तरीके तो तमेज छो. परंतु तमे धनरहित छो, तेथी माग निर्वाहने माटे हुं बीजा पुरुषने सेवुं ? पतिबुद्धिथी नहीं. " कपिले ते वात अंगीकार करी नहीं. त्यारपछी एक दिवस ते नगरमां सर्व दासीओनो कांइक उत्सव हतो, त्यारे ते दासी पुष्पनी माळा विगेरे लेवा माटे कांइ पण द्रव्य नहीं होवाथी उदासीमां पडी, तेने उदास जोइने कपिले पूछ्युं के-" हे प्रिया ! तुं आज उदास केम जणाय छे ?" ते बोली के-" आजे सर्व दासीओनो उत्सव छे तेथी पुष्पपत्र विगेरेनी जरूर छे. जो मारी पासे पुष्पमाल्यादि न होय तो बीजी दासीओमां मारी मश्करी थाय." आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळीने तेना दुःखे दुःखी थयेलो कपिल पण उदास थइ गयो, अने कांइ पण बोली शक्यो नहीं. तेने तेवी रीते खेद पामेलो जोइने दासी बोली के-" हे स्वामी ! तमे खेद न करो, आ नगरमां धन्य करीने एक श्रेष्ठी छे. तेने प्रातःकाळे जे जागृत करे तेने ते श्रेष्ठी बे मासा सुवर्ण आपे छे, माटे तमे त्यां जइने तेने प्रथम जगाडजो तो ते तमने बे मासा सोनु आपशे ते मने आपजो, जेथी मारु अने तमारुं कार्य थइ रहेशे. " कपिले ते अंगीकार कर्युं.

पछी कपिल ते दिवसनी रात्रे " बीजो कोइ वहेलो जइने जगाडशे "-एवा भयथी मध्यरात्रिए जाग्यो. रात्रि चंद्रवती होवाथी केटली रात्रि बाकी छे, ते जाण्या विनाज ते चाल्यो. रस्तामां जतां कोटवाळे पकड्यो, अने चोर धारीने बांध्यो. केमके " चोरना आचरण तेवांज होय छे. " पछी प्रातःकाळे सिपाइओ तेने प्रसेनजित्त राजा पासे लइ गया. राजाए तेने पूछ्युं के-" हे ब्राह्मण ! तुं कोण छे ? क्यां रहे छे ? अने शा माटे आ गाममां आव्यो छे ?" त्यारे कपिले पाछली सर्व वात कही बतावी. ते सांभळीने राजाने दया आववाथी तेने कह्युं के-" हे महात्मा ! तारी जे इच्छा होय ते माग, हुं तारी इच्छा प्रमाणे तने आपीश." कपिल बोल्यो के-" हे राजा ! हुं विचार करीने पछी मागुं." एम कहीने ते अशोक वनमां जइ विचार करवा लाग्यो के-" बे मासा सुवर्ण मागवाथी तो वस्त्र विगेरे कांइ थाय नहीं, माटे सो महोर मागुं ? सो महोरथी पण घर घरेणां विगेरे थाय नहीं. त्यारे हजार मागुं ? हजारथी पण पुत्रना विवाह विगेरे उत्सवो थाय नहीं, त्यारे एक लाख महोर मागुं ? लाखथी पण दान, मान पूर्वक मित्र, बांधव, गरीब विगेरेनो उद्धार थइ शके नहीं, माटे करोड मागुं ? सो करोड मागुं ? हजार करोड मागुं ?" आ प्रमाणे विचार करतां करतां तेने शुभ कर्मनो उदय थवाथी आवी बुद्धि उत्पन्न थइ के-

जहा लाहो तहा लोहो, लाहाल्लोहो पवड्ढइ ।
दो मासा कणय कज्जं, कोडिए वि न निट्ठिय ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम जेम लाभ थाय छे तेम तेम लोभ थाय छे. लाभथी लोभ वृद्धि पामे छे, केमके बे मासा सुवर्णनु काम हतु ते करोड सोनामहोरथी पण पूर्ण थयु नही."

" अहो ! लोभरूपी सागर दुर्धर छे, तेने पूर्ण करवाने कोइ पण शक्तिमान नथी. हु विद्या माटे अहीं आव्यो, घर तजीने परदेशमा परघेर आव्यो. इन्द्रदत्त मने धर्मार्थेज विद्या आपे छे, अने शालिभद्र शेठ भोजन आपे छे, तो पण अल्प बुद्धिवाळा में यौवनना मदथी दासी साथे गमन कर्यु. मारा निर्मळ कुळने कलंक लगाड्यु. माटे विषयोनेज धिक्कार छे के जेथी जीवो आवी रीते विडंबना पामे छे" इत्यादि विचार करता करता ते विषयोथकी विरक्त थयो तेने जातिस्मरणज्ञान थयु, तेथी ते स्वयंबुद्ध थयो. एटले मस्तक परना केश पोताने हाथे उखेडीने देवताए आपेला रजोहरण, मुखवस्त्रीका विगेरे मुनिवेशने तेणे ग्रहण कर्यो. पछी कपिल मुनि प्रसेनजित राजानी पासे गया. राजाए पूछ्यु के—" आ शु कर्यु?" तेणे " जहा लाहो तहा लोहो० " ए गाथा कहीने पोताना विचार जणाव्या राजाए कह्यु के—" मारी आज्ञा छे, तु सुखेथी सांसारिक भोग भोगव अने दुष्कर व्रत मूकी दे" कपिल मुनिए कह्यु के—" ग्रहण करेलु व्रत प्राणाते पण हु मूकीश नहीं. हु हवे निर्ग्रंथ थयो छु तेथी हे राजा ! तमने धर्मलाभ हो." आ प्रमाणे कही कपिलमुनि त्यांथी नीकळीने ममता रहित, अहंकार रहित अने इच्छा रहितपणे पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या आ प्रमाणे व्रतनु पालन करता कपिल मुनिने छ मास व्यतीत थया एटले केवळज्ञान उत्पन्न थयु

राजगृही नगरीनी पासे अढार योजन विस्तारवाळी अति भयंकर अटवी छे तेमा बलभद्र विगेरे पांचसो चोर वसे छे तेओ बोधने योग्य छे एम जाणीने कपिल मुनि ते अटवीमा गया एटले ते चोर तेमनी पासे आव्या. पल्लिपतिए मुनिने कह्यु के—" तमने नृत्य आवडे छे?" त्यारे धारीने मुनि बोल्या के—" वाजित्र वगाडनार विना नृत्य थाय नहीं " चोरो बोल्या के—" अमे हाथनी ताळीओ वगाडशु, तमे नाच करो " एटले कपिल मुनि जतनापूर्वक नृत्य करवा लाग्या, अने चोरो चारे बाजु फरता फरता ताळीओ पाडवा लाग्या. पछी नाच करता करता मुनि प्राकृत भाषामा आ प्रमाणेनी गाथा बोलवा लाग्या—

अधुवे असासयंमि, ससारंमि दुक्खपुराए ।
किं नाम हुज्ज त कम्म, जेणाहं दुग्गइ न गच्छेज्जा ॥ १ ॥

भावार्थ—"अध्रुव, अशाश्वत अने दुःखथी पूर्ण एवा संसारमां एवुं कयुं कर्म छे के जेथी जीव दुर्गतिमा न जाय ?"

आ विगेर पांचसो गाथा कपिल मुनिए कही ते सांभळीने ते पांचसो चोर प्रतिबोध पाम्या तेओने गुरुए चारित्र आप्युं, अने देवताए मुनिवेश आप्यो. ते धारण करीने तेओ महर्षि थया. पछी ते सर्वे मुनि गुरुनी साथे पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या. केटलाक वर्ष सुधी विहार करीने कपिल केवळी मोक्षे पधार्या

"आ प्रमाणे कपिल मुनि सम्यक भाववडे केवळज्ञान पाम्या, अने बळभद्र आदि चोरोने प्रतिबोध पमाडीने सिद्धिपदने प्राप्त थया."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तम्भे विंशत्यधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २२० ॥

व्याख्यान २२१ मुं.

शुद्धाशुद्ध व्रत पालन करवानुं फळ कहे छे.

बहुकालं व्रतं चीर्णं, सातिचारं निरर्थकम् ।
एकमपि दिनं साधोर्व्रतं शुचि शुभंकरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" अतिचार सहित घणा काळ सुधी व्रतनु आचरण कर्युं होय तो पण ते निरर्थक छे, अने मात्र एकज दिवस पवित्रपणे एटले अतिचार रहित मुनिव्रतनु पालन कर्युं होय तो ते शुभ फळने आपे छे."

आ उपर एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कंडरीक पुंडरीकनी कथा

जंबूद्वीपना महाविदेह क्षेत्रमा पुंडरीकिणी नामे नगरी छे तेमा महापद्म नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने बे पुत्रो थया. पछी राजाए धर्म श्रवण करतां वैराग्य उत्पन्न थवाथी मोटा पुत्र पुंडरीकने राजगादी आपी, अने नाना पुत्र कंडरीकने युवराजपदवी आपी. पोते दीक्षा लइ कर्मनो क्षय करीने मुक्ति पाम्या.

एकदा कल्याणक साधुओ ते नगरीमां आव्या तेमने वांदवा माटे बन्ने भाइओ गया तेमने मुनिए धर्मनु तत्त्व आ प्रमाणे समजाव्यु के—

भ्राम्यन् भवार्णवे प्राणी, प्राप्य कृच्छ्रान्नृणां भव ।
'पोतवद्यो हारयति, मुधा कोऽन्यस्ततो जडः' ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे प्राणी आ संसारसमुद्रमा भटकतां महा कष्टे वहाण समान मनुष्यभवने पामीने फोगट गुमावी दे छे, तेना थकी वधारे मूर्ख बीजो कोण कहवाय?"

आ प्रमाणेनी देशना सांभळीने वैराग्य पामेला बंने भाइओ घेर आव्या. पछी पुंडरीके नाना भाइने कह्युं के—" हे वत्स! आ राज्य ग्रहण कर, हुं दीक्षा ग्रहण करीश." कंडरीक बोल्यो के—" हे भाइ! आ संसारना दुःखमा मने केम नांखो छो? हुं दीक्षा लइश." मोटा भाइए कह्युं—" हे भाइ! युवावस्थामा इंद्रियोनो समूह जीती शकातो नथी, अने परीसह पण सहन थइ शकता नथी." कंडरीक बोल्यो के—" हे भाइ! नरकनां दुःख करता परीसहादिनुं दुःख कांइ वधारे नथी. माटे हुं तो चारित्र अंगीकार करीश." कंडरीकनो आवो आग्रह होवाथी पुंडरीके तेने रजा आपी, एटले तेणे मोटा उत्सवपूर्वक दीक्षा ग्रहण करी, अने पुंडरीक तो मंत्रीओना आग्रहथी भावचारित्र धारण करीने घरमाज रह्यो. कंडरीक ऋषि अगियार अंग भण्या, परंतु लुखा सुका भोजनथी तथा घणुं तप करवाथी तेना शरीरमां केटलाक रोगो उत्पन्न थया.

अन्यदा गुरुनी साथे विहार करतां करता कंडरीक मुनि पोताना नगरमां आव्या. पुंडरीक राजा तेमने वांदवा गयो. सर्व साधुओने वांद्या, परंतु शरीर कृश होवाथी पोताना भाइने ओळख्या नहीं. तेथी तेणे गुरु महाराजने पोताना भाइ संबंधी समाचार पूछ्या. गुरुए कंडरीक मुनिने बतावीने कह्युं के—" आ जे मारी पासे बेठा छे तेज तमारा भाइ छे." राजा तेमने नम्यो. पछी तेमनुं शरीर रोगग्रस्त जणावाथी गुरुनी रजा लइने तेमने राजा शहरमां लइ गयो, अने पोतानी वाहनशाळामा राखी सारा सारां राजऔषधोवडे तेमने रोगरहित कर्या. त्यां राज्य-संबंधी स्वादिष्ट भोजन करवाथी ते मुनि रसमां लोलुप थइ गया. तेथी त्यांथी विहार करवानी इच्छा न थइ. एटले राजा तेने हमेशां कहवा लाग्यो के—हे पूज्य मुनि! तमे तो अहर्निश विहार करनारा छो; द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव ए चारे प्रकारना प्रतिबंधथी रहित छो. हवे निरोगी थवाथी तमे विहार करवा उत्सुक थया हशो. तमने निर्ग्रंथने धन्य छे. हुं अधन्य छुं. केमके भोगरूपी कादवमां खुंच्यो सतो कदर्थना पामुं छुं" इत्यादि वचनो राजाए वारंवार कह्यां. एटले कंडरीक मुनि लज्जा पामी त्यांथी विहार करीने गुरु पासे गया.

पुंडरीक राजर्षिए तो पोतानी नगरीथी चालतांज अभिग्रह कर्यो के-" गुरु-पासे जइ व्रत ग्रहण कर्या पछी आहार लईश. " एवो अभिग्रह करीने चालतां मार्गमां क्षुधा, तृषा विगेरे परिषह सहन करवा पड्या छतां अने कोमळ देह छतां पण ते खेद पाम्या नहीं. बे दिवसे छठ्ठनो तप थतां गुरुपासे जइने चारित्र लीधुं. पछी गुरुनी आज्ञा लइने पारणुं करवा माटे गोचरी लेवा गया. तेमां तुच्छ अने लुखो आहार पामीने तेनावडे तेमणे प्राणवृत्ति करी. परंतु तेवो तुच्छ आहार पूर्वे कोइ वखत नहीं करलो होवाथी तेमने अति तीव्र वेदना थइ तो पण शुभ आराधना करीने पुंडरीक राजर्षि मृत्यु पाम्या, अने सर्वार्थसिद्धि नामना विमानमां उत्पन्न थया. ते विषे छठ्ठा अंगमां कह्युं छे के-

वाससहस्सपि जई, काउणवि संयम विउलपि ।
अंते किलिट्ठभावो, नवि सिज्झइ कंडरियव्व ॥ १ ॥

भावार्थ—" हजार वर्ष सुधी विपुल संयम पाळ्या छतां पण जो अंते क्लिष्ट अध्यवसाय थाय छे तो ते कंडरीकनी जेम सिद्धि पदने पामतो नथी. "

अप्पेणवि कालेण, केइ जहा गहियसीलसामन्ना ।
साहंति निययकज्जं, पुंडरियमहारिसिव्व जहा ॥ २ ॥

भावार्थ—" थोडो काळ मात्र पण चारित्र ग्रहण करीने जे यथार्थ पाळे छे ते पुंडरीक ऋषिनी जेम पोतानुं कार्य सिद्ध करे छे. "

' एवी रीते सम्यक् प्रकार चारित्र पाळीने केटलाक जीवो थोडा काळमां मोक्षगतिने पामे छे, अने बीजा अतिचार सहित घणा काळ सुधी चारित्र पाळे छे तो पण तेओ सिद्धिपदने पामता नथी. "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तंभस्य एकविंशत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २२१ ॥

व्याख्यान २२२ मुं.

सत्संग.

'उत्तम मनुष्ये सत्संग करवो' एवा सत्पुरुषना शिक्षावाक्यनी पुष्टिने माटे कहे छे के–

उत्तमाधमयोः संगफलं लब्धं परीक्षया ।
प्रभाकरेण विप्रेण, ततः कार्या सुसंगतिः ॥ १ ॥

भावार्थ—"प्रभाकर नामनो ब्राह्मण उत्तम अने अधम संगतिनुं फळ पाम्यो छे तेनु दृष्टांत सांभळीने सुज्ञजनोए परीक्षा करीने सत्संग करवो."

प्रभाकर विप्रनु दृष्टांत

वीरपुर नामना नगरमां दिवाकर नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो, ते पोताना षट्कर्ममां तत्पर हतो. तेने प्रभाकर नामे पुत्र हतो. ते सातें व्यसनमां आसक्त हतो, अने निरंकुश हाथीनी जेम स्वेच्छाए चोतरफ भमतो हतो. एक दिवस तेने तेना पिताए शीखामण दीधी के–"हे पुत्र! तुं सत्संग कर धूर्त अने अधमजनोना संगथी सारुं शील पण नाश पामे छे कह्यु छे के–

पश्य सत्संगमाहात्म्यं, स्पर्शपाषाणयोगतः ।
लोहं स्वर्णीभवेत् स्वर्णयोगात् काचो मणीयते ॥ १ ॥

भावार्थ—"सत्संगनुं माहात्म्य जुओ के पारस पाषाण (पत्थर) ना योगथी लोढु सुवर्ण थाय छे अने सुवर्णना योगथी काच मणि थाय छे."

विकाराय भवत्येव, कुलजोऽपि कुसंगतः ।
कुलजातोऽपि दाहाय, शंखो वन्हिनिषेवणात् ॥ २ ॥

भावार्थ—"उच्च कुळनो मनुष्य पण कुसंगथी विकार पामे छे जुओ! उत्तम जातिनो शंख पण अग्निनु सेवन करे छे तो ते दाहने अर्थे थाय छे."

"माटे हे पुत्र! तुं विद्वानोनो संग करीने शास्त्राभ्यास कर, काव्यरूपी अमृत रसनु पान कर, कळाओ शीख, धर्म कर, अने पोताना कुळनो उद्धार कर." आ प्रमाणे घणी शीखामण आपी, परंतु ते तो कहेवा लाग्यो के—

न शास्त्रेण क्षुधा याति, न च काव्यरसेन तृट् ।
एकमेवार्जनीयं तु, द्रविणं निष्फला क्रियाः ॥ ३ ॥

भावार्थ—"शास्त्रथी कांइ क्षुधानो नाश थतो नथी अने काव्यना रसथी काइ तृषा मटती नथी, माटे मात्र धननेज उपार्जन करवु, ते शिवायनी सर्व कळाओ निष्फळ छे."

आवी पुत्रनी उक्तिथी खेद पामेलो दिवाकर मौन रह्यो. फरीने शीखामण आपी नहीं. पछी पोताना मृत्यु समये वात्सल्यने लीधे पुत्रने बोलावीने कह्यु के—"हे पुत्र! जो के मारा वाक्य उपर तने आस्था नथी, तो पण आ श्लोकने ग्रहण कर जेथी मारु समाधि मरण थाय."

कृतज्ञस्वामिससर्ग–मुत्तमस्त्रीपरिग्रहम् ।
कुर्वन्मित्रमलोभं च, नरो नैवावसीदति ॥ १ ॥

भावार्थ—"कृतज्ञ (कदरदान) स्वामीनो संग करनार, उत्तम कुळनी स्त्री साथे विवाह करनार अने निर्लोभी मित्र करनार मनुष्य कोइ वखत पण खेद पामतो नथी."

उत्तमै सह संगत्य, पण्डितै सह संकथाम् ।
अलुब्धे सह मित्रत्व, कुर्वाणो नैव सीदति ॥ २ ॥

भावार्थ—"उत्तम पुरूषोनी संगति, पंडितो साथे वार्तालाप अने निर्लोभीनी मैत्री करनार माणस कदी पण खेद पामतो नथी."

आ बेमाथी एक श्लोकने पिताना आग्रहथी प्रभाकरे ग्रहण कर्यो. केटलीक मुद्दते तेनो पिता मरण पाम्यो पछी ते श्लोकनी परीक्षा करवा माटे प्रभाकर देशांतरमा जता कोइक गाममा सिंह नामनो क्षत्रिय रहतो हतो. जे स्वभावे कृतघ्नी हतो तेने आश्रय करने ते रह्यो ते सिंहनी एक अधम दासी हती. तेने प्रभाकरे स्त्री तरीके पोताना घरमा राखी अने लोभनंदी नामना अति लोभी अने निर्दाक्षिण्य जनोमा मुख्य एवा वणिकनी साथे मित्राइ करी.

एक वखते ते नगरना राजाए सिंहने बोलाव्यो तेनी साथे प्रभाकर पण राजसभामा गयो. "आ राजा विद्वान उपर प्रीतिवाळो छे," एम जाणीने प्रभाकर बोल्यो के—

मूर्खा मूर्खै सम संग, गावो गोभिर्मृगा मृगै ।
सुधीभि सुधियो यान्ति, समशीले हि मित्रता ॥ १ ॥

भावार्थ—"मूर्ख मूर्खनी साथे, गायो गायोनी साथे, मृग मृगनी साथे

इत्यादि नम्र वचनो कह्या छतां नीच प्रकृतिवाळा सिंह तेने मारी नाखवा माटे भटोने सोंप्यो. प्रभाकरनी अरजपर कांइ पण ध्यान आप्यु नहीं. पछी प्रभाकरे मनमा विचार्युं के-" मारे तो पितानुं वचन देवना वचन तुल्य थयु. ते वचननु उल्लंघन करवाथी मने तत्काळ आवु फळ मळ्यु " एम विचारीने गुप्त राखेलो मोर सिंह राजाने आप्यो अने तेनी रजा लइ स्त्री तथा मित्रने तजी दइने त्याथी चालतो थयो.

मार्गे चालता प्रभाकर विचार करवा लाग्यो के—

नृणां मृत्युरपि श्रेयान्, पण्डितेन सह ध्रुवम् ।
न राज्यमपि मूर्खेण, लोकद्वयविनाशिना ॥ १ ॥

भावार्थ—" माणसोने पडितनी साथे मरवु ते श्रेष्ठ, पण मूर्खनी साथे रहीने राज्य करवु ते श्रेष्ठ नहीं. कमके मूर्खनो संग आ लोकमा अने परलोकमा बंनेमा विनाश करनार छे "

अनुक्रमे चालता चालता प्रभाकर सुदरपुर नामना नगरमा गयो. त्या हेमरथ नामे राजा हतो तेने गुणसुदर नामे पुत्र हतो. ते कुमार नीच पुरुषोना संगथी अने व्यसनथी रहित हतो वळी कृतज्ञ, चतुर अने प्रियजन उपर प्रीति राखनारो हतो. तेने नगरनी बहार शस्त्र शास्त्रनो अभ्यास करता प्रभाकरे जोयो. एटले तेनी पास जइने विनयपूर्वक ते कुमारने नम्यो कुमारे पण प्रसन्न दृष्टिथी तेनी साम्रु जोइने तेनो सत्कार कर्यो. कह्यु छे के—

प्रसन्ना दृङ् मन शुद्ध, ललिता वाङ् नत शिर ।
सहजार्थिन्त्रियं पूजा, विनापि विभवं सताम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" प्रसन्न दृष्टि, शुद्ध मन, सुन्दर वाणी अने मस्तकनु नमाववु, ए वैभव विना पण सत्पुरुषोनी सहज अर्थीने विषे पूजानी सामग्री छे."

प्रभाकर पण कुमारनी स्नेहपूर्वक वातचीत जोइने विचार्यु के—

अस्याहो विशदा मूर्तिर्मित च मधुर वच ॥
नव्यमौचित्यचातुर्य, कटरे स्वच्छतात्मन ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहो ! आ कुमारनी निर्मळ मूर्ति, परिमित अने मधुर वचन, योग्यता भरेली सुदर चतुराइ अने आत्मानी निमळता कवी सुन्दर छे ? "

बाल्येऽपि मधुराः केऽपि, द्राक्षावत् केऽपि चूतवत्।
विपाकेन कदापीन्द्रवारुणीफलवत् परे ॥ २ ॥

भावार्थ–" केटलाएक द्राक्षनी जेम बाल्यावस्थाथीज मधुर होय छे, केटलाएक आम्रफळनी जेम परिणामे मधुर थाय छे, अने केटलाएक तो इंद्रवरणाना फळनी जेम कदापि पण मधुर थता नथी. "

वळी " यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसति " ज्यां मधुर आकृति छे, त्यां गुणो पण वसे छे. " एवी कहवत छे. इत्यादि विचार करीने प्रभाकरे ते कुमारनी सेवा स्वीकारी. कुमारे तेने गाममा रहवा माटे मकान आप्यु. तेमां ते रह्यो. पछी कौमारावस्थामांथीज श्रेष्ठ प्रकृतिवाळी अने स्थिरता विनयादिक गुणोवाळी कोई ब्राह्मणनी पुत्रीने ते परण्यो. अने वसंत नामना कोइ गृहस्थ साथे मित्राइ करी. ते श्रेष्ठी परोपकार करवामां निरंतर तत्पर हतो अने ते नगरमां मुख्य गणातो हतो

अनुक्रमे ते नगरनो हेमरथ राजा मृत्यु पामवाथी कुमार गुणसुंदर राजा थयो त्यारे राज्यनु सर्व कार्य करवामा समर्थ एवो प्रभाकर तेनो मंत्री थयो.

एकदा बीजा कोइ राजाए गुणसुंदर राजाने बे उत्तम लक्षणवाळा अश्वोनी भेट मोकली, पण ते घोडाने विपरीत शिक्षा आपेली हती. ते वातने नहीं जाणनारा एवा राजा तथा प्रधान ते घोडा उपर चढीने पुरनी बहार अश्वक्रीडा करवा गया त्यां घोडानो वेग जाणवा माटे तेओए घोडाने चाबुकनो प्रहार कर्यो. एटले बंने घोडा घणा वेगथी दोड्या. तेमनो वेग ओछो करवा माटे जेमजेम तेओ प्रयत्न करता, तेम तेम ते घोडाओ विपरीत शीखेला होवाथी वधारे दोडता[1]. एम करतां करतां तेओ बहु दूर नीकळी गया अने एक गाढ अरण्यमां आवी पहोंच्या. मार्गे जता विचारवंत मंत्रीए आमळाना वृक्ष उपरथी त्रण आमळा लइ लीधा. छेवट थाकीने कुमार तथा मंत्रीए लगाम ढीली मुकी, एटले तुरत ते घोडा उभा रह्या. पछी त्यांथी पाछा वळता राजाने अत्यंत तृषा लागी. तेथी मंत्रीए एक आमळुं आप्युं. थोडी वारे वळी तृषा लागवाथी बीजु आमळुं आप्यु वळी थोडी वारे त्रीजु पण आप्यु. एम त्रण आमळां वडे काळक्षेप कर्यो. एटलामा सैन्य आवी पहोंच्यु. पछी पाणी पी स्वस्थ थइने तेओ नगरमा आव्या

गुणसुंदर राजानो पुत्र पांच वर्षनो थयो हतो. ते हमेशा मंत्रीने घेर क्रीडा करवा जतो. एक वखत परीक्षा करवा माटे मंत्रीए ते कुमारने गुप्त रीते संताड्यो.

---

१ लगाम खेचवाथी उभा रहेवा ने बदले वधारे ... हता

भोजन समय राजाए सर्वत्र शोध करावी, परंतु कोइ पण स्थानेथी पत्तो लाग्यो नहीं राजा अति क्रोधयुक्त थयो अने सर्व सेवक परिवारना मुख पण फीका पडी गया. ते वखते कोइए कह्यु के–" आजे कुमार मंत्रीने घेर गया हता. " ते सांभळीने सर्वने मंत्री उपर शंका थइ. मंत्री पण ते वखत दरबारमा गयो न-होतो. तेनी पत्नीए कह्यु के–" हे स्वामी ! केम आज दरबारमां गया नथी? " मंत्रीए कह्युं–" हे प्रिये ! राजाने मुख बताववा हु शक्तिमान नथी, केमके आजे में राजकुवरने मारी नांख्यो छे. " ते बोली के–" हे नाथ ! ए शु ? पण हवे तमे खेद करशो नहीं. मंज गर्भना प्रभावथी दोहदने लीधे राजपुत्र मारी हणीने वैरीनी जेम दाह करतो हतो तेथी तेने मारी नांख्यो छे. ए प्रमाणे हुं राजाने कहीश." एटलामा तेनो मित्र श्रेष्ठी आव्यो तेणे वधी वात साभळीने कह्युं के– " हुज राजानो कोप दूर करीश,तमे फीकर करशो नहीं " एवी रीते कही मंत्रीने तथा तेनी भार्याने आश्वासन आपी ते राजा पासे गयो अने कह्युं के–" हे देव ! कुमारना संबंधमा हकीकत विपरीत बनी छे पण तेमा मंत्रीनो काइ दोष नथी." तेटलामा मंत्रीनी स्त्री पण आवी.तेणे कह्यु के–"मारा दोहदने माटे आ अयोग्य कार्य माराथी थयु छे." त्यारपछी मंत्री पण आव्यो अने भयथी कपतो होय तेम बोल्यो– "हे–राजन् ! हुज अपराधी छु. सर्वथा मारा प्राणज लेवा योग्य छे मारा करेला अकार्यने लीधे दु:खी थयाथीज मारी स्त्री पोतानो अपराध जणावे छे." आ सर्व वात साभळीने राजाए विचार्यु के–"आ मंत्री सर्व प्रकारे चतुर, हितकारी अने आमळा आपीने मारा प्राणनु रक्षण करनार छे." एम विचारीने मंत्रीने सर्व लोकसमक्ष कह्यु के–

मित्र त्वं यदि नादास्यस्तदा धात्रीफलानि मे ।
तदा क्वाहं क्व राज्यं च, क्व सुत क्व परिच्छद ॥ १ ॥

भावार्थ–" हे मित्र ! ते दिवस जो तें मने आमळा न आप्या होत तो आज हु क्याथी होत ? मारु राज्य क्याथी होत ? पुत्र क्याथी थयो होत ? अने आ परिवार पण क्याथी होत ?"

मंत्री बोल्यो के–" हे प्रभो ! तमे तो कृतज्ञपणु देखाडो छो, परतु कुमारनी हत्या करनारा एवा मने अवश्य दड आपवो जोइए " त्यारे राजाए कह्युं के–" तें मने त्रण आमळा आप्या हता, तमाथी हजी तो एक वस्तु " ते साभळीने

प्रधान बोल्यो के–" हे गुणना सागर ! ज्यारे आप एम कहो छो, त्यारे त्रणे आमळांथी सर्युं, तमे पुत्र सहित चिरकाळ राज्य करो. " एम कहीने-राजपुत्रने लावी आप्यो, कुमारने जोइने सर्वे हर्षित थया. पछी " आम शामाटे कर्युं ?" एम राजाए पूछ्युं त्यारे मंत्रीए पोताना पिताना उपदेशथी आरभीने सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. राजा ते सर्व वृत्तांत सांभळीने पोतानी प्रशंसा थइ जाणी जरा लज्जित थयो. अने मंत्रीने पोताना अर्धा आसनपर बेसाडीने बोल्यो के–" हे मित्र ! में अमूल्य एवा त्रण आमळामाथी एक आमळाने पण पुत्रतुल्य गण्युं ते योग्य कर्युं नहीं." आप्रमाणे कही अनेक प्रीतिवाक्योथी तेनो सत्कार कर्यो. आ प्रमाणे प्रभाकर मंत्री सारा राजानो आश्रय पामीने घणो सुखी थयो अने तेनी साथे रहीने चिरकाळ राज्यनुं प्रतिपालन कर्युं

" प्रभाकरनी जेम सज्जन अने दुर्जनना संगनु फळ प्रत्यक्ष जोइने विवेकी प्राणीओए सुख अने सद्गुणनी प्राप्तिने माटे निरंतर सज्जननोज संग करवो "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशमस्तंभस्य
द्वाविंशत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २२२ ॥

व्याख्यान २२३ मुं.

अंतरंग छ शत्रुने जीतवा विषे.

कामः क्रोधस्तथा लोभो, हर्षो मानो मदस्तथा ।
षड्वर्गमुत्सृजेदेव, तस्मिंस्त्यक्ते सुखी भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ–" काम, क्रोध, लोभ, हर्ष, मान अने मद–ए छ शत्रुना वर्गनो त्याग करवो, केमके तेमनो त्याग करवाथीज मनुष्य सुखी थाय छे. "

आ गाथानो विस्तरार्थ नीचे प्रमाणे

काम एटले परस्त्री उपर अथवा नहीं परणेली [कुमारी] स्त्री उपर अति आसक्ति राखवी ते आवो काम रावण अने पद्मनाभ विगेरेनी जेम विवेक तथा राज्यथी भ्रष्ट करे छे अने ... ... प्राणनो नाश थाय छे, माटे ते ते

तावन्महत्त्व पांडित्य, कुलीनत्व विवेकिता ।
यावज्ज्वलति चित्तांतर्न पाप कामपावक ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्या सुधी मनुष्यना चितमा दुष्ट कामरूपी अग्नि प्रज्वलित थतो नथी, त्या सुधीज तेनी महत्ता, विद्वत्ता, कुलीनपणु अने विवेकीपणुं रहे छे." वळी

नान्य कुतनयादाधिर्व्याधिर्नान्य क्षयामयात् ।
नान्य सेवकतो दु खी, नान्य कामुकतोऽन्धल ॥ २ ॥

भावार्थ—" कुपुत्रथी विशेष बीजो कोइ आधि (मननी पीडा) नथी, क्षय रोगथी बीजो कोइ रोग नथी, सेवक विना बीजो कोइ दु खी नथी, अने कामी पुरुष विना बीजो कोइ आधळो नथी."

क्रोध एटले बीजानो अथवा पोतानो विनाश विचार्याविना कोप करवो ते. आवो क्रोध चडकोशीयानी जेम दुर्गतिनुं कारण होवाथी सत्पुरुषने करवा योग्य नथी. कह्युं छे के-

सताप तनुते छिनत्ति विनय सौहार्दमुत्सादय-
त्युद्वेग जनयत्यवद्यवचन सूते विधत्ते कलिम् ।
कीर्तिं कृतति दुर्मति वितरति व्याहति पुण्योदय
दत्ते य कुगति स हातुमुचितो रोष सदोष सताम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे (क्रोध) सतापने विस्तारे छे, विनयने छेदी नांखे छे, मित्राइने उखेडी नाखे छे, उद्वेगने उत्पन्न करे छे, पापकारी वचनोने जन्म आपे छे, क्लेश करावे छे, कीर्तिने कापी नाखे छे, दुर्मतिने विस्तारे छे, पुण्यना उदयनो नाश करे छे, तथा नरकादि कुगतिने आपे छे, तेवा दुषणवाळो क्रोध सत्पुरुषोए त्याग करवा लायक छे." वळी

द्रुमोद्भव हति विष न हि द्रुम, न वा भुजगप्रभव भुजंगमम् ।
अद समुत्पत्तिपद दहत्यहो, दाहोल्बण क्रोधहलाहल पुन ॥ २ ॥

भावार्थ—" वृक्षथी उत्पन्न थयेलु विष वृक्षने हणतु नथी, तेमज सर्पथी उत्पन्न थयेलुं विष सर्पने हणतु नथी, परन्तु आ क्रोध रूपी भयकर विष तो आकरा दाहवाळुं होवाथी पोताना उत्पत्तिस्थानने पण बाळे छे, ते आश्चर्य छे."

लोभ एटले दान आपवा योग्य (पात्र) ने यथाशक्ति दान आपवु नहीं अथवा अन्यायथी परधनने ग्रहण करवु ते. लोभ सर्व पापनुं मूळ छे, तेनी उपर सागर श्रेष्ठी, सुभ्रम चक्री, मम्मण श्रेष्ठी अने लोभनंदी विगेरेनां दृष्टांतो प्रसिद्ध छे लोभथी व्याकुळ थयेला पुरुषो अनेक पापनां कार्यो करे छे, कह्युं छे के–

क्रयविक्रयकूटतुला, लाघव निक्षेपभक्षण व्याजैः ।
एते हि दिवसचोरा, मुष्णन्ति महाजने वणिजा ॥ १ ॥

भावार्थ–"महाजनमां गणाता आ वणिक्रूपी दिवसना चोरो लेवा तथा देवानां खोटां तोला करीने लघुलाघवी कळावडे ओछु आपीने, थापण राखेला द्रव्यनु भक्षण करीने, अने व्याजना नेणारे करीने दुनियाने लुटी ले छे."

हृत्वा धनं जनानां, दिनमखिलं विविधवचनरचनाभिः ।
वितरति गृहे किरातः, कष्टेन वराटिकात्रितयम् ॥ २ ॥

भावार्थ–"लोभी माणस आखो दिवस विविध प्रकारना वचननी रचना करीने माणसोनुं धन हरण करे छे. पण ते नीच पोताना घरमां त्रण कोडी पण महा मुश्केलीथी वापरे छे."

आख्यायिकानुरागी, व्रजति सदा पुस्तकं श्रोतुम् ।
दष्ट इव कृष्णसर्पः, पलायते दानधर्मेभ्यः ॥ ३ ॥

भावार्थ–"कथा सांभळवानो रागी एवो लोभी हमेशा पुस्तक श्रवण करवा जाय छे, परंतु दानधर्मनी वात आवे त्यारे जाणे कृष्ण सर्पथी डखायेो होय तेम त्यांथी तुरत नासी जाय छे."

उत्सृज्य साधुवृत्तं, कुटिलधिया वञ्चितः परो येन ।
आत्मैव मूढमतिना, हतसुकृतो वंचितस्तेन ॥ ४ ॥

भावार्थ–"जेणे सदाचरणनो त्याग करीने कुटिल बुद्धिथी बीजाने छेतर्यो छे ते मूढमतिवाळाए जेना सुकृत हणाया छे एवा पोताना आत्मानेज छेतर्यो छे, एम जाणवु."

द्रव्यानामपि लाभेन, न लोभः परिहीयते ।
मात्रासमधिकं कृत्र, मात्राहीनेन जीयते ॥५॥

भावार्थ—"द्रव्यादिकना लाभथी पण लोभनो पराभव थतो नथी. केमके जे मात्राए करीने अधिक होय, ते ओछी मात्रावाळाथी जीती शकतो नथी[1]"

मान एटले दुराग्रहने छोडवो नहीं, अथवा बीजाना युक्तियुक्त वचनने ग्रहण करवा नहीं ते. आ मान तत्त्व अतत्त्वनो विचार नहीं करनारा दुर्योधन जेवा दुराग्रहीने विशेषे होय छे कह्यु छे के—

दृग्भ्यां विलोकते नोर्ध्वं, ससांगेश्च प्रतिष्ठित ।
स्तब्धदेह सदा सोष्मा, मान एव महागज. ॥ १ ॥

भावार्थ—"मान ए मोटा हाथी समान छे, केमके हाथीनी जेम मानी पुरुष पोतानी दृष्टिवडे उंचु जोतो नथी, ससांग राजलक्ष्मीथी प्रतिष्ठित रहे छे, तेनुं शरीर स्तब्ध थाय छे अने हमेशा उष्मा सहित होय छे, एटले फुफाडा मार्या करे छे, आ प्रमाणे हाथीनी ने मानीनी समानता छे."

आवा माननो त्याग करवाथीज बाहुबलीने केवल ज्ञान उत्पन्न थयुं हतु माटे तेनो त्याग करवो योग्य छे

मद एटले प्राप्त थयेला बळ, कुळ, ऐश्वर्य, स्वरूप तथा विद्या विगेरेवडे अहंकार करवो, अथवा कोइने बलात्कारे बाधवो ते. कह्यु छे के—

एक सकलजनानां, हृदयेषु कृतास्पदो मदशत्रु ।
येनाविष्टशरीरो, न शृणोति न पश्यति स्तब्ध ॥ १ ॥

भावार्थ—" मदरूपी शत्रु एक छता सर्व जनोना हृदयमा निवास करे छे अने ते मद शत्रु जेना शरीरमा पेसे छे ते माणस स्तब्ध थइने कांइ पण देखतो नथी, तेमज सांभळतो पण नथी."

शौर्यमदो रूपमद , शृगारमद कुलोन्नतिमदश्च ।
विभवमदो जातिमद , मदवृन्दा देहिनामेते ॥ २ ॥

भावार्थ—" शौर्यनो मद, रूपनो मद, कामनो मद, उच्च कुळनो मद, धननो मद अने जातिनो मद—ए मनुष्योना मदरूपी हाथी छे."

---

१ लोभ स द मात्राए करीने अधिक छ अने लाभ मात्रा रहित छे बीजो रीत अर्थ करता मात्रानो अर्थ परिमाण अथवा धन त्वा

शौर्यमदः स्वभुजदर्शी,रूपमदो दर्पणादिदर्शी च ।
काममदः स्त्रीदर्शी, विभवमदस्त्वेष जात्यंधः ॥ ३ ॥

भावार्थ—" शौर्यना मदवाळो पोतानी भुजानेज जुए छे, रूपना मदवाळो आरिसा विगेरेमां पोतानु मुख देख्या करे छे, कामना मदवाळो स्त्रीओने जुए छे, अने वैभवना मदवाळो तो जन्मांध जेवोज होय छे."

सावधयः सर्वमदा, निजनिजमूलक्षयैर्विनश्यंति ।
गुरुमद एकः कुटिलो, विजृंभते निरवधिर्भोगीव ॥ ४ ॥

भावार्थ—" आ सर्व मदो तो अवधिवाळा छे, एटले तेओ पोतपोताना मूळनो क्षय थवाथी नाश पामे छे, परंतु सर्पना जेवो कुटिल एक गुरुमद छे के जे अवधि विनाज विकास पामे छे."

मौने सामंतानां, निस्पंददृशि प्रवृद्धविभवानाम् ।
भ्रूभंगमुखविकारे, धनिकानां भ्रूयुगे विटादीनाम् ॥ ५ ॥
जिह्वासूक्तविदुषां, रूपवतां दशनकेशवेशेषु ।
वैद्यानामोष्ठपुटे, ग्रीवायां गुरुनियोगिगणकानाम् ॥ ६ ॥
स्कंधतटे सुभटानां, हृदये वणिजां करेषु शिल्पवताम् ।
गंडेषु कुंजराणां, घनस्तनतटेषु तरुणीनाम् ॥ ७ ॥

भावार्थ—" सामंतोने मौनपणामां मद रहे छे, अधिक वैभववाळाने मदई मार्या विनानी दृष्टिमा मद रहे छे[1], धनिकने भ्रकुटीनो भंग करवामां अथवा मुखना विकारमा मद रहे छे, जार पुरुषोने भ्रकुटीमां मद रहे छे, उद्धत विद्वानोनी जीभमां मद होय छे, रूपवाळाने दांत तथा केशनी रचनामां मद रहे छे, वैद्योने होठ उपर मद रहे छे, मोटा अधिकारी तथा जोशीने ग्रीवामा मद रहे छे, सुभटोने स्कंध उपर मद रहे छे, वाणीयाओने हृदयमां मद रहे छे, कारीगरोने हाथमां मद रहे छे, हाथीओने गंडस्थलमा मद रहे छे, अने स्त्रीओने पोताना स्तनमां मद रहे छे."

१-वैभवना मदवाळो बहु जोता ।

उन्नत चित्तवाळाने आवो मद करवो उचित नथी. केमके-

पातालान्न समुद्धृतो बलिनृपो नीतो न मृत्युः क्षयं
नोन्मृष्टं शशलाञ्छनस्य मलिनं नोन्मूलिता व्याधयः ।
शेषस्यापि धरा विधृत्य न कृतो भारावतारः क्षणं
चेतः सत्पुरुषाभिमानगणना मिथ्या वहन् लज्जसे ॥ ॥

भावार्थ—" हे आत्मा ! तें काइ पातालमांथी बलि राजानो उद्धार कर्यो नथी, यमराजाने क्षय पमाड्यो नथी, चंद्रनु मलिनपणुं दूर कर्युं नथी, व्याधिओने निर्मूळ कर्या नथी तथा पृथ्वीने धारण करीने शेषनागनो एक क्षणवार पण भार उतार्यो नथी, तेथी सत्पुरुषपणाना अभिमाननी खोटी गणना वहन करता तारे शरमावु जोइए छीए."

हर्ष एटले कारण विना कोइने दुःख आपीने अथवा पोते शीकार के द्यूत विगेरे अनर्थकारी व्यसननो आश्रय करीने मनमा खुशी थवु ते. आ हर्ष दुर्ध्यानमा जेमनु चित्त मग्न थयु छे एवा अधम पुरुषोनेज सुलभ छे. कह्युं छे के—

परवसण अभिनिंदइ, निरवक्खो निद्दओ निरणुतावो ।
हरिसिज्जइ कयपावो, रुद्दज्झाणोवगयचित्तो ॥ १ ॥

भावार्थ—" रौद्र ध्यानमा अवगत चित्तवाळो प्राणी परने कष्टमा पडेल जोइने खुशी थाय छे, निरपेक्षपणे वर्ते छे, निर्दय होय छे, पाप करीने पश्चात्ताप करतो नथी, पण पाप करीने उल्टो खुशी थाय छे."

तुष्यंति भोजनैर्विप्रा, मयूरा घनगर्जितैः ।
साधवः परकल्याणैः, खला परविपत्तिभिः ॥ २ ॥

भावार्थ—" ब्राह्मणो भोजनथी हर्ष पामे छे, मोर मेघनी गर्जनाथी हर्ष पामे छे, साधुओ परना कल्याणथी हर्ष पामे छे अने खळ पुरुषो बीजानी आपत्ति जोइने हर्ष पामे छे "

जुओ ! वनवासमा पांडवो दुःख पामे छे एवु साभळीने तथा जोइने दुर्योधन अत्यंत हर्ष पाम्यो हतो, तथा श्रीपाल राजाने समुद्रमा नाखी दइने धवलश्रेष्ठी पोताने इष्ट सिद्धि थयेली मानी अति हर्ष पाम्यो हतो.

उपर कहेला छ अंतरंग शत्रुओ निंद्य होवाथी, अपकीर्ति तथा अनर्थना

हेतुभूत होवाथी अने परलोकमां दुर्गतिनां कारण होवाथी विवेकी पुरुषोए त्याग करवा योग्य छे.

"जे विवेकी महात्मा पुरुष आ छ अतरंग शत्रुओनो त्याग करे छे ते गृहस्थाश्रममां रह्यो सतो पण धर्मकार्य, सत्कीर्ति, सुख अने शोभा विगेरेने पामे छे.

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तंभे त्रयोविंशत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २२३ ॥

व्याख्यान २२४ मुं.

कर्मयोगे पडवाड थया छतां पण जे फरीथी पोताना आत्माने तारे छे ते धन्य छे.

शिथिलाः संयमे योगे, भूत्वा भूयोऽप्रमादिनः ।
भवंति ते प्रशस्याः स्युर्यथा सेलकसाधवः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेओ चारित्र योगने विषे शिथिल थइने पण फरीथी अप्रमादी थाय छे, तेओ सेलक साधुनी जेम प्रशंसा करवा लायक छे."

सेलक मुनिनु दृष्टांत

नव योजन विस्तारवाळी अने बार योजन लांबी द्वारका नगरीमां कृष्ण वासुदेव राज्य करता हता, ते वखते सोळ हजार राजाओ तेनी आज्ञा मस्तकपर चडावता हता. तेने प्रद्युम्न विगेरे साडा त्रण क्रोड पुत्रो हता. तेमा शांब विगेरे पुत्रो कोइथी दमन कराय तेवा नहोता. ते नगरीमां एक थावच्चापुत्र नामे गृहस्थ कुमार हतो. तेने तेना मातापे एक दिवसे बत्रीश कन्याओ परणावी हती. तेमनी साथे ते पंचेंद्रिय संबंधी विषयसुख भोगवतो हतो एक दिवस दश धनुषनी उंची कायावाळा श्रीनेमिनाथ तीर्थंकर अढार हजार साधुना परिवार सहित समवसर्या. ते समाचार वनपाळना मुखथी सांभळीने कौमुदिकी नामनी भेरीथी उदघोषणा करावी चतुरंग सेना सहित श्रीकृष्ण प्रभुने वांदवा गया. सर्व पौरजनो साथे थावच्चापुत्र पण वांदवा गयो. त्यां प्रभुए कहेली धर्मदेशना सांभळीने बोध पामेला थावच्चापुत्र घेर आवी पोतानी माताने कह्यु के "मने दीक्षा अपावो." माताए संसारना सुखनो घणो लोभ लगाड्यो, पण ते लोभायो नहीं.

त्यारे तेनी माता कृष्ण पासे गइ अने भेटणु मूकीने विनति करी के "हे राजन्! दीक्षा लेवाने इच्छता मारा पुत्रने तमे शीखामण आपो, जो मारो एकनो एक पुत्र दीक्षा लेशे तो हु निराधार शीरीते जीवीश?" कृष्ण तेणीने धीरज आपीने सेना सहित तेने घेर गया, अने थावच्चापुत्रने कह्यु के-"हे वत्स! तु ससारना विलासोने आनदथी भोगव. अमारी छायामां रहेवाथी तारुं कांइ पण अहित थशे नहीं." ते सांभळीने थावच्चापुत्र हसीने बोल्यो के-"हे राजन्! एक मृत्युएज मने अनंती वार विटबना पमाडयो छे, ते मारा अहितने तमे निवारण करो तो तमे मारा खरा हितवाछक छो एम हु मानु." कृष्णे कह्यु के-"ते तो परमानदनी प्राप्ति थाय त्यारेज थाय तेम छे." त्यारे थावच्चापुत्र बोल्यो के-"एटलामाटेज मृत्युए करेला अहितनु निवारण करवा सारु श्रीनेमिनाथना चरणकमळने सेववा हु इच्छु छु."

आ प्रमाणे तेनी स्थिरता जोइने हर्ष पामेला कृष्णे नगरीमां उद्घोषणा करावी के-"आ थावच्चापुत्रनी साथे जे कोइ दीक्षा लेशे तेना कुटुबनुं भरणपोषण तथा दीक्षानो उत्सव कृष्ण जाते करशे." आवी उद्घोषणा थवाथी एक हजार माणसो दीक्षा लेवा तैयार थया ते सर्वनी साथे थावच्चापुत्रनो दीक्षा महोत्सव श्रीकृष्णे कर्यो. हजार पुरुषोथी वहन थइ शके एवी शिबिकामां बेसीने हजार दीक्षाभिलाषी माणसो सहित थावच्चापुत्र जिनेश्वर पासे आव्यो, ते वखते तेनी माताए प्रभुने कह्यु के-"आ शिष्यरूपी भीक्षा ग्रहण करो, अने तेने बने प्रकारनी शिक्षा (शिखामण) आपो." पछी तेणीए आंखमा अश्रु लावीने पुत्र प्रत्ये कह्युं के-"हे पुत्र! आ चारित्र पाळवामा किंचित् प्रमाद करीश नहीं." पछी थावच्चापुत्रे हजार माणसो सहित प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी। अनुक्रमे सामायिकथी आरंभीने चौद पूर्वनो अभ्यास करी एक हजार शिष्यना आचार्य थया।

एकदा जिनेश्वरनी आज्ञा लइने विहार करता करतां थावच्चापुत्र आचार्य सेलकपुरे समवसर्या ते पुरमा पथक विगेरे पाचसो मंत्रीनो स्वामी सेलक नामे राजा राज्य करतो हतो. तेणे आचार्य पासे मोटा उत्सवपूर्वक आवीने धर्मदेशना साभळी पछी पाचसो अमात्य सहित तेणे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो।

हवे सौगंधिक नामना नगरमा एक सुदर्शन नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो अ यदा चार वेदने जाणनार तथा शौच, सतोष, स्वाध्याय, तप तथा देवनु

ध्यान इत्यादि धर्मना नियमवाळो अने गेरुए रंगेला वस्त्रने धारण करनार शुक नामनो परिव्राजक एक हजार शिष्यो (तापसो) सहित त्यां आव्यो. तेनो शौचमूलक सांख्य धर्म सांभळीने सुदर्शने ते ग्रहण कर्यो एकदा विहार करता करता थावच्चापुत्र आचार्य ते नगरमां पधार्या ते वात सांभळी सुदर्शने तेमनी परीक्षा करवा माटे तेनी पासे आवीने पूछ्युं के–" तमारो शौचमूलक धर्म छे के बीजो धर्म छे ?" सूरिए कह्युं के–" हे श्रेष्ठी ! अमारो विनयमूलक धर्म छे. ते पण साधु श्रावक भेदे करीने बे प्रकारनो छे, अने बीजा तेना क्षांत्यादि दश प्रकार छे." इत्यादि वाक्योथी प्रतिबोध पामीने सुदर्शने श्रावकधर्म ग्रहण कर्यो, अने जीवादि तत्त्वोनुं स्वरूप जाणीने अस्थिमज्जाए जैनधर्म उपर प्रेमवाळो थयो अन्यदा तेनो पूर्वगुरु शुक परिव्राजक हजार शिष्यो सहित ते नगरमां आव्यो. त्यां सुदर्शनने अन्य धर्ममां आसक्त थयेलो जोइने " अरे रे ! कया पाखंडीथी तुं छेतरायो ?" एम तेणे पूछ्युं, एटले श्रेष्ठी बोल्यो के–" मारा गुरु चार ज्ञानने धारण करनारा थावच्चापुत्र नामना आचार्य छे ते अहींज छे, तेणे मने विनयमूलक धर्म पमाड्यो छे " पछी हजार शिष्योने साथे लइने शुक परिव्राजक ते श्रेष्ठीनी साथे सूरि पासे जइने प्रश्नो पूछवा लाग्या

शुक–हे भगवन् ! तमारे यात्रा, यापनिका, अव्याबाधा अने प्रासुक विहार छे?

सूरि–हे शुक ! ते सर्व अमारे छे

शुक–हे भगवन् ! तमारे कई यात्रा छे ?

सूरि–हे शुक ! साधुओने ज्ञानादिक त्रण रत्न मेळववामां यत्न करवो, ते यात्रा होय छे

शुक–हे भगवन् ! तमारे यापना शी छे ?

सूरि–हे शुक ! यापना बे प्रकारनी होय छे. इंद्रिय यापना अने नोइंद्रिय यापना. तेमां शुभ अने प्रशस्त मार्गने अनुसरवाथी पांच इंद्रियो संबंधी यापना अमारे शुभ छे, अने क्रोधादि रहित अंतःकरण होवाथी नोइंद्रिय यापना पण अमारे प्रशस्त छे.

शुक–हे भगवन् ! तमने अव्याबाधा शी रीते छे ?

सूरि–हे शुक ! विविध प्रकारनी व्याधिओ अमने पीडा करती नथी, ते अव्याबाधा छे.

शुक–हे आचार्य ! तमारे प्रासुक विहार शी रीते छे ?

सूरि–स्त्री, पशु अने नपुंसक रहित वसतीमां, जीव रहित स्थाने, पाट पाटला

विगेरे याचनावडे ग्रहण करीने अमे विचरीए छीए–रहीए छीए, ते अमारो प्रासुक विहार छे.

पछी शुक आचार्य "सरिसवया भक्षण करवा लायक छे? के अभक्ष्य छे?" इत्यादि छठ्ठा अगमा वर्णवेला प्रश्नो पूछया, तेना योग्य उत्तर सांभळीने सुलभबोधि होवाथी ते प्रतिबोध पाम्या, एटले हजार शिष्यो सहित तेमणे जैनी दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे ते सूरिपद पाम्या. पछी थावच्चापुत्र आचार्य पोतानो निर्वाण समय नजीक जाणी हजार मुनिओ सहित शत्रुंजय गिरिए पधार्या. त्या एक मासनु अनशन ग्रहण करी अते केवली थइने मुक्तिपद पाम्या.

त्यार पछी चौद पूर्वने जाणनार शुक आचार्य विहार करता करतां अन्यदा सेलकपुरना उद्यानमा समवसर्या. ते वात जाणीने सेलक राजा पाचसो मंत्री सहित तेमने वांदवा गयो. गुरुने नमी धर्मोपदेश सांभळीने सेलक राजा वैराग्य पामी पोताने घेर गयो. त्या पोतानी राणी साथे बेसीने पाचसो मत्रीने तेणे कह्यु के "हे मत्रीओ ! हु समस्त पापने नाशने करनारी प्रव्रज्या लेवानो छु, तमे शु करशो ?" तेओ बोल्या–" हे स्वामिन् ! अमे पण सयमना सुखनी इच्छावाळा छीए, तेथी तमारी साथे व्रत ग्रहण करशु." त्यार राजाए कह्यु के–" जो एम छे तो तमे पोतपोताने घेर जइ पोतपोताना पुत्रने गृहनो कार्यभार सोंपीने हजार पुरुषोथी वहन थाय तेवी शिबिका उपर आरूढ थइ अहीं जलदीथी आवो." तेओने ए प्रमाणे करीने राजाए पोताना मडुककुमारने राज्याभिषेक कर्यो. पछी मडुक राजाए जेनो निष्क्रमणोत्सव कर्यो छे एवा राजाए पाचसो मत्री सहित शुक आचार्यनी पासे आवीने त्रिविधे त्रिविधे सर्व सावद्य योगनु प्रत्याख्यान कर्यु.

अनुक्रमे सेलक मुनिने बार अगने धारण करनार थयेला जाणीने शुक सूरिए तेने सूरिपद उपर स्थापन कर्या. पछी शुकसूरि चिरकाळ विहार करीने हजार मुनिओ सहित शत्रुंजयगिरिपर गया त्या एक मासनु अनशन करीने मोक्षपद पाम्या

श्री सेलकाचार्यनु शरीर लुखु, सुकु, तुच्छ अने कालातिक्रांत[१] भोजन करवाथी कडु (खरज), दाह तथा पीत ज्वरना व्याधिथी व्याप्त थयु. तेओ विहार करता करता सेलकपुर गया. त्या तेनो पुत्र मंडुक राजा तेमने वांदवा आव्यो. धर्मदेशना सांभळीने तेणे श्रावकधर्म अगीकार कर्यो पछी आचार्यनो देह शुष्क

१ बहु वखत जवाथी अन्यन ठरी गयेलु

तथा व्याधिग्रस्त जाणीने तेणे कह्युं के-" हे गुरु ! मारी यानशाळामां निवास करो. " एटले सूरि पांचसो शिष्यो सहित त्यां रह्या पछी मंडुक राजाए गुरुनी आज्ञा लइने वैद्य बोलाव्यो, तेणे औषध करवा मांड्युं. परंतु रोगना मूल उच्छेदनने माटे तेणे मद्यपान कराव्युं, तेथी सूरि नीरोगी थया, परंतु रसलोलुप थइ गया. कह्युं छे के "अभक्ष्य एवा मद्यपानादिक वडे साधु मूर्छित, गृद्ध, उसन्न विहारी, पासत्था, कुशिलीआ, प्रमादी अने संसक्ता थइ जाइ छे. " गुरुनी एवी स्थिति जोइने एक पथक विना बीजा चारसो नवाणु साधुओए विचार कर्यो के "गुरु तो प्रमादी अने एकस्थाननिवासी थइ गया छे, तेथी आपणे गुरुनी आज्ञा लइने विहार करीए " आम विचारीने तेओए आज्ञा लइने त्यांथी विहार कर्यो. मात्र एक पथक मुनि तेमनी वैयावच्च करवा रह्या.

अन्यदा चातुर्मासनी चतुर्दशीने दिवसे सूरि अत्यंत मद्यपान करीने सुता हता. ते वखते पथक मुनि देवसी प्रतिक्रमण करीने कार्तिक चोमासीना खामणा खामवा माटे निद्रा पामेला गुरुना पादमा मस्तक राखीने "अब्भुट्ठिओहं" इत्यादि बोलवा लाग्या ते शब्द सांभळवाथी तथा पोताना पगने स्पर्श थवाथी गुरुनी निद्रानो भंग थयो तेथी "मने कोण जगाडे छे?" एम बोलतां गुरु उठ्या.त्यारे पथक विनयथी नम्र थइने बोल्यो-"हे स्वामिन् ! मने धिक्कार छे के चातुर्मासीना खामणा माटे में आपने जगाड्या माटे मारो अपराध क्षमा करो " आ प्रमाणेना तेना विनय भरेला वाक्यथी लज्जा पामीने सेलकाचार्य तेनी अनुमोदना करवा लाग्या, अने प्रमादमां आसक्त थयेला पोतानी अनेक प्रकारे निंदा करवा लाग्या-" अरेरे ! में रसमा गृद्ध थइने चारित्ररत्नने मलिन कर्युं, आ शिष्यने धन्य छे के तेणे मने बाह्यथी तथा अभ्यंतरथी एम बन्ने प्रकारे जाग्रत कर्यो. अहो ! हुं क्यां अने आ शिष्य क्यां ? मारामा अने तेनामां घणुं अंतर छे. मारो गुरु तो खरेखरो एज छे, केमके ते पंथके मने रस्ता उपर आण्यो, माटे तेणे "पथक" एटले "मार्ग देखाडनार" एवु पोतानु नाम सार्थक कर्युं. वळी नहीं वांदवा योग्य एवा मने द्वादशावर्त्त वंदन पूर्वक वंदना करी, अने मारा दोष जाणतां छतां तेणे गुप्त राख्या " इत्यादि तेनी प्रशंसा करीने सूरिए विचार्युं के-" काले मंडुक राजानी रजा लइ अहींथी विहार करीने फरीथी निर्मळ संयमने पाळुं. " पछी ते प्रमाणे करीने आलोयणवडे पोताना आत्मानी शुद्धि करी सेलक गुरु घणा भव्य प्राणीओने बोध पमाडी छेवट पांचसो मुनि सहित सिद्धाचळ उपर पधार्या. त्या एक मासनं अनशन करीने ज्ञानने अने परमानंदपदने पाम्या.

" आचारथी भ्रष्ट थयेला एवा गुरुने पण तज्या विना क्षामणादि विधिना मिषथी पंथक साधुए तेने मार्ग पर आण्या, अने छेवट ते सेलक सूरि सिद्धाचळ उपर सिद्धिपदने पाम्या."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तंभस्य चतुर्विंशत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २२४ ॥

व्याख्यान २२५ मुं.

कार्तिकी पूर्णिमानुं महात्म्य

य कुर्यात् कार्तिकी राका—मत्रार्हध्यानतत्पर ।
स भुक्त्वा सर्वसौख्यानि, निर्वृत्ति लभते तत ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे माणस अहीं (सिद्धाद्रि उपर) जिनेश्वरना ध्यानमा तत्पर थइने कार्तिकी पुनम करे, ते आ लोकमा सर्व सुख भोगवीने पछी मोक्षसुखने पामे छे. "

एकेनाप्युपवासेन, कार्तिक्या विमलाचले ।
ऋषिस्त्रीबालहत्यादिपातकान्मुच्यते जन ॥ २ ॥

भावार्थ—" शत्रुंजय गिरि उपर कार्तिकी पुनमने दिवसे मात्र एक उपवास करवाथी माणस ऋषिहत्या, स्त्रीहत्या अने बाळहत्या विगेरे पापोथी मुक्त थाय छे " ते उपर दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

द्राविड वालिखिल्ल कथा

' ऋषभदेवनो पुत्र द्रविड नामे हतो तेने द्राविड अने वालिखिल्ल नामना बे पुत्रो थया हता. एकदा द्राविडने मिथिलानु राज्य अने वालिखिल्लने लाख गामो आपीने द्रविडे प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी अयदा द्राविड पोताना नाना भाइने अधिक संपत्तिवाळो जोइने तेनी उन्नति नहीं सहन थवाथी तेना पर द्वेष करवा लाग्यो. वालिखिल्ल पण ते वृत्तांत जाणीने मोटा भाइ पर द्वेष धरवा लाग्यो ए रीते परस्पर द्वेष थवाथी तेओ एक बीजाना राज्य ग्रहण करवामा

उत्सुक थया, अने परस्परना छळ जोवा लाग्या. तेवामां एक वखत वालिखिल्ल द्राविडना नगरमां आवतो हतो, त्यारे द्राविडे तेने नगरमां आवतो अटकाव्यो. तेथी वालिखिल्लने क्रोध चड्यो एटले तेणे युद्ध करवा माटे पोतानु सैन्य एकठुं कर्युं. द्राविड पण युद्धमाटे तैयार थइ गयो. बन्ने जण सामसामा आव्या. वचे पांच योजन युद्धभूमि राखीने बंने जणाए सेनानो पडाव नांख्यो. बन्नेना सैन्यमां दश दश लाख हाथी, घोडा अने रथो हता, तथा दश क्रोड पत्ति हता. पछी निश्चय करला दिवसे युद्ध शरु कर्युं. हाथीवाला हाथीवाला साथे अने पत्ति पत्ति साथे एवी रीते समान युद्ध थवा लाग्यु. आ प्रमाणे निरंतर युद्ध करतां सात मास व्यतीत थइ गया. तेमां एकंदर दश क्रोड सुभटोनो नाश थयो. तेवामां वर्षा ऋतु आववाथी युद्ध बंध राखीने घास अने पांदडांनी झुंपडीओ करीने त्यांज रह्या.

अनुक्रमे वर्षा ऋतु व्यतीत थइ, अने सर्व धान्य तथा औषधिओ पाकी गइ. ते वखते द्राविड पोताना परिवार सहित वननी समृद्धि (शोभा) जोवा माटे नीकळ्यो. आगळ चालतां पोताना विमलमति नामना प्रधाननी प्रेरणाथी कोइ तापसना आश्रममां गयो त्यां जटारूपी मुकुटथी सुशोभित, वल्कल वस्त्रने धारण करनार अने पर्यंकासने बेठेला सुवल्गु नामना कुलपतिने दीठा. तेनी फरता घणा तापसो बेठला हता, अने तेनी आकृति शांत तथा दयाळु जणाती हती. एवा कुलपतिने जोइने द्राविड राजाए तेने प्रणाम कर्या. मुनिए पण ध्यान तजी दइ राजाने आशीर्वादनां वचनोवडे हर्षित कर्यो. पछी कुलपति अनुग्रहनी बुद्धिथी धर्मदेशना आपवा लाग्या—" हे राजन ! आ संसाररूपी सागर अनंत दुःखरूपी जळथी भरेलो छे, कामक्रोधादिक मकरना समूहथी ते अति भयकर छे तेमां आखा जगतने गळी जवामां लालचु एवो लोभरूपी वडवानळ रह्लो छे, अने तेमा रहेला विषयोरूपी आवर्तमां निमग्न थयेला सुर, असुर अने राजाओ विगेरे कोइपण प्रकारे तेमांथी नीकळी शकता नथी. आ संसारमा जे राज्य पामवु ते अंते नरकने आपनारज छे, माटे हे राजन ! तमने एवा नरकरूपी अनर्थने आपनारा राज्यना लोभथी भाइनी साथे महा अनर्थकारी युद्ध करवुं योग्य नथी. जेओ एक खंड मात्र पृथ्वीना लोभथी बंधु विगेरेनो नाश करे छे, ते अनंत दुःखो पामे छे. माटे तमारे श्रीऋषभप्रभुना पौत्रोने आवो क्लेश करवो योग्य नथी."

आ प्रमाणेना कुलपतिना वचनो सांभळीने द्राविड राजा बोल्यो के-" हे भगवन् ! पूर्वे भरत तथा बाहुबळी विगेरेए पण ते कारणने लीने परस्पर युद्ध कर्यां हतां, तो अमारो शो दोष ? " मुनि बोल्या के-" हे राजा ! भरते पूर्वे जन्ममां साधुओने आहार देवानी भक्तिए करीने चक्रवर्तिपणु उपार्जन कर्युं हतुं, अने बाहुबळीए साधुओनी वैयावच्च करीने बाहुनु बळ उपार्जन कर्युं हतुं. बन्ने पोतपोताना शुभ कर्मनु फळ पाम्या हता भरत चक्रीए तो चक्ररत्न आयुधशाळामा न पेसवाथी युद्ध कर्युं,अने बाहुबळीए एवो विचार कर्यो के-" पिताए मने राज्य आप्यु छे, ते भरत लइ लेवाने इच्छे छे, तो शु हु निर्बळ छु के आपी दउ ? अर्थात् तेनी आज्ञा स्वीकारु ? हु तो तातना चरणकमळ शिवाय बीजाने नमीश नहीं." इत्यादि कारणथी तेमनु युद्ध थयु हतु. तेम छता पण देवताओना कहेवाथी ते बन्ने बोध पाम्या हता, अने तेमणे पोताना आत्माने तार्या हता माटे हे राजन् ! तेवा पुरुषसिंहोनी स्पर्धा तमारे करवी योग्य नथी. "

आ प्रमाणेना कुलपतिनां वचनो सांभळीने द्राविड राजा लज्जित थयो, अने पश्चाताप करवा लाग्यो. ते बोल्यो के-" हे मुनि ! में मूर्खाए अज्ञानताथी मारा काकानी समानता ग्रहण करी, परतु काच चिंतामणीना प्रभावने कदिपण पामी शकतोज नथी आपे मने घोर नरकमा पडतो बचाव्यो छे मारा विवेकरूपी नेत्र उघड्या." आ प्रमाणे बोलीने ते जाते पोताना नाना भाइने खमाववा चाल्यो. वालिखिल्ल पण मोटा भाइने सन्मुख आवतो जोइने पोतेज तेनी सामे गयो, अने तेना पगमां पड्यो, एटले द्राविडे तेने उभो करी स्नेहपूर्वक आलिंगन कर्युं. वालिखिल्ल बोल्यो-" हे भाइ ! तमे मारा ज्येष्ठ बंधु छो, माटे मारु राज्य ग्रहण करो. " द्राविड पण गद्गद कंठे बोल्यो-" हे भाइ ! राज्यथी शुं ? आ संसारना कामभोग अनित्य छे, दुर्गतिमा पडता प्राणीओने धर्म विना बीजु काइ पण शरणभूत नथी, माटे मारे तो व्रत अंगीकार करवु छे, तेथी तने खमाववा आव्यो छुं "नानो भाइ बोल्यो-" हे भाइ ! जो तमे सर्व प्रकारे श्रेय करनार व्रतने आदरवा इच्छो छो, तो मारे पण तेज अंगीकार करवु छे " एम कही बन्ने जणाए पोतपोताना पुत्रने राज्य सोंपी पोतपोताना मंत्रीओ सहीत दश क्रोड पुरुषो साथे तेज तापस पासे जइ तापसव्रत ग्रहण कर्युं ते सर्वे कन्दमूळनो आहार करता,

गंगाजळमां स्नान करता, अने अल्प कपाय तथा अल्प निद्रावाळा थइने जप-मालावडे श्री युगादीश प्रभुनुं स्मरण करता तथा परस्पर धर्मकथा करता हता. ए प्रमाणे तेमणे एक लाख वर्ष त्यांज निर्गमन कर्यां.

एकदा नमिविनमि नामना विद्याधर राजर्षिना बे प्रशिष्यो[1] आकाश मार्गे त्यां आव्या. तेमने ते सर्वे तापसोए वांदीने पूछ्युं के-" तमे क्यां जाओ छो?" त्यारे ते बन्ने मुनिओ तेमने धर्मलाभनी आशीष आपीने बोल्या के— " अमे पुंडरीक गिरिनी यात्रा करवा जइए छीए." तापसोए पूछ्युं के-" ते गिरिनुं महात्म्य केवुं छे?" मुनिए जवाब आप्यो के-

अनंता मुक्तिमासेदुरत्र तीर्थप्रभावत ।
सेत्स्यंति बहवोऽप्यत्र, शुद्धचारित्रभूषिताः ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहीं (सिद्धाचळ उपर) तीर्थना प्रभावथी शुद्ध चारित्रथी शोभता एवा अनंत जीवो मुक्ति गया छे, अने हजु पण घणा जीवो अहीं सिद्धि-पदने पामशे."

आ प्रमाणे लाख वर्ष सुधी कहीए तोपण ते तीर्थना महिमानो पार आवे तेम नथी. ते तीर्थमां नमिविनमि नामना मुनींद्र बे क्रोड मुनिओ सहित पुंडरीक गणधरनी जेम फाल्गुन शुदि दशमीने दिवसे मोक्षे गया छे. पूर्वे श्रीमान अनंत ज्ञानगुणना भंडार श्रीऋषभदेवना गणधरो विगेरे केवलीनां वचनथी अमे साभळ्युं छे के-" आगामि काळे आ तीर्थे घणा उत्तम पुरुषो सिद्धिपदने पामशे श्री रामचंद्र राजर्षि त्रण क्रोड मुनि सहित सिद्धिने पामशे, एकाणु लाख मुनिओ सहित नारदजी मुक्ति पामशे, साडा आठ क्रोड मुनिओ सहित शांब अने प्रद्युम्न सिद्धिने पामशे, वीश क्रोड मुनि सहित पांडवो सिद्धि पामशे, थावच्चापुत्र तथा शुक आचार्य विगेरे हजार हजार साधुओ सहित मुक्ति पामशे, पांचसो साधु सहित सेलक राजर्षि सिद्धिने पामशे तथा श्रीऋषभदेव स्वामीना शासनमां पण असंख्य कोटी लक्ष साधुओ मुक्तिपदने पामशे. तेथी केवळज्ञानी पण ए तीर्थना महिमानुं वर्णन करवाने शक्तिमान नथी " इत्यादि महात्म्य सांभळीने ते सर्वे तापसो पुंडरीक तीर्थनी यात्रा करवा उत्सुक थया एटले ते मुनिनी साथे ते तरफ भूमिमार्गे प्रयाण कर्युं. मार्गमां ते विद्याधर मुनिना उपदेशथी ते सर्वे तापसोए

१ शिष्यना शिष्य

मिथ्यात्वनी क्रियाओ छोडी दई लोच करीने साधुधर्म अंगीकार कर्यो अनुक्रमे दूरथी सिद्धाचळने दृष्टिवडे जोइने तमने अत्यंत हर्ष उत्पन्न थयो पछी त्यां पहोंची, उपर चडीने श्री भरतचक्रीना बनावेला चैत्योमां युगादीश प्रभुने तेओ भक्तिपूर्वक नम्या. त्यारपछी मासक्षमणने अंते ते विद्याधर मुनिओए तेमने कह्युं के-" हे मुनिओ ! तमारा अनंत काळथी संचय करेला पापकर्मो आ तीर्थनी सेवावडे क्षय पामशे, माटे तमारे अहींज तपसंयममां तत्पर थइने रहेवुं " एम कहीने ते बन्ने मुनि त्यांथी अन्यत्र विहार करी गया.

पछी ते द्राविड, वालिखिल्ल विगेरे दश क्रोड साधुओ त्यांज रहीने तप करवा लाग्या. अनुक्रमे एक महिनानी संलेखना करीने ते सर्वे केवळज्ञान पामी मोक्षे गया. तेमना पुत्रोए त्यां आवी तेमना निर्वाणस्थाने प्रासादो कराव्या. श्रीभरतेशना निर्वाणथी पूर्व क्रोडी वर्ष गया पछी द्राविड विगेरे मुनिओनुं निर्वाण थयुं. काळना क्रमे करीने आ वृत्तांत नहीं जाणनारा मिथ्यात्वीओ कार्तिकी पुनमने दिवसे मिथ्यामोहथी शत्रुंजयने छोडीने बीजा सेंकडो क्षुद्र तीर्थोमां भटके छे.

" जेओ संघ सहित श्रीसिद्धाचळ उपर जइने कार्तिक तथा चैत्र मासनी पूर्णिमाने दिवसे आदरपूर्वक दान तथा तप विगेरे करे छे तेओ मोक्षसुखने भोगवनार थाय छे. "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ पंचदशस्तंभस्य
पंचत्रिंशत्यधिकद्विशततमः प्रबंध ॥ २३५ ॥

इति पंचदशम स्तंभ संपूर्ण

श्रीउपदेश प्रासाद.

स्थंभ १६ मो.

व्याख्यान २२६ मुं

छ लेश्यानुं स्वरूप

कीर्तिधरमुनीन्द्रेण, प्रियंकरनृपं प्रति ।
लेश्यास्वरूपमाख्यात, तच्छ्रुत्वासौ शुभां दधौ ॥ १ ॥

भावार्थ—" कीर्तिधर मुनींद्रे प्रियंकर राजाने लेश्यानु स्वरूप कही बताव्युं छे, ते सांभळीने तेमांनी शुभ लेश्या तेणे धारण करी. "

प्रियकर राजानी कथा

अक्षपुर नामना नगरमां अरिदमन नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने प्रियंकर नामे पुत्र हतो. एक दिवस दिग्यात्रा करीने विजय पामेलो राजा घणो काळ व्यतीत थयेलो होवाथी प्रियाना दर्शन माटे अति उत्सुक थयो तेथी पोतानी सेनाने पण पाछळ मूकीने एकलोज त्वराथी पोताना नगरमां आव्यो. ते वखत पोतानुं नगर ध्वज, तोरण विगेरेथी शोभित जोइने आश्चर्य पामतो ते राजमहेल पासे गयो. त्यां पण पोतानी कांताने सर्व अलंकारथी शोभित अने सत्कार करवा माटे तैयार थइने उभेली जोइ राजाए तेने पूछ्युं के—" हे प्रिया ! मारा आगमनना समाचार तमने कोणे कह्या ? " तेणीए कह्युं के—" कीर्तिधर नामना मुनिराजे आपना एकाकी आववाना खबर आप्या हता, तेथी हुं आपनी सन्मुख आववा तैयार थइने उभी छुं." पछी अरिदमन राजाए ते मुनिराजने बोलावीने पूछ्युं के—" जो तमे ज्ञानी हो तो मारा मननुं चिंतित कहो. " त्यारे मुनिए कह्युं के—" हे राजन् ! तमे तमारा मरण विषे चिंतवन कर्युं छे " राजाए पूछ्युं के—" हे साधु ! मारुं मृत्यु क्यारे थशे ? " मुनि बोल्या के—" आजथी सातमे दिवसे विजळीनो पात थवाथी तमारुं मृत्यु थशे अने मरीने अशुचिमां बेइंद्रिय कीडारूपे उत्पन्न थशो." एम कहीने मुनिराज पोताने उपाश्रये गया. राजा आ वृत्तांत सांभळीने आकुळव्याकुळ थयो, अने पोताना पुत्र प्रियंकरने बोलावीने कह्युं के—" हे वत्स ! जो हुं अशुचिमां कीडो थाउं तो तारे मने मारी नाखवो. " प्रियंकरे ते वात अंगीकार करी. राजा सातमे दिवसे पुत्र, स्त्री अने राज्यादिकनी तीव्र

मूर्छाथी मरीने अशुचिमां कीडारूपे उत्पन्न थयो, ते वखते प्रियंकरे तेने मारवा मांड्यो, पण ते मरवा खुशी थयो नहीं. तेथी प्रियंकरे मुनिने पूछ्युं के-" हे मुनिराज ! शुं आ मारो पिता छे के जे दु खी छतां पण मरणने इच्छतो नथी?" त्यारे साधु बोल्या के—

अमेध्यमध्ये कीटस्य, सुरेन्द्रस्य सुरालये ।
समाना जीविताकांक्षा, तुल्य मृत्युभयं द्वयो ॥ १ ॥

भावार्थ.-" विष्टामां रहेला कीडाने तथा स्वर्गमां रहेला इंद्रने जीववानी आकांक्षा सरखीज होय छे, अने ते बन्नेने मृत्युनु भय पण समानज होय छे "

आ प्रमाणे सांभळीने प्रियंकर राजाए गुरुने कह्युं के-" हे स्वामी ! कोइ वखत न जोयेलुं, न सांभळेलुं अने न इच्छेलुं एवु परभवमां गमन सर्व जीवो पामे छे, जेम मारा पिता कीडानो भव पाम्या, तो तेवी गतिमां आत्मा शा हेतुवडे जतो हशे ?" गुरुए कह्युं के-" जीवाने जेवी लेश्यानो परिणाम होय तेवी गति तेने प्राप्त थाय छे " राजाए पूछ्युं के-"हे स्वामी ! लेश्या केटला प्रकारनी छे ?" त्यारे गुरुए छ लेश्यानुं स्वरूप कह्युं के-" हे राजा ! आत्माना परिणामविशेषे करीने लेश्याओ छ प्रकारनी छे "

अतिरौद्र सदा क्रोधी, मत्सरी धर्मवर्जित ।
निर्दयो वैरसंयुक्त , कृष्णलेश्याधिको नर ॥ १ ॥

भावार्थ -"जे माणस महा रौद्र ध्यानी होय, सदा क्रोधी होय, सर्व उपर द्वेषी होय, धर्मथी वर्जित होय, निर्दय होय अने निरंतर वैर राखनारो होय तेने विशेषे करीने कृष्णलेश्यावाळो जाणवो "

अलसो मंदबुद्धिश्च, स्त्रीलुब्ध परवंचक ।
कातरश्च सदा मानी, नीललेश्याधिको भवेत् ॥ २ ॥

भावार्थ -" नील लेश्यावाळो जीव आळसु, मंदबुद्धि, स्त्रीमां लुब्ध, परने छेतरनार, बीकण अने निरंतर अभिमानी होय छे "

शोकाकुल सदा रुष्ट , परनिंदात्मशंसक ।
संग्रामे दारुणो दु स्थ , कापोतक उदाहृत ॥ ३ ॥

भावार्थः-" निरंतर शोकमां मग्न रहेनार, सदा रोषवाळो, परनी - निंदा

करनार, आत्मप्रशंसा करनार, रणसग्राममां भयकर अने दुःखी अवस्थावाळा माणसनी कापोत लेश्या कहेली छे."

विद्वान् करुणायुक्तः, कार्याकार्यविचारकः ।
लाभालाभे सदा प्रीतः, पीतलेश्याधिको नरः ॥ ४ ॥

भावार्थ–" विद्वान्, करुणावान, कार्याकार्यनो विचार करनार अने लाभमां के अलाभमां सदा आनंदी एवा माणसने पीत (तेजो)लेश्या अधिक होय छे."

क्षमावान् निरतत्यागी, देवार्चनरतो यमी¹।
शुचीभूतः सदानंद, पद्मलेश्याधिको भवेत् ॥ ५ ॥

भावार्थः–" क्षमायुक्त, निरतर त्यागवृत्तिवाळो, देवपूजामां तत्पर, अहिंसा सत्यादि पांच यमने धारण करनार, पवित्र अने सदा आनंदमां मग्न एवो मनुष्य पद्मलेश्यावाळो होय छे."

रागद्वेषविनिर्मुक्तः, शोकनिंदाविवर्जितः ।
परात्मभावसपन्न, शुक्ललेश्यो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

भावार्थ–" रागद्वेषथी मुक्त, शोक अने निंदाथी रहित तथा परमात्मभावने पामेलो मनुष्य शुक्ल लेश्यावाळो कहेवाय छे."

आ छ लेश्यामां प्रथमनी त्रण लेश्याओ अशुभ छे, अने पीजी त्रण शुभ छे. ते छएनुं विस्तारथी स्वरूप जणाववा माटे जांबु खानारा तथा गाम भांगनारा छ छ पुरुषनां दृष्टांत छे. ते आ प्रमाणे—

कोइ अरण्यमां क्षुधाथी कृश थयेला छ पुरुषोए पाकेलां अने रसवाळां जांबुना भारथी जेनी सर्व शाखाओ नमी गइ छे एवुं कल्पवृक्षना जेवुं एक जांबुनुं वृक्ष जोयुं. ते जोइने सर्वे हर्षित थइने बोल्या के–" अहो ! खरे अवसरे आ वृक्ष आपणा जोवामां आव्युं छे, माटे हवे स्वेच्छाए तेनां फळ खाइने आपणे क्षुधानो नाश करीए." पछी तेमां एक क्लिष्ट परिणामवाळो हतो ते बोल्यो के–" आ दुरारोह² वृक्ष उपर चडवाथी जीवनुं पण जोखम थाय तेवुं छे, माटे तीक्ष्ण कुहाडानी धारवडे मूळमांथी कापी नाखी तेने आडुं पाडी दइए अने पछी निरांते तेनां समग्र फळो खाइए." आवा परिणाम पुरुषने कृष्ण लेश्याथीज थाय छे. (१). पछी बीजो तेना करता कांइक कोमळ हृदयवाळो बोल्यो के–" आवा

१ अहिंसा सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य अने अपरिग्रह–ए पांच यम. २ मुश्केलीथी चडी शकाय तेवा.

मोटा वृक्षने कापवाथी आपणने शु वधार लाभ छे? मात्र एक मोटी शाखा तोडी पाडीने तेनी उपर रहेला फळो खाए." आ पुरुष नील लेश्याना परिणामवाळो जाणवो (२) पछी त्रीजो बोल्यो के-" एवडी मोटी शाखाने कापवाथी शुं? मात्र तेनी एक प्रशाखानेज कापीए." आ पुरुष कापोत लेश्यावाळो जाणवो.(३) पछी चोथो बोल्यो के-" ते बिचारी नानी शाखाने कापवाथी शु विशेष लाभ छे? मात्र तेना गुच्छा तोडवाथीज आपणु कार्य सिद्ध थशे." आ माणस तेजो लेश्यावाळो जाणवो. (४) पछी पाचमो बोल्यो के-" गुच्छा तोडवाथी पण शु? मात्र पाकेला अने भक्षण करवा लायक जोइए तेटला फळोनेज तोडीए" आ पुरुष पद्मलेश्यावाळो जाणवो (५). हवे छठ्ठो बोल्यो के-" फळो तोडवाथी पण शु? आपणने जेटला फळोनी जरूर छे तेटलां तो आ वृक्षनी नीचे पडेलाज मळी शके तेम छे. तो तेनाथीज प्राणनो निर्वाह करवो ते श्रेष्ठ छे. माटे आ वृक्षने कापी नाखवा विगेरेना विचारो शा माटे करवा जोइए?" आ छेल्लो शुक्ल लेश्याना परिणामवाळो जाणवो (६)

धाड पाडनार छ पुरुषनु दृष्टांत

धन धान्यादिकमा लुब्ध थयेला चोरोना छ अधिपतिओए एकत्र थइने एक गाममा धाड पाडतां ते समये तेमाथी एक जण बोल्यो के-" आ गाममा मनुष्य, पशु, पुरुष, स्त्री, बाळक, वृद्ध विगेरे जे कोइ नजरे पडे ते सर्वने मारी नाखवा." आ प्रमाणे कृष्ण लेश्याना स्वभाववाळानु वाक्य सांभळीने बीजो नील लेश्यावाळो बोल्यो के-" मात्र मनुष्योनेज मारवा, पशुओने मारवाथी आपणने शु फळ छे?" त्यार त्रीजो कापोत लेश्यावाळो बोल्यो के-" स्त्रीओने शा माटे मारवी जोइए? मात्र पुरुषोनेज मारवा." त्यारे चोथो तेजो लेश्यावाळो बोल्यो के-" पुरुषमां पण शस्त्ररहितने मारवानु शु काम? मात्र शस्त्रधारीनेज मारवा." ते सांभळी पाचमो पद्म लेश्यावाळो बोल्यो के-" शस्त्रधारीमा पण जेओ आपणी सामा युद्ध करवा आवे तेनेज मारवा. बीजा निरपराधीने शामाटे मारवा जोइए?" छेवटे छठ्ठो शुक्ल लेश्यावाळो बोल्यो के-" अहो! तमारो केवो खोटो विचार छे? एक तो द्रव्यनु हरण करवा आव्या छो, अने वळी बिचारा प्राणीओने मारवा चाहो छो माटे जो तमे द्रव्य लेवा आव्या छो तो भले द्रव्य ल्यो, परतु तेमना प्राणनु तो रक्षण करो."

आ प्रमाणेनी छ लेश्यावाळा जीवो मरीने जुदी जुदी गतिने पामे छे. कह्यु छे के—

किण्हाए जाइ नरये, नीलाए [illegible] होइ ।
कापोताए तिरियं, पीताए मा[illegible] ॥ १ ॥
पम्माए देवलोय, सुक्काए जाइ [illegible] ।
इय लेसाण वियारो, णायव्वो [illegible] ॥ २ ॥

भावार्थः-" कृष्ण लेश्यावाळो [illegible] नील लेश्यावाळो थावरपणु पामे छे, कापोत लेश्यावाळो [illegible] लेश्यावाळो मनुष्यगति पामे छे, पद्म लेश्यावाळो देवलो[illegible] शुक्ल लेश्यावाळो जीव शाश्वत स्थान पामे छे आ प्रमाणे भव्य [illegible] विचार जाणवो."

गुरुना मुखथी उपर प्रमाणे लेश्या[illegible] प्रियंकर राजा प्रतिबोध पाम्यो, अने निरंतर शुभ लेश्या[illegible] अंगीकार करी अंते सद्गति पाम्यो.

" कापोत लेश्याना परिणाम[illegible] प्राणी कथा सांभळीने तेमज तेनी क्रीडा तरीकेनी उत्पत्ति[illegible] प्रियंकर राजा भला धर्मने आपनारी शुभ लेश्यावाळ[illegible]

॥ इत्यब्ददिनपरि[illegible] श्रीमत्तपस्य पट्टविंशत्यधिक[illegible] २२६ ॥

व्याख्यान २२७ मुं.

[illegible]

अविमृश्य कृतं कर्म [illegible] जायते ।
अत्राम्रतरुच्छेद[illegible] बुधैः ॥ १ ॥

भावार्थ—" [illegible] विना करवाथी [illegible] माटेज थाय छे [illegible] विगेरना करेलां छे.

५

माटे [illegible] पमने

त
एम
पाम्यु.
आ अति
पाप कर्यु.
शु हशे, माटे
उठी नखावु."
ते उत्तम वृक्षने
ब्बीमा दाटी दीधु
पीडायेला कटलाक
ने त्यां आव्या, अने
त्सत
या.
मने

चाल्यु, अने मध्य समुद्रमा आव्यु, तेटलामा श्रेष्ठीए आकाशमार्गे चाल्या आवता एक उत्तम पोपटने जोयो ते पोपटना मुखमा एक आम्रफळ हतु श्रमित थइ जवाथी तेने समुद्रमा पडतो जोइने श्रेष्ठीए तेनी नीचे एक वस्त्र लांबु करावीने खलासीओ पासे तेने झीलावी लीधो, अने पोतानी पासे मंगावी तेने पाणी तथा पवन नाखवावडे स्वस्थ कर्यो. त्यारपछी श्रेष्ठीए तेने बोलाव्या, एटले ते मुखमाथी आम्रफळने नीचे मूकीने मनुष्यवाणीथी बोल्यो के-" हे सार्थना अधिपति श्रेष्ठी ! तमे सर्व प्रकारना उपकारमा श्रेष्ठ एवो जीवितदान रूपी उपकार मारापर करीने मने जीवाड्यो छे, एटलुज नहीं पण मारा अध अने वृद्ध मातपिताने पण तमे जीवाड्या छे तो आवा मोटा उपकार करनारा तमोने हु केवी जातनो प्रतिउपकार करु ? तो पण मे आपेलु आ आम्रफळ तमे स्वीकारो " श्रेष्ठीए कह्यु के-" आ फळ तारु भक्ष्य छे ने तारे खावा लायक छे, माटे तुज खा, अने बीजु पण साकर, द्राक्ष विगेरे तने खावा आपु छु." त्यारे पोपट बोल्यो के-" हे श्रेष्ठी ! आ फळनु वृत्तांत सांभळो. विंध्याटवीमा एक वृक्षउपर पोपटनु मिथुन वसे छे तेनो हु पुत्र छु. ते मारा मातपिता अनुक्रमे वृद्धपणाथी जराक्रांत थवाने लीधे आरो जोड शकता नथी तेथी हुज तेमने खावानु लावीने आपु छु ते अरण्यमा एक दिवस बे मुनिराज पधार्या तेमणे चोतरफ जोइने एकांत जणायाथी परस्पर आ प्रमाणे वात करी के-' समुद्रना मध्यमा कपि नामना पर्वतना शिखर उपर निरतर फळतु एक आम्रवृक्ष छे, तेनु एक पण फळ एक वार जे भक्षण करे तेना अगमाथी सर्व व्याधिओ नाश पामे छे, तेमज अकाळ मृत्यु के जराजीर्णपणु तेने प्राप्त थतु नथी.' आ प्रमाणे तेमनु वाक्य सांभळीने में विचार्यु के-' मुनिनु वाक्य हमेशा सत्य अने हितकरज होय छे, तेथी ते वृक्षनु फळ लावीने जो मारा मातापिताने आपु तो तेओ युवावस्थाने पामे ' आवो विचार करीने हु त्या गयो, अने आ फळ लाव्यो छु, माटे हे श्रेष्ठी ! आ फळ तमे ग्रहण करो, हु बीजु फळ लइ आवीने मारा माबापने आपीश." पछी श्रेष्ठीए पोपटना आग्रहथी ते फळ लीधु, अने पोपट त्याथी आकाशमा उडी गयो

पछी श्रेष्ठीए विचार्यु के-" जो आ फळ हु कोइ राजाने आपु तो तेनाथी घणा जीवोनो उपकार थशे, हु खाउ तो पण शु अने नहीं खाउ तो पण

शु?" एम विचारीने ते आम्रफळ तेणे सारी रीते साचवी राख्युं पछी केटलेक दिवसे ते वहाण कोइ किनारे पहोंच्युं एटले श्रेष्ठी वहाणमांथी उतरीने भेट लइने राजा पासे गयो. राजानी पासे भेट मूकीने पछी ते आम्रफळ पण आप्युं. ते जोइने राजाए विस्मयपूर्वक पूछ्युं के—" हे श्रेष्ठी ! आ शानुं फळ छे?" त्यारे श्रेष्ठीए राजाने ते फळनो समग्र महिमा कह्यो. तेथी राजा अत्यंत संतुष्ट थयो अने तेनुं सघळु दाण माफ कर्युं. एटले श्रेष्ठी हर्ष पामीने पोताने स्थानके गयो.

पछी राजाए फळ हाथमां राखीने विचार्युं के—" आ फळने हुं एकलोज खाइश तो तेथी शुं अधिक गुण थशे?, माटे तेने कोइ सारा क्षेत्रमां ववराबुं तो तेना घणां फळो थशे, अने तेथी स्त्रीपुत्रादिक सर्वने वृद्धावस्थारहित करी शकाशे." एम विचारीने राजाए कोइ सारा क्षेत्रमा ते बीज ववराव्यु, अनुक्रमे ते आम्रवृक्ष वृद्धि पाम्युं, अने तेने पुष्प फळ विगेरे थया. त्यारे राजाए तेना रक्षकोने घणुं धन आपीने कह्युं के—" आ वृक्षनु यत्नपूर्वक रक्षण करवु." आ प्रमाणे राजानु वचन सांभळीने ते रक्षको रात्रिदिवस त्यांज रहेवा लाग्या. एक दिवसे दैवयोगे रात्रिमां एक फळ पोतानी मेळे तुटीने पृथ्वीपर पड्यु, पछी प्रातःकाले ते पाकेला फळने पडेलु जोइने रक्षकोए हर्षपूर्वक ते लइ तत्काळ राजाने आप्यु ते वखत राजाए विचार्युं के—" आ नवीन फळ प्रथम कोइ पात्रने आपु तो ठीक." एम धारीने चार वेदना जाणनार कोइ ब्राह्मणने राजाए भक्तिपूर्वक ते फळ आप्यु. ब्राह्मण ते फळ खावाथी तत्काळ मृत्यु पाम्यो. ते वृत्तांत सांभळीने राजा अति खेद सहित बोल्यो के—" अहो ! मे धर्मबुद्धिथी ब्रह्महत्यारूप मोटु पाप कर्युं. खरेखर मने मारवा माटेज कोइ शत्रुए प्रपंच करीने ते फळ मोकल्यु हशे, माटे आ विषवृक्ष पोतेज वावेलु अने प्रयत्नथी पाळेलु छतां शीघ्रताथी छेदी नखावु." पछी तेवो हुकम थतांज राजपुरुषोए तीक्ष्ण कुहाडावडे ते उत्तम वृक्षने मूळ सहित कापीने भूमिपर पाडी दीधु अने ते समग्र वृक्षने पृथ्वीमा दाटी दीधुं पछी मरगी (वाइ), कोढ, रक्तपित्तादिक असाध्य व्याधिथी पीडायेला केटलाक लोको जीवितथी खेद पाम्या सता ते वृक्षनु छेदन सांभळीने त्या आव्या, अने सुखेथी मरण थाय एवा हेतुथी ते वृक्षना शेष रहेला सुका काष्ठ अने कुत्सित पत्रादिक तेमणे खाधां. तेथी ते सर्व नीरोगी तथा कामदेव समान रूपवाळा थया. तेमने जोइने राजाए विस्मय पामीने रक्षकोने बोलावीने पूछ्यु के—" तमे मने

आप्यु हतु ते आम्रफळ तोडीने लाव्या हता के पृथ्वीपर पडेलुं लीधु हतु?" त्यारे तेओए सत्य वात कही. ते सांभळीने राजाए विचार्यु के-" जरूर ते फळ पृथ्वीपर पड्या पछी सर्प विगेरेना विषथी मिश्रित थयु हशे, तेथीज ते उत्तम ब्राह्मणनुं मृत्यु थयुं, परन्तु ते वृक्ष तो अमृत समानज हतु. अरेरे! में अविचार्यु सहसा काम कर्यु के आवु उत्तम वृक्ष क्रोधथी उखेडी नाख्यु." आ प्रमाणे वृक्षना गुणोने वारंवार संभारीने तेणे जीवनां सुधी अति शोक कर्यो.

"जेम आ राजाए वगर विचार कार्य कर्यु तेम बीजाए करवु नहीं" तेवुं आ दृष्टान्तनु तात्पर्य छे. अहीं तेना उपनयनी योजना आ प्रमाणे करवी-"अत्यंत दुर्लभ आम्रवृक्ष सदृश मनुष्यजन्म पामीने अज्ञान तथा अविरतिवडे करीने जे मूढ पुरुष पोतानो मनुष्यभव व्यर्थ गुमावे छे ते वारंवार अत्यंत शोक पामे छे.कदाचित् देवना सान्निध्यथी तेवा सद्वृक्षनी प्राप्ति तो फरीने थइ शके छे, पण मुग्धपणाथी वृथा गुमावेल मनुष्यभवनी प्राप्ति फरीथी थइ शकती नथी. माटे किंचित् पण प्रमाद करवो नहीं हे प्राणी! जेम पतंगीयु, भ्रमर, मृग, पक्षी, सर्प, माछलु अने हाथी विगेरे इंद्रियोना विषयने आधीन थवाथी पोताना प्रमादथीज मृत्यु पामे छे अने सिंह विगेरे प्राणीओ मांसलुब्धपणाथी पांजरे पडे छे, अने बंधनना दुःख पामीने चिरकाळ पर्यंत शोकजनक दशाने भोगवे छे, तेम तु पण जो प्रमादमा पडीश तो तेवीज दशा पामीश. हे मूढ जीव! प्रथम पण पाप करवाथीज दुःखना समूहमां पडेलो छे, अने फरीथी पण पाछो पापज कर्या करे छे, तेथी महासागरमा डूबता माथे अने कंठे पथ्थर नाख्या जेवु करे छे. हे जीव! तने वारंवार उपदेश आपीए छीए के, जो तु दुःखथी भय पामतो होय, अने सुखनी इच्छा राखतो होय तो एवु कार्य कर के जेथी तारु वांछित सिद्ध थाय. तेम करवानो तारो आज अवसर छे. हे जीव! तु धन, स्त्री, स्वजन, सुख अने प्राणने पण तजी देजे, पण एक जैनधर्मने तजीश नहीं केमके धर्मथीज सर्व संपत्तिओ प्राप्त थाय छे.' आ प्रमाणे विचारीने सत्क्रियामा प्रवर्तन करवु."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य सप्तविंशत्यधिकद्विशततम प्रबंध ॥ २२७ ॥

व्याख्यान २२८ मुं.

सहसा कार्य न करवा विषे

सहसा विहितं कर्म, न स्यादायतिसौख्यदम् ।
पतत्रिहिंसकस्यात्र, महीजर्तुर्निदर्शनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" साहस काम करवाथी परिणामे सुख मळतुं नथी. ते उपर पक्षीनी हिंसा करनार राजानुं दृष्टांत छे. " ते आ प्रमाणे–

आ भरतक्षेत्रमा शत्रुंजय नामे एक राजा हतो. तेनी पासे कोइ एक पुरुषे उत्तम लक्षणवाळो एक अश्व लावीने भेट कर्यो. तेने जोइने राजाए विचार्युं के–" आ अश्व शरीरनी शोभाथी प्रशंसा करवा लायक छे, परंतु तेनी गति जोवी जोइए. " कह्युं छे के–

जवो हि सप्तेः परमं विभूषणं
नृपांगनायाः कृशता तपस्विनः ।
द्विजस्य विद्यैव मुनेरपि क्षमा
पराक्रमः शस्त्रबलोपजीविनः ॥ १ ॥

भावार्थ—" अश्वनुं श्रेष्ठ भूषण गति छे, राजपत्नी तथा तपस्वी पुरुषनुं भूषण कृशपणुं छे, ब्राह्मणनुं भूषण विद्या छे, मुनिनुं भूषण क्षमा छे अने शस्त्रविद्याना बळथी आजीविका करनार पुरुषनुं भूषण पराक्रम छे. "

पछी ते राजा घोडापर चढीने अरण्यमां तेने दोडाववा लाग्यो, एटलामां ते परमवेगी घोडो एवो दोड्यो के तेनुं सर्व सैन्य पाछळ रही गयुं. राजा जेम जेम तेना वेगने रोकवा माटे तेनी वल्गा (चोकडुं) खेंचे तेम तेम ते अश्व वधारे वधारे दोडवा लाग्यो. पछी राजाए थाकीने लगाम ढीली मूकी के तरतज ते अश्व उभो रह्यो. त्यारे राजाए जाण्युं के आ अश्वने विपरीत शिक्षा (केळवणी) आपी छे. पछी राजाए अश्व परथी उतरीने पलाण उतार्युं, तेवामां ते घोडो सधिओ छुटी जवाथी पृथ्वीपर पडीने मरण पाम्यो. राजा क्षुधा अने तृषाथी पीडा पामतो एकलो ते भयंकर अटवीमां भमवा लाग्यो. भमतां भमतां एक मोटुं वट वृक्ष जोईने राजा थाकेलो होवाथी तेनी छायामां जईने बेठो. पछी ते आम तेम जुए छे तेवामां तेज वृक्षनी एक [illegible] पाणीना टीपां तेणे जोयां. राजाए विचार्युं के–" वर्षाकाळमां [illegible]

शाखाना छिद्रमां भराई रह्यु हशे ते हाल्मा पडे छे." एम धारीने पोते तरस्यो होवाथी खाखराना पाडडानो पडीओ बनावीने तेनी नीचे मूक्यो. थोडी वार ते पडीओ काळा अने मेला पाणीथी भराई गयो. ते लईने राजा जेवामां पीवा जाय छे तेटलामा कोई पक्षी वृक्षनी शाखा परथी उतरी ते जळनु पात्र राजाना हाथमांथी पाडी नाखीने पाछो वृक्षनी शाखा उपर जइने बेठो. राजाए निराश थइने फरीथी पडीओ मूक्यो ते भराइ गयो. तेने पीवा जाय छे, एटले फरीथी पण ते पक्षीए पाडी नाख्यो. त्यारे राजाए क्रोध करीने विचार्यु के-" जो आ दुष्ट पक्षी हवे त्रीजीवार आवशे तो तेने हु मारी नाखीश." एम धारीने एक हाथमा चाबुक राखीने बीजा हाथे जळ भरवा माटे पडीओ मूक्यो. ते वखते पक्षीए विचार्यु के-" आ राजा कोपायमान थयो छे तेथी हवे जो हु पडीओ पाडी नाखीश तो जरूर ते मने मारी नाखशे अने जो नहीं पाडु तो आ झेरी पाणी पीवाथी ते अवश्य मरण पामशे, तेथी मारे मरवु ते श्रेष्ठ छे पण आ राजा जीवे तो सारु" एम विचारीने तेणे त्रीजी वार पण राजाना हाथमांथी पडीओ पाडी नाख्यो, एटले कोप पामेला राजाए कोरडाना प्रहारवडे तरतज ते पक्षीने मारी नाख्यो पछी राजाए फरीथी पडीओ मूक्यो. ते वखते उपरथी पडतुं जळ आडु अवळु पडवा माडयु, एटले राजा आश्चर्य सहित उठीने वृक्षनी शाखा पर चढी जुए छे, तो ते वृक्षना कोटरमा एक अजगरने पडेलो जोयो. तेने जोइने राजाए धार्यु के-" ते जळ नथी, पण आ सुनेला अजगरना मुखमाथी गरल पडे छे. जो मे ते पीधु होत तो अवश्य मारु मरण थात. अहो! ए पक्षीए मने वारवार झेर पीता अटकाव्यो, पण में मूर्खाए ते जाण्यु नहीं अररे! परमोपकारी पक्षीने में फोगट मारी नाख्यो."

आ प्रमाणे राजा पश्चात्ताप करतो हतो, तेवामां तेनु सैन्य आवी पहोच्यु. पछी ते पक्षीने पोताना माणसो पासे उपडावी पोताना नगरमां लावीने चंदनना काष्ठवडे तेने अग्निसस्कार कराव्यो, अने तेने जलांजलि आपीने राजा पोताना महेलमा गयो. त्या शोकातुर थईने बेठो, एटले मत्री सामत विगेरेए राजाने पूछ्यु के-" हे नाथ! आ पक्षीनु आपे प्रेतकार्य कर्यु तेनुं शु कारण?" त्यारे राजाए तेणे करेलो महा उपकार कही बताव्यो अने कह्यु के-" ते पक्षीने जीवन पर्यंत हु भूली शकीश नहि." विचार्या विना कार्य करवाथी जेम ते राजाने पश्चात्ताप थयो, तेवी रीते कोई पण प्राणी विचार कर्या विना सहसा कार्य कर तो तेने तेवो पश्चात्ताप थाय.

आ दृष्टांतनो उपनय आ प्रमाणे छे. चार गतिमां भ्रमण करनार जीव ते राजा समान छे ने अजरामर (मोक्ष) स्थान आपनार पक्षी समान मनुष्य भवने पामीने अविरति विगेरेथी जो मनुष्य भवने वृथा गुमावे छे, तो ते अत्यंत शोकनु भाजन थाय छे. अथवा पक्षी समान समग्र जीवने उपकार करनार जिनवाणीने पामीने जे प्राणी मिथ्यात्वरूपी कोरडाथी तेने हणे छे तेने महा मूर्ख जाणवो. कह्युं छे के—

शिलातलाभे हृदि ते वहंति
विशंति सिद्धांतरसा न चांत ।
यदत्र नो जीवदयार्द्रता ते
नो भावनांकुरततिश्च लभ्या ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे आत्मा ! पत्थरना तळ सरखा कठोर तारा हृदय उपर सिद्धांतरूपी रस वहे छे, तथापि ते अंदर प्रवेश पामतो नथी, केमके तारा हृदयमां जीवदयारूपी आर्द्रता नथी, तेथी शुभ भावनारूपी अंकुरनी श्रेणि तेमां उगतीज नथी. "

जेना हृदयमां जीवदयारूप कोमळलता होय छे तेना हृदयमाज शुभ भावनारूप अंकुरनी श्रेणि उत्पन्न थाय छे तेवी भावना आसन्नसिद्धि[१] जीवोनेज होय छे, बीजाने होती नथी. वळी सिद्धांतनुं अभ्ययन करीने पण जेओ प्रमादने छोडता नथी तेमनो सर्व अभ्यास व्यर्थ छे. कह्युं छे के—

अधीतिनोऽर्चादिकृते जिनागमं
प्रमादिनो दुर्गतिपातिनो मुधा ।
ज्योतिर्विमूढस्य हि दीपपातिनो
गुणाय कस्मै शलभस्य चक्षुषी ॥ २ ॥

भावार्थ—" लोकमां पूजावाने माटे जिनागम जाणनार अने दुर्गतिमां पडनार एवा प्रमादी पुरुषने जिनागम व्यर्थ छे, केमके दीवानी जोतमां मोह पामेला अने दीवामा पडनारा एवा पतंगीयाने चक्षु शा गुणने माटे होय ? "

सिद्धांतरूपी चक्षु विरतिवंत पुरुषने परम उपकार करनार थाय छे, माटे तेवी इच्छाथी शास्त्र भणवुं जोइए. कह्युं

१ मोक्ष [illegible]

कि मोदसे पण्डितनाममात्रा-
च्छास्त्रेष्वधीतो जनरंजकेषु।
तत्किंचनाधीष्व कुरुष्व चाशु
न ते भवेद्येन भवाब्धिपात ॥ १ ॥

भावार्थ-" लोकोने रंजन करवा माटे शास्त्रो भणीने पंडितना नाम मात्रे करीने शुं हर्ष पामे छे ? परंतु एवुं काइक भण अने कर के जेथी तारो संसार-रूपी समुद्रमां पात थाय नहीं."

हवे चार गतिरूप संसारना दुःखनुं वर्णन करे छे

दुर्गन्धतोऽपि यदणोर्हि पुरस्य मृत्यु-
रायूंषि सागरमितान्यनुपक्रमाणि।
स्पर्शः खरः क्रकचतोऽलितमामितश्च
दुःखावनन्तगुणितौ भृशशीत्यतापौ ॥ १ ॥
तीव्रा व्यथा सुरकृता विविधाश्च यत्रा
क्रंदारवैः सततमभ्रभृतोऽप्यमुष्मात्।
किं भाविनो न नरकात् कुमते बिभेषि
यन्मोदसे क्षणसुखैर्विषयैः कषायैः ॥ २ ॥

भावार्थ-" जे नरकना एक परमाणुनी दुर्गंधथी पण समग्र नगरना मनुष्योनुं मृत्यु थाय छे, जे नरकमां सागरोपम प्रमाण निरुपक्रमी[१] आयुष्य छे, जे नरकभूमिनो स्पर्श करवत करतां पण अत्यंत कठोर छे, जेमां दाह अने ताप सर्वथी दुःखो अनंत गुणां छे, वळी जे नरकमां परमाधामी देवताओनी करेली विविध प्रकारनी तीव्र वेदनाओ छे अने जेमां नारकी जीवोना आक्रंदना शब्दोथी आकाश पूर्ण थाय छे, एवा भविष्यमां प्राप्त थनार नरकथी हे मूर्ख ! तुं केम भय पामतो नथी ? के जेथी क्षणमात्र सुखने आपनारा विषय अने कषायोथी हर्ष पामे छे ?"

वधाभिशबाह्नताडनानि
क्षुत्तृड्जरामातपशीतवाता ।

---

१ वचे पण कारणथी न आयुष्य विघटे नहीं तेवुं आयुष्य

निज़ान्यजातीयजयापमृत्यु-
दुःखानि तिर्यक्ष्विति दारुणानि, ॥ ३ ॥

भावार्थ-"बंधन पामवु, अहर्निश भार वहन करवो, मार सहन करवा, क्षुधा, तृषा, सहन न थइ शके एवा ताप, टाढ अने पवन विगेरे सहन करवा, तेमज स्वजातिथकी तथा परजातिथकी भय, अने अकाळ मृत्यु पामवु विगेरे तिर्यंच गतिमां पण दारुण दुःखो छे."

मुधान्यदास्याभिभवाभ्यसूया
भियोतगर्भस्थितिदुर्गतीनां ।
एवं सुरेष्वप्यसुखानि नित्यं
किं तत्सुखैर्वा परिणामदुःखे ॥ ४ ॥

भावार्थ—कांइ पण उदर पूर्णार्थि के द्रव्यप्राप्ति विगेरे कारण विना फोगट निरंतर इंद्रादिकनी सेवा करवी, वधारे शक्तिवाळा देवताओथी पराभव पामवो, बीजाने वधारे ऋद्धिमान अने सुखी जोइने ईर्ष्या आववी, आगामी भवमां गर्भमां स्थिति थवानी जोइने तेमज दुर्गति थवानी जोइने तेथी भय पामवु-इत्यादिक देवगतिमां पण निरंतरना दुःखो रहेलां छे, तेथी ते सुखोथी शुं के जेमां परिणामे दुःख रहेलुं छे ?"

सतभीत्यभिभवेष्टविप्लवा-
निष्टयोगगदुःसुतादिभिः ।
स्याच्चिरं विरसता नृजन्मनः
पुण्यतः सरसतां तदानय ॥ ५ ॥*

भावार्थ-वळी मनुष्य गतिमां पण सात प्रकारनो भय, अन्यजनोथी पराभव, इष्टनो वियोग, अनिष्टनो संयोग, अनेक प्रकारना व्याधिओ, कुपुत्रादि संतति विगेरेथी थतो उपद्रव-इत्यादि अनेक दुःखो रहेलां छे अने तेथी मनुष्य जन्म पण विरस[1] लागे छे, तो तेने पुण्योपार्जनवडे सरस[2] कर"

आ प्रमाणे चार गतिमां अनेक प्रकारनां दुःखो रहेलां छे.

---

१ कडवो २ मधुरसवाळो * आ पांचे श्लोको श्री अध्यात्मकल्पद्रुमना आठमा अधिकारमांथी लीधेला छे

पक्षिसमं नृणां जन्म, गुणाकरं प्रमादत ।
लब्ध्वा न हिंसनीयं तत्, येन त्वं सद्गतिं जज ॥

भावार्थ-"पक्षी समान गुणना स्थानभूत आ मनुष्य जन्मने पामीने प्रमादवडे तेने हणी नाखवो नहीं, अर्थात् वृथा खोई नाखवो नहि के हारी जवो नहीं." ए प्रमाणे नहीं हारी जवाथी, अर्थात् तेने सफळ करवाथी तु सद्गतिनु भाजन थईश.

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य अष्टाविंशत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २२८ ॥

व्याख्यान २२९ मुं.

पांच कारणोथी कार्य सिद्ध थाय छे ते विषे

कालादिपंचकं कार्यमन्योऽन्यं सव्यपेक्षकं ।
सपृक्ता यांति सम्यक्त्वमिमे व्यस्ता कुदर्शनम् ॥ १ ॥

भावार्थ-"काळ विगेरे पांच कारणो परस्पर अपेक्षावाळा थईने कार्य साधे छे ते पांचने संबंधवाळा मानवाथी सम्यक्त्व कहेवाय छे अने जुदा अंगीकार करवाथी मिथ्यात्व कहेवाय छे."

जैनमत प्रमाणे सर्व इष्ट अथवा अनिष्ट कार्य काळ, स्वभाव, नियति, पूर्वकर्म अने पुरुषार्थ ए पांच कारणोवडे सिद्ध थाय छे. ते पांचे अनेकानेक स्वभाववाळा होवाथी दरेक कार्य साधवामां समर्थ छे. श्री सिद्धसेन दिवाकर आचार्ये संमति सूत्रना त्रीजा कांडमां कह्युं छे के-

कालो सहाव नियइ, पुव्वकयं पुरिसकारणे पंच ।
समवाये सम्मत्तं, एगंते होंइ मिच्छत्तम् ॥ १ ॥

भावार्थ-"काळ, स्वभाव, नियति, पूर्वकर्म अने पुरुषार्थ ए पांचे समवायवडे कार्यसिद्धि मानवाथी सम्यक्त्व होय छे, अने तेमाना कोइपण एकवडे कार्यसिद्धि मानवारूप एकांतवडे मिथ्यात्व कहेवाय छे."

एकांत पक्ष माननार प्रथम कालवादी कहे छे.

कालः सृजति भूतानि, कालः संहरते प्रजाः ।
कालः सुप्तेषु जागर्ति, कालो हि दुरतिक्रमः ॥ १ ॥

भावार्थ—"काळ सर्व प्राणीने सरजे छे, काळ प्रजानो संहार (नाश) करे छे अने काळ सर्व सुता होय त्यारे पण जागृत होय छे, माटे काळनु उल्लंघन करवुं अति मुश्केल छे."

प्रथम तो काळे करीने गर्भ उत्पन्न थाय छे, काळे करीने वृद्धि पामे छे अने काळे करीने जन्मे छे. काळे करीने तीर्थंकर थाय छे. जीवो काळ लब्धि पामीने सिद्ध थाय छे. योग्य काळेज आत्माने अनंत आनंदरूप क्षायिक रत्नत्रय विगेरेनी प्राप्ति थाय छे, अने काळज भावधर्मने उत्पन्न करे छे. एम न होय तो आ वर्तमान काळमां मनुष्य भव तथा जैन शासन विगेरे सामग्री पाम्या छतां पण केम कोई सिद्ध थता नथी? माटे काळज सर्व आपे छे अने नाश करे छे. काळे करीनेज दांतनुं उगवु, पगे चालवुं, बोलवु विगेरे यावत् मृत्यु सुधीना समग्र भावो थाय छे. एज प्रमाणे काळे करीने टाढ, तडको, वृष्टि विगेरे थाय छे माटे सर्वनुं कारण काळज छे.

हवे स्वभाववादी कहे छे के- विचारो काळ शु करी शके! स्वभावथीज स्त्रीपुरुषना संयोगवडे गर्भनी उत्पत्ति, वृद्धि, जन्म, विगेरे भावो थाय छे, मोरनां पींछानु चित्र विचित्रपणु अने कांटामां तिक्ष्णपणुं कोण करे छे? तेमज जो काळे करीने समग्र सृष्टि होय, तो मनुष्यना बाळको अमुक मास पछी चालतां शीखे छे, अने अश्व विगेरेना बाळको जन्म थताज चाले छे तेनुं शुं कारण? माटे सर्वनुं कारण स्वभावज छे.

हवे नियतिवादी कहे छे के-काळ तथा स्वभाव शु करे? नियति अर्थात् भवितव्यताज सर्वनुं कारण छे कमके काळ अने स्वभाव छता पण जेने पुत्रादिक थवाना होय तेनेज थाय छे, बीजाने थता नथी. वळी कोडीओने हाथवडे उंचे उछाळीए तो तेमानी केटलीक चत्ती पडे छे, केटलीक उंधी पडे छे अने केटलीक आडी पडे छे तेमां काळ अने स्वभावमांथी कोनु प्रमाण छे? परंतु जे जेवी रीते पडवानी होय छे ते तेवीज रीते पडे छे, माटे भवितव्यताज प्रमाण छे. जेम कोई शिकारी धनुष्य उपर बाण चडावीने वृक्ष उपर बेठेला एक पक्षीने

मारवा तैयार थया तेज पक्षीने हणवा माटे एक सींचाणो ते वृक्ष उपर भमतो हतो, तेवामा पेला शिकारीए बाण छोडयु ते सिंचाणाने लाग्यु एटले ते मरण पाम्यो, अने शिकारी सर्पदंशथी मृत्यु पाम्यो. पेलो पक्षी झाड उपरथी सुखे उडी गयो. आ प्रमाणे नियति विना बनी शके नहीं. माटे नियतिज सर्वनु कारण छे.

हवे कर्मवादी कहे छे के—काल, स्वभाव अने नियतिनी शी शक्ति छे? पूर्वे करला कर्मज सुख दुःखमा कारणभूत छे कर्म करीनेज श्रोत्रिय होय ते चांडाल थाय छे, स्वामी होय ते सेवक थाय छे अने इंद्र होय ते रंक थाय छे, तेमज चांडाल श्रोत्रिय थाय छे, सेवक राजा थाय छे, अने रंक होय ते इंद्रपद पामे छे. कह्युं छे के—

यथा यथा पूर्वकृतस्य कर्मण
फलं निधानस्थमिवोपतिष्ठते।
तथा तथा पूर्वकृतानुसारिणी
प्रदीपहस्तेव मति प्रवर्तते ॥

भावार्थ—"जेम जेम पूर्वे करला कर्मनु फळ निधाननी जेम प्राप्त थाय छे, तेम तेम पूर्व कर्मने अनुसरती बुद्धि हाथमा दीवानी जेम प्रवर्ते छे."

पूर्व कर्मना वशथीज प्राणीने नहीं इच्छेला, नहीं जोयेला अने नहीं अनुभवेला स्थान मळे आकर्षण करीने लई जवामा आवे छे. जेम कोई उंदरे एक करंडियो जोयो, तेमा मारु खावानु हशे एम धारीने दांत वडे ते करंडियामा विवर करीने ते अंदर पेठो एटले तेमा रहेलो भूख्यो सर्प ते उंदरने गळी गयो अने तेज विवरथी थईने ते बहार नीकळी वनमा गयो. माटे कर्मज खरू कारण छे

हवे पुरुषार्थवादी कहे छे के—शठ एवा कर्मवडे शु? पुरुषार्थज सर्व कार्यनु (फळनु) कारण छे. जो कदाच कर्मथीज सर्वनी सिद्धि होय, तो सर्व प्राणीओ बेसी रहो. कर्म वडे पोतानी मेळे सर्व वांछितनी सिद्धि थशे.

न दैवमिति संचिंत्य, त्यजेदुद्यममात्मन ।
अनुद्यमेन कस्तैलं, तिलेभ्य प्राप्तुमिच्छति ॥

भावार्थ—" दैव (प्रारब्ध) ना पर आधार राखीने माणसोए पोतानो उद्यम छोडवो नहीं, केमके उद्यम विना तलमांथी तेल मेळववा कोण इच्छा करे?"

अहीं कोइ शंका करे के-"राजा विगेरे बेसी रहे छे छतां तेना कर्म करीने सेवको सर्व वांछित लावीने आपे छे" तेना जवाबमा एटलुज कहेवानु के- " जो एम छे तो सेवकोए आणेलु अन्नादि हाथनो उपयोग कर्या विना शी रीते मुखमां जशे ? कदाच तेना सेवको तेना मुखमा नांखशे, तो पण दांतवडे चाव्या शिवाय शी रीते गळे उतरशे ? माटे कर्मनु तो उद्योगथी उत्पन्न थवा-पणु छे. तेथी कर्म पुत्रतुल्य छे, अने उद्योग पिता समान छे. वळी मोक्षप्राप्ति-ने समये क्षपक श्रेणिपर आरुढ थइने शुभ ध्यानवडे सर्व कर्मनो क्षय करवाथी-ज जीव सिद्धिपदने पामे छे, माटे उद्योगज बलवान छे."

हवे ते सर्व एकांतवादीने जवाब आपवामा आवे छे-प्रथम कालवादी छे. ते सर्व काळथी करेलु माने छे ते अयोग्य छे. केमके समयादिकवडे परिणाम पामतो काळ समान छता पण फळनु विचित्रपणु देखाय छे. जेमके एकज वखते वावेला मगमा परिणामे कोइ छोड मोटो नानो थाय छे. तेमज तेनी शींगो पण नानी मोटी थाय छे, अने कोइ उगे छे ने कोइ उगतो पण नथी. वळी कोइ बे पुरुषे सम काळे राजानी सेवा करवा माडी होय, तेमा एक सेवकने तेनु फळ टुका वखतमा मळे छे, अने बीजाने कालांतर पण मळतु नथी. तथा एकी वखते खेती विगेरे कार्य करवा मांडनारमा एकने संपूर्ण धान्य पाके छे, अने बीजाने काइ पण पाक थतो नथी, तेथी जो मात्र काळज सर्वनु कारण होय, तो पूर्वे वता-वेला सर्वने फळ समानज थवु जोइए, पण तेम तो थतु नथी. माटे आ विश्वनी विचित्रतामां केवळ काळ कारण नथी परन्तु काळ विगेरे पांचे कारणनु सापेक्षपणु छे. काळादिक पाचमांथी एक एकनेज कारण रूप माननारा मिथ्यादृष्टि जाणवा, केमके तेओ पांचे कारणोने परस्पर निरपेक्ष मानता होवाथी सर्व कार्यनी सिद्धिनो तेमने अभाव छे. पांचे कारणो परस्पर मळवाथी पोतपोताना स्वरूपनो त्याग कर्या विना कार्यसिद्धि करी आपे छे. एम मानवाथी प्राणी सम्यक्त्व रूपने पामे छे. ते कारणमांना एकथी कोइ कार्य थतु नथी. पण तेमनी गौणता मुख्यता करवाथी कार्य उत्पन्न थाय छे. ते विषे भगवती सूत्रनी वृत्तिना पहेला शतकना प्रथम उद्देशामा कह्युं छे के-" भविष्य काळमां वेदवा लायक कर्मनो क्षय करवा माटे कारण " ...प्यीने तेने खेंचीने उदयावळीमा प्रवश करे. ते

उदीरणा कहवाय छे. ते उदीरणादिकमां काळ, स्वभाव विगेरे पांचे कारणभूत छे. तो पण मुख्यताए करीने पुरुषार्थनुज कारणपणुं बतावता सता कहे छे के-

"ज त जते अप्पणा चेव उदीरेति"

हे भगवान्! ते कर्मनी उदीरणा आत्मा पोतेज करे छे ? इत्यादि

आ काळादिक एक एक कोइ वखत कार्यनी अपेक्षाए कारणभूत थाय छे. ते विषे बीजा श्रुतस्कधमां "नत्थि धम्मे अधम्मे अ" इत्यादि० अर्थात् श्रुत चारित्रात्मक एवो जे आत्मानो परिणाम ते कर्मक्षयनु कारण होवाथी धर्म, अने मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय अने योग रूप जे आत्माना परिणाम ते कर्मबंधनां कारण होवाथी अधर्म कहवाय छे. आवा प्रकारना धर्म अने अधर्म काळवादी, ईश्वरवादी, विगेरेना मतमा नथी परतु धर्म अधर्म विना एकांतपणे काळ विगेरेज सर्व जगतनी विचित्रतानु कारण छे एम कहे पण घाटतु नहीं. कारण धर्म अने अधर्म विना संसारनी विचित्रता घटती नथी. धर्म ए सम्यग् दर्शन छे, अने अधर्म ए मिथ्या दर्शन छे सम्यग्दृष्टिए ते पांचे कारण रूपे जाणेला छे, केमके तेज रीते सृष्टिनी सिद्धि तेणे जोइ छे. जेमके मातापिताना संगमथी रुधिर ने वीर्यनो संबध थाय छे, कर्मे करीने तेमां जीव अवतरे छे, ते जीवना सत् असत् कर्मने अनुसारे सुखदुःखना हेतुरूप ते ते वस्तुनो संबंध प्रतिक्षणे नियतिवडे थाय छे, स्वभावे करीने ते जीवमा पशु, पक्षी, मनुष्य, स्त्री, पुरुष विगेरेना स्वभावो उत्पन्न थाय छे, अने पछी काळे करीने जन्म अने बाल्यावस्था युवावस्था विगेरे भावो प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे सर्व पदार्थोमा यथायोग्य जाणी लेवु.

जेम पाच माणसो मळीने उपडी शके तेवो भार एक माणस ओछो करीए तो उपडशे नहीं, अने पाचे एकत्र थशे तोज उपडशे. तेम अहीं पण काळादिकमाथी एकने मानीए नहीं, तो संसारनी कार्यसिद्धि थशे नहीं.

अहीं कोइ प्रश्न करे छे के-"परस्पर अपेक्षा रहित काळादिकमाथी प्रत्येकने माननारा मिथ्यात्वी अने समुदायने माननारा समकिती कह्या ते घटशे नहीं. केमके जेम सिकता (रेती) ना दरेक अवयवमा तेल नथी तो तेना समुदायमा पण नथी तेवीज रीते काळादिक प्रत्येकने माननारमा सम्यक्त्व नथी तो पछी तेना समुदायने माननारमा पण ते आवशे नहीं."

आ प्रश्ननो जवाब ए छे के-"पद्मरागादिक मणिओ छुटा होय तो ते प्रत्ये-

करने हार कही शकतो नथी, परतु तेज मणिओने एकत्र करीए तो तेनो हार बने छे, माटे वादीनी शंकानो अवकाश नथी. ते विषे कयुं छे के–

ण हि कालादिहितो केवलएहि तु जायए किंचि ।
इह मुग्गरंधणादिव, ता सव्वे समुदिता हेऊ ॥ १ ॥
जह णेगलक्खणगुणा वेरुलियादिमणी विसजुत्ता ।
रयणावलिववएसं न लहंति महग्घमूलावि ॥ २ ॥

भावार्थ–"कालादिकमाथी केवळ कोइ एक हेतु कांइ पण कार्य सिद्ध करी शकतो नथी, केमके मग रांधती वखते एक काष्ठथी मग रंधाता नथी, पण काष्ठना समुदायनो सरखो ताप लागवाथी रंधाय छे, तेम ते पांचे कारणोनो समुदायज कार्य साधवामां हेतु छे." "जेम अनेक गुणलक्षण वाळा अने अमूल्य पण वैडूर्य आदिक मणिओ जूदा होय, तो ते रत्नावळी (हार) ना व्यपदेशने पामता नथी तेम कालादिक एकेकने माननारा समकितीना व्यपदेशने पामी शकता नथी."

वळी काललब्धि पाम्या शिवाय मोक्षप्राप्ति थती नथी. तेथी जे काळे जे कार्य थवानुं होय छे, ते कार्य तेज काळे थाय छे. अहीं शिष्य प्रश्न करे छे के "अभव्य प्राणी अनेक जीव सिद्धि गयाना काळने पाम्यो छे तो पण ते केम सिद्धि पामतो नथी?"

गुरु कहे छे—"अभव्य प्राणीनो सिद्धि जवा योग्य स्वभाव कोइ काळे पण थतो नथी, केमके तेने पहेलु मिथ्यात्व गुणस्थानक अनादि अनंत भांगे छे"

शिष्य—त्यारे मुक्ति पामवाना स्वभाववाळा सर्व भव्य जीवो एकज काळे केम सिद्धि पामता नथी?

गुरु—निश्चये करीने सम्यक्त्वादि गुण जागृत थाय त्यारे मोक्ष मळे छे, माटे नियति होवी जोइए.

शिष्य—हे पूज्य! सम्यक्त्वादि गुणश्रेणि उत्पन्न थया छतां श्रेणिकराजानी केम मुक्ति थइ नहीं?

गुरु—पूर्वना कर्मनो क्षय थयो नहोतो तेमज पुरुषार्थनो–पंडितवीर्यनो उल्लास थयो नहोतो, तेथी सम्यक्त्व छतां मुक्ति पाम्या नहीं.

शिष्य—हे गुरु ! शालिभद्रे मोक्षने माटे घणो उद्यम कर्यो हतो, छतां ते केम मोक्षे गया नहीं ?

गुरु—पूर्वनां शुभ कर्म अवशेष रह्यां हतां, तेथी शी रीते मुक्ति मळे ?

शिष्य—हे भगवन् ! मरुदेवा माताने चार कारणो मळ्यां हतां, पण तेणे मोक्षने माटे पुरुषार्थ काइ पण कर्यो नहोतो, छतां ते केम मोक्षे गया ?

गुरु—मरुदेवा माताए शुक्लध्यानवडे क्षपकश्रेणिपर आरूढ थइने अनंत वीर्य (पुरुषार्थ)नो उल्लास कर्यो हतो, तेथी ते सिद्धिने पाम्या छे.

आ प्रमाणे होवाथी स्याद्वाद मते काळ, स्वभाव विगेरे पांचे हेतु मळीने ज सर्व कार्य सिद्ध थाय छे. जेओ ते पांचेना समुदायने मानता नथी तेओने जैन धर्मना लोपनार समजवा.

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तम्भस्य
एकोनत्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २२९ ॥

व्याख्यान २३० मुं.

भावी भाव

भवितव्यविपर्यास, मत्तोऽसौ दशकंधर ।
कर्तुं समर्थो नैवाभूत्, स श्रीपूज्यै प्रबोधित. ॥ १ ॥

भावार्थ—"मदोन्मत्त एवो रावण पण भवितव्यताने अन्यथा करवा समर्थ थयो नहीं. तेने पूज्य एवा मुनिमहाराजे बोध पमाड्यो."

त्रिकुटाचळनी उपर वसावेली लंकानगरीमां रावण नामे राजा राज्य करतो हतो. शैवशास्त्रमां कह्यु छे के तेने दश माथां अने वीश हाथ हता. तेणे इंद्रने जीत्यो हतो, दश लोकपाळने तेणे कोटवाळ कर्या हता, तेने त्यां वायु वासीदु वाळतो हतो, मेघ तेना घरनु पाणी भरतो हतो, नव दुर्गा देवीओ तेनी आरती उतारती हती, खर नामनो दैत्य घंटा वगाडतो हतो, नव ग्रहो सभ्यानु रक्षण करता हता, कुबेर धान्यना बीज वावतो हतो, वरुण तेने पाणी सींचतो हतो, यमराज खेतर खेडतो हतो, सूती वखते ते प्रतिवासुदेव रावणनु वक्षःस्थळ दश मस्तकना जेमां प्रतिबिंब पडी रह्यां छे एवा हारथी शोभतु हतुं, ते राक्षसी

विद्यार्थी अत्यंत बळवान हतो, जगतने तृण समान मानतो हतो, अने 'हुं अजर अमर छु' एवा गर्ववडे गर्विष्ठ थयेलो हतो."

एकदा एक नैमित्तिक [जोषी] त्यां आव्यो. ते विद्वद गोष्ठी करतां प्रसंगोपात बोल्यो के-"सर्व प्राणीओने अवश्य मरण होय छे, केमके मरवुं ते तेनी प्रकृतिज छे, अने जीववु ते विकृति छे" त्यारे रावण बोल्यो के-' यम तो मारो सेवक छे, माटे मारु मरण तो नथी." नैमित्तिके कह्युं के"दशरथराजाना पुत्र लक्ष्मणना हाथथी तमारुं अवश्य मरण थशे." ते सांभळीने रावणे मंत्रीओ सामु जोयु, एटले मंत्रीओ बोल्या के-"भावी मिथ्या थतु नथी एम लोकमा कहेवाय छे" त्यारे रावण गर्व सहित बोल्यो के-"अरे! बिचारी कायडी जेवी रांकडी भवितव्यता कोण छे? उत्तम पुरुषोने तो पुरुषार्थ ज प्रमाण छे." ते सांभळीने नैमित्तिक बोल्यो के-"हे राजन! एम बोलशो नहीं. सांभळो! चन्द्रस्थलना राजानी पुत्री रत्नस्थलना राजाना पुत्र साथे आजथी सातमे दिवसे परणशे, ते भावी भावने मिथ्या करवानी जो तमारी शक्ति होय, तो तमारा मरण विषेनी भवितव्यता पण मिथ्या थाय" रावणे कह्यु के-'तेनु विशेष स्वरूप कहो.' त्यारे नैमित्तिक बोल्यो के-"रत्नस्थळ नामना नगरमा रत्नसेन नामे राजा छे. तेने बहोतेर कळामा कुशळ, सर्वोत्तम रूप अने लावण्यवडे इन्द्र समान रत्नदत्त नामनो पुत्र छे. एकदा राजाए पुत्रने योग्य राजकन्या शोधवा माटे कुमारनी छबी वस्त्र उपर चित्रावीने ते छबी तथा कुमारनी लग्नपत्रिका आपी चार चार मंत्रीने चारे दिशामां मोकल्या. तेमांना पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण दिशामां गयेला बार मंत्रीओ तो निराश थइने पाछा आव्या, अने जे मंत्रीओ उत्तर दिशामां गया हता, तेओ फरता फरता गंगाने कांठे चन्द्रस्थळ नामना नगरमां आव्या. त्यां चन्द्रसेन नामे राजा छे. तेने चोसठ कळामां प्रवीण अने दिव्य स्वरूपवान चन्द्रावती नामनी कन्या छे. ते कन्याने जोइने मंत्रीओए राजाने कुमारनु स्वरूप बताव्यु अने जन्मपत्रिका आपी. ते कन्यानी लग्नपत्रिका साथे मेळवता आठ वर्गा प्रीति मळी, एटले राजाए पोतानी पुत्रीने बोलावी, अने बन्नेनी योग्यता जाणीने विवाह कर्यो. पछी जोषी लोकोने बोलावीने लग्ननुं मुहूर्त पृछ्यु तेओए विचारीने कह्युं के-"हे स्वामी! अमे चार वर्षना मुहूर्त जोयां, पण आजथी बारमे दिवसे जेवु शुभ मुहूर्त आवे छे, तेवु बीजु एके आवतुं नथी." ते सांभळीने राजाए कह्युं के-"वर अति दूर छे अने मुहूर्त पासे आव्यु,

तेनो शो उपाय ?" त्यारे आवेला मंत्रीओ बोल्या के-" वायुवगी लाल्वणंनी साद आपो, तो ते साधनथी कुमारने शीघ्रताथी अहीं लावीए" राजाए ते प्रमाणे अंगीकार कर्यु. अने वायुवेगवाळी साढो आपीने ते मंत्रीओने मोकल्या. तेओ पांच दिवसे पोताने नगरे पहोंच्या. रत्नसेन राजाए कन्यानुं चित्र जोयुं, तेथी बहु हर्ष पामीने कुमारने मंत्रीओ साथे मोकल्या तैयार कर्यो. तेओ हाल साढनी उपर बेसीने प्रयाण करवानी तैयारीमां छे, माटे हे रावण राजा ! जो मारी भाग मिथ्या करवानी तमाराामा शक्ति होय तो ते अजमावी जुओ."

रावणे तत्काळ तक्षक नागने बोलावीने आज्ञा आपी के-" हे नाग ! अहींथी एकदम जइ रत्नदत्त कुमारने एवो दंश कर के ते तरत मरण पामे." एवी आज्ञा थताज तक्षकनाग तरतज त्यां गयो, अने कुमारनो एक पग साढना पगडामां अने बीजो भूमिपर छे तेज अवसरे ते तेने करड्यो, एटले कुमार पृथ्वीपर पडी गयो. राजकन्याने पण पोताना बे राक्षस सेवको पासे मगावीने रावणे नैमित्तिकने बतावी. नैमित्तिक ते कन्याने ओळखी पछी रावणे 'तिमिंगळीना स्वरूपवाळी एक राक्षसीने बोलावी, अने एक पटीमां सात दिवस चाले तेटलां अन्न पान सहित कुमारीने बेसाडी पछी ते पेटीने बंध करीने तिमिंगला राक्षसीना मुखमां आपी. तेने विसर्जन करतां कह्यु के-" सात दिवस सुधी अपार समुद्रमां जइ आ पटी सहित उंचु मुख राखीने रहजे, अने ज्यारे हुं बोलावुं त्यारेज अहीं आवजे" एम कहीने तेने रवाने करी. पछी रावणे नैमित्तिकने कह्यु के" भवितव्यताने हुं केवी मिथ्या करुं छुं ते तमे जुओ." निमित्तिओ मौन रह्यो

अहीं रत्नदत्त कुमार मूर्छा पाम्यो, एटले रत्नसेन राजाए घणा मंत्रवादीओने बोलाव्या तेओ गारुडी मंत्र विगेरेथी विष उतारवा लाग्या पण कोइ प्रकारे कुमार जागृत थयो नहीं. एटले राजाए नगरमां घोषणा करावी, त्यारे एक वृद्ध पुरुषे आवीने कह्यु के—" हे राजा ! विषनी मूर्छा छ मास सुधी रहे छे. माटे तेने जळमां वहन करो, पण अग्निसंस्कार करशो नहीं." आ प्रमाणे सांभळीने राजाए ते कुमारना शरीरप्रमाण पटी करावीने तेमां कुमारने सुवार्यो, अने ते पेटी गंगाना प्रवाहमां वहेती मूकी. जळप्रवाहमां भमती भमती ते पेटी समुद्र पास-पहोंची. त्यां खारा पाणीना प्रभावथी कुमारनी विषजन्य मूर्छा काइक ओछी थइ. सातमे दिवसे तिमिंगला राक्षसी पेटी लइने गंगा अने समुद्रना

१ समुद्रमां मोटा मत्स्य होय छे तेमानी एकजाति तिमिंगळ कहेवाय छे

संगमस्थाने आवी. त्यां कांठा पर पेटीने मूकीने ते जळक्रीडा करवा लागी. पछी रत्नवती पेटीनुं द्वार उघाडीने क्षणवार क्रीडा करवा माटे बहार नीकळी. तेवामां तेणे पवनथी हालती एक पेटीने तेनी पासे आवती जोइ. एटले तेने नजीक खेंची लइने पोताने हाथे उघाडी, तो तेमां कोइ राजकुमारने विषमूर्छित स्थितिमां जोइ पोतानी पासेनी विषहरण मुद्रिकानुं जळ तेना पर छांटयुं तेनाथी कुमार सचेतन थयो, एटले चित्रमां कुमारनुं स्वरूप जोयुं हतुं तेनी समानताथी तेणीए कुमारने ओळख्यो के "मने पिताए जेने आपी हती तेज आ रत्नदत्त कुमार छे." एम जाणीने तेणे हर्षथी कुमारने तेनु वृत्तांत पूछ्यु कुमारे पण तेनुं चित्र जोयु हतुं, तेथी कुमारीने ओळखी. पछी 'आजे अने आ समये ज आपणा लग्ननु मुहूर्त निर्धार्युं हतुं' एम जाणीने तेमणे त्या गांधर्व लग्न कर्यां. वनमां वृक्षो परथी फळो लीधा अने खाधां. ते वखते कांठे रहेलां पक्षीओ गीतगान करी रह्यां हता. कुमारे आभरणने माटे त्यांथी विविध प्रकारना रत्नो ग्रहण कर्यां. पछी बन्नेना वस्त्रना छेडा (छेडा छेडी) बांधीने तेओ कुमारीवाळी पेटीमां पेठा, अने पेटीनु द्वार बंध कर्युं. क्षणांतरे तिमंगला राक्षसी क्रीडा करीने आवी, अने प्रथमनी पेठेज मुखमा पेटी राखीने अगाध जळमां गइ. पछी आठमो दिवस थयो, एटले रावणे नैमित्तिकने कह्यु के–"में अवश्य थवानु पाणिग्रहण मिथ्या कर्युं." त्यारे नैमित्तिक बोल्यो के–"हे राजन्! ते बन्नेना लग्न थइ गयां." ते सांभळीने राजाए ते राक्षसीने बोलावीने पूछ्यु के–"तारा मुखमां धारण करेली पेटी छे के नहीं?" राक्षसीए कह्यु के–"तेनी तेज स्थितिमा छे." पछी रावणे पेटी मगावीने उघडावी, तो तेमाथी नवी परणेली कन्या पोताना पतिने आगळ करीने छेडाछेडी सहित बहार नीकळी. ते जोइने सर्व लोक आश्चर्य पाम्या. पछी "तेमनो विवाह शी रीते थयो?" एवुं राजाए नैमित्तिकने पूछ्युं, एटले तेणे सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळीने रावणे "भावीनो नाश थतो नथी" एम निश्चय करीने पोतानु मरण अंगीकार कर्युं पछी कुमार तथा कुमारीनो सत्कार करीने रावणे रजा आपी, एटले तेओ पोताने स्थानके गया.

एक दिवस रावणे मुनिचंद्र नामना आचार्यने वांदीने पूछ्युं के–"हे भगवन्! कोइ पण नियतिने व्यर्थ करवामा समर्थ सांभळ्यो के जोया छे?" गुरुए कह्यु के–"हे राजा! ए एकवादीनो मत छे. तेओ कहे छे के–

प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थ
सोऽवश्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा ।
भूतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने
नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाशः ॥ १ ॥

भावार्थ—"नियतिना सामर्थ्यथी मनुष्यने जे शुभ अथवा अशुभ प्राप्त थवानुं होय छे ते, अवश्य थाय छे प्राणीओ गमे तेटलो प्रयत्न करे, तो पण जे कार्य थवानुं नथी ते थतुं ज नथी अने जे थवानुं छे तेनो नाश थतो नथी."

आ प्रमाणे नियतिनो आश्रय करीने तेओ कालादिक कारणने तजी दइने बोले छे पण ते प्रमाणभूत नथी. कमके कर्म विगेरे पण पोत-पोताना कार्य उत्पन्न करवामां मुख्य कारण छे. कह्युं छे के-

कर्मणो हि प्रधानत्वं, किं कुर्वन्ति शुभा ग्रहाः ।
वसिष्ठदत्तलग्नोऽपि, रामः प्रव्रजितो वने ॥ १ ॥

भावार्थ—"कर्मनुं ज प्राधान्य छे तेमां शुभ ग्रहो पण शुं करी शके छे ? कमके वसिष्ठे आपेला राज्यस्थापनना मुहूर्ते पण रामने वनवासमां जवुं पड्युं हतुं." वळी-

नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं
विद्यापि नैव न च जन्मकृतापि सेवा ।
कर्माणि पूर्वतपसा किल सञ्चितानि
काले फलन्ति पुरुषस्य यथेह वृक्षाः ॥ २ ॥

भावार्थ—"पुरुषने तेनी आकृति कांइ पण फळ आपती नथी, सारुं कुळ कांइ फळ आपतुं नथी, शील कांइ फळ आपतुं नथी, विद्या कांइ फळ आपती नथी, तेमज जन्म पर्यंत करेली सेवा पण कांइ फळ आपती नथी. परंतु पूर्वे जन्ममां करेली तपस्यावडे सञ्चय करेलां कर्मो ज काळे करीने वृक्षनी जेम फळ आपे छे."

वैद्या वदन्ति कफपित्तमरुद्विकारं
नैमित्तिका ग्रहकृतं प्रवदन्ति दोषम् ।
भूतोपसर्गमथ मंत्रविदो वदति
कर्मैव शुद्धमतयो यतयो गृणन्ति ॥ ३ ॥

भावार्थ—"वैद्य लोको वात, पित्त अने कफनो विकार कहे छे, जोशी लोको ग्रहोए करेलो दोष कहे छे, अने मंत्र जाणनाराओ भूत प्रेत विगेरनो उपद्रव कहे छे, परंतु शुद्ध मतिवाळा यतिओ तो कर्मनोज दोष कहे छे."

केटलाक तो नीचे जणावेलां नामो कर्मना पर्याय रूप कहे छे

विधिर्विधाता नियति स्वभाव.
कालो ग्रहाश्चेश्वरकर्मदैव ।
भाग्यानि पुण्यानि यम. कृतांत
पर्यायनामानि पुराकृतस्य ॥ ४ ॥

भावार्थ—"विधि, विधाता, नियति, स्वभाव, काळ, ग्रहो, ईश्वर, कर्म, दैव, भाग्य, पुण्य, यम अने कृतांत ए सर्व पूर्व करेलां कर्मनां पर्याय नामो छे."

यथा धेनुसहस्रेषु, वत्सो विदति मातरम् ।
एवं पूर्वकृतं कर्म, कर्तारमनुधावति ॥ ५ ॥

भावार्थ—"जेम वाछरडु हजारो गायोमांथी पोतानी माताने ओळखीने तेनी पाछळ जाय छे, तेम पूर्वे करेलु कर्म तेना कर्तानी पाछळ जाय छे."

यथा छायातपो नित्य, सुसंबद्धौ परस्परम् ।
एव कर्म च कर्ता च, संश्लिष्टाविनरेतरम् ॥ ६ ॥

भावार्थ—"जेम छाया अने आतप हमेशां परस्पर संबंधवाळा छे, तेम कर्म अने तेनो कर्ता पण परस्पर मळेला छे."

हवे उद्यम विषे कहे छे.

न यथैकेन हस्तेन, तालिका संप्रपद्यते ।
तथोद्यमपरित्यक्त, न फल कर्मण. स्मृतम् ॥७॥

भावार्थ—"जेम एक हाथे ताळी पडती नथी, तेम उद्यम विना एकला कर्मनुं फल कहेलु नथी."

पश्य कर्मवशात्प्राप्त, भोज्यकाले च भोजनम् ।
हस्तोद्यम विना वक्त्रे, प्रविशेन्न कथचन ॥८॥

भावार्थ—"जुओ क कर्मना वशथी भोजनने वखते जमवानु तो मळ्यु, पण हाथनो उद्यम कर्या विना मुखमा कोइ पण प्रकारे ते पेसतु नथी"

आ प्रमाणे गुरमहाराजना वचनो सांभळीने रावणे फरीथी पूछ्यु के–"हे स्वामी! मृत्युने जीतवानो कोइ पण उपाय छे?" त्यारे गुरु बोल्या के "हे त्रण खंडना राजा रावण!

परिहरति न मृत्यु. पंडित श्रोत्रियं वा
धनकनकसमृद्ध बाहुवीर्य नृपं वा ।
तपसि नियतयुक्त सुस्थित दुःस्थित वा
वनगत इव वह्नि सर्वभक्षी कृतात ॥१॥

भावार्थ—"पडितने, श्रेष्ठ ब्राह्मणने, धनसुवर्णनी समृद्धिवाळाने, बाहुना पराक्रमवाळा राजाने, निरतर तपस्या करनारने, सारी स्थितिवाळाने अथवा नरळी स्थितिवाळाने कोइने पण मृत्यु छोडतु नथी, कमके वनमा रहला दावानलनी जेम कृतांत (यम) सर्वभक्षी छे"

ये पातालनिवासिनोऽसुरगणा ये स्वैरिणो व्यतरा
ये ज्योतिष्कविमानवासिविबुधास्ताराश्च चद्रादय ।
सौधर्मादिसुरालयेषु सुखिनो ये चापि वैमानिका
स्ते सर्वेऽपि कृतातवासमवशा गच्छन्ति कि शोच्यते ॥२॥

भावार्थ—"जे असुरकुमारो पाताळमा वसेला छे, जे व्यतरो स्वेच्छाचारी छे, जे ज्योतिष विमानवासी देवो तारा अने चद्र विगेर छे, अने जे सुधर्मादिक विमानमा सुखेथी वसेला वैमानिक देवो छे, ते सर्वे पण

पराधीनपणे यमराजना वासमां जाय छे, अर्थात् मरण पामे छे, तो पछी हे रावण ! तु शाने माटे शोक करे छे ?"

आ प्रमाणेना गुरुमहाराजना उपदेशथी रावण प्रतिबोध पाम्यो, अने हमेशां **शांतिनाथ** जिनेश्वरनी भक्ति करवा लाग्यो.

एक दिवस रावण पुष्पक नामना विमानमां बेसीने पोतानी पत्नी **मंदोदरी** सहित अष्टापद तीर्थे गयो. त्यां भरतचक्रीए करावेला चौमुख जिनालयमां द्रव्यपूजा कर्या बाद हाथमां वीणा लइने भावपूजा करवा लाग्यो, तेवामां नागपति धरणेंद्र त्यां आवी चोवीश तीर्थंकरोने नमस्कार करीने रावण पासे बेठा. रावणे तेमने अष्टापद तीर्थनु स्वरूप पूछ्युं एटले नागपतिए अष्टापद तीर्थनु माहात्म्य कही बताव्यु ते सांभळीने रावण घणा हर्षथी भक्ति करवा लाग्यो. ते वखते तेनी प्रिया मन्दोदरी नृत्य करती हती, अने पोते वीणा वगाडतो हतो. थोडी वारमा दैवयोगे वीणानी एक तंत्री तुटी गइ, त्यारे "अहो आ नृत्यसमयमां मारी प्रियाना भावनो भंग न थाओ" एम विचारीने तत्काळ रावणे जाणे तार तुटीज नथी तेम पोताना हाथमाथी एक नस काढीने वीणामां सांधी दीधी, तेथी तेनो अवाज घणो सुंदर थयो अने नृत्यनी शोभा पण वृद्धि पामी. ते जोइ देवो पुष्पवृष्टि करीने वारंवार तेनी प्रशंसा करवा लाग्या. ते वखते भावमां निमग्न थयेला रावणे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं. पछी ते पोताने स्थाने आवीने राज्यसुख भोगववा लाग्यो.

"आ प्रमाणे विविध प्रकार परीक्षा करी नियत्यादि रूप एकांत पक्ष मूकीने आत्मसिद्धि माटे उद्यम करनारा रावणे अष्टापद तीर्थने विषे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य त्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३० ॥

व्याख्यान २३१ मुं

कालादि करता कर्मनी प्रबलता विषे.

देवेन्द्रा दानवेन्द्राश्च, नरेन्द्राश्च महाबला ।
नैव कर्मपरीणाममन्यथा कर्तुमीश्वरा. ॥ १ ॥

भावार्थ—"देवेन्द्रो, दानवेन्द्रो अने बलवान राजाओ कोइ पण कर्मना परिणामने मिथ्या करवा समर्थ नथी." आ संबंधमां एक दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

मनोरम नामना पुरने विषे रिपुमर्दन नामे एक राजा हतो. तेने पुत्र न हतो, भाविनी नामे एक पुत्रीज हती. ते राजाने प्राणथी पण अधिक प्रिय हती, तेथी ते पुत्रीना स्नान, भोजन, शणगार विगेरे कर्या पछी राजा पोते स्नान, भोजनादिक क्रिया करतो हतो. ते कुमारी कलाचार्य पासे कलानो अभ्यास करती हती.

तेज पुरमां सर्वथा निर्धन धनदत्त नामनो श्रेष्ठी रहतो हतो. तेने सात पुत्र उपरांत कर्मरेख नामे आठमो पुत्र थयो. ते सौथी नानो होवाथी तेना पिताने वधारे व्हालो हतो. ते पुत्र पण तेज कलाचार्य पासे कलानो अभ्यास करतो हतो. एक दिवस समग्र कला शीखेली भाविनीए कर्मरेखना सांभळतां गुरुने पूछ्युं के—"हे पिता! मारो वर कोण थशे?" गुरुए लग्न जोइने कह्युं के—"आ कर्मरेख तारो पति थशे." आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळीने जाणे वज्रथी हणाइ होय तेम ते मूर्छित थइ गइ. पछी सावधान थइ सती विचारवा लागी के—"अरेरे! आ निर्धननो छोकरो मारो पति थशे ते करतां तो मरी जवुं तेज श्रेष्ठ छे. परंतु आ कर्मरेखनेज मारी नाखुं तो पछी ते मारो स्वामी शी रीते थशे?" एम विचारीने क्रोध सहित ते पोताने घेर गइ. अश्रुवडे तेनी कांचळी भीनी थइ गइ, अने मुख ढांकीने ते सुइ गइ. पछी भोजनसमये "भाविनी क्यां गइ?" एम पूछतां राजाए तेनी शोध करावी तो कोपगृहमां[1] सुती छे, एम तेना जाणवामां आव्युं. एटले राजा तेनी पासे गयो. अने तेने पोताना उत्संगमां बेसाडीने दुःखनुं कारण पूछ्युं. त्यारे तेणे गुरुए कहेली वात अने पोतानो विचार कही बताव्यो. ते सांभळीने राजाए "आ बाबतमां शुं करवुं?" एम मंत्रीओने पूछ्युं. मंत्रीओ बोल्या के—"हे महाराज! कारण विना पारका मनुष्यनो घात करवो राजाने योग्य नथी. माटे ते कर्मरेखना पिताने बोलावी तेने कांइ द्रव्य आपीने ते पुत्र

[1] रीसानारने बेसवानुं स्थान.

तेनी पासेथी लइ लेशो. पछी जेम आपनी इच्छा हशे एम थइ शकशे, अने तेम करवाथी आपणो अन्याय पण कहवाशे नहि " पछी राजाए ते धनदत्त श्रेष्ठीने बोलावीने पोतानो विचार कह्यो. स्वजना घात करतां पण अधिक कठोर वचन सांभळीने नेत्रमा अश्रु सहित ते धनदत्त बोल्यो के-" हे देव ! पुत्र कोण ? स्त्री कोण ? अने हुं पण कोण? मारो समग्र परिवार आपनोज छे. मरजी प्रमाणे करो" राजा पण एक तरफ वाघ अने एक तरफ भरपूर नदीनी जेम सांकडमां आव्यो. छेवटे निरुपायपणे कर्मरेखने बोलावीने तेनो वध करवा माटे चांडाळने आप्यो. चांडाळो तेने लइने गाम बहार गिरी पासे गया. त्यां " बाळहत्या करवी आपणने योग्य नथी " एम विचारीने ते चांडाळोए कर्मरेखने बदले एक मडदु शूळी उपर चढावीने तेने छोडी दीधो. राजानो अभिप्राय जाणनार कर्मरेख पण त्यांथी शियाळनी जेम तत्काळ नासी गयो.

हवे श्रीपुर नामना नगरमां श्रीदत्त नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने श्रीमती नामे पुत्री हती. ते शेठने रात्रीमां कुळदेवीए आवीने स्वप्नने विषे कह्युं के-" हे श्रेष्ठी ! आ गामनी बहार काले प्रातःकाळ उत्तर दिशाना रस्तामां सुतेला जे बाळकनी पासे तारी काळी गाय उभी होय ते बाळकने तारी श्रीमती पुत्री साथे परणावजे " हवे कर्मरेख कुमार पण आखी रात्री मार्गमां चालतां अत्यन्त थाकी गयो, तेथी ते श्रीपुर गामनी नजीक आवीने सुइ गयो. श्रीदत्त श्रेष्ठी प्रातःकाळे गोत्रदेवीना वचनथी त्यां आव्यो, अने तेज प्रमाणे जोइने तेने पोताने घेर लइ गयो. पछी तेने पोतानी कन्या परणावी. हस्तमेलाप वखते श्रेष्ठीए पोताना घरनी सर्व लक्ष्मी तेने आपी.

ते गाममां कर्मरेखे पोतानुं असल नाम गुप्त राखीने रत्नचंद्र नाम प्रसिद्ध कर्युं. एक दिवस ते रत्नचंद्र पोताना श्वशुर श्रीदत्तनी आज्ञा लइने वहाणमां बेसी समुद्ररस्ते वेपार करवा गयो. त्यांथी घणु द्रव्य उपार्जन करीने पाछो आवतां रस्तामां वहाण भांगवाथी समुद्रमां पड्यो. तेने एक मोटो मच्छ गळी गयो. ते मच्छ चाली न शकवाथी समुद्रने कांठे आवीने पड्यो. एक मच्छीमारे तेने पकड्यो अने तेनुं पेट फाडतां नीकळेला ते कुमारने भृगुपुर (भरुच) नगरना राजाने भेट तरीके आप्यो. ते राजाने पुत्र नहीं होवाथी तेणे तेने पुत्र करीने राख्यो. पछी तेने कुंदनपुरना राजानी पुत्री जोडे परणाव्यो.

अहीं रिपुमर्दन राजाए पोतानी भागिनी पुत्री योग्य वयमां आवतां तेनो स्वयंवरमंडप रच्यो. तेमां तेणे सर्व राजाओ राजकुमारो, मंत्रीपुत्रो, श्रेष्ठीओ, श्रेष्ठीपुत्रो अने सार्थवाह विगेरेने आमंत्रण करी बोलाव्या. ते वखते भृगुपुर

राजाना कुमार रत्नचंद्रे पण चतुरंगीणी सेना सहित त्यां आवीने स्वयंवरमंडपने शोभाव्यो. राजपुत्री भाविनी सर्व राजमंडळनुं अतिक्रमण करीने रोहिणी चंद्रने वरे तेम ते रत्नचंद्रनेज वरी. रिपुमर्दन राजाए विधिपूर्वक तेमनां लग्न करीने हाथी अश्व विगेरे पुष्कळ दायजो आपीने तेमने विदाय कर्यों. रत्नचंद्र कुमार भाविनीने लइने पोताना पुरमा आव्यो.

एक दिवस कुमार सुवर्णना थाळमां स्वर्गना भोजन (अमृत) जेवुं मिष्ट भोजन करतो हतो, ते वखते अकस्मात् पवन उत्कट थवाथी धूळ उडवा लागी, तेने थाळीमां पडती जोइने हाथमां पंखो लइने पासे उभेली भाविनीए पोताना वस्त्रना छेडाथी ते भोजन तुरत ढांकी दीधुं. ते जोइने रत्नचंद्र विचार करवा लाग्यो के-" अहो ! एक एवो पण वखत हतो के आ स्त्रीए मने शूळीपर चढाव्यो हतो, अने आजे एवो पण वखत छे के तेज स्त्री मने पोतानो प्राणपति मानीने मारा शरीर उपर रजनो स्पर्श पण थवा देवा इच्छती नथी." एम विचारीने तेणे विस्मयथी जरा हास्य कर्युं. तनुं हास्य जोइने ते चतुर भाविनीए आश्चर्य पामीने विचार्युं के-" आवुं स्मित हास्य तो मारी जेवी स्त्रीओने योग्य छे, परंतु आवा पुरुषोने कारण विना हास्य घटतुं नथी. " एम विचारीने तेणे पोताना पतिने आग्रह पूर्वक हास्यनुं कारण पूछ्युं. प्रियाना अत्यंत दुराग्रहथी ते बोल्यो के-" हे सुंदर अंगवाळी ! तुं मने ओळखे छे ? " ते बोली-" हा, आप मारा प्राणपति छो, अने हुं आपनी प्रिया छुं. " कुमारे कह्युं के-" हे सुन्दर भ्रकुटीवाळी प्रिया ! तें जे आ संबंध कह्यो ते तो जगतमां प्रसिद्ध छे, परंतु आपणो बीजो पण संबंध छे, अने ते ए के- हे मृगाक्षी ! हुं कर्मरेख नामनो धनदत्त श्रेष्ठीनो पुत्र छुं, अने तुं कलाचार्यपासे मारी साथे अभ्यास करनारी भाविनी छे " एम कहीने तेणे पूर्वनी केटलीक रहस्यनी वात कही ते सांभळीने भाविनीए अत्यंत लज्जाथी नीचुं मुख कर्युं ते जोइने तेने आश्वासन पमाडी प्रीतिपूर्वक कुमार बोल्यो के-

" अपाया पद्मपत्राक्षि, तन्नास्त्यवसरोऽधुना ।
लोकोक्तिरिति यद्विप्रेणातीता नोच्यते तिथि ॥ १ ॥

भावार्थ-" हे कमलाक्षि ! लोकमां पण एवुं कहेवाय छे के गइ तिथि ब्राह्मण पण वाचतो नथी, तो तारे हवे लज्जा पामवानो वखत नथी."

तेमज वळी हे कृशोदरी ! कर्मनी गहन गति छे, तेथीज पूर्वना प्रौढ पंडितोए दैव, देव, विधि विगेरेने छोडी दइने कर्मनेज नमस्कार कर्यो छे. कह्युं छे के—

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मांडभांडोदरे
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे ।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे ॥१॥

भावार्थ—"जेणे ब्रह्माने कुंभारनी जेम ब्रह्मांडरूपी पात्रने रचवामां नियमित कर्यो छे, जेणे विष्णुने दश अवतारवडे गहन एवा मोटा संकटमां नांख्यो छे, जेणे महादेवने हाथमां कपालसंपुट आपीने भिक्षाटन कराव्युं छे, अने जेनावडे सूर्य हमेशां गगनमां भम्या करे छे, एवा कर्मने नमस्कार थाओ."

इत्यादि पतिनां वचन सांभळीने भाविनीए लज्जानो त्याग कर्यो. पछी तेणी आ वृत्तांत पोताना पिता रिपुमर्दनने कहेवरावीने पतिभक्तिमां तत्पर थइ.

अन्यदा कर्मरेख राजाए गुरु पासे देशना सांभळीने विचार्यु के-"कर्मनुं फळ में आ भवमां प्रत्यक्ष जोयुं छे, माटे गुरुनुं वचन प्रमाण छे." पछी ते कर्मनो जय करवा माटे तेणे वृद्धावस्थामां चारित्र ग्रहण कर्युं, अने दुस्तप तपस्या करीने सद्गतिनो भाजन थयो.

"भावीभावने मिथ्या करवामां कोइ समर्थ नथी. ते आ दृष्टांतनुं तात्पर्य छे. अहीं कर्मना बळथीज भाविनी तथा कर्मरेखनो संयोग थयो छे."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य एकत्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३१ ॥

व्याख्यान २३२ मुं

"पांचे कारणो मळीनेज कार्य थाय छे ते विषे"

कालादिपंचहेतूना, समवायो यदा भवेत्।
तदा कार्यस्य निष्पत्ति, स्यात क्षुल्लककुमारवत्॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्यारे कालादिक पांचे कारणनु एकत्र मळवु थाय छे, त्यारेज क्षुल्लककुमारनी जेम कार्यनी उत्पत्ति थाय छे." क्षुल्लक कुमारनु दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

साकेत नामना नगरमा पुंडरीक नामे राजा राज्य करतो हतो. तेनो नानो भाइ कंडरीक युवराजस्थाने हतो कंडरीकने यशोभद्रा नामनी अति रूपवंत स्त्री हती ते जोइने पुंडरीक राजा कामरागमां मग्न थयो, तेथी तेणे दासीद्वारा तेने पोतानी इच्छा जणावी. यशोभद्राए जवाबमा कहेवराव्यु के–"हे पूज्य ! तमे समग्र प्रजाना स्वामी छो, तेथी नीतिपथनो त्याग करवो आपने उचित नथी." आ प्रमाणेनु यशोभद्रानु वचन दासीए राजाने कह्यु एटले राजाए फरीथी कहेवराव्यु के–"हे स्त्री ! स्त्रीओने "ना" कहेवानो स्वभावज होय छे परंतु हे कृशांगी ! मकरी मूकीने मने पति तरीके अंगीकार कर" यशोभद्राए कह्यु के–" कुळ तथा धर्मनी मर्यादा हु मूकीश नहीं तु आवा दुष्ट वचनो बोलता केम लज्जा पामतो नथी ?" ते सांभळीने राजाए विचार्यु के–"ज्यां सुधी मारो भाइ जीवे छे त्यां सुधी आ मने चाहशे नहीं, माटे तेने मारी नाखु." एम धारीने कपटथी तेणे पोताना नाना भाइने मारी नाख्यो कह्यु छे के–

त्रपावरत्रया बद्धास्तावत्तिष्ठति जंतव ।
अविवेकबलं यावन्न कामरसनिर्मितम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्यां सुधी कामदेवना रसथी उत्पन्न थयेलु अविवेकरूपी बळ होतु नथी, त्यां सुधीज लज्जारूपी वाघरी (दोरी) थी बंधायेला जंतुओ मर्यादामा रहे छे"

पछी यशोभद्राए विचार कर्यो के–"जे दुष्टे पोताना भाइनी हत्या करी ते अवश्य मारा शीळनो पण भंग करशे, माटे मारे परदेश चाल्या जवु योग्य

छे." एम धारीने गर्भवती एवी ते यशोभद्रा गुप्त रीते त्यांथी नासी गइ, अने "शीलनु रक्षण करवामां दीक्षा जेवु बीजु कोइ श्रेष्ठ साधन नथी" एम मानीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे गर्भ वृद्धि पाम्यो. ते जोइने सर्व साध्वी विगेरेए तेने पूछयु. त्यारे तेणे सर्व सत्य वृत्तात कही बताव्यु पछी श्रावकोए शासननी हीलना न थाय तेवी रीत तेने राखी. समय पूर्ण थतां तेने पुत्रनो जन्म थयो, ते श्रावकोने घरे वृद्धि पामवा लाग्यो. श्रावकोए तेनुं लालनपालन कर्युं, अने तेनु क्षुल्लककुमार नाम राख्यु. ते कुमार आठ वर्षनो थयो त्यारे तेने दीक्षा आपी, परतु चारित्रावरणनो उदय थवाथी तेना चित्तमा विषयवासना उत्पन्न थइ, एटले तेणे पोतानी माताने कह्यु के-"हे माता! विषयनुं सुख अनुभवीने पछी हु फरीथी व्रत ग्रहण करीश." तेनी माताए कह्युं के-"हे पुत्र! आवु सयमनु सुख तजीने तुच्छ विषयमां केम आसक्ति करे छे? तो पण जो तारे सयमनी इच्छा न होय, तो मारा वचनथी बार वर्ष सुधी मारी पासे रहीने जिनेश्वरनी वाणी साभळ." आ प्रमाणे पोतानी मातानु वचन साभळीने ते तेटलो वखत रह्यो, अने पोतानी माता (साध्वी) पासे हमेशा वैराग्यमय वाणी साभळवा लाग्यो, परतु तेना मनमां वैराग्यनो लेश पण उत्पन्न थयो नहि.

बार वर्ष पूरां थतां तेणे मातानी पासे रजा मागी, त्यारे तेणे कह्युं के-"हे पुत्र! तुं मारी गुरुणीजी पासे जइने रजा ले." त्यारे तेणे मोटी साध्वी पासे जइने रजा मागी. साध्वीए कह्यु के-"अमारी पासे रहीने बार वर्ष सुधी देशना सांभळ" तेणे कबुल कर्यु, अने तेमनी पासे रहीने अनेक सूत्रना अर्थो साभळ्या, पण काइ प्रतिबोध पाम्यो नहि. अवधि पूरो थता तेणे तेमनी रजा मागी के-"तमारा आग्रहथी घणु कष्ट सहन करीने पण रह्यो छु, माटे हवे हु जइश." ते साभळीने तेमणे कह्युं के-"आपणा उपाध्यायजी गुरु छे, तेनी रजा लइने पछी जा" त्यारे तेणे उपाध्याय पासे जइने रजा मागी. उपाध्याये कह्यु के-"बार वर्ष सुधी अमारी पासे रहीने देशना सांभळ" तेणे ते पण कबुल कर्युं, परतु बोध लाग्यो नहीं. अवधि पूरो थता उपाध्यायनी रजा मागी. त्यारे तेणे कह्यु के-"गच्छना अधिपति सूरि पासे जइने तारी इच्छा निवेदन कर" तेणे तेम कर्युं आचार्ये पण पोतानी पासे बार वर्ष सुधी रहेवानुं कह्यु, एटले ते तेटलो वखत रहीने अनेक प्रकारनी देशना साभळवा

लाग्यो. आ प्रमाणे माता विगेरेना आग्रहथी अडतालीश वर्ष पर्यंत दीक्षानुं पालन कर्युं तो पण विषयथी तेनुं चित्त पराङ्मुख थयुं नहीं. पछी अवधि पूर्ण थतां तेणे सूरिने कह्युं के-" हे स्वामी ! हुं जाउं छुं." ते सांभळीने सावद्य कर्म होवाथी सूरि तो मौनज रह्या. त्यार ते पोतानी मेळे त्यांथी चाल्यो. जती वखते तेनी माताए पूर्व अवस्थामां (गृहस्थीपणामां) आपेलुं रत्नकंबल तथा मुद्रा (वींटी) तेने आपी. ते लइने अने संयमना सर्व चिह्न तजीने ते अनुक्रमे साकेतपुरनी राजसभामां पहोंच्या, त्यां कोइ नर्तकी नृत्य करती हती ते नृत्य जोवामां व्यग्र चित्तवाळा सर्व सभासदो तेने वारंवार धन्यवाद आपता हता, अने ते नर्तकीनी प्रशंसा करता हता. क्षुल्लक पण ते जोइने तेमां तल्लीन थइ गयो. तेवामां नर्तकी घणा वखतथी नाच करवाने लीधे थाकी गयेली होवाथी तेना नेत्र निद्राथी घूर्णायमान थया. ते जोइने तेनी अक्काए संगीतना आलापमां तेने कह्युं के-

" सुट्ठु गाइअं सुट्ठु वाइयं, सुट्ठु नच्चियं सामसुंदरि ।
अणुपालिय दीहराइयं, उसुमिणंते मा पमायए ॥ १ ॥

भावार्थ-" हे सुंदरी ! तें बहु सारुं गायन कर्युं, बहु सारुं वगाड्युं, अने सारी रीते नृत्य कर्युं, एवी रीते घणी रात्री व्यतीत थवा दइने हवे थोडा माटे प्रमाद न कर."

आ प्रमाणे अक्कानुं गायन सांभळीने नर्तकी फरीथी सावधान थइ

अहीं क्षुल्लककुमार ते गाथा सांभळीने बोध पाम्यो. तेथी तेणे ते नर्तकीने पोतानां रत्नकंबलनुं पारितोषिक (इनाम) आप्युं, एटले राजपुत्रे मणिजडित कुंडल आप्यां. मंत्रीए मुद्रारत्न आप्युं. लांबा वखतथी पतिना विरहवाळी कोइ सार्थवाहनी स्त्रीए पोतानो हार आप्यो, अने राजाना महावते अंकुशरत्न इनाममां आप्युं ते दरेक इनाम लक्ष लक्ष मूल्यनां हता, ते जोइने राजाए ते सर्वने पूछ्युं के " मारी अगाउ आ प्रमाणे तुष्टिदान आप्युं तेनुं शुं कारण ? " त्यार प्रथम क्षुल्लक बोल्यो के-" हे राजा ! हुं तमारा नाना भाइनो पुत्र छुं. साठ वर्ष सुधी संयम पाळीने विषयवासनाथी राज्य लेवा माटे हुं तमारी पासे आव्यो हतो, पण आ गाथा सांभळीने में विचार्युं के-" हवे थोडा काळ माटे प्रमाद करवो मने उचित नथी." आवी वैराग्यनी वाचक गाथा पण मने साधकपणे परिणमी, प्रथम गुरुना साधक वचनो पण मने बाधक रूप थतां हतां. हवे हुं चारित्र पाळवामां निश्चळ थवानो, ते कारणथी में मारापर मोटा उपकार करनारी आ नर्तकीने सौथी

प्रथम प्रीतिदान आप्युं. वळी हे राजा ! जो तमे मने पोताना नाना भाइना पुत्र तरीके ओळखवामां संदेह पामता हो, तो ते संदेहने छेदनारी आ नाममुद्रा जुओ ” ते जोइने राजाए क्षुल्लककुमारने कह्युं के-“ आ राज्य ग्रहण कर.” तेणे कह्युं के-“राज्यादिकमां आसक्ति उत्पन्न करनारो मोहरूपी चोर हवे मारा आत्मप्रदेशथी दूर गयो छे, माटे हुं राज्यादिकने शुं करुं ? ”

पछी राजाए पोताना पुत्रने प्रीतिदाननुं कारण पूछ्युं, एटले ते बोल्यो के-“ हे पिता ! राज्यना लोभथी आज काल हुं तमने विषादिकना प्रयोगवडे मारी नाखवाना विचारमां हतो, पण आ गाथा सांभळीने में विचार्युं के-पिता वृद्ध थया छे, माटे हवे तेनुं बहु थोडुं आयुष्य बाकी रह्युं हशे, तेथी मारवा तो नहीं, एम धारीने हुं खुशी थयो तेथी में तेने प्रीतिदान आप्युं ” पछी मंत्रीने पूछतां तेणे कह्युं के- “ हे स्वामी ! तमारा शत्रुओए मने पोताना पक्षमां लीधो हतो, पण आ गाथा सांभळीने हुं तेवां पापकर्मथी निवृत्ति पाम्यो छु.” पतिना विरहवाळी स्त्रीने पूछता ते बोली के-“ हे प्रभु ! आजकाल करतां पतिना विरहमां मे बार वर्ष निर्गमन कर्या, तोपण ते तो आव्या नहीं, तेथी पुरुषनो विरह असह्य लागवाथी हुं आजे परपुरुष सेवीने शीलनो भंग करवा इच्छती हती, ते आ गाथा सांभळवाथी पाछी शियळमां दृढ थइ के—लांबा काळनुं पालन करेलुं शील थोडा वखत माटे मूकवुं नहीं. आ कारणथी में नर्तकीने प्रीतिदान आप्युं छे ” पछी महावतने पूछतां तेणे कह्युं के ‘ हुं आपनी राणी साथे लुब्ध थयेलो छु, आजे आपनो विनाश करवा इच्छतो हतो, पण आ गाथा सांभळीने तेवा पापविचारथी निवृत्त थयो छुं अने तेथी में तुष्टिदान आप्युं छे ”

आ प्रमाणे सर्वना कारणो सांभळीने राजा विगेरे सर्वे हर्ष पाम्या, अने ते सर्वेए क्षुल्लककुमारनी साथे जइ दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे ते स्वर्गादिक गतिने पाम्या.

आ दृष्टांतनो सार ए छे के-“ सविज्ञ साधु विगेरेना मुखथी शुभकारी जिनेंद्रनी वाणी चिरकाळ सुधी सांभळ्या छतां पण क्षुल्लककुमार बोध पाम्यो नहीं, अने काळादिक सामग्री मळवाथी मात्र एकज नर्तकीनी गाथा सांभळीने तत्काळ वैराग्य पाम्यो तेथी पांच कारणो मळे त्यारेज कार्यसिद्धि थाय छे ”

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य द्वात्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३२ ॥

रह्यो पछी राजाए सूरिमहाराजने कह्युं के–"हे स्वामी ! जळचर प्राणी पण धर्मक्रियानी इच्छा करे छे, ते मोटुं आश्चर्य छे" गुरु बोल्या के–"हे राजा ! धर्म अने गुणहीन मनुष्यनो भव सर्व जीवो करता अति नीच छे. ते विषे विद्वानजनी वाणीना विलासी कविओना वचनो सांभळो–

येषां न विद्या न तपो न दानं
न चापि शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥ १ ॥

भावार्थ–"जे मनुष्योमां विद्या, तप, दान, शील, गुण अने धर्म नथी तेओ आ मृत्युलोकमां पृथ्वीना भाररूप थइने मनुष्यने रूपे मृग चरे छे एम समजवुं."

आ प्रमाणे विद्वानना मुखथी नीकळेला वचन सांभळीने एक मृग गर्व सहित बोल्यो के–"निंदित मनुष्यने अमारी उपमा केम आपो छो? केमके अमे तो घणा गुणवान छीए.

गीते शीर्षं जने मांसं, त्वचं च ब्रह्मचारिणे ।
शृंगं योगीश्वरे दद्मो, मृगस्त्रीषु सुलोचने ॥ १ ॥

भावार्थ–"गीतने माटे माथुं, माणसने मांस, ब्रह्मचारीने चर्म, योगीने शींगडां अने स्त्रीओने माटे नेत्र आपीए छीए." वळी–

दूर्वांकुरतृणाहारा, धन्यास्ते च वने मृगाः ।
विभवोन्मत्तमूर्खाणां, न पश्यन्ति मुखानि यत् ॥२॥

भावार्थ–"दूर्वाना अंकुर अने तृणनुं भक्षण करनारा मृगो वनमां रहेता होवाथी वैभवथी उन्मत्त थयेला मूर्खोना मुख जोता नथी, माटे तेमने धन्य छे"

अयि कुरंग कुरंगमविक्रमे
त्यज वनं जवनं गमनं कुरु ।
इह वने हि वनेचरनायका
रुधिरलोहितलोहितसायका ॥ ३ ॥

भावार्थ—"हे मृग ! आ वनने तुं तजी दे, अने शीघ्रताथी अन्यत्र गमन कर, केमके आ वनमां गायोना लोहीथी जेमणे पोतानां बाणोने रक्त कर्यां छे एवा मोटा पारधीओ आवेला छे."

वसत्यरण्येषु चरंति दूर्वां
पिबंति तोयान्यपरिग्रहाणि ।
तथापि वध्या हरिणा नराणां
को मूर्खमाराधयितुं समर्थः ॥ ४ ॥

भावार्थ—"हरणो वनमां वसे छे, दुर्वा खाय छे, अने कोइनी मालेकी विनाना जळनुं पान करे छे, तो पण तेने जे माणसो मारी नांखे छे तेवा मूर्खने समजाववाने कोण समर्थ छे ?

माटे निर्गुण मनुष्यने अमारी उपमा आपवी योग्य नथी एटले सूरि फरीथी बोल्या के—

येषां न विद्या न तपो न दानं
न चापि शीलं न गुणो न धर्मः ॥
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता
मनुष्यरूपाः पशवश्चरंति ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे मनुष्योमां विद्या, तप, दान, शील, गुण अने धर्म नथी तेओ मृत्युलोकमां पृथ्वीना भाररूप थइने मनुष्यनुं रूप धारण करनारा पशुओ छे."

आ प्रमाणे सांभळीने कोइ गाय बोली के—

तृणमद्मि दुग्धं धवलं, छगणं गेहस्य मण्डनं भवति ।
रोगापहारि मूत्रं, पुच्छं सुरकोटिसंस्थानम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"हुं घास खाउं छुं, पण श्वेत दूध आपुं छुं, मारुं छाण घरनुं भूषण थाय छे, मारुं मूत्र रोगनो नाश करे छे अने मारा पुछडामां कोटी देवताओनुं स्थान छे "

माटे निर्गुण मनुष्यने मारुं गुणीनुं उपमान योग्य नथी. पछी कोइ बळद बोल्यो के—

नास्य जारग्रहे शक्तिर्न च वाहगुणक्रिया ॥
देवागारबलीवर्दस्तथाप्यश्नाति भोजनम् ॥ १ ॥

भावार्थ-"तमे कह्या तेवा निर्गुण मनुष्यमां भारी जेवी भार उपाडवानी शक्ति नथी, वहन करवानो काइ गुण नथी, तोपण महादेवना पोठीआनी जेम ते बेठो बेठो भोजन करे छे." अने हुं तो

गुरुशकटधुरंधरस्तृणाशी
समविषमेषु च लांगलापकर्षी ।
जगदुपकरणं पवित्रयोनि
र्नरपशुना कथमुपमीयते गवेन्द्र ॥ २ ॥

भावार्थ-"मोटां गाडांनी धुसरीने धारण करुं छुं, घास खाइने जीवुं छुं, सम विषम स्थानमां हळ खेंचुं छुं, एवी रीते जगतनो उपकार करुं छुं वळी मारुं उत्पत्तिस्थान गायरूपी पवित्र छे. माटे नरपशुनी साथे मारी बळदनी उपमा केम आपो छो?"

आ प्रमाणे होवाथी तेवा मनुष्योने पशुनी उपमा पण योग्य नथी वळी आचार्य "येषां न विद्या०" ए श्लोक बोलतां चोथा पदमां "मनुष्यरूपेण तृणोपमाना." एटले "तृण जेवा छे" एम बोल्या. ते सांभळीने तृण बोल्युं के—

गवि दुग्धकरं ग्रीष्मे, वर्षाहिमतयोरपि ।
नृणां त्राणमहं कुर्वे, तत्साम्यं च कथं मम ॥१॥

भावार्थ-"हुं गायने विषे दूध उत्पन्न करुं छुं, अने शियाळामां, उनाळामां, चोमासामां सर्व ऋतुमां मनुष्योनुं रक्षण करुं छुं, तो मने निर्गुण पुरुषनी सरखुं केम कहो छो?" वळी—

रूढस्य सिंधुतटमनुगतस्य तृणस्यापि जन्म कल्याणम् ।
यत्सलिलमज्जदाकुलजनहस्तावलंबनं भवति ॥ २ ॥

भावार्थ-"समुद्रने कांठे उगेला अने नीचे नमेला तृणनो जन्म पण कल्याणकारी छे, केमके जळमां डुबवाथी व्याकुळ थयेला माणसोने ते हस्तना अवलंबनरूप थाय छे."

तथा समरांगणमां मुखने विषे तृण राखवाथी ते माणसने कोइ पण हणतुं नथी. वळी-

यस्यैवाहारयोगाज्जगति सुरचयोऽजाविका वा महिष्य
सर्वा सप्राप्तपूयो वपुरुपचितिका आज्यदध्नो निदानम् ।
क्षीरं लोकाय दद्यु: सकलरसमहायोनिभूत तृणं त-
ज्ज्ञानेऽजानत एते धिगखिलकवयो नीरस वर्णयंति ॥ ३ ॥

भावार्थ-"जे तृणनु भक्षण करवाथी जगतमां गायो, बकरी, घेटी, भेंशो विगेरे सर्वे शरीरमां अति पुष्टि पामीने घी अने दही विगेरेना कारणरूप दूध सर्व माणसोने आपे छे, तेवा समग्र रसना मोटा कारणरूप घासने जाणे पोते तेना गुणथी अजाण्या होय तेम कविओ नीरस तरीके वर्णवे छे, माटे तेवा कविओने धिक्कार हो ! "

पछी फरीथी सूरि तेज श्लोक बोल्या अने छेवटमां-मनुष्यरूपेण वृक्षा भवंति " मनुष्य रूपे करीने वृक्षो रहेला छे" एम बोल्या. त्यारे कोइ वृक्ष मनुष्यभाषाए बोल्यु के-

छायां कुर्मो वय लोके, फलपुष्पाणि दद्महे ।
पक्षिणां च सदाधारं, गृहादीनां च हेतवे ॥ २ ॥

भावार्थ-"अमे सर्वेने छाया करीए छीए, फळ, फूल विगेरे आपीए छीए, अने पक्षीओने घर करवा माटे निरंतर आधार आपीए छीए."

वळी फरीथी युक्तिपूर्वक कहे छे-

छायामन्यस्य कुर्वंति, स्वय तिष्ठंति चातपे ।
फलंति च परार्थे च, नात्महेतोर्महाद्रुमा ॥ २ ॥

भावार्थ-"महावृक्षो अन्यने छाया करे छे अने पोते तापमां रहे छे, तथा परोपकारने माटेज फळे छे, पोताने माटे फळता नथी."

शीष्मग्रीष्मखरांशुतापमसम वर्षांबुतापक्रम
भेदच्छेदमुख कदर्थनमल मर्त्यादिभिर्निर्मितम् ।
सर्वग्रासिदवानलप्रसमरज्वालोत्करालिगन
हंहो वृक्ष सहस्व जैनमुनिवद्यत्त्वं क्षमैकाश्रय: ॥ ३ ॥

भावार्थ—" हे वृक्ष ! तु जैन मु... ...म क्षमानो अद्वितीय आश्रय छे,

माटे ग्रीष्म ऋतुना अत्यत तीक्ष्ण सूर्यना किरणो सहन कर, वर्षा ऋतुना जळथी उत्पन्न थता क्लेशने सहन कर, मनुष्यादिके भेदन, छेदन विगेरे विविध प्रकार करेली कदर्थना सहन कर, तथा सर्वनु भक्षण करनारा दावानळनी प्रकाशित ज्वालासमूहने आलिंगन करवानुं दुःख पण सहन कर."

वृक्षनो आवो उत्तर सांभळीने सूरिए कहुं के-मनुष्यरूपेण हि धूलिपुञ्जाः-गुणरहित मनुष्यो " मनुष्यना रूपे करीने धूळना ढगला छे." ते सांभळीने धूळी बोली के-

कारयामि शिशुक्रीडां, पंकनाशं करोमि च।
मत्तोऽजनि रज पर्व, वर्षे क्षेत्र फलप्रदम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"हु बाळकने क्रीडा करावु छु, पकनो नाश करुं छुं, माराथीज होळीनु पर्व थयु छे, अने मने खेतरमा नाखवाथी सारा पाक थाय छे."

धूलिर्मूलपदार्थसार्थजननी स्तम्भाद्यवष्टंभदा
लेखाश्लेषकरी करीश्वरकरासंगिन्यवश्य प्रिया।
गंधं दूरकरी शिशो सुखकरी कालत्रयेऽपि स्थिरा
तस्माद्धूलिसम न चास्ति किमपि क्षेप्या मुखे पापिनाम् ।२।

भावार्थ—"धूळ सर्व मूळ पदार्थोने उत्पन्न करनारी छे, थांभला विगेरेने आधार आपनारी छे, लखेला लेखने सूकववा माटे तेनो आश्लेष करनारी छे, हाथीनी सुंढनो संग करनारी होवाथी तेने अति प्रिय छे, दुर्गंधने दूर करनारी छे, बाळकने सुख करनारी छे, त्रणे काळने विषे स्थिर रहेनारी छे." माटे धूलि समान कोइ पण नथी. ते पापीओना मुखपर नाखवा योग्य छे.

सूरिए फरीथी तेज श्लोकना चोथा पादमा कह्यु के-मनुष्यरूपा भषणस्वरूपाः। "तेओ मनुष्य रूपे करीने कूतरा जेवा छे" ते सांभळीने कूतरो बोल्यो के-

स्वामिभक्त सुचैतन्य, स्वल्पनिद्र सदोद्यमी।
अल्पसंतोषवानस्मि, तस्मात्तत्तुल्यता कथम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"हु स्वामीनी भक्तिवाळो, सारी चेतनावाळो, स्वल्प निद्रावाळो, निरतर उद्यमी अने थोडाथी सतोषी छुं तेथी तेवा निर्गुण मनुष्यनी सदृश हु शी रीते ?" एनी उपर एक दृष्टांत कहे छे के-

अयोध्या नगरीमां गोविंदचंद्र नामे राजा हतो, तेनो मंत्री आनंद नामनो हतो, ते अति पापीष्ठ हतो. ते लोकोने घणी पीडा करतो हतो, तेथी राजाए तेने मारीने उकरडामां दटाव्यो. तेने खावा माटे ते कुतराए आवी खोदीने काढ्यो. पछी तेमांथी मोटा कुतराए नानाने कह्युं के " एने भक्षण कर मा. " केमके-

हस्तौ दानविवर्जितौ श्रुतिपुटौ सत्यवचोद्रोहिणौ
चक्षु साधुविलोकनेन रहित पादौ न तीर्थाध्वगौ।
लंचालुंचितवित्तपूर्णमुदरं गर्वेण तुंगं शिरो
भ्रात. कुर्कुर मुंच मुंच सहसा निंद्य वपु सर्वदा ॥ १ ॥

भावार्थ—"तेना हाथ दानथी रहित छे, तेना कान सत्यवचन श्रवण करवामां द्वेषी छे, तेनां नेत्रो साधु पुरुषना दर्शनथी रहित छे, तेना चरण तीर्थमार्गे गया नथी, तेनुं पेट लाचथी लुटी लीधेला द्रव्यथी पूर्ण छे, अने तेनुं मस्तक गर्वथी उचुं छे, माटे हे भाइ कुर्कुर ! सर्वदा निंदवा लायक आ शरीरने तुं जल्दी मूकी दे, मूकी दे."

आवी परीक्षा करवामां चतुर जे कुतरो ते निर्गुण पुरुषनी तुल्य शी रीते थाय ?

पछी प्रवीण सूरिए ते श्लोकना चोथा पादमां कह्युं के-मनुष्यरूपेण खराश्चरंति । " तेओ मनुष्यरूपे गधेडा छे. " ते सांभळीने गर्दभ बोल्यो के-

शीतोष्णं नैव जानामि, भारं सर्वं वहामि च ।
तृणभक्षणसंतुष्ट., प्रत्यहं भद्रकाकृति. ॥ १ ॥

भावार्थ—" हुं शीत के उष्ण काइ जाणतो नथी, सर्व प्रकारनो भार वहन करुं छुं, तृणना भक्षणथी संतोषी छुं, अने निरंतर (भद्रक) भोळी आकृतिवाळो छुं "

" माटे मारी उपमा निर्गुण पुरुषने घटे नहीं. "

फरीथी सूरिए कह्युं के- मनुष्यरूपेण भवंती काकाः । " तेओ मनुष्यरूपे कागडा छे. " त्यारे कागडो बोल्यो के-

प्रिय दूर गत गेहे, प्राप्त जानामि तत्क्षणात ।
न विश्वसामि कस्यापि, काले चालयकारक ॥ १ ॥

भावार्थ—"दूर देश गयला पतिने घेर आवतो जाणीने तुरत कहुं छु, कोईनो विश्वास करतो नथी, अने वर्षाकाळमा माळो बाधीने-रहु छु."

कोइ स्त्रीए कागडाने सोनाना पाजरामा राखेलो जोइ तेनी सखीए पूछयुं के, पोपटने तो सौ पाजरामा राखे छे पण तें आवा कागडाने केम राख्यो छे ? एटले ते बोली-

अत्रस्थ सखि लक्षयोजनगतस्यापि प्रियस्यागम
वेत्त्याख्याति च धिक् शुकादय इमे सर्वे पठत शठाः ।
मत्कांतस्य वियोगतापदहनज्वालावलीचंदन
काकस्तेन गुणेन काचनमये व्यापारीत पञ्जरे ॥२॥

भावार्थ—"हे सखी ! कागडो लाख योजन दूर रहला पतिनु आगमन अहीं बेठो जाणे छे, अने कहे छे. आ पोपट विगेरे सर्वे भण्या छे, पण शठ छे, अने आ कागडो तो मारा पतिना वियोग तापरूपी अग्निनी ज्वालावलीमां चंदन समान छे, माटे ते गुणने लीने मे सुवर्णना पाजरामा तेने राख्यो छे."

फरीथी सूरि कहे छे के-मनुष्यरूपेण हि ताम्रचूडाः । "तेओ मनुष्यरूपे करीने कुकडा छे" ते साभळीने कुकडो कहे छे के-मारा गुण सांभळो—एक कविए मारा विष कह्यु छे के-

भो लोका सुकृतोद्यता भवत त लब्ध्वा भवं मानुष
मोहाधा प्रसरत्प्रमादवशतो माहार्यमाहार्यथा ।
इत्थ सर्वजनप्रबोधमधुरो यामेऽर्धयामे सदा
कृत्वोर्ध्व निजकधर प्रतिदिन कोकूयते कुर्कुट ॥३॥

भावार्थ—'हे लोको ! मनुष्यभव पामीने तमे सत्कृत्य करवामा उद्यमी थाओ,प्रसार पामता प्रमादना वशथी मोहाध थइने मनुष्यभव व्यर्थ हारोनहीं,

आ प्रमाणे सर्व लोकने प्रबोध करवामां निपुण एवो कुकडो हमेशां पहोरे ने अर्धे पहोरे पोतानु मस्तक उचु राखीने बोले छे."

में कु कहेता पृथ्वीमां कु कहेतां खराब (कुत्सित) कु कहेता कर्युं तेथी हु पक्षी थयो, तेना निवारण माटे हु प्रातःकाले "कु कु कु" एवो शब्द करीने सर्वने सुकृत्य करवा जागृत करू छु, तो मारी समान निर्गुण माणस शी रीते ?

फरीथी पडिते कह्यु के-मनुष्यरूपेण चोष्ट्राश्चरति। "तेओ मनुष्यरूपे उट जेवा छे." त्यारे उट बोल्यो के—मारे माटे एक कविए कह्यु छे के-

वपुर्विषमसस्थान, कर्णज्वरकरो रव ।

करभस्याशु गत्यैव, छादिता दोषसततिः ॥ १ ॥

भावार्थ-"शरीर विषम सस्थानवाळु छे, शब्द कर्णने कठोर लागे तेवो छे, तो पण उटनी गति शीघ्र होवाथी तेना दोषनो समूह ढकाइ जाय छे."

माटे हुं उटननी जेम मात्र एक शीघ्रगतिरूप गुणथीज राजाने पण मान्य छु.

ते सांभळी पडिते फरीथी कह्यु के- मनुष्यरूपेण च भस्मतुल्याः "तेओ मनुष्यरूपे राख समान छे." ते सांभळीने राख बोली के-

मूढकमध्ये क्षिप्ता, करोम्यहं सकलधान्यरक्षां प्राक् ।

मानं ददते मनुजा, मुखशुद्धिकरी सुगंधा च ॥ १ ॥

भावार्थ-" मने धान्यना मोटा समूहमा नांखी होय, तो हुं सर्व धान्यनी रक्षा करू छुं, वळी हु मुखने शुद्ध करूं छुं तथा सुगधी छु, माटे मनुष्यो मने मान आपे छे."

फरीथी पंडित बोल्या के-मनुष्यरूपाः खलु मक्षिकाः स्युः " तेओ मनुष्य रूपे करीने माखी जेवा छे." ते सांभळीने माखी कहे छे के-

सर्वेषा हस्तयुक्त्याहं, बोधयामि निरतरम् ।

ये धर्म नो करिष्यंति, ते हस्तौ घर्षयंति वै ॥ १ ॥

भावार्थ-" हु मारा आगळना हाथ घसवानी युक्ति (निशानी) वडे माणसाने हमेशा बोध आपुं छुं के-जेओ मारी पेठे पाम्या छतां धर्म करशे नहीं तेओ हाथ घसता रहेशे."

प्रिय दूर गत गेहे, प्राप्त जानामि तत्क्षणात् ।
न विश्वसामि कस्यापि, काले चालयकारक ॥१॥

भावार्थ—"दूर देश गयेला पतिने घेर आवतो जाणीने तुरत कहुं छुं, कोइनो विश्वास करतो नथी, अने वर्षाकाळमां माळो रचीने रहुं छु."

आइ स्त्रीए कागडाने सोनाना पांजरामां राखेलो जोइ तेनी सखीए पूछयु के, पोपटने तो भले पांजरामां राखे छे पण आ कागडाने केम राख्यो छे? एटले ते बोली—

अत्रस्थ सखि लक्षयोजनगतस्यापि प्रियस्यागम
वेत्याख्याति च धिक् शुकादय इमे सर्वे पठत शठा ।
मत्कांतस्य वियोगतापदहनज्वालावलीचंदन
काकस्तेन गुणेन काचनमये व्यापारीत पञ्जरे ॥१॥

भावार्थ—" हे सखी ! कागडो लाख योजन दूर रहेला पतिनुं आगमन अहीं बेठा जाणे छे, अने कहे छे. आ पोपट विगेरे सर्वे भण्या छे, पण शठ छे, अने आ कागडो तो मारा पतिना वियोग तापरूपी अग्निनी ज्वालावलीमां चंदन समान छे, माटे ते गुणने लीने में सुवर्णना पांजरामां तेने राख्यो छे."

फरीथी सूरि कहे छे के-मनुष्यरूपेण हि ताम्रचूडाः । " तेओ मनुष्यरूप करीने कुकडा छे " ते सांभळीने कुकडो कहे छे के-मारा गुण सांभळो—एक कविए मारा विषे कह्युं छे के—

जो लोका सुकृतोद्यता भवत त लब्ध्वा भवं मानुष
मोहांधा प्रसरत्प्रमादवशतो माहार्यमाहार्यथा ।
इत्थं सर्वजनप्रबोधमधुरो यामेऽर्धयामे सदा
कृत्वोर्ध्वं निजकंधर प्रतिदिन कोकूयते कुर्कुट ॥१॥

भावार्थ—'हे लोको ! मनुष्यभव पामीने तमे सत्कृत्य करवामां उद्यमी थाओ, प्रमाद पामता प्रमादना वशथी मोहांध थइने मनुष्यभव व्यर्थ हारो नहीं,

આ પ્રમાણે સર્વે લોકને પ્રબોધ કરવામાં નિપુણ એવો કુકડો હમેશાં પહોરે ને અહ્ને પહોરે પોતાનુ મસ્તક ઉંચુ રાખીને બોલે છે."

મેં કુ કહેતાં પૃથ્વીમાં કુ કહેતાં ખરાબ (કુત્સિત) કુ કરતાં કર્યું તેથી હુ પક્ષી થયો, તેના નિવારણ માટે હું પ્રાતઃકાળે "કુ કુ કુ" એવો શબ્દ કરીને સર્વને સુકૃત્ય કરવા જાગૃત કરૂ છુ, તો મારી સમાન નિર્ગુણ માણસ શી રીતે ?

ફરીથી પંડિતે કહ્યુ કે-મનુષ્યરૂપેણ ચોષ્ટ્રાશ્ચરતિ । "તેઓ મનુષ્યરૂપે ઉંટ જેવા છે." ત્યારે ઉંટ બોલ્યો કે—મારે માટે એક કવિએ કહ્યુ છે કે-

વપુર્વિષમસંસ્થાનં, કર્ણજ્વરકરો રવઃ ।

કરભસ્યાશુ ગત્યૈવ, છાદિતા દોષસંતતિ ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ-"શરીર વિષમ સંસ્થાનવાળુ છે, શબ્દ કર્ણને કઠોર લાગે તેવો છે, તો પણ ઉંટની ગતિ શીઘ્ર હોવાથી તેના દોષનો સમૂહ ઢંકાઇ જાય છે."

માટે હુ ચંદનની જેમ માત્ર એક શીઘ્રગતિરૂપ ગુણથીજ રાજાને પણ માન્ય છું.

તે સાંભળી પંડિતે ફરીથી કહ્યું કે- મનુષ્યરૂપેણ ચ ભસ્મતુલ્યાઃ "તેઓ મનુષ્યરૂપે રાખ સમાન છે." તે સાંભળીને રાખ બોલી કે-

મૂઢકમધ્યે ક્ષિપ્તા, કરોમ્યહં સકલધાન્યરક્ષાં પ્રાક્ ।

માનં દદતે મનુજા, મુખશુદ્ધિકરી સુગંધા ચ ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ-" મને ધાન્યના મોટા સમૂહમાં નાંખી હોય, તો હું સર્વ ધાન્યની રક્ષા કરૂ છુ, વળી હુ મુખને શુદ્ધ કરૂં છુ તથા સુગંધી છું, માટે મનુષ્યો મને માન આપે છે."

ફરીથી પંડિત બોલ્યા કે-મનુષ્યરૂપાઃ ખલુ મક્ષિકાઃ સ્યુઃ. "તેઓ મનુષ્ય રૂપે કરીને માખી જેવા છે." તે સાંભળીને માખી કહે છે કે-

સર્વેષાં હસ્તયુગ્મ્યાહં, બોધયામિ નિરંતરમ્ ।

યે ધર્મં નો કરિષ્યંતિ, તે હસ્તૌ ઘર્ષયંતિ વૈ ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ-" હુ મારા આગળના હાથ ઘસવાની યુક્તિ (નિશાની) વડે માણસોને હમેશા બોધ આપુ છું કે—જેઓ મારી પઠે પામ્યા છતાં ધર્મ કરશે નહીં તેઓ હાથ ઘસતા રહેશે."

एकदा भोजराजाए सभामां विद्वानोने पूछ्युं के-"माखी पोताना आगळना बे हाथ शामाटे घसे छे?" त्यारे पंडितो बोल्या के-

देयं भोज धनं धनं सुविधिना नो संचितव्यं कदा
श्रीकर्णस्य बलस्य विक्रमनृपस्याद्यापि कीर्तिर्यतः ।
येनेदं बहु पाणिपादयुगलं घृष्यति भो मक्षिका
अस्माकं मधु दानभोगरहितं नष्टं चिरात् संचितम् ॥ १ ॥

भावार्थ-" हे भोज राजा ! मळेल्लं द्रव्यनुं विधिपूर्वक निरंतर दान देवुं पण कदापि द्रव्यनो संग्रह करवो नहीं दानना प्रभावथी कर्ण, बळ अने विक्रम राजानी कीर्ति हजु सुधी जगतमां जागृत छे. आ प्रमाणे कहती एवी माखीओ पोताना हाथपग घसती सती जणावे छे के-" अहो ! अमे घणा काळथी संग्रह करेला मधनो दानभोग न कर्यो तो ते परिणामे नाश पाम्युं."

इत्यादि युक्तिथी श्रीकालिकाचार्ये प्रतिबोध पमाडेला शालिवाहन राजा विगेरे लोको दान शीलादिक धर्ममां तत्पर थया

"सर्व भवमां मनुष्य भव दुर्लभ छे तेमां पण धर्म तथा गुण विगेरेनी प्राप्ति अति दुर्लभ छे आ प्रमाणेना श्री कालिकाचार्यना उपदेशथी प्रतिबोध पामीने शालिवाहन राजा दानादिक गुणोने जाणी, तेने धारण करीने शोभतो थयो."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य त्रयस्त्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३३ ॥

व्याख्यान २३४ मुं.

बाह्यभावथी वांदवानी निष्फळता विषे.

बाह्याचारेण संयुक्त, करोति द्रव्यवंदनम्।
तन्न प्रमाणमायाति, साफल्यं भाववंदनम्॥ १॥

भावार्थ—" बहारना आचार सहित जे द्रव्यवंदन करे छे ते प्रमाण नथी अर्थात् तेनुं फळ नथी, पण भाववंदनज सफळ छे."

आ विषे दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

कोइ एक राजानो पुत्र शीतल नामे हतो. ते बाल्यावस्थाथीज वैराग्यवाळो हतो। एक वखते गुरुने वांदीने ते देशना सामळवा बेठो. ते प्रसंगे गुरुए कह्यु के—"कोइ एक वनमा रहनार तापस लोकना आमत्रणथी गाममा आवीने मासक्षमणनु पारणु करतो हतो, परंतु गाममा कोइ पण स्त्रीनुं मुख जोतो नहीं, तेथी तेनी सन्मुख आवती स्त्रीओने तेनी आगळ चालता छडीदारो दूर खसेडता हता. आ प्रकारनी स्त्रीओनी विडंबना थती सांभळीने कोइ वेश्याए विचार्यु के—"अहो! केवी कपटजाळ! लोकने रंजन करवा माटे केवो दंभ राखे छे?" एम धारीने तेणे तापसने बोध करवानो निश्चय कर्यो पछी एक दिवस ते तापस राजाने घेर पारणु करवा जतो हतो, ते अवसरे तेने पालखीमा बेसीने रस्तामां आवतो जोइने ते वेश्या तेनी सन्मुख चाली तेने सिपाइओए अटकावी, पण ते खसी नहीं, अने तापसनी पासे आवीने तेना माथामा पोतानी आंगळीवडे टकोरा मार्या, तेथी ते गुस्से थयो, अने ते वेश्याने क्रोधदृष्टिथी जोतो, मनमां काइक बडबडतो, अने मुखथी "हरि! हरि! विष्णु! विष्णु!" एम बोलतो स्नान करवा माटे पाछो वळ्यो, केमके "वेश्यानु दर्शन थयु माटे स्नान करवुं जोइए" एवो तेनो आचार हतो. ते सर्व वृत्तांत जाणीने राजाए ते वेश्याने बोलावीने तेम करवानु कारण पूछ्यु. त्यारे वेश्याए कह्यु के—"तापस आवशे त्यारे कहीश." पछी फरीथी स्नान करीने ते तापस राजाने घेर आव्यो अने वेश्या साम्रु न जोता आख मींचीने जमवा लाग्यो. त्यारे वेश्याए कह्यु.—

आख म मीच जम जमन,
नयन नीहाळी जोय,

अप्पइ अप्पा जोयइ,
अवर न बीजो कोय

" आंख मींचीने जपवा माड नहीं, आंख उघाडीने जो, तारा आत्मावड मारा आत्माने जो एटले जणाशे के हुं पण आत्मा ज छुं, बीजु काइ नथी, माटे फोगट दंभ कर नहीं "

आ प्रमाणे सांभळीने ते तापस बोध पाम्यो, तथा बीजा राजा विगेरे सर्व लोक पण बोध पाम्या माटे हे शीतल कुमार ! आत्मानुं दमन करवुं तेज श्रेष्ठ धर्म छे." इत्यादि देशना सांभळीने शीतलकुमारे बोध पामी दीक्षा लीधी अने बे प्रकारनी शिक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे आचार्य थया.

शीतल कुमारने गुणवती नामे एक व्हेन हती. ते पृथ्वीपुरना प्रियंकर नामना राजाने परणावी हती. तेने चार पुत्रो थया हता. सुता, उठता, बेसता, जमतां वगेरे दरेक वखते तेओनी पासे गुणवती पोताना भाइ शीतल मुनिनी वारंवार प्रशंसा करती अने कहती के-" दुनियामां तमारो मामोज धन्य छे, के जेणे मुनिपणु अंगीकार कर्युं छे " तेवुं सांभळीने ते चार जण कामभोगथकी विरम्या, अने कोइ स्थविर मुनि पासे दीक्षा लीधी अनुक्रमे ते चारे बहुश्रुत थया पछी तेओ गुरुनी रजा लइने पोताना मामा शीतलाचार्यने वांदवा चाल्या. चालतां चालता मामाना चरणकमळथी पवित्र थयेला नगर नजीक आवी पहोंच्या तेवामां रात्रीनो समय थइ गयो, एटले गामनी बहार कोइ देवकुळमाज रात्री रह्या, अने गाममां जता एक श्रावकनी साथे तेमणे मामाने कहवराव्युं के-" तमारी बेनना पुत्रो दीक्षित थइने तमोने वांदवा आव्या छे, पण दिवस वीती जवाथी गाममां प्रवेश कर्यो नथी " एवुं सांभळीने शीतलाचार्य हर्ष पाम्या. ते चारे मुनिओने रात्रीमां शुभ अध्यवसायथी केवळज्ञान उत्पन्न थयु अहीं प्रातःकाळे आचार्य तेओनी राह जोइने बेठा, अने चोतरफ जोवा लाग्या पण तेओ तो आव्या नही, एटले थोडी वार राह जोइने पछी शीतलाचार्य पोतेज उठीने गाम बहार आव्या तेने जोइने केवळी मुनिओ वीतराग थयेला होवाथी उभा थया नहीं के सत्कार पण कर्यो नहीं, एटले आचार्य गमनागमन आलोवीने अर्थात् इर्यावही पडिकमीने बोल्या के-" प्रथम कोने नमु अने वांदु ?" तेओ बोल्या के-" जेम तमारी इच्छा." ते सांभळी सूरिए विचार्युं के-" अहो ! आ शिष्यो

---

१ प्रहणा ने आसेवना

केवा गुरु छे? जरा लाजता पण नथी." एम विचारीने क्रोधथी चार मुनिने वांदीने वांदणा दीधां, पण केवलीओ तो पट्स्थानमां रहेला कषायकंडकवडे ते वांदे छे एम जाणता हता. तेना वांदी रह्या पछी ज्ञानीए आचार्यने कह्युं के–"तमे कषायकंडकनी वृद्धिवडे द्रव्यथी वंदन कर्युं, हवे भावथी वंदन करो." ते सांभळीने सूरि बोल्या के–" द्रव्यवंदन तथा भाववंदन केम जाण्युं ? अने कषायकंडकनी वृद्धि शी रीते जाणी ? शुं कांइ अतिशय ज्ञान पाम्या छो ?" केवलीए "हा" कही, एटले सूरिए फरीथी पूछ्युं के–" छाद्मस्थिक ज्ञान के केवलज्ञान ?" त्यारे तेओए जवाब आप्यो के–"सादि अनंत भांगे केवलज्ञान" ते सांभळीने आचार्य हर्षथी रोमांचित थया छता विचार करवा लाग्या के–"अहो ! में मंदभाग्यवाळाए सर्वदर्शी सर्वज्ञनी आशातना करी." एम विचारीने संवेग पाम्या, अने भावपूर्वक वंदना करता तेज कषायकंडक स्थानथी पाछा फर्या, ते अपूर्वकरण नामना गुणस्थानकमां पेठा अने क्षपकश्रेणी मांडी केवलज्ञानना भाजन थया. गुरुने वांदवानी विधि श्रीगुरुवंदन भाष्यमां बतावी छे ते आ प्रमाणे–

पण नाम पणाहरणा, अजुग्ग पण जुग्ग पण चउ अदाया ॥
चउ दाया पण निसेहा, चउ अणिसेहट्ठ कारणया ॥ १ ॥

भावार्थ–"१ वंदनना पांच नाम छे, २ तेनी उपर पांच उदाहरण छे, ३ पांच वांदवाने अयोग्य छे, ४ पांच वांदवा योग्य छे, ५ चार वांदणा आपे नहीं, ६ चार वांदणा आपे, ७ पांच वखते वांदवानो निषेध छे, ८ चार वखते अनिषिद्ध छे, ९ वांदवामां आठ कारण छे–"

आवस्सय मुहणंतय, तणु पेह पणिस दोस बत्तीसा ।
छ गुण गुरु ठवण दुग्गह, दुछवीसक्खर गुरु पणिसा ॥ २ ॥

भावार्थ–" १० वांदवामां पचवीश आवश्यक जाळववाना छे, ११ पचवीश मुहपत्तीनी पडिलेहण छे, १२ पचवीश शरीरनी पडिलेहण छे, १३ उपरांत बत्रीश दोष, १४ छ गुण, १५ आचार्यनी स्थापना, १६ बे प्रकारना अवग्रह, १७ वांदणामां वसे ने छवीश अक्षर तेमां पचवीश गुरु अक्षर–"

१ आ षट्स्थान पडकादिना विस्तार आवश्यकवृत्तिना टीकाथी जाणवा अनुभाग बंधना विचारमां तेनो अधिकार छे.

श्रेष्ठीए पोताना घरमांथी नीकळेलो सर्प नांख्यो हतो. "ते घडामां सुवर्णना अलंकारो हशे" एम धारीने ते क्षत्रियो रात्रिमा चोरवृत्तिथी तेना घरमां पेसी ते घडो लइ गया. पछी घडो उघाडीने तेमा हाथ नाख्यो, एटले सर्पना करडवाथी अनुक्रमे तेओ सर्व मरी गया माटे हे शिष्य! ते क्षत्रियो ज्ञान विज्ञान रहित हता तेथी समज्या नहीं के आम छता घडामा अलंकार होय नहीं, तेथी तेओ दुःखी थया." आ दृष्टांतनो सार ए छे के-"पढम नाण तओ दया" एटले "प्रथम ज्ञान अने पछी दया" इत्यादि युक्तिपूर्वक दृष्टिप्रतिलेखनादि सर्व क्रिया ज्ञान विज्ञानवडेज फळीभूत थाय छे " वळी गुरु कहे छे के-

यादृशं तादृशं वापि, पठितं न निरर्थकम् ।
यदि विज्ञानमभ्येति, तदेव फलति ध्रुवम् ॥ १ ॥

भावार्थ-"गमे तेवु अध्ययन कर्युं होय ते निरर्थक थतु नथी, परंतु ज्यारे विज्ञानयुक्त थाय छे त्यारज तेनु फळ मळे छे." ते उपर दृष्टान्त-

"एक राजा हतो ते जे कोइ नवी कविता करी लावे तेने पांचसो दिनार इनाम आपतो एकदा एक सरोवरने काठे कोइ मूर्ख ब्राह्मणे बे बळद बांध्या हता त्या पाणी पीवा माटे एक मोटो मदोन्मत्त आखलो आव्यो ते पाणी पीता पीता पगवडे पृथ्वी खोतरतो हतो. ते जोइने ब्राह्मणे एक कविता करी के-'घसे घसे ने अति घसे, उपर घाले पाणी, जीणे कारण ए घसे प्रसावे, ते वात मे जाणी' एटले 'मारा बळदने मारवानी तारी इच्छा छे, ए वात मे जाणी' पछी ते ब्राह्मण ते कविता लइने राजा पासे गयो राजाए तेने पांचसो सोनामहोर आपी. ते लइने हर्ष पामतो ब्राह्मण घेर गयो पछी आवो राजानो खर्च नहीं सहन थवाथी मंत्रीए राजपुत्रनी संमतिथी राजाने मारी नाखवा माटे एक हजामने मोकल्यो ते हजाम दाढी मुडवाना मिषथी राजा पासे गयो, अने राजाना कळमा सजायो मारवाना विचारथी ते हजाम सजायाने तीक्ष्ण करवा माटे पथ्थरपर पाणी नाखीने पुष्कळ घसवा लाग्यो ते वखते काळ निर्गमन करवा माटे राजा पोताना हाथथी भींतपर लखेली पेला ब्राह्मणवाळी कविता बोल्यो. ते सांभळीने अर्थना प्रगटपणाथी हजामे विचार्यु के-"राजाए मारो हेतु जाणी लीधो." एटले ते हजाम भयथी राजाना पगमा पडीने बोल्यो के-"हे

स्वामी! आमा मारो दोष नथी. पण तमारा पुत्रे तथा प्रधाने मने एम करवा कह्यु छे." ते सांभळीने राजाए आश्चर्य पामी सर्व वृत्तांत हजाम पासेथी जाणी लीधु. पछी हजामने अभयदान आपीने पोते मोनज रह्यो. अनुक्रमे प्रधानने तथा पुत्रने योग्य शिक्षा करीने निर्भय थयो."

आ प्रमाणे एक साधारण कविताथी पण राजा मरतां बच्यो. हे शिष्य! आ दृष्टांतनो सार ए छे के-साधुओए गमे तेवु वाक्य सांभळ्यु होय अथवा अध्ययन कर्यु होय पण तेनो उपयोग स्याद्वाद मार्गे करवो, तेथी तेनु सर्व भणेलुं गुणकारी थाय छे

वळी हे शिष्य! विद्या तो अवश्य ग्रहण करवी. विद्या विना वखते आपदा मुझावुं पडे छे. ते उपर एक दृष्टांत साभळ-

"कोइ एक दरिद्री पुरुष द्रव्य उपार्जन करवा माटे विविध उपाय करतो पृथ्वीपर भटकतो हतो, पण काइ मेळवी शक्यो नहोतो एक दिवस कोइ विद्यासिद्ध पुरुष हाथमा एक घडो राखी तेनी पूजा करीने बोल्यो के-"हे कुंभ! शय्या, भोजन, स्त्री इत्यादि सर्व सामग्री सहित एक महेल बनाव." ते साभळीने ते कामकुंभे सर्व करी दीधु. पछी प्रातःकाळे ते सर्वनो उपसंहार करी दीधो. ते बधु जोइने पेला दरिद्री ब्राह्मणे विचार्यु के-"मारे बीजो निष्फळ उद्यम शा माटे करवो जोइए? आ विद्यासिद्धनीज सेवा करु, तो सर्व दारिद्र्यनो नाश थशे." एम विचारीने ते सिद्धनी विविध प्रकारनी सेवा करीने तेने प्रसन्न कर्यो. एटले एक दिवस सिद्धे कह्यु के-"तारी शी इच्छा छे?" त्यारे ब्राह्मणे पोतानी दरिद्री अवस्था जणावी. ते सांभळीने सिद्धे विचार्यु के-

व्रत सत्पुरुषाणा च, दीनादीनामुपक्रिया ।
तदस्योपकृति कृत्वा, करोमि सफल जनु ॥ १ ॥

भावार्थ-"दीन पुरुषोनो उपकार करवो तेज सत्पुरुषोनुं व्रत छे, माटे आ ब्राह्मणनो उपकार करीने मारो जन्म हु सफळ करु"

एम विचारीने ते सिद्धे ब्राह्मणने कह्यु के-"विद्याथी साधेलो कुभ आपु के विद्या आपुं?" ते सांभळीने विद्या साधवामा बीकण अने कामभोग मेळववामा उत्सुक एवा ते ब्राह्मणे कह्यु के-"विद्याथी साधेलो कुंभज आपो." एटले सिद्धे तेने कामकुंभ आप्यो ते लइने दरिद्री जलदीथी पोताना गाममा

श्रेष्ठीए पोताना घरमांथी नीकळेलो सर्प नांख्यो हतो. " ते घडामां सुवर्णना अलंकारो हशे " एम धारीने ते क्षत्रियो रात्रिना चोरवृत्तिथी तेना घरमां पेसी ते घडो लइ गया. पछी जंगले जइने तमा द्वार नाख्यो, एटले सर्पना करडवाथी अनुक्रमे तेओ सर्व मरी गया. माटे हे शिष्य ! ते क्षत्रियो ज्ञान विज्ञान रहित हता तेथी समज्या नहीं के आम छता घडामा अलंकार होय नहीं, तेथी तेओ दुःखी थया." आ दृष्टांतनो सार ए छे के-"पढम नाण तओ दया" एटले "प्रथम ज्ञान अने पछी दया" इत्यादि युक्तिपूर्वक दृष्टिपडिलेहणादि सर्व क्रिया ज्ञान विज्ञानवडेज फळीभूत थाय छे " फरी गुरुए कह्यु के-

यादृश तादृश चापि, पठित न निरर्थकम् ।
यदि विज्ञानमन्वेति, तदेव फलति ध्रुवम् ॥ १ ॥

भावार्थ-" गमे तेवु अध्ययन कर्यु होय त निरर्थक थतु नथी, परतु ज्यारे विज्ञानयुक्त थाय छे त्यारज तेनु फळ मळे छे. " ते उपर दृष्टांत-

"एक राजा हतो. ते जे कोइ नवी कविता करी लावे तेने पाचसो दिनार इनाम आपतो एकदा एक सरोवरने काठे कोइ मूर्ख ब्राह्मणे ये नळ्द धाया हता त्या पाणी पीवा माटे एक मोटो मदोन्मत्त आखलो आव्यो ते पाणी पीता पीता पगवडे पृथ्वी खोदतो हतो. ते जोइने ब्राह्मणे एक कविता करी के-'घसे घसे ने अति घसे, उपर घाले पाणी. जीणे कारण ए घसे घसावे, ते वात में जाणी ' एटले 'मारा नळ्दने मारवानी तारी इच्छा छे, ए वात में जाणी.' पछी ते ब्राह्मण ते कविता लइने राजा पासे गयो राजाए तेने पाचसो सोनामहोर आपी. ते लइने हर्ष पामतो ब्राह्मण घेर गयो पछी आवो राजानो खर्च नहीं सहन थवाथी मंत्रीए राजपुत्रनी सम्मतिथी राजाने मारी नांखवा माटे एक हजामने मोकल्यो. ते हजाम दाढी मुडवाना मिषथी राजा पासे गयो, अने राजाना कठमा सजायो मारवाना विचारथी ते हजाम सजायाने तीक्ष्ण करवा माटे पथ्थरपर पाणी नाखीने गुरु घसवा लाग्यो ते वखते काळ निर्गमन करवा माटे राजा पोताना हाथथी भींतपर लखेली पेला ब्राह्मणवाळी कविता बोल्यो. ते साभळीने अर्थना अप्रगटपणाथी हजामे विचार्यु के-" राजाए मारो हेतु जाणी लीधो. " एटले ते हजाम भयथी राजाना पगमा पडीने बोल्यो के-" हे

स्वामी ! आमां मारो दोष नथी. पण तमारा पुत्रे तथा प्रधाने मने एम करवा कह्यु छे." ते सांभळीने राजाए आश्चर्य पामी सर्व वृत्तांत हजाम पासेथी जाणी लीधुं. पछी हजामने अभयदान आपीने पोते मौनज रह्यो. अनुक्रमे प्रधानने तथा पुत्रने योग्य शिक्षा करीने निर्भय थयो."

आ प्रमाणे एक साधारण कविताथी पण राजा मरतां बच्यो. हे शिष्य ! आ दृष्टांतनो सार ए छे के–साधुओए गमे तेवु वाक्य साभळ्यु होय अथवा अध्ययन कर्युं होय पण तेनो उपयोग स्याद्वाद मार्गे करवो, तेथी तेनु सर्व भणेलु गुणकारी थाय छे.

वळी हे शिष्य ! विद्या तो अवश्य ग्रहण करवी. विद्या विना वखत आवे मुंझावु पडे छे. ते उपर एक दृष्टांत साभळ–

"कोइ एक दरिद्री पुरुष द्रव्य उपार्जन करवा माटे विविध उपाय करतो पृथ्वीपर भटकतो हतो, पण काइ मेळवी शक्यो नहोतो एक दिवस कोइ विद्यासिद्ध पुरुष हाथमां एक घडो राखी तेनी पूजा करीने बोल्यो के–"हे कुंभ ! शय्या, भोजन, स्त्री इत्यादि सर्व सामग्री सहित एक महेल बनाव." ते साभळीने ते कामकुंभे सर्व करी दीधु. पछी प्रातःकाळे ते सर्वनो उपसंहार करी दीधो. ते बधु जोइने पेला दरिद्री ब्राह्मणे विचार्युं के–"मारे बीजो निष्फळ उद्यम शा माटे करवो जोइए ? आ विद्यासिद्धनीज सेवा करु, तो सर्व दारिद्र्यनो नाश थशे." एम विचारीने ते सिद्धनी विविध प्रकारनी सेवा करीने तेने प्रसन्न कर्यो. एटले एक दिवस सिद्धे कह्यु के–"तारी शी इच्छा छे ?" त्यारे ब्राह्मणे पोतानी दरिद्री अवस्था जणावी. ते साभळीने सिद्धे विचार्युं के–

व्रत सत्पुरुषाणा च, दीनादीनामुपक्रिया ।
तदस्योपकृति कृत्वा, करोमि सफल जनु. ॥ १ ॥

भावार्थ–"दीन पुरुषोनो उपकार करवो तेज सत्पुरुषोनुं व्रत छे, माटे आ ब्राह्मणनो उपकार करीने मारो जन्म हु सफळ करु "

एम विचारीने ते सिद्धे ब्राह्मणने कह्यु के–"विद्याथी साधेलो कुंभ आपु के विद्या आपु ?" ते साभळीने विद्या साधवाना बोजाथी अने कामभोग मेळववामा उत्सुक थवा ते ब्राह्मणे कह्यु के–"विद्याथी साधेलो कुंभज आपो." एटले सिद्धे तेने कामकुंभ आप्यो ते लइने दरिद्री जल्दीथी पोताना गाममां

गयो. कुंभना प्रभावथी घर विगेरे मनोरथ प्रमाणे करीने ते स्त्र्यादि कुटुंब सहित स्वच्छंदपणे भोग भोगववा लाग्यो तेना भाइओ कोइ खेतीनु काम करता हता, कोइ पशु चारवानु काम करता हता, अने कोइ व्यापार करता हता. ते सर्व धंधा छोडी दइ सर्व थइने भोग भोगववा लाग्या. एक दिवस सुरापान करीने ते ब्राह्मण खांध उपर कुंभ राखी नृत्य करवा लाग्यो. उद्धताइने लीधे तेना हाथमांथी कुंभ छुटी गयो, अने पृथ्वीपर पडी तेना सेंकडो कटका थइ गया ते साथे ते निर्भागीना मनोरथ पण भग्न थइ गया एटले के कुंभना प्रभावथी उत्पन्न थयेली घर विगेरे सर्व वैभव इंद्रजाळथी बनावेला नगरनी जेम तत्काळ अदृश्य थइ गयो, अने पोतानी पासे विद्या नहीं होवाथी तेवो नवीन कुंभ करवानी तेनी शक्ति नहोती, तेथी ते नवो कुंभ करी न शक्यो अने पाछो सदा दरिद्रीपणाथी व्याकुळ रह्यो. "

हे शिष्य ! आ दृष्टांतनो सार ए छे के-" ज्ञान विनानी सर्व क्रियाओ निष्फळ छे. आ ब्राह्मणे प्रमादथी विद्या ग्रहण करी नहीं, तेथी ते मंदबुद्धिवाळो आ लोकमांज दुःख पाम्यो, तेम बीजा माणसो पण ज्ञान विना अनेक क्रियाओ करे, तो पण ते अशुद्धज थाय छे."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य पंचत्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३५ ॥

तामलि तापसनो वृत्तांत एवो छे के–तामलिप्ती नामनी नगरीमां तामलि नामे एक श्रेष्ठी रहतो हतो तेने एक दिवस रात्रिजागरिका करता लौकिक वैराग्य उत्पन्न थयो तेणे विचार्यु के–"हु पूर्व जन्मना पुण्यथी आ भवमा पुत्र, स्त्री, धन, धान्य, राज्यसत्कार विगेरे अनेक सुख भोगवु छु. जन्मथी आरंभीने कोइ वखत एक श्वासोच्छ्वास पण में दुःखे लीधो नथी.तेथी हवे प्रात काळे स्वजनोने भोजन विगेरेथी संतुष्ट करी मोटा पुत्रने गृहकार्यनो भार सोंपीने सर्वनी रजा लइ काष्ठनु पात्र हाथमा राखीने तापसी दीक्षा ग्रहण करीश. पछी हाथ उचा राखीने सूर्य सन्मुख दृष्टि करी उभो रहीश, जावज्जीव छठ्ठ तप करीश. पारणाने दिवसे ते काष्ठपात्र लइने तामलिप्ती नगरीमां उच नीच अने मध्यम घर कुळमां भिक्षा माटे अटन करीश, दाळ तथा शाक रहित मात्र भात जेवु हविष्यान्न लइने ते अन्नने एकवीश वार जळवडे धोइ तेने नीरस करीने पछी हुं ते अन्न खाइश." इत्यादि विचार करीने प्रातःकाळ थता तेणे रात्रीनु चिंतवेलु सर्व कार्य कर्यु,अने पोतानी उदरपूर्ति थाय तेवडु काष्ठनु एक पात्र कराव्यु. तेमा चार खाना पडाव्यां. तेनी अदर आवेल अन्नमांथी त्रण भाग दानमा आपी चोथा भागवडे पारणु करवानो निरधार कर्यो, अने अव्यक्त लिंगने तेमज सर्वने प्रणाम करवाना व्रतने अंगीकार करीने ते नदीनी पासे आश्रम करीने तेमा रह्यो. पछी इद्र, शकर, राजा, कागडो, कूतरो, चाडाळ विगेरे जेने देखे तेने प्रणाम करवा लाग्यो. षष्ठ तपने पारणे नगरीमां अटन करीने ते पात्र भरी लावी तेमा मळेला अन्नमांथी एक भाग जळचर प्राणीने, एक भाग स्थळचर प्राणीने अने एक भाग खेचर प्राणीने (पक्षीने) एम त्रण भाग आपीने चोथा भागने एकवीश वार जळथी धोइ तेनावडे सतोषथी उदरपूर्त्ति करवा लाग्यो. आ प्रमाणे तेणे साठ हजार वर्ष सुधी तप कर्यु. तेथी ते बाळतपस्वी (अज्ञान तपस्वी) नो देह तद्दन शुष्क थइ गयो अने अस्थि पण देखाय नहीं तेवो थयो एकदा तेणे रात्रिजागरिका करता विचार्यु के–"हु मात्र जीवना बळथी गमनागमन करुं छुं, शरीरनु बळ बिल्कुल नथी, माटे आ शरीरने प्रभाते वोसरावी दउ." एम विचारीने प्रातःकाळे ईशान खूणामां पोताना देहप्रमाण मंडळ आळेखीने तेमा अनशन करी आत्म ध्यान करतो रह्यो

हवे ते अवसरे बलिचचा राजधानीनो इंद्र[1] चव्यो. एटले त्यां रहेनारा देव अने देवीओए विचार्यु के–"आपणे सर्वे दुष्कर तप करनार तामलि नामना बाळ तपस्वी पासे जइए,अने तेने अनेक प्रकारना सुखादिकथी लोभ पमाडीने ते आपणा इद्र थाय तेवुं नियाणु करावीए." पछी ते देवताओ अने देवीओ तामलि तापस पासे आव्या.तेमणे तेनी पासे बत्रीश प्रकारनुं नाटक कर्यु. पछी त्रण प्रदक्षिणा दइ

१ भुवनपति असुरकुमारना इद्र बलींद्र

इत्थी सव्वे पराजूया, पराहीणाइदुक्खिया।
कोवि पन्ते नरो होह, नियाणं तु चतुत्थय ॥ १ ॥

भावार्थ—"सर्व स्त्रीओ पराभव, पराधीनता विगेरे दुःखवाळी होय छे, माटे पुरुषपणु पामवु सारु छे. आ प्रमाणे जे विचार ते चोथु निदान जाणवु.(४)"

मनुष्यना कामभोग अपवित्र छे. मूत्र विष्टादियी दुर्गंधवाळा छे, माटे देवपणु सारु छे, कमके ते देवो पोतानी तथा बीजानी देवीओ भोगवे छे वळी पोतेज इच्छानुसार देवदेवीना रूप विकुर्वीने तेनी साथे भोग भोगवे छे, माटे हु पण तेवो थाउ. आ प्रमाणे जे नियाणु करे ते पांचमु परप्रविचार नियाणु कहवाय छे (५)

जे देवो बीजी देवीओने भोगवे ते पण वरु छे, परतु पोताना रूपने ज देवदेवी रूपे विकुर्वीने जेओ भोग भोगवे छे ते ठीक छे, माटे हुं तेवो थाउ. एवु जे निदान करे ते स्वप्रविचार नामे छहु नियाणु जाणवु. (६)

देव अने मनुष्यना कामभोगथकी वैराग्य पामीने कोइ एवु चिंतवे के-"हु विषय रहित अल्प विकारवाळो देव थाउ" एवु निदान करीने ते तेवो थाय, पण ते त्याथी च्यवीने मनुष्य थाय त्यारे देशविरति पामे नहीं (७)

कामभोगथी उद्वेग पामीने कोइ एवु निदान करे के-"द्रव्यवान पुरुषने राजा, चोर, अग्नि विगेरेथी महाभय होय छे, माटे हु अल्प आरंभवाळा दरिद्रीना कुळमा उत्पन्न थाउ. ते आठमु नियाणु समजवु. (८)

वळी कोइ एवु निदान करे के-"मुनिने दान आपवामा प्रीतिवाळो अने बार व्रतने पालन करनार एवो श्रावक हु थाउ."ते नवमु नियाणुं जाणवु. आ नियाणावाळो देशविरति पामे पण सर्वविरति पामे नहीं (९)

आ प्रमाणे नव नियाणानु स्वरूप जाणीने केटलाएक नमिराजर्षि जेवा उत्तम पुरुषो, इन्द्रादिना के देवादिकना अनेक प्रकारना सुखथी लोभ पमाड्या छतां पण नियाणु करता नथी. श्रीमहावीरस्वामीए सगम देवताना करेला अनुकूळ उपसर्गथी पण नियाणु कर्यु नहीं, अने नंदिषेण मुनिए नियाणु कर्यु, तेथी ते वसुदेवनो जन्म पाम्या अने अनेक स्त्रीओना स्वामी थया.[१] वळी कोइक जीव समकित रहित होय छता पण तामलि तापसनी जेम नियाणु करतो नथी. ते

[१] वसुदेव तक य वासुदेवना पिता, तमने ७२००० स्त्रीओ हती

तामलि तापसनो वृत्तांत एवो छे के–तामलिप्ती नामनी नगरीमां तामलि नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने एक दिवस रात्रिजागरिका करतां लौकिक वैराग्य उत्पन्न थयो तेणे विचार्युं के–"हुं पूर्व जन्मना पुण्यथी आ भवमां पुत्र, स्त्री, धन, धान्य, राज्यसत्कार विगेरे अनेक सुख भोगवुं छुं. जन्मथी आरभीने कोइ वखत एक श्वासोच्छ्वास पण में दुःखे लीधो नथी. तेथी हवे प्रातःकाळे स्वजनोने भोजन विगेरेथी संतुष्ट करी मोटा पुत्रने गृहकार्यनो भार सोंपीने सर्वनी रजा लइ काष्ठनुं पात्र हाथमां राखीने तापसी दीक्षा ग्रहण करीश. पछी हाथ उंचा राखीने सूर्य सन्मुख दृष्टि करी उभो रहीश, जावज्जीव छट्ठ तप करीश. पारणाने दिवसे ते काष्ठपात्र लइने तामलिप्ती नगरीमां उंच, नीच अने मध्यम सर्व कुलमां भिक्षा माटे अटन करीश, दाळ तथा शाक रहित मात्र भात जेवुं हविष्यान्न लइने ते अन्नने एकवीश वार जळवडे धोइ तेने नीरस करीने पछी हुं ते अन्न खाइश." इत्यादि विचार करीने प्रातःकाळ थतां तेणे रात्रीनुं चिंतवेलु सर्व कार्य कर्युं, अने पोतानी उदरपूर्ति थाय तेवडुं काष्ठनुं एक पात्र कराव्युं. तेमां चार खाना पडाव्या. तेनी अंदर आवेल अन्नमांथी त्रण भाग दानमां आपी चोथा भागवडे पारणुं करवानो निरधार कर्यो; अने अव्यक्त लिंगने तेमज सर्वने प्रणाम करवाना व्रतने अंगीकार करीने ते नदीनी पासे आश्रम करीने तेमां रह्यो. पछी इंद्र, शंकर, राजा, कागडो, कूतरो, चांडाल विगेरे जेने देखे तेने प्रणाम करवा लाग्यो. छट्ठ तपने पारणे नगरीमां अटन करीने ते पात्र भरी लावी तेमां मळेलां अन्नमांथी एक भाग जळचर प्राणीने, एक भाग स्थळचर प्राणीने अने एक भाग खेचर प्राणीने (पक्षीने) एम त्रण भाग आपीने चोथा भागने एकवीश वार जळथी धोइ तेनावडे संतोषथी उदरपूर्त्ति करवा लाग्यो. आ प्रमाणे तेणे साठ हजार वर्ष सुधी तप कर्युं. तेथी ते बालतपस्वी (अज्ञान तपस्वी) नो देह तद्दन शुष्क थइ गयो अने अस्थि पण देखाय नहीं तेवो थयो एकदा तेणे रात्रिजागरिका करतां विचार्युं के–" हुं मात्र जीवना बळथी गमनागमन करुं छुं, शरीरनुं बळ बिल्कुल नथी, माटे आ शरीरने प्रभाते वोसरावी दउं." एम विचारीने प्रातःकाळे ईशान खूणामां पोताना देहप्रमाण मंडल आळेखीने तेमां अनशन करी आत्मध्यान करतो रह्यो.

हवे ते अवसरे बलिचंचा राजधानीनो इंद्र[1] च्यव्यो. एटले त्यां रहेनारा देव अने देवीओए विचार्युं के–"आपणे सर्वे दुष्कर तप करनार तामलि नामना बाळ तपस्वी पासे जइए, अने तेने अनेक प्रकारना सुखादिकथी लोभ पमाडीने ते आपणा इंद्र थाय तेवुं नियाणुं करावीए." पछी ते देवताओ अने देवीओ तामलि तापस पासे आव्या. तेमणे तेनी पासे बत्रीश प्रकारनुं नाटक कर्युं. पछी त्रण प्रदक्षिणा दइ

१ भुवनपति असुरकुमारना इंद्र बलींद्र

नमस्कार करीने तेओए कयु के-"हे स्वामी! अमारी राजधानी प्राप्त करवा माटे नियाणु करो, जेथी अमारु इंद्रपणु पामीने अमारी साथे दिव्य भोग भोगवो." आ प्रमाणे देवोए तेने लोभ पमाड्या छतां पण तेणे तेमनु वचन अंगीकार कर्यु नहीं. अने ते देवो थाकीने पोताने स्थाने गया. तामलि तापस पण बे मासनी सलेखना एटले १२० भक्तपाननना त्यागरूप अनशनवडे मृत्यु पामीने ईशानेंद्र थयो. आटलु बधु कष्ट कर्या छतां पण अल्प कषाय तथा अनुकंपाना परिणाम होवाथी ते मात्र वैमानिक देवपणु पाम्यो आ तामलि तापस विषे बीजा चरित्र ग्रंथमां एवुं साभळ्यु छे के-"तामलि तापसे पोतानी अत्यावस्थामां एक साधुने जोया हता, तेने जोइने तेना गुणनी प्रशसा तेणे मनमा करी हती. तेथी ते सम्यक्त्व पामेल होवाथी इंद्रपद पाम्यो" केटलाएक एम कहे छे के-"स्वर्गमां उत्पन्न थया पछी शाश्वता जिनबिंबनु दर्शन करवाथी इंद्रपद सबंधी समकित पाम्यो हतो" तत्त्व बहुश्रुत जाणे. आ तामलि तापसनुं दृष्टांत श्री भगवती सूत्रमा कहेलु छे. वृद्धो एम कहे छे के-

तामलि तणे तवेण, जिणमय सिज्झे सत्त जणे ।
अन्नाण दोसेण, तामलि ईसाणे गयो ॥ १ ॥

"तामलि तापसना जेटली तपस्याए करीने जैनमत प्रमाणे सात जीव सिद्धिपद पामे (तेटलो तेणे तप कर्यो हतो), पण अज्ञानना दोषथी ते ईशानेंद्र थयो."

श्रीउपदेशमाळामा कह्युं छे के-

सट्ठि वाससहस्सा, तिसत्तगुत्तोदयेण धोएण ।
अणुचिन्न तामलिणा, अन्नाणतवत्ति अप्पफलो ॥ २ ॥

भावार्थ—"तामलि तापसे साठ हजार वर्ष सुधी एकवीश वार जळथी धोइने अन्न खाधु, अने महा तप कर्यु, पण ते अज्ञान तप होवाथी तेने तेनु अल्प फळ मळ्यु."

पृथ्वीकाय आदि छकाय जीवोनो वध करनारा अने सर्वज्ञना शासनथी पराङ्मुख एवा बाळतपस्वीओ घणो तपक्लेश करता छता पण अल्प फळ पामे छे.

"मिथ्यादृष्टि छता पण तामलिए तपस्याना फळनु नियाणु कर्यु नहीं, ए आ वृत्तांतनु तात्पर्य छे. माटे मुनिओए मुक्तिना अमूल्य सुखने आपनार तपस्यानुं नियाणु करीने तेने अल्पमूल्य करवुं नहीं."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य षट्त्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंध ॥ २३६ ॥

व्याख्यान २३७ मुं.

उपदेश माटे अयोग्य चार प्रकारना मनुष्यो विषे.
प्रथम अत्यंत रागी पुरुष उपदेशने अयोग्य छे. ते कहे छे-

यस्मिन् वस्तुनि सजातो, रागो यस्य नरस्य सः ।
तदीयाननु दोषांश्च, गुणतयैव पश्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे पुरुषने जे वस्तुमां राग उत्पन्न थयो होय छे ते माणस तेना दोषने पण गुणरूपेज देखे छे. "

आ विषे दृष्टांत नीचे प्रमाणे-

मगध देशमा एक शहेरनी अदर नंदन नामनो एक कोटवाळ हतो. तेने आद्यश्री अने द्वितीयश्री नामे बे स्त्रीओ हती. तेमां द्वितीयश्री उपर ते आसक्त हतो, तेथी ते तेनेज घेर रहेतो एक दिवस ते परदेश जइने आव्यो अने आद्यश्रीने घेर गयो. आद्यश्रीए घणा हर्षथी शाक, पक्वान्न विगेरे उत्तम भोजन बनावी तेने जमवा बेसाड्यो, पण ते उत्तम भोजन तेने स्वादिष्ट लाग्युं नहीं, तेथी ते मनमां बोल्यो के-" आमां शु खाशु ? " पछी तेणे आद्यश्रीने कह्युं के-" द्वितीयश्रीने घेरथी तेणे कांइ रांध्युं होय तेमांथी शाक, पापड विगेरे लइ आव. " तेथी आद्यश्रीए शोकनी पासे जइने पतिमाटे शाक माग्युं तेणे कह्युं के " आजे कांइ रांध्युंज नथी तो शाक क्यांथी होय ? " आद्यश्रीए आवीने ते वात नंदनने कही तेणे फरीथी कह्युं के-" खातां कांइ वध्युं होय ते मागी लाव. " तेणे फरीथी जइने माग्यु त्यारे द्वितीयश्रीए कह्युं के-" वधेलुं हतुं ते चाकरने आपी दीधु, माटे कांइ पण नथी. " ते वात पण आद्यश्रीए पोताना स्वामीने कही. त्यारे ते नंदने फरीथी कह्युं के-" तेना घेरथी कांइ कांजी जेवुं गमे ते पण लाव." ते सांभळीने आद्यश्रीने क्रोध चड्यो. तेथी तेणे बहार जइ तरतनु करेलु वाछडानु छाण लइ तेमां चणानो आटो, पाणी, मसाळो विगेरे नांखी तेने कांइक जेवु करीने लावी, अने कह्यु के-" आ तेने घेरथी लावी छु. " ते खातो खातो तळाटी बोल्यो के-'अहो! घणु स्वादिष्ट छे केवो ते स्त्रीनो गुण छे ? ' विगेरे तेनी प्रशंसा करी. आ कोटवाळ नवी स्त्रीनो रागी हतो, तेथी ते गुणदोषना विवेकथी रहित हतो. आवीज रीते जे कोइ असत्य

नमस्कार करीने तेओए कयुं के-"हे स्वामी! अमारी राजधानी प्राप्त करवा माटे नियाणु करो, जेथी अमारु इंद्रपणुं पामीने अमारी साथे दिव्य भोग भोगवो." आ प्रमाणे देवोए तेने क्षोभ पमाड्या छता पण तेणे तेमनु वचन अंगीकार कर्यु नहीं. अंते ते देवो थाकीने पोताने स्थाने गया. तामलि तापस पण बे मासनी संलेखना एटले १२० भक्तपानना त्यागरूप अनशनवडे मृत्यु पामीने ईशानेंद्र थयो. आटलु बधु कष्ट कर्या छता पण अल्प कषाय तथा अनुकंपाना परिणाम होवाथी ते मात्र वैमानिक देवपणु पाम्यो आ तामलि तापस विषे बीजा चरित्र प्रथमां एवु साभळ्यु छे के-"तामलि तापसे पोतानी अत्यावस्थामां एक साधुने जोया हता, तेने जोइने तेना गुणनी प्रशसा तेणे मनमां करी हती. तेथी ते सम्यक्त्व पामेल होवाथी इंद्रपद पाम्यो." कटलाएक एम कहे छे के-"स्वर्गमा उत्पन्न थया पछी शाश्वता जिनबिंबनुं दर्शन करवाथी इंद्रपद सबंधी समकित पाम्यो हतो" तत्त्व बहुश्रुत जाणे. आ तामलि तापसनुं दृष्टांत श्री भगवती सूत्रमां कहेलु छे. वृद्धो एम कहे छे के-

तामलि तणे तवेण, जिणमय सिज्झे सत्त जणो ।
अन्नाण दोसेण, तामलि ईसाणे गयो ॥ १ ॥

"तामलि तापसना जेटली तपस्याए करीने जैनमत प्रमाणे सात जीव सिद्धिपद पामे (तेटलो तेणे तप कर्यो हतो), पण अज्ञानना दोषथी ते ईशानेंद्र थयो."

श्रीउपदेशमाळामा कह्यु छे के-

सट्ठिं वाससहस्सा, तिसत्तगुत्तोदयेण धोएण ।
अणुचिन्न तामलिणा, अन्नाणतवत्ति अप्पफलो ॥ २ ॥

भावार्थ—"तामलि तापसे साठ हजार वर्ष सुधी एकवीश वार जळथी धोइने अन्न खाधु, अने महा तप कर्यु, पण ते अज्ञान तप होवाथी तेने तेनु अल्प फळ मळ्यु."

पृथ्वीकाय आदि छकाय जीवोनो वध करनारा अने सर्वज्ञना शासनथी पराङ्मुख एवा बालतपस्वीओ घणो तपक्लेश करवा छतां पण अल्प फळ पामे छे.

"मिथ्यादृष्टि छता पण तामलिए तपस्याना फळनु नियाणु कर्यु नहीं, ए आ दृष्टांतनु तात्पर्य छे. माटे मुनिओए मुक्तिना अमूल्य सुखने आपनार तपस्यानुं नियाणु करीने तेने अल्पमूल्य करवुं नहीं."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य षट्त्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३६ ॥

जवुं पडे छे, माटे युद्धनी वात छोडी दइ आ टुंकी मागणी कबुल कर." इत्यादि घणी रीते बोध करवा छतां पण दुर्योधन समज्यो नहीं, अने उलटो कृष्णने पण बांधी लेवा विचार कर्यो.

आवीज रीते अमनी बाबतमां पण द्वेषी माणसने उपदेश करतां उलटो ते अनर्थ करवा तत्पर थाय छे. आ विषयमां भद्रबाहु स्वामी प्रत्ये वराहमिहिर, जमालि[1], बोटिक, सहस्रमल्ल[2] अने मंखलिपुत्र[3] विगेरेनां दृष्टांतो जाणवां. (२)

हवे त्रीजो मूढ माणस उपदेशने अयोग्य छे ते कहे छे-

अज्ञानोपहतचित्तः, कार्याकार्याविचारकः ।
मूढः स एव विज्ञेयो, वस्तुतत्त्वमवेक्षकः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेनुं चित्त अज्ञानथी हणायेलुं छे अने जे कार्य तथा अकार्यनो विचार करी शकतो नथी तेनेज मूढ जाणवो, केमके ते वस्तुतत्त्वने जाणतो नथी."

आ विषे दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

कोइ एक गाममां एक विधवा स्त्री दुःखथी दिवसो निर्गमन करती हती. तेने एक पुत्र हतो. ते युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे तेणे तेनी माने पूछयुं के-"हे मा! मारा पिताने शी आजीविका हती ?" ते बोली के "हे पुत्र! तारा पिताने राजानी नोकरी हती." पुत्र बोल्यो के-"हुं पण राजसेवा करुं." माताए कह्युं के-"हे पुत्र! राजसेवा अति दुष्कर छे अने ते अति विनयपूर्वक कराय छे." पुत्रे पूछ्युं के-"विनय केवी रीते कराय?" माताए कह्युं के-"जे कोइने देखीए तेने जुहार करवो, अने नम्र वृत्तिथी वर्तवुं." ते सांभळीने "हुं तेवी रीते करीश" एम अंगीकार करीने ते राजसेवा करवा माटे चाल्यो रस्तामां हरणो जता हता, तेमने मारवा माटे वृक्षनां मूळमां संताइने अने धनुष्य पर तीर चडावीने बेठेला पाराधिओ तेणे जोया तेमने तेणे दूरथीज मोटो शब्द करीने जुहार कर्यो. ते शब्द सांभळीने त्रास पामेला मृगो नासी गया. तेथी पाराधिओए तेने मारीने बांध्यो, एटले तेणे कह्युं के-"मारी माए मने शीखव्युं छे के-जेने देखे तेने जुहार करवो." ते सांभळीने "आ भोळो माणस छे" एम जाणी तेओए तेने छोडी दीधो, अने शिखामण आपी के-"आवी रीते कोइ संताइने बेठा होय,

१ भगवतना जमाइ-पहेला निन्हव २ दिगबर मतस्थापक ३ गोशाळो

धर्मना रागी होय ते गुणदोषना विवेकथी अज्ञात होय छे. तेथी ते धर्म पामतो नथी. कह्युं छे के-

मिथ्यात्वपंकमलिनो, ह्यात्मा विपरीतदर्शनो भवति ।
श्रद्धत्ते न च धर्म, मधुरमपि रस यथा ज्वरित ॥१॥

"मिथ्यात्वरूपी पंकथी मलिन एवो आत्मा विपरीत श्रद्धावाळो होय छे, तेथी जेम ज्वरवाळा माणसने मधुर रस रुचतो नथी, तेम तेने सद्धर्म उपर रुचि थती नथी." (१)

२ हवे जे अत्यंत द्वेषी होय ते पण धर्म पामतो नथी ते विषे कहे छे-

यो यस्मिन् द्वेषमापन्न , क्रोधमानातिरेकवान् ।
स लुप्यते गुणांस्तस्य, दोषान् प्रादुष्करोत्यथ ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे माणस क्रोध अथवा मानना अतिरेकपणाथी जेना उपर द्वेष पाम्यो होय, ते तेना गुणनो नाश करीने दोषनेज प्रगट करे छे."

ते उपर दृष्टांत नीचे प्रमाणे-

पांडवोना वनवासना तेर वर्ष संपूर्ण थया पछी तेमने कौरवो साथे परिणामे दुःखदायी एवो क्लेश थवानो संभव जाणीने श्रीकृष्णे दुर्योधन पासे जइने पांडवोनो संदेशो कह्यो के—

इन्द्रप्रस्थ यवप्रस्थ, माकंदीं वरुणावतम् ।
देहि मे चतुरो ग्रामान्, पंचमं हस्तिनापुरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"इंद्रप्रस्थ, यवप्रस्थ, माकंदी, वरुणावत अने पांचमुं हस्तिनापुर ए पांच गामो मने आप, अने बाकीनुं तमाम राज्य तुं भोगव." आ प्रमाणेनो संदेशो सांभळीने दुर्योधन बोल्यो के—

सूच्यग्रेण सुतीक्ष्णेन, या सा भिद्येत मेदिनी ।
तदर्धं तु न दास्यामि, विना युद्धेन केशव ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे कृष्ण ! अति तीक्ष्ण सोयना अग्रभागथी जेटली पृथ्वी भेदाय तेथी अर्धी पृथ्वी पण हुं युद्ध कर्या विना आपीश नहीं."

कृष्णे फरीथी कह्युं के-"हे दुर्योधन ! युद्ध करवाथी कुळनो क्षय थाय छे, तेम छतां पण जय थाय के पराजय थाय ते संदेह भरेलुं छे, अने परभवमां नरके

जवुं पडे छे, माटे युद्धनी वात छोडी दइ आ टुकी मागणी कबुल कर." इत्यादि घणी रीते बोध करवा छतां पण दुर्योधन समज्यो नहीं, अने उलटो कृष्णने पण बांधी लेवा विचार कर्यो.

आवीज रीते धर्मनी वातमां पण द्वेषी माणसने उपदेश करतां उलटो ते अनर्थ करवा तत्पर थाय छे. आ विषयमा भद्रबाहु स्वामी प्रत्ये वराहमिहिर, जमालि[1], बोटिक, सहस्रमल्ल[2] अने मंखलिपुत्र[3] विगेरेनां दृष्टांतो जाणवा. (२)

हवे त्रीजो मूढ माणस उपदेशने अयोग्य छे ते कहे छे–

अज्ञानोपहतचित्त, कार्याकार्याविचारक ।
मूढ. स एव विज्ञेयो, वस्तुतत्त्वमवेतृकः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेनु चित्त अज्ञानथी हणायेलु छे अने जे कार्य तथा अकार्यनो विचार करी शकतो नथी तेनेज मूढ जाणवो, केमके ते वस्तुतत्त्वने जाणतो नथी."

आ विषे दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

कोइ एक गाममां एक विधवा स्त्री दुःखथी दिवसो निर्गमन करती हती. तेने एक पुत्र हतो. ते युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे तेणे तेनी माने पूछ्युं के–"हे मा! मारा पिताने शी आजीविका हती?" ते बोली के "हे पुत्र! तारा पिताने राजानी नोकरी हती." पुत्र बोल्यो के–"हुं पण राजसेवा करु." माताए कह्युं के–"हे पुत्र! राजसेवा अति दुष्कर छे अने ते अति विनयपूर्वक कराय छे." पुत्रे पूछ्युं के–"विनय केवी रीते कराय?" माताए कह्यु के–" जे कोइने देखीए तेने जुहार करवो, अने नम्र वृत्तिथी वर्तवु." ते सांभळीने "हु तेवी रीते करीश", एम अंगीकार करीने ते राजसेवा करवा माटे चाल्यो रस्तामां हरणो जता हता, तेमने मारवा माटे वृक्षनां मूळमा संताइने अने धनुष्य पर तीर चडावीने बेठेला पारधिओ तेणे जोया तेमने तेणे दूरथीज मोटो शब्द करीने जुहार कर्यो. ते शब्द सांभळीने त्रास पामेला मृगो नासी गया. तेथी पारधिओए तेने मारीने बांध्यो, एटले तेणे कह्यु के–"मारी माए मने शीखव्यु छे के–जेने देखे तेने जुहार करवो." ते सांभळीने "आ भोळो माणस छे" एम जाणी तेओए तेने छोडी दीधो, अने शिखामण आपी के–"आवी रीते कोइ संताइने बेठा होय,

[1] भगवंतना जमाइ–पहेला निह्नव [2] दिगंबर मतस्थापक [3] गोशाळो

त्यारे धीरे धीरे मौन राखीने ते तरफ जवु." ते प्रमाणे अंगीकार करीने ते आगळ चाल्यो. आगळ जता तेणे लुगडां धोता धोबी जोया. तेमनां वस्त्रो हमेशां कोइ चोरलोको चोरी जता हता, तेथी ते दिवसे ते धोबीओ चोरनी शोध करवा माटे हाथमां लाकडीओ राखीने गुप्त रीते बेठा हता, तेमने सतायेला जोइने ते बोल्या विना मनाशो मनाशो शरीरने नीचु नमावीने धीरे धीरे आव्यो आवी चौरवृत्तिथी तेने आवतो जोइने "आज चोर छे" एम मानीने तेने मारीने बांध्यो. पछी सत्य वात कहवाथी छोड्यो, अने शिखामण आपी के-"आवी रीते कोइ ठेकाणे जोइए त्यारे 'अहीं उस खार पडो, चोख्खु थाओ.' ए प्रमाणे बोलवु." ते वाक्य पण अंगीकार करीने आगळ जतां कोइक गाममा ते दिवस प्रथम हळ खेडवानु मुहूर्त हतु. तेनी बहु मगळपूर्वक क्रिया थती हती. त्यां जइने ते "अहीं उस खार पडो, चोख्खु थाओ" ए प्रमाणे बोल्यो, एटले त्यां पण तेने मारीने बांध्यो. पछी सत्य वात कहेवाथी छोड्यो, अने शीखव्यु के-"आवी रीते जोइने एम बोलवु के-अहीं गाडा भराओ, घणु थाओ, हमेशा आवु थाओ." ते पण तेणे अंगीकार कर्युं पछी कोइ ठेकाणे कोइ मडदाने गाम बहार लइ जता हता, ते वखते ते उपर प्रमाणे बोल्यो, एटले त्यां पण तेने बांध्यो पछी सत्य वात कहेवाथी तेने छोडी दइने शिखामण आपी के-"आवु ज्यां जुए त्यां एम कहेवु के-कोइ पण वखत तमारे आवु न थाओ, न थाओ" ते पण अंगीकार करीने ते वचन कोइक स्थानके विवाहना प्रसगमा बोल्यो, एटले त्यां पण तेने बांध्यो अने सत्य वात कहवाथी छोडी दइने शिखामण आपी. आ प्रमाणे ठेकाणे ठेकाणे ते कदर्थना पाम्यो. पछी एक दिवस ते एक निर्धन ठाकोर (क्षत्रिय) नी नोकरी करवा रह्यो. तेने घेर एक दिवस छाशमा राब रांधी हती, ते वखते ठाकोरनी स्त्रीए ठाकोरने तेडवा मोकलता घणा लोकोनी सभामा बेठेला ठाकोर पासे आवीने ते मोटेथी बोल्यो के-"हे ठाकोर! चालो, राब टाढी थइ जाय छे, पछी खवाशे नहीं, माटे राणीए मने तेडवा मोकल्यो छे" ते सांभळीने ठाकोर लज्जा पामीने घेर गयो पछी तेने घणो मारीने शीखव्यु के-"आवी रीते पोकार करीने घरनु काम कहवुं नहीं, परतु वस्त्रथी मुख ढांकीने कान पासे आवीने धीमे धीमे कहेवु" पछी एक वखत ते ठाकोरना घरमा आग लागी. ते वखते सभामां बेठेला ठाकोर पासे ते धीरे धीरे गयो, अने मुख आडु वस्त्र राखीने कानमां धीरथी कह्यु, ते सांभळीने ठाकोर एकदम घर तरफ दोड्या, तेटलामा तो

घर चली गयुं. पछी अति क्रोधथी तेने घणो मार्यो, अने शीखव्युं के-"हे मूर्ख ! प्रथम धूमाडो नीकळे तेज वखते तेना उपर पाणी, धूळ, राख विगेरे नांखीने उंचे स्वरे पोकार करवो जोइए " त्यारे ते बोल्यो के-" हवेथी तेम करीश." पछी कोइएक वखत ठाकोर स्नान करीने अग्नि पासे तापवा बेठा हता, ते वखते ठाकोरना लुगडानी उपर धूमाडो नीकळतो जोयो, के तरतज तेणे राखनी भरेली थाळी उपाडीने तेना पर नांखी. पछी धूळ पाणी विगेरे नाखवा लाग्यो, अने मोटा शब्दथी पोकार करवा लाग्यो. एटले " आ तद्दन अयोग्य छे " एम धारीने ठाकोरे तेने काढी मूक्यो.

आ दृष्टांत प्रमाणे श्रोता अथवा शिष्य गुरुवचनना परमार्थने न जाणे तेने उपदेशने अयोग्य जाणवो. (३)

हवे धूर्त माणसे समजावेलो माणस पण उपदेशने अयोग्य छे, ते कहे छे-

वस्त्ववस्तुपरीक्षायां, धूर्तव्युद्ग्राहणावशात् ।
अक्षमो कुग्रहाविष्टो, हास्यः स्याद् गोपवन्नरः ॥१॥

भावार्थ-" धूर्त माणसे अवळुं समजाववाथी कदाग्रही थयेलो माणस वस्तु अने अवस्तुनी परीक्षा करवामां असमर्थ थाय छे, अने गोवाळनी जेम ते हास्यने पात्र थाय छे."

राजपुर नगरमां एक गोवाळ रहतो हतो. तेणे गायो चारीने घणुं धन मेळव्युं हतुं. एक दिवस तेना मित्र सोनीए तेने कह्यु के-" तारा धननु एक सुवर्णनुं कडुं बीजा कोइ सोनी पासे कराव." ते गोवाळे कह्यु के-" तुज करी आप."सोनी बोल्यो के-"प्रीतिने नाश करवामां मूळ कारण पैसो छे.कह्युं छे के-

यदीच्छेद्विपुलां प्रीतिं, तत्र त्रीणि निवारयेत् ।
विवादमर्थसंबन्धं, परोक्षे दारजल्पनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"जो प्रीति वधारवानी इच्छा होय तो मित्रनी साथे वादविवाद, द्रव्यना संबंध अने परोक्षमां तेनी स्त्री साथे वातचीत ए त्रणनो त्याग करवो."

'माटे लोको आपणी प्रीतिनो भंग करावशे." ते साभळीने गोवाळ बोल्यो के-" हुं कडांनी परीक्षा करावीश मारु चित्त स्थिर हशे तो लोको शु करवाना हता ?" पछी ते सोनीए एक सुवर्णनु अने एक पीतळनुं एम बे एक सरखाज कडा कर्या. तेमां प्रथम ते गोवाळने सोनानु कडुं आप्यु. ते लइने तेणे गाममा बीजानी

दुकाने परीक्षा करावी परीक्षके-"आ कडुं सोनानुं छे, अने तेनी आटली किंमत छे, एम कह्यु एटले ते गोवाळनी खातरी थइ पछी ते सोनीए तेने ओपवा माटे माग्युं; एटले गोवाळे तेने आप्युं, सोनीए पीतळनुं कडुं ओपीने तेने आप्युं. मूढ गोवाळे ते फेरफार जाण्यो नहीं, अने पोताना घरमा जइने मूक्युं. पछी कोइ वखत काम पड्ये तेणे कोइ नाणावटीओने बताव्युं ते जोइने तेओए "पीतळनुं छे" एम कह्युं. त्यारे गोवाळ बोल्यो के-"तमेज असत्य बोलनारा छो. प्रथम तमेज आने सत्य कह्युं हतुं अने आजे खोटुं कहो छो, माटे मारा मित्रनो आमा कांइ पण दोष नथी" (४)

आ दृष्टांतनुं तात्पर्य ए छे के-जेम आ गोवाळने प्रथमथीज अवळे रस्ते समजाव्यो हतो, तेथी ते योग्यायोग्यने जाणी शक्यो नहीं, तेमज जेने आडुं अवळुं समजावीने कुमत ग्रहण कराव्यो होय ते माणस पण सिद्धांतना सत्य तत्त्वने जाणी शकतो नथी

"आ प्रमाणे उपदेश सभळाववामां आवा चार प्रकारना पुरुषने अयोग्य कह्या छे, माटे तेने छोडीने बीजाने सिद्धांत श्रवण कराववुं"

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तम्भे
सप्तत्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २३७॥

व्याख्यान २३८ मुं.

कदाग्रही विषे

स्याद्वादयुक्तितो बोधं, न प्राप्तवान् स निर्गुणः ।
विद्वन्मरालसङ्घेभ्यो, बाह्यं कार्यं गुणात्मभिः ॥ १ ॥

भावार्थ-"जे स्याद्वादनी युक्तिथी बोध पामतो नथी-तेने निर्गुण जाणवो, तेने डाह्या पुरुषोए विद्वानोरूपी हंसना समूहमांथी बहार करवो." ते उपर दृष्टांत कहे छे—

"दशपुर नामना नगरमां तोसलीपुत्र आचार्यना शिष्य आर्यरक्षित

सूरि हता तेओ वज्रस्वामी आचार्य पासे कांइक अधिक नव पूर्व भण्या हता. तेमणे शिष्योने अल्पबुद्धिवाळा जाणीने अनुक्रमे जुदा जुदा अनुयोगमां आगमोने[1] स्थापन कर्या तथा सीमंधरस्वामीना वचनथी निगोदसंबंधी प्रश्न करवा माटे देवेंद्र तेमनी पासे आव्या हता अने यथार्थ निगोदनुं स्वरुप सांभळीने तेणे तेमने नमस्कार कर्यो हतो. ते सूरि एकदा विहार करता करतां दशपुर नगरे आव्या हता. ते वखते मथुरानगरीमां कोइ नास्तिकवादी उत्पन्न थयो, तेनी सामे प्रतिवादी तरीके कोइ नहीं होवाथी सर्व संघे एकठा थइने विचार कर्यो के–" हालना समयमां आर्यरक्षित सूरि युगप्रधान छे." एम धारीने आ वृत्तांत तेमने कहेवा माटे साधुना संघाटकने एटले बे साधुने तेमनी पासे मोकल्या. साधुओए जइने सर्व वृत्तांत तेमने कह्यो, परंतु सूरि वृद्ध होवाथी पोते जवाने अशक्त हता तेथी वादलब्धिने धारण करनारा गोष्ठामाहिल नामना मुनिने तेमणे मोकल्या. ते गोष्ठामाहिले त्यां जइने वादीनो पराजय कर्यो पछी त्यांना श्रावकोए गोष्ठामाहिलने विनति करीने चातुर्मास राख्या अहीं आर्यरक्षित सूरिए पोताना आयुष्यनो अंत पासे आवेलो जाणीने विचार्युं के–" योग्य शिष्यनेज गणधर (सूरि) पद आपवुं जोइए. कह्युं छे के–

> वुड्ढो गणहर सद्दो, गोयममाईहि धीरपुरिसेहिं ।
> जो तं ठवइ अपत्ते, जाणंतो सो महापावो ॥ १ ॥

भावार्थ–गौतम आदि धीर पुरुषोए वहन करेलो गणधर शब्द जाणतो सतो तेने जे अपात्रमां स्थापन करे ते महापापी कहेवाय. "

" हवे गणधरपदने योग्य तो दुर्बलिका पुष्पमित्र मुनिज छे, अने बीजा सर्व साधुओ मारा मामा गोष्ठामाहिलने अथवा मारा नाना भाइ फल्गुरक्षितने चाहे छे." एम विचारीने आचार्ये सर्व संघने बोलावीने कह्युं के–"त्रण प्रकारनां घडा होय छे तेमां एक वालनो, बीजो तेलनो अने त्रीजो घीनो छे. तेने उंधा वाळीए तो वालना घडामांथी सर्व वाल नीकळी जाय, तेलना घडामांथी कांइक तेल घडाने वळगी रहे, अने घीना घडामां घी वधारे वळगी रहे. तेवीज रीते हुं सूत्र तथा तेना अर्थना विषयमां दुर्बलिका पुष्पमित्र पासे वालना घडारूप थयो छुं; केमके मारामां रहेलो समग्र सूत्रार्थ तेणे ग्रहण कर्यो छे, फल्गुरक्षित पासे

1 केटलाकमां द्रव्यानुयोग प्रधान राख्यो, केटलाकमां गणितानुयोग प्रधान राख्यो, केटलाकमां धर्मकथानुयोग प्रधान राख्यो, ने केटलाकमां चरणकरणानुयोगनी प्रधानता राखी आम चारे अनुयोगमां आगमोनी वहेंचण करी नाखी

तेलना घडा समान थयो छु, केमके सर्व सूत्रार्थ तेणे ग्रहण कर्यो नथी, अने गोष्ठामाहिल पासे तो हु घीना घडा जेवो थयो छु, केमके घणो सूत्रार्थ मारी पासेज रही गयो छे. माटे दुर्बलिका पुष्पमित्रज तमारा सूरि थाओ." ते सांभळीने सर्वे सघे "इच्छाम" (इच्छीए छीए) एम कहीने ते कबुल कर्यु. पछी सूरि साधु तथा श्रावक बन्ने पक्षने योग्य अनुशासन (शिक्षा) आपीने अनशन ग्रहण करी स्वर्गे गया. ते सर्व वृत्तात गोष्ठामाहिले साभळ्यो, एटले ते मथुराथी त्यां आव्या, अने पूछयु के-"सूरिए पोताने स्थाने कोने स्थाप्या ?" ते सांभळीने सर्वेए वाल विगेरेना घडाना दृष्टात पूर्वक सर्व वृत्तात कह्यो, तेथी ते अति खेद पाम्या, अने जूदा उपाश्रयमा रहीने सूरिनी निंदा करवा लाग्या. तेमज साधुओने अवळु समजाववा माड्युं, अने कह्युं के-"तमे वालना घडा जेवा आचार्यनी पासे केम श्रुतनो अभ्यास करो छो ?"

एक दिवस दुर्बलिका पुष्पमित्र सूरिना शिष्य विन्ध्य नामना मुनि कर्मप्रवाद नामना पूर्वनी आवृत्ति करता हता, तेमा एवो विषय हतो के-"जीवना प्रदेश साथे बद्ध थयेलु कर्म जेनो बध मात्र थाय छे एटले कषाय रहित (केवली) मुनिने ईर्यापथिकी सबधी जे कर्म बधाय छे ते बद्ध कहवाय छे. ते कर्म कालांतर स्थितिने पाम्या विनाज सुकी भींतपर नाखेली मुठीनी मुठीनी जेम जीवना प्रदेशथी जुदुं पडे छे

हवे जीवना प्रदेशोए पोतानु करी लीधेलु जे कर्म ते बद्धस्पृष्ट कहेवाय छे तेवु कर्म आर्द्र भींतपर नाखेला भीना चूर्णनी जेम कालातरे नाश पामे छे, अने अति गाढ अध्यवसायथी बाधेलु कर्म के जे अपवर्तनादि करणने अयोग्य होवाथी निकाचित कहेवाय छे ते कर्म अति गाढ बधवाळु होवाथी आर्द्र भींत उपर आकरा कळीचुनानो या सफेतानो हाथ दीधो होय तेनी जेम कालातरे पण विपाकथी भोगव्या विना माये करीने क्षय पामतु नथी आ त्रणे प्रकारनो[1] बध समजवा माटे सोयना समूहनुं दृष्टात छे,ते आ प्रमाणे-दोरो वींटेला सोयना समूह जेवु बद्ध कर्म जाणवु, लोढानी पाटीथी बाधेला सोयना समूह जेवुं स्पृष्ट बद्ध कर्म जाणवु अने अग्निथी तपावी हथोडावती टीपीने एकत्र करेला सोयना समूह जेवु बद्ध स्पृष्ट निकाचित कर्म जाणवुं. अहीं कोइने शका थाय के-"निकाचित तथा अनिकाचित कर्ममा शो तफावत ?" तो तेनो उत्तर कहे छे के-"कर्मना संबधमा श्रीकम्मपयडी ग्रथमा अपवर्तनादिक आठ करण कहेला छे, ते सर्वे करण अनिकाचित कर्ममाज प्रवर्ते छे, अने निकाचित कर्ममा तो तेनुं फळ

१ प्रतिक्रमण हेतु ग्रथमां स्पृष्ट, बद्ध, निधत्त ने निकाचित एम चार भेद कहेला छे

उदय आवेथी प्राये करीने भोगववुंज पडे छे, एटलो निकाचित ने अनिकाचितमां फेर छे.

अहीं निकाचित कर्मना संबंधमां "प्राये करीने भोगववुंज पडे छे." एमां प्राये शब्द कह्यानु तात्पर्य ए छे के–"तवसाओ निकाइयाण पि (तपथी निकाचित कर्मोनो पण क्षय थाय)" ए वचनना अनुसारे अत्यंत तप करवाथी तथा उत्कट अध्यवसायना बळथी निकाचित कर्ममां पण अपवर्तनादिक करणो प्रवर्ते छे. आवी रीते व्याख्या करवाथी ए तात्पर्य समजवुं के–क्षीरनीरनी जेम तथा अग्निथी तपावेला लोहना गोळानी जेम जीवना प्रदेश साथे कर्मनो संबंध छे." आ प्रमाणे विन्ध्य मुनिनी व्याख्या सांभळीने असत्कर्मना उदयने लीधे कदाग्रहथी तेने नहीं स्विकारतो गोष्ठामाहिल तेनी पासे जइने बोल्यो के–" जीव कर्मनो जे तादात्म्य संबंध कह्यो ते दूषित छे केमके तादात्म्यभाव मानवाथी जेम जीवना प्रदेश जीवथी भिन्न थता नथी तेम कर्म पण जीवथी अभिन्न रहेशे, अने तेथी सदा काळ जीव कर्म सहित रहेवाथी मोक्ष पामशे नहीं. मोक्षनो अभाव थशे,माटे मारी युक्तिज योग्य छे के–सर्पनी कांचळीनी पेठे जीवनी साथे कर्मनो मात्र स्पर्शज छे. अग्निथी तपावेला लोहगोळाना न्यायनी जेम तादात्म्य भाव पाम्या विनाज ते जीवनी साथे जोडाय छे, अने तेनी साथे परभवमां जाय छे. एम मानवाथी मोक्षनी प्राप्ति रहेशे "

आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळीने विन्ध्यमुनिने शंका पडवाथी तेणे आचार्य पासे जइने पूछ्युं, त्यारे आचार्ये कह्युं के–' तमे जे प्रथम कह्युं तेज सत्य छे. केमके–

जीवो हि स्वावगाहाभ्रिव्याप्त एवांबरे स्थितम् ।
गृह्णाति कर्मदलिकं, जातु न त्वन्यदेशगम् ॥ १ ॥
अथात्मान्यप्रदेशस्थं, कर्मादायानुवेष्टयेत् ।
यद्यात्मानं तदा तस्य, घटते कंचुकोपमा ॥ २ ॥

भावार्थ–" जीव पोतानी अवगाहनाथी व्याप्त थयेला आकाशप्रदेशमां रहेलाज कर्मनां दळीआने ग्रहण करेछे.पण बीजा प्रदेशमा रहेलांने ग्रहण करतो नथी, तेथी जो कदाच आत्मा अन्य प्रदेशमां रहेला कर्मने ग्रहण करीने पोतानी फरता वींटे, तो ते कर्मने सर्प कांचळीनी उपमा घटी शके. ते शिवाय बीजे नहि."

आ प्रकारनुं गुरुनुं वचन विंध्यमुनिए गोष्ठामाहिल्ने कह्यु, पण तेणे अंगीकार कर्यु नहीं, एटले आचार्ये तेने बोलावीने पूछ्युं के-" तमे सर्पकंचुकनी जेम कर्मनो संबंध मानो छो, ते जीवना दरेक प्रदेशनी साथे मानो छो के जीवनी बहार त्वचाना पर्यंत भाग साथे फरतो विंटायलो मानो छो ? जो जीवना दरेक प्रदेशना पर्यंत भाग साथे मानशो, तो आकाशनी जेम जीवमां सर्व प्रदेशे कर्म प्राप्त थशे. तो पछी जीवनो मध्यभाग कयो के जे कर्म रहित रहशे केमके जीवना प्रतिप्रदेशे कर्म लागवाथी कोइ मध्य प्रदेश बाकी रहशे नहीं के जेथी कर्मनु असर्वव्यापीपणुं थाय ए रीते साध्यविकळता प्राप्त थवाथी कंचुकनुं दृष्टांत अघटित छे अने जो जीवनी बहार त्वचाना पर्यंत भाग साथे कंचुकनी जेम स्पर्श करेलुं कर्म मानशो, तो जीव एक भवमांथी बीजा भवमां जशे, त्यारे अंगना बाह्य मेलनी जेम तेनी साथे कर्म जशे नहीं, अने " भले जीवनी साथे कर्म न जाय तेमां शो दोष छे ? " एम कहेशो तो सर्व जीवनो मोक्ष थशे, केमके पुनर्जन्मना कारणभूत कर्मनोज तेनी साथे अभाव छे इत्यादि अनेक दोष प्राप्त थशे "

ते सांभळीने गोष्ठामाहिले पूछ्युं के-"जो जीव अने कर्मनुं जुदापणु न होय, तो जीवथकी तेनो वियोग शी रीते थाय?" त्यारे गुरुए कह्युं के-"जोके कर्म जीवनी साथे अभेदे करीने रह्यु छे, तोपण सुवर्ण अने माटीनी जेम तेनो वियोग थइ शके छे. जेम मिथ्यात्वादिक करीने कर्मनुं ग्रहण थाय छे, तेम ज्ञान अने क्रियाए करीने तेनो वियोग थइ शके छे " इत्यादि अनेक युक्तिओथी तेने समजाव्या छतां गोष्ठामाहिल बोध पाम्या नहीं, अने तेणे पोतानो कदाग्रह मूक्यो नहीं.

एकदा विंध्यमुनि नवमा प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्वमां आवेला मुनिओना प्रत्याख्यान(पच्चख्खाण) नु वर्णन करता हता के-"मुनिए यावज्जीव (जीवनपर्यंत) सर्व सावद्यना प्रत्याख्यानो त्रिविधे त्रिविधे करवा." ते सांभळीने गोष्ठामाहिले कह्यु के-"सर्व प्रत्याख्यान यावज्जीव आदि अवधि विनाज करवा. अवधि सहित करवाथी [1]आशंसा दोष प्राप्त थाय छे. जेमके कोइ साधु एवो विचार करे के-'प्रत्याख्यान पूर्ण थया पछी हुं स्वर्गादिकमां देवांगना साथे भोग विगेरे भोगवीश.' आम थवाथी परिणाम अशुद्ध थया, तेथी प्रत्याख्यान पण अशुद्ध थयु " ते विषे सूत्रमां कह्यु छे के-

रागेण च दोसेण च, परिणामेण च न दूसियं जं तु ।
तं खलु पच्चरकाणं, जावविसुद्धं मुणेयव्वं ॥ १ ॥

[1] परभवमां भोगादिकनी इच्छा

भावार्थ-"जे राग, द्वेष के परिणामथी दूषित थयेलुं न होय, तेज प्रत्याख्यान भावविशुद्ध जाणवु."

अहीं गुरु तेने उत्तर आपे छे के-"तमे जे आशंसा दोष आप्यो ते काळनो अवधि करवाथी प्राप्त थाय छे? के वांच्छाथी प्राप्त थाय छे? जो काळनो अवधि करवाथी थतो होय तो पोरसी विगेरेना पच्चख्खाणमां पण ते दोष प्राप्त थशे, केमके काळप्रत्याख्यानमां प्रहर विगेरे काळमान साक्षात् कहेलु छे. जो कदाच "पोरसी विगेरेमां पण काळनो अवधि कहेवो नहीं" एम कहेशो तो दीक्षा ग्रहण करवाना दिवसथीज अनशन करवु जोइशे, अने तीर्थंकराए तो तपस्वीओने दश प्रकारे अनागत आदि प्रत्याख्यानो करवाना सिद्धांतमां कहेला छे. हवे जो "तृष्णाथी आशंसा दोष प्राप्त थाय छे" ए बीजो पक्ष मानशो तो ते पण अयोग्य छे, केमके मुनिने अन्य भवमां पाप सेववानी इच्छा होती नथी, अने जो अवधि विना प्रत्याख्यान कर, तो सर्व आवता (भविष्य) काळनुं प्रत्याख्यान थइ जशे, तेम थवाथी आयुष्यना क्षये देवगतिने पामेला यतिने सावद्य कर्मना सेवनथी अवश्य व्रतनो भंग प्राप्त थशे. आ विगेरे कारणोथी आशंसा रहितपणे अवधि सहित प्रत्याख्यान करवाथी कायोत्सर्गनी जेम काइ पण दोष नथी." इत्यादि युक्तिओथी समजाव्या छतां पण ज्यारे ते कांइ पण श्रद्धा पाम्या नहि, त्यारे पुष्पमित्र आचार्य तेने अन्य गच्छना बहुश्रुत अने वृद्ध मुनिओ पासे लइ गया. तेओए कह्यु के-"आ पुष्पमित्र आचार्य जेम कहे छे तेमज आर्यरक्षित सूरिए पण प्ररूपणा करेली छे, तेमां कांइ पण न्यूनाधिक नथी." त्यारे गोष्ठामाहिले कह्युं के-"तमारी जेवा ऋषिओ शुं जाणे? तीर्थंकराए तो जेम हुं कहु छु, तेमज प्ररूपणा करी छे." स्थविर मुनिओए कह्यु के-"तु मिथ्या अभिनिवेश न कर. एम करवाथी तीर्थंकरनी आशातना थाय छे ते शुं तु जाणतो नथी?" इत्यादि कहेवाथी पण गोष्ठामाहिले अंगीकार कर्युं नहीं. त्यारे सर्व संघे मळीने शासनदेवताने बोलाववा माटे कायोत्सर्ग कर्यो, तेथी कोइ भद्रक देवीए आवीने कह्युं के-"मने आज्ञा आपो, हुं शुं कार्य करु?" संघे, सिद्धांतनो परमार्थ जाणतां छतां पण लोकना विश्वासने माटे कह्यु-"हे देवी! तमे महाविदेहक्षेत्रमां तीर्थंकर पासे जइने पूछी लावो के संघ जे वात कहे छे ते सत्य के गोष्ठामाहिल कहे छे ते सत्य?" देवीए कह्यु के-"हुं महाविदेहमां जइने पाछी आवु त्यां सुधी मने मार्गमां विघ्न न थवा माटे कृपा करीने तमे कायोत्सर्गमां रहो के जेथी हुं जइ शकु." संघे ते प्रमाणे

कर्युं. पछी ते देवीए महाविदेहमां जइ प्रभुने पूछी आवीने संघने कह्युं के-" तीर्थंकरे मने कह्यु के " तमे (संघ) कहो छो ते सत्य छे अने श्री वीर जिनेश्वर मुक्ति पाम्या पछी पांचसें चोराशी वर्षे सातमो निन्हव थवानो हतो ते आ मिथ्यावादी गोष्ठामाहिल थयेलो छे. " ते सांभळीने गोष्ठामाहिल बोल्यं के-" आ बिचारी देवी अल्प ऋद्धिवाळी छे. तेनो महाविदेहमा जवानी शक्तिज क्यांथी होय ? " एम कहीने तेणे ते वात पण अंगीकार करी नहीं तेथी संघे तेने संघ बहार कर्यो. त्यारपछी आयुष्यना क्षये ते मिथ्या प्ररुपणा तथ कदाग्रहनी आलोचना कर्या विना मृत्यु पाम्यो.

आ दृष्टांतनु तात्पर्य ए छे के-" संघे संघ बहार कर्या छता पण गोष्ठामाहिले पोतानो मत छोड्यो नहीं, अने बोधिरत्न रहित थइने पृथ्वीपर अनेक माणसोने भमावी पोते संसारमां भम्यो. "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य अष्टत्रिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३८॥

व्याख्यान २३९ मुं

आठमो निन्हव.

स्वल्पमात्रजिनप्रोक्तवचनोत्थापकारिणः ।
जमालिप्रमुखा ज्ञेया, निन्हवाः सप्त शासने ॥ १ ॥

भावार्थ-" जिनेश्वरे कहेला वचनमांथी अल्पमात्र वचनने उत्थापन करनारा जमालि विगेरे सात निन्हवो जिनशासनमां थयेला जाणवा. "

अथ सर्वविसंवादी, निन्हवः प्रोच्यतेऽष्टमः ।
श्रीवीरमुक्तेर्जातोऽब्दशते षड्भिर्नवोत्तरे ॥ २ ॥

भावार्थ-" हवे श्रीवीरना निर्वाण पछी छसें नव वर्षे जिनेश्वरना सर्व वचननुं उत्थापन करनार आठमो निन्हव उत्पन्न थयो तेनी हकीकत कहे छे."

आठमा निन्हवनी कथा नीचे प्रमाणे-

" रथवीर नामना नगरमां हजार योद्धाने जीतनार शिवभूति नामनो एक क्षत्रिय हतो. ते राजानी सेवा करतो हतो. एकदा राजाए तेना शौर्यादिक गुणोनी

परीक्षा करवा माटे कृष्ण चतुर्दशीने दिवसे तेने एक पशु तथा मदिरा आपीने कह्युं के-" तु एकलो स्मशानमां जा अने आ बळिदान आपीने पाछो आव." ते मध्य रात्रीए एकलो स्मशानमां गयो. त्या अनेक भूत, प्रेत, पिशाच विगेरेए तेने भय बताव्यो पण तेनुं एक रुवाडु पण चाल्यु नहीं, तेथी तेने शूरवीर जाणीने राजाए तेनो पगार वधारी आप्यो. पछी एक दिवसे राजाए दक्षिणमथुराना राजाने जीतवा माटे हजार योद्धानु सैन्य मोकल्यु, अने उत्तरमथुराना राजाने जीतवा माटे एकला शिवभूतिने मोकल्यो ते तुरत जीतीने पाछो आव्यो. ते जोइने राजाए तेनु सहस्त्रमल्ल नाम पाड्यु, अने वरदान मागवानु कह्युं. तेणे माग्युं के-"हे स्वामी ! मने स्वतंत्रता आपो." एटले राजाए तेने स्वतत्रता आपी.

पछी ते राजाना प्रसादथी मरजी मुजब विलास करतो नगरमां फरवा लाग्यो, अने राते बे पहोर रात्री गया पछी घेर आववा लाग्यो, तेथी खेद पामीने तेनी स्त्रीए तेनी माने कह्युं के-' तमारा पुत्रथी हु कायर थइ गइ छुं, ते कोइ पण दिवस रात्रे घेर वखतसर आवता नथी, तेथी जागरण तथा भूखने लीधे हुं निरंतर पीडा पामु छु.'' ते सांभळीने सासुए कह्युं के-" हे वहु ! आजे तुं सुइ रहे, हुं जागीश." तेम कहेवाथी वहु सुइ गइ. मध्य रात्रे सहस्त्रमल्ले आवीने कह्युं के-" बारणुं उघाडो." ते सांभळीने कोप पामेली माताए कह्युं के-" हे दुष्ट ! आ मध्य रात्रीने समये ज्यां द्वार उघाडा होय त्या जा." आ प्रमाणे सांभळवाथी क्रोध पामीने ते गाममां फरवा लाग्यो, एटलामां तेणे उघाडा द्वारवाळो साधुनो उपाश्रय जोयो, एटले तेणे जइने साधुने वांदी व्रत माग्यु. सूरिए राजाने वल्लभ तथा माता विगेरेए मोकळो नहीं करेलो तेमज स्वेच्छाचारी जाणीने तेने दीक्षा आपी नहीं, तोपण तेणे साधुना थुंकवाना पात्रमांथी भीनी राख लइने जातेज लोच कर्यो. एटले पछी कृष्णसूरिए तेने मुनिवेश आप्यो. पछी कृष्णसूरिनी साथे विहार करता एक दिवस पाछा तेज नगरमा आव्या. राजाए सहस्त्रमल्लने एक रत्नकंबल आप्युं, त्यार आचार्ये तेने कह्यु. के-" आपणे साधुने आवां बहु-मूल्यवाळां उपकरण राखवां न जोइए." गुरुए आम कह्या छतां पण तेणे ते कंबलने मूर्छाथी गुप्त रीते राख्यु, अने हमेशां तेनी संभाळ करवा लाग्यो. गुरुए तेनी कंबल उपरनी मूर्छा जाणी, तेथी एकदा ते कांइ बहार गयो हतो ते वखते कंबलने फाडीने ते पादप्रोंछन विगेरे करवा सारु सर्व साधुओने वहेंची आप्यु. ते वात जाणीने शिवभूतिने घणो क्रोध चड्यो, अने तेनी स्थितिमां ज्यां हतो

एक दिवस आचार्य जिनकल्पिकनु वर्णन करता हता.–ते आ प्रमाणे–" जिनकल्पिक बे प्रकारना होय छे. एक पाणिपात्र एटले हाथमा लइने भोजन करनारा अने बीजा पात्रभोजी ते पात्रमा लइने भोजन करनारा. ते दरेकना पण बे बे भेद छे. एक स्वल्प सचेलका एटले अल्प वस्त्र राखनारा अने बीजा अचेलका एटले बिलकुल वस्त्र नहीं राखनारा. " इत्यादि हकीकत सांभळीने शिवभूतिए कह्यु के—" जो एम छे तो हालमा शामाटे बहु उपधि राखवामा आवे छे? जिनकल्प शा माटे अंगीकार करता नथी? " गुरुए कह्युं के–"आ भरतक्षेत्रमा श्री विरना धर्मपौत्र एटले तेमना त्रीजे पाटे थयेला श्रीजंबुस्वामीना निर्वाण साथे जिनकल्प विगेरे दश वस्तुओनो विच्छेद थयो छे, वळी तेवा संहननादिकना[1] अभावथी वर्तमान काळमा तेम करी शकातु नथी." ते सांभळीने शिवभूति बोल्यो के–" अल्प सत्त्ववाळाने माटे जिनकल्प विच्छेद थयो छे, पण मारा जेवाने माटे नहीं, कमके मारा जेवा महासत्त्व तो वर्तमान काळमा पण जिनकल्प अंगीकार करवाने समर्थ छे मोक्षना अभिलाषीए समग्र परिग्रहनो त्याग करवो जोइए. तो पछी कषाय, भय, मूर्च्छादिक दोषना निधि समान आ अनर्थकारी परिग्रहथी शु? जिनेंद्रो पोते अचेलकज हता, तेथी वस्त्ररहितपणुज श्रेष्ठ छे " त्यारे गुरुए कह्युं के–" जो एम होय तो देहने विषे पण कषाय, भय, मूर्च्छा विगेरे दोषनो संभव छे; माटे ते देहनो पण व्रत ग्रहण कर्या पछी तरतज त्याग करवो जोइशे, परंतु शास्त्रमा जे परिग्रह रहितपणु कह्यु छे तेनो हेतु ए छे के धर्मना उपकरणो उपर मूर्च्छा राखवी नहीं, पण सर्वथा धर्मना उपकरणनो त्याग करवो तम नथी. वळी जिनेश्वरो पण सर्वथा अचेलक हता तेम नथी, कमके–"सव्वे वि एगदूसेण निग्गया जिणवरा चउव्वीसंपि (सर्वे चोवीशे तीर्थंकरोए एक देवदूष्य वस्त्र लइने दीक्षा लीधेली छे.) इत्यादि वचनथी जिनेंद्रो पण सचेलक हता "

आ प्रमाणे आचार्ये तथा स्थविर मुनिओए पूर्वोक्त तथा वक्ष्यमाण[2] युक्तिओथी बोध कर्या छता पण तथाप्रकारना कषाय अने मोहनीयना उदयथी तेणे पोतानो आग्रह छोड्यो नहीं, अने सर्व वस्त्रोने तजी दइने गाम बहार अरण्यमां जइने रह्यो.

---

१ संहनन ते शरीरनी मजबुती जिनकल्पीपणु पाळवामा जेवी जोइए तेवी हाल मजबुती नथी वळी आदि शब्दथी तथाप्रकारनु ज्ञान विगेरे नथी.

२ आगळ कहेवामा आवशे एवी

एकदा उत्तरा नामनी तेनी बेन तेने वांदवा गइ. त्यां पोताना भाइने वस्त्र रहित जोइने तेणे पण वस्त्रोनो त्याग कर्यो. पछी ते भिक्षाने माटे नगरमां गइ त्यां कोइ वेश्याए तेने जोइने विचार्युं के–"वस्त्र रहित होवाथी बीभत्स[1] देखाती आ स्त्रीने जोइने लोको अमारी उपरथी पण विरक्त थशे." एम धारीने तेणे तेनी इच्छा नहीं छतां बलात्कारे वस्त्र पहेराव्या. ते वृत्तांत उत्तराए शिवभूति पासे जइने जणाव्यो. ते साभळीने शिवभूतिए विचार्युं के–" वस्त्र रहित स्त्री घणी बीभत्स तथा अति लज्जास्पद थाय छे." तेथी तेणे उत्तराने कह्युं के–" हवे तुं तो आज रीते रहेजे, वस्त्र तजीश नहीं."

हवे अनेक जैन साधुओ शिवभूतिने समजाववा लाग्या के–" जिनागमने विषे त्रण कारणे वस्त्र धारण करवानुं कहेलुं छे." "तिहिं ठाणेहिं वत्थं धारेज्जा हिरिवत्तिय, दुगन्छावत्तिय, परिसहवत्तिय "

अर्थ–" ह्री " एटले लज्जा अथवा संयम. तेना रक्षणनिमित्ते, लोकमां "दुगंछा" (निंदा) न थवा माटे, तथा " परीषह " एटले टाढ, तडको, डांस, मच्छर विगेरेथी रक्षण थवा माटे. ए त्रण कारणे वस्त्र धारण करवां

वळी कहुं छे के–"तपस्वीओने धर्ममां महायभूत होवाथी शुद्ध आहारादिकनी जेम वस्त्रादिकनुं ग्रहण करवुं, तेमा दोष नथी."

वळी तुं एम कहेछे के–" हिंसानुबंधि, मृषानुबंधि, स्तेयानुबंधि अने संरक्षणानुबंधि एम चार प्रकारनुं रौद्र ध्यान कहेलुं छे तेमां " हिंसा " एटले प्राणीनो वध तेनो " अनुबंध " एटले निरंतर चिंतवन जेमा होय ते हिंसानुबंधि, असत्यनुं चिंतवन जेमा होय ते मृषानुबंधि, चोरीनुं चिंतवन जेमां होय ते स्तेयानुबंधि, अने तस्करादिक थकी पोताना वित्तने गुप्त राखवा माटे निरंतर तेना रक्षण संबंधी चिंतवन करवुं ते संरक्षणानुबंधि, आमा रौद्र ध्याननो चोथो भेद जे संरक्षणानुबंधि छे ते वस्त्रादिक ग्रहण करवाथी अवश्य थशे. केमके ते रौद्र ध्याननो हेतु छे. वळी " शस्त्रादिकनी जेम दुर्गतिनुं कारण होवाथी वस्त्रादिक ग्रहण करवां नहीं " एवी तारी बुद्धि थाय छे पण अयुक्त छे. केमके–हे देवोना प्रिय! तारी आ युक्ति प्रमाणे तो देहादिकमां पण रौद्र ध्याननी प्राप्ति थशे. केमके शरीरनुं पण जळ, अग्नि, चोर, डांस, शिकारीपशु, विष, कंटक विगेरेथी रक्षण करवानी जरूर पडे छे, तेथी देहादिकमां पण संरक्षणानुबंधिनी तुल्यता छे. एटले ते देहादिकनो पण त्याग करवो जोइशे.

---

१ खराब देखाववाळी

कदाच तु एम कहीश के-"देहादिक मोक्षनु साधन करवामां अंगीभूत होवाथी जयणावडे तेनु संरक्षण करवु तेमां दोष नथी, पण ते प्रशस्त सरक्षण छे." तो अहीं पण आगममां कहेला यतना (जयणा) ना प्रकारथीज वस्त्रादिकनुं सरक्षण करवु, ते केम प्रशस्त नथी ? माटे वस्त्रादिकनो शामाटे त्याग करवो ? वळी "मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इति वुत्त महेसिणा (भगवंते मूर्छानेज परिग्रह कहेलो छे एम महर्षि श्रीसुधर्मास्वामीए कह्युं छे)." इत्यादि श्रीसय्यंभवसूरिनां वचनथी वस्त्र, वित्त, देह विगेरेमां मूर्छा उत्पन्न थाय ते परिग्रह छे

प्रश्न-मुनि जो वस्त्र ग्रहण करे तो पछी साधुने अचेल परीषह सहन करवानुं केम कह्युं छे ? केमके वस्त्र न होय तोज ते घटे छे

उत्तर-तारुं कहेवु अयोग्य छे केमके-जीर्णप्राय वस्त्रथी पण वस्त्ररहितपणु लोकमां प्रसिद्ध छे. जेमके कोइ स्त्री जीर्ण अने फाटेलु वस्त्र शरीरे वींटीने कोइ वणकरने कहे छे के-'हे वणकर ! उतावळथी मारी साडी वणीने मने आप, कमके हुं नागी फरु छु' अहीं वस्त्र सहित छता पण स्त्रीने विषे नग्नपणानो शब्द प्रवर्ते छे. शास्त्रमां पण "जस्सट्ठा कीरइ नग्गभावो" ए वाक्य छे ते उपचारिक नग्नभावने माटेज छे, तेथी वस्त्र राखवामां कोइ प्रकारनो विरोध नथी, तेज प्रमाणे मुखवस्त्रिका रजोहरण विगेरे उपकरणो पण संयममां उपकारी होवाथी ग्रहण करवा योग्य छे. कह्यु छे के-

स्थानोपवेशनस्वाप-निक्षेपग्रहणादिषु ।
जंतुप्रमार्जनार्थं हि, रजोहरणमिष्यते ॥ १ ॥

भावार्थ-" कोइ पण स्थानने विषे बेसवु, शयन करवुं, कोइ वस्तु मूकवी, लेवी विगेरे कार्यमां जंतुना प्रमार्जनने माटे रजोहरणनी जरूर छे "

संपातिमादिसत्त्वानां, रक्षार्थं मुखवस्त्रिका ।
भक्तपानस्थजंतूनां, परीक्षार्थं च पात्रकम् ॥ २ ॥

भावार्थ-"संपातिम[1] विगेरे जंतुओना रक्षण माटे मुखवस्त्रिकानी जरूर छे, अने भक्त पानने विषे रहेला जंतुनी जयणाने माटे पात्रनी जरूर छे.

वळी पात्र विना सजीव गोरसादिक[2] अजाणपणाथी हाथमां लइ लीधु. पछी तेनु शु करवु ? तेमां रहेला जीवनी हिंसाज थाय; तथा हाथमां लीधेला

१ उडीने पडता २ दहीं, दुध, छाश विगेरे,

प्रवाही पदार्थो हाथमाथी गळे तेथी कुंथुआ, कीडी विगेरे अनेक जीवोनी हिंसा थाय, तथा गृहस्थो मुनिए वापरेला पात्रो धोवे त्यारे तेथी पश्चात्कर्मादि दोष लागे, तेथी बाळ अने ग्लानादि साधुओनी वैयावच्चने माटे तेमज पारिष्ठापनिका समिति जाळववाने माटे साधुने पात्रनु ग्रहण करवु योग्य छे. वळी जघन्यथी नव पूर्वमां कांइक ओछु भणेला, उत्तम धैर्य अने संहननवाळा पण "तवेण सुत्तेण सत्तग (तप, सूत्र अने सत्त्वरूपे)" इत्यादि भावनाए करीने प्रथम तुलना कर्या पछीज जिनकल्प अंगीकार करी शके छे. वादी शेरीना सिंह समान तारा जेवाने माटे तो तीर्थंकरोए जिनकल्पनी आज्ञा आपीज नथी तेमज तुं तीर्थंकरनी तुल्यता करे छे ते पण योग्य नथी. केमके जिनेश्वरो तो पाणिप्रतिग्रहादि अनंत अतिशयोवाळा होय छे. माटे तारु मानवु सर्वथा त्याज्य छे."

इत्यादि अनेक युक्तिथी समजाव्या छतां पण ते मिथ्या अभिनिवेशथी श्री तीर्थंकरना तथा मुनींद्रोना अनेक वचनोनो उत्थापक थयो. ते शिवभूतिना कौडिन्य अने कोट्टवीर नामना बे बुद्धिशाली शिष्यो थया. तेमनाथी ते मतनी परंपरा चाली. पछी तो तेओए अनुक्रमे "केवळी आहार करे नहीं, स्त्रीओ मोक्ष पामे नहीं, तिवीहार उपवासमां सचित्त जळ पीवामां दोष नहीं, दिगंबर साधु देवद्रव्य ले ने तेनो व्यय करे, तेमां दोष नहीं" विगेरे जिनागमथी विरुद्ध लगभग आठसो वचन नवा रच्या, अने ते वचनो तेओ स्वेच्छाए बोलवा लाग्या. माटे तेओ सर्वविसंवादी (उत्थापक) थया. ते बोटिकनी परंपरामां थयेला बोटिको दिगंबर कहेवाय छे.

आ प्रमाणे दिगंबर नामनो आठमो निन्हव पोतानु शुद्ध बोधिरत्न गुमावी बेठो. केमके समकित (बोधिरत्न) पाम्या छतां पण कोइने जतुं रहे छे, माटे हे भव्य प्राणीओ! प्रयत्न वडे समकितनुं रक्षण करो.

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य एकोनचत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २३९ ॥

व्याख्यान २४० मुं.

ढुंढक मत विषे.

श्रीमद्वीरजिन नत्वा, वक्ष्येऽहं श्रुतनिंदकान्।
चरित्र वगचूलिकाध्ययनाद्धारित यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—"श्रीमान वीर जिनेश्वरने नमस्कार करीने वगचूलिका नामना अध्ययनमाथी वानेलु श्रुतना निंदकनु चरित्र हु कहु छुं."

श्रीवीरपरमात्माना पाचमा पट्टने धारण करनार श्रीयशोभद्र सूरिना शिष्य श्रीभद्रबाहु स्वामी श्रुतकेवली थया. तेमना शिष्य अग्निदत्त मिथिला नगरीना उद्यानमा प्रतिमा[1] अगीकार करीने तप करता हता. ते वखते मदिरा तथा मासमा आसक्त एवा कोइ बावीश मित्रो कामलता नामनी वेश्या साथे अयोग्य चेष्टा करता हमेशा उपवनमा क्रीडा करता हता. एकदा मदिरापानथी उद्धत थयेला तेओ ते अग्निदत्त मुनिने जोइने तेने हणवा माटे अति तीक्ष्ण खड्ग हस्तमा धारण करीने एक साथे दोड्या. दोडता मार्गमा एक अधकूपमा[2] तेओ उपरा उपरी पड्या तेथी एक बीजाना शस्त्रो परस्पर लागवाथी सर्वे मृत्यु पामी गया तेओनी ए स्थिति जोइने अग्निदत्त मुनिए विचार्यु के– "अरे र ! आ बिचारा सुकृत कर्या विना अकाळे मृत्यु पाम्या." पछी ते साधु कायोत्सर्ग पारीने यशोभद्र गुरुमहाराज पासे गया. गुरुनी पासे विनयपूर्वक "ते बावीश मित्रो जे मरण पाम्या तेमनी शी गति थइ अने शी गति थशे ?" ते पूछ्यु त्यार त्रण ज्ञानवाळा अने दृष्टिवादना जाणनार यशोभद्र गुरुए श्रुतनो उपयोग दइने तेओनु बहु भवभ्रमणनु चरित्र कही बताव्यु ते नीचे प्रमाणे–

"हे अग्निदत्त ! ते बावीश मनुष्यो तने हणवा माटे दोडता अधकूपमा पड्या पछी अतर्मुहूर्तमाज ते गणिकानी इच्छावाळा अध्यवसायथी मरीने तेज वेश्याना जमणा स्तनमा पोतेज करेला नखक्षतमा कृमिपणे उत्पन्न थया. तेथी वेश्याने स्तनमा अत्यत वेदना थवा लागी. अनेक वैद्योना औषधो निष्फळ गया. पाते एक वैद्ये तेनो उपाय जाणीने तेना स्तनने विदारी तेमाथी हाड, मास अने रुधिरमा अति तृष्णावाळा ते बावीश बेइद्रिय कीडाओने काढी जळना पात्रमा

[1] मुनिने वहेवानी बार पडिमाओ छ तेने अगीकार करीने [2] जळ रहित घणा उडा कुवा

दक्षिणेन्द्रनी देशे उणा अर्ध पल्योपमना आयुष्यवाळी सुवच्छा नामे देवी थशे. त्यां विभंग ज्ञानवडे पूर्वना घणा भवना संबंधवाळा ते बावीश वणिकोने जोइने ते हर्ष पामशे, तुष्टमान थशे अने तेओने सर्व कार्यमा सहाय करशे. ते देवीना प्रभावे करीने तेओ समृद्धिवाळा थशे. पछी तेओ सर्व जन समक्ष हर्षपूर्वक उद्घोषणा करशे के–" हे मनुष्यो ! जुओ, अमारा धर्मनुं प्रत्यक्ष फळ के अमे केवुं सुख भोगवीए छीए ? तमे पण अमारा धर्मने अंगीकार करो. पथ्थरना बिंबनी पूजा करवाथी अने छकाय जीवनी हिंसा करवाथी शुं फळ पामशो ? " इत्यादि वचनो कहेवावडे ते बावीशे भ्रष्ट श्रावको अनेक लोकोने कुमार्गमां पाडशे ते वखते तीर्थंकरोए निरुपण करेला श्रुतनी हीलना थशे, श्रमण निर्ग्रंथोनो उदय, पूजा, सत्कार थशे नहीं, अने धर्मनु पालन करवु अति दुष्कर थइ पडशे. पछी ते बावीशे वाणीआओ आयुषने अंते सोळ प्रकारना महारोगनी पीडाथी अति कष्ट पामीने आर्त्तध्यानवडे मरण पामशे, अने घम्मा नामनी पहेली नरकना प्रथम प्रस्तरमा दश हजार वर्षना आयुष्यवाळा नारकी थशे. त्यांथी नीकळ्या पछी पण अनेक योनिमां परिभ्रमण करशे. श्रीजिनागमनी हीलना करवाना कारणथी तेमने बोधिरत्ननी प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ थशे. "

आ प्रमाणे सूरिना वचन साभळीने अग्निदत्त मुनिए फरीथी गुरुने वंदना करीने पृच्छ्युं के–" हे स्वामी ! कया काळमा ए श्रुतनिंदकोनी उत्पत्ति थशे ? " तेनो उत्तर जे यशोभद्रसूरिए कह्यो तेनी रंगचूलिआमां जे गाथाओ छे ते आ प्रमाणे—

नणइ जस्सभद्दसुरि, सुओवओगेण अग्गिदत्तमुणि ।
सुणसु महाभाय जहा, सुअहिलणमइ जहा उदओ ॥१॥
...े वीरपहुणो, दुसमहियएगनवइअहियएहिं ।
...ंपडनिवो, जिणपडिमाराहओ होही ॥ २ ॥
...मएहिं, नवनवइसजुएहि वरिसेहि ।
...अगा, अवमन्नइस्सति सुयमेय ॥ ३ ॥
...दत्ता, संवसुयजम्मरासिनक्खत्ते ।
...गिस्सइ धूमकेउगहो ॥ ४ ॥

जलवडे शुद्धि करवाथी प्राणीओ मोक्षपदने पामे छे. " इत्यादि ते वेश्या तापसीनो उपदेश सांभळीने पेला चाटाओ ते धर्मना रसिक थशे तेथी बीजा बधा दर्शनना तेमा विशेष जैन मुनिना तथा जैन चैत्योना अपार द्वेषी थशे, अने तेमना अवर्णवाद बोलशे. छेवट तेओ वैराग्य पामीने ते वेश्या तापसी पासे तापसी दीक्षा लेशे. त्यारपछी पांच वर्ष मरण पामीने चोत्रीशमा भवे तेज अवंति नगरीमा भाडना कुळने विषे उत्पन्न थशे. त्यां अनेक प्रकारनी भाडचेष्टा करीने पोतानी आजीविका चलावशे. एक वखत पुरोहित नगरना राजानी पासे तेओ भाडचेष्टा करीने लोकोने हसावशे. ते समये अग्रम तपने पारणे कोई पण साधुओ गोचरीने माटे त्याथी नीकळशे, तेने जोइने पुरोहितना कहेवाथी ते भांडो एओनी हीलना करशे. तोपण ते साधुओ तो मौनज रहेशे. तेथी ते भांडो धारीने साधुओने जवा देशे. पछी हे अग्निदत्त ! ते भांडो एक वखत साथे सुतेला हशे, ते समये तेमना पर अकस्मात् विद्युत्पात थशे, तेथी तेओ मरण पामशे. त्याथी पात्रीशमा भवने विषे मध्य देशमा जुदा जुदा ब्राह्मणना कुळमा उत्पन्न थशे. त्यां अनुक्रमे वृद्धि पामीने चौद विद्यामा प्रवीण थशे. एक वखत तेओ धारापुर नगरमां यज्ञदत्त नामना ब्राह्मणना निमंत्रणथी तेना यज्ञमा जशे. त्यां यज्ञमंडपना द्वार पर करीने तेओ अग्निकुंडमा होम करशे. ते वखत कुंडना अग्निनी ज्वाळाथी बळता बळता तपाथी व्याकुळ थइने आर्तध्यानवडे मरण पामशे, अने सिप्रा नदीना द्रहमा मत्स्यपणे उत्पन्न थशे. उपराउपर सात वार जळचर योनिमा उत्पन्न थशे. त्यारपछी नव वार पक्षीओमा उत्पन्न थशे अने पछी अग्यार वार पशुओमा उत्पन्न थशे. एटले सर्व मळीने बासठ भव थशे. तेमा छेल्ला बासठमा भवमा तेओ मृगपणु पामशे. त्यां दावानळना अग्निथी बळीने त्रेसठमा भवे ते बावीश गोठीला पुरुषो मध्यदेशमा श्रावकना कुळमा जुदा जुदा उत्पन्न थशे. त्यां युवावस्था पामीने धृष्ट, परने वंचन करनारा, पूर्व भवना मिथ्यात्वपणाथी शुद्ध जैनमार्गना प्रत्यनिक अने देवगुरुना निंदक थशे, अने घणा मनुष्यो पासे कहेशे के-" पथ्थर तथा धातु विगेरेनी बनावेली प्रतिमानु पूजन करवामा हिंसा थाय छे तेथी ते पूजन व्यर्थ छे " इत्यादि कुयुक्तिवडे चैत्य, धर्म तथा आगमना उत्थापक थशे.

हवे पेली वेश्यातापसी अठोतेर वर्ष सुधी गृहस्थाश्रम भोगव्या पछी छवीश वर्ष तापसीदीक्षा पाळी कुल एकसो चार वर्षनु आयुष्य भोगवीने सात दिवसना अनशनवडे मरण पामी वाणव्यंतर योनिमा सुवच्छ नामना

दक्षिणेन्द्रनी देवी थशे. त्यां विभंग ज्ञानवडे पूर्वना घणा भवना संबंधवाळा ते बावीश वणिकोने जोइने ते हर्ष पामशे, तुष्टमान थशे अने तेओने सर्व कार्यमां सहाय करशे. ते देवीना प्रभावे करीने तेओ समृद्धिवाळा थशे. पछी तेओ सर्व जन समक्ष हर्ष-पूर्वक उद्घोषणा करशे के–" हे मनुष्यो ! जुओ, अमारा धर्मनुं प्रत्यक्ष फळ के अमे केवुं सुख भोगवीए छीए ? तमे पण अमारा धर्मने अंगीकार करो. पथ्थरना बिंबनी पूजा करवाथी अने छकाय जीवनी हिंसा करवाथी शुं फळ पामशो ?" इत्यादि वचनो कहेवावडे ते बावीशे भ्रष्ट श्रावको अनेक लोकोने कुमार्गमां पाडशे ते वखते तीर्थंकरोए निरूपण करेला श्रुतनी हीलना थशे. श्रमण निर्ग्रंथोनो उदय, पूजा, सत्कार थशे नहीं, अने धर्मनु पालन करवु अति दुष्कर थइ पडशे. पछी ते बावीशे वाणीआओ आयुषने अंते सोळ प्रकारना महारोगनी पीडाथी अति कष्ट पामीने आर्तध्यानवडे मरण पामशे, अने घम्मा नामनी पहेली नरकना प्रथम प्रस्तरमां दश हजार वर्षना आयुष्यवाळा नारकी थशे. त्यांथी नीकळ्या पछी पण अनेक योनिमां परिभ्रमण करशे. श्रीजिनागमनी हीलना करवाना कारणथी तेमने बोधिरत्ननी प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ थशे."

आ प्रमाणे सूरिनां वचन सांभळीने अग्निदत्त मुनिए फरीथी गुरुने वंदना करीने पृछ्यु के–" हे स्वामी ! कया काळमां ए श्रुतनिंदकोनी उत्पत्ति थशे ?" तेनो उत्तर जे यशोभद्रसूरिए कर्यो तेनी वगचूलिआमां जे गाथाओ छे ते आ प्रमाणे—

भणइ जस्सभद्दसुरि, सुओवओगेण अग्गिदत्तमुणि।
सुणसु महाभाय जहा, सुअहिलणमह जहा उदओ ॥१॥
मुक्खाओ वीरपहुणो, दुसएहियएगनवइअहिएहिं।
वरिसाइ संपइनिवो, जिणपडिमाराहओ होही ॥ २ ॥
तत्तो अ सोलसएहिं, नवनवइसजुएहिं वरिसेहिं।
ते दुट्ठा वाणियगा, अवमन्नइस्सति सुयमेय ॥ ३ ॥
तमि समए अग्गिदत्ता, सघसुयजम्मरासिनक्खत्ते ।
अक्कतीसइमो दुट्ठो, लगिम्मइ धूमकेउगहो ॥ ४ ॥

तस्स द्विठ तिन्निसयो, तित्तिसा एगरासि वरिसाण ।
तम्मियमीए पठ्ठो, संघस्स सुयस्स उदओ पच्छा ॥ ५ ॥
इय जम्सजद्दगुरुण, वयण सोचा मुणि सुवेरग्गो ।
पायाहिणं कुणंतो, पुणो पुणो वदए पाए ॥ ६ ॥
आपुच्छीऊण सूरिं, सुगुरु तह जद्दबाहु संजूय ।
सलेहणपवन्नो, गर्जगिदत्तो पढमकप्पे ॥ ७ ॥

भावार्थ-यशोभद्रसूरिए श्रुतना उपयोगपूर्वक अग्निदत्त मुनिने कह्यु के-" हे महा भाग्यशाळी ! श्रुतनी निंदा अने उदय जेम थवानो छे तेम साभळ-श्रीवीरप्रभुना निर्वाण पछी बसे एकाणु वर्षे जिनप्रतिमानो आराधक संप्रति राजा थशे. त्यार पछी सोळसें ने नगाणु वर्षे ते दुष्ट वाणियाओ श्रुतनी निंदा करशे. ते समये हे अग्निदत्त ! सघ अने श्रुतनी जन्मराशि उपर आठत्रीशमो धूमकेतु नामनो ग्रह बेसशे. ते ग्रहनी स्थिति एक राशि उपर त्रणसें ने तेत्रीश वर्षनी छे, तेथी ते ज्यां सुधी वर्तशे त्यां सुधी आ लोकोना पयनुं रहेठु थशे, ते उतरशे एटले सघनो अने श्रुतनो उदय थशे आ प्रमाणे यशोभद्र गुरुनु वचन साभळीने भरचत वैराग्य पामेला अग्निदत्त मुनि गुरुनी प्रदक्षिणा करता सता वार-वार तेमना चरणे नमस्कार करवा लाग्या. पछी यशोभद्रसूरिनी तथा भद्रबाहु-स्वामी अने सभुतिविजय गुरुनी आज्ञा लइने अग्निदत्त मुनि अनशन करी प्रथम देवलोकमा देव थया. "

" सिद्धान्त तथा चैत्य आदिनो लोप करनारा अने मिथ्यात्व गुणस्थानमां रहेला ते बावीश वाणीआओ ससाररूपी कूपमा चिरकाळ सुधी भटकशे. माटे आगमने जाणनारा बीजाओए कदापि पण तेम करवु नहीं. "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ षोडशस्तंभस्य चत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २४० ॥

स्थंभ सोळमो सपूर्ण.

श्री उपदेश प्रासाद.

स्तंभ १७ मो.

व्याख्यान २४१ मुं.

क्रोधविषे.

बद्धं यदेन क्रोधेन, वचसा पूर्वजन्मनि।
रुदद्भिर्वेद्यतेऽवश्य, तत्कर्मेह शरीरिभिः ॥ १ ॥

भावार्थ–"प्राणीओए पूर्व जन्ममां वचनवडे करीने क्रोधथी जे कर्म बांध्युं होय ते कर्म आ जन्ममां प्राणीओने रोतां रोतां पण अवश्य भोगववुं पडे छे."–आ विषे दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

अमरदत्त ने मित्रानंदनी कथा.

अमरपुर नगरमां मकरध्वज नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने मदनसेना नामनी पट्टराणी हती. एकदा तेणे राजाना मस्तकपर उगेलो एक पळी (धोळो वाळ) काढीने राजाने देखाड्यो. ते जोइने राजाने वैराग्य उत्पन्न थयो, तेथी राणी सहित तेणे तापसी दीक्षा ग्रहण करी. अन्यदा गुप्त [1]गर्भवाळी राणी तापसीए पुत्र प्रसव्यो. परंतु अयोग्य आहारना प्रभावथी ते मूर्च्छागत थइने मरण पामी. ते जोइने राजा तापस चिंतातुर थयो. पछी तेणे पोताना कोइ रागी श्रेष्ठीने ते पुत्र पाळवा आप्यो. श्रेष्ठीए पोतानी स्त्रीने आप्यो. ते पुत्रनुं नाम अमरदत्त राख्युं. अनुक्रमे ते युवावस्था पाम्यो. तेने मित्रानंद नामे एक मित्र थयो. एकदा ते बन्ने मित्रो सिप्रा नदीने काठे आवेला एक वडनी पासे मोइ दांडीए रमता हता ते वखते अमरदत्ते दंडवडे मोइ उछाळी, ते वडवृक्षे बांधेला कोइ चोरना मृतकना मुखमां पडी ते जोइने हसतां हसतां मित्रानंदे मित्रने कह्युं के–" आ अद्‌भुत बनाव तो जुओ।" त्यारे ते चोरनुं शब बोल्युं के–"अरे तुं केम हसे छे ? तारी पण आवीज दशा थशे, अने आज प्रमाणे तारा मुखमां पण मोइ पडशे " ते सांभळीने मित्रानंद भय पाम्यो, अने कोइ पण

---

१ जे गर्भना दखाव न जणाय ते गूढगर्भ कहेवाय छे. राणीने प्रथम संसारी[illegible] गर्भ रहेलो ते [illegible] तापसी थएली, पछीथी गर्भिणी [illegible] जणाती थयां.

पजावजे." पछी राजे सर्व भोगसामग्री तैयार करी शृंगार सजीने वेश्या शयनगृहमा आवी. ते वखते मित्रानंदे विचार्युं के- "विषयमा आसक्त थयेला मनुष्योना कार्य सिद्ध थता नथी." एम निश्चय करीने ते वेश्या प्रत्ये बोल्यो के- "हे कल्याणी! एक पाटलो लाव, जेथी हु इष्ट देवनु स्मरण करु." एटले ते तरतज एक सुवर्णनो पाटलो लावी. तेना पर मित्रानंद पद्मासन वाळीने बेठो. तेनी सामे रहीने वेश्याए अनेक हावभाव कर्या, परतु तेनु मन चलित थयु नहीं. आखी रात्रि एज प्रमाणे निर्गमन करीने प्रभाते त्यांथी नीकळी बीजे स्थाने गयो. बीजी रात्रि पण तेणे तेज प्रमाणे निर्गमन करी. ते वृत्तात साभळीने अक्काए तेने कह्यु के-"हे भद्र! आ मारी पुत्री राजाओने दुर्लभ छे छता तु तेनी केम अवगणना कर छे?" मित्रानद बोल्यो के- "समय आवे हु सर्व करीश, परतु हु तने पूछु छु के- "राजगृहमा तारो प्रवेश छे के नहीं?" अक्काए जवाब आप्यो के- "आ मारी पुत्री राजानी चामरधारिणी छे, अने राजानी पुत्री रत्नमंजरी मारी पुत्रीनी सखी छे" ते साभळी मित्रानंदे राजवेश्याने कह्यु के-"हे भद्रे! तु आजे रत्नमजरीने कहेजे के-"हे सखी! जेना गुणनो समूह तें साभळ्यो छे, अने तेथी राग उत्पन्न थवाने लीधे तें जेना पर पत्र लख्यो हतो ते अमरदत्तनो मित्र तारा प्रियनो पत्र लइने अहीं आव्यो छे" पछी ते वेश्याए रत्नमंजरी पासे जइने कह्यु के-"हे सखी! आजे हु तारा प्रियना समाचार कहेवा आवी छु." त्यारे ते हसीने विस्मय पूर्वक बोली के-"कोण मारो प्रिय छे?" त्यार ते वेश्याए समग्र समाचार कह्या. ते साभळीने राजपुत्रीए विचार्यु के-"खरेखर आ कोइ अलौकिक धूर्त होवो जोइए, केमके आज सुधी मारो कोइ पण प्रिय नथी. परंतु जेणे आवु कपटजाळ रच्यु छे तेने दृष्टिए तो जोवो जोइए." एम विचारीने तेणे वेश्याने कह्यु के "हे सखी! मारा प्रियनो सदेशो लावनार ते माणसने मारा प्रियना पत्र सहित आजे आ बारीने रस्ते अहीं लावजे" ते वेश्याए घेर आवीने सर्व वृत्तात मित्रानदने कह्यो पछी ते रात्रे अक्काए बतावेला रस्तावडे सात किल्लानु उल्लंघन करीने ते राजकन्याना निवासगृहमा गयो अक्काए पोतानी पुत्री पासे तेना धैर्यनी प्रशसा करी. अहीं राजपुत्री तेनु धैर्य, प्रियना पत्रमाहेनु लेखनचातुर्य, तेमज तेनु रूप, लावण्य अने वचनकळानुं कौशल्य जोइने जाणे स्तभित थइ गइ होय तेम एक अक्षर पण बोल्या विना स्थिर थइ गइ. ते वखते मित्रानंदे हिंमत करीने तेणीना हाथमाथी राजाना नामवाळु कडु काढी लीधु, अने तेणीनी जंघा उपर छरी वडे त्रिशूळनी आकृति करी, पछी त्याथी नीकळी अक्काने घेर

गयो. राजकुमारी तेना गुणोथी आक्षिप्त थइ सती विचारवा लागी के-"खरेखर ते सामान्य पुरुष नहोतो, माटे में तेनी साथे सभाषण पण कर्युं नहीं ते सारुं कर्युं नहीं." इत्यादि विचार करतां ते पाछली राते निद्रावश थइ.

हवे प्रातःकाळे मित्रानंदे राजा पासे जइने फरीयाद करी के-"हे राजा! अखंडित आज्ञावाळा आप राज्य करतां छतां अमुक श्रेष्ठी मारु मागणु धन आपतो नथी आप तो लोकपाळ छो, तेथी तेना दुष्टनो निग्रह करवो जोइए." ते सांभळीने राजाए पोताना सीपाइओ मोकली ते श्रेष्ठीने बोलाव्यो. श्रेष्ठीए बधो व्यतिकर जाण्यो, एटले राजसभामा आवताज प्रथम मित्रानंदने तेनुं बाकी रहेलु द्रव्य आपीने प्रणामपूर्वक राजाने कह्यु के-"पितानी पाछळना लोकाचारमां गुंथावाथी तथा पिताना विरहना शोकथी धन आपवामां विलंब थयो हतो." राजाए तेनी वात सत्य मानीने तेने रजा आपी पछी राजाए मित्रानंदने पूछयु के-"तें रात्रे मृतकनु रक्षण शी रीते कर्युं?" ते बोल्यो के-"हे राजा! ते रात्रिए भूत, वेताळ, राक्षस, शाकिनी, व्यंतर विगेरे अनेक प्रकारना शस्त्रो सहित आव्या हता, तेओनी साथे में रात्रीना त्रण पहोर सुधी घणुं युद्ध कर्युं. छेवटे ते सर्वे गुरुए आपेला मंत्रना बळथी नासी गया पछी चोथे पहोरे कोइ एक अप्सरा जेवी स्त्री मारी पासे आवी. तेणे दिव्य वस्त्र धारण कर्यां हतां, विविध प्रकारनां आभूषणथी शोभित हती, केश छूटा मुकेला होवाथी भयंकर लागती हती. मुखमांथी अग्निनी ज्वाळा काढती हती अने हाथमां कर्त्रीका राखेली हती. ते स्त्रीए मने कर्युं के-"हे दुष्ट! आजे तनेज खाइ जइश." में तेने जोइने विचार्युं के-"लोको कहेता हता ते मारी, खरेखर आज छे." तेथी हुं तेनी साथे भयंकर युद्ध करवा लाग्यो अने चमत्कारथी तेनो हाथ मरडीने तेना हाथमांथी सुवर्णनु कंकण काढी लीधुं. छेवटे ते नासवा लागी एटले में तेनी जमणी जंघामां छरीवडे त्रिशूळनु चिन्ह कर्युं." आ प्रमाणे सांभळवाथी राजा आश्चर्य पामीने बोल्यो के-"ते मारीना हाथमांथी खेंची लीधेलु कडु बताव." मित्रानंदे ते कडुं बताव्युं, एटले राजा पोतानु नामांकित कडु जोइने विचार करवा लाग्यो के-"अहो! शुं मारीज कन्या मरकी हशे? केमके आ भूषण तेनु छे." एम विचारीने तेनी खात्री करवा माटे शौचनुं मिष करीने राजा महेलमा गयो जइने जुए छे तो कन्या सुतेली हती, तेना हाथमां कंकण नहोतु, अने जंघापर करेलां चिन्ह उपर लूगडानो पाटो बांधेलो हतो. ते जोइने राजा जाणे वज्रथी हणायो होय तेवो थयो, अने बोल्यो

के-"अहो! आ पुत्रीए मारा वंशमां कलंक लगाड्युं." पछी राजाए सभामां जइने गुप्त रीते मित्रानंदने कह्यु के-"हे भद्र! मारी पुत्रीज मरकी ठरे छे, तेमां काइ संदेह नथी; तेथी तेनो निग्रह कर" ते बोल्यो के-हे राजा! आपना कुळमां एवु होय नहीं." राजाए कह्यु के-"नहीं, हुं मत्यज कहुं छु माटे तें सर्व प्रजाने मारी न नाखे, तेटलामां तु कोइ पण उपायथी तेनो निग्रह कर." मित्रानंदे कह्यु के-"प्रथम मने जोवा दो, के ते मारांथी साध्य छे के नहीं?" राजाए कह्यु के-"स्वइच्छाथी जइने जो" एटले मित्रानंद राजकन्या पासे गयो. तेणीए तेने ओळख्यो अने तेने बेसवा माटे आसन आप्युं. पछी मित्रानन्द बोल्यो के "हे सुभ्रू! मे तने कलंक आप्यु छे माटे हवे तार अहीं रहेवु योग्य नथी. परंतु तु चिंता करीश नहीं, तने सारे स्थाने लइ जइश" ते सांभळीने तेना गुणोथी आधीन थयेली राजकन्या बोली के-"आ मारा प्राण पण तमारे आधीन छे." कह्यु छे के-

अश्वो नरपतेश्चित्त, व्याख्यान महिला जलम् ।
तत्रैतानि हि गच्छन्ति, नीयंते यत्र शिक्षकै ॥१॥

भावार्थ-"आरळो, राजानु चित्त, व्याख्यान (कथा), स्त्री अने जळ एने ज्यां लइ जइए त्यां तेओ जाय छे" अर्थात् आघळाने जेटली पृथ्वी ने जे बाजु चलावो तेटलुं चाले छे, राजानु चित्त जे बाजु वाळो ते बाजु वळे छे, कथानो प्रवाह जे बाजु वहेवरावो ते बाजु वहे छे, स्त्रीने ज्यां लइ जाओ के मोकलो त्यां जाय छे अने जळ जे बाजु नीक करी आपो ते तरफ वहे छे."

मित्रानंदे कह्यु के-"राजानी समक्ष तारा उपर हुं सर्षवना दाणा नांखुं त्यारे तारे फूत्कार करवा" ते वात रत्नमंजरीए कबूल करी. एटले तेणे राजा पासे जइने कह्यु के-"हे स्वामी! आपे कह्यु ते सत्य छे पण एक सांढ तैयार करो, आज रात्रे मंत्रना बळथी तेने सांढ उपर बेसाडीने आपना देश बहार हुं लइ जइश पछी मार्गमां ज्यां सूर्योदय थशे त्यां ते मारी रहेशे" ते सांभळीने भय पामेला राजाए एक वायुना सरखी वेगवाळी सांढ मंगावी तेने आपी सध्यासमये ते राजकुमारीना केश पकडी मित्रानंदे तेना उपर सर्षवना दाणा छांट्या, एटले ते फुंफाडा मारवा लागी पछी तेने सांढ उपर बेसाडीने ते चालतो थयो. राजा गामना दरवाजा बंध करावीने पोताना महेलमां गयो. मित्रानंद पण मित्रनी पत्नी होवाथी माता प्रमाणे तेनी भक्ति करवा लाग्यो

अहीं अमरदत्त मित्रने बे मासनो अवधि पूर्ण थवाथी चिंता करीने तेमां

प्रवेश करवानी तैयारी करतो हतो, तेवामां काकतालीय न्यायनी जेम मित्रानंद अने रत्नमंजरी आवीने तेने मळ्या. तेज वखते तेज चिताना अग्निनी तथा पुरना लोकोनी साक्षीए तेनी साथे पाणीग्रहण कर्यु. नगरना लोको ते स्त्रीना स्वरूपनी, मित्रानंदना धैर्यनी अने अमरदत्तना भाग्यनी प्रशंसा करवा लाग्या

हवे तेज समये ते नगरनो राजा [1]अपुत्रीओ मरण पाम्यो, तेथी बीजो राजा मुकरर करवा माटे प्रधानोए मळीने [2]पंचदिव्य कर्या. तेणे फरतां फरतां नगर बहार आवीने अमरदत्तना उपर कळश ढोळ्यो, तेथी तेने मोटा उत्सव पूर्वक राज्यनो स्वामी कर्यो. पछी तेणे मित्रने मंत्रीपद आप्युं, अने रत्नसारने नगरशेठ बनाव्यो. आ प्रमाणे ते अखंडित आज्ञाथी राज्य चलाववा लाग्यो.

मित्रानंद राज्यकार्यमां गुंथायो हतो, तो पण तेने शबनुं वचन कदि पण विस्मरण थतु नहोतुं, तेथी तेणे अमरदत्त राजाने कह्युं के–"आपणुं नगर अहींथी नजीक छे, तेथी मारु मन घणु दुःखी रह्या करे छे, माटे मने दूर देश जवानी रजा आपो." राजाए कह्यु के–"हे मित्र! जो एम छे, तो आपणा नोकरोने साथे लइने वसंतपुर जा, परतु हमेशां कुशळ समाचार मोकलया करजे." पछी मित्रानंदे शुभ दिवसे त्यांथी प्रयाण कर्यु तेना जवाथी तेना वियोगे करीने पीडा पामतो राजा तेना कुशळ समाचार निरंतर इच्छतो हतो, पण घणा दिवसो गया छतां तेनु काइ पण वृत्तांत तेना जाणवामां आव्यु नहीं. तेथी गभरायेला चित्ते तेणे राणीने कह्यु के–" अरे मित्रानंदनी कांइ पण वार्ता सभळाती नथी." राणी बोली के–"हे प्राणनाथ! ज्ञानी गुरु विना संशय नाश पामे तेम नथी." अन्यदा वनपाळे आवीने राजाने विनति करी के–" हे स्वामी! आजे आपना उद्यानमां ज्ञानभानु नामना गुरुमहाराज पधार्या छे." ते सांभळीने राजाए वनपालने वधामणी आपी, अने राणीने साथे लइने मोटा उत्सव पूर्वक ते गुरुपासे गयो, गुरुने वांदीने योग्य आसने बेठो. गुरुए अनेक जनोए पूछेला संशयनो खुलासा आप्या, ते सांभळीने राजाए प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा गुरुने पोताना मित्रनी हकीकत पूछी, तेथी गुरुए कह्यु के–" हे राजन्! तारो मित्र अहींथी चालीने घणे दूर पहोंच्या पछी एक पर्वतनी पासे नदीने काठे पडाव करीने रह्यो हतो, अने तारा सेवको जमवामां रोकाया हता, ते वखते ओचिंती चोरनी धाड पडी, तेओए तारा सर्व सेवकोनो पराजय कर्यो, अने मित्रानंद एकलो त्यांथी नासी गयो. ते कोइक वट वृक्षनी नीचे सुतो हतो, तेवामां सर्पे तेने डस्यो.

---

1 पुत्र विनानो, वांझीयो 2 हाथी, घोडो, कळश, छत्र अने चामर ए पांच दिव्य करवामां आवे छे.

ते समये कोइ तपस्वी त्यां आव्या तेणे तेनुं विष उतार्यु त्यांथी मित्रानंद तारी पासे आवतो हतो, तेटलामां मार्गमां चोरलोकोए तेने पकड्यो, अने एक वाणीआने त्यां वेच्यो. ते वणिक पारसकुळ तरफ जतां रस्तामां अवंती नगरीनी बहार पडाव कर्यो. रात्रिए समय जोइने तारो मित्र बंधन तोडीने नाठो. गामनी खाळने रस्ते ते गाममां पेसवा जता हतो, एटलामां राजाना सीपाईओए तेने दीठो, एटले चोर जाणी चोरनी जेम पकडीने बांध्यो प्रात:काळ थतां राजाना हुकमथी तेने पूर्वोक्त वट वृक्ष उपर ज मारी नाखवा माटे बांधवामां आव्यो ते वखते तारो मित्र विचार करवा लाग्यो के-अहो शबनुं कहेलुं वाक्य साचुं थयुं. कह्युं छे के-

यत्र वा तत्र वा यातु, यद्वा तद्वा करोत्वसौ ।
तथापि मुच्यते प्राणी, न पूर्वकृतकर्मणः ॥ १ ॥

भावार्थ-"प्राणी गमे त्यां जाओ अथवा गमे ते उपाय करो परंतु ते पूर्वे करेलां कर्मोथी कोइ प्रकारे मुक्त थतो नथी

त्यां मित्रानंद मरण पाम्यो पछी एक दिवस गोवाळिआना बाळको ते वटनी पासे रमता हता, तेनी सोइ उछळीने तेना मुखमां पडी " आ प्रमाणे गुरुना मुखथी सांभळीने राजा अत्यंत रुदन करवा लाग्यो राणी पण विलाप करता बोली के-

यदाहं जवताऽऽनीता, तदाऽनेके विनिर्मिता ।
उपाया स्वविपत्तौ ते, क गता हा महामते ॥ १ ॥

भावार्थ-" हे दीयर ! ज्यारे तमे मने अहीं लाव्या ते वखते तमे घणा उपायो कर्या हता, छता हे बुद्धिशाळी ! आजे तमारी विपत्तिमां ते सर्वे उपायो क्यां गया ?"

गुरुए राजाने तथा राणीने कह्यु के—

शोकोऽवश्य परित्यज्य, राजन् धर्मोद्यम कुरु ।
येनेदृशानां दुःखानां, जाजनं नोपजायते ॥ १ ॥

भावार्थ-"हे राजन् ! शोकनो त्याग करीने धर्ममां उद्यम करो, जेथी फरीथी आवा दुःखोनुं स्थान थवाय नहीं, अर्थात् आवां दुःखो फरीथी आवे नहीं "

राजाए गुरुने फरीथी पूछ्युं के-" हे स्वामी ! ते मारो मित्र मरीने क्यां उत्पन्न थयो ?" गुरुए कह्यु के-"हे राजा तारी राणीनी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न

थयो छे, ते अनुक्रमे राजा थशे." फरीने राजाए पोताना, राणीना अने मित्रना पूर्व भव पूछया. त्यारे गुरुए कह्यु के–" हे राजा ! तुं आजथी त्रीजे भवे क्षेमंकर नामे कणबी हतो. सत्यश्री नामे तारी पत्नी हती अने चद्रसेन नामनो चाकर हतो. ते चाकर एकदा तारा खेतरमां काम करतो हतो, ते वखते तेणे बीजाना खेतरमांथी कोइक मुसाफरने धान्यनी शींगो लेता जोयो. ते जोइने चद्रसेन बोल्यो के–" आ महाचोरने उंचो बांधीने लटकावो." एवा वचनथी तेणे महा आकरुं कर्म बांध्युं सत्यश्रीए पण कोइ वखत पोताना पुत्रनी वहुने कह्युं के–" डाकणनी जेम उतावळी उतावळी शुं खाय छे ? धीरे धीरे केम खाती नथी ? के जेथी गळु तो रुंधाय नहीं" एम कहेवाथी तेणे पण कर्म बांध्यु. एकदा क्षेमंकरे नोकरने कह्यु के "आजे अमुक गाम जवानुं छे, माटे जा." त्यारे चाकर बोल्यो के–" आजे मारा स्वजनोने मळवा सारु हुं उत्सुक छुं, तेथी नहीं जइ शकुं." क्षेमकरे क्रोधथी कह्यु के–"भले तारा स्वजननो मेळाप न थाय, पण जवुं पडशे" एवामां कोइ बे मुनि गोचरी माटे पधार्या. तेने जोइने क्षेमकरे पोतानी स्त्रीने कह्यु के–"आ महर्षिओने मोटा हर्ष पूर्वक प्रासुक अने एषणीय अन्न वहोराव." ते वखते पेला चाकरे मनमां विचार कर्यो के–" आ दंपतीने धन्य छे के जेओ संपूर्ण भक्तिपूर्वक मुनिने दान आपे छे." तेवामां ते त्रणेना उपर अकस्मात् विजळी पडवाथी ते त्रणे एकी वखते मरण पाम्या. तेमां क्षेमंकरनो जीव तु अमरदत्त थयो, सत्यश्रीनो जीव तारी पट्टराणी थयो; तारो चाकर चद्रसेन ते मित्रानंद थयो. ते चाकरे जे मुसाफरने शींगो लेता बांधवानु कहुं हतुं, तेज मरीने पेला वड वृक्ष उपर व्यंतर थयो. ते मित्रानंदने जोइने पोताना पूर्व जन्मनुं वेर याद आववाथी शबद्वारा बोल्यो हतो."

आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळीने राजा तथा राणीने जातिस्मरण थयुं, गुरुनुं वचन सत्य मानीने घेर आव्या. पछी अनुक्रमे तेने पुत्र थयो, ते युवावस्था पाम्यो त्यारे तेने राज्य सोंपीने ते दंपतीए दीक्षा ग्रहण करी, अने क्रमे करीने तेओ मोक्षे गया.

आ दृष्टांतनु तात्पर्य ए छे के–थोडो पण क्रोध मोटा दुःखनुं कारण थाय छे. माटे मुमुक्षुए तेनो त्याग करवो.

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तो सप्तदशस्तंभस्य एकचत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २४१॥

मान त्याग करवा विष.

मानत्यागान्महोजस्वी, तत्त्वज्ञानी सुदक्षताम्।
दधन् दधौ महज्ज्ञान, बाहुबलिमुनीश्वरः ॥ १ ॥

भावार्थ—"मोटा पराक्रमी, तत्त्वज्ञानी अने अतीदक्षपणाने धारण करनार बाहुबली मुनीश्वरे मानने त्याग करवाथी केवळज्ञान प्राप्त कर्युं."

श्री बाहुबलीनु दृष्टान्त नीचे प्रमाणे—

श्री ऋषभदेवना पुत्र भरतचक्री साठ हजार वर्षे छ खंड पृथ्वी जीतीने अयोध्या नगरीमां आव्या. त्या बार वर्ष सुधी चक्रीनो राज्याभिषेक थती वखते कोण कोण राजाओ आव्या छे अने कोण नथी आव्या? एवु अवलोकन करता चक्रीए पोताना नाना भाइओने नहीं आवेला जाणीने तेओने बोलाववा माटे दरेकनी पासे पोताना दूत मोकल्या. दूतो तेमनी पासे जइने बोल्या के— "हे भरतराजाना भाइओ! तमो सर्वे भरत चक्री पासे आवी तेनी सेवा करो" तेओ बोल्या के—" भरत ऋषभदेवना पुत्र छे, तेम अमे पण ऋषभदेवना पुत्रो छीए. तो शुं ते अमारा थकी अधिक छे के अमारी पासे सेवा माग छे? हे दूतो! तमे तमारे स्थाने जाओ अमे पिताने पूछीने योग्य जणाशे तेम करशु." एम कहीने ते भाइओ सुवर्णगिरी उपर जिनेश्वर पासे गया, अने कह्यु के—" हे पिता! अमारो मोटो भाइ भरत छ खंडनु राज्य पाम्यो, तो पण हजु तृप्ति पाम्यो नथी. तेथी तमोए आपलु अमारु राज्य लइ लेवानी इच्छा करे छे माटे तमारी आज्ञा होय तो अमो सौ एकत्र थइने तेनुज राज्य लइ लइए" ते साभळीने प्रभुए तेमने भद्रिक जाणी धर्मोपदेश आप्यो के—

संबुज्झह किं न बुज्झह, संबोहि खलु पच्च दुल्लहा।
नो हुवणं मति राइओ, नो सुलहं पुणरवि जीविअं ॥ १ ॥

भावार्थ—"बोध पामो, केम बोध पामता नथी? आ प्राणीने बोधि जे सम्यक्त्व तेज दुर्लभ छे. मत्री के राजा थवु दुर्लभ नथी परतु फरीने मनुष्यपणानु जीवित[१] पामवुं दुर्लभ छे."

---

१ मद्र नहीं, कोइ पवत विशेष,

इत्यादि भगवाननी देशना सांभळीने ते अठाणु भाइओए प्रभुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी तेमनां राज्य भरत चक्रीए स्वाधीन करी लीधां. एकदा आयुधशाळाना रक्षके आवीने चक्रीने विज्ञप्ति करी के-"हे स्वामी ! तमे ज्यां सुधी बाहुबलीने जीत्या नथी त्यां सुधी छ खंड पृथ्वी पण जीती नथी एम समजजो. केमके चक्ररत्न हजु आयुधशाळामा प्रवेश करतु नथी." आ प्रमाणे सांभळीने चक्रीए तक्षशिला नगरीए एक वाचाळ दूतने मोकल्यो. ते दूत थोडा दिवसमां बाहुबलीना देशमां पहोच्यो. त्यां बहलीदेशमां गामे गामे अने नगरे नगरे घणा लोकोनां मुखथी बाहुबळीना यशनु श्रवण करतो ते तक्षशिलाए आव्यो. ते सुवेग नामना दूतने प्रतिहारे बाहुबलीनी आज्ञाथी सुवर्णना वर्णं जेवी सभामां प्रवेश कराव्यो. बाहुबलीए पोताना बंधुना तथा तेना देशनगरादिना कुशळ समाचार पूछ्या. ते कही रह्या पछी दूत बोल्यो के-"हे राजा ! तमने मळवाने उत्सुक थयेला तमारा मोटा भाइए तमने बोलाववा माटे मने मोकल्यो छे. माटे एक वार त्यां आवी तमारा भाइने नमी तेनी आज्ञा मस्तक पर चडावीने पछी अहीं पाछा आवजो. केमके लोको अपवाद आपे छे के भरत राजानो भाइ पण तेनी आज्ञा मानतो नथी, तो भरतनु पराक्रम अकिंचित्कर छे[1]. माटे लोकापवादने दूर करवा सारु तमे तेनी पासे आवो. नहीं तो तमने राज्यनो पण संशय थशे. कह्युं छे के-"

कराल गरलं सर्प, पावकः पवनोद्धुरः ।
प्रभु प्रौढप्रतापश्च, विश्वास्या न त्रयोऽप्यमी ॥ १ ॥

भावार्थ-"भयकर विषवाळो सर्प, पवनथी उद्धत थयेलो अग्नि अने प्रौढ प्रतापी राजा-ए त्रणे विश्वास करवा लायक नथी."

वळी हे राजा ! देवताओ पण जेनी सेवा करे छे तेवा तमारा बंधुनी सेवा करता तमारू काइ हीनपणु कहेवाशे नहीं." आ प्रमाणेनां दूतनां वचनो सांभळीने बाहुबली बोल्या के-"हे दूत ! तारो राजा मने जोइ लज्जा पामशे. केमके बाल्यावस्थामां जळक्रीडा करतां तेनो पग झालीने में तेने आकाशमां उछाळ्यो हतो ते पण शुं ते भूली गयो छे ? हे दूत ! साठ हजार वर्ष सुधी देश साधवामां पापकर्मनो संचय करनारा तारा पूज्यने मारा विना बीजो कोइ प्रायश्चित्त आपनार नथी, माटे तारा राजाने तेना बळनी परीक्षा करवा माटे जलदी अहीं लाव." ते सांभळी सुवेग भय सहित पाछो फरीने थोडाज दिवसमां पोताना नगरमां

[1] किंचित् पण नथी

आव्यो, अने बाहुबलीनुं सर्व वृत्तांत भरत महाराजाने कह्यु. तेणे जणाव्युं के–"बाहुबलीने इन्द्र पण जीतवा समर्थ नथी." ते सांभळीने भरत चक्री पोताना सवा करोड पुत्र अने सैन्य सहित तक्षशिला नगरी तरफ चाल्या. बाहुबळी पण पोताना पुत्रो तथा सैन्य सहित सामा आव्या. तेनो मोटो पुत्र सोमयशा एकलो पण त्रण लाख हाथी, घोडा अने रथनो जीतनार हतो, तेने त्रण लाख पुत्रो हता, तेमां सौथी नानो पुत्र पण एकलो एक अक्षौहिणी[1] सेना जीतवाने समर्थ हतो.

चक्रीना सैन्यमां चोराशी लाख डंकाओ, अढार लक्ष दुदुंभि, अने सोळ लाख बीजा वाजिंत्रो हता, ते सर्वानो एकज वखत नाद थवा लाग्यो. ते सांभळीने उत्साह पामेला बन्ने पक्षना वीरो परस्पर युद्ध करवा लाग्या. निरंतर युद्ध चालता एक दिवसे अनिलवेग नामनो विद्याधर के जे बाहुबलीनो भक्त हतो ते चक्रीना सेनापतिने अश्वक्रियावडे जीतीने आकाशमार्गे चक्रीनी हाथीनी सेनामां पेठो, अने दडानी जेम हाथीओने आकाशमां उछाळीने तेमने पृथ्वीपर पडता मुष्टिए हणवा लाग्यो. ते बीजा कोइ पण प्रकारथी पराजय नहीं पामे एम जाणीने चक्रीए तेनापर चक्ररत्न छोडयुं. चक्रने जोताज ते भयथी नाठो. पछी ते मेरु पर्वतनी गुफाओमां के समुद्र विगेरेमां ज्यां ज्यां गयो त्यां त्यां पूर्वे जन्मना करेला कर्मनी जेम चक्ररत्न तेनी पाछळने पाछळज गयुं. छेवटे पोताना रक्षण माटे तेणे विद्याना जोरथी वज्रनुं पांजरु बनाव्युं अने तेमां ते पेठो. ते वखते चक्ररत्नना अधिष्ठायक देवोए तेने कह्युं के–"अरे! तारा पराक्रमने फोगट केम लज्जित करे छे?" वज्रपिंजरमां रहेता छ मास वीती गया. [redacted] मासने अंते अभिमान आववाथी ते बहार नीकळ्यो. एटले चक्ररत्न तेनुं मस्तक कापीने चक्रीना हाथमां गयुं.

आवी रीते युद्ध करतां बार वर्ष व्यतीत थइ गया. एक दिवस चक्रीनो मोटो पुत्र सूर्ययशा बाहुबलीना सैन्यमां दावानळनी जेम प्रसर्यो अने थोडी वारमां काकानी पासे आवी पहोंच्यो. तेने जोइने बाहुबलीए कह्यु के–"हे वत्स! तुं नानो छतां मारी सेनामां पेठो, तेथी मने आनंद थाय छे. तारी जेवा पराक्रमी पुत्रथी अमारो वंश उद्योतने पाम्यो छे, परन्तु त्रण लोकमां पण मारा क्रोधने सहन करवाने कोइ पण शक्तिमान नथी, माटे तुं मारी दृष्टिथी दूर जतो रहे." सूर्ययशा बोल्यो के–"हे काका! आजे तमारा विना मारो युद्धमनोरथ कोण पूर्ण करशे?" एम कहीने तेणे धनुषनो टंकार कर्यो. ते वखते आकाशमां रहीने युद्ध जोनारा देवताओए एकत्र थइने बन्ने पक्षना सुभटोने युद्ध करवानो निषेध

---

[1] अक्षौहिणी सेनामां २१८७० हाथी तेटला रथो ६५६१० घोडा अने १०९३५० पायदळ होय छे. बीजी रीते पण तेनुं प्रमाण कहेलुं छे.

कर्यो अने बन्ने भाइओ पासे आवीने कह्यु के-"हे युगादीशना पुत्रो! तमारा पिताए आ विश्वनु पालन कर्युं छे, तेनो संहार करवा माटे तमे केम तैयार थया छो? माटे तेम करवुं तमने उचित नथी परतु तमारे बळनी परीक्षा करवी होय तो तमो बेज जण परस्पर अमारा ठरावी आपेलां दृष्टि युद्ध, वाग् युद्ध, मुष्टि युद्ध, दड युद्ध, अने अस्त्र युद्ध-ए पांच प्रकारनां युद्ध करो, अमे मध्यस्थ रहीने जोइशु." आ प्रमाणेनुं देवतानु वचन बन्ने भाइओए अगीकार कर्युं, एटले देवताओ तथा मनुष्यो साक्षी तरीके उभा रह्या. ते वखते चक्रीना सैनिकोए विचार्युं के-"आ बाहुबळीनी साथे द्वद्व युद्ध करवामा इद्र पण जीते के नहीं ते शकभरेलु छे, तो अमारा स्वामीनो शी रीते जय थशे?" आवा विचारो करता पोताना सुभटोने जोइने पोतानु सामर्थ्य बतावबा माटे चक्रीए एक मोटो कुवो खोदाव्यो, अने ते कुवाने एक कांठे उभा रहीने चक्रीए पोताना डाबा हाथे लोढानी मोटी साकळो बंधावी, पछी कुवाने सामे काठे सर्व सैनिकोने राखीने तेमने कह्यु के-"तमे सर्वे मळी आ सांकळ खेंचीने मने कुवामा पाडो." ते सर्वेए ते प्रमाणे तेने खेंच्यो पण चक्री जरा पण पोताना स्थानथी चलित थया नहीं. केमके आखा भरतखडनां नर, नारी, हाथी, घोडा विगेरे सर्व प्राणीओ भेगा थइने खेंचे, तो पण तेओ एक तल-मात्र चक्रीने खसेडवा समर्थ थया नही, तो पछी सेना मात्रथी तो शु थइ शके? पछी चक्रीए हृदयपर लेप करवाने मिषे पोतानो हाथ जराक खेंच्यो, एटले सर्व सैन्य लता उपर रहेला पक्षिओनी जेम सांकळ साथे लटकी गयु. आ प्रमाणे चक्रीनुं पराक्रम जोइने तेओ हर्ष पाम्या अने साक्षी थइने दूर उभा रह्या.

हवे चक्री तथा बाहुबळी प्रथम दृष्टियुद्ध करवा माटे सामसामा उभा रह्या, अने अनिमेष दृष्टिथी एक बीजानी सामु जोवा लाग्या. ते वखते नेत्रो रक्त थवाथी तेओ भयकर देखावा लाग्या. छेवट बाहुबळीनु भयकर नेत्रवाळु मुख जोइने चक्रीना नेत्रमां आंसु आवी गयां, तेथी ते तरत मींचाइ गयां ते जोइने चक्री तथा तेनुं सैन्य नम्र मुखवाळुं (लज्जित) थयु चक्रीने लज्जित जोइने बाहुबलीए कह्यु के-"हे भाइ! केम उद्वेग पामो छो? हवे वचनयुद्ध करो." तेथी चक्रीए अति घोर नाद कर्यो, जेथी आखु सैन्य बधिर थइ गयुं. त्यारपछी बाहुबलीए पण क्रोधथी सिंहनाद कर्यो, तेनाथी सर्व सैन्य मूर्च्छित जेवुं थइ गयुं. फरीथी चक्रीए अने बाहुबळीए सिंहनाद कर्या. ते वखते चक्रीनो शब्द दिवसना पहेला पहोरनी छाया माफक अने दुर्जननी मैत्रीनी माफक अनुक्रमे क्षीण थवा लाग्यो अने बाहुबळीनो शब्द वृद्धि पामवा लाग्यो. तेथी विलखा थयेला चक्री प्रत्ये बाहुबळीए कह्युं के-"हे भाइ! खेद पामशो नहीं हुं काकतालीय न्यायथी

फरि वाग्युद्धमा तमने जीत्यो,तेथी शु थयु? माटे हवे मुष्टियुद्ध करवा तैयार थाओ. आ प्रमाणेना बाहुबलीना वाक्यथी उत्साह पामेला चक्री मुष्टियुद्ध माटे तैयार थया. बन्ने जण हाथवडे स्कंध उपर आस्फोट करता कुदी कुदीने परस्पर आलिंगन करीने बाहुवडे एकबीजाने दबावता सता गर्जना करवा लाग्या. पछी बाहुबलीए चक्रीने हाथवडे पकडीने लीलामात्रमा दडानी जेम उंचे आकाशमा उछाळ्या. ते एटला उंचा गया के आकाशमा अदृश्य थइ गया. तेथी बन्ने सैन्यमा हाहाकार थइ गयो. बाहुबलीने पण विचार थयो के-"मारा बधु अतरिक्षथी भूमिपर पडीने विशीर्ण थइ न जाय त्या सुधीमां हु तेने अधरथीज झीली लउ." एम विचारीने तेमणे शय्यानी जेम बन्ने हाथ राख्या, अने उंची दृष्टि राखीने उभा रह्या घणी वार चक्री आकाशमाथी नीचे आव्या, एटले तेने बाहुबलीए पोताना हाथ उपर झीली लीधा. पछी चक्रीए क्रोधना आवेशथी बाहुबलीना मस्तकपर मुष्टिनो प्रहार कर्यो, जेथी ते मूर्च्छा पाम्या. घणीवार चेतना पामीने तेणे चक्रीना हृदयमा मुष्टिघात करी तेने मूर्च्छा पमाड्या, क्षणवारमा सज्ञा पामवाथी चक्रीए क्रोधथी रक्त थइने दडवडे बाहुबलीना माथामा प्रहार कर्यो, तेथी तेना मुकुटना सैंकडो ककडा थइ गया अने आखो मिचाइ गइ थोडी वारे पाछा सज्ज थइने बाहुबलीए पण लोहना दडथी चक्रीनु कवच (बखतर) चूर्ण करी नाख्यु करीथी चक्रीए दडाघातथी बाहुबलीने जानु सुधी पृथ्वीमां मग्न करी दीधा क्षणवारमां भूमिमाथी नीकळीने तेणे लोहना दडवडे चक्रीना मस्तकपर प्रहार कर्यो, तेथी ते कठ सुधी भूमिमा गुची गया. क्षणवार चैतन्य पामी चक्री बहार नीकळ्या. पछी तेणे विचार्यु के-"कोइ राजाथी चक्री जीताय नहीं एवी शाश्वती स्थिति छे छता हु तो आ बाहुबलीवडे पाचे युद्धमा जीतायो, तेथी मारामा चक्रीपणु नथी" एम विचारता तेना हाथमा चक्ररत्न आव्यु. ते लइने चक्रीए बाहुबलीने कह्यु के-"हे भाइ! हजु सुधी तने काइ नुकसान थयु नथी, माटे मारी आज्ञा मान्य कर, नहीतो आ चक्रथी तु यमराजनो अतिथि थइश." बाहुबलीए कह्यु के-"वृथा वाणीनो आडबर शु काम करो छो? हजु बाकी होय ते त चक्रनु बळ पण देखाडो" इत्यादि वाक्योथी निर्भ्रछना करायेला चक्रीए कोपथी तेना पर चक्र मूक्यु ते चक्र बाहुबलीनी प्रदक्षिणा करीने पाछु चक्रीना हाथमा आव्यु केमके "गोत्रना कोइ सामान्य माणस उपर पण चक्रनी शक्ति चालती नथी, तो आवा चरमशरीरी उपर तो तेनु पराक्रम शानुज चाले?" पछी बाहुबळी मुष्टि उपाडीने "आ हजार यक्ष सहित चक्रने अथवा तेना अधिपति चक्रीने चूर्ण करी नाखु" एम विचारता चक्री सन्मुख दोड्या वळी विचार थयो के "अवश्य आ मुष्टिथी तेनो नाश थशे, अने तेथी समग्र विश्वना लोको मने छ-

खेडना नाथने हणनार करशे, माटे अहंकारवडे अनेक पाप उपार्जन करनार मने धिक्कार छे। अने प्रथमथीज पिताश्री पासे जइने दीक्षा ग्रहण करनार मारा लघु बंधुओने धन्य छे. हजु सुधी पण पापकर्ममा तत्पर थयेला मने वारंवार धिक्कार छे।" इत्यादि विचारीने बाहुबलीए तेज उंची करेली मुष्टिवडे पोताना मस्तक परथी केशनो लोच कर्यो. तेज वखत देवोए 'साधु, साधु' एम बोलीने तेमना पर पुष्पवृष्टि करी.

तेमने निःस्पृही थयेला जोइने लज्जाथी नम्र मुखवाळो चक्री पोतानी निंदा अने तेमनी प्रशंसा करतो बोल्यो के–"हे बंधु! हु पापीओमां मुख्य छुं, अने तुं कृपाळुमां मुख्य छे, प्रथम तें मने अनेक प्रकारे जीत्यो, हमणां व्रत रुपी शस्त्रवडे रागादिक शत्रुओने पण तें जीत्या, माटे त्रण लोकमां ताराथी अधिक बळवान कोइ नथी हे बंधु! मारो अपराध क्षमा कर." इत्यादि स्वनिंदा अने बाहुबलीनी स्तुति करी बाहुबली मुनिए विचार्यु के–" हुं आम छद्मस्थपणे पिता पासे जइश तो प्रथमथी दीक्षित थयेला मारा लघु बंधुओने मारे वंदना करवी पडशे, तेथी मारू लघुपणु थशे, माटे केवळज्ञान पाम्या पछीज जइश." एम विचारीने ते त्याज कार्योत्सर्गे रह्या.

पछी चक्री बाहुबलीना ज्येष्ठ पुत्र सोमयशानी साथे बहलि देशमां गया. त्यां तक्षशिला नगरीना उद्यानमां हजार आरावाळु अने विविध प्रकारना मणि तथा रत्नथी जडित धर्मचक्र अने तेज नामनो प्रासाद जोयो. तेनी अंदर रहेला प्रभुने नमस्कार करीने चक्रीए सोमयशाने ते प्रासादनु वृत्तांत पूछ्युं. एटले सोमयशाए कह्युं के–" पूर्वे ऋषभदेव पिता विहार करतां करता संध्यासमये अहीं पधार्या हता. ते समाचार जाणीने आपना लघु बंधु बाहुबलीए विचार्यु के–' अत्यारे रात्रिनो समय थयो छे माटे प्रातःकाळे मोटा उत्सव पूर्वक पिताश्रीने वांदीश. ' एम निश्चय करीने सर्व सामग्री सज्ज करावी, प्रातःकाळ थता मोटी धामधुमथी उद्यानमा आव्या परंतु त्या प्रभुने जोया नहीं, तेथी ते बहु रुदन करवा लाग्या. अने 'धर्मकार्यमा विलंब करनार एवा मने धिक्कार छे। हवे मने क्यारे पिताना दर्शन थशे?' इत्यादि विलाप करवा लाग्या. तेने प्रधानोए विविध प्रकारे समजावी शांत कर्या. पछी वालुका (रती) मां प्रतिबिंबित थयेला भगवानना पादने नमन करीने पितानी भक्तिथी प्रधानने कह्यु के–'आ पिताश्रीनां पूज्य पगलानो कोइ स्पर्श न करो ' एम कही आठ योजनना विस्तारवाळो आ धर्मचक्र नामनो प्रासाद कराव्यो छे." आ प्रमाणे सांभळीने चक्रीए तेनी स्तुति करी. पछी तक्षशिलामा प्रवेशकरीने बाहुबलीनी गादीपर सोमयशाने बेसाड्यो. ते

१ बहु रुदन कर्यु, बहु रडा कर्यु

सोमयशाने चोत्रीश हजार राणीओ हती, अने श्रेयांस आदि पोतेर हजार पुत्रो हता. पछी भरत राजा छ खंड पृथ्वीमा पोतानी अखंड आज्ञा प्रवर्तावीने अयोध्या तरफ चाल्या.

अहीं बाहुबली मुनि निद्रा अने आहार विगरनो त्याग करीने जे वनमां कायोत्सर्ग ध्याने रह्या हता, त्या तेमना मस्तकना केशमा पणमा अने दाढी विगेरेमां पक्षिओए माळा कर्या, वर्षाऋतुमा दर्भना अंकुरा पगना तळीयाने विंधीने बहार नीकळ्या, लताओ तेमना शरीरने वींटाइ गइ अने तेमना तपोबळथी वाघ विगेरे हिंसक प्राणीओ पण शांत भावने पामी गया. एवी रीते एक वर्ष वीती गयु. त्यार तेमनो केवलज्ञाननी उत्पत्तिनो समय जाणीने तेमनु मान छोडाववाने माटे श्री ऋषभदेव भगवाने ब्राह्मी अने सुंदरी नामनी बे साध्वीओ के जे बाहुबलीनी बहेनो थती हती तेने मोकली ते साध्वीओ त्या आवीने लताना समूह मध्ये रहेला तेमने जेम तेम शोधी काढीने बोली-"हे बंधु बाहुबली! अमारे मुखे पिताश्री तमने कहेवरावे छे के-मदोन्मत्त हाथीपर चढवाथी केवलज्ञान शी रीते मळशे? तेथी आ मत्त हस्ती उपरथी नीचे उतरो जो तमारे मतगज उपर चढीने ज्ञाननी वांछा हती तो तक्षशिलानु राज्य शामाटे मूकी दीधु?" आ प्रमाणे सांभळीने बाहुबलीए विचार्यु के-" अहो! आ मारी बहेनो आम केम बोले छे? हु सर्वथा परिग्रह रहित छता मारु हस्तीपर चढवु शी रीते संभवे? पछी जरा वधारे विचार करता तेमना समजवामा आव्यु के-" अहो! जाण्यु, मान रूपी मतगज उपर हुं चडेलो छुं आटलो बधो काळ मे फोगट वनमा गुमाव्यो, केमके मान छता शी रीते केवळनी प्राप्ति थाय? माटे गुणथी अधिक एवा मारा पूज्य लघु बंधुओने जइने नमस्कार करु " इत्यादि विचार करीने जेवो पोतानो पग उपाडे छे तेवुज तेने केवळज्ञान उत्पन्न थयु. पछी देवताए आपेला यतिलिंगने धारण करी भगवानना समवसरणमा गया त्या " नमस्तीर्थाय " तीर्थने नमस्कार थाओ-एम कही जिनेश्वरनी प्रदक्षिणा करीने केवळीनी सभामा बेठा.

" खरेखर बाहुबलीनेज महा बलवान जाणवा के जेणे प्रथम छ खंडना नाथने जीती लीधा अने पछी विश्वमा कटकरूप मानरूपी महामल्लने हणाने परमानन्दपद प्राप्त कर्यु "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य द्विचत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २४२ ॥

व्याख्यान २४३ मुं.

मायापिंड विषे

नक्कादिकृतवे कुर्वन्नानारूपाणि मायया ।
साधुर्वंचयते श्राद्धान्, मायापिंडः स उच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"साधु भात पाणी विगेरेने माटे मायावडे नाना प्रकारना रूपो करीने श्रावकोने छेतरे तेने मायापिंड कहेवाय छे." तेनी उपर दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

अषाढभूति मुनिनुं दृष्टांत

राजगृही नामनी नगरीमां सिंहरथ नामे राजा राज्य करतो हतो. त्यां एकदा विविध ज्ञानवाला, तपस्वी अने बुद्धिमान् धर्मरुचि आचार्य पधार्या. गोचरीने अवसरे तेमना शिष्य अषाढभूति गुरुनी आज्ञा लइने एकला गोचरी माटे नगरमां गया. मध्यान्ह समय थता महर्धिक नामना नटने घेर पहोंच्या. त्यां ते नटनी भुवनसुंदरी अने जयसुंदरी नामनी बे कन्याए सुगंधी द्रव्यवालो एक मोदक वहोराव्यो. ते लइने बहार नीकली ते मुनिए विचार्युं के—"आ एक लाडु तो मारा गुरुने आपवो जोइशे." एम धारीने तत्काल युवावस्थावालुं बीजुं रूप धारण करी फरी ते नटना घरमां प्रवेश करी धर्मलाभ आप्यो. एटले ते कन्याओए बीजो एक मोदक वहोराव्यो. ते लइने बहार पोलना दरवाजा सुधी जइ तेणे विचार्युं के—"आ बीजो मोदक तो मारा धर्माचार्यने आपवो पडशे." एम विचारी काणी आंखवालुं अतिवृद्ध साधुनुं रूप धारण करी त्यां जइने त्रीजो मोदक लीधो. वली बहार आवीने "आ तो उपाध्यायने आपवो पडशे" एम धारी कुबडुं रूप धारण करीने चोथो मोदक लीधो. ते पण "संघाडाना साधुने आपवो पडशे" एम धारीने कोढीयाने रूपे पांचमो लाडु लीधो. "आ पण वडील गुरु भाइने आपवो पडशे" एम धारीने पोताने माटे बार वर्षना बालसाधुनुं रूप धारण करीने छठ्ठो लाडु लीधो. आ प्रमाणे पोतानो मनोरथ सिद्ध करी ते गुरु पासे आव्या.

आ साधुनुं सर्व चरित्र बारीमां बेठेला नटे जोयुं तेथी तेणे विचार्युं के—"अहो! आ घणो सारो नट थइ शके तेम छे." पछी तेणे पोतानी स्त्रीने तथा बंने कन्याओने कह्युं के—"आ साधुने खावा पीवानुं सारी रीते आपीने तेने लोभ पमाडजो, केमके ते आपणेमाटे सुवर्णपुरुष छे. ते अनेक रीते रूपनुं परावर्तन

करवानी लब्धि जाणे छे. माटे तेने आपणे घेर निरंतर आव्या कर तेरी रीते तेनी सेवा बजावजो. ते रसनो लोभी छे, एटले तरत फसाइ जशे. मायावीने मायाज बतावबी "पछी बीजे दिवसे पण अषाढभूति साधु त्या वहोरवा आव्या, एटले तेने घणा मोदक आपीने तेणे कह्यु के-" हे पूज्य ! आप हमेशा अहीं पधारजो. आपना पसायथी अमारा घरमा घणी समृद्धि छे " ए प्रमाणे नटना कहेवाथी ते साधु हमेशा त्या आववा लाग्या अने नित्यपिंड ग्रहण करवा लाग्या वहोरावती वेळाए नटनी कन्याओ हाव भाव विलास पूर्वक हास्य करती, उत्तम वस्त्र धारण करती, अने कोइ कोइ वखत कटाक्ष पूर्वक मर्म वचन बोलती ते सर्व जोइने वशीभूत थयेला साधु रागदृष्टिथी तेनी आकृति, केशपास अने पगनी पानी विगेरे वारवार जोता हता एक दिवस ते कन्याओए तेने कह्यु के-" हे स्वामी ! आपनु स्वरूप तथा श्रेष्ठ चातुर्य जोइने अमे आपना उपर आसक्त थयेली छीए. हजुसुधी अमे कुमारी छीए तेथी कृपा करीने अमारा अगमा व्याप्त थयेली कामज्वरनी पीडानो तमे नाश करो, अहीं चित्रशाळामाज रहीने आकडाना तूल जेवी कोमळ शय्यामा अमारी साथे विषयसुख भोगवो अने उत्तम मोदकोनो स्वाद चाखो. जे माणस प्रत्यक्ष मळेला सुखोने मूकीने परोक्ष एवा परलोकना सुखनी वाछा करे छे ते मूर्ख छे " मुनिए कह्यु के-" हु मारा गुरुनी तथा धर्माचार्यनी रजा लइने पछी आवीश." ते कन्याओ बोली के-" हो अमे आपना विरहनी व्यथा सहन करवा शक्तिमान नथी, माटे अमने सत्य वचन आपो, के जेना आधारथी अमे घडी, मुहूर्त विगेरे काळ निर्गमन करीए " ते साभळीने तेमनी चेष्टा इष्ट करीने चारित्र चेष्टाथी भ्रष्ट थयेला ते मुनि पाछा आववानु वचन आपीने गुरु पासे गया अने गुरु प्रत्ये कह्यु के-" हे पूज्य गुरु ! में बाल्यावस्थामाज दीक्षा ग्रहण करी हती, तेथी आज सुधी पंचेन्द्रियनु सुख काइ पण जोयु नथी. हाल्मा देवागना जेवी बे नटकन्याओ मने चाहे छे, माटे हु त्या जाउ छु, मने आज्ञा आपो अने आ तमारा रजोहरण, मुखवस्त्रिका विगेरे ग्रहण करो. " ते साभळी सूरिए विचार्यु के-" अहो ! मायापिंडथी आहार ग्रहण करवानु आ फळ छे केमके उत्तरगुणनी हानि थवाथी मूळगुण पण परिणामे नष्ट थाय छे. परतु आ नटपुत्री पासेथी नीकळीने अहीं आज्ञा लेवा आव्यो छे, तेथी काइक आज्ञावर्ती जणाय छे. पण भ्रष्ट थयेला सयमना परिणामथी ते जाणतो नथी के सावद्य वचन नहीं बोलनारा मुनिओ सावद्य कर्ममा प्रवर्तवानी आज्ञा शी रीते आपशे ? तो पण तेनी स्थिरतानी परीक्षा करुं के ते सर्वथा नतथी भ्रष्ट

थयो छे के काइक न्यूनता छे ?" एम विचारीने सूरि बोल्या के–" हे शिष्य ! व्रताराधनथी प्राप्त थनारा इन्द्रादिकना सुखने मूकीने तुं नटपुत्रीना अंगसंगमां आसक्त थयो छे. तो पण तारे मद्य तथा मांस खावुं नहीं ए,बेना प्रत्याख्यान कोइ वखत पण छांडवा नहीं, अने तेना खानारनो पण संग करवो नहीं." आटलुं मारुं वचन प्रमाण कर." आ प्रमाणे गुरुवचन सांभळीने ते विनयथी नम्र थइने बोल्यो के–" हे गुरु ! जीवन पर्यंत आपनुं आ वचन हुं धारण करीश." गुरुए विचार्युं के–" आटलाथीज आने मोटो लाभ थशे. केमके ते सर्वथा श्रद्धारहित हजु थयो नथी, तेथी जो के संयमगुणठाणाथी कर्मवशे भ्रष्ट थयो छे तोपण अल्प मात्र विरतिनुं रक्षण करवाथी ते देशविरति रहेशे, अने तेथी पण तेनो पुनः उद्धार थशे."

पछी ते अषाढभूति चारित्रनो त्याग करी, [1]चरित्रनो रसिक थइने नटने घेर आव्यो, अने तेना घरनां सर्व माणसोने कह्युं के–"तमो सर्वे मद्यमांसनो सर्वथा त्याग करो तो हुं तमारे त्यां रहुं, अन्यथा नहीं." नटे तेनुं वाक्य अंगीकार करी पोतानी बन्ने कन्या तेने परणावी. तेमनी साथे ते सुखविलास भोगववा लाग्यो. पछी राजानी पासे जे जे नटो आवता तेमने पोतानी कळाथी जीतीने अनेक धन वस्त्र विगेरे मेळवी तेणे पोताना ससरानुं घर भरी दीधुं, तेथी समग्र नटकुळमां तेनी अत्यंत प्रशंसा थवा लागी.

आ प्रमाणे निरंतर सुखमां मग्न रहेता तेणे बार वर्ष निर्गमन कर्या. तेवामां कोइ एक नट अषाढ नटनी अनेक प्रकारनी प्रशंसा सांभळीने ते सहन न थवाथी तेने जीतवा माटे राजसभामां आव्यो, तेणे वादमां अनेक नटोने जीत्या हता, अने तेमनी संख्या करवा माटे चोराशी सुवर्णना पुतळां तेने पगे बांधेलां हतां. तेणे राजा प्रत्ये विज्ञप्ति करी के–" तमारा राजनटने बोलावो, तेने मारी कळा देखाडीने हुं जीती लइश." राजाए अषाढ नटने बोलाव्यो, एटले ते राजसभामां आव्यो अने ते परदेशी नटनी साथे तेणे सरत करी के–" आपणामां जेनो पराजय थाय ते पोतानुं सर्वस्व छोडीने जतो रहे." आ प्रमाणे बन्ने जणाए सर्व जन समक्ष अंगीकार कर्युं पछी अषाढे पोताने घेर जइ स्वजनोने कह्युं के–" हुं ते नटने जीतवा माटे जाउं छुं." त्यारे तेनी बन्ने प्रियाओ बोली के–" कार्य साधीने वहेला आवजो " पछी ते सर्व सामग्री लइने राजसभामां गयो. तेना गया पछी तेनी स्त्रीओए विचार्युं के–" अहो ! मद्य मांस खाधा विना

१ स्त्रीचरित्रमां रसिक

आपणे घणा दिवसो निर्गमन कर्या, माटे आजे तो हवे इच्छा पूर्वक रमीए. आपणा पति तो नटनी साथे बाद करवा गया छे, ते छ मासे आवशे." एम विचारीने तेमणे पुष्कळ मद्यपान कर्युं, तेथी तेओ उन्मत्त थइ गइ. अहीं राजसभामां परदेशी नटे प्रथम पोतानी कळा देखाडी, एटले अषाढे लीलामात्रमां अनेक कळाओ देखाडीने तत्काल तेने जीती लीधो, तेथी अहंकार रहित थयेलो ते नट पुनर्वा विगर पोतानी सर्व लक्ष्मी मूकीने लज्जाथी नासी गयो.

अषाढ नट तरतज पोताने घेर आव्यो. त्यां आवीने जुए छे तो बन्ने स्त्रीओने मद्योन्मत्त थइने पडेली, दुर्गंधी मुखवाळी अने माखीओ जेना मोंढा उपर बणबणी रही छे एवी तेमज माखीओथी आखे शरीरे व्याप्त थयेली दीठी. तेने जोइने अषाढे विचार्युं के–" धिक्कार छे मने के हुं आवी मायावी अने अनेक माखीओए जेना मुखनुं चुंबन कर्युं के एवी स्त्रीओ उपर भ्रमरनी जेम आसक्त थइने [1]उभयभ्रष्ट थयो." इत्यादि विचार करतां गुरुनुं वाक्य याद आववाथी तेने वैराग्य उत्पन्न थयो. एटले तरतज मेडी उपरथी नीचे उतरी सर्वनी समक्ष ते बोल्यो के–" अनेक पापना स्थान रूप स्त्रीओना विचित्र चरित्र जोइने मोहमां लपटाइ गयेला मे हाथमां रहेला चारित्ररत्ननुं रक्षण कर्युं नहीं तथा [2]सीमतीनीओनो सीमत (सेंथो) प्रथम नरकना सीमंत नामना पहेला नरकवासाने आपनार छे, एवुं निष्कारण जगद्वत्सल जिनेश्वरनुं वचन मे अज्ञानीए व्यर्थ कर्युं, परंतु हवे 'चरित्र' शब्दना पहेला अक्षरने बीजी मात्रा सहित करुं. प्रथम तेने [चारित्रने] मात्र रहित कर्यो हतो ते योग्य कर्युं नहोतुं " आ प्रमाणेना तेना वाक्यो सांभळीने ते नटकन्याओ भयभीत थइ गइ, जेथी तेने मद्यनो केफ उतरी गयो, एटले तेओ दीनमुखे आखमांथी अश्रुपात करती पगे लागीने बोली के–" हे स्वामी ! हे प्राणनाथ ! आ दासीओनो एक अपराध क्षमा करो अमारूं अवळानुं उगतुं यौवन कम व्यर्थ करो छो ?" ते बोल्यो के–" एवा सुखभोग अनंतवार भोगव्या छतां पण भोगनी आशा परमात्मानो मार्ग पाम्या विना वृद्ध थती नथी अर्थात् नाश पामती नथी." इत्यादि घणे प्रकारे तेणे धर्मनो उपदेश कर्यो, पण ते स्त्रीओ काइ पण धर्म पामी नहीं, अने उलटो धनोपार्जन करवानो उपाय माग्यो छेवट कह्युं के–"हे प्राणनाथ ! पुष्कळ धन आपीने पछी जाओ, नहीं तो जवा नहीं दइए" त्यारे अषाढ सिंहरथ

१ आलोक तथा परलोकना सुखथी भ्रष्ट २ स्त्रीओना ३ चाउंश मात्रा एटले काना सहित करवाथी चारित्र थाय

राजा पासे गयो अने कह्यु के-"हे राजा! तमने भरत चक्रवर्तीनुं नाटक बतावुं." राजाए ते वात अंगीकार करी, तेथी तेणे सात दिवसमां भरत चक्रवर्तीनु नाटक नवु तैयार कर्युं. पछी नाटकना आरंभमां पांचसो राजपुत्रोने तैयार करी तेओने कह्युं के-" हुं जे प्रमाणे करूं तेज प्रमाणे तमारे पण करवु." पछी पोते भरत थयो; अने चक्रनी उत्पत्ति, छ खंडनु साधवु, बत्रीस हजार मुकुटबद्ध राजा, चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख घोडा अने चोराशी लाख रथनु निर्माण करवुं, छन्नु करोड सुभटो सहित छ खंड जीत्या पछी विद्याधरनी कन्याने स्त्रीरत्न तरीके परणवी, ऋषभकूट पर्वते जइ पोतानुं नाम लखवु, एक लाख अने बाणु हजार स्त्रीओने लइने अयोध्यामां आववु अने राज्याभिषेकनु करवु-इत्यादि यथाविधि भजवीने अनुक्रमे ते आदर्शभुवनमां गयो. त्यां आंगळीमांथी वींटी पडी गइ ते जोइनेज भरतनी जेम सर्व अनित्यादि भावनाओ भावतां केवळज्ञान प्राप्त थयुं. एटले त्यांज पंचमुष्टि लोच करी देवताए आपेलो मुनिवेश धारण करीने नीकळ्यो, अने राजा विगेरेने प्रतिबोध करी नाटकना पात्ररूप करेला पांचसो राजपुत्रोने बोध पमाडी दीक्षा आपी, तथा बीजा अनेक भव्य प्राणीओने पण बोध पमाड्यो. नाटकने माटे रत्नादिक सर्व वस्तु एकठी करी हती ते सर्व तेना ससरा नटे लइ लीधी, तेथी तेनु जीवन पर्यंतनुं निर्धनपणु टळी गयु.

हवे अषाढभूति मुनिए पांचसो साधु सहित अन्यत्र विहार कर्यो. केवलज्ञान प्राप्त थयेलु होवाथी ते पोताना गुरुने वांदवा योग्य थया. ते स्वरूप जाणीने तेना गुरु विगेरे वारंवार मस्तक धुणावीने तेनी प्रशंसा करवा लाग्या के-"अहो! देवताओ पण चक्रीना जेवी संपत्ति विकुर्वे छे, तथा नटारना स्वरूपो यथास्थित देखाडे छे, तेमां कांइ आश्चर्य नथी. परंतु आ अषाढमुनिए तो बाह्य रूपो एवी रीते कर्यां के जेथी आंतर स्वरूप पण भेद रहित प्रगट करी बताव्यु, तेज मोटु आश्चर्य छे."

" आ अषाढ मुनि मायापिंडनु भोजन करवाथी भ्रष्टचित्त थया, तो पण मात्र एक मद्यमांस त्याग रूप नियमनी शुद्धिथी तेणे पोताना आत्माने तार्यो अने बाधकारी स्थाने रहीने पण भरत चक्रीनु नाटक करीने तेणे आत्मानु मूळ स्वरूप प्रगट कर्युं "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य
त्रिचत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंध. ॥ २४३ ॥

व्याख्यान २४४ मुं

लोभ विषे

पुमाननर्थं प्राप्नोति, लोभक्षोभितमानसः ।
यतो लोभपराभूत, सागरः सागरेऽपतत् ॥ १ ॥

भावार्थ-" जेनुं मन लोभथी क्षोभ पामेलुं छे ते मनुष्य अनर्थने पामे छे. केमके लोभथी पराभव पामेलो सागरश्रेष्ठी समुद्रमां पड्यो."

अति लोभो न कर्त्तव्यो, लोभो नैव च नैव च ।
अतिलोभाभिभूतात्मा, सागरः सागरं गतः ॥ २ ॥

" अति लोभ न करवो, लोभ नज करवो, नज करवो, अतिलोभथी पराभव पामेलो सागरशेठ समुद्रमां गयो "

सागर श्रेष्ठीनुं दृष्टांत

समुद्रने कांठे ध्यानसागर नामे एक शहर हतुं. तेमां चोवीश करोड सोनैयानो पति सागर नामे श्रेष्ठी रहतो हतो. ते जगनी जेवो गुरु दृष्टिवाळो हतो, जुगारीनी जेम सर्वने ठगतो हतो, तेनुं वचन कागडानी जेवुं कठोर हतुं, तेनी गति (रीतभात) सर्पनी जेवी कुटिल हती अने पामर माणसनी जेम ते सर्वदा कलहप्रिय हतो. तेने चार पुत्रो हता. तेमने एकेक स्त्री परणायेली होवाथी घरमां चार वहुओ हती. अन्यदा श्रेष्ठीनी स्त्री मरण पामी त्यारथी श्रेष्ठी अति कृपण होवाथी तथा अविश्वासु होवाथी घेरज रहवा लाग्यो, अने तेनी नजरे घरमां कोइ पण सार भोजन करे, सारां वस्त्र पहेरे, के स्नान दान विगेरे करे तो तेनी साथे ते हमेशां कलह करवा लाग्यो. भिक्षुको तेने घेर जता नहीं एटलुंज नहीं पण कागडा विगेरे पक्षीओए पण तेनुं द्वार तजी दीधुं हतुं. पोषण करवा लायकनुं पोषण नहीं करवाथी गृहस्थाश्रमी लोकाचाररहित कहवाय छे अने तेथी तेनी शोभा तथा महिमा नाश पामे छे अने अपयश प्राप्त थाय छे. कह्युं छे के—

वृद्धौ मातापितरौ, साध्वी भार्या लघूनि शिशूनि ॥
अप्युपायशतं कृत्वा, पोष्याणि मनुरब्रवीत् ॥ १-॥

भावार्थ–"वृद्ध माता पिता, सती स्त्री अने नानां बाळको सेंकडो उपाय करीने पण पोषण करवा लायक छे, एवुं मनुए कहेलु छे."

सागर श्रेष्ठीनी आवी रीतभातथी तेनु सघु कुटुंब दुःखी थतुं हतु, पण तेना पुत्रनी स्त्रीओ तो रात्रे शेठना सुता पछी स्वछंदपणे खाती हती अने क्रीडा करती हती. एक वखत कोइ योगिनी आकाशमार्गे जती हती, तेणे ससराने घेर रहेतां छतां तेनी प्रीति नहीं होवाथी म्लान मुखवाळी तेनी वहुओने गोखमां बेठेली जोइ, तेथी कौतुकवडे ते तेमनी पासे आवी एटले तेओए तेमने गोत्रदेवीनी जेम नमस्कार कर्यो, तथा मोदक विगेरे आपीने खुब संतुष्ट करी. एटले ते योगिनी मात्र पाठ करवाथीज सिद्ध थाय एवी आकाशगामी विद्या तेमने आपीने पक्षीनी जेम आकाशमां उडी गइ.

एकदा रात्रिए पतिविगेरे सर्व सुइ गया त्यारे चारे वहुओ पेला मंत्रवडे एक लाकडु अधिवासित करी तेना पर चडीने रत्नद्वीप गइ. त्या सर्वत्र क्रीडा करीने पाछली रात्रे पाछी आवी, अने ते लाकडु ज्या त्यां मूकीने पोतपोताने ठेकाणे सुइ गइ. ए प्रमाणे हंमेशां रात्रीए करवा लागी. एक दिवस पशुओने बांधवा छोडवानुं तथा दोहवानुं काम करनार चाकरे ते लाकडु हंमेशा आडु अवळुं थतुं जोइने तेनुं कारण जाणवानी इच्छाथी रात्रे गुप्त रीते जोयुं एटले वहुओनुं चरित्र जाणी लीधुं. पछी तेणे विचार्युं के-" आ हंमेशां क्या जाय छे ? ते काले जोइश. " पछी बीजे दिवसे रात्रे ते पोतानु सर्व कार्य करीने ते काष्टनी पोलाणमां संताइ रह्यो. समय थतां हमेशनी जेम ते काष्ट उडीने सुवर्णद्वीपे गयुं चारे स्त्री लाकडापरथी उतरीने चोतरफ फरवा गइ, एटले चाकर पण बहार नीकळ्यो, त्यां तो सर्व पृथ्वी सुवर्णमय जोइने ते विस्मय पाम्यो. पछी ते वहुओने आववानो वखत थयो. एटले त्यार पहला ते चाकर थोडुक सुवर्ण लइने पूर्वनी जेम काष्टना पोलाणमा भराइ गयो. थोडी वारे ते स्त्रीओ पण आवी अने मंत्रशक्तिथी ते काष्टसहित क्षणवारमा पोताने ठेकाणे आवीने सुइ गइ. आ प्रमाणे केटलोक काळ गयो. पेलो चाकर सुवर्ण लाव्यो हतो, तेथी शेठनाघरनु काम काज करवामां अनादर करवा लाग्यो अने श्रेष्ठी तेने काइ कहे तो सामु बोलवा लाग्यो. तेथी धूर्तमां शिरोमणि श्रेष्ठीए विचार्यु के-"द्रव्यवान थया विना आम बोले नहीं,तेथी आणे मारा घरमाथी कांइक चोरी लीधु जणाय छे" एम धारीने एकदिवस तेने एकांतमां बोलावीने श्रेष्ठीए युक्तिपूर्वक एवी रीते पूछयुं के तेणे पेटना अजीर्णनीजेम

सर्व वृत्तांत कही दीधु शेठे कह्युं के-"आजे मारे जवुं छे, तुं कोइने वात करीशनहीं" एम चाकरने कहीने शेठ रात्रीने समये ते काष्टनी पोलाणमा भराइ गया. प्रथमनी जेम लाकडु सुवर्णद्वीपमा गयु अने वहुओ उतरीने फरवा गइ. एटले श्रेष्ठी पण बहार नीकळ्यो त्या सर्व पृथ्वी सुवर्णमय दीठी. एटले लोभथी तेणे लाकडामा माय तेटलुं सुवर्ण भरी दीधु, अने पोते खोळामां रखाय तेटलु सुवर्ण राखीने तेना पोलाणमां अगनो सकोच करीने बेठो. समय थता चारे वहुओ आवी अने हमेशनी रीते बे वहुओ उपर बेठी अने बे वहुओए लाकडु उपाड्युं. परंतु उपाडनारी वहुओने तेनो भार बहु लाग्यो. तो पण जेम तेम करीने ते समुद्रना मध्य भाग उपर आवी एटले ते वहुओ थाकी गइ. तेथी तेणे कह्यु के-"आ लाकडामा तो बहु भार लागे छे, माटे आने समुद्रमा मूकी दइने पेलु पाणी उपर तरतुं लाकडु लइए." ते साभळीने पोलाणमां रहेलो श्रेष्ठी बोल्यो के-"हे वहुओ ! हु माहे बेठो छु माटे आ लाकडु मूकी देशो नहीं." ते साभळीने वहुओ बोली के-"तमे चोवीश करोड द्रव्यना स्वामी छता तमारे शुं ओछु हतुं के अहीं आव्या ?" एम कही औषध विना व्याधी जाय छे एम धारीने तेणे लाकडासहित सागरशेठने समुद्रमां फेंकी दीधो अने बीजा लाकडापर बेसीने तेओ पोताने घेर आवी. समुद्रमा पडेलो सागर श्रेष्ठी बने प्रकारे नीचे गयो अर्थात् आकाशमाथी नीचे पड्यो अने मरण पामीने नरक गयो. कह्यु छे के.-

> लोभाभिभूतान् प्रभवती जीवान्,
> दुःखान्यसख्यानि पदे पदेऽपि ।
> तृष्णा हि कृष्णाहिवधूरिवोग्रा,
> निहंति चैतन्यमशेषमाशु ॥ १ ॥

भावार्थ-"लोभथी पराभव पामेला प्राणीओने पगले पगले असंख्य दुःखो प्राप्त थाय छे, अने काळी नागणना जेवी उग्र तृष्णा सर्व प्रकारना चैतन्यना शीघ्रपणे नाश कर छे"

> वामदेवेन मित्रेण, रुपदेवो वनांतरे ।
> घोरनिद्रावशीभूतो, लक्षलोभेन मारित ॥ २ ॥

भावार्थ—"वनमां घोर निद्राने वश थयेला रूपदेवने तेना मित्र वामदेवे एक लाख द्रव्यना लोभथी मारी नाख्यो"

वळी लोभ ए सर्व पापनो बाप छे. कह्युं छे के—

जनकः सर्वदोषाणां, गुणग्रसनराक्षसः ।
कंदो व्यसनवल्लीनां, लोभः सर्वार्थबाधकः ॥ ३ ॥

भावार्थ—"लोभ सर्व दोषोनो बाप (उत्पन्न करनार) छे, सर्व गुणोनो नाश करवामां राक्षस समान छे, दुःखरूपी लतानो कंद (मूळ) छे, अने धर्मादिक चारे पुरुषार्थने बाध करनार छे." तेनी उपर शुभंकर ब्राह्मणनुं दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

पृथ्वीपुर नामना नगरमां शुभंकर नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने धर्मनुं मर्म जाणनारी जैनमति गुणवती नामे भार्या हती. एकदा ते ब्राह्मण विद्याभ्यास करवा माटे परदेशमां गयो. त्यां तेणे चार वेद, अढार पुराण, व्याकरण, अलंकार, न्याय, साहित्य, कोश विगेरे सर्व शास्त्रोनो अभ्यास कर्यो. पछी स्थाने स्थाने अनेक विद्वानोने वादमां जीतीने जयवंत थयो सतो ते पोताने घेर आव्यो. त्यां पण पोताना शास्त्रज्ञाननो आडंबर सर्व लोकने अत्यंत देखाडवा लाग्यो ते जोइ तेनी जैनधर्मी भार्याए विचार्युं के—"आ मारो पति मिथ्यात्वीओना एकांतवादी शास्त्रो भणेलो छे, परंतु स्याद्वादमार्गने नहीं जाणनार मनुष्य वस्तुनुं योग्यायोग्य विवेचन जाणतो नथी, माटे हुं तेने कांइक पूछुं" एम धारी तेणे पोताना पतिने पूछ्युं के—"हे स्वामी! सर्व पापनो बाप कोण?" ब्राह्मणे कह्युं के—"हे प्रिये! हुं शास्त्रमां जोइने कहीश." पछी ते जेटलां शास्त्र भण्यो हतो ते सर्व तेणे जोयां, पण तेमांथी पापनो बाप क्यांइ नीकळ्यो नहीं. तेथी तेणे खेद पामीने स्त्रीने कह्युं के—"हे प्रिया! तारा प्रश्ननो जवाब तो कोइ शास्त्रमांथी नीकळतो नथी, पण तें आ प्रश्न क्यांथी सांभळ्यो?" ते बोली के—"में रस्ते जतां कोइ जैनमुनिना मुखथी सांभळ्युं हतुं के—'सर्व पापनो एक पिता छे' तेथी हुं तमने तेनुं नाम पूछुं छुं." विप्र बोल्यो के—"हुं ते साधु पासे जइने पूछुं अने संदेह रहित थाउं." पछी ते विप्र साधु पासे जइने बेठो अने संस्कृत भाषामां केटलाक प्रश्नो कर्या, तेना यथास्थित उत्तर मळवाथी ते बहु खुशी थयो. पछी तेणे पूछ्युं के—"हे स्वामी! पापना बापनुं नाम कहो." गुरुए कह्युं के—"संध्यासमये तमे अहीं आवजो, ते वखते तेनुं नाम हुं कहीश" एटले ब्राह्मण पोताने घेर गयो. गुरुए विचार्युं के—"जरूर आ ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा माटे तेनी भार्याए [illegible] णाय छे, माटे कोइ पण उपायथी

तेने प्रतिबोध पमाडु." एम विचारीने एक श्रद्धालु श्रावकने गुरुए कह्यु के-"तमारे घेरथी बे अमूल्य रत्नो लावीने मने आपो, मारे तेनु काम छे, अने बीजु कोइ चांडाळ पासे एक गधेडानुं मडदुं उपडावीने आ उपाश्रयथी सो हाथ दूर कोइ एकांत जग्याए मूकावो." श्रावके ते काम शीघ्र करी दीधु. पछी संध्यासमय थवा पछी ब्राह्मण गुरु पासे आव्यो, एटले गुरुए तेने एकांतमा कह्यु के-"अमारु एक काम करवानु कबुल करो तो आ एक रत्न आपुं, अने कार्य करी रह्या पछी आ बीजु रत्न पण आपीश" ब्राह्मणे रत्न जोइ हर्षथी कह्यु के-"हे पूज्य! काम बतावो" गुरुए कह्यु के-"आ उपाश्रय नजीक एक गधेडानु शब पडयु छे तेथी ते पडयु होय त्यां सुधी अमने स्वाध्याय विगेरे धर्मकार्यमा विघ्न थाय छे, अर्थात् करी शकता नथी, तेथी तेने उपाडीने तु गाम बहार नाखी आव." ब्राह्मणे विचार्यु के-"हमणां अंधारु थइ गयु छे, तेथी मने वेदपारगामीने अत्यारे कोण ओळखे तेम छे? माटे स्वार्थ साधी लउ" एम विचारीने ते चांडाळ जेवो वेष करी, पेलु शब खांधे चडावी, यज्ञोपवीत संताडीने, तेने बहार मूकी आव्यो. पछी स्नान करीने जल्दी गुरु पासे आव्यो अने कह्युं के-" हे स्वामी! आपनु कार्य करी आव्यो, माटे तमारु वचन तमे पाळो." एटले सूरिए तेने बीजु रत्न पण आपी दीधुं, पछी ब्राह्मणे सूरिने पोताना प्रश्ननो उत्तर पूछ्यो त्यारे गुरुए कह्यु के-"हजु सुधी तारा प्रश्ननो जवाब तुं समज्यो नथी?" ते सांभळीने ते लघुकर्मी होवाथी, सुलभबोधी होवाथी तथा अनेक शास्त्रना ज्ञानवाळो होवाथी सारी रीते विचार करता तेने समजायु के-"अहो! हुं 'ब्राह्मण' के जेनो अर्थ 'ब्रह्मतत्त्वने जाणनार' थाय छे, तथा हु गायत्रीनो जाप करनार, छतां पण लोभना परवशपणाथी आवी निंद्य दशाने पाम्यो धर्मशास्त्रादिकमा कह्यु छे के-

लोभश्चेदतिपापकर्मजनको यद्यस्ति किं पातकैः ।
सत्यं चेत्तपसा च किं शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ॥
सौजन्यं यदि किं निजैश्च महिमा यद्यस्ति किं मंडनै ।
सद्विद्या यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना ॥ १ ॥

भावार्थ-"अत्यंत पापकर्मने उत्पन्न करनार पापनो बाप जो लोभ होय तो बीजा पापथी शुं? जो सत्य होय तो तपनी शी जरुर छे? जो मन पवित्र होय तो तीर्थ करवाथी शु विशेष छे? जो सुजनता होय तो आप्त माणसनु शुं काम छे? जो महिमा होय तो अलंकार पहेरवाथी शुं विशेष छे? जो सारी

विद्या होय तो धननी शी जरूर छे ? अने जो अपयश होय तो पछी मृत्युए करीने शुं वधारे छे ? अर्थात् अपयश एज मृत्यु छे" (एम सर्वत्र जाणवुं.)

इत्यादि विचार करीने ते ब्राह्मण पोताने घेर आवी पोतानी स्त्रीने कहेवा लाग्यो के—"हे प्रिया ! जैन साधुए मने सारो बोध पमाड्यो. जैनधर्म सर्व धर्ममां उत्तम अने लोकोत्तर छे. मात्र एक लोभने नहीं जीतवाथी सर्व धर्मकृत्यो व्यर्थ छे, लोभी माणस सर्व प्रकारना पापकर्मो करे छे." पछी ते ब्राह्मण फरीने गुरु पासे गयो, अने गुरुने कह्युं के—"हे स्वामी ! आपनी कृपाथी मने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी त्रण रत्न प्राप्त थयां." इत्यादि गुरुनी प्रशंसा करीने तेनो अत्यंत उपकार मान्यो.

आ दृष्टांतनुं तात्पर्य ए छे के—'लोभनो नाश करवा जेवो बीजो कोइ धर्म नथी अने लोभने वश थवा जेवुं बीजुं कोइ पाप नथी.' जुओ ! स्त्रीए मोकलेला ब्राह्मणने निःस्पृह गुरुए युक्तिथी प्रतिबोध पमाड्यो.

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तम्भस्य चतुश्चत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २४४॥

व्याख्यान २४५ मुं.

लोभना क्रम विषे.

आरभ्यते पूरयितुं, लोभगर्ता यथा यथा ।
तथा तथा महच्चित्रं, मुहुरेष विवर्धते ॥ १ ॥

भावार्थ—"लोभरूपी गर्त (खाडो) जेम जेम पूर्ण करवा आरंभ करीए छीए, तेम तेम ते खाडो वारंवार वृद्धि पामे छे ते एक मोटुं आश्चर्य छे."

अनंती वखत भोजन कर्यां, वस्त्रो पहेर्यां, विषयो सेव्या अने भवेभवमां द्रव्यनो पण संचय कर्यो छतां लोभ रूपी गर्तानो एक खूणो पण पूर्ण थयो नहीं. आ विषयमां सुभूम चक्रीनुं दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

एकदा स्वर्गमां विश्वानर अने धन्वन्तरी नामना बे देवो परस्पर मित्र होवाथी पोतपोताना धर्मनी प्रशंसा करवा लाग्या. तेमां एक जैनधर्मी हतो अने बीजो शैवधर्मी हतो. पछी तेओ धर्मनी परीक्षा करवा माटे मृत्युलोकमां आव्या. ते वखते मिथिला नगरीनो पद्मरथ नामनो राजा वासुपूज्य स्वामी पासे

दीक्षा लइने मार्गे चाल्यो जतो हतो तेने जोइने तेनी परीक्षा करवा माटे ते देवोए अनेक प्रकारनां स्वादिष्ट अन्न विकुर्वीने आपवा माड्या परतु ते देवपिंड छे एम जाणवाथी क्षुधाथी पीडित छता पण ते मुनिए ते ग्रहण कर्या नहीं अने पोताना नियमथी चळायमान थया नहीं. आगळ जता त्रे मार्ग आव्या, तेमा एक रस्ता उपर तीक्ष्ण काटा विकुर्व्या अने बीजा मार्ग उपर सूक्ष्म देडकां उत्पन्न कर्यां. त्रीजो मार्ग न होवाथी ते राजर्षि ईर्यासमिति पाळवा माटे कांटाराळा मार्गे चाल्या. कांटा लागवाथी पगमाथी रुधिरनी धारा थवा मांडी, तो पण ते रस्तो तेमणे छोड्यो नहीं. त्यार पछी देवो अनेक स्त्रीओना रूप विकुर्वीने गीत नृत्यादि करवा लाग्या, तो पण तेनु मन क्षोभ पाम्यु नही छेवट नैमित्तिकनु रूप धारण करीने तेओए तेने कह्यु के-"हे मुनि! अमे निमित्तज्ञानी छीए, तेथी अमे जाणीए छीए के तमारु आयुष्य हजु घणु छे माटे युवावस्थाना फळ रूप भोगविलास भोगवीने पछी वृद्धावस्थामा तप करजो" त्यारे मुनि बोल्या के-"जो आयुष्य घणु हशे तो लाबा काळ सुधी चारित्र पळाशे, विषयभोग तो पूर्वे अनतीवार भोगव्या, पण तेथी काइ तृप्ति थइ नहीं, हवे जीवता सुधी पण तेनी स्पृहा नथी." ते साभळी देवोए जैनशासननी प्रशंसा करी.

पछी एक अरण्यमां जमदग्नि नामनो वृद्ध तापस चिरकाळथी तपस्या करतो हतो, त्यां जइ चकला चकलीनु रूप विकुर्वीने तेनी दाढीमा माळो बाधीने रह्या. चकलाए मनुष्यवाणीथी चकलीने कह्यु के-"हे प्रिया! हु हिमवत पर्वत उपर जाउ छु, थोडा दिवसमा पाछो आवीश" चकली बोली के-"त्या तमने कोइ बीजी चकली पर आसक्ति थाय, तो पछी हु पति विनानी शु करु?" ते साभळीने चकलाए पाछा आववा माटे गौहत्या विगेरेना सोगन खाधा त्यारे चकली बोली के-"जो तमे पाछा न आवो तो आ ऋषिना पापथी लेपाओ, एवा सोगन खाओ तो जवा दउ" ते साभळीने तापस क्रोधायमान थयो, अने ते पक्षीओने पकडवा माटे दाढीमा हाथ नाख्यो तेने पकडीने कह्यु के-" अरे पक्षीओ! हु पापी शी रीते? ते कहो." त्यार पक्षीओ बोल्या के-"हे तपोनिधि! क्रोध करशो नहीं तमारु शास्त्र जुओ तेमा कह्यु छे के-

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गो नैव च नैव च ।
तस्मात् पुत्रमुखं वीक्ष्य, सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"अपुत्रनी गति थती नथी, तेमज स्वर्ग तो मळतुज नथी. माटे पुत्रनुं मुख जोइने पछी सर्व कार्य साधवा."

"माटे हे ऋषि ! तमे पुत्र रहित छो, तेथी तमारी सद्गति केम थशे ?" आ प्रमाणे सांभळीने ते तापसनुं मन क्षोभ पाम्युं, तेथी तपस्या छोडीने कोष्टक नामना नगरमां गयो. त्यां जितशत्रु नामे राजा हतो तेनी पासे जइने तेणे कन्यानी याचना करी राजाए कह्युं के–'मारे सो कन्याओ छे, तेमांथी जे कन्या तमने परणवानी इच्छा करे तेने ग्रहण करो" पछी तापस कन्याओना अंतःपुरमां गयो त्यां सर्व कन्याओए तेने वृद्ध तथा संस्कार विनाना अंगवाळो होवाथी कुरूपी जोइने थू थू करी तेनो अवगणना करी तेथी तापसे क्रोधथी ते सर्व कन्याओने कुबडी करी दीधी. त्यांथी पाछा वळतां राजभवनना आंगणामां एक मुग्ध कन्याने धूळमां रमती जोइने तापसे एक बीजोरु तेने देखाड्युं ते लेवा माटे तेणे लांबो हाथ कर्यो. एटले 'आ कन्या मने इच्छे छे' एम कहीने तेने उपाडी लीधी राजाए शापना भयथी हजार गायो तथा दासी सहित ते कन्याने आपी. त्यार पछी राजानी प्रार्थनाथी ते तापसे पेली सर्व कन्याओने सारी करी

हवे ते रेणुका कन्याने लइने जमदग्नि तापस वनमां आश्रम करीने तेनुं लालनपालन करवा लाग्यो. अनुक्रमे ते कन्या युवावस्था पामी, त्यारे ते तेने विधिपूर्वक परण्यो. तेने ऋतुकाळ आवता तेनी प्रार्थनाथी जमदग्निए ब्राह्मण तथा क्षत्रिय पुत्र उत्पन्न थाय तेवा बे चरु मंत्रीने तैयार कर्या तेमांथी रेणुकाए ब्राह्मण चरु नहीं खाता क्षत्रिय चरु खाधो अने ब्रह्मचरु पोतानी बहेन के जे हस्तिनापुरना राजा अनंतवीर्यनी पट्टराणी हती तेने मोकल्यो ते तेणे खाधो. समय आवता रेणुकाने राम नामनो अने तेनी बहेनने कृतवीर्य नामनो पुत्र थयो. अन्यदा ते आश्रममां एक विद्याधर आव्यो, तेने अतिसारनो व्याधि थयो हतो. रामे तेनी सेवा करीने तेने साजो कर्यो, तेथी विद्याधरे तेने परशु विद्या आपी. राम ते विद्या साधीने परशुराम नामे प्रसिद्ध थयो अने देवाधिष्ठित परशु लइने चोतरफ फरवा लाग्यो

एकदा रेणुका पोतानी बहेनने मळवा माटे हस्तिनापुर गइ. त्यां पोताना बनेवीनी साथे तेणे भोग भोगव्या. तेनाथी तेने एक पुत्र थयो. रामे पोतानी माताने दुराचरणी जाणीने पुत्र सहित मारी नाखी, तेथी क्रोध पामेला अनंतवीर्ये तेनो आश्रम भांगी नाख्यो. ते जाणीने रामे तेने परशुवडे मारी नाख्यो पछी तेना राज्य उपर प्रधानोए तेना पुत्र कृतवीर्यने बेसाड्यो. ते कृतवीर्य राजाए पितानुं वैर

व्याख्यान २४९ मुं.

क्रोधपिंड तथा मानपिंड विष

उच्चाटनादि सामर्थ्य–शापमंत्रतपोबलम् ।
प्रदर्श्य क्रोधतो लाति, क्रोधपिंड स उच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"उच्चाटन,कामण,मारण, मोहन, वशीकरण विगेरेना सामर्थ्यथी शाप मंत्र तथा तपनु बळ देखाडीने क्रोधथी जे आहारादिकनु ग्रहण कर छे ते क्रोधपिंड कहवाय छे."

दृष्टांत नीचे प्रमाणे–

हस्तिकल्प नामना नगरमा कोइ साधु मासक्षपणने पारणे एक ब्राह्मणने घेर वहोरवा गया. त्या कोइना मरणप्रसगनी ज्ञाति जमती हती जमवा बेठेला ब्राह्मणोने घेवर विगेरे पीरसाता हता त्या ते साधु घणी वार सुधी उभा रह्या, पण कोइए भिक्षा तो आपी नहीं, पण उलटा ब्राह्मणो 'अहींथी नीकळ, अहींथी नीकळ' एम कहीने ते साधुनी अवगणना करवा लाग्या त्यार साधुए क्रोधथी कह्यु के–"आ प्रसगे तमे मने अन्न आपता नथी, तो फरीने आवाज प्रसगे हु आवीश." एम कहीने साधु अन्य स्थाने गया. दैवयोगे थोडाज दिवसमा ते ब्राह्मणना घरमा बीजु माणस मरी गयु, अने तेवीज रीत तेना ज्ञातिभोजनने दिवसे ते साधु मासक्षपणने पारणे त्या गया ते दिवसे पण चिरकाळ उभा रह्या छता भिक्षा न मळवाथी साधुए फरीने कोपथी कह्यु क–"फरीथी आवाज कार्यमा हु आवीश." एम कहीने ते चालता थया विधिना वशथी तेना घरमा त्रीजु माणस मरी गयु. तेना ज्ञातिभोजनने दिवसे वळी तेज रीत ते साधु आव्या. ते वखते पण भिक्षा नहीं मळवाथी साधु कोपथी बोल्या क–" आ कार्यमा आपता नथी, तो फरीथी पाछो आवाज कार्यमा आवीश." एम कहीने जता रस्तामा द्वारपाळे ते साधुने जोइने घरधणीने कह्यु क–"आ साधु वारवार भिक्षा न मळवाथी क्रोध करीने जाय छे, माटे तेनु सन्मान करीने भिक्षा आपो." घरधणीए विचार्यु क–"आमा काइ पण कारण होवु जोइए, नहीं तो महिने महिने आव मरणप्रसग क्याथी आवे? केमके आवा खरच करीने हु तो थाकी गयो, माटे आ

साधुने संतोष पमाड्युं." एम धारीने तरत उभो थइ ते साधु पासे जइ तेमने नमस्कार करीने बोल्यो के-"हे स्वामी ! मारो अपराध क्षमा करो अने आ घेबर वहोरीने मारापर अनुग्रह करो, तेमज जीवितदान आपो." ए रीते तेमने बहुरीते खमावीने यथेच्छपणे घेबर वहोराव्या. आवी रीते लीधेलो आहार क्रोधपिंड कहेवाय छे. ते वृत्तांत गुरुए आलोयण आपती वेळाए जाण्यो, तेथी तेने योग्य आलोयण आपीने शुद्ध कर्यो.

हवे मानपिंड विषे कहे छे

लब्धिपूर्णस्त्वमेवासी-त्युत्साहितोऽन्यसाधुभिः ।
गृहिभ्यो गर्वितो गृह्णन्, मानपिंडः स उच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ-' तमेज सर्व लब्धियी पूर्ण छो. ' एम कहीने बीजा साधुओए उत्साह पमाडेलो कोइ साधु गर्व पामीने गृहस्थो पासेथी जे पिंड लइ आवे ते मानपिंड कहेवाय छे."

दृष्टांत नीचे प्रमाणे

कोशल देशमां गिरिपुष्प नामना नगरमां सेव संबंधी कोइक ओच्छव हतो. तेथी ते दिवसे दरेक घरे सेवो करी हती. ते दिवसे युवान साधुओमां परस्पर वातो चालतां एक साधुए कह्यु के-"आजे तो गोचरीमां घणी सेवो मळशे, पण जे काले लावे ते लब्धिमान खरो." ते सांभळीने बीजा साधु बोल्या के-"अहो ! घी गोळ विनानी अने थोडी सेव लावे तो तेथी शुं ?" तेवामां एक गर्वना पर्वत समान साधु बोल्या के-" काले हु घणी सेव लावीश." एम प्रतिज्ञा करीने बीजे दिवसे ते साधु गोचरीए गया. त्यां एक गृहस्थने घेर सेव देखीने तेनी स्त्री पासे तेणे विविध उक्तिथी सेवनी याचना करी, तो पण तेणीए सेव आपी नहीं त्यारे साधुए गर्वथी कह्यु के-"गमे तेम करीने पण हुं आ सेव लइश." ते स्त्री बोली के-" जो कदाच तने सेव आपु तो मने नकट कहेजे. " पछी ते साधु बहार नीकळ्या अने "ते स्त्रीनो पति बधु मंडळ भराइने बेठु छे त्यां गयो छे." एवा कोइ तरफथी खबर मळवाथी ते त्यां गया अने पूछ्युं के-"अहीं देवदत्त शेठ छे ? " त्यारे कोइए जवाब आप्यो के-"ते शेठनुं शुं काम छे ? " साधुए कह्युं के-"तेमी पासे कांइक मागवु छे " त्यारे तेओ बोल्या के-"अहो ! शु कोइना शून्य घरमां कुमारिका जोइ छे ?", आ प्रमाणे मश्करीनां वचन सांभळीने ते शेठ पोते बोल्यो के-"हुं ज देवदत्त छुं, तमारे शुं काम छे ?" साधुए कह्युं के-"जो तमे छ पुरुषमांना

मरजी प्रमाणे मागो " साधुए कह्युं के--जो एम होय, तो तमारा घरमांथी घी गोळ सहित घणी सेव मने आपो " ते वात कबूल करीने शेठ घेर चाल्या साधुए तेने तेनी स्त्रीनो वृत्तांत कह्यो. तेथी साधुने दरवाजा पासे राखीने ते घरमां गयो, अने पोतानी स्त्रीने काइ कामना मिषथी मेडी उपर मोकली, मुनिए मागेली सर्व सामग्री वहोरावी ते लइने साधुए पोतानु नाक आगळी वती घसीने ते शेठनी स्त्रीने " नकटी (नफट) थइ " एम सूचव्यु. पछी ते स्त्रीए साधुने पाछा बोलावीने वधारे सेव आपी. ते लइने तेओ संतुष्ट थया, अने उपाश्रये जइ सर्व साधुनी पासे पोताना गुण अने लब्धिनी प्रशंसा करवा लाग्या.

एकदा आलोयणने वखते गुरुए पूछ्युं के--"तें कोइ वखत मूल गुण के उत्तर गुणनी काइ पण खडना करी छे ? " तेणे कह्यु के-" में एक वखत देवदत्त शेठने घेरथी मोटो आडंबर करीने सेव लीधी हती. " त्यारे गुरुए कह्यु के-" ए मानपिंड कहेवाय छे माटे त्रण काळमा पण परवस्तु उपर आसक्ति नहीं राखनारा मुनिओए एवो पिंड लेवो योग्य नथी. " ते सांभळीने तेणे पोताना आत्मानी निंदा करी अने ते कर्म आलोव्यु

" जेम क्रोधपिंड लेवाथी मुनिधर्मनो उद्योत थतो नथी, तेमज मानपिंड पण निःस्पृही साधुओने लेवा योग्य नथी. तेथी पिंडशुद्धि माटे साधुओए निरंतर यतना करवी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तम्भस्य षट्चत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २४६ ॥

व्याख्यान २४७ मुं.

लोभपिंड विषे[1].

स्निग्धं मनोहरं पिंड, वीक्ष्यातिरसलोलुप. ॥
सर्वत्राटत्यनूचानो, लोभपिंडः स उच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"गोळ घी मिश्रित ते स्निग्ध अने स्वादिष्ट एवो आहार जोइने रसमां अत्यंत लोलुपी साधु तेवा आहारने माटे सर्वत्र उचनीच कुळमां अटन करेछे. तेवी रीते मेळवेलो आहार ते लोभपिंड कहेवाय छे."

दृष्टांत नीचे प्रमाणे

चंपा नगरीमां सुव्रत नामना कोइ साधु मासक्षपणने पारणे द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी चारे प्रकारना अभिग्रहने धारण करीने पहली पोरशीमां ज गोचरी माटे नीकळ्या. ते अतितपस्वी होवाथी तेने सर्व काळ गोचरीने योग्य छे.

श्रीकल्पसूत्रमां समाचारी व्याख्यानमा कह्यु छे के-"निचभत्तस्स भिख्खुस्स कप्पति एगं गोयरकालं " इत्यादि. नित्य आहार करनार साधुने एकज गोचरीनो काळ कल्पे छे. अर्थात् हमेशां एकाशन करनार साधुने एकज गोचरीने समये श्रावकना घरमां पेसवुं ने नीकळवु कल्पे छे, बीजी वार जवुं आववु कल्पतुं नथी. पण जो कोइ साधु एकाशन करीने आचार्य, उपाध्याय के ग्लान साधु विगेरेनी वैयावच करवा शक्तिमान थइ शकतो न होय तो तेने बे वार पण गोचरी करवा जवुं कल्पे छे केमके तप करतां वैयावृत्त्यनुं फळ अधिक छे. वळी जे क्षुल्लक साधु छे, एटले जेने दाढी मूछ तथा बगलना वाळ उग्या नथी तेने बे वार गोचरी करवा जतां पण दोष नथी. एकांतर उपवास करनार साधुने पारणाने दिवसे एक वार गोचरी करवाथी निर्वाह न थाय तो बे वार गोचरी करवा जवानी छूट छे. छठ (बे उपवास) करनार साधुने पारणाने दिवसे बे वार गोचरी करवा जवु कल्पे छे, अने अठ्ठम (त्रण उपवास) के तेथी वधारे ४-५ विगेरे उपवास करनार साधुने पारणाने दिवसे सर्व काळ गोचरीनो छे ज्यारे इच्छा थाय त्यारे गोचरी जइ शके, परतु प्रातःकाळे लावेली गोचरी राखी मूकाय नहीं. केमके तेथी जीवससक्तादि दोषनो संभव छे

---

१ मायापिंडनो अधिकार अषाढाभूतिना वृतांतमां समायेलो होवाथी क्रोध, मान पछी लोभपिंड विषज कहे छे

मरजी प्रमाणे मागो " साधुए कह्युं के--जो एम होय, तो तमारा घरमांथी घी गोळ सहित घणी सेव मने आपो " ते वात कबूल करीने शेठ घेर चाल्या. साधुए तेने तेनी स्त्रीनो वृत्तांत कह्यो. तेथी साधुने दरवाजा पासे राखीने ते घरमां गयो, अने पोतानी स्त्रीने काइ कामना मिषथी मेडी उपर मोकली, मुनिए मागेली सर्व सामग्री वहोरावी. ते लइने साधुए पोतानु नाक आगळी वती घसीने ते शेठनी स्त्रीने " नकटी (नकट) थइ " एम सूचव्युं. पछी ते स्त्रीए साधुने पाछा बोलावीने वधारे सेव आपी. ते लइने तेओ संतुष्ट थया, अने उपाश्रये जइ सर्व साधुनी पासे पोताना गुण अने लब्धिनी प्रशंसा करवा लाग्या.

एकदा आलोयणने वखते गुरुए पूछ्युं के -"तें कोइ वखत मूळ गुण के उत्तर गुणनी काइ पण खंडना करी छे ? " तेणे कह्यु के-" में एक वखत देवदत्त शेठने घेरथी मोटो आडंबर करीने सेव लीधी हती " त्यार गुरुए कह्यु के-" ए मानपिंड कहेवाय छे. माटे त्रण काळमा पण परवस्तु उपर आसक्ति नहीं राखनारा मुनिओए एवो पिंड लेवो योग्य नथी. " ते सांभळीने तेणे पोताना आत्मानी निंदा करी अने ते कर्म आलोव्यु

" जेम क्रोधपिंड लेवाथी मुनिधर्मनो उद्योत थतो नथी, तेमज मानपिंड पण निःस्पृही साधुओने लेवा योग्य नथी. तेथी पिंडशुद्धि माटे साधुओए निरंतर यतना करवी "

व्याख्यान २४७ मुं.

लोभपिंड विषे[1].

स्निग्धं मनोहरं पिण्ड, वीक्ष्यातिरसलोलुपः ॥

सर्वत्राटत्यनूचानो, लोभपिंडः स उच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"गोळ घी मिश्रित ते स्निग्ध अने स्वादिष्ट एवो आहार जोइने रसमा अत्यंत लोलुपी साधु तेवा आहारने माटे सर्वत्र उचनीच कुळमां अटन करेछे. तेवी रीते मेळवेलो आहार ते लोभपिंड कहेवाय छे."

दृष्टांत नीचे प्रमाणे

चंपा नगरीमां सुव्रत नामना कोइ साधु मासक्षपणने पारणे द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी चारे प्रकारना अभिग्रहने धारण करीने पहेली पोरशीमां ज गोचरी माटे नीकळ्या. ते अतितपस्वी होवाथी तेने सर्व काळ गोचरीने योग्य छे.

श्रीकल्पसूत्रमां समाचारी व्याख्यानमा कह्यु छे के—"निच्चभत्तस्स भिक्खुस्स कप्पति एगं गोयरकालं" इत्यादि. नित्य आहार करनार साधुने एकज गोचरीनो काळ कल्पे छे. अर्थात् हमेशां एकाशन करनार साधुने एकज गोचरीने समये श्रावकना घरमां पेसवु ने नीकळवुं कल्पे छे, बीजी वार जवुं आववुं कल्पतुं नथी. पण जो कोइ साधु एकाशन करीने आचार्य, उपाध्याय के ग्लान साधु विगेरेनी वैयावच्च करवा शक्तिमान थइ शकता न होय तो तेने बे वार पण गोचरी करवा जवुं कल्पे छे केमके तप करतां वैयावृत्यनुं फळ अधिक छे. वळी जे क्षुल्लक साधु छे, एटले जेने दाढी मूछ तथा बगलना वाळ उग्या नथी तेने बे वार गोचरी करवा जता पण दोष नथी. एकांतर उपवास करनार साधुने पारणाने दिवसे एक वार गोचरी करवाथी निर्वाह न थाय तो बे वार गोचरी करवा जवानी छूट छे. छठ्ठ (बे उपवास) करनार साधुने पारणाने दिवसे बे वार गोचरी करवा जवु कल्पे छे, अने अठ्ठम (त्रण उपवास) के तेथी वधारे ४-५ विगेरे उपवास करनार साधुने पारणाने दिवसे सर्व काळ गोचरीनो छे ज्यारे इच्छा थाय त्यारे गोचरी जइ शके, परंतु प्रातःकाळे लावेली गोचरी राखी मूकाय नहीं केमके तेथी जीवसंसक्तादि दोषनो संभव छे

1 मायापिंडना अधिकार अषाढाभूतिना वृत्तांतमां समावेलो होवाथी काध, मान पछी लोभपिंड विषज छे.

हवे ते साधु आहारने माटे नगरमां फरे छे, तेवामां श्रावकनी ज्ञातिमां सिंह केसरीआ लाडुनी लाणी थती जोइने तेणे विचार कर्यो के-"आजे मारे लाडुज वहोरवा, तेमां पण सिंहकेसरीआज लेवा" एवो अभिग्रह धारीने भिक्षा माटे कोइना घरमां पेठा. रसना लोलुप होवाथी बीजो आहार लीधो नहीं, अने सिंहकेसरीआ लाडु मळ्या नहीं, तेथी तेमनो क्लिष्ट अध्यवसाय थयो, अने ते सिंह केसरीआ लाडुनुज ध्यान करता अटन करवा लाग्या. मध्यान्ह समय थतां "मने आजे लाडु मळ्या नहीं" एम धारी चित्तमां खेद करवा लाग्या ते लाडुना ज ध्यानमां तल्लीन थवाथी कोइना घरद्वारमां प्रवेश करता त्यारे "धर्मलाभ" कहेवाने बदले "सिंहकेसरा" शब्दनो ज उच्चार थइ जतो. ए प्रमाणे आखो दिवस निर्गमन कर्यो रात्रे पण तेज रीते बजारनी दुकानोमां तथा चक्ले चकले भमवा लाग्या. सांजनी पडिलेहण तथा प्रतिक्रमणनो समय पण स्मरणमां आव्यो नहीं सूर्यना किरणथी व्याप्त थयेला सर्व लोकना जवा आववाना मार्गमां जीवरक्षाने माटे अवलोकन करी चालवु जोइए ते पण स्मरणमां रह्यु नहीं. ए प्रमाणे भमतां रात्रिना बे प्रहर व्यतीत थया. ते वखते कोइ श्रावकना गृहमां पेठा अने "धर्मलाभ" ने बदले "सिंहकेसरा" बोल्या ते श्रावक पण विनयथी अभ्युत्थान विगेरे करीने "अयोग्य वखते मुनिनु आगमन केम थयुं हशे?" तेनो विचार करवा लाग्यो. तेणे जाण्यु के-"आ साधु तपस्वी छे. आजे ज में एमने अप्रमत्त भाववाळा जोया हता. संसारीपणामां पण आ साधुए धन, धान्य, सुवर्ण, स्त्री, पुत्र, दास, दासी विगेरे सपूर्ण वैभवनो त्याग करीने वैराग्यथी ज दीक्षा ग्रहण करी छे. ते सर्व हु जाणु छु. वळी आ मुनि गीतार्थ पण छे, तो अकस्मात् रात्रिना समये अत्रे आववानु शु कारण हशे? जो कदाच तेमना प्रत्यक्ष जणाता दोष प्रगट करु तो मारामां श्रावकपणुज न कहेवाय. वळी अनेक सिद्धांतना पारगामी एवा आ मुनिनी पासे हुं कांइ पण बोलवा योग्य नथी, अथवा मारी जेवा विषयासक्त पुरुषोथी आवा महात्माओनु चरित्र जाणी के कळी शकातुं नथी. माटे आनो परमार्थ तो ज्ञानी ज जाणी शके. केमके मननो भाव जाण्या विना बहारनी व्यवहारविरुद्ध चेष्टा जोवाथी गुणीना गुणो पण दोषरूपे देखाय छे. तोपण गुणग्राही बुद्धिथी आनी परीक्षा तो अवश्य करवी जोइए के-आ मुनि सर्वथा पडवाइ भाववाळा थया छे के लेशमात्र थया छे?" आ प्रमाणे विचारीने वळी ते श्रावक तर्क करवा माड्यो के-"आ मुनिनी कोइ पण चेष्टा विषयोन्मुख देखाती नथी, तेमज परधन हरण करवानी चेष्टा पण जणाती

१ दश दश जातिनां उत्तम मूळ फळ बीज पुष्प न पत्रना रस अने दश जातिनी सुगध तथा चार विगइ मळीने ४४ प्रकार एकठा थवाथी सिंहकेसरिया लाडु थाय छे

नथी, वळी बोलती वेळाए मुखवस्त्रिका मुख पासे राखे छे, अने चालती वेळाए जयणापूर्वक पगलां भरे छे, माटे आ मूळ गुणनो घात करनार तो जणातो नथी, परंतु एमने आहारनी तीव्र अभिलाषा थइ जणाय छे." इत्यादि विचारीने तेणे नाना प्रकारनी रसवती, साकर, खांड, खाजां, घेबर, मोतीचूर, कपूर मिश्रित कूर (भात) तथा विविध प्रकारनी मीठाइ तेमनी पासे लावीने धरी अने लेवा जणाव्युं, परंतु मुनि तो दरेक चीज जोइने "मारे आनो खप नथी, मारे आनो खप नथी" एम वारंवार कहेवा लाग्या. तेथी ते श्रावके विचार्युं के–" हजु सुधी आ मुनि मार्गमां छे केमके पोताना अभिग्रह विनानी बीजी चीज ग्रहण करता नथी. तेमज जे चीजनी इच्छा छे तेनी याचना पण करता नथी. तो हवे तेनो अभिग्रह शो हशे ते केवीरीते जणाय? तो पण अहीं प्रवेश करती वेळाए ते 'सिंहकेसरा' बोल्या हता, ते उपरथी एम जणाय छे के तेने-सिंहकेसरीआ लाडुनी इच्छा हशे, अने ते कोइ पण ठेकाणेथी तेमने मळ्या नहीं होय तेथी तेमनुं चित्त भ्रमित थयुं छे." एम धारी ते श्रावक लाणीमां आवेला सिंहकेसरीआ लाडुथी भरेलुं मोटुं पात्र तेमनी पासे धरीने बोल्यो के–"हे पूज्य! आ मोदक ग्रहण करीने मने कृतार्थ करो." एटले मुनिए मोदक वहोर्या तेथी तेनुं चित्त स्वस्थ थयुं पछी श्रावके विचार्युं के–"मुनिओने आहारना चार भांगा छे १ रात्रे लावीने रात्रेज वापरवुं, २ रात्रे लावीने दिवसे वापरवुं, ३ दिवसे लावीने रात्रे वापरवुं अने ४ दिवसे लावीने दिवसे वापरवुं, आ चार भांगामां छेल्लो भांगो योग्य छे. पहेला त्रण भांगा योग्य नथी. तेथी जो आ मुनि रूढि जिव्हानी लोलुपताथी आ आहार करशे तो तेमना उत्तर गुणनी हानि थशे, अने तेथी अनुक्रमे मूल गुणनो पण घात थशे, तेथी मोटी हानि थशे. केमके रात्रिभोजनमां अनेक दोष रहेला छे. तेने आ मुनि गीतार्थ होवाथी जाणे छे तो पण अत्यार तेमना चित्तमां तेनुं स्मरण थतुं नथी. तेथी हुं एवुं करुं के जेथी तेमने काळनो निर्णय थाय अने तेथी तेमने मोटो गुण थइ पडे." एम विचारीने ते श्रावके युक्तिपूर्वक विनय करीने कह्युं के–"हे स्वामी! आजे जगम कल्पवृक्षसमान तथा गुरु पासेथी बे प्रकारनी शिक्षाने धारण करनारा आप अकस्मात् मारे घेर पधार्या, तेथी हुं मारुं मोटुं भाग्य समजुं छुं. आपनुं शुद्ध चारित्रवाळुं स्वरूप जोइने जाणे में आजे पुंडरीकस्वामी विगेरे सर्व पूर्व मुनिओना दर्शन कर्या एम हुं मानुं छुं. तमारा संतोषामृतयुक्त आचरणने अने चरण करणने धन्य छे. हुं तो मोहजाळमां फसायेलो, लोभथी ग्रसायेलो, इंद्रियोना क्षणिक सुखमां मग्न थयेलो तथा स्त्रीपुत्रादिकमां आसक्त थयेलो छुं, तेथी एक मुखथी आपनी

सद्भावनानु वर्णन करवाने असमर्थ छु, तेम छतां पण आपे अहीं पधारी, तेवा संसारमां खुची गयेला मारापर मोटी कृपा करी छे. हवे हु आपने एक प्रश्न पूछुं छुं तेनो उत्तर आपना कृपा करो के-हुं दररोज प्रातःकाले वे त्रण तारा आकाशमां देखाता होय ते वखते नवकारसी विगेरे मत्याख्यान करु छु, आजे में पुरिमड्ढनुं पच्चक्खाण कर्यु छे, तो तेनो काळ पूर्ण थयो छे के नहीं?" ते सांभळीने मुनिए श्रुतज्ञाननो उपयोग दइ आकाशमां तारामंडळ तरफ जोयु, तो जाण्युं के हजु रात्रिना बे पहोर व्यतीत थया छे तेथी मध्य रात्रिनो समय छे, उत्तराध्ययनना छवीशमा अध्ययनमा कह्यु छे के -

पढमपोरिसि सज्झाय, बीय झाणं च झायइ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थिए भूयोवि सज्झायं ॥१॥

भावार्थ—"रात्रिनी प्रथम पोरसीए स्वाध्याय करवो, बीजीए ध्यान धरवुं, त्रीजीए निद्रानो त्याग करवो अर्थात् निद्रा लेवी अने चोथी पोरसीए पाछो स्वाध्याय करवो."

रात्रिना चार पहोर जाणवाना उपाय.

जं नेइ जया रत्ति, नक्खत्तं तम्हि नह चउब्भाए।
सपत्ते विरमिज्जा, सज्झायओ पओस कालम्मि ॥ २ ॥

भावार्थ—ज्यारे जे नक्षत्र रात्रिने समाप्त करे, एटले के जे नक्षत्र जे ठेकाणे अस्त थवाथी रात्रि पूरी थती होय ते [1]नक्षत्र प्रदोषकाळे ज्यां देखातु होय त्यांथी आकाशना चोथा भागे आवे ते वखते (पहेलो पहोर पूरो थयो जाणी) सज्झायथी विराम पामवो (ए प्रमाणे चारे पहोर माटे जाणी लेवु)

आ प्रमाणे विचारता ते साधुए पोताना मननु भ्रमितपणु पण जाण्यु अने मनमा विचारवा लाग्या के-"अहो! में मूर्खे विरूप आचरण आचर्यु, लोभथी पराभव पामेला मारा जीवितने धिक्कार छे" एम विचारी ते श्रावक प्रत्ये कह्युं के-"हे जैन तत्त्वज्ञ श्रावक! तुं धन्य छे अने कृतपुण्य छे तें मने सिंहकेसरीआ आपीने अने पुरिमड्ढ पच्चक्खाण संबंधी प्रश्न करीने संसारमा डूबता बचाव्यो छे तारी घोषणा साची छे वळी मने मार्गभ्रष्टने मार्गपर चढाववाथी तु मारो धर्मगुरु छे. तारी चतुराइ तथा धैर्यता, वाणीथी कही शकाय तेम नथी." इत्यादि पोतानी निंदा

[1] आ नक्षत्र प्राये सूर्य नक्षत्रथी चौदमु होयछे

अने ते श्रावकनी श्लाघा करीने पछी रात्री होवाथी चालवानो आचार नथी एम जाणी ते श्रावक पासे रहेवा माटे स्थान मागीने त्यां एकांते ध्यानमग्न रह्या.

प्रातःकाळे ते आहार परठववा माटे शुद्ध स्थंडिल भूमिए जइने विधिपूर्वक मोदकनुं चूर्ण करतां ढंढण मुनिना जेवी भावना भाववा लाग्या; अने शुक्लध्यान रूपी अग्निवडे कर्मरूपी इन्धनने बाळवा लाग्या. ए प्रमाणे एक क्षणमात्रमां समग्र घातीकर्मनो नाश थवाथी तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. देवोए करेला सुवर्णकमळ उपर बेसीने तेमणे देशना आपी. पेला श्रावक विगेरे सर्व लोको ते जोइने आश्चर्य पाम्या.

"आ मुनिए लीधेला सिंहकेसरीआ लाडुनी जेम लोभपिंड शुद्ध न होवाथी ग्रहण करवा योग्य नथी एम समजवुं, अने श्रावकनां युक्तिवाळां वचनथी ते मुनिए पोताना गुणनुं स्मरण कर्युं तेमज, तत्त्वना रागी हता तेथी तेओ परमात्मपदने पाम्या एम जाणवुं"

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तम्भस्य सप्तचत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २४७॥

व्याख्यान २४८ मुं

दशमा अद्धा पच्चख्खाणना दश भेद अने तेनु फळ.

प्रत्याख्यानानि दिग्भेदे, कालिकानि प्रचक्ष्यते ।

प्रत्याख्याने प्रतीत्यैक, वर्धमानफल भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"प्रत्याख्यानना मुख्य दश भेद छे तेमां काळ प्रत्याख्यानना पण दश भेद छे ते कहे छे. ए दरेक प्रत्याख्यान अधिक अधिक फळदायी छे."

पूर्वाचार्योए अद्धा पच्चख्खाणना दश भेद प्रत्याख्यान भाष्यमां कहेला छे ते आ प्रमाणे—

नवकारसहिय पोरिसी, पुरिमड्ढेगासणेगठाणेय ।

आयंबिल अब्भत्तठ्ठे, चरमे अभिग्गहे विगई ॥ १ ॥

भावार्थ—"नवकारसी, पोरसी, पुरिमड्ढ, एकासणु, एकलठाणु, आंबिल, उपवास, भवचरिम अथवा दिवसचरिम, अभिग्रह अने विगइ. ए दश प्रकारना प्रत्याख्यान छे."

तेमा पहेलु नवकारशीनु पच्चख्खाण छे.तेमां प्रत्याख्यानना भंगना दोष टाळवा माटे अनाभोग[1] तथा सहसात्कार[2] रुप बे आगार (अन्नथ्थणाभोगेण,सहसागारेण) जाणवा. अहीं कोइ शंका करे के—"नवकारशीना पच्चख्खाणमां काळनु मान काइ जणाव्यु नथी, तेथी ते संकेत पच्चख्खाण होवु जोइए एम जणाय छे. तेने अद्धा (काळ) पच्चख्खाण केम कह्यु ?" तेनो जवाब ए छे के—"नवकारसहिय" ए पदमा सहित ए विशेषण छे. माटे विशेष्य तरीके मुहूर्त लेवाथी काइ दोष नथी.

प्रश्न—अहीं मुहूर्त शब्द विशेष्य तरीके लख्यो नथी, तो शी रीते ते लइ शकाय ? केमके आकाशनु पुष्प असत्य छे, तेथी तेने सुगंधोदार, सुंदर विगेरे विशेषणो द्वारा पुरुषो शी रीते आपे ?

उत्तर—नवकारशीने अद्धा पच्चख्खाणमा प्रथम कहेल छे तेथी तेमज त्यार पछी बीजु पचख्खाण पोरशीनु कहेल छे, माटे पोरशीनी पहेलानो काळ मुहूर्तज बाकी रह्यो, तेथी मुहूर्त शब्द विशेष्य राखवामा अयोग्य नथी

प्रश्न—कदि एम होय तो पण एकज मुहूर्त केम कहो छो ? बे त्रण मुहूर्त केम लेता नथी ?

---

१ अजाणपणु २ अकस्मातपणुं

आठमु चरिम एटले दिवसना पाछला भागे तथा आयुष्यना पाछला भागे जे पच्चक्खाण लेवामां आवे ते "दिवस चरिम" अथवा "भवचरिम" कहेवाय छे. तेमा चार आगार छे. साधुने जीवन पर्यंत हमेशा रात्रि त्रिविध त्रिविध भागाए करीने चोविहार पच्चक्खाण थाय छे अने श्रावकोने शक्ति प्रमाणे चोविहार, तीविहार विगेरे पच्चक्खाण थइ शके छे

नवमु अभिग्रह पच्चक्खाण छे तेमा पण चार आगार कहेला छे [1]अगुठी,मुठी, ग्रंथि (गाठ) विगेरे सहित कहेवामा आवता सर्व अभिग्रह आ पच्चक्खाणमां आवी जाय छे. प्रमाद टाळवाने इच्छनारा मनुष्यने पच्चक्खाण विना एक क्षण पण रहेवु योग्य नथी. माटे नवकारशी विगेरे काळ प्रत्याख्यान पूरु थाय, त्यारे ग्रंथि अथवा मुष्टि सहित पच्चक्खाण करवु वारंवार औपधादिक खानार बाळक तथा रोगी विगेरेने पण आ पच्चक्खाण सुगम छे अने अप्रमादनु कारण छे आ पच्चक्खाण करवाथी मोटां फळनी प्राप्ति थाय छे मात्र एकजवार ग्रंथि सहित प्रत्याख्यान करनार मांस मद्यमां आसक्त एवो कुविंद वणकर कपर्दि नामनो यक्ष थयो हतो, तेनु दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

क्षितिपुर नगरमा मद्यमांस खानारो कुविंद नामे एक वणकर रहेतो हतो. तेने एक दिवस अनायासे वज्रस्वामी सूरिनो मेळाप थइ गयो. ते वखते गुरुए दश प्रकारना प्रत्याख्याननु व्याख्यान आप्यु तेमा गठशीना पच्चखाणने प्रसंगे गुरुए कयु के—

जे निच्चमप्पमत्ता, गठिं बंधंति गठिसहियस्स ।
सग्गापवग्ग सुखं, तेहिं निबद्धं सगठिंमि ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे अप्रमादी मनुष्यो हमेशा गठशीना पच्चक्खाण सहित गाठ बांधे छे तेमणे ते ग्रंथिमा स्वर्ग तथा मोक्षनु सुख बांधी लीधु छे एम समजवु."

भणिऊण नमुकारं निच्च विस्सरणवज्जिय धन्ना ।
पारंति गठिसहियं, गठिसह कम्मगंठि वी ॥ २ ॥

भावार्थ—"जे धन्य पुरुषो हमेशा स्मरणपूर्वक नमस्कार भणीने गंठशी पच्चक्खाण पारे छे (गाठ छोडे छे) तेणे ते गांठ छोडवानी साथे कर्मरूपी ग्रंथि पण छोडी नाखी छे एम समजवु

---

१ कांगी विगेरे

नवकारशीनु पच्चख्खाण सूर्योदय पहेला थयुं न होय, तो पण पुरिमड्ढनु पच्चख्खाण लइ शकाय छे अवड्ढ पच्चख्खाण पण पुरिमड्ढनीज जेम पाछला चे पहोरनु[1] जाणवु

चोथु एकासणु एटले एकवार अशन करता भोजन करवु ते अथवा एक आसनपर बेसीने भोजन करवु ते आ एकासणाना पच्चख्खाणमा आठ आगार कहेला छे

पाचमु एकल्ठाणु एकासणानी जेमज जाणवु तेमा फेर एटलो छे के-शरीरनो संकोच अने विश्राम कर्या विना एकज स्थाने शरीरने राखवुं ते एकजस्थान (एकल्ठाणु) पच्चख्खाण कहेवाय छे तेथी तेमा आउट्टणपसारण आगार विना सात आगार छे तेमा भोजन वखते प्रथम जेवी रीते शरीरना अगोपांग राख्या होय तेने तेज स्थितिए भोजन थइ रहे त्या सुधी राखवा मात्र एक हाथ तथा मुख अशक्य परिहार होवाथी चलाववानो नियम नथी

अहीं कोइ शका करे के-"एकासणा विगेरेना पच्चख्खाणमा कालनो नियम जणातो नथी, तो तेने काळ पच्चख्खाण केम कहा?" तेनो उत्तर ए छे के-"एकासणादिक पच्चख्खाणो पण माये पोरसी आदि काळ पच्चख्खाण सहितज करवामा आवे छे तेथी ते काळ पच्चख्खाण कहेवाय छे "

छट्ठु आयबिल. तेमा आचाम्ल एटले अवश्रावण तथा आम्ल एटले चोथो रस, (खाटो) तेनाथी निर्वर्तु ते आचाम्ल (आंबिल) कहेवाय छे तेना त्रण प्रकार छे ते चोख्या, अडद अने साथवो-तेना आहारथी थाय छे अथवा अवश्रावणनी जेम अन्नादिक स्वाद रहित करवामा आवे ते आचाम्ल जाणवु ए पच्चख्खाणमा पण आठ आगार छे, परतु एकासणाथी जुदा छे

सातमु अभक्तार्थ एटले उपवासनु पच्चख्खाण तेमा पाच आगार छे. जेमा भोजन करवानु प्रयोजन नथी ते अभक्तार्थ एटले उपवास कहेवाय छे. आगली रात्रे चोविहारनु पच्चखाण कर्यु होय अने बीजे दिवसे उपवास करे, तो तेने चोथ पच्चख्खाण अपाय अने आगळनी रात्रे पच्चख्खाण कर्या विना बीजे दिवसे उपवास करे तेने पच्चखाणमा मात्र "अभत्तट्ठ" कहीनेज पच्चख्खाण अपाय चोथ कहेवाय नहीं वळी आगळना तथा पाछळना दिवसे एकासणु करी वच्चे उपवास करे, तेने चोथभक्त कहेवाय एवो वृद्ध समदाय छे

1 अवड्ढ पच्चख्खाण सूर्योदयथी त्रण पहोरनु कहेवाय छे आमा पूर्वार्द्ध (पुरिमड्ढ) नी जेम अवड्ढ (अपरार्द्ध) पण पाछला बे पहोरनु कहे ■ तत्त्व बहुश्रुत जाणे

२ आसामण तरीके व्यवहारमा कहेवाय छे

आठमु चरिम एटले दिवसना पाछला भागे तथा आयुष्यना पाछला भागे जे पच्चख्खाण लेवामा आवे ते "दिवस चरिम" अथवा "भवचरिम" कहेवाय छे. तेमां चार आगार छे साधुने जीवन पर्यंत हमेशां रात्रे त्रिविध त्रिविध भागाए करीने चोविहार पच्चख्खाण थाय छे अने श्रावकोने शक्ति प्रमाणे चोविहार, तीविहार विगेरे पच्चख्खाण थइ शके छे

नवमु अभिग्रह पच्चख्खाण छे तेमा पण चार आगार कहला छे [1]अगुठी, मुठी, ग्रंथि (गाठ) विगेरे सहित करवामा आवता सर्व अभिग्रह आ पच्चख्खाणमां आवी जाय छे. प्रमाद टाळवाने इच्छनारा मनुष्यने पच्चख्खाण विना एक क्षण पण रहेवुं योग्य नथी. माटे नवकारशी विगेरे काळ प्रत्याख्यान पूरू थाय, त्यारे ग्रंथि अथवा मुष्टि सहित पच्चख्खाण धारवु वारंवार औषधादिक खानारा बाळक तथा रोगी विगेरेने पण आ पच्चख्खाण सुसाध्य छे अने अप्रमादनु कारण छे आ पच्चख्खाण करवाथी मोटां फळनी प्राप्ति थाय छे. मात्र एकजवार ग्रंथि सहित प्रत्याख्यान करनार मांस मद्यमां आसक्त एवो कुविंद वणकर कपर्दि नामनो यक्ष थयो हतो, तेनु दृष्टांत नीचे प्रमाणे–

क्षितिपुर नगरमा मद्यमास खानारो कुविंद नामे एक वणकर रहेतो हतो. तेने एक दिवस अनायासे वज्रस्वामी सूरिनो मेळाप थइ गयो. ते वखते गुरुए दश प्रकारना प्रत्याख्याननु व्याख्यान आप्यु. तेमा गठशीना पच्चखाणने प्रसगे गुरुए कह्यु के—

जे निच्चमप्पमत्ता, गठिं बंधति गठिसहियस्स ।
सग्गापवग्ग सुख, तेहिं निबद्ध स गठिंमि ॥ १ ॥

भावार्थ–" जे अप्रमादी मनुष्यो हमेशा गठशीना पच्चख्खाण सहित गांठ बांधे छे तेमणे ते ग्रंथिमा स्वर्ग तथा मोक्षनु सुख बांधी लीधु छे एम समजवु. "

भणिऊण नमुक्कारं, निच्च निस्सरणवज्जिय धन्ना ।
पारति गठिसहिय, गठिसह कम्मगठि वी ॥ २ ॥

भावार्थ—"जे धन्य पुरुषो हमेशा स्मरणपूर्वक नमस्कार भणीने गठशी पच्चख्खाण पारे छे (गाठ छोडे छे) तेणे ते गाठ छोडवानी साथे कर्मरूपी ग्रंथि पण छोडी नाखी छे एम समजवु

१ वींटी विगेरे

"रात्रे चार प्रकारना आहारनो त्याग करे, दिवसे एक स्थाने बेसीने तांबूल विगेरे वापरी मुख शुद्ध कर तथा गठशी प्रत्याख्यान करे, तेना पुण्यने हमेशां एकवार जमतो होय तो दर क मासे ओगणत्रीश निर्जळ उपवासनु अने बे टक जमतो होय तो अठ्ठावीश निर्जळ उपवासनु फळ मळे एवु वृद्ध वाक्य छे कारण के-भोजन, पाणी, तांबूल विगेर वापरता आखा दिवसमा आशरे बे घडी जाय, एटले महिनामा साठ घडी थता एक दिवस खावा पीवानो गणायो, तेथी बाकीना ओगणत्रीश अने बेसणु करनारने चार घडी जाय तो बे दिवस घाट करता अठ्ठावीश दिवस उपवासवाळा थाय." इत्यादि उपदेश सांभळवाथी ते वणकर प्रतिबोध पाम्यो अने गठशी पच्चख्खाण धारवानो नियम कर्यो. अनुक्रमे ते मरण पामीने कपर्दि नामे यक्ष थयो.

एकदा वज्रस्वामी चतुर्विध संघ सहित सिद्धगिरिनी यात्रा माटे चाल्या. मार्गमा शत्रुंजय गिरि उपर रहनारा कोइ मिथ्यात्वी देवताए उपसर्ग कर्यो तेमा सकळ संघने दिङ्मूढ करी दीधु अने मेघ विस्ट अने लाखो पर्वत विकुर्वीने जवानो मार्ग सर्वत्र रुंधी दीधो. ते वखते सूरिए शासनदेवतानु स्मरण कर्युं. अहीं कपर्दि यक्ष तरतज उत्पन्न थयेल होवाथी तेणे विचार्यु के-" मे पूर्व भवमा शु शु पुण्य कर्यु छे के जेथी मने आवु देवतानु सुख प्राप्त थयु ?" एम विचारी तणे अवधिज्ञाननो उपयोग दीधो तो तत्काळ गुरुए आपेला प्रत्याख्याननु फळ प्रगटपणे देखवामा आव्यु पछी ते गुरुने वांदवा माटे पूर्व भवनु रूप धारण करीने तेमनी पासे आव्यो गुरुने नमीने ते बोल्यो के-" हे पूज्य स्वामी! आप मने ओळखो छो ?" त्यारे सूरिए दश पूर्वना ज्ञानी होवाथी उपयोग दीधो अने तेना पूर्व भवनु वृत्तांत जाणीने कही बताव्यु ते सांभळी कपर्दि बोल्यो के " हे महाराज! मने काइक काम सेवा बतावो " सूरिए कह्यु के-" कोइ दुष्टे आ संघने उपद्रव कर्यो छे, माटे तु तेनु निवारण कर " ते सांभळीने तरतज कपर्दि यक्षे ते मिथ्यात्वी देवने जीतीने सिद्धगिरि उपरथी नीचे पाडी दीधो. ते दूर नासी जइने कोइक ठेकाणे शुभ रीते रह्यो पछी उपसर्ग रहित थयेला संघ सहित सूरि मोटा उत्सवपूर्वक सिद्धाचळजी आव्या, अने या कपर्दि यक्षने शत्रुंजय पर्वतना अधिष्ठायक तरीके स्थाप्यो तेथीज पूर्व आचार्योए युगादीशनी स्तुति करता तेनु स्मरण कर्यु छे के-

य पूर्वं ततुवाय सुकृतकृतलवेर्दूरितै पुरितोऽपि,
प्रत्याख्यानप्रभावादमरमृगदृशामातिथेय प्रपेदे ।

सेवाहेवाकिशाली प्रथमजिनपदांभोजयोस्तीर्थरक्षा-

दक्षः श्रीयक्षराज स भवतु भविनां विघ्नमर्दी कपर्दी ॥

भावार्थ—" जे यक्षराज पूर्व भवमां तंतुवाय (वणकर) हतो ते वखते पापथी पूरित हतो तो पण पुण्यना लेशवडे प्रत्याख्यानना प्रभावथी देवांगनाओनो अतिथि थयो, तथा जे आदीश्वरना चरणकमळनी निरंतर सेवा करवाथी शोभी रह्यो छे ते तीर्थरक्षणमां चतुर एवो कपर्दि यक्ष भव्य प्राणीओना विघ्ननो नाश करनार थाओ "

आ प्रमाणे ग्रंथिसहित अभिग्रह पच्चख्खाणनुं फळ छे.

दशमुं निविप्रत्याख्यान छे तेमां सर्व विगयनो त्याग करवो. ते पच्चख्खाणमां आठ अथवा नव आगार छे तेमां जे पिंडरूप (कठण वस्तु) माखण गोळ विगेरे उखेडी शकाय छे ते सहितनुं अर्थात् पिंड तथा द्रव्य रूप बन्ने विगयनुं पच्चख्खाण करे तेने 'उक्खित्त विवेगेण' नामना आगार सहित नव आगार समजवा, अने जे द्रव रूप एटले उखेडी न शकाय एवा एकला द्रव विगयनुं पच्चख्खाण करे तेने ते आगार विना बाकीना आठ आगार जाणवा. आ विषय उपर घणो विस्तार छे ते प्रवचन सारोद्धारनी वृत्तिथी जाणी लेवो.

[१] विगय न वापरवानुं फळ पच्चख्खाण भाष्यमां कह्युं छे ते आ प्रमाणे—

विगइ विगइभीओ, विगइगयं जो अ भुंजए साहु ।

विगइ विगईसहावा, विगई विगइं बला नेइ ॥ १ ॥

भावार्थ—"विगति जे नरकादिक गति तेथी भय पामेलो एवो साधु विगयगत एटले निवियाता—तेनुं भोजन करे छे. विगय विकृतिना स्वभाववाळी छे, अर्थात् विकार करनारी छे, तेथी ते बलात्कार तेना खानारने विगति एटले कुगतिमा लइ जाय छे."

माटे कारण विना विगयनुं भोजन करवुं नहीं. आ प्रमाणे काळ प्रत्याख्यानना दश प्रकार कह्या तेनुं फळ मात्र अर्धी गाथावडे कह्युं छे. तेनो भावार्थ एवो छे के-नरकना जीव अकाम निर्जराए करीने सो वर्षे जेटलां कर्म खपावे तेटला कर्म मात्र नवकारसीना पच्चख्खाणथी श्रद्धाळु जीव खपावे छे, तेवीजरीते पोरसीना पच्चख्खाणवडे हजार वर्षनां पापकर्म खपावे छे. साढपोरसीना पच्चख्खाणथी दश हजार

१ दुध, दहीं, घी, तेल, गोळ ने [illegible] महाए ए दरेक विगयना [illegible] छ, जेम दुध विगयना खीर,

वर्षना अशुभ कर्म खपावे छे,सर्वत्र नारकी जीवना कर्मनु अनुसधान जाणवुं.वळी नरकमा रहेलो जीव क्षुधा, तृषा तथा बीजी क्षेत्रादिक वेदना लाख वर्ष सुधी अनुभवीने अकाम निर्जरावडे पूर्वभवमा उपार्जन करेला जेटला निकाचित कर्मना बधने छेदी नाखे छे तेटला वर्षनु अशुभ कर्म मात्र एक पुरिमड्ढ पच्चखाणथी नाश पामे छे. ए प्रमाणे उत्तरोत्तर वधता पच्चखाणथी दश दश गणु कर्म खपे छे, एटले एकासणाथी दश लाख वर्षनु कर्म, निविथी करोड वर्षनु कर्म, एकलठाणाथी दश करोड वर्षनु कर्म,आबिलथी सो करोड वर्षनु कर्म,उपवासथी दश हजार करोड[1] वर्षनुं कर्म, बे उपवासथी लाख करोड वर्षनु कर्म अने अट्ठमथी (त्रण उपवासथी) दश लाख करोड वर्षनु अशुभ कर्म क्षय पामे छे. इत्यादि प्रत्याख्याननु फळ जाणीने योग्य जीवोने बळात्कारे पण पच्चखाण कराववु उचित छे ते उपर दृष्टात कहे छे

पाटलीपुर नगरमा शकडाल मत्रीनो पुत्र श्रीयक नामे नदराजानो मंत्री हतो, तेणे चिरकाळ सुधी राज्यनु प्रधानपणु करीने पछी दीक्षा लीधी हती. ते बहु क्षुधावाळो हतो, तेथी एकासणा जेवु तप पण करी शकतो नहतो, पण क्रियामा तत्पर रहेतो एकदा पर्युषण पर्वमा तेनी बहेन यक्षा नामनी आर्याए श्रीयक मुनिने कह्यु के-" हे बधु ! तमे पच्चखाणनु फळ जाणो छो, वळी हालमा तो चारित्र ग्रहण कर्यु छे, तेथी आवा पर्युषण पर्वमा तो विशेषे करीने तपस्या करवी जोइए " इत्यादि पोतानी बहेन यक्षा आर्याना वचनथी श्रीयक मुनि लज्जित थया, तेथी तेमणे पोरसीनुं पच्चखाण लीधु ते पच्चखाण पूरु थवा आव्युं, एटले फरीथी यक्षा आर्याए कह्यु के- " तमे पुरिमड्ढनुं पच्चखाण करो. आ पर्व घणु दुर्लभ छे, अने एटलो काळ तो चैत्य परिपाटी करता सुखे चाल्यो जशे." एवु साभळीने मुनिए तेम कर्यु. ते पच्चखाण पूरु थयु एटले फरीथी आर्याए कह्यु के-" हवे अवड्ढना काळ सुधी रहो " तेथी तेणे ते पण अगीकार कर्यु. ते काळ पण पूर्ण थता फरीथी आर्याए कह्यु के- " हे बधु ! हवे तो रात्रीनो समय नजीक आव्यो छे, अने रात्रि तो सुइ जवाथी सुखे जती रहेशे, माटे उपवासनं पच्चखाण करो." बहेनना आग्रहथी मुनिए तेम कर्यु अर्ध रात्री थतां क्षुधानी पीडा वधी पडवाथी देवगुरुनु स्मरण करता सता मरण पामीने देवलोक गया ते वात जाणीने यक्षा साध्वीए पोताने ऋषि हत्या लागी एवी शकाथी चतुर्विध आहारनो त्याग कर्यो. ते वखते चतुर्विध

१ हजार करोड वर्ष माटे कयु पच्चखाण ते रहीं गयेलु छे कदि तिविहार उपवासनु तटलु फळ होय छे चौविहार उपवासनु दश हजार करोड वर्षनु होय तो होय.

संघे एकत्र थइने सा ध्वीने कह्यु के–"तमे शुद्ध भावथी उपवास कराव्यो हतो, तेथी तेनु तमने कांइ पण प्रायश्चित्त नथी." साध्वीए श्रीसंघने कह्युं के–" जो साक्षात् जिनेश्वर मने कहे तो मारा मननी शका दूर थाय, ते सिवाय मारूं मन शांत थशे नहीं " ते सांभळीने सर्व संघे कायोत्सर्ग कर्यो; एटले शासनदेवी आवीने बोली के–" जे काम होय ते कहो, हु शु काम करूं?" संघे कह्युं के " आ साध्वीने सीमंधर स्वामी पासे लइ जाओ " देवीए कह्यु–"तमे सर्व संघ मारी निर्विघ्न गति थवा माटे कायोत्सर्गमांज रहो." संघे फरीने कायोत्सर्ग अंगीकार कर्यो, एटले देवी ते साध्वीने जिनेश्वर पासे महाविदेह क्षेत्रमा लइ गइ. साध्वीए प्रभुने नमीने पोतानो वृत्तांत कह्यो. त्यारे प्रभुए कह्यु के–"हे साध्वी ! तुं निर्दोष छे."ते साध्वीने जोइने त्यांना लोको अति आश्चर्य पाम्या. पछी जिनेश्वरे तेने कृपाथी बे चूलिका आपी साध्वीनो संदेह नष्ट थयो, एटले शासनदेवी तेने पाछी पोताने स्थाने लावी सघे कायोत्सर्ग पार्यो. पछी यक्षा आर्याए श्रीसंघने कह्यु के–"श्री सीमंधर स्वामीए मारा मुखथी संघने माटे पदो तथा चार अध्ययन मोकल्यां छे, ते विषे परिशिष्ट पर्वमां कह्युं छे के–

भावना च विमुक्तिश्च, रतिकल्पमथापरम् ।
तथा विविक्तचर्या च, तानि चेतानि नामतः ॥ १ ॥

भावार्थ—"भावना, विमुक्ति, रतिकल्प अने एकांत चर्या ए चार अध्ययनोनां नाम छे.

अप्येकया वाचनया, मया तानि धृतानि च ।
उद्गितानि च संघाय, तत्तथाख्यानपूर्वकम् ॥ २ ॥

भावार्थ—"में एकज वाचनाए करीने ते धारण करेलां छे, अने ते जेवां ग्रहण कर्यां हता तेवाज में श्रीसंघनी पासे कही संभळाव्या छे.

आचारांगस्य चूले द्वे, आद्यमध्ययनद्वयम् ।
दशवैकालिकस्यान्य–द्वय संघे नियोजितम् ॥ ३ ॥

भावार्थ—"पूर्वोक्त चार अध्ययनमांना पहेला बे अध्ययन श्रीआचारांग सूत्रनी चूलिकारूपे अने बाकीना बे दशवैकालिक सूत्रनी चूलिकारूपे श्रीसंघे जोडी दीधां."

त्यारपछी हमेशा यक्षा आर्या श्रीस्थुलभद्र विगेर मुनिओनी पासे श्री सीमंधर स्वामीए कहेला श्रीयक मुनिना पच्चक्खाणना फळनु वर्णन करती हती.

"श्रीयक मुनिए यक्षा आर्यानी प्रेरणाथी एक उपवास मात्र करवाथी शुभ गति प्राप्त करी सीमंधर स्वामीए पण ते तेनी प्रशंसा करी, माटे सौए तप करवुं तथा बीजाने करावबु"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य अष्टचत्वारिंशदधिकद्विशततम प्रबंध. ॥ २४८ ॥

व्याख्यान २४९ मु

दश प्रकारना प्रत्याख्यान विषे.

प्रत्याख्यान द्विधा प्रोक्तं, मूलोत्तरगुणात्मकम् ।
द्वितीयं दशधा ज्ञेय--मनागतादिभेदकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मूल गुण तथा उत्तर गुण रुप बे प्रकारना प्रत्याख्यान शास्त्रमा कहेला छे, तेमा उत्तर गुण प्रत्याख्यानना अनागत विगेरे दश भेद कहेला छे."

प्रति एटले अविरति रुप प्रवृत्तिनु प्रतिकूळपणे आख्यान कहेतां कहेवुं एटले विरति करवी तेनु नाम प्रत्याख्यान कहेवाय छे तेना बे भेद छे पहेलु मूलगुण प्रत्याख्यान ते साधुने पच महाव्रतरुप अने श्रावकोने पांच अणुव्रतरुप छे. बीजु उत्तरगुण प्रत्याख्यान ते साधुने पिंडविशुद्धि विगेरे अने श्रावकोने गुणव्रत आदि छे प्रत्याख्यान समये शिष्ये विनयपूर्वक सारी रीते उपयोग राखीने गुरुना वचनानुसार प्रत्याख्यान ग्रहण करवु ते प्रमाणे प्रत्याख्यान लेवाना चार भांगा छे. शिष्य पोते प्रत्याख्याननु स्वरुप जाणतो होय अने तेवाज ज्ञानवाळा गुरुपासे पच्चख्खाण ले १, गुरु ज्ञानवान् होय अने शिष्य अजाण होय २ शिष्य जाणतो होय अने गुरु अजाण होय ३, अने शिष्य तथा गुरु बन्ने अजाण होय ४. आ चार भांगामा पहेलो भंग शुद्ध छे. बीजो पण शुद्ध छे, कारण के गुरु

ज्ञाता होय तो अजाण एवा शिष्यने संक्षेपमां समजावीने प्रत्याख्यान करावे अन्यथा तो ते भांगो अशुद्ध छे. त्रीजो भांगो पण अशुद्ध छे, परंतु तेवा ज्ञाता गुरु मळे नहिं तो गुरुना बहुमानथी गुरु, सबंधी, पिता, काका, मामा, भाइ के शिष्य विगेरे अजाणने पण साक्षीरूप करीने प्रत्याख्यान ले, तो ते पोते ज्ञाता होवाथी शुद्ध जाणवो अने चोथो भांगो तो सर्वथा अशुद्धज छे

उत्तरगुण प्रत्याख्यानना दश प्रकार छे. ते हमेशां उपयोगी होवाथी प्रथम तेनुं स्वरुप कहे छे.

अणागयमइक्कत, कोडीसहियं नियट्टि अणागारं।
सागार निरवसेसं, परिमाणकडं संकेय अद्धा ॥ १ ॥

शब्दार्थ–अनागत, अतिक्रांत, कोटी सहित, नियंत्रित, अनागार, सागार, निरवशेष, परिणामकृत, संकेत अने अद्धा ए दश प्रकार छे.

१ पर्युषण विगेरे पर्व आगळ आववाना होय, तेमा अठ्ठम आदि तप करवुं होय, परंतु पर्युषणमां तप करवाथी गुरु, ग्लान विगेरेनी वैयावच्च करवामां अंतराय आवशे, एम लागतु होय तो ते पर्व आव्या पहेलाज ते तप करी लेवुं ते अनागत तप कहेवाय छे. २ पर्युषणादि पर्वमां गुरु विगेरेनी वैयावच्चमां व्याकुल रहेवाथी तप थइ शक्युं नहीं तेथी ते तप पर्व गया पछी करवु ते अतिक्रांत तप कहेवाय छे. ३ प्रथम दिवसे प्रातःकाळे अभक्तनु प्रत्याख्यान करीने ते दिवसे उपवास करे, अने बीजे दिवसे प्रातःकाळमां पण पहेले दिवसे जे वखते उपवासनु पच्चख्खाण कर्युं होय तेज वखते बीजा उपवासनु पच्चख्खाण ले, एटले बे उपवासनी कोटी मळवाथी ते कोटी सहित पच्चख्खाण कहेवाय छे. एवीज रीते पारणु कर्या पहेलां आंबिल विगेरे तपना पच्चख्खाण करवा ते पण कोटिसहित कहेवाय छे. ४ उपवासादिक करवानो जे दिवसने माटे निश्चय कर्यो होय ते दिवसे ग्लानत्वादिक अंतराय प्राप्त थया छतां पण नियमपूर्वक उपवासादिक करे ते नियंत्रित पच्चख्खाण कहेवाय छे. आवु तप पूर्वे चौद पूर्वधर विगेरे तथा प्रथम संघयणवाळा, अने ते वखतना स्थविरकल्पीओ पण करता हता, परंतु सांप्रत समयमां ते तपनो विच्छेद थयो छे. ५ अनागार "एटले महत्तरागारेणं" विगेरे आगार रहित जे पच्चख्खाण करवुं ते अनागार कहेवाय छे आ पच्चख्खाणमां पण "अन्नथ्थणाभोगेण तथा सहसागारेण" ए बे आगार तो आवेज छे, केमके कोइ वखत अजाणता अथवा रभसताथी मुखमां आंगळी,

तृण विगेरे नाखी देवाय अथवा अचित्या मुखमा आवी पडे. माटे उपरना बे आगार सिवाय बीजा " महत्तरागारेण " विगेर आगार रहित पच्चख्खाण करे ते अनागार पच्चख्खाण कहेवाय छे. ६ महत्तरादिक आगार सहित जे पच्चख्खाण करवामा आवे ते सागार पच्चख्खाण कहेवाय छे एमा महत्तराकार होवाथी कोइ महत् कार्यप्रसंगे गुरुनी आज्ञावडे पच्चख्खाण कर्यां छता पण कदाच भोजन करवु पडे तो तेथी पच्चख्खाणनो भंग थतो नथी. ७ चार प्रकारना आहारनो सर्वथा त्याग करवो ते निरवशेष पच्चख्खाण कहेवाय छे, तेमा अशन एटले लाडु,मांडा खाजा विगेरे, पान एटले पीवाय तेवी वस्तु, खजुरनो रस, द्राक्षरस विगेर, खादिम एटले नालीयेर विगेर फळ तथा गोळ धाणा विगेरे अने स्वादिम एटले एलची, कपूर, लविंग, सोपारी विगरे. ए चारे प्रकारना आहारनो त्याग करवामा आवे छे आठमु परिमाणकृत नामनु पच्चख्खाण छे, तेमा परिमाण एटले कवळ (कोळीआ) तथा भिक्षाना घर विगेरनी संख्यानु करवु एटले नियम करवो ते. आ तपमां जेटलु परिमाण कर्यु होय तेथी अधिक वस्तु वापरवी नहीं एम समजवु

९ नवमु सकेत पच्चख्खाण छे. तेमा "सकेत" एटले "घर" सहित जे होय ते अर्थात् गृहस्थ, अथवा सकेत एटलेज गृहस्थो तेमने करवा लायक पच्चख्खाण ते सांकेतिक पच्चख्खाण कहेवाय छे. आ पच्चख्खाण प्राये गृहस्थोनेज होय छे अथवा " केत " एटले चिन्ह अने " स " एटले सहित अर्थात् काइ पण चिन्हसहित लेवामां आवे ते जेमके-कोइ श्रावक पोरसी आदि पच्चख्खाण लइने क्षेत्र विगेरे अन्य स्थाने गयो होय अथवा घेर ज रह्यो होय. पछी प्रत्याख्याननो समय पूर्ण थयो होय पण भोजनसामग्री थइ न होय तेथी एक क्षणवार पण प्रत्याख्यान विना रहेवु योग्य नथी एम धारीने ते अगुठा विगेरनु चिन्ह करे एटले के-"ज्या सुधी मुठीमा अगुठा राखी नवकार गणी बहार काढु नहीं त्या सुधी, अथवा मुठी वाळुं नहीं के गांठ छोडु नहि त्यासुधी मारे भोजन करवु नहीं." एवीज रीते " ज्या सुधी घरमां पेसु नहीं, अथवा परसेवाना बिंदु सुकाय नहीं, अथवा दीवो ओल्वाय नहीं, त्या सुधी मारे भोजन करवु नहीं. एवो नियम करी राखे ते सकेत पच्चख्खाण कहेवाय छे केटलीक वखत पोरसी आदि पच्चख्खाण कर्यु न होय पण मात्र ग्रथी विगेरनु चिन्ह धारी अभिग्रह करवामा आवे छे तो ते पण सांकेतिक पच्चख्खाण गणाय छे आवी रीते साधु पण पच्चख्खाण करी शके छे.

१० दशमु अद्धा पच्चख्खाण छे अद्धा शब्दे काळ कहेवाय छे, तेमा मुहूर्त पहोर विगेर काळनो नियम करीने पचखाण करवामा आवे छे तेथी तेने अद्धा पच्चखाण कहेलु छे. तेनु स्वरूप पाछला व्याख्यानमां आवी गयु छे.

कांइ पण पच्चखाण लीधुं होय तो ते दामन्नकनी जेम बराबर पाळवु. तेनुं दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

हस्तिनापुरमां सुनंद नामे एक कुलपुत्र रहेतो हतो तेने जिनदास नामना श्रेष्ठी साथे मैत्री हती तेथी ते श्रेष्ठी पासे हमेशां पच्चखाणनो महिमा सांभळतो हतो. एकदा श्रेष्ठी तेने गुरु पासे लइ गया गुरुए अनागत आदि प्रत्याख्याननुं स्वरूप तथा फळनु वर्णन कर्युं. ते सांभळीने सुनंदे मद्यमासनु पच्चखाण शुद्ध भावथी ग्रहण कर्यु पछी कोइ वखत सर्व स्थाने मोटो दुष्काळ पड्यो, तेथी छठ्ठा आरानी जेम सर्व लोक प्राये मांसभक्षण करनारा थइ गया. सुनंदना स्वजनो क्षुधाथी अत्यंत पीडावा लाग्या, तेथी तेने एक दिवस घणो उपालंभ आपीने तेना साळा साथे माछला लेवा माटे मोकल्यो. सुनंदे पाणीमां जाळ नांखी, परंतु जाळमां फसायेला माछला जोइने तेमने मुकी देतो हतो. ते जोइने तेना साळाए कह्यु के—"हे बनेवी! तमे कोइ मुंडाना वाक्यरूपी जाळमां फसाया छो, तेथी तमारां स्त्रीपुत्रादिकने दुःखरूपी जाळमांथी शी रीते काढी शकशो? जाण्युं तमारु दयापणु!" विगेरे कह्या छतां पण तेणे ते दिवसे एके माछलुं पकड्यु नहि. तेवीज रीते बीजे दिवसे पण एके माछलुं पकड्यु नहीं, अने कहेवा लाग्यो के—"हु शु करु? कोइ वखत मने मत्स्य पकडवानो अभ्यास नथी." ते सांभळीने तेना स्वजनो तेने शीखववा लाग्या परंतु तेना निर्मळ धर्मनी भावना गइ नहि. त्रीजे दिवसे तळाव पर जइने जाळ नाखी तेमा एक माछलानी पांख त्रुटी गइ, ते जोइने सुनंद अत्यंत शोकातुर थयो. तेणे स्वजनोने कह्युं के "हु कोइ वखत पण आवुं हिंसानु काम करीश नहीं" एम कहीने प्रफुल्लित मनथी तेणे निरवशेष अनशननु पच्चखाण कर्यु, अर्थात् आहारनो त्याग कर्यो. त्याथी मरीने ते राजगृही नगरीमा मणिकार श्रेष्ठीने घेर पुत्रपणे उत्पन्न थयो. मातापिताए तेनुं दामनक नाम राख्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामतां ते आठ वर्षनो थयो, एटले मारीना उपद्रवथी तेनु सर्व कुटुंब नाश पाम्यु तेथी भयने लीधे ते पोताना घरमाथी नासी गयो फरता फरता तेज नगरमा सागरदत्त नामना श्रेष्ठीने घेर आव्यो, ने नोकरी करीने आजीविका करवा लाग्यो.

एक दिवस कोइ बे मुनि गोचरी माटे ते शेठने घेर आव्या तेमां मोटा साधु सामुद्रिक शास्त्रमा निपुण हता, तेणे दामनकने जोइने बीजा मुनिने कह्यु के—"आ दासपणानु काम करनार माणस छे ते वृद्धि पामीने आज घरनो स्वामी थशे." आ प्रमाणेनु साधुनु वचन श्रेष्ठीए भींतनी ओथे उभा रहीने साभळ्युं, तेथी

जाणें वज्रपात थयो होय तेम तेने घणो खेद उत्पन्न थयो तेणे विचार्युं के-"आ बाळकने कोइ पण उपायथी आजे ज मारी नाखुं, एटले बीजनो नाश कर्या पछी अंकुर क्याथी थशे?" ए प्रमाणे विचारीने तेणे ते बाळकने लाडुनो लोभ बतावीने चांडाळने घेर मोकल्यो. त्यां एक चांडाळने ते श्रेष्ठीए प्रथमथी द्रव्य आपीने साधी राख्यो हतो अने तेने कह्युं हतुं के-"हुं तारी पासे मोकलुं ते बाळकने मारीने तेनी निशानी मने बतावजे." ते बाळकने मृगलाना बच्चानी जेवो मुग्ध आकृति (सुंदर आकृति) वाळो जोइने ते चांडाळने दया आवी, तेथी तेनी कनिष्ठिका आंगळी कापी लइने ते बाळकने तेणे कह्युं के-"रे मुग्ध! जो तुं जीववाने इच्छतो होय तो अहींथी जलदी नासी जा" ते सांभळीने ते ज सागर श्रेष्ठीनुं गोकुळ जे गाममां हतुं ते गाममां गयो. त्यां गोकुळना रक्षण करनारे तेने विनयी जोइने पुत्र तरीके राख्यो. त्यां ते सुखे रहेवा लाग्यो, अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो.

एकदा सागर श्रेष्ठी गोकुळमां आव्यो, त्यां छेदेली आंगळीना चिन्हथी तेणे दामनकने ओळख्यो पछी कांइक कार्यनुं मिष करी गोकुळना रक्षकने कहीने श्रेष्ठीए पोताना पुत्रपर कागळ लखी दामनकने तेनी पासे मोकल्यो. दामनक कागळ लइने उतावळो राजगृह पहोंच्यो. अश्रांत चालवाने लीधे थाक लागवाथी गाम बहार उद्यानमां कामदेवना मंदिरमां ते विश्रांति लेवा बेठो त्यां तेने थाकेलो होवाथी तरत ज उंघ आवी गइ तेवामां सागर श्रेष्ठीनी विषा नामनी पुत्री पतिनी इच्छाथी ते ज कामदेवना मंदिरमां आवी. त्यां दामनकनी पासे पोताना पितानी मुद्रावाळो कागळ जोइने ते कागळ तेणे धीरेथी लइ लीधो, अने कागळ खोलीने ते वांचवा लागी

"स्वस्तिश्री गोकुळथी ली० श्रेष्ठी सागरदत्त समुद्रदत्त पुत्रने स्नेहपूर्वक फरमावे छे के-आ कागळ लावनारने वगर विलंबे तरत ज विष आपजे, तेमां कांइ पण संदेह करीश नहि."

आ प्रमाणेनो लेख वांचीने दामनकना रुपथी मोहित थयेली विषाए सळी-वडे आंखनो मेषथी बिंदु उपरनुं बिंदु काढीने "ष" पासे कानो करी विषने बदले विषा कर्युं पछी ते कागळ बंध करीने हतो तेम मूकी दइ हर्षथी ते पोताने घेर गइ. केटलीक वारे दामनक पण जागृत थयो, एटले गाममां जइने तेणे श्रेष्ठीपुत्रने ते कागळ आप्यो ते पण कागळ वांची आनंद पाम्यो अने तेज वखते लग्न लइने मोटा आडंबरथी सर्व जन समक्ष पोतानी बेन विषाने तेनी साथे परणावी. दामनक तेनी साथे सुखेथी विलास करवा लाग्यो. केटलेक दिवसे

सागरश्रेष्ठी घेर आव्यो, एटले विषाना लग्ननी वात जाणी ते अति खेद पाम्यो. तेणे विचार्यु के– "अहो! मारू चिंतवेलु कार्य तो उलटु थयु अने आ तो मारो जमाइ थयो, तो पण प्रपंचथी तेने मारी नाखु. पुत्री विधवा थाय ते सारुं पण शत्रुनी वृद्धि थाय ते सारु नहीं." आ प्रमाणे विचार करीने तेणे पेला चांडाळ पासे जइने कहुं के–"अरे! ते दिवसे ते मने आंगळीनी निशानी आपीने छेतर्यो ते ठीक कर्यु नहीं." चांडाळ बोल्यो के– "हे शेठजी! हवे तेने देखाडो, हुं जरुर मारी नाखीश." पछी श्रेष्ठी तेने मारवा माटे मातृका देवीना देरानो संकेत आपीने घेर आव्या अने दामनकने कहुं के– "हे वत्स! तुं आजे सांजे विषा सहित मातृका देवीना प्रासादमां पूजा करवा जजे, के जेथी देवीनी कृपावडे तमारा बन्नेनु कुशळ थाय." पछी सायकाळ थतां ते दंपती पूजा करवा माटे चाल्या. मार्गमां तेनो साळो मळ्यो तेणे कह्यु के– 'क्यां जाओ छो?' दामनके देवीनी पूजा करवा जवानुं कहुं, एटले ते बोल्यो के– "अत्यारे पूजानो समय नथी, केमके अंधकार प्रसरवानो समय नजीक होवाथी घणा दोषने उत्पन्न करनार प्रदोषनो समय छे." एम कहीने ते बन्नेने त्यांज रोकीने पोते पूजानी सामग्री लइने पूजा करवा गयो. प्रथमथीज श्रेष्ठीनो संकेत होवाथी पेला चांडाळे तेने देरामा पेसतांज जाणे ते देवीने बळीदान देतो न होय तेम मारी नांख्यो. पुत्रनु मरण सांभळीने सागर श्रेष्ठीनुं वक्षःस्थळ भेदाइ गयुं, तेथी ते पण मृत्यु पाम्यो. पछी राजाए दामनकने तेना घरनो स्वामी कर्यो.

एक वखत रात्रीना पाछला पहोरे [1]मंगलपाठकना मुखथी दामनके एक गाथा सांभळी. तेनो भावार्थ एवो हतो के—"निरपराधीने अनर्थमां नाखवा माटे कोइ अनेक प्रयत्नो करे तो ते उलटा तेने बहु गुणना करनारा थाय छे. दुःखने माटे करेल उपाय सुखने माटे थाय छे, केमके कृतांत (दैव) ज जेनो पक्ष करे तेने बीजो शुं करी शके?"

आ गाथा ते त्रण वार बोल्यो, एटले दामनके तेने त्रणलाख द्रव्य आप्युं. राजाए एटलु बधु दान आपवानु कारण पूछ्यु, त्यारे दामनके पोतानो सर्व पूर्व वृत्तांत कह्यो.

एकदा ज्ञानी गुरु मळवाथी तेमो पासेथी पोताना पूर्व भवमां करेला प्रत्याख्यानतुं फळ जाणीने जातिस्मरण थवाथी दामनक विशेषे धर्मनो रागी

1 भाट चारण विगेर.

थयो अनुक्रमे मरण पामीने देवलोकनु सुख प्राप्त कर्युं. त्याथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमा उत्पन्न थइ क्रमे करीने सिद्धिपदने पामशे

" पूर्वे भवमां करला प्रत्याख्यानना प्रभावथी दामनकनु शत्रुए मयोजेलु कष्ट नाश पाम्यु, अने उलटो तेनाज घरनो स्वामी थया. तेमज अनुक्रमे ते लाकोत्तर सुख पाम्यो, माटे सर्व कोइए भावपूर्वक प्रत्याख्यान करवु."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य नवचत्वारिंशदधिकद्विशततमः प्रबंध ॥ २४९ ॥

व्याख्यान २५० मुं.

व्रतभङ्गन करवानु फळ.

यथा श्रेष्ठिसुत पूर्वं, धर्मखण्डनयानया ।
धनदाख्य फलखन्, मत्स्योदरपराजिध ॥ १ ॥

भावार्थ–" पूर्वे बीजु जेनु मत्स्योदर नाम छे एवो धनद नामे श्रेष्ठीपुत्र पच्चखाणरूप धर्मनु खडन करवाथी खंडित फळने पाम्यो. " तेनु दृष्टात आ प्रमाणे–

मत्स्योदरनी कथा

कनकपुर नगरमां कनकरथ नामे राजा हतो. ते गाममा सागरदत्त नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो तेने धनदत्त नामे पुत्र हतो. ते गाममा सिंहल नामनो एक जुगारी रहतो हतो, ते एक दिवस कोइ देवीना मदिरमा गयो अने देवीने कह्यु के–" हे देवी ! मने धन आप, नहीं तो तारी प्रतिमा भागी नाखीश." ते साभळीने देवी बोली के–" तारा भाग्यमां धन नथी, तो पण आ गाथा ग्रहण कर.

जंचिय विहिणा लिहियं, तंचिय परिणमइ सयललोयस्स ।
इय जाणेवि धीरा, विहुरेवि न कायरा हुंति ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे विधिए लखेलु होय छे तेज सकळ लोकने प्राप्त थाय छे, एम जाणीने धीर पुरुषो सकटमा पण कायर थता नथी. "

आ गाथा हजार सोनामहोर लइने तु वेचजे." जुगारी ते गाथा लइने बजारमां गयो. त्यां धनदत्त ते गाथा वांचीने हजार सोनामहोर आपी ग्रहण करी ते वात तेना पिताना जाणवामां आवी, एटले तेने घरमांथी काढी मूक्यो. धनदत्त उत्तर दिशा तरफ चाल्यो, रस्तामां चोरोए तेने पकडी लइने वणजाराने वेच्यो. वणजाराए तेने पारसकुळमां जइ वेच्यो तेओए तेने लोहीने वास्ते वेचातो लीधो. पछी हमेशां तेना शरीरमांथी लोही काढवाथी ते अत्यंत निःसत्व थइ गयो. एकदा अचेतन थइने पडेलो अने तेनु शरीर लोहीथी खरडेलुं होवाथी भारंड पक्षीए उपाड्यो. अने सुवर्णद्वीपमां मूकी दीधो त्यां पण पेली गाथानो अर्थ संभारतो सतो सुखे रहेवा लाग्यो. एकदा रात्रीए अरणिना लाकडां सळगावीने तेना अग्निवडे ते ताप्यो. प्रातःकाळे ते स्थाननी पृथ्वी तेणे सुवर्णमय थयेली जोइ तेथी तेणे ते माटीनी इंटो बनावी अने तेनी मध्यमा पोतानु नाम राखीने तेना आठ हजार ने पांच संपुट बनाव्या. ते इंटो अग्निमां पकवता सुवर्णमय थइ गइ तेमनो तेणे एक ठेकाणे ढगलो कर्यो एकदा कोइ वहाणवटी पाणी लेवा माटे ते किनारे उतर्यो तेणे धनदत्तने पूछयुं के–" तमे अहीं क्यांथी आव्या छो ? " धनदत्ते कहयु के–" मारी सुवर्णनी इंटो लेवा आव्यो छु, माटे आ इंटो जो तमे भाडु ठरावीने लइ जाओ तो आमांथी चोथो भाग तमने आपीश " वहाणवटीए कबुल करीने ते इंटो वहाणमा भरावी पछी विश्वास पमाडीने ते वहाणवटीए इंटोना लोभथी तेने एक कुवामा नाखी दीधो धनदत्ते कुवामा पगथीयां जोयां. ते पगथीयांने रस्ते अंदर उतरतां तेणे एक मनुष्यविनानु शून्य नगर जोयु. त्यां चक्रेश्वरी देवीनुं मनोहर मंदिर जोइने ते अंदर गयो. देवीने वंदन करीने तेनी पूजा करी. भक्तिथी प्रसन्न थइने देवीए तेने पांच रत्न आप्या, तेमां एक सौभाग्य आपनार, बीजुं रोगनो नाश करनार, त्रीजु आपत्तिमांथी रक्षण करनार, चोथु विष उतारनार अने पांचमु लक्ष्मी आपनार हतु. ते रत्नो तेणे पोतानी जंघा विदारीने तेमां गोपव्यां पछी धनदत्त नगरमां आगळ चाल्यो, पण कोइ मनुष्य तेना जोवामां आव्युं नहीं. चालता चालता ते राजमहलमा गयो अने उपर चढ्यो. त्या तेणे एक सुंदर कन्या जोइ ते कन्याए तेने सन्मान आप्यु. धनदत्ते तेने नगर शून्य थवानु कारण पूछयुं, एटले ते बोली के–"आ तिलकपुर नामनुं नगर छे. आ नगरमां मारो पिता महेन्द्र नामे राजा हतो एक दिवसे शत्रुओए आवीने नगरने घेरी लीधुं, तेज रात्रीए

१ लोहीनो रंग बनावनार पस्तीवाळो देश (बब्बरकूल.)

कोइ व्यंतर मारा पिता पासे आव्यो.मारा पिताए तेने पृछ्युं के-" तुं कोण छे ? " त्यारे व्यंतरे कह्युं के- " हुं तारा पूर्व भवनो मित्र छु. " मारा पिताए कह्यु के-"त्यारे तुं आ मारा नगरने ज्यां शत्रुनो भय न थाय एवे स्थाने मूक." ते सांभळीने व्यंतर एक शहर कूवा पासे वसाव्युं, अने आ वीजुं कूवाना मार्गे अहीं आव्युं. एकदा कोइ राक्षस अहीं आव्यो तेणे बन्ने नगर सर्व लोकनुं भक्षण करीने मनुष्यरहित करी नाख्या. मात्र एक मने ज परणवानी इच्छाथी जीवती राखी छे, ते आजेज मने परणवानो छे." आ प्रमाणे ते कन्या वात करेछे तेटलामां आकाशमां शब्द करतो ते राक्षस आव्यो. ते कन्याए धनदत्तने कह्यु के-"तमे अहीं गुप्त रीते रहो, नहीं तो तमने पण ते पापी मारी नाखशे " एम कहीने धनदत्तने चंद्रहास खड्ग बतावीने कह्यु के "आ खड्गथी ते पापीष्टने देवपूजाने वखते मारवो, तेथी तेनु मृत्यु थशे, ते सिवाय तेनु मृत्यु थाय तेम नथी." आ प्रमाणे संकेत करीने तेने गुप्त स्थाने सनाडी राख्यो. राक्षस पूजा करवा बेठो ते वखते समय जोइने धनदत्ते खड्गवती तेने मारी नाख्यो.पछी धनदत्त ते कन्याने परण्यो अने रत्नादिक सार सार वस्तु लइने ते बन्ने कूवामां आव्या. ते वखते कोइ वहाणवटी ते कूवामांथी पाणी लेवा आव्यो. तेणे कूवामां मनुष्यो छे एम जाणीने ते बन्नेने बहार काढ्या. पछी धनदत्तना कहेवाथी वहाणवाळाए तेमने भाडु लइने वहाणमां बेसाड्या. वहाणनो स्वामी ते स्त्रीनु स्वरूप तथा द्रव्य जोइने मोह पाम्यो, तेथी मार्गमां धनदत्तने मैत्रीभावथी विश्वास पमाडीने समुद्रमां नाखी दीधो. धनदत्त तो सर्वत्र गाथानो अर्थ स्मरण करी सुखदुःखमां समान रहेतो हतो. समुद्रमां पडतांज तेना हाथमां एक पाटियु आव्यु, ते तेणे पकडी लीधु समुद्रना कल्लोल उपर ते तरतो हतो तेवामां एक मोटो मत्स्य तेने पाटिया सहित गळी गयो त्यां तेने बहु खेद थयो अने घणी पीडा थइ, पण ते तो गाथानो अर्थ ज विचारवा लाग्यो के ' विधिए जेवा सुख दुःख लख्यां होय तेवां भोगववाज पडे छे.'

पेलो मत्स्य मनुष्यना भारथी खेद पामीने समुद्रने किनारे गयो त्यां मच्छीमारे तेने पकड्यो. तेने चीरता तेना उदरमांथी धनदत्त नीकळ्यो, ते मूर्छित थइ गयेलो हतो, तेथी मच्छीमारे तेने धीरे धीरे सज्ज कर्यो. पछी कनकपुरना राजाने सर्व वृत्तांत कहीने तेने राजा पासे आण्यो, राजाए तेने तेनो हवाल पूछ्यो एटले तेणे कलेवर वृत्तांत एकांतमां कह्यो, तेथी प्रसन्न थइने राजाए तेने घणा सत्कार पूर्वक [1]पानीभर बनाव्यो. त्यां तेणे मत्स्योदर नाम राख्युं.

[1] राजा जेनापर प्रसन्न थाय तेने तांबूल आपनारनुं पद आपे छे.

एक दिवस जे वहाणवटीए तेने कूवामां नांखी दीधो हतो ते तेज नगरे वहाण सहित आव्यो अने राजानी पासे भेट मूकीने बेठो त्यां ते थगीधरने जोइने तेणे ओळख्यो, तेथी ते वहाणवटीए विचार्युं के-" आ नवो आवेलो हशे, तेथी तेनी जाति कुळ विगेरे कोइ जाणतुं नहीं होय, माटे जो तेने नीच जातिनो ठराबुं तो मारु कष्ट नाश पामे." एम विचारीने तेणे चांडाळ पासे जइने कह्युं के-"हुं तने सुवर्णनी इंटो आपीश, पण तमारे राजसभामां जइने राजाना थगीधरने भेटीने तेने कहेवुं के-'हे भाइ! तुं अमने घणा दिवसे मळ्यो, आटला दिवसथी क्यां गयो हतो?' इत्यादि कहीने तेने तमारी जातिनो ठराववो." चांडाळे ते वात कबुल करीने बीजे दिवसे ते प्रमाणे कर्युं.ते जोइने राजाए ते चांडाळने पूछ्युं के-"आ शुं?" त्यारे चांडाळ बोल्यो के-" आ मारो भाइ छे, तेने में घणा दिवसे जोयो तेथी हुं रडुं छुं." ते सांभळीने राजाए थगीधरने पूछ्युं के-"अरे रे! तुं मारे घेर क्यांथी आव्यो? तें अमने सर्वने चांडाळ जेवा कर्या." त्यारे तेणे कह्युं के-" हे स्वामी! सांभळो, ते विषे बहु लांबी वात छे" एम कहीने पोते गाथा लीधी त्यारथी आरभीने सर्व हकीकत राजाने निवेदन करी अने देवीए आपेला पांचे रत्नो पोतानी जंगामांथी काढीने राजाने बताव्या पछी राजाने कह्युं के-"आ पांच रत्नो मारी पासे रह्यां छे, बाकी ते पहेलांनु मारु सर्व द्रव्य तेनी पासे छे" ते सांभळीने राजाए पेला चांडाळोने घणो मार मराव्यो त्यारे तेओए कबुल कर्युं के-" नवा आवेला वहाणवटीए सुवर्णनी इंटो आपीने आ प्रपंच अमारी पासे कराव्यो छे." एम कहीने राजाने ते इंटो बतावी. राजाए इंटो तोडी तो अंदरथी धनदत्तनु नाम नीकळ्युं. पछी राजाए ते वहाणवटीने बोलावीने पोताना सिपाइओने कह्युं के-"अरे! आ पापीए मत्स्योदरनु सर्व धन कबजामां लइने तेने द्वेषबुद्धिथी कूवामां नांखी दीधो छे;माटे तेने मारी नाखो." एम कहीने तेना सर्व वहाणो लुंटी लइ तेने दरिद्र करी दीधो. पछी धनदत्ते राजाने विनति करीने तेने जीवतो मुकाव्यो.राजाए तेने पोताना नगरमांथी काढी मूक्यो पछी धनदत्तनी प्रशंसा करीने राजाए तेने पूछ्युं के-" तुं कोनो पुत्र छे ते सत्य कहे." तेणे कह्युं के-"हे स्वामी! आज नगरमां रत्नसार नामे श्रेष्ठी छे ते मारा पिता छे." इत्यादि मूळ वृत्तांत कह्यो,एटले राजाए हर्ष पामीने तेने कह्युं के-"हवे तुं तारा पिताने घरे जा." त्यारे धनदत्ते कह्युं के-"हे स्वामी! हजु हुं एक बीजा वहाणवटीनी राह जोउं छुं." राजाए तेनुं कारण पूछ्युं, एटले तेणे पोतानी प्रिया संबंधी वृत्तांत कह्यो.

केटलाक दिवस गया पछी ते वहाणवटी देवदत्त शेठ पण तेज गाममां आव्यो ते भेट लईने तिलकमंजरी सहित राजा पासे आव्यो. तेने जोईने धनदत्ते राजाने कह्यु के-" जे माणसनी हु राह जोतो हतो तेज आव्यो छे, अने तेनी साथे जे स्त्री छे ते मारी प्रिया तिलकमंजरी छे." पछी राजाए ते शेठने पूछ्यु के " आ किंनरीना जेवा रूपवाळी आज वाहीने करेली सुंदरी कोण छे?" ते बोल्यो के " हे देव ! आ स्त्रीने हु कटाह द्वीपमाथी लाव्यो छुं, परंतु आ स्त्री कहे छे के जो मने राजा हुकम आपे तो हु तारे घेर आवु." ते सांभळीने राजाए ते स्त्रीने पूछ्यु के-" आ शेठ शु कहे छे? तेनु इच्छित करवा-हुं खुशी छे के नहीं?" ते बोली के-"हे राजा ! मारा स्वामीने एणे समुद्रमा नाखी दीधो छे अने हु पतिव्रता स्त्री छु, माटे मने बळी मरवा माटे अग्नि आपो. आ शेठने केवरीने आटला दिवस में मुश्केलीथी निर्गमन कर्या छे अने अहीं सुधी तेने हु लई आवी छु. पूर्वे में मारा स्वामी पासे 'ज चिय विहिणा लिहिअं' इत्यादि गाथानो अर्थ सांभळ्यो हतो तेनो मने पूरेपूरो अनुभव थयो छे, माटे हवे मारा मनमा काई पण शोक नथी." राजाए पूछ्यु के-"हे पुत्री ! तु तारा स्वामीने शीरीते ओळखी शके तेम छे?" ते बोली के-"हे देव ! मारा पतिने तो आ पापीए समुद्रमा नाखी दीधो छे, तेथी ते आज सुधी क्याथी जीवता होय?" ते सांभळीने राजाए धनदत्तने बताव्यो. ते जोईने ते बोली के " हे राजा ! समान आकृतिवाळा घणा पुरुषो दुनियामा होय छे, तेथी आकृति मात्रथी निश्चय केम थाय?" त्यारे धनदत्ते तिलकपुरनो वृत्तांत, राक्षसनु मारवु, त्यामाथी बहार नीकळवु विगेरे सर्व कह्यु, एटले तेणे तेने बराबर ओळख्यो, अने राजाने कह्यु के " हे देव ! आज मारा प्राणनाथ छे." पछी राजाए देवदत्त शेठनु सर्वस्व लई लीधु अने तेने मारी नाखवानो हुकम आप्यो. ते वखते पण धनदत्ते विनति करीने तेने बचाव्यो. पछी धनदत्त पोतानी प्रिया सहित राजानी आज्ञाथी मोटा उत्सव पूर्वक पिताने घेर गयो. तेने जोईने तेना मातापिताने घणो हर्ष थयो.

एक दिवस धनदत्त राजानी साथे उद्यानमा मुनिने वांदवा गयो. त्या धर्मदेशना सांभळीने तेणे गुरुने पूछ्यु के-" हे भगवन् ! में पूर्व भवमा केवा कर्म कर्या हता?" गुरु बोल्या के-"हे धनदत्त ! तारा पूर्व भवनु वृत्तांत सांभळ-रत्नपुर नगरमा महण नामे एक श्रेष्ठीपुत्र हतो. ते एकदा उद्यानमां गयो. त्या कोई मुनिने जोईने तेमने वांदीने तेनी पासे बेठो. ते वखते गुरुए कहेली धर्मदेशना सा-

मळीने तेणे समकित सहित गृहीधर्म अंगीकार कर्यो. गुरुने नमीने ते पोताने घेर आव्यो. पछी घणुं धन खरचीने तेणे एक मोटुं चैत्य कराव्युं, पण पाछो तेने विचार थयो के-"धर्मना रसमां पराधीन थइने में आटलो बधो धननो व्यय केम कर्यो?" इत्यादि भावनाथी भ्रष्ट थया छतां पण पाछी लोकलज्जाथी तेणे प्रतिमा भरावी. एकदा तेणे धारणा करी के-"जेटलुं द्रव्य हुं उपार्जन करूं तेमांथी चोथो हिस्सो धर्ममार्गे मारे वापरवो." ए प्रमाणे वर्तता वळी तेने विचार थयो के-"में जे धारणा करी तेनुं फळ मने आ भवमां ज मळशे के नहीं? केमके शास्त्रमां तो थोडानुं पण अधिक फळ समजाय छे" इत्यादि शंका वारंवार कर्या करतो हतो, अने देवपूजा विगेरे पण फळनी शंका सहित करतो हतो. एक दिवस कोइ पण मुनिने वहोरावीने तेणे विचार्युं के-"कदाच आ साधुओ सुंदर वेष पहेरे तो तेथी जैनधर्ममां शुं दूषण आवे?" वळी फरीथी विचार करवा लाग्यो के-"अरे! में खोटो विचार कर्यो, केमके सारां वस्त्र पहेरवां, देहनी परिचर्या करवी तथा तेनी शुश्रूषा करवी ते सर्व कामदेवने वधारवाना उपाय छे, माटेज साधुओ तेवुं काम करता नथी" इत्यादि शुभ तथा अशुभ परिणामथी आंतरे आंतरे शुभ तथा अशुभ कर्म तेणे बांध्युं. छेवट आयुष्यने अंते मरण पामीने ते भुवनपति देवता थयो, त्यांथी च्यवीने तुं धनदत्त थयो छे. तें पूर्व भवमां धर्मकार्यो कर्यां, पण तेमां दूषण लगाड्यां तेथी तेना फळ रूपे तने दुःख सहित सुख आभवमां प्राप्त थयुं." आ प्रमाणे सांभळीने धनदत्त मूर्छित थयो. पछी सज्ञामां आवीने जातिस्मरण थवाथी मातापितानी आज्ञा लइने वैराग्यवडे राजा सहित तेणे दीक्षा ग्रहण करी, त्यांथी मरण पामी वैमानिक देवतानुं सुख भोगवीने ते महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थयो, अने धर्मनुं आराधन करीने अनुक्रमे मोक्षे गयो

"दश दृष्टांते दुर्लभ एवो मनुष्यभव तथा बीजी आर्यदेशादि सामग्री पामीने तथा संसारनी असारता जाणीने निरंतर सुख (मोक्ष) इच्छनारा पुरुषोए निरंतर धर्मकार्यो करवां."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तम्भस्य

पञ्चाशदधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २५०॥

व्याख्यान २५१ मुं.

मौन एकादशीनी कथा.

प्रणम्य श्रीमद्वामेयं, पार्श्वयक्षादिपुजितम् ।
माहात्म्य स्तौमि श्रीमौनेकादश्या गद्यपद्यभृत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"श्री वामामाताना पुत्र, पार्श्व यक्षादिकोए पूजेला एवा श्री पार्श्वनाथ प्रभुने नमस्कार करीने गद्यपद्यात्मक एवुं मौन एकादशीनुं माहात्म्य कहुं छुं."

एकदा द्वारका नगरीमां श्री नेमनाथ स्वामी समवसर्या. ते समाचार वनपाळना मुखथी सांभळीने श्री कृष्ण अति हर्षित थया. पछी ते वनपाळने योग्य दान आपीने सर्व समृद्धि सहित कृष्ण शिवाराणीना पुत्र श्री नेमनाथ प्रभुने वांदवा गया. विधिपूर्वक वांदीने योग्य स्थाने बेसी नीचे प्रमाणे भगवाननी देशना सांभळी.

एगदिने जे देवा, चवंति तेसिं पि माणुसा थोवा ।
कत्तो मे मणुय भवो, इति सुरवरो दुहिओ ॥ १ ॥

भावार्थ—"एक दिवसमां जेटला देवो चवे छे ते करता पण आ पृथ्वी उपर माणसो थोडा छे, तेथी देवताओ चिंतवे छे के "अमने मनुष्यभव क्याथी मळे?" माटे तेओ दुःख धारण करे छे. एवी रीते देवने पण दुर्लभ मनुष्यभव जाणीने प्रमाद करवो नहीं."

अन्नाण संसओ चेव, मिच्छत्ताण तहेव य ।
रागो दोसो मइब्भंसो, धमंमि य अणायरो ॥ १ ॥
जोगाण दुप्पणिहाणं, पमाओ अट्ठ महा भवे ।
संसारुत्तारकामेणं, सव्वहा वज्जियव्वओ ॥ २ ॥

भावार्थ—"अज्ञान, संशय, मिथ्यात्व, राग, द्वेष, मतिनी भ्रष्टता, धर्म उपर अनादर अने योगनुं दुःप्रणिधान—ए रीते प्रमाद आठ प्रकारनो छे, तेथी संसारथी मुक्त थवा इच्छनाराए तेनो सर्वथा त्याग करवो."

इत्यादि धर्मदेशना सांभळीने श्रीकृष्णे प्रभुने कह्युं के—" हे भगवन् ! हुं अहर्निश राजकार्यमां व्यग्र होवाथी निरंतर धर्म शीरीते करी शकुं ? माटे आखा वर्षमां एक उत्तम दिवस साररूप होय ते बतावो।" भगवाने कह्युं के–" कृष्ण ! जो तमारी एवी इच्छा होय तो मार्गशीर्ष मासनी शुक्ल एकादशीनुं उत्तम रीते आराधन करो.ते दिवसे वर्तमान चोवीशीनां त्रण तीर्थंकरना मळीने पांच कल्याणक थयां छे. ते विषे कह्यु छेके—

अस्यां चक्रिपदं हित्वा, अर्हीदरजिनो व्रतम् ।
जन्म दीक्षां च सज्ज्ञानं, मल्ली ज्ञानं नमीश्वरः॥ १ ॥

भावार्थ–"आ एकादशीने दिवसे श्री अरनाथ प्रभुए चक्रवर्तिपणुं छोडीने चारित्र अंगीकार कर्युं हतुं, मल्लीनाथनां जन्म, दीक्षा अने केवळज्ञान ए त्रण कल्याणक थयां हतां, अने नमिनाथनु केवळज्ञान कल्याणक थयुं हतुं "

आ प्रमाणे नियमपूर्वक ते दिवसे पांच भरतमां तथा पांच एरवतमां त्रण त्रण तीर्थंकरोनां मळीने पांच पांच कल्याणको थवाथी पचास कल्याणको थयां छे, तेमज अतीत, अनागत अने वर्तमान समयना भेदथी एकसो पचास कल्याणको त्रीश चोवीशीमां थइने नेवुं तीर्थंकरोनां थयां छे. तेथी आ दिवस सौथी उत्तम छे.

अर्क पुराण नामना शैवी शास्त्रमां पण आ एकादशीनुं माहात्म्य वर्णव्युं छे के—"हे अर्जुन ! हेमंत ऋतुने विषे मार्गशीर्ष मासनी कल्याणकारी शुक्ल एकादशीने दिवसे जरुर उपवास करवो, केमके जे हमेशां पोताने घेर बे लाख ब्राह्मणोने भोजन कराये छे तेने जेटलुं फळ मळे छे तेटलुं फळ मात्र आ एकादशीना एक उपवासथी मळे छे.जेम केदारनाथ तीर्थमां उदकपान करवाथी पुनर्जन्म थतो नथी,तेमआ एकादशीना उपवासथी पण पुनः जन्म थतो नथी.हे अर्जुन! आ एकादशी गर्भवासनो नाश करे छे,तेथी ते व्रतना पुण्य समान बीजु कोइ पुण्य थयु नथी अने थशे पण नहीं. हे अर्जुन ! हजार गायोनु दान करवाथी जेटलु पुण्य थाय तेथी अधिक पुण्य एक ब्रह्मचारीनी भक्तिथी थायछे, हजार ब्रह्मचारीनी भक्ति करतां जेटलु पुण्य थायछे तेथी अधिक पुण्य एक वानप्रस्थाश्रमीनी भक्तिथी थाय छे,हजार वानप्रस्थाश्रमीनी भक्ति करतां अधिक पुण्य पृथ्वीनुं दान करवाथी थाय छे, भूमिदानथी दशगणुं पुण्य सर्व अलंकार सहित कन्यादान देवाथी थाय छे, कन्यादानथी दशगणुं पुण्य विद्यादानथी थाय छे, विद्यादानथी सोगणु पुण्य भुख्याने अन्न आपवाथी थायछे, तेथी सोगणुं पुण्य गोमेध यज्ञथी, तेथी सोगणु अश्वमेध यज्ञथी, तेथी सोगणु नरमेध

पन्नथी अने तेथी हजारगणु केदारनाथनी यात्रा करवाथी थाय छे. परंतु आ एकादशीना पुण्यनी तो संख्या ज नथी, तेथी ब्रह्मादि देवो पण ए व्रत आचरे छे." इत्यादि लौकिक शास्त्रोमां पण हे कृष्ण! आ एकादशीनु माहात्म्य वर्णव्युं छे."

आ प्रमाणे लोकोत्तर फळ आपनार मौन एकादशीनुं वर्णन नेमीश्वर प्रभुना मुखथी सांभळीने श्रीकृष्णे फरीने पूछ्युं के-"हे स्वामी! आ एकादशीनुं आराधन पूर्वे कोणे कर्युं छे ते कहो." त्यारे प्रभुए सुव्रत श्रेष्ठीनुं जे दृष्टांत कह्युं ते आ प्रमाणे-

"धातकीखंडमां आवेला विजयपत्तनमां सुर नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. राजा पण तेने बहुमान आपतो अने गामना सर्व व्यापारीओमां ते अग्रेसर हतो तेने सुरमती नामनी शीलवती पत्नी हती एक वखत ते श्रेष्ठी सुतो सुतो हतो पाछली रात्रे निद्रा दूर थइ ते वखते तेने विचार थयो के-"हुं पूर्व जन्मना पुण्योदयथी सुखमां मग्न थइने दिवसो निर्गमन करुं छुं, परंतु परलोकनुं हितकर कार्य कंइ पण करवुं जोइए, केमके ते विना सर्व निरर्थक छे" ए प्रमाणे विचार करतां सूर्योदय थयो, एटले शय्यामांथी उठी पोतानुं नित्यकर्म करीने ते श्रेष्ठी गुरुने वांदवा गयो. गुरुने वांदीने यथायोग्य स्थाने धर्मदेशना सांभळवा बेठो. गुरुए देशना आरंभी.

आलस्स मोह वन्ना, थन्ना कोहा पमाय किविणत्ता।
भय सोगा अन्नाणा, वक्खेव कुऊहला रमणा ॥ १ ॥

भावार्थ-"आलस्य, मोह, वर्णना, स्तब्धता (अहंकार), क्रोध, प्रमाद (निद्रा), कृपणता, भय, शोक, अज्ञान, विकथा, कुतूहल अने रमण (रति) ए तेर काठीआनो त्याग करवो."

आ काठीआनो जे त्याग करतो नथी ते नरकगतिमां उत्पन्न थाय छे. कह्युं छे के-

पण कोडि अडसट्ठि, लक्खा नवनवइ सहस्स पंचसया।
चूलसी अहीय नरए, अपइट्ठाणमि वाहिओ ॥ १ ॥

भावार्थ-"पांच करोड, अडसठ लाख, नवाणु हजार, पांचसो ने चोराशी व्याधिओ, अप्रतिष्ठान नामना सातमी नरकने छेल्ले पाथडे छे."

माटे हे श्रेष्ठी! आवा नरकना दुःखनो नाश करवा माटे हंमेशां धर्म करवो, केमके पुण्यनो महिमा अचिंत्य छे. कह्युं छे के-

इरहे य केइ जीवा, मिच्छादिट्ठीय जइवा जावा।
ते मरिऊण नवमे, वरिसंमि हुंति केवलिणो ॥ १ ॥

भावार्थः-'आ भरतक्षेत्रमा केटलाएक भद्र परिणामी मिथ्यादृष्टि जीवो पण छे के जे अहींथी मरीने नवमे वरसे (महाविदेहमां) केवळी थाय छे.'

हे श्रेष्ठी ! सुलभबोधि जीवने काइ पण दुष्कर नथी." इत्यादि सांभळीने श्रेष्ठी बोल्यो के-"हे महाराज ! गृहकार्यमां गुंथेलो रहेवाथी हमेशां धर्म करवानी मारी शक्ति नथी, तेथी मने एक एवो दिवस बतावो के जेथी ते एक दिवसना आराधनथी आखा वर्षे जेटलुं पुण्य मळे" त्यारे गुरुए कह्यु के-"मार्गशीर्ष मासनी शुक्ल एकादशीने दिवसे उपवासपूर्वक आठ प्रहरनो पोसह लेवो, अने ते दिवसे सावद्य वाणीनो व्यापार तजन थइ करीने मौनपणे रहेवु. ए प्रमाणे अगियार मार्गशीर्ष मास सुधी एकादशीने दिवसे पूर्वोक्त विधिपूर्वक तप करीने पछी मोटा उत्सवथी तेनु उद्यापन करवु." आ प्रमाणे सांभळीने ते श्रेष्ठीए अति हर्षथी भावपूर्वक परिवार सहित ते व्रत अंगीकार कर्युं, अने तप पूर्ण थयुं त्यारे विधिपूर्वक तेनुं उद्यापन कर्युं. त्यारपछी पंदर दिवस तेने एकाएक शूलनो व्याधि उत्पन्न थयो तेथी मृत्यु पामीने ते अग्यारमा आरण नामना देवलोकमां उत्पन्न थयो.

अग्यारमा देवलोकमां एकवीश सागरोपमनु आयुष्य भोगवी त्यांथी च्यवीने आ भरतक्षेत्रमां सोरिपुर नामना नगरमां समृद्धिदत्त श्रेष्ठीनी भार्या प्रीतिमतीनी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थया. गर्भना महिमाथी प्रीतिमतीने दोहद थयो के-"हुं श्रावकना बार व्रत ग्रहण करुं, महाव्रतने धारण करनार मुनिओने अशनादि वहोरावीने तेमनी भक्ति करु, सर्व संसारी जीवोने व्रतधारी करु, तेमज नृत्य, गीत, वाजित्र तथा वार्त्ताविनोदमां सम्यक् प्रकार व्रत पाळनाराओना गुणोनुं श्रवण करुं," इत्यादि दोहद श्रेष्ठीए पूर्ण कर्या पछी समय आवता प्रीतिमतीए रूप अने लावण्यथी भरपूर एवा पुत्रने प्रसव्यो. नाळ दाटवा माटे पृथ्वी खोदता तेमांथी निधान प्रगट थयु पिताए सुव्रत नाम राख्युं अनुक्रमे ते गुरुनी साक्षी मात्रथीज समग्र कळाओ शीख्यो. युवावस्था पामतां पिताए तेने महोत्सवपूर्वक अगियार कन्याओ परणावी. पछी आयुष्य पूर्ण थतां तेना पिता मरण पाम्या एटले ते सुव्रत अगियार करोड द्रव्यनो स्वामी थयो. एकदा ते गुरुने वंदन करवा गयो ते गुरु पांच समिति तथा त्रण गुप्तियो युक्त हता, पांच महाव्रतनी पचीश भावनानुं अंतःकरणमां मनन करनारा हता, पांच महाव्रतनो भार धारण करवामां धुरंधर हता,

देव, मनुष्य, तिर्यंच अने पोताथी उत्पन्न थता भयंकर उपसर्गरूपी शत्रुओने तथा बावीश परिषहरूपी शत्रुओनी सेनाने जीतनारा हता, सत्तावीश गुणोथी विराजमान शिष्ट मुनिओना नायक हता, अतिचार रहित पांच प्रकारना आचारने पालन करनारा हता, संसारी जीवोने मूर्छा पमाडनार विषयसमूहथी विरमेला हता, त्रण भुवनना लोकोने किंकररूप करवाथी अति गर्विष्ट थयेला कामदेवना विकारने जेमणे दूर करेलो हतो, अर्हत्प्रणीत शास्त्रमां कहेला अतिसूक्ष्म विचारोनो सारी रीते बोध होवाथी सर्व भव्य प्राणीओनां हृदयने आनंद पमाडता हता, चचळ एवा पांच इंद्रियोरूपी उद्धत अश्वोने तेमणे नियममां राखेला हता, अमृत समान [1]धर्मदेशनावडे सर्व भव्य प्राणीओना जीवितरूप हता, सम्यग्दर्शन वडे करीने तेमणे मिथ्यादर्शन रूपी उग्र विषनो नाश कर्यो हतो दुर्जन पुरुषोना दुर्वचनोनी रचना रूपी प्रचंड वायु प्रसरता छता पण अकंप हता क्षमा, मार्दव, आर्जव अने मुक्ति आदि दश प्रकारना साधुधर्मनुं आराधन करवामां सावधान हता, पोताना अंतःकरण रूपी घरमांथी शल्य रूप नव प्रकारना नियाणाने तेमणे दूर काढी मूक्यां हता, नव प्रकारनी ब्रह्मचर्य गुप्तिनुं सारीरीते पालन करवामां तत्पर हता, दुष्ट कर्मरूपी राक्षससमूहनो नाश करवामां नारायण जेवा हता, हास्यादि षट्कने तेमणे दूरथीज तजी दीधुं हतुं, चंदनादिकथी पूजा करनार उपर तेमज शस्त्रादिथी छेदन करनार उपर तेमनो समान मनोविलास हतो, सर्वथा ममता रहित होवाथी तेमणे शोकनो निरास कर्यो हतो, अनुपम वचनकळाथी सर्व लोकने रंजित कर्या हता, अरिहंतप्रणीत समग्र आगमना पारगामी हता, तीर्थंकरोए तथा गणधरोए स्वीकारेला सम्यक् मार्गना अनुयायी हता, आ लोक तथा परलोक आश्रित सर्व चराचर प्राणीओए करेला मान अथवा अपमान, प्रशंसा अथवा निंदा, लाभ अथवा अलाभ, सुख अथवा दुःख इत्यादिमां तेमनी चित्तवृत्ति समान हती, श्रीमत् आर्हत मतनुं स्थापन करवामां असाधारण कुशलतारूपी सूर्यना उदयथी तेमणे चोतरफ प्रसरेला मिथ्यात्वरूप अंधकारनो नाश कर्यो हतो, अप्रशस्त आश्रव द्वारनो निरोध कर्यो हतो, अनेक भव्यसमाजोने बोध पमाडनारा हता, आठ प्रकारना मदनो त्याग कर्यो हतो, बार प्रकारना तपरूपी औषधनी क्रियावडे दुर्भेद्य दुष्ट कर्म रूपी व्याधिनो तेमणे भेद (नाश) कर्यो हतो, पांच प्रकारनो स्वाध्यायविधि करवामां तथा करावबामां सावधान हता, जगत्मां सर्व जीवोने तेमणे अभयदान आप्युं हतुं, सागर जेवा गंभीर हता, मेरुपर्वतनी जेवा

1 निशामना

अचल (धीर) हता, शखनी जेवा निरंजन (निर्मळ) हता, अज्ञानरूपी अंधकारथी आच्छादित थयेला नेत्रोवाळा भव्य प्राणीओनां नेत्रोने उघाडवा तथा निर्मळ करवा माटे श्रेष्ठ ज्ञानरूपी अंजनना आंजनारा हता, काचबानी जेम गुप्तेंद्रिय हता, महामोह राजानो तेमणे पराजय कर्यो हतो, भारंड पक्षीनी जेम सर्वदा अप्रमत्त हता, कमळना पत्रनी जेम तेमनु चित्त लेप रहित हतुं, सूर्यनी जेम दिप्ततेज हता, रागद्वेषरूपी महामल्लने जीतवा माटे तेमणे घणु वीर्य फोरव्युं हतुं, चद्रनी जेम सौम्य गुणोवडे परिपूर्ण होवाथी समग्र साधु पुरुषोने आनंदकारी हता, सिंहनी जेवा दुर्धर्ष हता, छतां सर्वलोकने गमन योग्य हता, हाथीनी जेम शौर्य गुणथी युक्त हता, समग्र दोषथी मुक्त हता, वृषभनी जेवा बळवान हता, अनेक वादीओने जीतवाथी अधिक तेजस्वी थयेला हता, समुद्रना जळनी जेवु तेमनुं हृदय अति शुद्ध हतु, संसाररूपी कारागृहमां रहेला मोहरूपी मोटा चोरे पकडेला प्राणीओनु रक्षण करवामा ते अत्यत दयाळु हता, आकाशनी जेम अवलबन रहित हता, महानंद (मोक्ष) रूपी महा नगर जवानी श्रेणिए चढवामां विलंब विनाना हता, शून्य घरनी जेम शरीरनी परिचर्याथी रहित हता. अन्य प्राणीओए करेला राफडामां रहेनारा सर्पनी जेम परआश्रयमा रहेनारा हता, सांसारिक सर्व सबंधनो त्याग कर्यो हतो, पवननी जेम अप्रतिबद्ध विहारी हता, जीवनी जेम अप्रतिहत गतिवाळा हता, जिनप्रवचनने अनुसरती मतिवाळा हता, अने पक्षीनी जेम सर्वथी मुक्त हता. कि बहुना ? ते मुनिराजना सर्व आचरणो साधुसामाचारीने सपूर्ण योग्य हता. जाणे जगम कल्पवृक्ष होय तेवा ते श्रीमान् धर्मघोष नामना गुरुने समवसरला जोइने श्रेष्ठिपति सुव्रत जाणे पोतानो पुण्यसमूह मूर्त्ति धारण करीने प्रगट थयो होय एम जाणी पोताना आत्माने धन्य मानतो सतो विनय सहित विधिपूर्वक गुरुने नम्यो. त्यारपछी, गुरुए आपेली सकल भव्य जीवोना चित्तने हर्षथी व्याप्त करवामा, सावधान, मन वचन कायाए करीने बांधेला तद्भवी कर्मसमूह तथा पूर्वे घणा भवमां उपार्जन करेलां अशुभ कर्मसमूहरूपी मोटां वृक्षोने मूळ सहित उखेडी नाखवामा प्रथम मेघ समान, जळधर वृष्टिथी वृद्धि पामेला जळना महा प्रवाहमा प्राणीओना अतरनी विषय कषायरूपी लील विगेरेने खेंची जनार, सर्व श्रोता जनना कर्णने पवित्र करवामा मत्रसहित महाविद्या समान, संयोग वियोगादि जिनमतसूचित महादुःखोरूपी ऊर्मिना समूहथी व्याकुळ अने महा साहसिक पुरुषोने पण दुर्ग्राह्य एवा दुरंत ससाररूपी महासागरने तरवामां वहाण जेवी अने चोराशी लाख जीवायोनिमा परिभ्रमण करवाथी दिङ्मूढ थइ गयेला प्राणी-

ओने महा वैराग्यने उत्पन्न करनारी, तथा मुख्यत्वे करीने पांच पर्वणीना आराधननु उत्तम फळ देखाडनारी एवी देशना साभळीने सुव्रत श्रेष्ठीने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु. पछी तेणे गुरुने पूछ्यु के-"हे पूज्य ! में पूर्व भवमां मौन एकादशीनु तप कर्यु हतुं. तेना प्रभावथी हु अग्यारमा देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो हतो अने त्याथी च्यवीने अहीं पण अगियार क्रोड सुवर्णनो स्वामी थयो छु,तो हवे हु शु सुकृत करु के जेथी असाधारण फळनो भोक्ता थाउ?" गुरुए कह्यु के-"हे श्रेष्ठी ! जेनाथी तमने आटलु सुख प्राप्त थयु छे तेज एकादशीनुं सेवन करो, केमके जेनाथी देह व्याधि रहित थयो होय तेज औषध सेववु जोइए वळी कह्यु छे के-

विधिना मार्गशीर्षस्यैकादश्यां धर्ममाचरेत् ।
य एकादशभिर्वर्षैरचिरात् स शिवं व्रजेत् ॥ १ ॥

भावार्थ-"जे पुरुष मार्गशीर्षमासनी शुक्ल एकादशीने दिवसे विधि पूर्वक अगियार वर्ष सुधी धर्म आचरण करे छे ते थोडा वखतमाज मोक्षने मेळवे छे."

इत्यादि गुरुमुखथी साभळीने सुव्रत श्रेष्ठीए पोतानी पत्नी सहित मौन एकादशीनु तप अगीकार कर्यु. एक दिवस श्रेष्ठी पोताना कुटुंब सहित आठ पहोरनु पौषध व्रत लइने पौषधशाळामा रह्यो हतो, ते दिवसे ते हकीकत जाणीने चोर लोको रात्रिए तेना घरमा पेठा, अने घरमाथी सर्व धन लइने तेनी गासडीओ बाधी घर वच्चे ढगलो कर्यो पछी ते गासडीओ उपाडी जवानो विचार करे छे तेवामा शासनदेवीए तेमने स्तभित कर्या. थोडी मुदते कोरबकोर थवाथी राजाना सिपाइओ आवी ते चोरोने पकडी राजा पासे लइ गया. प्रात काळे श्रेष्ठी पोसह पारी घणा धननी भेट लइने राजा पासे गया, अने कह्यु के-" हे राजन् ! आ लोको मारा घरना कामकाज करनारा छे, तेथी घरमा आडाअवळा पडेला रत्नादिकने एकठा करीने घर वच्चे ढगलो कर्यो, अने पर्ण अपहर्ता हता तेने साचवी राख्या, माटे आ मारा चाकरो मारवाने योग्य नथी " इत्यादि कहीने राजा पासेथी ते चोरोने छोडाव्या. ते वात जाणी नगरना लोकोए श्रेष्ठीनी अत्यत प्रशसा करी त्यारपछी श्रेष्ठीए पारणु कर्यु

फरीथी बीजी एकादशीने दिवसे पण श्रेष्ठीए पौषध अगीकार कर्यो हतो, ते रात्रिए दावानळनी जेम आखा नगरमा अग्नि प्रसरी गयो. तेने बुझाववानो उपाय नहीं चालवाथी सर्व लोको जुदी जुदी दिशाओमा नासी गया ते वखते कोइए श्रेष्ठीने कह्यु के-" हे शेठ ! जैनमतमा दरेक व्रतो आगार सहित होय छे,

माटे तमे अत्यारे व्रत तजी दो." इत्यादि कथा छतां व्रतभगनी भीतिथी श्रेष्ठी डग्यात नहीं. व्रतना प्रभावथी तेनां घर, दुकानो, वखारो विगेरे कांइ पण समुद्रमां रहेला बेटनी जेम अग्निथी बळ्युं नहीं. ते जोइने सर्व नगरना लोको तेना व्रतनी प्रशंसा करवा लाग्या.

एकादशीनुं समग्र व्रत पूर्ण थयु त्यारे अगियार अगियार वस्तुओ एकठी करीने विधिपूर्वक मोटा ओच्छवथी शेठे उद्यापन कर्युं, अने संघपूजादिक सात क्षेत्रमां द्रव्यनो व्यय करी पोतानो जन्म कृतार्थ कर्यो. ते श्रेष्ठीने एकादशी व्रतना पुण्यथी स्त्रीओ पण अगियार प्राप्त थइ हती, तेमज ते प्रत्येक स्त्रीथी दश दश पुत्र अने एक एक पुत्री थयेल हती. एकदा चार ज्ञानने धारण करनारा विजयशेखर सूरि ते नगरमां पधार्या, तेमनी वैराग्यमय देशना सांभळीने श्रेष्ठी प्रतिबोध पाम्या. एटले तेमणे पोतानी अगियार स्त्रीओ सहित मोटा महोत्सवथी सर्वविरति ग्रहण करी, अने घरनो सर्व भार छोकराओने सोंप्यो. अतिचार रहित चारित्रनु पालन करतां तेमणे द्वादशांगी कठे करी. एक छ मासी तप कर्युं, चार चोमासी तप कर्या, अने सो अट्ठम तथा बसो छट्ठ कर्या. तेनी अगियारे स्त्रीओ मास मासनी संलेखना करी केवळज्ञान पामी मोक्षे गइ.

एक दिवस एकादशी होवाथी सुव्रतमुनिए मौनव्रत धारण कर्युं हतु, ते दिवस एक साधुने कानमां तीव्र वेदना थवा लागी. तेवामां कोइ मिथ्यात्वी व्यंतर देवताए सुव्रतमुनिने व्रतथी चळाववा माटे ते मांदा साधुना शरीरमा प्रवेश कर्यो, अने रात्रीने समये अधिक वेदना करवा लाग्यो तेथी ते साधुए सुव्रतमुनिने कह्यु के–"तमे कोइ श्रावकने घेर जइने मारा शरीरनी व्यथानी वात कहो, के जेथी ते मारा व्याधिनी चिकित्सा करे" ते सांभळी सुव्रतमुनिए विचार्युं के–"में आजे उपाश्रयनी बहार जवानो निषेध कर्यो छे अने वळी मौन धारण कर्यु छे, तेथी शी रीते श्रावक पासे जाउ ने वात करूं?" इत्यादि विचार कर छे तेवामा ते साधुए सुव्रत मुनिने क्रोधनां वचनो कहवापूर्वक धर्मध्वज (ओघा) वडे मार्या. त्यार सुव्रत मुनिए विचार्युं के–"आ महात्मानो आमां कांइ पण दोष नथी, मारोज दोष छे, केमके हु तेनी चिकित्सा करावतो नथी" इत्यादि लोकोत्तर भावना उपर चडेला अने मेरुपर्वतनी जेम निश्चळ थयेला तेमने जोइने ते देवता धर्ममा स्थिर थइ पोताने स्थानके गयो. सुव्रत मुनि तो शुभ भावना भावता लोकालोकमा प्रकाश करनार केवळज्ञान पाम्या, ते वखते पासेना देवोए केवळज्ञाननो महिमा कर्यो, त्यां सुवर्णना

निर्मळ उपर बेसीने सुव्रत केवळीए दयामय धर्मदेशना आपी. पछी पृथ्वीपर विचरतां घणा भव्य जीवोने प्रतिबोध पमाडी अंते अनशन करीने मोक्षे गया "

" आ प्रमाणे नेमिनाथ भगवानना मुखथी एकादशीनुं उज्ज्वल माहात्म्य सांभळीने समग्र नगरना लोक सहित श्रीकृष्णे एकादशीनुं व्रत अंगीकार कर्युं.

"शास्त्रोक्त विधि पूर्वक जे लोको पोतानी शक्ति अनुसार एकादशीनुं व्रत आदरे छे तेओ स्वर्गना सुख भोगवीने अंते मोक्षपदने पामे छे."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य
एकपंचाशदधिकद्विशततमः प्रबंध. ॥ २५१ ॥

व्याख्यान २५२ मुं.

समकितमां शंका न करवा विषे.

नास्ति जीवो न स्वर्गादि, भूतकार्यमिदेष्यते ।
इति प्रवृत्ति शंकातो, सम्यक्त्वं खलु पात्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"आ जगतमां जीव एवी कोइ वस्तुज नथी, तेमज स्वर्ग, नरक विगेरे पण काइ नथी, मात्र पंच महाभूतनुंज सर्व कार्य छे इत्यादि शंका करवाथी समकित नाश पामे छे." ते उपर दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

आषाढाचार्यनुं दृष्टांत

कोइ साधुओना समुदायमां पूर्वे आषाढ नामे आचार्य थइ गया छे ते अंतावस्था प्राप्त थयेला दरेक शिष्यने निर्यामणा करता अने तेने कहता हता के—" हे शिष्य ! तुं स्वर्गमां देवता थाय तो जरूर मने दर्शन आपजे. " आ प्रमाणे घणा शिष्योने कह्या छतां स्वर्ग गयेलामांथी कोइ पण शिष्य आव्यो नहीं. एक वखत पोताना अतिवल्लभ शिष्यने निर्यामणा करावीने कह्युं के—" हे वत्स ! तुं तो जो देव थाय तो अवश्य मने दर्शन आपजे " ए प्रमाणे अति आग्रहथी कह्युं. तेणे पण ते अंगीकार कर्युं. पछी ते शिष्य काल करीने देवता थयो, परंतु देवकार्यमां गुंथाइ जवाथी जल्दी आवी शक्यो नहीं, तेथी गुरुए विचार्युं के—" में अनेक शिष्योने निर्याम्या तेमज तेमणे मारी पास आववानुं मारुं वचन अंगीकार कर्युं,छतां तेमांथी एक पण मारी पासे आव्यो नहीं, तेथी जणाय छे के स्वर्ग के नरक काइ पण नथी. आजे सुधी में वृथा क्रियाकष्ट कर्युं " इत्यादि विचार करी मिथ्याभाव पामी गच्छनो त्याग करीने ते चाली नीकळ्या. तेवामां ते शिष्यदेव

अवधिज्ञानवडे गुरुनुं स्वरुप जाणीने विचार्युं के-" आ आचार्य मोहमां फसाइने दुष्कर्म करे नहीं तेटला माटे त्यार अगाउ तेने बोध पमाडीने सन्मार्गमां लावुं." एम विचारीने ते देवे गुरुना जवाना मार्गमां एक गाम पासे दिव्य नाटक विकुर्व्युं. आचार्य ते नाटक जोवा उभा रह्या. जोतां जोतां छ महिना निर्गमन कर्या, परंतु देवना अनुभावथी तेमने क्षुधा, तृषा, श्रम विगेरे कांइ पण जणायुं नहीं. पछी ते देवे नाटक संहरी लीधुं, एटले आचार्य आगळ चाल्या. चालता चालतां तेणे विचार्युं के-"अहो! आजे एक क्षण वार सुन्दर जोयुं." पछी ते देवे विचार्युं के-"आनी पासे कांइ पण व्रत रह्युं छे के सर्वथा भ्रष्ट थया छे तेनी परीक्षा करुं" एम विचारीने तेणे उत्तम अलंकारथी शोभितो एक राजकुमार विकुर्व्यो. सूरिए तेने जोइने कह्युं के-"हे बाळक! तुं एकलो आवा अघोर वनमां केम भमे छे? तारुं नाम शुं छे?" बाळक बोल्यो के-"मारुं नाम पृथ्वीकायिक छे. हुं आपने शरणे आव्यो छुं चोर, श्वापद विगेरना उपद्रवथी मारुं रक्षण करो."

बालं मां दीनताप्राप्तं, पाहि पाहि प्रभो ततः।
तैरेव भूपिता भूये, रक्षेयुः शरणागतम्॥ १॥

भावार्थः-"हे पूज्य! दीनता पामेला आ बाळकनुं आप रक्षण करो, रक्षण करो, केमके जेओ शरणे आवेलानुं रक्षण करेछे तेओनावडेज आ पृथ्वी शोभेछे."

आ प्रमाणे ते बाळक नम्रताथी कहा छतां ते लोभी आचार्य जेवामां ते बाळकनी डोक मरडी नाखवा जाय छे तेवामां ते बाळके फरीथी कह्युं के-"हे भगवान्! एक दृष्टांत सांभळो. पछी जेम योग्य लागे तेम करजो. कोइ गाममां एक कुंभार रहतो हतो. ते एक दिवस माटी खोदता माटीनी खाण पोतापर पडती जोइने बोल्यो के-

यत्प्रसादाद्बलिभिक्षा, ददे ज्ञातींश्च पोषये।
साप्याक्रामति भूमिर्मां, तज्जातं शरणाद्भयम्॥ १॥

भावार्थः-"जेनी कृपाथी हुं बळीदान अने भिक्षा आपुं छुं तथा कुटुंबनुं पोषण करुं छुं तेज पृथ्वी आजे मने दाटी दे छे, तेथी जेनुं शरण हतुं तेनाथीज मने भय प्राप्त थयुं."

"हे पूज्य आचार्य! तेवीज रीते हुं पण भय पामीने आपने शरणे आव्यो, परंतु आपज मने मारवा तैयार थया, पण जेनुं शरण तेनाथीज भय प्राप्त थयुं" आ प्रमाणे सांभळीने [illegible] "हे बाळक! तुं चतुर छे."

एम कहीने ते बाळकने मारी नाख्यो, अने तेनां अलंकारो लइने पोताना पात्रमां नाख्या.

आगळ चालतां अप्कायिक नामना बीजा बाळकने प्रथमनी जेमज जोयो, तेना अलंकारो पण लेवा माटे आचार्य तेवीज रीते तेने मारवा तैयार थया. ते वखते ते बाळके पण एक दृष्टांत कह्यु के-" कोइ एक पुरुष सुभाषितमां चतुर हतो. ते एक वखत गंगानदी उतरता तेना प्रवाहमां तणायो, ते वेळाए नदीने कांठे उभेला लोकोए तेने कह्यु के-" हे भाइ ! काइक सुभाषित बोल." त्यार ते बोल्यो के-

येन रोहन्ति बीजानि, येन जीवन्ति कर्षकाः ।
तस्य मध्ये विपद्यते, जातं मे शरणाद्भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ.-" जेनावडे सर्व बीजो उगे छे अने जेनावडे खेडुतो जीवे छे, ते ज पाणीमां हु मरण पामु छु तेथी मने जेनु शरण हतु तेनाथीज भय थयु. "

ते सांभळीने सूरिए कह्यु के-" हे वत्स ! तु बहु सार भण्यो जणाय छे." एम बोलीने तेने पण मारी नाखी तेनां अलंकार लइ लीधा.

आगळ जतां तेजस्कायिक नामना त्रीजा बाळकने जोइने तेनां पण अलंकार लेवा तैयार थया त्यारे ते बाळके पण पूर्वनी जेम पोतानु नाम प्रगट करीने दृष्टांत कह्यु के-"कोइ आश्रममां एक अग्निहोत्री तापस रहेतो हतो ते हमेशा विधिपूर्वक अग्निनु पूजन करतो हतो. एकदा ते अग्नि वडे तेनुं झुपडु बळवा लाग्यु.ते जोइने ते तापस बोल्यो के-

यमहं मधुसर्पिर्भ्यां, तर्पयामि दिवानिशम् ।
दग्धस्तेनैवोटजो मे, जातं तच्छरणाद् भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ-" जेने हु रात्रि दिवस मध तथा घीवडे [illegible] कर छु तेज अग्निए मारुं झुपडुं बाळ्युं, माटे मने शरणथीज भय थयु "

माटे हे पूज्य ! तमारे पण तेम करवु योग्य नथी." इत्यादि कह्या छतां सूरिए तेने मारीने अलंकार लइ लीधा.

त्यांथी आगळ चालतां वायुकायिक नामना चोथा बाळकने जोयो तेनां पण अलंकारो लेवाने सूरि तैयार थया एटले ते बाळके पूर्वनी जेम पोतानु नाम प्रगट करीने एक दृष्टांत कह्यु के-" पहेला कोइ युवान पुरुष घणो बळवान हतो. तेने वायुनो व्याधि थवाथी तेना अवयवो कंपवा लाग्या,ते जोइने तेने कोइए पूछ्यु के-"तु पहेला तो बहु दोडतो हतो तेथी पवन जेवो उद्योगी हतो, अने हवे लाकडीना टेकाथी केम चाले छे ?" त्यारे ते बोल्यो के-

सोऽत्रादीयो मरुज्ज्येष्ठा–षाढयोः सौख्यदोऽभवत् ।
स एव बाधतेऽङ्गं मे, जातं हि शरणाद्भयम् ॥ १ ॥

भावार्थः–ते जुवान बोल्यो के–"जे पवन मने ज्येष्ठ तथा अषाढ मासमां सुख आपतो हतो, तेज अत्यारे मारा अंगने पीडे छे माटे मने शरणथीज भय थयुं"

इत्यादि कह्या छतां सूरिए तेने पण मारीने तेना अलंकार लइ पात्रमां नाख्यां.

आगळ चालतां "वनस्पतिकाय" नामना पांचमा बाळकने जोइने सूरिए तेना अलंकार लेवानी इच्छा करी. त्यारे ते बाळके पण एक दृष्टांत कह्युं के–"कोइ एक अरण्यमां वृक्ष उपर माळा बांधीने केटलांक पक्षीओ रहेतां हतां. अन्यदा ते वृक्षना मूळमांथी एक लता उगीने वृक्षने वींटाती उपर गइ. ते लताना आधारवडे वृक्ष उपर चढीने कोइ सर्प पेला पक्षीओनां बच्चांओने खाइ जवा लाग्यो. ते जोइने ते वृक्षनां पक्षीओ परस्पर बोल्या के–

अद्य यावत् सुखं वृक्षे, स्थितमत्रानुपद्रवे ॥
अस्मादेव लतायुक्ता–दयाच्छरणाद्भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ–"आज सुधी आपणे आ वृक्ष उपर उपद्रव रहित सुखे वस्या हता, तेज वृक्ष लतायुक्त थवाथी आपणने आजे जेनुं शरण हतुं तेनाथीज भय थयुं."

सूरिए कथा सांभळी "हे बाळक! तुं बुद्धिमान छे" एम कही निर्दयपणाथी तेने मारी नांखीने भूषणो लइ लीधां

आगळ जतां तेमणे छट्ठो बाळक जोयो, तेनुं नाम पूछयुं, त्यारे ते बाळक बोल्यो के–"मारुं नाम त्रसकायिक छे." ते सांभळीने सूरि तेनां अलंकार लेवा उत्सुक थया, एटले ते बाळके कह्युं के–"मारी वात सांभळीने पछी जेम योग्य लागे तेम करजो. कोइ गामने शत्रुओए आवीने घेरो घाल्यो. त्यारे गाममां रहेता सर्व लोको पोतपोतानुं धन लइने बहार नीकळवा लाग्या, अने गाम बहार रहेता चांडाल विगेरे गाममां पेसवा लाग्या. ते जोइने कोइ पुरुषे चांडाळोने कह्युं के–

भीताः पौराः कर्षयंति, युष्मान्निघ्नंति च द्विषः ॥
तत्क्वापि यात मातंगा, जातं शरणतो भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ–"हे चांडाळो! पुरना [illegible] भय पामीने पोतानुं धन बहार काढे छे, अने तमे तो गाममां पेसो छो [illegible] मारी नांखशे; माटे तमे बीजे [illegible] जाओ, केमके आ गामनुं शरण [illegible] भय मात्र थयुं छे."

आ प्रमाणे उपनय सहित दृष्टांत कह्या छतां सूरिए तेने छोड्यो नहीं. त्यारे ते बाळके बीजु दृष्टांत आप्युं के–"कोइ नगरमा राजा पोतेज पोताना माणसो पासे चोरी करावतो हतो, अने ते निष लोको फरियादे जता तो राजानो पुरोहित सर्व लोकोने गाळो देतो हतो, तेथी सर्व लोको खेद पामीने परस्पर कहवा लाग्या के—"

यत्र राजा स्वयं चोरो, भांडकश्च पुरोहितः ।
यात पौराः पुरात्तस्मा–ज्जातं हि शरणाद्भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ–"हे पुरना लोको! ज्यां राजा पोते चोरी करे छे, ज्यां पुरोहित गाळो भांडे छे, ते नगर छोडीने तमे बीजे स्थाने जाओ, केमके जेनु शरण हतु तेनाथीज भय थयुं छे "

आ कथा कहेवाथी पण सूरिए पोतानी दुष्टता छोडी नहीं त्यारे ते बाळके त्रीजु दृष्टांत कह्युं के–"कोइ नगरमा एक कामांध ब्राह्मण रहतो हतो. तेने पोतानी रूपवती पुत्रीने जोइने तेनी साथे क्रीडा करवानी इच्छा थइ, परतु लज्जाथी ते दुष्ट इच्छा पार पाडी शक्यो नहीं, तेथी तेनु शरीर बहु क्षीण थइ गयु ते जोइने तेनी स्त्रीए तेने घणा आग्रहथी क्षीण थवानु कारण पूछयु, एटले तेणे खरु कारण कही दीधु ते सांभळीने ते स्त्रीए पोताना पतिना प्राण बचाववा सारु पुत्रीने कह्यु के–"हे पुत्री! आपणा कुळनो एवो रीवाज छे के दरेक कुमारी कन्याने प्रथम यक्ष भोगवे, त्यारपछी तेनो विवाह करवामा आवे छे, माटे तु काली चतुर्दशीनी रात्रीए यक्षना देरामा जजे, पण त्या दीवो राखवीश नहीं, कमके यक्षने क्रोध चढे छे " ते सांभळीने ते पुत्रीए मातानुं वचन अंगीकार कर्यु परतु जती वखते शरावलामा दीवो सताडीने लइ गइ. पछी तेनी माताए ते ब्राह्मणने यक्षना देरामा मोकल्यो, ते पण त्या गयो, अने पोतानी पुत्रीने निःशंकपणे भोगवीने सुखे सुइ गयो थोडी वार पछी ते पुत्रीए कौतुकथी दीवावडे जोयु तो पोताना पिताने दीठो ते जोइ तेणे विचार्यु के–"अहो! मारी माताए पण मारा उपर माया करी, तो हवे आजथी आज मारो पति छे मे नर्तकीए नाच करवा माड्यो, तो पछी शामाटे घुमटो ताणवो?" एम विचारी ते पुत्री पण क्रीडाथी श्रमित थयली हती, तेथी निरांते तेनी साथे सुइ गइ प्रात काळ थता सुधी पण बेमांथी एके जाग्या नहि, एटले तेनी माताए त्या आवीने कह्यु के–"हे पुत्री! केम हजु सुधी जागती नथी?" पुत्री बोली के–"हे मा! मे तारा कह्या प्रमाणे कर्यु, तेथी यक्षे मने आनेज पति तरीके आप्यो छे, माटे हवे तु बीजो पति शोधीले." ते सांभळीने माता बोली के—

भावार्थ—" एवीज रीते मैं पण भय पामीने आपनु शरण कर्यु छे, तेथी जो आपज मने लुंटी लेवा धारो छो, तो मारे पण शरणज अशरण रूप थयुं."

इत्यादिक घणी रीते ते बाल्के सूरिने समजाव्या, पण ते लोभी सूरि समज्या नहीं, अने तेने पण मारीने तेना आभरण लइ लीधा.

ए प्रमाणे छए कुमारोना आभरणो पोताना पात्रमां नांखीने आगळ चालतां मार्गमां एक गर्भिणी साध्वीने सर्व अलंकारथी भूषित तथा नेत्रमां अंजन आंजेली जोइ. तेने जोइने सूरिए कह्यु के-" जैन शासननी हीलना करनारी हे दुष्ट साध्वी! तुं अहीं क्याथी आवी ?" ते सांभळी साध्वी बोली—

" सांइ रे सर्षपमात्रानि, परच्छिद्राणि पश्यसि ।
आत्मनो बिल्वमात्राणि, पश्यन्नपि न पश्यसि ॥ १ ॥

भावार्थ—" अरे ! बीजाना सरसवना दाणा जेवडा सूक्ष्म छिद्रोने पण तमे जुओ छो, अने तमारा मोटा बीला जेवडा छिद्रने जोता छतां पण देखता नथी."

" वळी हे आचार्य ! तमे शुद्ध हो तो मारी पासे आवो, केम उघा ध्यान करीने नासो छो? तमारां पात्रां मने बतावो." एवा वाक्यो सांभळीने सूरि तत्काळ त्यांथी नासीने आगळ चाल्या. थोडे दूर जतां कोइ राजानु सैन्य जोवामा आव्यु. तेना भयथी ते सैन्यना मार्गने छोडीने बीजे रस्ते चाल्या. त्यां तो दैवयोगे राजानीज समक्ष आवी पहोंच्या. तेने जोइने राजा पण हाथी उपरथी उतरीने तेने नम्यो अने बोल्यो के-" हे गुरु ! मारा मोटा भाग्य के मने अहीं आपना दर्शन थया,-तो हवे मारापर कृपा करीने एषणीय मोदक विगेरे ग्रहण करो." ते सांभळीने सुरिए विचार्यु के—" जो हु मोदक लेवा माटे पात्रा बहार काढीश, तो मारी चोरी प्रगट थशे " एम विचारीने ते सुरि बोल्या के—" आजे तो मारे उपवास छे." राजाए कह्यु के—" मारा भावनु खंडन न करो." एम कहीने सुरिनी झोळीमांथी बळात्कारे पात्रा बहार काढी तेमां मोदक नांखवा जाय छे, तेवामा तो तेमा अलंकारो जोया, तेथी ते राजा कोपायमान थइने बोल्यो के—" अरे साधुना वेषने विडंबना पमाडनार दुष्ट! मारा पुत्रोने मारीने तुं जीवतो शी रीते जइश ?" ते सांभळीने सुरि नीचु मुख राखी विचार करवा लाग्या के-" मारुं पाप आ राजाए जाण्युं, तेथी ते हवे मने जीवतो जवा देशे नहीं, कु-

मरणे मारशे, में पणु दुष्ट काम कर्युं. योग तथा भोग बन्नेथी हुं भ्रष्ट थयो. हवे मारी शी गति थशे?" इत्यादि चिंता करता सूरिने जाणीने ते देवताए पोतानी माया संहरी लीधी, अने प्रत्यक्ष थइने कह्युं के–"हे पूज्य! हुं ते ज आपनो शिष्य छु के जेनु आपे वचन लीधु हतु.आपना वचनथी बंधायेलो होवाथी हु अहीं आव्यो छुं. स्वर्गे गया पछी देवकार्यमां व्याकुळ रहेवाथी अहीं आववां मने विलंब थयो छे, परंतु "संकति दिव्व पेमा०" अने "चत्तारि पंच जोयण सयाइ०" एटले "संक्रमेला—प्राप्त थयेला दिव्य प्रेमादिकना कारणथी देवताओ तेमां लुब्ध थइ जायछे, तेथी पृथ्वी उपर आवता नथी. वळी चारसो पांचसो जोजन सुधी उंचे मनुष्यलोकनी दुर्गंध जाय छे तेथी पण देवताओ पृथ्वी पर आवता नथी." इत्यादि आगमनां वाक्यो जाणतां छतां आपे आवु कर्म केम आरंभ्यु? वळी दिव्य नाटक जोवामां लुब्ध थइने उभा ने उभा आंपे पण छ मास व्यतिक्रमाव्या छे,छतां तेटला काळने आपे एक मुहूर्त समान जाण्यो छे."आ प्रमाणे देवनी वाणी सांभळीने सूरिनो सर्व संशय नष्ट थयो, अने पोताना दुराचारने निंदवा लाग्या पछी तेमणे देवने कह्यु के–"तमेज भावबंधुपणाथी मने मोक्षमार्ग बताव्यो छे, केमके तमे मने धर्मथी भ्रष्ट थयेलाने फरीथी धर्म पमाड्यो छे, माटे तमारुं अनृण्य माराथी थइ शकाशेज नहीं. आथी वधारे हुं शु कहुं?" सूरिनां आवां वचनोथी संतोष पामी पोतानो अपराध खमावीने देवता स्वर्गमां गयो पछी सूरिए आलोयण लइने उग्र तप कर्यु.

"आ प्रमाणे आषाढसूरि प्रथम समकितथी भ्रष्ट थया अने चित्तमां संशय कर्यो, पण पछीथी शुद्ध भाव धारण कर्यो, माटे सर्व साधुए शंकारहितपणे निरंतर निरतिचार चारित्रनु पालन करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य।
द्विपंचाशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २६२ ॥

व्याख्यान २५३ मुं.

मिथ्यात्वना भेद कहे छे.

एकधा द्विविधा नवं, चतुर्धा त्रिविधा मतम्।
दशधा पंचधा चैव, मिथ्यात्व बहुधा स्मृतम् ॥१॥

भावार्थ–"मिथ्यात्वना एक, बे, चार, त्रण, दश अने पांच विगेरे अनेक प्रकारो कहेला छे."

श्री वीतरागना वचन उपर अविश्वास तथा जीवादि पदार्थो उपर अश्रद्धा, ते एक प्रकारे मिथ्यात्व कहेलुं छे.

मिथ्यात्व व्यक्त अने अव्यक्त एम बे प्रकार छे. तेमां प्रमाण वाक्योवडे तथा युक्तिवडे एकांत पक्षनी पुष्टि करनारा एवा स्पष्ट चैतन्यवाळा संज्ञी पंचेंद्रियादि जीवोने जे मिथ्यात्व होय छे, ते व्यक्त मिथ्यात्व कहेवाय छे अने अनादि काळथी मोहनीय कर्मनी प्रकृतिरूप मिथ्यात्व, के जे सम्यग् दर्शन आदि आत्माना गुणोनुं आच्छादन करनार छे अने जीवनी साथे सर्व काळ सतत् भावे रहेलुं छे, ते अव्यक्त मिथ्यात्व कहेवाय छे. आ अव्यक्त मिथ्यात्व असंज्ञी एकेंद्रियादि जीवोने तथा निगोदना जीवोने होय छे.

द्रव्य भावथी पण बे प्रकार मिथ्यात्व कहेलुं छे तेमां बाह्य वृत्तिथी मिथ्यात्वना आचरण करे, पण अंतरंग वृत्तिमां निर्मळपणुं (समकित) ज होय ते द्रव्य मिथ्यात्व जाणवुं. आवुं मिथ्यात्व कुमारपाळ राजाना आग्रहथी सोमेश्वर महादेवनी यात्रा करनारा श्री हेमचंद्र आचार्यनी जेम, तथा राजाना उपरोधथी गैरिक तापसनी भक्ति करनार कार्तिक श्रेष्ठीनी जेम समजवुं, अने भाव मिथ्यात्व ते निरंतर त्रिकाळज्ञानी एवा तीर्थंकरोना वचन उपर जे अनादर करवो ते समजवुं. तेवीज रीते व्यवहारमिथ्यात्व तथा निश्चय मिथ्यात्व एवा बे भेदो पण अनुक्रमे द्रव्य मिथ्यात्व अने भाव मिथ्यात्व प्रमाणेज जाणवा.

चार प्रकारे मिथ्यात्व कहेलुं छे ते आ प्रमाणे–लौकिक देवगत मिथ्यात्व, लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व, लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व अने लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व तेमां ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, गणपति, गोत्रदेवी, क्षेत्रपाळ विगेरे लौकिक देवोनुं पूजनादि करवुं ते लौकिक देवगत मिथ्यात्व जाणवुं, वैरागी, सन्यासी, जोगी, जगम,

तापस, ब्राह्मण विगेरे लौकिकगुरुनी पूजा, सत्कार विगेरे करवुं ते लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व जाणवु, वीतराग देवनी यात्रादिक मानता करवी—जेमके—" हे अमुक प्रभु ! जो मारु अमुक कार्य सिद्ध थशे, तो हु श्रीफळ, स्नात्र, दीपक, नित्य दर्शन, अष्टप्रकारी पूजा विगेरे करीश." इत्यादि संसारना सुखने अर्थे मानता करवी, अथवा—" हे प्रभु ! मारा विवाह विगेरे दुर्लभ कार्य तमेज सिद्ध कर्या छे. हवे मारा पुत्रने तथा वहुने कुशळ राखजो. " इत्यादि विविध प्रकारे स्तुति करवी ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व जाणवुं ए प्रमाणे मानता तथा स्तुति करीने घणा लोको अविकारी, अविनाशी अने वीतराग प्रभुने दूषण आपे छे. अरे ! जे मूढ प्राणीना चित्तमां मिथ्यात्व व्यापी रहुं छे तेने धिक्कार छे ! कहुं छे के—लोकोत्तर देवमां लौकिक देवना जे चिन्हो छे तेनु आरोपण करवुं ते मिथ्यात्व छे. अर्थात् ' आपनी इच्छा प्रमाणेज सुख दुःख प्राप्त थाय छे, तमेज सुखदुःखना आपनारा छो ' इत्यादि लौकिक देवनी जेम लोकोत्तर देव पासे कहेवु ते पण मिथ्यात्व छे. आ प्रमाणे लोकोत्तर देवगत नामनु त्रीजु मिथ्यात्व जाणवुं, अने पासथ्थादिकने गुरुबुद्धिथी वंदनादिक करवुं, ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व जाणवु, अथवा लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व एवी रीते जाणवु के—परतीर्थिकोए ग्रहण करेली जिनप्रतिमाने वंदन, पूजन आदि करवु, रात्रीने समये श्राविकाओए जिनमंदिरमां जवु, साधुओए जिनमंदिरमां निवास करवो अथवा रात्रीए प्रभुनी स्नात्रादिक पूजा करवी, अथवा तंबोलादिकनु भक्षण करवु, जळक्रीडा करवी, हींचका खावा, नाटकादिक जोवु विगेरे लौकिक देवना मंदिरनी जेम जिनेश्वरना मंदिरमां पण तेवी रीते करवुं ते सर्व लोकोत्तरदेवगत मिथ्यात्व कहेवाय छे. लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व पण पक्षांतरे पूर्वाचार्योए कहुं छे के—

जे लोगुत्तमलिंगा, लिंगिअदेहावि पुप्फतंबोलं ।
आहाकम्मं सव्वं, जल फल चेव सच्चित्त ॥ १ ॥
भुंजंति थीपसंगं, वव्वहारं गंथसग्गहं भूसं ।
एगागित्तं जमणं, सच्छंदविहिअं वयणं ॥ २ ॥
चेइअमढाइवासं, वसहीसु निच्चमेव संठाणं ।
गेअं निअवरनाणऽचावणमवि कणयकुसुमेहिं ॥ ३ ॥

तिविहं तिविहेणय, मिच्छत्तं वज्जिय जहिं दूरं।
निच्छयउ ते सड्ढा, अन्ने उण नामउ चेव ॥ ४ ॥

भावार्थ-" जे लोकोत्तर लिंगवाळा (साधु) यतिवेष धारण कर्या छतां पुष्प, तंबोल, आधाकर्मी सर्व वस्तु तथा सचित्त जळ अने फळ खाय तथा स्त्री प्रसंग करे, व्यापार करे, द्रव्यादिकनी गांठडीओ बांधे, वींटी विगेरे आभूषण धारण करे, एकला भमे, स्वच्छंदपणे वर्चे, मरजी प्रमाणे वचन बोले, चैत्यमां मठवासीनी जेम रहे, वसतीमां हमेशां स्थिति करे, गायनमां पोतानां वखाण गवराये अने सोनैयावडे तथा पुष्पोवडे पोतानी पूजा करावे. आ प्रमाणे मिथ्याभावमां वर्त्तता वेषधारी साधुओने जे त्रिविधे त्रिविधे दूरथीज वर्जेछे, तेओ निश्चे खरेखरा श्रावक छे, ते शिवाय बीजा तो मात्र नामनाज श्रावक छे. "

हवे त्रण प्रकारे मिथ्यात्व ते मन, वचन ने कायाथी जाणवुं. ते विषे पूर्वाचार्योए कयु छे के—

एय अणंतरुत्तं, मिच्छं मनसा न चिंतइ करेमि ।
सयमेव नो करेउ, अन्नेण कए न सुठ्ठु कय ॥ १ ॥
एवं वाया न जंपइ, करेमि अन्न च न जणइ करेह ।
अन्नकय न पससइ, न कुणइ सयमेव काएण ॥ २ ॥
करसन्नजमुहखेवाइहिं, न य कारवेइ अन्नेण ।
अन्नयकयं न पसंसइ, अन्नेण कए न सुठ्ठु कयं ॥ ३ ॥

भावार्थ—" आ अनंतर कही गयेला मिथ्यात्वने माटे मनमा चिंतवे नहीं के-हुं पोतेज आ काम करु, अथवा कोइ पासे करावुं, अथवा कोइए कर्युं होय ते सारुं कर्यु' एम अनुमोदन आपुं; एज प्रमाणे वचनवडे एवु बोले नहीं के ' हुं आ कार्य करुं ' बीजाने कहे नहीं के 'तु कर' अने कोइए कर्युं होय तो ' तेणे सारुं कर्युं, एम बोली ते तेनी प्रशंसा करे नहीं. तेज प्रमाणे कायाए करीने पोते करे नहीं,हाथनी संज्ञा तथा भमरनुं हलावबुं-तेणे करीने बीजा पासे करावे नही, अने बीजाए करलुं होय तो तेने 'आणे ठीक कर्युं' एम संज्ञादिकथी प्रशंसा करे नहीं." (आथी विपरीत वर्ते तो मिथ्यात्व जाणवु).

मिथ्यात्वना दश प्रकार कह्या छे, ते आ प्रमाणे—अधर्ममां धर्म संज्ञा, धर्ममां अधर्म संज्ञा, उन्मार्गमां मार्गसंज्ञा, मार्गमां उन्मार्ग संज्ञा, अजीवमां जीव संज्ञा, जीवमां अजीव संज्ञा, कुसाधुमां सुसाधु संज्ञा, सुसाधुमां कुसाधु संज्ञा, अमुक्तमां मुक्त संज्ञा अने मुक्तमां अमुक्त संज्ञा तेनी समजुती नीचे प्रमाणे—

(१) शुभ लक्षण रहित होवाथी वेदवाक्य अनागम छे, तेमां धर्म एटले आगम बुद्धि राखवी, ते अधर्ममां धर्म संज्ञा जाणवी.

(२) सर्व कर्मनो नाश करनार अने शुद्ध सम्यक्त्व पमाडनार आप्तवचनमां अनागमनी (अधर्मनी) बुद्धि राखवी, अथवा एम बोलवु के " सर्व पुरुषो अमारी जेवाज मनुष्यो होवाथी रागादिक सहितज होय छे, कोइ सर्वज्ञ नथी. इत्यादि अनुमान प्रमाणथी कोइ पण आप्त नथी." एवी कुयुक्ति करीने आप्तप्रणीत आगममां अनागम बुद्धि राखवी, ते धर्ममां अधर्म संज्ञा जाणवी.

(३) मोक्षपुरीनो अमार्ग एटले वस्तुतत्त्वनी अपेक्षाए विपरीत श्रद्धानयुक्त ज्ञान अने क्रिया करवी ते उन्मार्ग कहेवाय छे. तेमां मार्ग बुद्धि राखवी, ते उन्मार्गमां मार्ग संज्ञा जाणवी.

(४) मोक्षपुरीना मार्गमां एटले शुद्ध श्रद्धाथी ज्ञान अने क्रिया करवामां उन्मार्गपणानी बुद्धि राखवी, ते मार्गमां उन्मार्ग संज्ञा जाणवी.

(५) अजीवने विषे एटले आकाश, परमाणु विगेरेमां जीव छे एम मानवुं, आ शरीरज आत्मा छे एम मानवुं, अथवा पृथ्वी, जळ, वायु, अग्नि, यजमान, आकाश, चंद्र अने सूर्य ए आठ महादेवनी मूर्तिओ छे इत्यादि मानवु, ते अजीवमां जीव संज्ञा जाणवी.

(६) पृथ्वी आदि जीवोमां घडानी जेम उच्छ्वास विगेरे जीवना धर्म जणाता नथी, माटे ते पृथ्वी आदि अजीव छे. एवी युक्तिवडे जीवमां अजीव बुद्धि राखवी, ते जीवमां अजीव संज्ञा जाणवी.

(७) छ काय जीवनी हिंसामां प्रवर्तेला असाधुमां साधुबुद्धि राखवी, ते असाधुमां साधु संज्ञा जाणवी.

(८) "आ पुत्र रहित होवाथी तथा स्नानादिक नहीं करवाथी तेमनी सद्गति नथी" इत्यादि कुतर्क करीने पंच महाव्रतादिक पालन करनारा सुसाधुमां असाधु बुद्धि राखवी, ते साधुमां असाधु संज्ञा जाणवी.

(९) कर्मवाळा अने लौकिक व्यवहारमां प्रवृत्त थयेला अमुक्त पुरुषोने मुक्त मानवा, एटले के अणिमादि अष्ट सिद्धिना ऐश्वर्यने पामेला कुशळ पुरुषो सदा आनदमां वर्ते छे, तेओज निवृत्तात्मा (मुक्त) छे, अने तेओज दुस्तर ससारने तरी गयेला छे इत्यादि मानवु, ते अमुक्तमां मुक्त सज्ञा जाणवी

(१०) समग्र कर्मना विकारथी रहित, तथा अनत ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्यवाळा मुक्त पुरुषोने अमुक्त मानवा, ते मुक्तमां अमुक्त सज्ञा जाणवी.

हवे मिथ्यात्वना पाच प्रकार कहे छे—

(१) पोताना मतनेज प्रमाणरूप माननारा कुदृष्टिवासित माणसोने जे मिथ्यात्व होय छे, ते अभिग्रहिक मिथ्यात्व जाणवु.

(२) सर्वे देवने अने सर्वे गुरुओने नमस्कार करवो, सर्व धर्म करवा, एवी रीते धर्म अधर्मनी ओळखाण विना सर्व धर्मने सरखा मानवा, ते अनभिग्रहिक मिथ्यात्व जाणवु.

(३) श्रीमत् अरिहतना मतनु कोइ यथास्थितपणे वर्णन करे, तेना परना मत्सरने लीधे तेनु जाणी बुजीने खडन करवु ते अभिनिवेशिक मिथ्यात्व जाणवु, अथवा अजाणता प्रथम उत्सूत्र प्ररूपणा थइ गइ, पछी खरु तत्त्व जाण्या छता पण पोतानाज मतने आग्रहथी स्थापन कर्या करे, अथवा अजाणपणे सूत्रना भावार्थनी उत्सूत्र प्ररूपणा करे, पछी तेने कोइ समजावीने निवारे, तो पण पोताना आग्रहने मूके नहीं, ते पण अभिनिवेशिक मिथ्यात्व जाणवु

(४) सूत्रमा, अर्थमां के सूत्रार्थमा काइ शका थाय, पण कोइने तेनु समाधान पूछे नहीं, ते साशयिक मिथ्यात्व जाणवु

(५) अने जेओ कांइ पण तत्त्वातत्त्वनो विचार जाणता नथी तेवा एकेंद्रियादि जीवोने अज्ञानरूप अनाभोगिक मिथ्यात्व जाणवु

आ प्रमाणे मिथ्यात्वना बहु भेद कहेला छे. त्रिविक्रमसुनीमा तोतेर भेद कह्या छे, कोइ ठेकाणे एकवीश भेद पण कह्या छे. विगेरे अनेक भेदो ते ते ग्रंथोमाथी जाणी लेवा हवे ए मिथ्यात्वनी स्थिति केटली छे ते कहे छे—

अभव्याश्रितमिथ्यात्वेऽनाद्यनता स्थितिर्भवेत् ।
सा भव्याश्रितमिथ्यात्वेऽनादिसांता पुनर्मता ॥ १ ॥

भावार्थ—" अभव्य प्राणीने आश्रयीने मिथ्यात्वनी स्थिति अनादि अनंत छे, अने भव्य प्राणीने आश्रयीने अनादि सात स्थिति मानेली छे."

आ श्लोकना उपलक्षणथी मिथ्यात्वनी स्थितिना काळनो विचार करतां चार भांगा थाय छे अनादि अनंत, अनादि सांत, सादि अनंत अने सादि सांत. तेमां अभव्य प्राणीओने विपरीत रुचिरूप मिथ्यात्व अनादि अनत होय छे, केमके अनादि काळथी मिथ्यात्व लागेलुं छे अने तेनो हवे पछी कोइ पण काळे अंत आववानो नथी. भव्य प्राणीओने मिथ्यात्व अनादि सात होय छे, जो के भव्य प्राणी पण अनादि काळथी मिथ्यादृष्टि होय छे, पण ते भव्य होवाथी कोइ पण वखत समकित पामे छे, एटले ते वखत मिथ्यात्वनो अत थयो, तेथी तेनु मिथ्यात्व अनादि सांत छे. वळी अनादि मिथ्यादृष्टि भव्य जीव समकित पामीने पछी कोइ पण कारणथी फरीने मिथ्यात्व पामे, तो तेने मिथ्यात्व सादि थयु. आ [1] मिथ्यात्वमां जघन्यथी अतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टो आशातनादिक घणा पापने लीधे अर्ध पुद्गल परावर्त सुधी रहीने ज्यारे फरीथी सम्यक्त्व पामे त्यारे ते मिथ्यात्व सांत थयु, तेने सादि सांत जाणवुं. आ चार भांगामां सादि अनत नामनो त्रीजो भांगो जे छे ते कोइ पण जीवने लागु पडतो नथी, तेथी शून्य जाणवो, केमके सादि मिथ्यात्व भव्य प्राणीओनेज होइ शके छे, एटले ते मिथ्यात्व अनत थइ शके नहीं. अर्ध पुद्गल परावर्तमां तो तेनो अंत थायज

आ प्रसगे भव्य तथा अभव्यनु स्वरूप जाणवानी इच्छाथी शिष्ये प्रश्न करतां गुरु कहे छे—जेनी पर्यायवडे मुक्ति थशे, एटले जे मुक्तिने योग्य छे ते भव्य, अवश्य मुक्तिए जाय तेज भव्य एम नहीं कारण के केटलाक भव्य प्राणीओ पण सिद्धिने पामता नथी, माटेज " सिद्धिने योग्य ते भव्य " एम कह्यु छे. वळी "भव्वा वि न सिज्झिस्संति केइ" "केटलाक भव्य प्राणीओ पण सिद्धिने पामशे नहीं " एवुं वचन छे, अने भव्यथी जे विपरीत एटले जेओ कदापि पण ससारसमुद्रनो पार पाम्या नथी, पामता नथी अने पामशे पण नहीं, ते अभव्य जाणवा. अहीं भव्य तथा अभव्यनु लक्षण जाणवा माटे वृद्धो एम कहे छे के—जे कोइ प्राणी ससारथी विपक्षभूत मोक्षने माने छे अने मोक्षनी प्राप्ति माटे अभिलाष राखीने मनमां एवु विचारे छे के—" हु भव्य हइश के अभव्य ? जो भव्य होउ तो सारु, पण कदाच अभव्य होउ तो मने धिक्कार छे " आवो विचार कोइ पण वखते करे ते प्राणी भव्य जाणवो अने जे प्राणीने कोइ पण वखते आवो विचार थयो न होय, थतो न होय तथा थवानो पण नहीं ते प्राणी अभव्य जाणवो. श्री आचारांग सूत्रमां कह्यु छे के " अभव्यस्य हि भव्याभव्यशकाया अभावः " " अभव्य प्राणीने हुं भव्य छु के

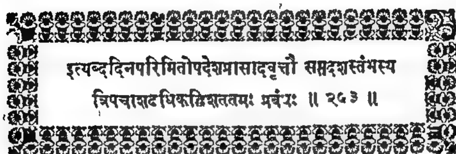
[1] समकित पाम्या पछी मिथ्यात्व थयेलु

अभव्य ? एवी शंका पण थती नथी ” आ प्रसंगे महा पापी पालक नामना अभव्यनुं दृष्टांत संक्षेपथी कहीए छीए—

श्रावस्ति नगरीना राजाना पुत्र स्कंदके श्री मुनिसुव्रत स्वामी पासे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो हतो. एक दिवसे कुंभकार नामना नगरथी पालक नामनो पुरोहित त्यां आव्यो.तेनी साथे राजसभामां विवाद करतां स्कंदके तेनो पराजय कर्यो.त्यार-बाद केटलोक वखत गया पछी स्कंदकने वैराग्य थवाथी तेणे श्री जिनेश्वर पासे दीक्षा लीधी.एकदा तेणे प्रभुने कह्यु के“हे स्वामी!जो आपनी आज्ञा होयतो हु मारी व्हेनना देशमां जाउ.” प्रभुए कह्यु के-“जो तमे त्यां जशो तो मोटो उपसर्ग थशे, अने तमारा विना बीजा सर्वे आराधक थशे ”त्यारे स्कंदकाचार्ये कह्यु के–“साधुने,जे उपसर्ग छे तेज मोक्षनु साधन छे, तेथी तपस्वीओने कांइ पण उपसर्गज नथी.मोक्षना आनंदने इच्छनारा मुनिओने जे काइ दुःख आवे ते मोटा आनदने माटेज छे.” इत्यादि क-हीने स्कंदक आचार्य पांचसे साधुओ सहित विहार करता करता कुंभकार नगरना उद्यानमा आव्या ते समाचार जाणीने पालके पूर्वना वैरने लीधे ते उद्याननी धूल्मा गुप्त रीते शस्त्रो दाटीने राजाने कह्यु के-“हे राजन्!आ साधुओ तमने मारीने तमारु राज्य लेवाने आव्या छे.” एम कही राजानी खात्री माटे दाटेला शस्त्रो बताव्या, तेथी क्रोध पामीने राजाए ते साधुओने मारवानी आज्ञा आपी.पछी राजानो हुकम मेळवीने पालक ते साधुओने पीलवा माटे मनुष्यने पीलवानी घाणी पासे लइ गयो. तेमा चारसो नवाणु साधुओने पील्या पछी स्कंदकआचार्ये तेने कह्यु के–“हुं आ बालक साधुने बाकीमां राखीने प्रथम मने पील ”तोपण ते पालके आचार्यने वधारे दुःखी करवाना हेतुथी प्रथम ते बालकनेज पील्यो ते सर्वेने सूरिए निर्यामणा करा-वीने मुक्ति पमाडया. पछी सूरिए ते पालक सहित आखा देशने भस्म करवानु नि-याणुं कर्यु.त्यांथी काळधर्म पामीने आचार्य वह्निकुमार देवता थया तेणे पोतानु वेर लेवा माटे त्यां आवीने पालक सहित आखा देशने बाळी भस्म कर्यो. ते स्थान आजे पण दंडकारण्यना नामथी ओळखाय छे.

ते साधुओने पीलती वखते " हुं पहलो, हु पहेलो ” एम बोलता तेओ काळनी सन्मुख गया, परतु जरा पण खेद पाम्या नहि, तेमज अनेक प्रकारनी लब्धिवाळा हता तो पण अतःकरणमा लेश मात्र क्रोध कर्यो नहीं, तेथी धन्य छे तेओना वीतरागीपणाने ! "

" आ महापापी पालकने अनादि अनंत भांगे मिथ्यात्व हतुं. ते मरीने सातमी नरके गयो. जे लोको मिथ्यात्वरूपी मदिरानुं पान करता नथी तेओ मोक्षरूपी वधूने पामे छे. "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य त्रिपंचाशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २५३ ॥

व्याख्यान २५४ मुं.

मिथ्यात्वना दुस्त्यजपणा विषे.

अनंतज्ञानसंपूर्णदर्शनचरणान्वितम् ।
गुरुं प्राप्य न मिथ्यात्वं, त्यजंति मूढबुद्धय ॥१॥

भावार्थः—" अनंत अने संपूर्ण ज्ञान, दर्शन तथा चारित्रथी युक्त एवा गुरुने पामीने पण मूढ बुद्धिवाळा जीवो मिथ्यात्वने छोडता नथी. " ते उपर दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

मंखलीपुत्र गोशाळानुं दृष्टांत

एकदा श्री वीरभगवान् श्रावस्तिनगरीना उद्यानमां समवसर्या हता, ते वखते अत्यंत अभिमान धरावतो गोशाळो वाद करवा माटे त्यां आवे छे, एम ज्ञानवडे जोइने प्रभुए गौतम विगेरे मुनिओने कह्युं के–" अहीं मखलीपुत्र (गोशाळो) आवे छे, माटे तमारे तेनी दृष्टिए रहेवु नहीं. " आ प्रमाणे भगवानना आदेश थतां सुनक्षत्र ने सर्वानुभूति मुनि विना बीजा सर्व दूर गया तेवामां ते गोशाळो आवीने जिनेश्वरने कहेवा लाग्यो के–" हुं सर्वज्ञ छु, अमारा शास्त्रमां कर्मना पांच लाख साठ हजार छसो अने त्रण भेद छे. तेटलां कर्मनो क्षय थाय, त्यारे ते जीव सिद्धि मेळवे छे. वळी, हे काश्यपगोत्री ! तमारो शिष्य एक गोशाळा नामनो हतो

ते तो मरी गयो छे, अने हुं तो अति बुद्धिमान होवाथी सात शरीरमां परावर्तन करीने आ शरीरमां आव्यो छु. प्रथम हु राजगृही नगरीमां उदायी राजा हतो, ते शरीरनो त्याग करीने एणजगना देहमां बावीश वर्ष सुधी रह्यो. त्यारपछी ते शरीर मूकीने दडपुर नगरमां मलरामना देहमां एकवीश वर्ष सुधी रह्यो, त्याथी चंपापुरीमा मल्लितना देहमां वीश वर्ष रह्यो, ते शरीर पण मूकीने वाराणशी नगरीमा राहना शरीरमा ओगणीश वर्ष रह्यो, त्याथी आलभिका नगरीमां भारहना शरीरमां अढार वर्ष रह्यो, तेनो पण त्याग करीने विशालानगरीमां अर्जुनना शरीरमां सत्तर वर्ष रह्यो, तेनु शरीर पण मूकीने श्रावस्तिनगरीमां मखलीपुत्रनुं शरीर परिषहने सहन करवामा समर्थ जोइने तेमां आव्यो छु, ते सोळ वर्ष सुधी रहेवानो छु. हे काश्यपगोत्री ! आ प्रमाणे एकसो तेत्रीश वर्षमां सात शरीर बदलवा जोइए एवु अमारा शास्त्रमां कहेलु छे, " आ प्रकारे गोशाळाना वचन सांभळी प्रभु बोल्या के—"जेम कोइ चोर पोताना शरीरने छुपाववानी इच्छाथी ऊनना एक ततुए करीने ३ पवा रना पुमडाए करीने अथवा एक तृणे करीने पोताना शरीरनु आच्छादन करे, तेवी रीते तु फोगट तारा आत्माने शा माटे छुपावे छे?" प्रभुना आवां वचन साभळीने गोशाळो क्रोध करी वीतराग प्रभुने अयोग्य वचनो बोलीने आशातना करवा लाग्यो. ते सामळी नहि शकवाथी भगवानना पूर्ण भक्त सर्वानुभूति मुनिए गोशाळाने कह्यु के—"हे मखलीपुत्र! शा माटे जूठु बोलेछे? अने तेजोलेश्यादि विद्याना आपनारा गुरुनी शामाटे आशातना करे छे ?" ते साभळीने अति क्रोध पामेला गोशाळाए सर्वानुभूति मुनिने तपना तेजथी (तेजोलेश्याथी) भस्मसात् करीने फरीथी स्वामीनी आशातना करवा माडी त्यारे प्रभुना शिष्य सुनक्षत्र मुनिए तेने कह्यु के—"अरे! त्रण भुवनना गुरुनी अवज्ञा केम करे छे? आवा आचरणथी तारी नरकगति थशे." ते साभळीने गोशाळाने वधारे क्रोध चड्यो तेथी तेजोलेश्यावडे ते मुनिने पण बाळी दीधा अने फरीथी प्रभुने अयोग्य वाक्यवडे निंदवा लाग्यो. त्यारे श्रीजिनेश्वर बोल्या के—"आवी कुबुद्धिथी अने मिथ्यात्वथी तु आवा दुर्लभ मनुष्यभवने हीन गतिमां केम नाखे छे?" ते साभळीने पण तेने क्रोध चड्यो, तेथी तेणे सात आठ पगला पाछा हठीने प्रभुना उपर पण तेजोलेश्या मूकी, परंतु ते तेजोलेश्या भगवानने प्रदक्षिणा करीने पाछी फरी, अने गोशाळाना शरीरमां पेठी. ते वखते प्रभुना शरीरना बहारना देखावमां काळाश जोइने गोशाळाए भगवानने कह्यु के—" मारा तपना तेजथी छ मासमा तमारु मृत्यु थशे " त्यारे प्रभु बोल्या के—"हुं

तो हजु सोळ वर्ष सुधी केवळी अवस्थाए विचरीश, परंतु तुं तो पित्तज्वरना व्याधिथी सात दिवसमांज छद्मस्थपणे मरण पामीश." पछी प्रभुए गौतम आदि मुनिओने बोलावीने कह्युं के-"तमे धर्मवाक्योवडे आने उपदेश आपो." ते सांभळीने गौतमादि गणधरो तेने उपदेश आपवा लाग्या, परतु ते तो उलटो तेथी कोप पामीने ते मुनिओने बाधा उपजाववानो उपाय चिंतववा लाग्यो, पण तेनी शक्तिनो नाश थइ गयेलो होवाथी ते सर्व प्रयत्नमां निष्फळ थयो. पछी तेना शरीरमां दाह थवाथी "अरे रे! आ महापुरुषनु वाक्य निष्फळ नहीं थाय" एम विचारतो, दीर्घ निसासा नांखतो अने 'अरे रे आ शुं थयुं!' एम बोलतो त्यांथी नीकळ्यो. मार्गमां पृथ्वीपर पग पछाडतो ते शीतोपचारने माटे कुंभकारने घेर गयो, अने मद्यपान करीने तथा हाथमां आम्रफळ राखीने ते नृत्य करवा लाग्यो तेवखते जिनेश्वरे सर्व साधुओने कह्युं के —"आ गोशाळाए मारा वधनिमित्ते जे तेजोलेश्या मूकी हती ते सोळ देश बाळी नांखे तेवी उग्र मूकी हती, परतु ते तेनाज शरीरमां पेठी छे, तेनी वेदनाथी ते हालमां शीत उपचार करे छे."

हवे गोशाळाए भगवतनां कहेलां वचनोथी पोतानुं मृत्यु नजीक जाणीने आजीविक मतवाळा पोताना भक्त श्रावकोने छेल्लो उपदेश आप्यो, अने पोताना शिष्योने कह्युं के-"हुं मरण पामुं त्यारे मारा शरीरने सुगंधी जळवडे स्नान करावी, गोशीर्ष चंदनवडे विलेपन करी अने हजार पुरुषोए वहन कराती शिबिकामां बेसाडीने श्रावस्तिनगरीनी दरेक बजारमा लइ जइ तमारे मोटा शब्दथी उद्घोषणा करवी के-"आ मंखलीपुत्र, जिन नहीं छतां 'हुं जिन छुं' एम बोलनारो, चरम तीर्थंकरनी आशातना करनारो, बे मुनिनी घात करनारो, तथा अनेक जीवोने मिथ्यात्वी बनावनारो ते पोतानीज तेजोलेश्याथी महात्मानां वचनवडे सातमी रात्रिए छद्मस्थपणे मरण पाम्यो छे." आ प्रमाणे वारंवार बोलवुं. पछी जो तमे मारा शिष्य हो तो मारे डाबे पगे दोरडुं बांधीने त्रण वार मारा मुखमा थुंकीने श्रावस्ति नगरीनी बजारमां सर्वत्र मने घसडवो, अने त्यारपछी मारा देहनो संस्कार करजो." आवी रीते ते गोशाळो अंत अवस्थामां कांइक समकित पाम्यो, अने वीतरागनां वचन उपर विश्वासवाळो थयो. छेवटे पोताना सर्व शिष्य समक्ष अरिहंतनुं शरण करीने काळधर्म पाम्यो. पछी तेना शिष्योए पोतानु महत्त्व तथा पूजा सत्कार विगेरेनी हानि थवाना भयथी गुरुनुं वचन पाळवा माटे पोतानाज उपाश्रयमां द्वार बंध करीने श्रावस्ति नगरीनो आलेख काढी पूर्वे कहेली सर्व क्रियाओ करी, अने त्यारपछी तेना देहनो संस्कार करवा तेने बहार काढ्यो एटले श्रावकोए अग्नि संस्कार कर्यो.

हवे श्रीवीरभगवान विहारना क्रमथी मेढक नामना नगरे पधार्या. त्यां तेमना शरीरने पित्तज्वरथी व्याप्त जोइने चारे वर्णना लोको बोलवा लाग्या के—" गोशाळाए मूकेली तेजोलेश्याथी शरीर दग्ध थवाने लीधे प्रभु छ महीने काळ करशे." ते वात सांभळी सिंह नामना भगवानना शिष्य के जे निरंतर छट्ठ तप करता हता, तथा सूर्य सन्मुख दृष्टि राखीने आतापना लेता हता तेमणे ते आतापनाने अंते विचार्यु के—'मारा धर्मगुरु श्री जिनेश्वरने पित्तज्वर उत्पन्न थयो छे, तेथी जो ते छ महिनामां काळधर्म पामशे तो अन्य दर्शनीओ कहेशे के—' गोशाळानी तेजोलेश्याथी हणायेला महावीर छद्मस्थपणेज काळधर्म पाम्या.' आ प्रमाणे तेनी भद्रक प्रकृति होवाथी तेणे विचारणा करी, अने तेना मनमां घणुं दुःख उत्पन्न थयु. ते बहुज खेद करवा लाग्या. पछी ते मालुककच्छ नामना निर्जन वनमां जइने मोटा शब्दथी रुदन करवा लाग्या. ते जाणीने भगवाने स्थविर साधु मोकलीने तेने पोतानी पासे बोलाव्या अने कह्यु के—"हे सिंह मुनि! तें तारा मनमां जे विकल्प कर्यो छे तेम थवानुं नथी, केमके देशे ऊणा सोळ वर्ष सुधी मारे केवळज्ञाननो पर्याय भोगववानो छे, तेथी तुं नगरमां जा अने रेवती नामनी श्राविकाए मारे माटे कोळानो पाक बनाव्यो छे ते तु लावीश नहीं,केमके ते ग्रहण योग्य नथी,पण तेने ज घेर तेना अश्वने माटे बीजोरानो पाक बनाव्यो छे ते लइ आव." आ प्रमाणे भगवानना कहेवाथी सिंह मुनि रेवती श्राविकाने घेर गया.

रेवती श्राविका निर्विकार मुनिने आवता जोइने अति हर्ष पामी अने आसन परथी उठी सात आठ पगलां सन्मुख जइ वंदना करीने बोली के " हे स्वामी! आप शा प्रयोजनथी अत्रे पधार्या छो ते कृपा करीने कहो." एटले सिंहमुनिए जिनेश्वरनु कहेलु योग्य औषध माग्यु, अने अयोग्य औषधनो निषेध कर्यो. रेवतीए पोताना आत्माने सफळ मानीने मागेलुं औषध वहोराव्यु ते लइने मुनिए भगवंतना हाथमां आप्यु भगवाने पण वीतरागपणाथीज उदरमां क्षेपव्युं. तेज क्षणे भगवाननो व्याधि नाश पाम्यो, तेथी मुनिवर्गमां आनंद व्यापी रह्यो अने देवादिक पण हर्ष पाम्या. ते वखते रेवती श्राविकाए पण त्रिकालज्ञानी परमात्मानी स्तुति करती सती तीर्थंकरपदने योग्य अध्यवसायने धारण कर्यो.

हवे गौतम गणधरे श्री वीरप्रभुने नमस्कार करीने पूछ्युं के—" हे स्वामी! आपनो सर्वानुभूति शिष्य गोशाळानी तेजोलेश्याथी दग्ध थयो सतो कइ गतिने पाम्यो?" भगवान बोल्या के—" ते साधु सहस्रार नामना आठमा कल्पमां अढार

व्याख्यान २५५ मुं.

भगवाननी आशातनानां फळ विषे.

प्रभोराशातनां तन्वन्नल्पधीर्मंखलीसुतः ।
निजात्मानं भवौघेषु, न्यधादहो कुतर्कता ॥१॥

भावार्थ"-प्रभुनी आशातना करीने तुच्छ बुद्धिवाळा मंखलीपुत्रे पोतानो आत्मा संसारसमुद्रमां नांख्यो, ए केवुं कुतर्कपणुं !"

श्री गोतम गणधरे त्रण भुवनना शरणरूप अने वांछितने आपनारा श्री महावीर स्वामीने पूछ्युं के " हे प्रभु ! मंखलीपुत्रनुं देवलोकमां गया पछीनुं भावी चरित्र कहो." त्यारे भगवान बोल्या के-"आ भरतक्षेत्रमां आवेला शतद्वार नामना नगरमां सुमति नामे राजा थशे. तेने सुभद्रा नाम्नी राणी थशे. तेना उदरमां बारमा देवलोकथी च्यवीने ते गोशाळो महापद्म नामे पुत्र थशे. ते देवसेन तथा विमलवाहनना नामथी पण प्रसिद्ध थशे तेने एक वखत चार दांतवाळो श्वेत हाथी प्राप्त थशे त्यारपछी तेने राज्यगादी मळशे, एटले ते राजा मिथ्यात्वी होवाथी अनेक साधुओनी कदर्थना करशे ते जोइने तेना प्रधानो तेने विनयपूर्वक कहशे के " हे राजन् ! प्रजानाथ थइने आवुं कृत्य करोछो ते योग्य नथी " तेथी ते राजा काइंक पापकर्मथी पाछो हठशे. ते एक दिवस उद्याननी शोभा जोवा जशे, त्यां एक स्थाने तीर्थंकरना शिष्यना शिष्य त्रण ज्ञानने धारण करनारा तथा निरंतर उग्र तप करनारा सुमंगल नामना साधुने आतापना करता देखशे. तेने जोइने ते विमलवाहन राजाने क्रोध उत्पन्न थशे, एटले सिंहनी जेम वांकी दृष्टिथी ते मुनिने ध्यानमां तत्पर रहेला जोशे.पछी तत्काळ घोडाने त्वराथी हांकीने पोतानो रथ ते साधु उपर चलावशे,एटले साधु पडी जशे,पाछा उभा थशे, एटले फरीथी पण एज प्रमाणे रथ हांकशे. बीजी वार उभा थया पछी ते साधु मनमां विचार करशे के" अहो ! आ जीव महानिर्दय केम जणाय छे ?" एम विचारीने अवधिज्ञानथी जोतां तेने गोशाळानो जीव जाणीने कहेशे के " हे महापद्म ! आजथी त्रीजे भवे तुं गोशाळो [illegible] तें तारी तेजोलेश्याथी श्री महावीर भ-

गवानना सर्वानुभूति तथा सुनक्षत्र नामना बे शिष्योने दग्ध करी दीधा हता; परंतु ते साधुओ क्षमा धारण करवामां महा समर्थ हता, केमके इंद्रादिक देवोनुं सामर्थ्य पण तेनी पासे कुंथुवा जेवुं हतुं, तो तारा जेवानी तो शी गणत्री ? परंतु तेमने धन्य छे के तेओए तारी करेलो प्राणांत उपसर्ग सहन कर्यो, पण तेमना अंतभागमां पण क्रोधनो लेश सरखो लाव्या नहि तेमज समग्र संसारी जीवो करतां पण अनंत बळवाळा श्री वीर परमात्मा उपर तें तेजोलेश्या मूकी तो पण तेमणे जरा पण क्रोध कर्यो नहि अने उलटो तने प्रतिबोध आप्यो, परंतु तुं बोध पाम्यो नहि हुं तो सुमंगळ छुं, पूर्वना साधु जेवो क्षमावान नथी, तेथी तुं मने त्रण वार दुःख आपीश तो हुं तपना तेजवडे रथ, घोडा अने सारथि सहित तने भस्मसात् करी नाखीश." आ प्रमाणे ते साधुए कह्या छतां ते राजा त्रीजीवार तेना पर रथ चलावी ते मुनिने पृथ्वी पर पाडी देशे. ते वख-ते मुनि क्रोधथी तेजस समुद्घात करीने सात आठ पगला पाछा हठी तेजोलेश्यावडे रथ, घोडा अने सारथि सहित विमलवाहन राजाने भस्मीभूत करी नांखशे. त्यार प-छी ते साधु अनेक प्रकारना छट्ठ, अट्ठम आदि तप सहित घणा वर्ष सुधी चारित्र पा-ळीने अंते एक मासनुं अनशन करी सर्व पाप आलोइ पडिकमीने सर्वार्थसिद्ध विमा-नमां देवपणे उत्पन्न थशे.

विमलवाहन राजा मरीने सातमी नरके तेत्रीश सागरोपमना उत्कृष्ट आयुष्य-वाळो नारकी थशे. त्यांथी नीकळीने मत्स्ययोनिमां उत्पन्न थशे. त्यांथी मरीने फरीथी सातमी नरकमां जशे. पाछो मत्स्ययोनिमां उत्पन्न थशे. त्यां घणुं दुःख भोगवीने छट्ठी नरकमां उत्कृष्ट आयुष्यवाळो नारकी थशे. त्यांथी नीकळी स्त्रीपणुं पामीने फरीथी छट्ठी नरकमां उत्पन्न थशे त्यांथी नीकळीने फरीथी स्त्रीपणुं पामी घणी कदर्थना पामशे. त्यांथी पांचमी नरकमां जइ अत्यंत दुःख पामी उरःपरिसर्पमां उत्पन्न थशे. त्यां वध बंधन आदि अनेक कष्ट पामी फरीथी पांचमी नरके जशे. त्यांथी नीकळी उरःपरिसर्प थइ चोथी नरके जशे. त्यांथी नीकळी सिंहयोनिमां उत्पन्न थइने फरी-थी चोथी नरके जइ पाछो सिंहयोनिमां उत्पन्न थशे. त्यांथी त्रीजी नरकमां जइ दुःख भोगवीने पछी पक्षीमां उत्पन्न थशे, त्यांथी फरीने त्रीजी नरकमां जइने पाछो पक्षीना भवमां आवशे. त्यांथी मरीने बीजी नरकमां उत्पन्न थशे. त्यांथी नीकळी भुजपरिसर्प थइने फरी बीजी नरके उत्पन्न थशे. त्यांथी नीकळी फरीथी भुजपरिस-र्पमां उत्पन्न थइ प्रथम नरकमां दुःख भोगवशे. त्यांथी नीकळी असंज्ञि पंचेंद्रियमां उ-

दावानळनी ज्वाळाथी पीडा पामशे. त्यां बीजु कोइ शरण नहि मळवाथी तेमज नासवा भागवानुं स्थळ पण नहि मळवाथी अत्यत विलाप करती सती भस्मसात् थइ जशे. पूर्वे गोशाळाए अनेक मुनिओनां अंतःकरणो बाळी दीधा हतां, ते कर्मनो अहीं उदय थशे. "जीव जे जे कर्म करे छे ते पोते तो विसरी जाय छे, पण समये समये करेलां कर्म ते जीवने विसरी जता नथी जीव गमे त्यां रह्यो होय, पण तेने घसडीने कर्म तेने योग्य स्थाने लइ जाय छे."

त्यारपछी ते अग्निकुमार देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी मनुष्यपणु पामी साधुना सगथी समकित पामीने चारित्र ग्रहण करशे. ते भवमा चारित्रनी विराधना करशे, तेथी मरीने दक्षिण तरफनी असुरकुमार निकायमां देवपणे उत्पन्न थशे. 'जो चारित्रनी विराधना करी न होय तो साधुनी उत्पत्ति वैमानिकमांज थाय छे.' पछी त्यांथी नीकळी ते मनुष्यपणु पामशे. त्यांथी दक्षिण बाजुना नागकुमारमां उत्पन्न थशे पाछो ते मनुष्यभव पामशे त्यांथी मरीने दक्षिण बाजुमां सुवर्णकुमार देव थशे. त्यांथी मनुष्यभव पामी दक्षिण बाजुए स्तनितकुमार निकायमां उपजशे. त्यांथी मनुष्यभव पामी चारित्र लेशे. ते भवमां पण सयमनी विराधना करवाथी ज्योतिषी देवता थशे. त्यांथी मनुष्य थइ सयम पाळीने प्रथम देवलोकमां देव थशे, केमके ते भवमां संयमनी आराधना करशे. आराधना एटले जे समये चारित्र ग्रहण कर्युं होय त्यारथी आरंभीने मरण पर्यंत अतिचार रहित तेनुं पालन करवु ते. त्यांथी मनुष्यपणु पामीने त्रीजा देवलोकमां देवता थशे, त्यांथी अनुक्रमे एक एक भव मनुष्यनो करीने पांचमा, सातमा, नवमा अने अगियारमा देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे त्यांथी मनुष्यभव पामीने तथा चारित्रनु संपूर्ण प्रतिपालन करीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां समृद्धिथी सपूर्ण उच्च कुळमां मनुष्यपणे उत्पन्न थशे. त्यां सद्गुरुना समागमथी सम्यग् दर्शन पामीने सर्वोत्कृष्ट चारित्र पाळी केवळज्ञान प्राप्त करशे केवळज्ञानना महोच्छवमा सर्व सघने बोलावीने ते पोतानु गोशाळाना भवथी आरभीने सर्व चरित्र प्रगट करशे अने कहेशे के—" हे आर्यो ! अरिहत, आचार्य अने उपाध्याय विगेरेनी आशातना करवाथी हु अनत काळ सुधी ससारमा भटक्यो छु, माटे तेवी रीते तमारे करवु नहि, में तो अज्ञानपणाथी महा मूर्खता करी हती. अरे ! त्रण भुवनने तारवामां समर्थ अने त्रिलोकना समस्त

पदार्थसमूहने जोनारा अने अनंत गुणयुक्त एवा श्री महावीर तीर्थंकर गुरु तरीके मळ्या छता पण में मनमां काइ पण शुभ ध्यान कर्युं नहि. ते जगत्गुरुए अनेक भव्य जीवोना बने प्रकारना दारिद्र्यनो नाश कर्यो, पण हुं निर्भाग्यशेखर कांइ पण ग्रहण करी शक्यो नहीं, तोपण ए क्षमासागरे परिणामे पण मारे विषे शुभ अध्यवसायनो अवकाश आप्यो छे तेना प्रभावथीज हु आ भवमा पण चारित्र अने केवळज्ञान पामी शक्यो छु" इत्यादि देशनामा पोतानु चरित्र कहीने अनेक भव्य जीवोने आवा धर्म शास्त्रमां रसिक करशो तेभवमां अनुक्रमे अनशन ग्रहण करीने ते गोशाळो अनत सुखना स्थानरूप मोक्षपदने पामशे.

"आ प्रमाणे गोशाळानु वृत्तात सांभळीने शिष्यजनोए हेय वस्तुनो त्याग करवो अने मन वचन तथा कायाए करीने गुरुजननी अल्प पण आशातना करवी नहि."

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ सप्तदशस्तंभस्य पञ्चपञ्चाशदुत्तरद्विशततम प्रबंध ॥ २५५ ॥

इति स्तंभ १७ मो समाप्त



श्री उपदेश प्रासाद

स्तंभ १७ मो.

व्याख्यान २५६ मुं.

ज्ञानाचारना आठ प्रकारमांनो पहेलो काळ नामनो आचार कहे छे—

पठनीयं श्रुतं काले, व्याख्यानं पाठनं तथा।
आचारः श्रुतधर्मस्य, चाद्यो यल्लिख्यते बुधैः ॥ १ ॥

भावार्थ—"योग्य काळे श्रुत भणवु, भणाववुं तथा व्याख्यान करवुं, ते श्रुतधर्मनो पहेलो आचार पंडित पुरुषोए कहेलो छे."

अग्यार अंग अने उत्तराध्ययन विगेरे कालिक श्रुत कहेवाय छे. ते दिवसे तथा रात्रे पहेली अने चोथी पोरसीमां भणवु गणवु अने दश वैकालिक विगेरे तथा दृष्टिवाद उत्कालिक श्रुत कहेवाय छे, तेनो भणवा विगेरेनो काळ सर्व पोरसीनो छे. तेमां सूत्रनी पोरसीमा भणवु, अने अर्थनी पोरसीमां अर्थ अथवा उत्कालिक श्रुत विगेरे भणवुं. दिवस तथा रात्रीनी पहली अने छेल्ली पोरसीमां अस्वाध्याय(असज्झाय)ने अभावे भणाय तेथी तेनुं नाम कालिक कहेवाय छे. कालिकनो शब्दार्थ एवो छे के योग्य काळेज भणवुं ते, अने मात्र काळ वेळा सिवाय बधी पोरसीमां भणाय तेने उत्कालिक कह्युं छे. कालिक तथा उत्कालिक बन्ने श्रुतनो लघु अनध्याय काळ बे घडीनो छे. तेवी काळवेळा प्रत्येक अहोरात्रमा चार आवे छे, तेटलो वखत तजवो. ते चार वखत आ प्रमाणे—१ सन्ध्या वखते (सायंकाळे), २ मध्य रात्रीए, ३ प्रभाते तथा ४ मध्यान्ह वखते ए चार काळ वेळाए तो कोइ पण दिवस स्वाध्याय करवो नहीं, पण पडिलेहण विगेरे बीजी क्रिया करवानो निषेध नथी. अन्य धर्ममां पण काळने वखते सध्यावंदन विगेरे क्रियाओ करवामां आवे छे. ब्राह्मणो हमेशां त्रण संध्याए मळीने त्रणसो चोवीश वार गायत्री मंत्रनो जाप पूर्ण करे छे. दुष्ट काळ वखते सर्व शास्त्रोमां सूत्रादिकनुं पठन पाठन सर्वथा निषेध करेलुं छे. ते विषे अन्य दर्शनमां कह्युं छे के—

चत्वारि खलु कर्माणि, संध्याकाले विवर्जयेत् ।
आहारो मैथुनं निद्रा, स्वाध्यायश्च विशेषतः ॥ १ ॥

भावार्थ-"आहार, मैथुन, निद्रा अने विशेषे करीने स्वाध्याय, ए चार कर्म सध्या वखते त्याग करवां."

आहाराजायते व्याधिः, क्रूरगर्भश्च मैथुनात् ।
निद्रातो धननाशश्च, स्वाध्याये मरणं भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"सध्या वखते आहार (भोजन) करवाथी व्याधि उत्पन्न थाय छे, मैथुन करवाथी क्रूर गर्भ उत्पन्न थाय छे, निद्रा लेवाथी धननो नाश थाय छे, अने स्वाध्याय करवाथी मृत्यु थाय छे."

तेमज काळ वखते स्वाध्याय करवाथी-"अहो ! आ साधुओ स्वाध्यायनो काळ पण जाणता नथी" एम कहीने लोको पण निंदा करे छे, तथा ते वखते पठनादिकमां व्यग्र रहे तो मुमुक्षु साधुने अवश्य करवा लायक आवश्यकादिक क्रियामां अने शुद्ध श्रावकने त्रिकाल देववंदन, पूजन विगेरेमा उपयोग रहे नहीं, तेथी वखतसर करवानी कहेली क्रियाथी भ्रष्टपणु प्राप्त थाय.

वळी निरंतर स्वाध्याय करवाथी खेद थयो होय तेने तेटलो वखत विश्राम पण थाय, माटे ते काळे तो आवश्यकादि क्रियाओज करवी कोइ वखत कारणविशेषे वखतनो अतिक्रम थइ जाय तो तेनो दोष नथी.

अहीं कोइ शिष्य शंका करे छे के-"जेम शुभ ध्यान मोक्षनो हेतु होवाथी सर्व काळे करवानु कह्यु छे, तेम श्रुतज्ञान पण मोक्षनो हेतु छे, माटे तेनु सर्व काळे पठनादि शामाटे न थाय ? जे मोक्षनु कारण छे त्यां काळ अथवा अकाळनी व्यवस्था शी?" आ शंकाना समाधान माटे गुरु कहे छे के-"हे शिष्य ! तारी शंका खरी छे, परंतु शुभध्यान तो सर्व धर्मक्रियामा रहेलु छे अने ते मानसिक छे, तथी शुभ ध्यानवडे कोइ पण क्रियानो बाध थतो नथी. पण उलटी सर्व क्रियाने पुष्टि मळे छे, अने श्रुतज्ञान तो पठन, गुणन विगेरेथी सिद्ध थाय छे, तेथी ते साज सवारना प्रतिक्रमणनी जेम नियत काळेज करवा योग्य छे. जो सर्व काळ श्रुतनो ज अभ्यास करे तो

अन्योन्य पुण्यक्रियानो बाध थाय, तेम थवु योग्य नथी. वळी जे मोक्षनो हेतु होय त्यां काळनो विभाग करवो योग्य नथी, एवु जे तें कर्हु ते व्यर्थ छे, केमके साधुने आहार विहार विगेरे पण मोक्षना हेतु छे, तोपण त्यां काळनो विभाग कहेलो छे. आगममां कह्युं छे के " तइयाए पोरसीए भत्तपाणं गवेसए-त्रीजी पोरसीए आतपाणीनी अवेषणा करवी." तथा—

अकाले चरसि भिक्खु, काले न पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि, संनिवेसं च गरिहसि ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे साधु! तुं अकाळे विचरे छे, योग्य काळे पडिलेहण करतो नथी तेथी आत्माने तुं कीलामणा पमाडे छे अने गामना लोकोनी निंदा करे छे." तेथी श्रुतनु पठनादिक योग्य काळेज करवु. कोइ अहंकारादिकने लीधे तेनो व्यत्यय करे, तो सागर नामना आचार्यनी जेम मोटी लज्जाने पामे.

सागराचार्यनुं दृष्टांत.

उज्जयिनी नगरीमां श्रीकालिकाचार्य नामना आचार्य उग्र विहारी हता. तेनी पासेना शिष्यो सर्वे पासत्था थइ जवाथी साधुनो आचार पाळवामां पण शिथिल थयेला हता. तेमने आचार्य हमेशां शिखामण आपता हता, पण तेओ तो कुतराना पूंछडानी जेम वक्रताने छोडता नहोता. तेथी आचार्ये खेद पामीने विचार्युं के—"आ शिष्योने सारणादि करतां मारो स्वाध्याय सीदाय छे—बराबर थइ शकतो नथी, अने तेओने मारा वाक्यथी कांइ पण गुण थतो नथी, माटे तेनो कांइ बीजो उपाय करवो जोइए."

अहीं वृद्ध वाक्यने अनुसारे एवो संबंध छे के—एक वखते सीमंधरस्वामीने इंद्रे पूछयुं के—" हे स्वामी! हालमां भरतक्षेत्रमां एवो कोइ विद्वान् छे, के जेने पूछवाथी आपे वर्णन कर्यु तेवुं निगोदनु स्वरूप यथार्थ वर्णवे? " त्यारे प्रभुए कह्युं के—" हे इंद्र! हालमां भरतक्षेत्रमां आर्य कालकसूरि छे, के जे श्रुतपाठना बळथी मेंं कह्यु तेवी ज रीते निगोदनुं स्वरूप कही शके तेवा छे. " ते सांभळीने इंद्र तेनी परीक्षा करवा माटे जराथी जीर्ण थयेलुं शरीर विकुर्वीने धीमे धीमे लाकडीने टेके चालता सूरि पासे आव्या, अने लुहारनी धमणनी जेम श्वासोश्वास लेतां तेणे गुरुने वंदना करीने पूछयुं के—"हे स्वामी! हुं वृद्ध छुं, अने वृद्धावस्थाथी पीडाउं छुं, तो मारे केटलुं आयुष्य बाकी छे? ते आप मारी हस्तरेखा

जोइने शास्त्रने आधारे कहो. मारा पर कृपा करो मारा पुत्रोए तथा स्त्रीए मने काढी मूक्यो छे. तेथी हु एकलो महा कष्टथी दिवसो निर्गमन करु छु. आप छ जीवनिकायपर दया करवामां तत्पर छो, तेथी मारापर कृपा करो." आ प्रमाणे तेना दीन वचनो सांभळीने गुरु तेनो हाथ जोतां जोतां कांइक तेनी चेष्टा तथा यथार्थ भाषण उपरथी अने कांइक श्रुतनो उपयोग आपवथी तेने सौधर्म देवलोकना इंद्र जाणीने मौन रह्या, त्यार फरीथी ते वृद्ध बोल्यो के-" हे स्वामी ! हुं जराथी पीडित छु, तेथी वधारे वखत अहीं रहेवाने अशक्त छु, माटे जलदी उत्तर आपो के हवे मारुं आयुष्य केटलु बाकी छे ? पांच वर्ष बाकी छे ? के तेथी न्यूनाधिक छे ? " गुरुए कह्यु के-" तेथी घणु अधिक छे." वृद्धे पूछ्यु के-" शु दश वर्षनु छे ? " गुरुए कह्युं-" तेथी पण घणु अधिक छे." वृद्धे कह्यु-" शु त्यारे वीश वर्ष के त्रीश वर्ष के चालीश वर्ष बाकी छे ? हे गुरु ! सत्य कहो." गुरुए कह्यु के-"वारवार शु पूछो छो ? तमारु आयुष्य अंकनी गणतरीमां आवे तेवु नथी. केमके ते अपरिमित (असंख्यात) छे. मुनिसुव्रत स्वामीना शासनमा तमे इन्द्र थया छो, वर्तमान चोवीशीना छेल्ला चार तीर्थंकरोना पांच पांच कल्याणकनो उत्सव तमे कर्यो छे, अने आवती चोवीशीना केटलाक तीर्थंकरोनी वंदना तथा पूजा तमे करशो. तमारु आयुष्य बे सागरोपममां कांइक ओछु बाकी रहेलु छे." आ प्रमाणे गुरुनां वचन सांभळीने इंद्र घणो हर्ष पाम्या. पछी ते निगोदनु स्वरूप पूछी निःशंक थया, अने श्री सीमंधरस्वामीए करेली प्रशंसा कही बतावीने तेणे कह्यु के-" हे स्वामी ! मारा सरखु कार्य बतावो." त्यारे गुरु बोल्या के-" धर्ममा आसक्त थयेला संघनु विघ्न निवारो." पछी इन्द्र पोतानी इच्छाथी पोताना आव्यानी निशानी तरिके दिव्य अने मनोहर एवं उपाश्रयनु एक द्वार बीजी दिशामा करीने तरत स्वर्गे गया.

त्यारपछी सूरिना शिष्यो के जेओ आहारने माटे नगरमा गया हता तेओ आव्या. तेमणे गुरुने पूछ्यु के-"हे स्वामी ! आ उपाश्रयनु द्वार बीजी दिशामां केम थइ गयु ? आप पण विद्यानो चमत्कार जोवामा स्पृहा राखो छो, तो पछी अमारे जेवानो तेम करवामा शो दोष ? " ते सांभळीने गुरुए इन्द्रनु आगमन विगेरे सर्व वृत्तांत यथार्थ कही आप्युं. त्यारे ते शिष्यो बोल्या के-"अमने पण इन्द्रनु दर्शन करावो." गुरुए कह्यु के-" देवेन्द्र मारा वचनने आधीन नथी, ते तो पोतानी इच्छाथी आव्या हता अने गया. ते विषे तमारे दुराग्रह करवो उचित नथी." आ प्रमाणे गुरुए

कथा छतां ते विनयरहित शिष्योए दुराग्रह मूक्यो नही, अने विनयरहितपणे आहार वगेरे करवा करावबा लाग्या. तेथी गुरु उद्वेग पामीने एक दिवस रात्रिना पाछला पहोरे सर्व शिष्योने सुता मूकीने शय्यातर श्रावकने परमार्थ समजावीने नगरी बहार नीकळी गया. अनुक्रमे विहार करता करतां ते स्वर्णभूमिए आवी पहोंच्या त्यां महा बुद्धिमान सागर नामना पोताना शिष्यना शिष्य रहेता हता. तेनी पासे आवीने इर्यापथिकी प्रतिक्रमीने तथा पृथ्वी प्रमार्जीने रह्या.सागर मुनिए तेमने कोइ वखत जोया नहोता,माटे तेने ओळख्या नहीं.अने तेथीज ते उभा थया नहीं, तेमज वंदना पण करी नहीं तेमणे सूरिने पूछ्युं के-"हे वृद्ध मुनि! तमे कया स्थानथी आवो छो?" त्यारे गांभीर्यना समुद्र समान गुरु कोपायमान थया शिवाय बोल्या के-" अवन्ती नगरीथी." पछी तेमने ज्ञानपूर्वक समग्र क्रिया करतां जोइने सागरमुनिए विचार्युं के-"खरेखर आ वृद्ध मुनि बुद्धिमान छे." पछी तेणे पोताना शिष्योने वाचना आपता बुद्धिना मदथी सूरिने कह्युं के-" हे वृद्ध! हुं श्रुतस्कंध भणावुं छुं ते तमे सांभळो."ते सांभळी गुरु तो मौनज रह्या.पछी सागरमुनि पोतानी बुद्धिनी कुशळता बतावबा माटे घणी सूक्ष्म बुद्धिवाळाथी ग्रहण थइ शके तेवी व्याख्यानो विस्तार करवा लाग्या. व्याख्याना रसमा तल्लीन थवाथी अकाळ वेळाने—अनध्यायना समयने पण जाण्यो नहीं. " अहो! अज्ञान ए मोटो शत्रु छे."

अहीं उज्जयिनी नगरीमा प्रातःकाळे पेला शिष्यो उठ्या.त्यां गुरुने जोया नहीं तेथी तेओ अत्यंत आकुळव्याकुळ थइ गया, अने सभ्रांत चित्ते वसतिना स्वामी शय्यातर श्रावक पासे जइने पूछ्युं के-"अमने मूकीने अमारा गुरु क्यां गया?" त्यारे ते श्रावके कोप करीने कह्युं के-"श्रीमान् आचार्ये तमने घणो उपदेश आप्यो, घणुं समजाव्या, प्रेरणा करी,तोपण तमे सदाचारमां प्रवर्त्या नहीं,त्यारे तमारा जेवा मर्यादी शिष्योथी गुरुनी शी अर्थसिद्धि थवानी हती? तेथी ते तमने तजीने चाल्या गया."ते सांभळीने तेओ लज्जित थइ गया अने कह्युं के-"तमे अमारापर प्रसन्न थइने अमारा गुरुए पवित्र करेली दिशा बतावो, के जेथी अमे ते तरफ जइ तेमने पामीने सनाथ थइए. अमे जेवुं कर्युं, तेवु फळ अमे पाम्या."एवी रीते ते शिष्योए घणा आग्रहपूर्वक पूछ्युं, एटले ते श्रावके गुरुना विहारनी दिशा बतावी. पछी तेओ सर्वे त्यांथी चाल्या. अनुक्रमे गुरुने शोधतां शोधतां सागरमुनि पासे आव्या अने तेमने पूछ्युं के-"पूज्य एवा आर्य कालिकाचार्य क्यां छे?" सागरमुनिए जवाब आप्यो के— 'ते तो मारा पितामह गुरु थाय, तेओ अहीं तो आव्या नथी, पण जेमने हुं

ओळखतो नथी एवा कोइ एक वृद्ध मुनि उज्जयिनी नगरीथी अहीं आवेला छे. तेने तमे जुओ, तेओ आ स्थळे छे" पछी ते शिष्यो सागरमुनिए बतावेला स्थाने गया.त्यां गुरुने जोइने दीन मुखवाळा थया, अने पोताना अपराधनी वारंवार क्षमा मागी. ते जोइ सागरमुनिए लज्जाथी नम्र मुखवाळा थइने विचार्यु के—"अहो! आ गुरुना गुरु पासे में पांडित्य कर्यु,ते योग्य कर्यु नहीं में सूर्यनी कांति पासे खद्योतना जेवुं अने आवाना वृक्षपर तोरण बांधवा जेवु कर्यु" एम विचारीने तेणे उठीने विनयपूर्वक गुरुने खमावीने गुरुना चरणकमळमां मस्तक राखी कह्यु के "हे गुरु! विश्वने पूज्य एवा आपनी में अज्ञानना वशथी आशातना करी, तेनु मने मिथ्या दुष्कृत हो."

"पछी आचार्ये ते सागरमुनिने प्रतिबोध करवा माटे एक प्यालो भरीने नदीनी रेती तथा एक चाळणी मगावी ते रेतीने गुरुए चाळणीमा नाखीने चाळी तो झीणी रेती तेमांथी नीकळी गइ,अने चाळणीमा मोटा कांकरा बाकी रह्या तेने दूर नांखी दइने पछी ते रेतीने कोइक स्थाने नाखी पछी फरीथी ते रेतीने त्यांथी लइने बीजा स्थाने नांखी.त्यांथी पण लइने त्रीजे स्थाने नाखी एवी रीते वारंवार जुदे जुदे स्थाने नांखीने लीधी तेथी माते रेती घणीज थोडी बाकी रही आ प्रमाणे रेतीनुं दृष्टांत बतावीने गुरुए सागरमुनिने कह्यु के—"हे वत्स! जेम नदीमा स्वाभाविकज घणी रेती छे,तेम तीर्थंकरोमा संपूर्ण ज्ञान रहेलु छे जेम प्यालावडे नदीमांथी थोडी रेती लीधी, तेम गणधरोए जिनेंद्रो पासेथी थोडु श्रुत ग्रहण कर्यु,अने जेम ते रेतीने जुदे जुदे स्थाने नाखवाथी अने पाछी लेवाथी नवी नवी भूमिना योगे क्षीण थवो थती घणी थोडी रही, तेम श्रुत पण गणधर थकी चालती परंपराए अनुक्रमे कालादिकना दोषथी अल्प अल्पतर बुद्धिवाळा शिष्योने विषे विस्मृति विगेरेना कारणथी क्षीण थतुं थतुं हालमां घणुज थोडुं रह्यु छे. तेमां चाळणीनो उपनय एवी रीते करवानो छे के—सूक्ष्म ज्ञान सर्व नाश पाम्यु छे,अने हालमा स्थूल ज्ञान रह्यु छे,तेथी हे वत्स! तु श्रुत सारी रीते भण्यो छे, पण श्रुतज्ञाननो पहेलो आचार तें बराबर धार्यो नथी. केमके तुं अकाळे पण स्वाध्याय करे छे. ते विषे श्री निशीथ चूर्णिमा कह्यु छे के—

सक्का चोत्ति—अणुदिए, सूरिए, मज्झण्हे, अथ्थमणे,
अड्डरत्ते, एआसु चउसु सज्झाय न करिति॥

" चार संध्या आ प्रमाणे—१ सूर्योदय पहेलां, २ मध्यान्ह समये, ३ सूर्यास्त समये अने ४ अधरात्रे. ए चार संध्या वखते स्वाध्याय न करवो " इत्यादि उपदेश गुरुना मुख थकी सांभळीने सागर आचार्य ते सबंधी मिथ्या दुष्कृत आपीने पगे लाग्या, अने पछी विशेषे करीने तेमनी वैयावृत्य करवा लाग्या.

"जे कोइ सागर आचार्यनी जेम अहंकारथी योग्य काळनो अतिक्रम करीने श्रुतादिक भणे छे, ते विद्वान् साधुनी सभामा घणे प्रकारे लज्जा तथा निंदाने पामे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य
षट्पञ्चाशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २५६ ॥

व्याख्यान २५७ मुं.

अस्वाध्याय काळे स्वाध्याय करवो नहीं ते विषे.

अस्वाध्यायकालेऽज्ञ, स्वाध्यायं कुरुते सदा ।
यतः क्रिया फलन्त्येव, ययोक्तसमयकृता ॥१॥

भावार्थ—" मूर्ख माणस हमेशा अनध्याय वखते स्वाध्याय करे छे, परंतु योग्य वखते करेली क्रियाओज फळीभूत थाय छे."

अनध्यायनो समय घणा प्रकारनो छे तेनु यथार्थ स्वरूप आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमां प्रतिक्रमण अध्ययनथी तथा प्रवचनसारोद्धारना बसें अडसठमा द्वारथी जाणी लेवु. अहीं पण तेनुं कांइक स्वरूप लखीए छीए.

ज्यारे आकाशमांथी सूक्ष्म रज पडे त्यारे जेटलो काळ पडे तेटलो अस्वाध्याय काळ जाणवो, तेमज धुअर (धुंवाड) जेटलो काळ पडे तेटलो अस्वाध्याय काळ जाणवो. तेमां विशेष एटलु के-धुअर पडतो होय तेटलो वखत मुनिए अंगोपांगनी चेष्टा कर्या विना मकानमांज बेसी रहेवु, तथा गंधर्व-नगर[1], उल्कापात, दिशाओनो

1 आकाशमां नगर जेवु देखाय ते.

ओळखतो नथी एवा कोइ एक वृद्ध मुनि उज्जयिनी नगरीथी अहीं आवेला छे. तेने तमे जुओ, तेओ आ स्थळे छे" पछी ते शिष्यो सागरमुनिए बतावेला स्थाने गया.त्यां गुरुने जोइने दीन मुखवाळा थया, अने पोताना अपराधनी वारंवार क्षमा मागी. ते जोइ सागरमुनिए लज्जाथी नम्र मुखवाळा थइने विचार्यु के-"अहो! आ गुरुना गुरु पासे मे पांडित्य कर्यु,ते योग्य कर्युं नहीं.मैं सूर्यनी कांति पासे खद्योतनुं जेवुं अने आवाना वृक्षपर तोरण बांधवा जेवुं कर्यु" एम विचारीने तेणे उठीने विनयपूर्वक गुरुने खमावीने गुरुना चरणकमळमां मस्तक राखी कह्यु के "हे गुरु! त्रिश्वने पूज्य एवा आपनी मे अज्ञानना वशथी आशातना करी, तेनु मने मिथ्या दुष्कृत हो."

पछी आचार्ये ते सागरमुनिने प्रतिबोध करवा माटे एक प्यालो भरीने नदीनी रेती तथा एक चाळणी मगावी.ते रेतीने गुरुए चाळणीमा नाखीने चाळी तो झीणी रेती तेमांथी नीकळी गइ,अने चाळणीमा मोटा कांकरा बाकी रह्या तेने दूर नाखी दइने पछी ते रेतीने कोइक स्थाने नाखी. पछी फरीथी ते रेतीने त्यांथी लइने बीजे स्थाने नाखी.त्यांथी पण लइने त्रीजे स्थाने नाखी एवी रीते वारंवार जुदे जुदे स्थाने नाखीने लीधी तेथी प्रांते रेती घणीज थोडी बाकी रही आ प्रमाणे रेतीनु दृष्टांत बतावीने गुरुए सागरमुनिने कह्यु के-"हे वत्स! जेम नदीमा स्वाभाविकज घणी रेती छे,तेम तीर्थंकरोमा संपूर्ण ज्ञान रहेलु छे जेम प्यालावडे नदीमाथी थोडी रेती लीधी, तेम गणधरोए जिनेंद्रो पासेथी थोडु श्रुत ग्रहण कर्यु,अने जेम ते रेतीने जुदे जुदे स्थाने नाखवाथी अने पाछी लेवाथी नवी नवी भूमिना योगे क्षीण थवी थती घणी थोडी रही, तेम श्रुत पण गणधर थकी चालती आचार्य परंपराए अनुक्रमे कालादिकना दोषथी अल्प अल्पतर बुद्धिवाळा शिष्योने विषे विस्मृति विगेरेना कारणथी क्षीण थतुं थतुं हालमां पणज थोडु रह्यु छे. तेमा चाळणीनो उपनय एवी रीते करवानो छे के-सूक्ष्म ज्ञान सर्व नाश पाम्यु छे,अने हालमा स्थूल ज्ञान रह्यु छे तेथी हे वत्स! तु श्रुत सारी रीते भण्यो छे, पण श्रुतज्ञाननो पहेलो आचार,तें बराबर धार्यो नथी. केमके तु अकाळे पण स्वाध्याय करे छे. ते विषे श्री निशीथ चूर्णिमा कह्युं छे के—

संझा चाति—अणुदिए सूरिए, मज्झण्हे, अच्थमणे, अद्धरत्ते, एआसु चउसु सज्झायं न कीरति॥

स्त्रीओने ऋतु आवे त्यारे त्रण दिवस सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि, पण जो प्रदरनो रोग थयो होय, तो अधिक काळ सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि. कोइ गर्भवतीने पुत्र प्रसव थयो होय तो सातदिवस सुधी अस्वाध्याय अने जो पुत्री थइ होय तो अथवा रक्त अधिक जतुं होय तो आठ दिवस सुधी अस्वाध्याय जाणवो, नवमे दिवसे कल्पे. सो हाथ सुधीमां कोइ बाळक विगेरेनो दांत पड्यो होय तो ते शोधवो, अने जो दांत जोवामां न आवे तो "दंत ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं" एम कहीने एक नवकारनो कायोत्सर्ग करवो.त्यार पछी स्वाध्याय कल्पे. दांत विना बीजा कोइ अंग अथवा उपांगनुं हाडकुं सो हाथ सुधीमां पड्युं होय तो बार वर्ष सुधी वाचनादिक स्वाध्याय कल्पे नहि[१], पण मनमां अर्थनी विचारणानो कोइ स्थाने निषेध नथी. आर्द्रा नक्षत्रथी आरंभीने स्वाति नक्षत्र सुधी विद्युत् तथा मेघगर्जना थाय तो स्वाध्यायनो निषेध नथी. भूमिकंप थयो होय तो आठ पहोर सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि. अग्निनो उपद्रव थयो होय तो ते उपद्रव रहे तेटलो वखत स्वाध्याय कल्पे नहि. चंद्रग्रहणमां उत्कृष्ट बार पहोर सुधी अने सूर्यग्रहणमां उत्कृष्ट सोळ पहोर सुधी अस्वाध्याय जाणवो, पाखीनी रात्रिए पण स्वाध्याय सूझे नहीं.

इत्यादि अस्वाध्यायनुं स्वरूप समदायने अनुसारे जाणीने स्वाध्याय करवो. केमके अयोग्य काळे वाचनादिक करवाथी मूर्खपणुं प्राप्त थाय छे. ते उपर एक दृष्टांत छे के—कोइ एक साधु संध्यावखत वीत्या पछी कालिक श्रुतनो समय अतीत थया छतां पण तेनो काळ नहि जाणवाथी तेनुं परावर्तन करता हता. ते जोइने कोइ सम्यक्दृष्टि देवताए विचार्युं के—"हुं आने समजावुं के जेथी कोइ मिथ्यादृष्टि देवता एने छळे नहि." एम विचारीने ते महीयारीनुं रूप करी माथे छाशनो भरेलो घडो मूकी ते साधुनी पासे थइने जा आव करवा लागी. अने "छाश ल्यो छाश" एम वारंवार मोटेथी बोलवा लागी. तेथी अत्यंत उद्वेग पामीने पेला साधुए कह्युं के—"अरे शुं तारे छाश वेचवानो आ वखत छे?" त्यारे महीयारी बोली के—"अहो! शुं त्यारे तमारे पण आ स्वाध्यायनो वखत छे?" ते सांभळीने साधुने विस्मय थयो, अने उपयोग दइने अकाळ जणावाथी मिथ्या दुष्कृत दीधुं पछी "अयोग्य वखते स्वाध्याय करवाथी मिथ्यादृष्टि देवताए करेलो छळ थाय छे, माटे फरीथी एम करशो नहि" एवी ते देवताए साधुने शिखामण आपी, माटे योग्य वखतेज स्वाध्याय करवो उचित छे.

१ अहिं बार वर्षनो अस्वाध्याय कह्यो छे तेनो परमार्थ बहुश्रुतगम्य छे.

दाह अने विद्युत्पात थाय त्यारे तेटला वखत उपरांत एक पहोर सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवो. अकाळे (वर्षाऋतु विना) विद्युतनो चमत्कारो थाय, अथवा अकाळे मेघनी गर्जना थाय तो बे पहोर सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवो. अषाड चोमासानु, तथा कार्तिक चोमासानु प्रतिक्रमण कर्या पछी प्रतिपदा (एकम–पडवा) सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवो. आशो तथा चैत्र शुदि पाचमना मध्यान्ह समयथी आरभीने कृष्णपक्षनी प्रतिपदा सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवो. बीजने दिवसे स्वाध्याय करवो योग्य छे. राजा अने सेनापति विगेरेनु परस्पर युद्ध थतु होय तो ते वखत अस्वाध्याय काळ जाणवो होळीना पर्वमा ज्यांसुधी रज शान्त न थाय त्यांसुधी अस्वाध्याय जाणवो गामनो राजा मरण पामे तो बीजा राजानो अभिषेक थाय नहीं, त्यांसुधी अस्वाध्याय जाणवो. उपाश्रयथी सात घर सुधीमां कोइ प्रसिद्ध माणस मृत्यु पाम्यो होय तो एक अहोरात्री[1] नो अनध्याय काळ जाणवो उपाश्रयथी सो हाथ सुधीमा कोइ अनाथ मृत्यु पाम्यो होय तो तेनु शब ज्यांसुधी लइ न जाय, त्यांसुधी अस्वाध्याय जाणवो. स्त्रीना रुदननो शब्द ज्यांसुधी सभळाय त्यांसुधी स्वाध्याय करवो नहीं. जळचर तिर्यंच पचेन्द्रिय मत्स्यविगेरे (विकलेन्द्रिय नहीं) ना रुधिर, मास के हाडका उपाश्रयथी साठ हाथ सुधीमा पड्या होय तो ते तथा कोइ पक्षीनुं इडु पडयु होय पण भाग्यु न होय तो ते काढी नाख्या पछी स्वाध्याय थइ शके, अने जो इडु फुटी गयु होय तो त्रण पोरसी सुधी स्वाध्याय कल्पे नहीं तेमा पण जो इडु फुटेलु होय अने तेमाथी रसनु बिंदु भूमि उपर पडयु होय तो ते साठ हाथनी बहार लइ जइने ते भूमि धोया पछी स्वाध्याय कल्पे. माखीना पग जेटलु पण इडाना रसनु अथवा लोहीनु बिंदु भूमिपर पडयु होय तो स्वाध्याय कल्पे नहीं. गाय विगेरेनु जरायु[2] ज्यांसुधी लागेलु होय त्यांसुधी अस्वाध्याय जाणवो, अने जरायु पड्या पछी त्रण पोरसी सुधी अस्वाध्याय जाणवो. बिलाडी विगेरेए उंदर विगेरे मार्यो होय तो एक अहोरात्री अस्वाध्याय जाणवो. तेटलो काळ नंदिसूत्र विगेरे भणवुं नहीं. एज प्रमाणे मनुष्यना संबंधमा पण जाणवु. विशेष एटलुं के–उपाश्रयथी सो हाथ सुधीमा मनुष्यना अवयवो अथवा चर्म, मांस, रुधिर, हाडकु विगेरे पड्या होय तो अस्वाध्याय जाणवो, पण जो उपाश्रय अने ते अवयव विगेरे पडेला स्थाननी वच्चे मार्ग होय तो स्वाध्याय थइ शके

१ एक रात्र ने एक दिवस ते अहोरात्री २ जरायु एटले बीयाया पछी ओर पडे छे ते

स्त्रीओने ऋतु आवे त्यारे त्रण दिवस सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि, पण जो प्रदरनो रोग थयो होय, तो अधिक काळ सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि. कोइ गर्भवतीने, पुत्र प्रसव थयो होय तो सातदिवस सुधी अस्वाध्याय अने जो, पुत्री थइ होय तो, अथवा रक्त अधिक जतुं होय तो आठ दिवस सुधी अस्वाध्याय जाणवो, नवमे दिवसे कल्पे. सो हाथ सुधीमा कोइ बाळक विगेरेनो दांत पड्यो होय तो ते शोधवो, अने जो दांत जोवामां न आवे तो "दंत ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं" एम कहीने एक नवकारनो कायोत्सर्ग करवो. त्यार पछी स्वाध्याय कल्पे दांत विना बीजा कोइ अंग अथवा उपांगनुं हाडकुं सो हाथ सुधीमां पड्युं होय तो बार वर्ष सुधी वाचनादिक स्वाध्याय कल्पे नहि[१], पण मनमा अर्थनी विचारणानो कोइ स्थाने निषेध नथी. आर्द्रा नक्षत्रथी आरभीने स्वाति नक्षत्र सुधी विद्युत् तथा मेघगर्जना थाय तो स्वाध्यायनो निषेध नथी. भूमिकंप थयो होय तो आठ पहोर सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि. अग्निनो उपद्रव थयो होय तो ते उपद्रव रहे तेटलो वखत स्वाध्याय कल्पे नहि. चंद्रग्रहणमां उत्कृष्ट बार पहोर सुधी अने सूर्यग्रहणमां उत्कृष्ट सोळ पहोर सुधी अस्वाध्याय जाणवो, पाखीनी रात्रिए पण स्वाध्याय सूझे नहीं.

इत्यादि अस्वाध्यायनु स्वरूप सप्रदायने अनुसारे जाणीने स्वाध्याय करवो. केमके अयोग्य काळे वाचनादिक करवाथी मूर्खपणुं प्राप्त थाय छे. ते उपर एक दृष्टांत छे के—कोइ एक साधु संध्यावखत वीत्या पछी कालिक श्रुतनो समय अतीत थया छता पण तेनो काळ नहि जाणवाथी तेनु परावर्तन करता हता. ते जोइने कोइ सम्यक्दृष्टि देवताए विचार्यु के—"हु आने समजावु के जेथी कोइ मिथ्यादृष्टि देवता एने छळे नहि." एम विचारीने ते महीयारीनु रूप करी माथे छाशनो भरेलो घडो मूकी ते साधुनी पासे थइने जा आव करवा लागी. अने "छाश ल्यो छाश" एम वारंवार मोटेथी बोलवा लागी. तेथी अत्यत उद्वेग पामीने पेला साधुए कह्युं के—"अरे शुं तारे छाश वेचवानो आ वखत छे?" त्यारे महीयारी बोली के—"अहो! शुं त्यारे तमारे पण आ स्वाध्यायनो वखत छे?" ते सांभळीने साधुने विस्मय थयो, अने उपयोग दइने अकाळ जणावाथी मिथ्या दुष्कृत दीधुं पछी "अयोग्य वखते स्वाध्याय करवाथी मिथ्यादृष्टि देवताए करेलो छळ थाय छे, माटे फरीथी एम करशो नहि" एवी ते देवताए साधुने शिखामण आपी, माटे योग्य वखतेज स्वाध्याय करवो उचित छे.

१ अहिं बार वर्षनो अस्वाध्याय कह्यो छे. तेनो परमार्थ बहुश्रुतगम्य छे.

यथोक्त वखते करेली क्रियाओ अवश्य फळीभूत थाय छे क्रिया बे प्रकारनी छे, एक प्रशस्त अने बीजी अप्रशस्त तेमा सिद्धान्त मार्गमा कहेली सर्व क्रियाओ प्रशस्त छे, अने खेती व्यापार विगेरे अप्रशस्त छे. चर्या–जवुं आववु अने भाषणादि सर्व क्रियाओ काळे करेलीज सफळ थाय छे, तेथीज नीतिशास्त्रमां पण अकाळचर्याने श्रेष्ठ कहेल नथी. कह्यु छे के—

अकालचर्या विषमा च गोष्टि, कुमित्रसेवा न कदापि कार्या।
पश्यांबुजे पद्मवने प्रसुप्त, धनुर्विमुक्तेन शरेण हंसम् ॥१॥

भावार्थ—"अकाळचर्या, विषम गोष्ठी अने कुमित्रनी सेवा—ए कदी पण करवां नहीं. जुओ नीचनी संगत करवाथी पद्मवनमां सुतेलो हंस धनुषथी छूटेला बाणवडे मराणो. ते दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

कोइएक वनने विषे पद्मसरोवरमां मदरक्त नामनो हंस रहेतो हतो. त्यां एक वखत कोई घुवड आव्यो, तेने हंसे पूछ्युं के—"तु कोण छे? अने आ वनमां क्यांथी आव्यो छे?" घुवड बोल्यो के—"तमारा गुण सांभळीने हुं तमारी साथे मित्राइ करवा आव्यो छु" एम कहेवाथी हंसे तेने रहेवा दीधो अनुक्रमे साथे क्रीडा करतां मित्राइ बंधाणी. परंतु हंसे मनमां विचार न कर्यो के–'कल्याणने इच्छनार पुरुषे नीचनो परिचय करवो नहीं' कह्यु छे के—

हु तुही वारु साधु जण, दुज्जण संग निवार,
हरे घडी जल झल्लरी, मथे पडे महार॰ १

'हे साधु जन! हुं तने वारुछु के तुं दुर्जननी संगनि निवार, केमके जळने घडी हरण करे छे, पण प्रहार झालरने माथे पडे छे.' वळी

नीच सरिस जो कीजे संग, चडे कलंक होय जसभंग,
हाथ अंगार ग्रहे जो कोय, क दाझे के काळो होय १

(अर्थ सुगम छे)

पछी एक दिवस घुवड हंसनी रजा लइने पोताने स्थाने गयो. ते वखत हंसने कह्यु के–"तमारे पण एक वखत मारे स्थाने आववु" पछी हंस पण एक वखत घुवडने स्थाने गयो पण त्यां तेने जोयो नहिं. घणे स्थाने तेनी शोध करतां कोइ हलना कोटरमां पठेलो दीठो. तेने हंसे कह्यु के–"हे भाइ! बहार आव, बहार आव, हु हंस

तने मळवा आव्यो छु." घुवड बोल्यो के-"हुं दिवसे बहार नीकळवा शक्तिमान नथी, माटे तु अहीं रहे. आपणे रात्रे गोष्ठी करशु." पछी रात्रे बन्ने जण मळ्या, अने कुशळ वार्ता करी. ते रात्रे हंस तेनी साथेज सुतो हवे ते वनमां ते रात्रे, एक सार्थ रात्रिवासो रह्यो हतो ते पाछली रात्रे त्यांथी चालवा तैयार थयो. ते वखते घुवडे मोटा विस्तारथी शब्द कर्यो, अने पोते नदीना कोटरमां पेसी गयो. हंसने तेमनो तेम त्यां सुतोज रहेवा दीधो. घुवडनो शब्द सांभळीने सार्थपतिने क्रोध चढ्यो, तेथी ते अपशुकननी निवृत्ति करवा माटे तेणे शब्दवेधी बाण मार्यु, ते वागवाथी हंस मृत्यु पाम्यो; माटे विषमगोष्ठि करवी नहीं वळी अकाळे विचरवु नहीं; अर्थात् अकाळचर्यानो त्याग करवो. ते उपर मार्गानुसारीना गुणोमां कह्युं छे के-

धर्मार्थस्वात्मनां श्रेयोऽनिवाञ्छन् स्थैर्यभृत्सदा ।
अदेशाकालयोश्चर्या, विचारज्ञो विवर्जयेत् ॥ १ ॥

भावार्थ-"हमेशां स्थिरताने धारण करनार अने धर्म, अर्थ तथा पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छनार विचारवाळा पुरुषे देशने अयोग्य अने काळने अयोग्य चर्यानो त्याग करवो."

वळी भाषण पण समयने योग्य करवुं. समयोचित भाषण अनेक मनुष्योना मनने सुख करनार थाय छे ते विषे दृष्टांत नीचे प्रमाणे-

श्री चांपानेर गढमां महमद बेगडो नामे वृद्ध बादशाह राज्य करतो हतो. तेनो अत्यंत मानीतो लघुक नामनो ब्राह्मण हतो. तेणे सरस्वती पासेथी वरदान मेळव्युं हतु. एक दिवस काजी, मुल्लां, आखुन, बारहजारी तथा सुबा विगेरेए बादशाहने विज्ञप्ति करी के-"हे दीनदुःखीना बादशाह! आपणा कुरानमां एवुं कह्युं छे के-" प्रातःकाळे हिंदुनुं दर्शन थाय तो दोजखमां जवु पडे, अने चालीश रोजानु फळ जाय, तेथी आ लहुआनु प्रातःकाळे दर्शन करवु योग्य नथी." ते सांभळीने बादशाहे तेओने प्रसन्न करवा माटे लहुआनु बिलकुल आवबु बंध कर्यु पछी एक दिवस बादशाहे काझी, मुल्लां, शेख, सुबा विगेरेने चार प्रश्न पूछया के-"सर्वनुं बीज शुं? सर्व रसमां श्रेष्ठ रस कयो? कृतज्ञ (करेला कामनो जाणनार) कोण? अने कृतघ्न (करेला कामनो हणनार) कोण? ए चार प्रश्ननो जवाब आपो" तेओए विचारीने तेनो जवाब आप्यो, पण बादशाहे ते कबुल कर्यो नहीं. पछी

बादशाहे लहुआने बोलावीने ते काझी विगेरेनी रुबरुमांज उपरना चार प्रश्न पूछ्या, एटले लहुआए तरतज जवाब आप्यो के–"हे स्वामी ! सर्वनुं बीज जळ छे, सर्व रसमां श्रेष्ठ रस लवण छे, कृतज्ञ कूतरो छे, अने कृतघ्न जमाइ छे कह्युं छे के–

द्रुतमानय पानीय, पानीय पंकजानने ।
पानीयेन विना सर्वं, सद्य· शुष्यति दग्धवत् ॥१॥

भावार्थ–" हे कमलाक्षि ! पीवा लायक पाणी जलदीथी लाव, केमके पाणी विना सर्व वस्तु दग्ध थयेलानी जेम तत्काल सुकाइ जाय छे."

प्राथम्यमुदधिष्वासीत्, सत्य ते लवणोदधे।
यद्रसेन विना सर्वरसो न स्वादमर्हति ॥२॥

भावार्थ–" हे लवणसमुद्र ! सर्व समुद्रोमां तारुं प्रथमपणुं छे ते योग्य छे, केमके जेना (तारा) रस विना कोइ पण रस स्वाद आपतो नथी."

अशनमात्रकृतज्ञतया गुरोर्न पिशुनोऽपि शुनो लभते तुलाम् ।
अपि बहूपकृते सखिता खले, न खलु खेलति खे लतिका यथा ॥३॥

भावार्थ–"स्वामीनुं अन्न मात्र खावाना कृतज्ञपणाथी चाडियो कूतरानी पण तुलना पामतो नथी, जेम आकाशमां लता क्रीडा करती नथी अर्थात् आधार विना रही शकती नथी, तेम बहु उपकार करेला खळ पुरुषनी साथे पण मित्रता थइ शकती नथी."

क्षणे रुष्ट क्षणे तुष्टो, नानापूजां च वांछति ।
कन्याराशिस्थितो नित्य, जामाता दशमो ग्रहः ॥४॥

भावार्थ–"जमाइ क्षणमां रोष पामे छे, क्षणमां संतोष पामे छे, अने नाना प्रकारनो सत्कार चाहे छे, माटे ते हमेशा कन्या राशिमां रहेला दशमा ग्रह समान छे."

आ प्रमाणे बराबर पोताना प्रश्नोना जवाब सामळीने काझी विगेरेनी समक्ष बादशाहे तेनी घणी प्रशंसा करी. त्यारपछी कोइएक दिवसे फरीथी काझी विगेरेए बादशाह पासे लहुआनी चाडी करी के–"हे स्वामी ! काफर एवा हिंदु लहुआनी

साथे निरंतर मंत्र (विचार) करवो योग्य नथी. आपना राज्यमां तेनी जेवा वाणीमां प्रवीण घणा माणसो छे " ते सांभळीने बादशाहे तेओने फरी चार प्रश्न पूछया के– "जगत्‌मां मोटो पुत्र कोनो? जगत्‌मां मोटा दांत कोना? जगत्‌मां मोटुं उदर कोनुं? अने जगत्‌मां मोटो डाह्यो कोण?" ते सांभळीने तेओ विचारीने बोल्या के–" हे स्वामी! जगत्‌मां बादशाहनो पुत्रज मोटो पुत्र छे, जगत्‌मां मोटा दांत अने मोटुं उदर हाथीनु छे, तथा विश्वमां आपना जेवो बीजो कोइ डाह्यो नथी." आ प्रमाणे सांभळीने बादशाहे तेओने निरस्कार करी लहुआने बोलावीने ते चारे प्रश्नो पूछया, एटले ते तरतज बोल्यो के–" हे स्वामी! विश्वमां गायना पुत्र जेवो बीजो कोइ मोटो नथी, केमके ते खेती करी आपणा वडे आखी पृथ्वीने जीवाडे छे. मोटा दांत हळना जाणवा, केमके तेना वडे पृथ्वीमां बीज ववाय छे ने उगे छे. मोटुं उदर पृथ्वीनुं जाणवुं, केमके ते सर्व वस्तुनु रक्षण करे छे, तेमज सर्वनो स्पर्श पण सहन करे छे, तथा मोटो डाह्यो ते छे के जे समयने योग्य एवु सारु भाषण करे छे" ते सांभळीने बादशाह अति प्रसन्न थयो अने लहुआने पोतानु प्रीतिपात्र कर्यो. आ दृष्टांत उपयोगी होवाथी अत्रे लख्यु छे.

आ प्रमाणे होवाथी ज्ञानाचारनु पालन करनार साधुए जिनेश्वरनी आज्ञाने अनुसरीने सर्व क्रियाओ योग्य काळेज करवी.

"श्री जिनेश्वरनी आज्ञाने अनुसारे अस्वाध्यायनुं वर्णन सांभळीने स्वाध्यायने वखतेज श्रुतनो अनुयोग आचरवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य
सप्तपञ्चाशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २५७ ॥

व्याख्यान २५८ मुं.

हवे बीजो विनयाचार वर्णवे छे

श्रुतस्याशातना त्याज्या, तद्विनय श्रुतात्मक ।
शुश्रूषादिक्रियाकाले, तत्कुर्याज्ज्ञानिनामपि ॥ १ ॥

भावार्थ-"श्रुतनी आशातना करवी नहि, कारणके तेनो विनय श्रुतस्वरूप छे, तेथी करीने शुश्रूषादिक क्रिया करवाने वखते श्रुतज्ञानवाळानो पण विनय करवो."

श्रुतना द्रव्य अने भाव एवा बे प्रकार छे तेमां पुस्तक अक्षर विगेरे द्रव्यश्रुत कहेवाय छे. पग अडाडवा तथा थुकवडे लखेलो अक्षर बगाडवो विगेरे द्रव्यश्रुतनी आशातना जाणवी, अने परमात्माए कहेला पदार्थमां पोतानी बुद्धि चलावीने तेनो अन्यथा अर्थ करवो ते भावश्रुतनी आशातना जाणवी. प्रतिक्रमण आवश्यकमां तेत्रीश आशातनाना वर्णनमां कह्युं छे के-"सुअस्स आसायणाए सुअदेवयाण आसायणाए" श्रुतनी आशातना, श्रुतना अधिष्ठायिक देवतानी आशातना विगेरे. अहीं कोइने शंका थाय के-"श्रुतदेवतानी आशातना तेज नहि अथवा तो ते श्रुतदेवता कशा कामना नथी." तेनो जवाब कहे छे के-जिनेन्द्र कहेल आगम देवताना अधिष्ठाता विनाना छेज नहि माटे श्रुतदेवता छे, अने तेथी तेनी आशातना पण छे "ते श्रुतदेवता कशा कामना नथी" एम पण शंका करवी नहि केमके श्रुतदेवतानु अवलंबन करीने प्रशस्त मनवाळा जीवोनो कर्मक्षय जोवामां आवे छे.

श्रुतमां कहेला वचननु उल्लंघन करवु ते पण भावश्रुतनी आशातना जाणवी. श्री जिनेंद्रोए श्रुतमां एवु कह्युं छे के-"मंत्रादि विद्या शासननु मोटुं कार्य होय तोज उपयोगमां लेवी, पण बीजा कोइ कारणे तेनो उपयोग करवो नहि. जे कोइ प्रमाद विगेरे कारणथी अथवा आश्चर्य बताववानी इच्छाथी स्थूलभद्र मुनिनी जेम लब्धि विद्यानो उपयोग करे छे ते श्रुतनी आशातना करे छे, अने तेम करवाथी मोटी हानि प्राप्त थाय छे ते संबंधमां स्थुलभद्रनो प्रबंध कहे छे—

पाटलिपुर नगरमां श्री श्रमणसंघ एकत्र थइने विचार करवा लाग्यो के-"हालमां महा भयंकर दुष्काळ प्रवर्त्ते छे, तेथी बुद्धिमान साधु पण अभ्यास न राखवाथी अने भणेलु न गणवाथी घणु श्रुत वीसरी गया छे, माटे हवे श्रुतनो उद्धार करवो

जोइए." एम विचारीने श्री सघे अगियार अग संबंधी अ ययन, उद्देशा विगेरे जे हता ते सर्वे मेळव्या. पछी दृष्टिवाद मेळववा माटे कांइक विचार करवा लाग्या. विचारतां नेपाल देशमां रहेला श्रुतकेवळी भद्रबाहु स्वामीने जाणीने तेमने बोलाववा माटे सघे बे मुनिओने मोकल्या. ते मुनिओ त्या जइ तेमने वादीने बोल्या के-"हे स्वामी! आपने श्री संघ त्यां आववा माटे आज्ञा करे छे "ते साभळीने सूरिए कह्युं के-"में महाप्राणायाम ध्यान आरम्भ्यु छे, ते बार वर्षे सिद्ध थाय छे तेथी हु आवी शकीश नहि. महाप्राणायाम सिद्ध थया पछी कोइ पण कार्य आवी पडे तो चौदे पूर्वो सूत्र तथा अर्थ सहित एक मुहूर्त मात्रमा गणी शकाय छे." ते साभळीने ते बन्ने साधुओए पाछा आवीने सूरिनु कहेलु वचन श्री सघने कह्यु पछी सघे बीजा बे मुनिने बोलावीने आज्ञा आपी के-"तमारे सूरि पासे जइने कहेवु के श्री सघनी आज्ञा न माने तेनो शो दंड करवो ते अमने कहो जो ते सूरि एम कहे के तेवाने संघ बहार करवो, तो तमारे उचे स्वरे सूरिने कहेवु के हे आचार्य महाराज! आप पोते ते दडने योग्य छो." पछी ते बन्ने मुनिए त्या जइने सूरिने तेज प्रमाणे कह्यु, एटले सूरि बोल्या के-"पुज्य सघे एवु न करवु पण मारापर कृपा करीने बुद्धिमान साधुओने अहीं मोकलवा, तेओने हु सात वाचना आपीश. तेमां एक वाचना आहार लइने आव्या पछी आपीश, त्रण वाचना त्रण वखतनी काळ वेळाए आपीश अने त्रण वाचना सांजनुं प्रतिक्रमण कर्या पछी आपीश. एम करवाथी सघनु काम थशे ने मारुं पण थशे." ते सांभळीने ते बन्ने मुनिए पाछा आवीने संघने ते प्रमाणे कह्युं, तेथी संघ प्रसन्न थयो अने स्थूलभद्र विगेरे पाचसो साधुने सूरि पासे मोकल्या तेमने सूरि भणाववा लाग्या. तेमा स्थूलभद्र विना बीजा सर्वे साधुओ थोडी वाचनाथी भणवामां असंतुष्ट थइने पोतपोताने स्थाने आवता रह्या. स्थूलभद्रमुनि महा बुद्धिमान हता ते एकला रह्या. तेणे आठ वर्षमा आठ पूर्वनो अभ्यास कर्यो. एकदा अल्प वाचनाथी उद्वेग पामेला जोइने सूरि बोल्या के-"हे वत्स! मारु ध्यान पूर्ण थवा आव्यु छे, त्यारपछी तने तारी इच्छा मुजब वाचना आपीश "स्थूलभद्रे पूछ्यु "हे स्वामी! हवे मारे केटलुं भणवु बाकी रह्यु छे?" गुरुए जवाब आप्यो के-"बिंदु जेटलु तुं भण्यो छे, अने समुद्र जेटलुं बाकी रह्युं छे." पछी महा प्राण यान पूर्ण थतां स्थुलभद्र बे वस्तुए न्युन एवा दश पूर्व शु री भण्या. तेवामां स्थूलभद्रनी बहेनो यक्षा विगेरे साध्वीओ, तेमने वंदना करवा माटे आवी. प्रथम सूरिने वांदीने तेओए पूछ्यु के-"हे प्रभु! स्थूलभद्र

क्यां छे?" सूरिए कह्युं के-"नाना देवकुळमा छे" एम सांभळीने साध्वीओ ते तरफ चाली, तेमने आवती जोइने स्थूलभद्रे आश्चर्य देखाडवा माटे पोतानुं रूप फेरवीने सिंहनुं रूप धारण कर्युं. ते साध्वीओ सिंहने जोइने भय पामी अने सूरि पासे आवीने ते वात कही. सूरिए उपयोगथी ते हकीकत जाणीने कह्युं के-"तमे जइने वांदो, त्यां तमारा मोटा भाइज छे, सिंह नथी." एटले ते साध्वीओ फरीथी त्यां गइ, ते वखते स्थूलभद्र पोतानेज स्वरूपे हता, तेने वंदना करी. पछी तेना भाइ श्रीयकना स्वर्गगमननुं वृत्तांत कहीने तेमज पोतानो संशय टाळीने ते साध्वीओ पोताने स्थाने गइ. पछी स्थूलभद्र वाचना लेवा माटे गुरु पासे गया, ते वखते सूरिए वाचना आपी नहि अने बोल्या के-"तुं वाचनाने अयोग्य छे" अचानक गुरुनुं आवुं वचन सांभळीने स्थूलभद्र दीक्षाना दिवसथी आरंभीने पोताना अपराध संभारवा लाग्या. पछी ते बोल्या के-"हे पूज्य गुरु! में काइ पण अपराध कर्यो जणातो नथी, पण आप कहो ते खरुं." गुरु बोल्या के-"शुं अपराध करीने कबुल करतो नथी? तेथी शुं पाप शांत थइ गयुं?" पछी स्थूलभद्र सिंहनुं रूप करवावडे करेली श्रुतनी आशातनानुं स्मरण करीने गुरुना चरणकमळमा पड्या अने बोल्या के-"फरीथी आवुं काम नहि करुं, क्षमा करो" सूरि बोल्या के-"तुं योग्य नथी." पछी स्थूलभद्र सर्व संघ पासे गया अने तेमने प्रार्थना करी गुरु पासे मोकली गुरुने मनाववा लाग्या, केमके "मोटानो कोप मोटाज शांत करी शके." सूरिए संघने कह्युं के-"जेम आ स्थूलभद्रे हमणा पोतानुं रूप विकर्व्युं तेम बीजा पण करशे, वळी हवे पछी मनुष्यो मंद सत्त्ववाळा थशे." तोपण संघे वधारे आग्रहथी स्थूलभद्रने भणाववा कह्युं त्यारे गुरुए उपयोग आप्यो, तो जाण्युं के-"बाकीना पूर्वनो माराथी अभाव नथी, माटे आ स्थूलभद्रने बाकीना पूर्वो भणावुं" एम विचारीने गुरुए "तारे बीजा कोइने बाकीना पूर्वो भणाववा नहि" एवो अभिग्रह करावीने स्थूलभद्रने वाचना आपी. तेथी ते चौद पूर्वना धारण करनारा थया.

वीरभगवानना मोक्ष पछी एकसो सित्तेर वर्षे भद्रबाहु स्वामी पण समाधिथी स्वर्गे गया. आ दृष्टांतनो उपनय हृदयमा धारण करीने श्रुतनी आशातना तजवी. ए श्रुतनो विनय कह्यो.

वळी शुश्रूषा विगेरे करवाने अवसरे ज्ञानीनो पण विनय करवो. ते विषे सूत्रमा कह्युं छे के—

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुज्जे ऊरुणा ऊरं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥ १ ॥

अक्षरार्थ—"नमस्कारादिक करवा योग्य गुरुनी बहु नजीकमां पडखे बेसवुं नहीं, सन्मुख बेसवु नहीं, पाछळ बेसवु नहीं, ढींचणे ढींचण अडकाडीने बेसवुं नहीं, तेमज शय्यामां रहीने गुरुवाक्य सांभळवु नहीं वाक्य सांभळतांज उभा थइ जवाब देवो."

विशेषार्थ—डाबे तथा जमणे पडखे बेसवु नहीं, तेम बेसवाथी गुरुनी सरखा आसने बेसवा रूप अविनय थाय सन्मुख बेसवु नहीं; तेम करवाथी वंदना करनार लोकोने गुरुनु मुख देखाय नहीं, तेथी तेमने अप्रीति थाय. तेमज गुरुनी पाछळ बेसवु नहीं, तेम करवाथी बन्नेनु मुख जोवाय नहीं, तेथी रस आवे नहीं. पोताना ढींचण साथे गुरुनो ढींचण अडकाडवो नहीं, तथा शय्यामां सूता अथवा बेठा गुरुनु वाक्य सांभळवु नहीं, पण गुरु बोले के तरतज तेमनी पासे जइने तेना चरणकमळमां नमीने 'मारा पर गुरुनी बहु कृपा छे' एम मनमां मानीने 'भगवन् ! इच्छामो अनुशिष्टिं' 'हे गुरु ! शी आज्ञा छे ?' एम पूछवुं. तेमज शिष्ये विनयगुणवडे गुरुने प्रसन्न करवा. कह्युं छे के—

अणासवा थूलवया कुसीला, मिउं पि चण्डं पकरंति सीसा ।
चित्ताणुआ लहु दक्खोववेआ, पसायए ते हु दुरासयपि ॥१॥

भावार्थ—"गुरुना वचनने नहीं माननारा, विचार्या विना बोलनारा अने खराब शीलवाळा शिष्यो कोमळ गुरुने पण प्रचंड करे छे, अने गुरुना चित्तने अनुसरनार तथा चातुर्य गुणथी युक्त एवा शिष्यो दुरासद (अति क्रोधवाळा) गुरुने पण प्रसन्न करे छे. ते उपर चंडरुद्र आचार्यनु दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

चंडरुद्र आचार्यनु दृष्टांत.

अवंति नगरीना उद्यानमां चंडरुद्र आचार्य परिवार सहित आवीने समवसर्या. ते पोताना साधुना न्यूनाधिक क्रिया भावना दोषने जोइ जोइने वारंवार कोप कर्या करता हता. तेनी प्रकृतिज क्रोधी हती. अन्यदा ते आचार्ये विचार्युं के—"आ बधानुं निवारण मारा एकलाथी थइ शक्तु नथी, तेमज अधिक रोष करवाथी मारु पोतानुं पण हित थतु नथी." एम विचारीने ते ध्यान करवा माटे एकांत स्थाने बेठा. ते अवसरे उज्जयिनी नगरीना रहेवासी कोइ शेठनो पुत्र तरतज परणेलो होवाथी हाथे

वाघेला मींढळ सहित पोताना मित्रो साथे त्या आव्यो. तेना मित्रोए साधुओने कह्यु के-"हे साधुओ! आ अमारो मित्र संसारथी विरक्त थइने तमारी पासे दीक्षा लेवा इच्छे छे, माटे तमे तेने दीक्षा आपो" ते सांभळीने ते साधुओए तेने गंध, माल्य तथा उत्तम वस्त्रथी शणगारेलो जोइ विवाहकार्यमां प्रवर्तेलो जाणीने तेना मित्रो हास्य करे छे एम धारी तेमने गुरु पासे मोकल्या. त्यां पण तेओए तेज प्रमाणे कह्युं, त्यारे गुरुए कोपथी तेओने कह्युं के-"हे भाविक श्रावको! एम होय तो राख लावो." त्यारे ते मश्कराओ राख पण लाव्या. पछी गुरुए जाते तेना माथानो लोच कर्यो. त्यारे ते शेठना पुत्रे लघुकर्मी होवाथी मनमां विचार्युं के-"अहो! में जातेज दीक्षा ग्रहण करी, तेमां गुरुनो शो दोष? इंद्रादिकने पण दुर्लभ एवुं आ चारित्र मने विना प्रयासे मळ्यु, अने आचार्ये पोतेज आप्युं, माटे हवे तेनो त्याग करवो उचित नथी." कह्यु छे के—

प्रमादसंगतेनापि, या वाक् प्रोक्ता मनस्विना ।
सा कथं दृषदुत्कीर्णाक्षरालीवान्यथा भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ-"मनस्वी पुरुषे प्रमादना वशथी पण जे वाणी कही होय ते वाणी पथ्थरमां कोतरेला अक्षरनी पंक्तिनी जेम अन्यथा (मिथ्या) केम थाय?"

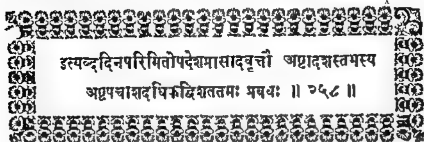
एम विचारीने तेणे मित्रोने कह्यु के-"तमे घेर जाओ, मारे हवे घरनु कांइ प्रयोजन नथी." ते सांभळीने तेना मित्रोए तेने संसारना भोगने माटे घणु समजाव्यो, पण तेणे ग्रहण करेलुं व्रत छोड्यु नहीं,तेथी विलखा थइने तेओ पोतपोताने घेर गया."

हवे ते श्रेष्ठीपुत्र नवो दीक्षित थयेलो हतो तोपण मनना परिणामे करीने तो जाणे घणा काळनो दीक्षित होय तेवो लागतो हतो.तेणे गुरुने कह्यु के-"हे भगवन्! मारा स्वजनोने खबर पडशे एटले तेओ अहीं आवशे, अने मारु चारित्र मूकावशे, तेथी आपणे बीजे कांइ जता रहीए" गुरुए कह्यु के-"हे महानुभाव! हुं रात्रे देखतो नथी, माटे तु प्रथम रस्तो जोइ आव" ते सांभळीने ते मार्ग शोधीने तरत पाछो आव्यो अने गुरुने विज्ञप्ति करी के-"गुरुजी! पधारो" एटले गुरु पण तत्काळ रात्रीने विषे तेनी साथे चाल्या. अंधकारथी व्याप्त थयेला मार्गमां उंचा नीचा प्रदेशोमां चालता पगले पगले स्खलना पामवाथी पृथ्वी पर पडता गुरु शिष्यना उपर कोप पामीने तेने आक्रोश करवा लाग्या के-"हे पापीष्ट! तें केवो रस्तो शोध्यो?" एम कहीने दांडावती तेनापर प्रहार कर्यो,तोपण ते सुशिष्य मनमां चिंतववा लाग्यो के-

"अरे ! आ गुरुमहाराज पोताना परिवारमां सुखे रहेता हता तेमां में निर्भागीए तेमने दुःखनु पात्र कर्या. केटलाक शिष्यो गुरुने जन्म पर्यंत सुखना आपनारा होय छे, अने हु तो पहेले दिवसेज गुरुनी आशातना करनारो थयो पण हवे गुरुने कोइ ठुठा विगेरेथी वधारे पीडा न थाओ."इत्यादि विचारतो ते धीरे धीरे मार्ग देखाडतो अति प्रयत्नवडे चालवा लाग्यो. वळी विचारवा लाग्यो के-" अहो ! आ गुरुनो मारापर मोटो उपकार थयो छे के जेमणे अनादि काळथी नहीं पामेलो एवो रत्नत्रयीनो मार्ग मने देखाड्यो मने घणा काळथी परिभ्रमण करनाराने परमात्माए कहेला धर्ममार्गना रहस्यमां स्थापन कर्यो. अहो ! अनादि काळथी आवी रीते मने कोइए ताडना करी नहोती, के जे ताडनाथी अनेक भवमां उपार्जन करेला कर्मो नाश पामे छे 'अहो ! ज्ञानी गुरु विना बीजो कोण आवो उपकार करे ? ' इत्यादि शुभ ध्यानमां आरूढ थइने उपशम श्रेणीवडे कर्मनां दळीयांने उपशमावीने फरीथी क्षपकश्रेणीवडे ते कर्मनां अंशोनो क्षय करी मोहराजानी सेनानो पराजय करीने मात्र एक गुरुना विनयथीज केवळज्ञान पाम्यो. जेने माटे उद्यम कर्यो ते वस्तु ते तत्काळ पाम्यो. पछी केवळज्ञानवडे मार्गने सारी रीते जोइ शकवाथी विषम मार्गने तजीने सारा मार्गे गुरुने लइ गयो अने गुरने धर्मनी प्रीतिथी प्रसन्न कर्या.

प्रातःकाळे सूरिए शिष्यना मस्तक उपर रुधिर वहेतु जोइने विचार्यु के-"अहो ! आ शिष्य नवदीक्षित छतां मन, वचन अने कायाना योगे करीने तेनी क्षमा कोइ नवीन अने अलौकिक छे, हुं चिरकाळनो दीक्षित छु छतां पण मारो प्रचंड कोप जतो नथी,तेथी ते कोपने धिक्कार छे !" एम विचारीने सूरि शिष्यप्रत्ये बोल्या के-" हे शिष्य ! में एक मोटु आश्चर्य जोयु के प्रथम तने मार्गमा पगले पगले वारंवार स्खलना पामतो में जोयो हतो, त्यारपछी प्रथम जेवोज अंधकार छतां सरल गतिथी मने जरा पण पीडा उत्पन्न कर्या विना जाणे सूर्ये मार्ग बताव्यो होय तेम तुं ठीक रीते चाल्यो ते म्होटु आश्चर्य मने लागे छे." शिष्य बोल्यो के-" देवगुरुना विनयथी श्रुतज्ञान प्राप्त थाय छे, अने श्रुतज्ञानथी बीजा ज्ञान प्राप्त थाय छे. पछी ज्ञानथी शु नथी थतु ? सर्वे थाय छे." इत्यादि अपेक्षावाळा वचनो बोलवाथी सूरि " आने अनंतुं अव्याबाध ज्ञान प्राप्त थयु जणाय छे " एम मानीने फरीथी पोताना आत्मानी निंदा करता तेना चरणकमळमां पड्या. एवी रीते चित्तमां शुभ भावना

भावतां ते आचार्य पण केवळज्ञान पाम्या. 'ए रीते सारा विनयवाळा शिष्यो उत्कट कोपवाळा गुरुने पण मोक्ष आपनारा थाय छे '


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य अष्टपंचाशदधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २५८ ॥

व्याख्यान २५९ मुं

त्रीजा ज्ञानाचार बहुमान विषे

विद्या फलप्रदावश्य, जायते बहुमानतः ।
तदाचारस्तृतीयोऽतो, विनयतोऽधिको मतः ॥ १ ॥

भावार्थ–"गुरु आदिकनु बहुमान करवाथी विद्या अवश्य फळदायक थाय छे, तेथी ते त्रीजो आचार विनयथी पण अधिक मानेलो छे."

विनय तो वंदना, नमस्कार विगेरे बाह्याचारथी पण थइ शके छे, अने बहुमान तो अंतरनी प्रीतिथीज थाय छे. ते बहुमान होय तो एकांते करीने गुरु विगेरेनी इच्छाने अनुसरवु, गुणनु ग्रहण करवु, दोषनु आच्छादन करवु, तथा अभ्युदयनुं चिंतवन करवु इत्यादि थाय छे जे श्रुतना अर्थी होय तेणे तो गुरु विगेरेनु बहुमान अवश्य करवु, ते विना घणा विनयथी पण ग्रहण करेली विद्या फळदायक थती नथी. ते विषे गौतमपृच्छामा कह्यु छे के—

विज्जा विन्नाणं वा, मिच्छा विणएण गिण्हिउं जोउ ।
अवमन्नइ आयरिअं, सा विज्जा निष्फला तस्स ॥ १ ॥

भावार्थ—" विद्या अथवा विज्ञान जो मिथ्याविनयथी[1] ग्रहण करे, अने आचार्यनी अवगणना करे तो ते विद्या तेने निष्फळ थाय छे "

१ बहारथी दखाडवा मात्र वंदन नमस्कार करे ते मिथ्या विनय, अंतरमां प्रीति न होवाथी.

अहीं विनय तथा बहुमानना चार भांगा थइ शके छे. १ विनय होय, पण बहुमान न होय. ते उपर नेमिनाथ पासे प्रातःकाळमां उठीने वहेला जनारा पालक नामना वासुदेवना पुत्रनु दृष्टांत जाणवु. २ बहुमान होय, पण विनय न होय, ते उपर सांबनुं अथवा हमणा कहेवामां आवशे एवा बे नैमित्तिकनु दृष्टात जाणवु. ३ कोइने विनय तथा बहुमान बन्ने होय ते उपर कहेवामा आवशे एवा कुमारपाळ राजानु दृष्टांत जाणवुं. ४ कोइने बेमाथी एक पण न होय ते उपर कपिला दासीनु अथवा कालसौकरिकादिकनु दृष्टांत जाणवु. प्रथम बे निमित्तियानु दृष्टात कहे छे—

कोइ गाममां कोइ एक सिद्धपुत्रना बे शिष्यो ज्योतिषशास्त्र भणता हता. तेमां एक शिष्य बहुमानपूर्वक गुरुनो विनय करतो हतो. जे कांइ गुरु कहे ते सर्व यथार्थ रीते अंगीकार करतो हतो, अने बीजा शिष्यमा ते गुण नहोतो एक दिवस ते बन्ने तृण तथा काष्ठ लेवाने वनमां गया रस्तामां तेमणे केटलांक मोटा पगला जोयां.ते जोइने एक बोल्यो के—" आगळ हाथी जाय छे. " एटले बीजाए कह्यु के—" हाथी जतो नथी पण हाथणी जाय छे, ते पण डाबी आंखे काणी छे, अने तेनापर कोइक राणी बेठेली छे, ते सधवा छे अने वळी गर्भवती छे, तेने आज काल प्रसूतिनो समय छे, तेमा पण ते पुत्र प्रसवशे. " ते सांभळीने बीजाए कह्यु के—" आवु नहीं जोयेलुं असंबद्ध केम बोले छे ? " त्यार ते बोल्यो के—" ज्ञानथी सर्व जणाय छे, ते वातनी तने आगळ चालता खात्री थशे. " पछी ते बन्ने केटलीक पृथ्वी आगळ चाल्या, तो तेज प्रमाणे सर्व जोयु तेटलामा कोइक दासी राजा पासे आवीने बोली के—"हे राजा ! राणीने पुत्र प्रसव थयो छे, तेनी वधामणी हु आपु छुं " ते सांभळीने पेला शिष्ये बीजाने कह्यु के—" आ दासीनु वचन सांभळ " बीजो बोल्यो के—" तारुं ज्ञान सत्य छे. " पछी तेओ नदीने कांठे गया. त्यां कोइ वृद्ध स्त्री जळ भरवा आवी हती, तेणे तेमने चेष्टावडे निमित्तिया जाणीने पूछ्यु के —" मारो पुत्र देशांतर गयो छे, त्यांथी क्यारे पाछो आवशे ? " एम पूछताज तेना माथापरथी घडो पडी गयो अने फुटी गयो.ते सांभळीने पेलो वगरविचारवाळो एकदम बोली उठ्यो के—"तारो पुत्र मरण पाम्यो छे. " पछी बीजो विचारवाळो बोल्यो के—" हे भाइ ! एवु बोल नहि, तेनो पुत्र घेर आव्यो छे. हे वृद्ध माता! तमे घेर जइने तमारा पुत्रने जुओ." ते सांभळीने ते वृद्ध स्त्री जलदीथी पोताने घेर गइ. त्यां पुत्र आवेलो हतो. तेने जोइने ते

अत्यंत प्रसन्न थइ पछी पुत्रनी रजा लइने बे वस्त्र तथा केटलाक रुपिया पेला सत्य बोलनारने तेणे आप्या. ते जोइ बीजाए खेद पामीने विचार्युं के-- "खरेखर गुरुए मने सारी रीते भणाव्योज नथी जो एम न हाय तो हु जाणतो नथी, अने आ क्याथी जाणे? माटे तेमा गुरुनो दोष छे" पछी तेओ गुरु पासे गया. तेमां पेलो शुद्ध शिष्य गुरुनु दर्शन थताज मस्तक नमावीने तथा हाथ जोडीने बहुमानपूर्वक आनंदना अश्रुथी नेत्र भिंजावतो गुरुना चरणकमळमा मस्तक मूकीने नम्यो, अने बीजो शिष्य ते पथ्थरना स्तंभनी जेम जरापण गात्र नमाव्या विना उभोज रह्यो. त्यारे गुरुए तेने कह्यु के--"अरे! केम पगमा पडतो नथी?" ते बोल्यो के--"आपना सरखा पण पोताना शिष्यमा ज्यारे आवु अतर राखे त्यारे कोने ठपको आपवो? ज्यारे चद्रमाथी अग्निनी वृष्टि थाय त्यारे कोने कहेवु?" ते साभळी गुरु बोल्या के--"आम कम बोले छे? में कोइपण वखत विद्या आपवामा के तेनी आम्नाय कहेवा विगेरेमा तने छेतर्यो नथी" शिष्य बोल्यो के--"जो एम छे, तो मार्गमां हाथणी विगेरेनु स्वरूप आणे मारी रीते जाण्यु अने में कम काइ जाण्यु नहि?" ते साभळीने गुरुए पेला बीजा शिष्यने पूछ्यु के--"हे वत्स! त शी रीते जाण्यु ते कहे." त्यारे ते बोल्यो के "आपना प्रसादथी में विचार करवा माड्यो के आ कोइ हाथीनी जेवा पगला तो प्रसिद्ध रीते जाणी शकाय तेम छे पण शु आ हाथीना पगला छे के हाथणीना छे?" एम विशेष विचार कर्यो तो तेणे करली लघुनीतिथी ते हाथणी छे एम में निश्चय कर्यो मार्गमा जमणी बाजुना वेलाओ हाथणीए छेदेला नहोता, तेथी डाबी आखे काणी छे एम निश्चय कर्यो. पछी "हाथणी उपर चढीने आवा परिवार सहित राजा के तेना परिवारवाळा विना बीजो कोइ जवाने योग्य नथी, तेथी जरुर राजा अथवा तेनु कोइ अंगित माणस होवु जोइए" एम धार्यु पछी तेणे कोइक ठेकाणे उपरथी उतरीने शरीरचिंता करी हती, ते जोइने "ते राणी छे" एम निश्चय कर्यो. पासेना कोइ जाळामा ते राणीना राता वस्त्रनो छेडो लागेलो जोइने धार्यु के--"ते पतिवाळी छे" अने त ज्या पेशाब करवा बेठी हती त्याथी पृथ्वीपर हाथ मूकीने उठी हती ते जोइने "गर्भवती छे" एम निश्चय कर्यो त्याथी राणीए जमणो पग प्रथम मूक्यो हतो तेथी "गर्भमा पुत्र छे" एम जाण्यु अने चाल घणी मद हती, तेथी "प्रसवकाळ नजीक छे" एम निश्चय कर्यो वळी हे स्वामी! पेली वृद्ध स्त्रीए पोताना पुत्र सबधी प्रश्न कर्यो के तरतज तेना मस्तक परथी घडो पडी गयो तेथी मे एवु विचार्यु के--" जेम आ घडो ज्याथी उत्पन्न थयो हतो त्याज मे

छी गयो माटे तेना पुत्र पण घेर उत्पन्न थयो हतो तेथी ते घेरज आव्यो हशे." आ प्रमाणे तेनी अनुपम बुद्धिथी हर्ष पामीने गुरुए त्रीजा शिष्यने कह्युं के "हे वत्स ! तें मारा प्रत्ये विविध प्रकारनो विनय कर्यो पण तेनुं बहुमान कर्युं नहीं अने-आणे सारी रीते बहुमान कर्युं अने वैनयिकी बुद्धि बहुमान सहित विनय होय तोज स्फुरायमान थाय छे, तेथी आमां मारो दोष नथी." आ प्रमाणे विनय छतां पण बहुमान अने अबहुमाननुं तारतम्य जाणवुं

हवे विनय अने बहुमान ए बन्नेथी युक्त श्री कुमारपाळ राजानुं दृष्टांत नीचे प्रमाणे छे—

श्री पाटणनगरमां कुमारपाळ राजा राज्य करता हता ते जिनेन्द्रोए कहेला आगमनी आराधना करवामां तत्पर हता, तेथी तेणे ज्ञानना एकवीश भंडार कराव्या. वळी त्रेसठ शलाका पुरुषनां चरित्रो सांभळवानी इच्छा थवाथी श्री हेमचंद्राचार्यगुरु पासे प्रार्थना करीने ३६००० श्लोक प्रमाण श्रीत्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्रनी रचना करावी. ते चरित्रने सुवर्ण तथा रुपाना अक्षरे लखावीने, पोताना महेलमां लइ जइ त्यां रात्रीजागरण करीने, प्रातःकाळे पट्टहस्ती उपर ते चरित्रना पुस्तको पधरावी तेना पर अनेक छत्र धारण करावी, सुवर्णना दंडवाळा बहोंतेर चामरथी वींजाता मोटा उत्सवपूर्वक उपाश्रये लइ गया. त्यां तेनी सुवर्ण, रत्न, पट्टकुळ विगेरेथी पूजा करीने बहोंतेर सामंत राजाओ सहित विधिपूर्वक गुरु पासे तेनुं व्याख्यान सांभळ्युं एज प्रमाणे अगियार अंग अने बार उपांग विगेरे सिद्धान्तोनी एक एक प्रत सुवर्ण विगेरेना अक्षरथी लखावी, अने गुरुना मुखथी तेनुं व्याख्यान सांभळ्युं. तथा योगशास्त्र अने वीतराग स्तवना मळीने बत्रीश प्रकाश सुवर्णना अक्षरथी हाथपोथी माटे लखावीने हमेशां मौनपणे एक वखत तेनो पाठ करवा लाग्या. ते पोथीनी दररोज देवपूजा वखते पूजा करवा लाग्या. तेमज "गुरुए करेला सर्व ग्रंथो मारे अवश्य लखाववा" एवो अभिग्रह लइने सातसो लहियाने लखवा बेसाड्या एक वखत प्रातःकाळे गुरुने तथा दरेक साधुने विधिपूर्वक वांदीने राजा लेखकशाळा जोवा गया. त्यां लहियाओने कागळना पानामां लखतां जोइने राजाए गुरुने तेनुं कारण पूछ्युं. त्यारे गुरुए कह्युं के—"हे चौलुक्य देव ! हाल ज्ञानभंडारमां ताडपत्रोनी घणी खोट छे, माटे कागळना पानामां ग्रंथो लखाय छे." ते सांभळीने राजा लज्जित थयो, अने मनमां विचारवा लाग्यो के—"अहो! नवा ग्रंथो रचवामां गुरुनी अखंड शक्ति छे, अने

मारायां ते ग्रंथो लखाववानी पण शक्ति नथी, तो पछी मारुं श्रावकपणुं शुं?" एम विचारीने ते उभो थइने बोल्यो–"हे गुरु! उपवासनुं प्रत्याख्यान आपो." ते सांभळी "आजे शेनो उपवास छे?" एम गुरुए पुछ्युं त्यारे राजाए कह्युं के–"अत्यारपछी ज्यारे ताडपत्र पूरा थाय त्यारज मारे भोजन करवुं" ते सांभळीने गुरुए कह्युं के–"श्रीताड[1]ना वृक्षो अहींथी घणा दूर छे, तो ते शीरीते जलदी मळी शकशे?" एम गुरुए तथा सामतो विगेरए बहुमान सहित घणा वार्या, तो पण तेमणे तो उपवास कर्यो. श्रीसंघे तेमनी स्तुति करी के—

> अहो जिनागमे भक्तिरहो गुरुषु गौरवम् ।
> श्रीकुमारमहीजतुरहो नि सीमसाहसम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"अहो! श्री कुमारपाळ राजानी जिनागमने विषे केवी भक्ति छे? तेमज अहो! गुरुने विषे तेनुं बहुमान पण केवुं छे? अने अहो तेनुं साहस पण केवुं नि सीम छे?"

पछी श्रीकुमारपाळ राजा पोताना महेलना उपवनमां जइने त्यां रहेला खरताड वृक्षोनी चंदन, कर्पूर विगेरथी पूजा करीने जाणे पोते मंत्रसिद्ध होय तेम बोल्यो के–

> स्वात्मनीव मते जैने, यदि मे सादरं मनः ।
> यूयं भजत सर्वेऽपि, श्रीताद्रुमतां तदा ॥ १ ॥
> कथयित्वेति गांगेयमयं ग्रैवेयकं नृपः ।
> कस्याप्येकस्य तालस्य, स्कन्धदेशे न्यवीविशत् ॥ २ ॥
> तस्थौ च सौधमागत्य धर्मध्यानपरो नृपः ।
> श्रीताद्रुमतां ताश्च निन्ये शासनदेवता ॥ ३ ॥

भावार्थ—"हे खरताडना वृक्षो! जो मारुं मन पोताना आत्मानी जेम जैन मतमां आदरवाळुं होय, तो तमे श्रीताडना वृक्षो थइ जाओ?" एम कहीने राजाए कोइ एक खरताड वृक्षना स्कंध प्रदेश उपर पोतानो सुवर्णनो हार मूक्यो. २

[1] ताडना वृक्ष बे प्रकारनां होय छे. श्रीताड ने खरताड. तेमां श्रीताडना पत्रो पुस्तक लखवाना उपयोगमां आवेछ

पछी ए प्रमाणे करीने राजा महेलमां जइ धर्मध्यानमां तत्पर थइने रह्यो, एटले शासनदेवताए ते खरताडनां वृक्षोने श्रीताडनां वृक्षो बनावी दीधां. " ३.

" प्रातःकाले उपवनना रक्षकोए आवीने राजाने ते वृत्तांत निवेदन कर्युं. एटले राजाए पण तेओने इनाम आपीने आनंद पमाड्यो. पछी तेनां पत्रो लइने गुरु पासे मूकी वंदना करी. गुरुए " आ क्यांथी ? " एम पूछ्युं, एटले राजाए विनयथी सर्व सभासदोने चमत्कार पमाडनार ते वृत्तांत निवेदन कर्युं. पछी हेमचंद्राचार्य कर्णने अमृत समान ते वृत्तांत सांभळीने राजा अने सभासदो सहित ते उपवनमां गया. त्यां राजाना कहेवा प्रमाणे पूर्वे नहीं सांभळेल तेवुं नजरे जोयुं. ते वखते ब्राह्मणो तथा देवबोधी (बौधाचार्य) विगेरे नगरना लोको पण खरताडनां वृक्षोने श्रीताडनां वृक्षो थयेलां जोइ विस्मय तथा आश्चर्य पाम्या. ते वखते श्री हेमाचार्य जैनमतनी प्रशंसा करवा माटे आ प्रमाणे बोल्या के—

अस्त्येवातिशयो महान् भुवनविद्धर्मस्य धर्मान्तरा-
द्यच्छक्त्यात्र युगेऽपि तारूतरवः श्रीतारूतामागताः ।
श्रीखंडस्य न सौरभं यदि भवेदन्यद्भुतः पुष्कलं,
तद्योगेन तदा कथं सुरभितां दुर्गन्धयः प्राप्नुयुः ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्वज्ञकथित जैनधर्मनो बीजा धर्म करतां महान् अतिशय विश्वमां प्रसिद्ध छे, के जेनी शक्तिथी आवा कलियुगमां पण खरताडनां वृक्षो श्रीताडनां वृक्षो थइ गयां, परंतु ते योग्य छे, कारण के बीजा वृक्षो करतां श्रीखंड वृक्षनो सुगंध अधिक न होय तो ते श्रीखंडना संबंधथी बीजा दुर्गंधवाळा वृक्षो पण सुगंधपणाने केम पामे ? "

आ प्रमाणे सूरिए जिनधर्मनी प्रशंसा करीने पछी राजाने कह्युं के—" हे राजन् ! आ युगमां जो तमारी जेवा राजा न होय, तो जिनेंद्रना आगमनो विस्तार शी रीते थाय ? निष्कारण शुद्ध एवी श्रुतनी भक्ति तथा तेनुं बहुमान ते अहीं आज तमने फलप्राप्ति रूप थयुं." आ प्रमाणे गुरुए करेली पोतानी प्रशंसाने नम्र मुखथी सांभळीने अंतःकरणनी भक्तिथी अनेक प्रकारे ज्ञान तथा ज्ञानीनुं बहुमान करी एकत्र उपवासथी शासनदेवताए जेनो महिमा कर्यो छे, अने तेथी विशेष अभ्युदयपूर्वक जेनो प्रताप, प्रभाव अने वैभव विस्तार पाम्यो छे एवा ते उत्तम श्रावक पोताना महेलमां

जइने मोटा उत्सवपूर्वक पारणु कर्युं पछी ते उपवनमा उत्पन्न थयेलां विशाळ अने कोमळ अनेक ताडपत्रो उपर लहियाओए गुरुना करेला अनेक ग्रंथो लख्या '

" ए प्रमाणे ज्ञान तथा ज्ञानीने विषे हर्षथी बहुमानने धारण करता कुमारपाळ राजा लोकोत्तर एवु शुद्ध श्रावकपणु पाम्या. "

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य नवपंचाशदधिकद्विशततम: प्रबंधः ॥ २५९ ॥

व्याख्यान २६० मुं.

उपधान वहन नामना चोथा आचार विषे.

उपधानतपस्तप्त्वा, आवश्यकं पठेद् गृही ।
योगैश्चागमान् साधुरित्याचारश्चतुर्थक ॥ १ ॥

भावार्थ–" गृहस्थी (श्रावक) उपधान तप तपीने आवश्यक सूत्र भणे अने साधु योगवहन करीने सिद्धांत भणे ए चोथो ज्ञानाचार छे "

श्रुत भणवानी इच्छावाळा गृहस्थे उपधानतप करीने पछी भणवुं. अहीं " उपधान " शब्दनो अर्थ करे छे के " उप " एटले समीपे " धीयते " एटले धारण कराय, अर्थात् जे तपवडे ज्ञानने धारण कराय ते " उपधान. "

साधुने आवश्यकादि श्रुत भणवा माटे आगाढ अने अनागाढ एम बे प्रकारना योग सिद्धांतथी अविरोधीपणे पोतपोतानी सामाचारीने अनुसारे जाणवा. श्रावकोने पंचपरमेष्ठि नवस्कार विगेरे सूत्रना आराधन माटे श्रीमहानिशीथादि सूत्रमा कहेला छे उपधान प्रसिद्ध छे.जेम साधुने योगवहन कर्या विना सिद्धांतनु अध्ययन सूझतुं नथी, तेम उपधान तप कर्या विना श्रावकोने पण नमस्कारादिक सूत्र भणवा गणवानु सूझे नहीं. ते विषे श्री महानिशीथ सूत्रमा कह्यु छे के–" अकाळ, अविनय, अबहुमान अने अनुपधान विगेरे ज्ञान संबंधी आठ प्रकारना अनाचार मध्ये उपधाननु

वहन न करवारूप अनाचार मोटा दोषवाळो छे. जेओ उपधानवहन तथा योगविधिने मानता नथी, तेओने पूर्वाचार्यो सूत्रनां वाक्यो बतावे छे.

श्री उत्तराध्यनना चोत्रीशमा अध्ययनमां तथा श्री समवायांग सूत्रमां ३२मा समवायमां तथा योगसग्रहमां त्रीजा योगमा ए विषे स्पष्ट लेख छे. इच्छकोए त्यांथी जोइ लेवो.

अहीं कोइ एवी शका करे के-"योग एटले मन, वचन अने कायाना जे योग छे ते अहीं जाणवा " तेनो उत्तर कहे छे के- जो 'योग' शब्दनो ए प्रमाणे मूळ अर्थ करीए तो पछी 'वहन' शब्दनो शु अर्थ करवो ? माटे योग तथा वहन ए बेने शब्दनो समानाधिकरण अर्थ करवोज योग्य छे. श्री स्थानांग सूत्रना त्रीजा ठाणामां कह्यु छे के-"साधु त्रण स्थानकथी सपन्न थवावडे अनादि अनत चार गतिरूप संसारकातारनु उल्लघन करे छे. ते आ प्रमाणे-१ नियाणु नहीं करवाथी, २ दृष्टि[1] संपन्नपणाथी अने ३ योगवहन करवाथी " वळी तेना दशमा ठाणामां कह्यु छे के-"जीवो दश स्थानकवडे भविष्यमा शुभ तथा भद्रक परिणाम पामे ते आ प्रमाणे-१ नियाणु नहीं करवाथी, २ दृष्टिसंपन्नपणाथी, ३ योगवहन करवाथी, ४ क्षमा गुण धारण करवाथी, इत्यादि.

वळी सर्व योगोद्वहन विधिना रहस्यभूत त्रीजा अनुयोगद्वारमां कह्यु छे के- मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यव अने केवळ ए पांच प्रकारना ज्ञान छे, तेमा चार ज्ञान स्थापनाए स्थापवा योग्य छे. ते चार ज्ञानना उद्देश, समुद्देश अने अनुज्ञा नथी अने श्रुतज्ञानना उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञा तथा अनुयोग छे इत्यादि. तथा योगविधि भगवती सूत्रना छेल्ला भागमां कहेलो छे. तेमज नदीसूत्रमा श्रुतना उद्देश अने समुद्देशना काळ कहेला छे. श्री आचारागमां कह्यु छे के-"अग्यार अग पैकी पहेला अंगमां बे श्रुतस्कंध छे, पचीश अध्ययन छे, अने पचास उद्देश काळ छे. विगेरे." अहीं काळ शब्दे करीने काळग्रहणनो विधि जाणवो, केमके उत्तराध्ययनना छवीशमां अध्ययनमां कह्युं छे के-"चार काळग्रहण छे, ते योगविधिमाज योग्य छे."

अहीं कोइ श्रावकोने उपधानविधिनो तथा साधुओने योगविधिनो निषेध करीने "सर्वने श्रुतनो अभ्यास सर्वदा करवो " एम उपदेश करे छे ते योग्य नथी; केमके तेथी तीर्थंकरनी आशातना थाय छे. वळी श्रावकोने आचारांग विगेरे सूत्रनुं भणवु

१ सम्यग् दृष्टिपणुं.

ागमा निषिद्ध करेलु छे. ते विषे सातमा अगमां कह्युं छे के-"कामदेव नामनो श्रावक श्री महावीर भगवानना समवसरणने विषे गयो, ते वखते श्री वीरे सभा समक्ष तेने रात्रीमा थयेला त्रण उपसर्ग कही बताव्या. पछी श्रमण भगवान महावीरे घणा साधु अने साध्वीओने संबोधन करीने कह्यु के-" हे आर्यो ! ज्यारे श्रमणोपासक (श्रावक) गृहस्थी घरमां रह्या छतां पण देव, मनुष्य अने तिर्यचना करेला उपसर्गो सम्यक् प्रकारे सहन कर छे, तो पछी द्वादशागीनो अभ्यास करनारा एवा श्रमण निग्रंथे तो देव,मनुष्य अने तिर्यचना करेला उपसर्गोने सम्यक् प्रकारे सहन करवाज जोइए." अहीं सूत्रना आलावामां साधुओनेज द्वादशांगीना धारण करनार कह्या छे, पण श्रावकोने कह्या नथी. तथा पाचमा अगमा कह्यु छे के-" त्या तुगीया नामनी नगरीमा घणा श्रावको वसे छे.तेओ ऋद्धिवाळा छे,यावत् कोइथी पराभव नहीं पामे तेवा, जीव अजीवादि नव तत्त्वने जाणनारा, निग्रथप्रवचन जे जैनसिद्धात तेमां निःशक, (श्रुतना) अर्थने पामेला अने अर्थना ग्रहण करनारा, (भोजनसमये) घरना द्वार उघाडा राखनारा तथा परघरमा प्रवेश नहीं करनारा छे." इत्यादि. आ प्रमाणे श्रावकनु वर्णन श्री उपासगदशाग,उववाइ तथा स्थानाग विगेरथी पण जाणी लेवु. परतु ए सर्व ठेकाणे श्रावकने " लद्धट्ठा "-(श्रुतना अर्थने पामेला) एवुं विशेषण कह्यु छे, पण कोइ सूत्रमा " लद्धसुत्ता"-(सूत्रने पामेला) एवु कह्यु नथी वळी सर्वत्र सिद्धातोने 'निग्रथप्रवचन एटले 'मुनि सबधी शास्त्र' एम कह्यु छे, पण श्रावक संबधी कह्यु नथी वळी श्रावकोने करवाना त्रण प्रकारना मनोरथ कह्या छे तेमा श्रावकने सूत्र भणवानो मनोरथ पण थतो कह्यो नथी. ते विषे श्रीस्थानांग सूत्रमां त्रीजा ठाणामा कह्यु छे के-साधु त्रण प्रकारे महा निर्जरा करीने भवनो अत लावे. तेमा एवा विचार करे के- १ क्यारे हु थोडु अथवा घणु श्रुत भणीश ? २ क्यारे हुं एकलविहार प्रतिमाने धारण करीने विहार करीश? अने ३ क्यारे हुं अंतसमयने योग्य सलेखना आदरीश ? ' श्रावक त्रण प्रकारे महा निर्जरा करीने भवनो छेद लावे तेमा एवा विचार करे के- १ क्यार हुं थोडो अथवा घणो परिग्रह छोडी दइश ? २ क्यार हु लोच करीने आगार (घर) छोडीने अणगार (साधु) थइश ? अने ३ क्यार हु फरीने मरण न करवु पडे तेवी सलेखना आदरीने शुभ ध्यान ध्यातो सतो, भातपाणीना प्रत्याख्यान करीने, मरणने अणइच्छतो सतो पादपोपगम अणसण धारण करीने विचरीश ?" आ प्रमाणे मन, वचन अने कायाए करीने सदा जाग्रत

रहेतो श्रावक महा निर्जरा करे,अने भवनो छेडो लावे " श्री सुयगडांग सूत्रना नव-मा अध्ययनमां कयु छे के—

गेहे दीवमपासंता, पुरीसादाणिश्रा नरा ।
ते धीरा बंधणुमुक्का, नावकंखति जीविअं ॥ १ ॥

भावार्थ—गृहस्थावासने विषे दीवो एटले भावश्रुतज्ञान तेने नहीं जोनारा पुरुषने विषे आदेय नामकर्मवाळा धीर पुरुषो संसारना बंधनथी नहीं मुकाया मना संयमरहित जीवितने इच्छता नथी, अर्थात् श्रुतज्ञानना अर्थी संयमनेज ग्रहण करे छे.

वळी योगने वहन करेला साधु विना बीजा कोइ साधु (योग वह्या विना) श्रुतनो अभ्यास करे, तो तेमने तीर्थंकरअदत्तनो दोष लागे छे. ते विषे श्री प्रश्नव्याकरण सूत्रमां कह्युं छे के-"ते सर्व तीर्थंकरनु सुभाषित दश प्रकारनु छे. ते १ चौद पूर्वीओए प्रगटपणे जाण्यु, २ महा मुनिओने आप्युं,अने ३ देवेन्द्रने तथा नरेन्द्रने तेनो अर्थ समजाव्यो.इत्यादि " आ पाठमां प्रभुए साधुओने श्रुत आप्यु,अने सर्व देवताओ तथा मनुष्योने तेनो अर्थ कह्यो एम प्रगट रीते कयु छे तेथी श्रावकोने सूत्र भणवानो अधिकार नथी एम सिद्ध थाय छे तथा जे श्रुत भणवानी इच्छा करे छे तेणे प्रथम व्याकरणमां कहेला भेदने जाणवा जोइए. ते विषे प्रश्नव्याकरणमां " केवी रीते सत्य बोलवु ?" एवो प्रश्न करीने तेना जवाबमां " द्रव्यथी सत्य बोलवु,पर्याये करीने सत्य बोलवु." इत्यादि कहेला पाठमां आगळ एवु छे के-"नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात, तद्धित, समास, सन्धि, पद, हेतु, यौगिक, उणादि, क्रियाविधान, धातु, स्वर, विभक्ति अने वर्ण—ए सर्व भेदने जे जाणे तेनेज सत्य वक्ता जाणवो, बीजाने नहीं " वळी जे विगय खावामां आसक्त होय ते श्रुत भणवामां अयोग्य छे (अधिकारी नथी). ते विषे श्री स्थानांग सूत्रमां कह्युं छे के-" त्रण जणा वाचनाने अयोग्य छे १ विनय रहित,२ विगय वापरवामा आसक्त अने ३ क्रोधयुक्त चित्तवाळा,तथा त्रण जण वाचनाने योग्य छे.१ विनयी,२विगयमां अनासक्त अने ३ क्रोधनो त्याग कर्यो छे जेणे एवा, तथा अठावीश अस्वाध्याय काळ कहेला छे तेमां साधु साध्वीने श्रुत भणवानो निषेध कह्यो छे, ते ठेकाणे श्रावकनु ग्रहण कर्यु नथी. ते विषे श्री स्थानांग सूत्रमा कह्यु छे के-"साधु साध्वीने चार महा पडवाने दि-

१ भरवा न वदि १ समजवी

वसे स्वाध्याय करवो कल्पे नहीं तेमा १ आषाढ मासनो,पडवो,२कार्तिक मासनो पड वो, ३ फाल्गुन मासनो पडवो, ४ आसो मासनो पडवो, तथा चार संध्यासमये स्वाध्याय करवो कल्पे नहीं,तेमा १ प्रभातकाळे, २ सायंकाळे,३ मध्यान्ह समये अने ४ मध्य रात्रिए, तथा दश प्रकारनी अंतरिक्ष असज्झाय कही छे अने दश प्रकारनी औदारिक असज्झाय कही छे एम सर्व मळीने २८ प्रकारनी असज्झाय कही छे इत्यादि सर्व जाणीने साधुओनेज अस्वाध्यायमां श्रुत भणवु नहीं एम कह्यु छे. पण त्या श्रावकनु ग्रहण कर्यु नथी. वळी श्रीनिशीथसूत्रमा श्रावकोने वाचना आपनार साधुने माटे प्रायश्चित्त कहेलु छे. ते आ प्रमाणे-" जे साधु अन्य तीर्थीने अथवा गृहस्थ श्रावकने वाचना आपे तेने प्रायश्चित्त लागे छे. "

अहीं कोइ शका करे के-" जो योगवहन करीने पछी सूत्र भणे, तो घणो काळ व्यतीत थाय अने धना नामना अणगारे थोडा समयमाज अगियार अगनो अभ्यास कर्यो एम कहेलु छे, तेथी ' योगवहन करीनेज श्रुताभ्यास करवो', ए पाठ कल्पित भासे छे " तेनो उत्तर गुरु आपे छे के-" हे सिद्धान्तना परमार्थने नहीं जाणनारा! श्री जिनेश्वरे सिद्धान्तमा पाच प्रकारना व्यवहार कहेला छे. तेमांथी जे काळे जे व्यवहार प्रवर्ततो होय ते काळे तेज व्यवहार प्रमाणे वर्तवु, नहीं तो जिनेश्वरनी आज्ञानो भग थाय, तेथी ते धना मुनि विगेरे आगम व्यवहारी हता तेमनी तुलना वर्तमान समयमा करवी योग्य नथी, कयके हालना समयमा श्रुत केवळी विगेरनो अभाव होवाथी जित व्यवहारज मुख्य छे जुओ श्री नेमिनाथ भगवाने गजसुकुमालने दीक्षा आपी तेज दिवसे एकलविहार प्रतिमा धारण करवानी आज्ञा लाभ देखीने आपी हती पण ते दाखलो बधे न लेवाय माटे " अनुक्रमे क्रिया करवाथीज गुण वधे छे " एम विचारीने अन्यथा युक्तिओ करवी योग्य नथी

वळी बीजी रीते कोइ शका करे के-" सूत्रमा श्रावकोने ' सुअपरिग्गहिआ' एटले 'श्रुतने ग्रहण करनारा' एम कह्यु छे, माटे श्रावकने श्रुतनो अभ्यास करवो योग्य छे " तेना उत्तरमा गुरु कहे छे के-" आ पाठमा श्रुत एटले छ आवश्यक रूप सूत्र जाणवु ते पण उपधान वहन करवापूर्वक भणवा योग्य छे केमके ए पाठ नंदिसूत्रनो छे तेमा ' सुअपरिग्गहिआ " ए पाठ कह्या पछी तरतज " तवोवहाणाई " (तप उपधाने करीने) ए पाठ कह्यो छे " वळी ते पर फरी शंका करे छे के-" तो आवश्यक सूत्र भणवानु पण केम निषिद्ध कर्यु नहीं? " ते पर

गुरु कहे छे के-ते विषे अनुयोग द्वारमां कह्यु छे के—

समणेण सावएण वाऽवस्सकायव्वं हवइ जम्हा ।
अतो अहनिसिस्सय, तम्हा आवस्सयं नाम ॥ १ ॥

भावार्थ—साधुने तथा श्रावकने रात्री संबधी अने दिवस संबधी अवश्य करवा लायक छे, तेथी तेनुं नाम "आवश्यक" छे.

आ वचनथी आवश्यक सूत्र अवश्य विधि युक्त वाचवा भणवा योग्य छे, परंतु कारण होय तो छजीवनिका अध्ययन भणवामां पण दोष नथी, एवुं चूर्णिमां कह्युं छे

अथवा "जे के इ आ नियंत्रणाने न इच्छे अने विनय तथा उपधान वहन कर्या विना नवकार विगेरे श्रुतज्ञान भणे, भणावे अथवा भणताने अनुमोदन करे तेने प्रियधर्मी समजवो नहीं अने तेणे गुरुना, अतीत अनागत अने वर्तमान काळना सर्व तीर्थंकरोनी अने श्रुतनी आशातना करी छे एम समजवुं. तथा ते अनंतकाळ पर्यंत संसारमां परिभ्रमण करे अने अनेक प्रकारनी नियंत्रणाने चिरकाळ सहन करे एम जाणवुं." इत्यादि श्रीमहानिशीथ सूत्रना आलावाथी सर्वत्र उपधाननो विधि जाणवो.

वर्तमान समयमां तो द्रव्य, क्षेत्र अने कालादिकनी अपेक्षाए लाभालाभनो विचार करीने उपधान तप कर्या विनाज आवश्यक सूत्र भणवानी आचरणा चलावेली देखाय छे, परंतु ए आचरणा जिनेश्वरनी आज्ञा बराबरज छे, केमके ते विषे श्री चैत्यवंदन भाष्यमां कह्यु छे के—

असढाइएणवज्ज गीअत्थ अवारिअंति मज्झत्था ।
आयरणावि हु आणत्ति, वयणउं सुबहुमन्नति ॥ १ ॥

भावार्थ—अशठ एटले पंडित पुरुषोए आदरेली, अनवद्य—पापरहित अने गीतार्थोए नहीं वारेली एवी मध्यस्थ आचरणा पण आणा—आज्ञाज छे, कारणके ते वचनने अत्यंत बहुमान आपनारा छे.

परंतु जेणे उपधान वह्या [illegible] अभ्यास कर्यो होय तेणे अवश्य पोतानी शक्ति [illegible] उपधान वहवा जोइए. कदाच गुरुनो

योग न मळे तो दश श्रावके स्थापनाचार्यनी समीपे उपधाननो सर्व विधि करवो, पण तेमां आळस विगेरे करवु नहीं " एवु हीरप्रश्नमां कहेलु छे. परन्तु कामकाजमां अत्यंत व्यग्र रहेवाथी अथवा प्रमाद विगेरेथी जेओ उपधान वहन करता नथी, तेओनो नवकार गणवो, देववंदन करवु, इर्यावही पडिकमवा, तथा प्रतिक्रमण करवुं विगेरे आखा जन्ममां कदापि पण शुद्ध (निर्दोष) थता नथी, अने भवांतरमा पण तेओने ते क्रियानो लाभ मळवो असंभवित लागे छे, तेथी क्रियानी शुद्धने इच्छनारा श्रावकोए उपधान अवश्य वहेवा, जेथी सर्वत्र सुखनी प्राप्ति थाय

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तम्भस्य षष्ठ्यधिकद्विशततम. प्रबंध. ॥ २६० ॥

व्याख्यान २६१ मु

योगना बहुमान विषे.

योगक्रिया विना साधु, सूत्र पठेन्न पाठयेत्।
दुष्कर्माणि विलीयन्ते, श्रुतदेवी वरदा सदा ॥ १ ॥

भावार्थ-"योग वहन कर्या विना साधुए सूत्र भणवु के भणाववु नहीं, केमके योग वहन करवाथी दुष्कर्मनो नाश थाय छे, अने शासनदेवता हमेशा वरदान आपनार थाय छे."

आ हकीकत उपर मासतुस मुनिनु दृष्टांत कहे छे

पाटलीपुरमा बे भाइओ वेपारी वसता हता. तेओ एकदा गुरु पासे धर्मोपदेश सांभळवा गया त्यां "धम्मो मगलमुक्किट्ठ" इत्यादि देशना सांभळीने वैराग्य थवाथी चारित्र ग्रहण कर्यु. तेमाथी एक भाइ क्षयोपशमना वशथी बहुश्रुत थया, तेने गुरुए योग्य जाणीने सूरिपद आप्यु, तेथी ते पांचसो साधुओना स्वामी थया. सर्व साधुओने ते वाचना आपता हता, ते साधुओ सदेह पडे त्यारे वारवार आवी आवीने

प्रश्नो करता, तेथी रात्रे पण सूरिने निद्रानो अवकाश मळतो नहीं. आम थवाथी ज्ञानावरणीय कर्मना उदयने योगे तेने विचार थयो के–"शास्त्रना पार पामेला एवा मने धिक्कार छे, के जेथी हुं एक क्षण पण सुख पामतो नथी, अने मारा भाइने धन्य छे के जेथी ते निश्चिंत सुइ रहे छे." इत्यादि विचार करीने "मूर्खत्वं हि सखे ममापि रुचितं०" ए श्लोकनु स्मरण करीने "हवे हुं आ क्लेशने तजुं" एम मनमां विचार कर्या करता हता. अन्यदा साधुओ आहार ग्रहण करवा विगेरे कार्य माटे बहार गया, त्यारे सूरिए विचार्युं के–"अहो ! घणा दिवसे आजे मने अवकाश मळ्यो, माटे अहींथी नीकळीने मारु मनोवांछित सिद्ध करु." एम विचारीने सूरि नगरमांथी नीकळीने बहार चाल्या नगर बहार जतां तेणे कौमुदीना महोत्सवमां एक स्तंभ (थांभलो) जोयो. ते स्तंभने विविध आभूषणोथी शणगार्यो हतो, अने तेनी फरतां वेसीने घणा माणसो संगीत करता हता पछी महोत्सव समाप्त थयो एटले तेज स्तंभने शोभा रहित तथा कागडा विगेरे पक्षिओथी वींटायेलो जोयो. ते जोइने सूरिए विचार कर्यो के–"आ स्तंभने ज्यारे माणसोए शणगार्यो हतो, अने सर्व तेनी फरतां वींटाइ वळ्या हता, त्यारे तेनी अत्यंत शोभा हती, पण अत्यारे ते कांइज शोभतो नथी, माटे खरेखर परिवारयुक्तनीज शोभा होय छे, एकलानी शोभा होती नथी, तो परिवारथी अने जैन धर्मथी भ्रष्ट थइ स्वेच्छाए विचरवाने इच्छनार एवा मने धिक्कार छे."इत्यादि विचार करीने ते सूरि पोताना उपाश्रये पाछा आव्या, अने पोताना मनथीज तेनी आलोचना (प्रायश्चित्त) लीधी. तो पण दुष्ट ध्यान करवाथी तेणे ज्ञानावरणीय कर्म बांध्युं हतुं ते निर्मूळ थयुं नहीं. पछी तेणे निर्मळ चारित्र पाळ्युं, अने आयुष्यने अंते अनशन करी मृत्यु पामीने स्वर्गे गया.

स्वर्गथी च्यवीने ते आभीर (रबारी)ना पुत्र थया. अनुक्रमे ते आभीरपुत्र युवावस्था पाम्यो, एटले तेना बापे तेने एक कन्या परणावी. तेने एक पुत्री थइ. ते स्वरूपे अत्यंत सौन्दर्यवान थइ. एकदा घणा आभीरो घीना गाडां भरीने बीजे गाम वेचवा चाल्या. ते वखते आ रबारी पण घीनुं गाडु भरीने पोतानी पुत्रीने गाडु हांकवा वेसाडी तेओनी साथे चाल्यो. मार्गे चालता बीजा गाडीवानो आ कन्या जोइने मोह पाम्या, तेथी तेमनां मन व्यग्र थवाथी तेओ आडे मार्गे गाडां हांकवा लाग्या, एटले तेमनां गाडां भांगी गया ते वृत्तांत जाणीने पेली कन्याना बापे विचार कर्यो के– "आ संसारनी प्रवृत्तिने धिक्कार छे ! सर्व जीवो आवा असार अने मळ, मूत्र तथा

पुरीषना पात्र रूप स्त्रीना शरीरने विषे कामांध थइने पोताना हितसाधनमां पण निरपेक्ष थइ मोह पामे छे ” आ प्रमाणे अशुच्यादि भावना भावतां तेने वैराग्य उत्पन्न थयो. पछी ग्रामान्तरमां थी वेचीने ते पोताने घेर आव्यो. त्यां पोतानी पुत्रीने योग्य स्थाने परणावीने तेणे सद्गुरु समीपे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे आवश्यक विगेरेना योग वहन करीने उत्तराध्ययनना योग वहन करता तेणे त्रण अध्ययन पूर्ण कर्यां. पछी पूर्वसंचित ज्ञानावरणीय कर्मनो उदय थवाथी तेने घणो प्रयास कर्या छतां पण श्रीउत्तराध्ययनना चोथा असख्येय अध्ययननो एकअक्षर पण आवड्यो नहीं. तेथी तेणे गुरुने कह्यु के–“आ आवडतु नथी ” त्यारे गुरुए कह्यु के–“ हे मुनि ! तमे आंबेलनो तप करो, अने “ मा रुस मा तुस–रोष न करवो, तोष न करवो ” ए रीते रागद्वेषनो निग्रह करवाना रहस्यवालु पद गोख्या करो. ” ते वात कबुल करीने ‘ मारे बीजो पाठ लेवाथी सर्युं ’ एम मानी ते मुनिए बीजो पाठ लीधो नहीं, अने तेनु तेज पद मोटेथी गोखवा लाग्या तोपण ते पद कठे थयु नहीं, अने अस्पष्ट (मासतुस, मासतुस) एवो उच्चार थवाथी लोको हसवा लाग्या. ते जोइ मुनि क्षमा धारण करीने उलटा पोताना कर्मनेज निंदवा लाग्या तेमज “रे जीव ! तु रोष कर मा ने तोष कर मा” ए रीते सर्व सिद्धान्तना सारभूत तेज पद गोखवा लाग्या. लोकोए तेनु नाम मासतुस पाडयु. ए प्रमाणे आत्मनिंदा अने आचाम्ल तप करता ते मुनिए बार वर्ष व्यतीत कर्यां. बार वर्षने अंते तेज पद गोखता ते मुनि शुभ ध्यानवडे क्षपक श्रेणि उपर आरूढ थइने सकल लोकालोकने प्रकाश करनार केवळज्ञानने पाम्या. देवोए केवळज्ञाननो महिमा कर्यो.

त्यार पछी पृथ्वीपर विहार करता मासतुस केवळी घणा भव्य जीवोने प्रतिबोध करीने अनन्त चतुष्कमय शाश्वत स्थानने (मोक्षने) पाम्या.

“ आ प्रमाणे मासतुस साधु शुभ भावनावडे सर्व पापनो क्षय करीने केवळज्ञान मेळवी शाश्वतपदने पाम्या.”

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य एकपञ्चाशदधिकद्विशततम प्रबंध. ॥ २६१ ॥

व्याख्यान २६२ मुं.

योगवहनने स्थिर करवा माटे दृष्टांत कहे छे.

नलिनीगुल्मत एत्याचार्यजीवः सुरोत्तमः ।
योगवाहिस्वशिष्याणां, क्रियास्वविघ्नमातनोत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"नलिनीगुल्म नामना विमानमां आचार्यनो जीव श्रेष्ठ देवता थयो हतो. तेणे त्यांथी पोताने स्थाने आवीने योगवहन करता एवा पोताना शिष्योने तेमनी क्रियामां निर्विघ्नपणुं कर्युं (विघ्ननो नाश कर्यो). " तेनुं दृष्टांत आगळ कहेवामां आवशे.

स्थानांग सूत्रमां कह्युं छे के—" श्रमणभगवान महावीरना तीर्थमां सात प्रवचन निन्हव थशे, तेमां १ (बहुरता) बहु समये कार्यवादी, २ चरम प्रदेशे जीववादी, ३ अव्यक्तवादी, ४ समय सामुच्छेदिक (समये समये उच्छेद माननार), ५ एक समये बे क्रिया माननार, ६ त्रीराशीओ अने ७ अवस्थितीक (स्पृष्ट कर्म माननार), ते सात प्रवचन निन्हवना सात धर्मगुरुओ छे. तेमनां नाम १ जमाली, २ तीष्यगुप्त, ३ आषाढ सूरिना शिष्य, ४ अश्वमित्र मुनि, ५ गंगदत्त मुनि, ६ छलुक (रोहगुप्त) अने, गोष्ठामाहिल. आ सात निन्हवो सूत्रमां सूचन मात्रथी कह्या छे. तेमां त्रीजो निन्हव योगक्रिया वहन कर्या पछी मिथ्यात्वना उदयथी उत्पन्न थयो छे. ए रीते अनेक ठेकाणे साधुओना उपधान तपनुं वर्णन करेलुं जोवामां आवे छे. अहो! ते योगादिकनो जे अपलाप करे छे तेनी धृष्टता अकलित छे, केमके ते प्रत्यक्ष रीते सूत्रविरुद्ध बोले छे अने तेम थवाथी सूत्रमां कहेलुं अव्यक्तवादीनुं चरित्र अव्यर्थ थइ जाय तेम छे ते चरित्र संप्रदायथी आवेलुं नीचे प्रमाणे छे—

श्वेतांबिका नामनी नगरी पासे पोलास नामना वनमां आर्य आषाढसूरि गच्छ सहित समवसर्या ते गच्छमां आगम भणनारा घणा शिष्यो हता. तेओ अगाढ योगवहन करवानो निश्चय करी ते संबंधी क्रिया करवामां तत्पर थया. तेज दिवसे कोइ तेवा प्रकारना कर्मोना उदयथी आचार्यने हृदयमां शूळनो व्याधि थयो, अने काळ करीने सौधर्म देवलोकमां नलिनीगुल्म नामना विमानने विषे देवपणे उत्पन्न थया ते वृत्तांत आखा गच्छमां कोइना जाणवामां आव्युं नहीं. अहीं अवधिज्ञानना उपयोग-

थी ते साधुओने अगाढ योगमा पेठेला जाणीने तेमनापर दया आवराथी ते देवे त्या आवीने तेज शरीरमा प्रवेश कर्यो पछी ते साधुओने उठाडीने कह्युं के-"हे साधुओ! वैरात्रिक काळ ग्रहण करो." उत्तरा ध्ययनना छत्रीशमा अ ध्ययनमा काळग्रहण अने योगविधि योग्य अनुष्ठान बतावेलु छे

पोरसीए चउब्भाए, वंदित्ता तओ गुरुं।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥ १ ॥

भावार्थ-"रात्रीना प्रथम पहोरने चोथे भागे गुरुने वांदणां दइने काळ प्रति-क्रमवावाळी शय्या जे काळग्रहणनी भूमि तेने पडिलेहे." आ गाथामा वाघायिक काळग्रहण जाणवु, अने -

तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचौब्भागसावसेसंमि।
वेरत्तिअपि कालं, पडिलेहि मुणि कुज्जा ॥ १ ॥

भावार्थ-"वाघायिक काळग्रहण वखते जे नक्षत्र गगनने आठमे भागे दीठुं हतुं तेज नक्षत्रने गगनगति करता गगननो चोथो भाग ज्यार शेष रहे त्यारे वैरात्रिक काळग्रहण मडलभूमिनो पडिलेहनार मुनि करे" आ गाथामां वैरात्रिक काळग्रहण कह्युं छे.

आ प्रमाणे सूत्रने अनुसारे देवना वचनथी साधुओए क्रिया करी तेमज श्रु-तना उद्देश, समुद्देश अने अनुज्ञा पण तेमनी पासे करी ए रीते दिव्य प्रभावथी ते देवताए ते साधुओना काळभग विगेरे विघ्ननु निवारण करीने जल्दीथी तेमना योग पूर्ण कराव्या पछी ते शरीर मूकीने स्वर्गमा जती वखते ते देवताए कह्यु के-" हे पूज्य साधुओ! क्षमा करजो. मे असयमीए तमोने वदनादिक कराव्या छे. तमे सयमी छो अने हु तो अमुक दिवसे काळ करीने स्वर्गमा गयो हतो, पण तमारापर दया आववाथी अहीं आवीने तमारा योग पूर्ण कराव्या छे." इत्यादि कही तेमने खमा-वीने ते देवता स्वर्गे गयो पछी ते साधुओए तेनु शरीर परठवावीने विचार कर्यो के-"अहो! आ अविरति देवने आपणे घणा काळ सुधी वदना करी, माटे ए प्रमाणे बी-जे स्थाने पण शका राखवी जोइए, केमके कोण संयमी छे अने कोण असंयमी छे ते कोण जाणे छे? माटे कोइने पण वदना न करवी एज श्रेयनो रस्तो छे-

थाय छे, नहींतो असयमीनी वदना अने मृषावाद ए वे दोष लागे." आ प्रमाणे तेवा प्रकारना भारे कर्मना उदयथी ते मिथ्या परिणामनी बुद्धिवाळा साधुओए अव्यक्तवादनो अगीकार करीने परस्पर वदनक्रियाने मूकी दीधी. बीजा स्थविर साधुए तेमने शिखामण आपी के-"जो तमारे बीजा सर्व उपर संदेह छे, तो जेणे तमने कह्युं के 'हु देव छु' त्या पण तमने केम सदेह थयो नहीं के ते देव छे के अदेव छे?"

वादी—तेणे पोतेज कह्यु के 'हु देव छु' तथा देवनु रुप पण अमे प्रत्यक्ष जोयुं तेथी संदेह रह्यो नहीं.

प्रतिवादी—जो एम छे तो जेओ एम कहे छे के 'अमे साधु छीए' तेमज साधुनु रुप पण तमे प्रत्यक्ष जुओ छो तो तेओने विषे साधुपणानो शो संदेह के जेथी तमे परस्पर वंदना करता नथी? वळी 'साधुना करतां देवनु वाक्य वधारे सत्य होय' एम पण तमारे वारवु नहीं, केमके देवो तो क्रीडा विगेरेना कारणथी असत्य पण बोले, अने साधु तो तेवा असत्यथी पण विरमेला होवाथी असत्य बोले नहीं. वळी जो प्रत्यक्ष एवा यतिने विषे पण तमारे शंका छे, तो पछी परोक्ष एवा जीवाजीवादि पदार्थोने विषे तो घणीज शंका होवी जोइए वळी यतिवेषवाळा मनुष्यमा साधुपणु छे के नहीं, एवो तमने संदेह पडे छे, तो प्रतिमाने विषे तो निश्चयथीज जिनपणु नथी, तो तेनी वदना केम करवी? अने साधुनी वंदनानो निषेध केम करवो?

वादी—असयमी देवताए प्रवेश करेला यतिवेषने वांदवाथी तेमां रहेला असंयमरुप पापनी अनुमति आवे, ते दोष प्रतिमाने विषे नथी

प्रतिवादी—देवताए अधिष्ठित करेली प्रतिमाने विषे पण अनुमतिरूप दोष रहेलोज छे.

वादी—शुद्ध अध्यवसायवाळो माणस जिनेश्वरनी बुद्धिथी प्रतिमाने वांदे छे, माटे ते दोष प्रतिमाने विषे लागतो नथी.

प्रतिवादी—जो एम छे तो शुद्ध अध्यवसायवाळाने यतिबुद्धिथी यतिरूपने वांदता शो दोष के जेथी तमे परस्पर वदना करता नथी?

वादी—त्यारे तो विशुद्ध [illegible]वाळो लिंगमात्रने धारण करनार पार्श्वस्थादिकने पण यतिबुद्धिथी [illegible] दोष लागतो नथी एम समजवु.

प्रतिवादी—तारु कहेवु अयुक्त छे, केमके पार्श्वस्थादिकने विषे सम्यग् निर्ग्रंथपणानो अभाव छे. आहार निहार विगेरेवडे तेनामा निर्ग्रंथना लिंगनी प्राप्ति जणाती नथी, माटे प्रत्यक्ष दोषवाळा पार्श्वस्थादिकने वदना करे, तो तेने सावद्यानुज्ञानो दोष लागे. कयु छे के—

> जइ वेलवगलिंग, जाणत्तस्स नमउ हवइ दोसो ।
> निद्धंधसं पि नाऊण, वंदमाणे धुवो दोसो ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेम भांडभवाये-विदूषक लीधेला वेषने जाणतो छतो तेने वदना करे तो तेने दोष लागे छे, तेमज जेनामां निध्वसपणुं वर्ते छे एवा वेषधारी मुनिने जाणता छता वदना कर तो अवश्य दोष लागे छे "

वळी जो तमे मतिमाने पण वदना करो, तो तमारे सर्वत्र शंकाज रही; तेथी आहार, उपधि, शय्या विगेरे पण देवताना विकुर्वेला हशे के नहीं, तेनो निश्चय नहीं होवाथी ते आहारादिक पण तमारे ग्रहण करवा न जोइए. ए प्रमाणे अति शंका राखवाथी समग्र व्यवहारनो उच्छेद थशे, केमके निश्चयकारी ज्ञान विना कोण जाणे छे के आ भक्त छे के कीडा छे ? वस्त्रान्तिकमा माणिक्य छे के सर्प छे ? विगेरे सर्व स्थाने भ्रांतिज रहशे, अने भक्तपानादि काइ पण वापरी शकाशे नहीं. अथवा तो जेम आर्य आषाढ देवे धारण करेलु यतिनु रुप तमे जोयु, तेवा बीजा केटला देवोने यतिरुपे तमे पूर्वे जोया हता के जेथी आ एकज दृष्टातथी तमे सर्वत्र शंकाशील थया छो ? कोइ वखत काइ आश्चर्यादिकना कारणथी कोइ ठेकाणे कोइ देवादिकने विषे तेवी रीते जोइने सर्व स्थाने तेवी शका राखवी ए योग्य नथी. माटे व्यवहार नयनो आश्रय करीने तमारे एक बीजाने वंदना करवी युक्त छे, केमके छद्मस्थने सर्व प्रवृत्ति व्यवहारथीज करवी पडे छे. व्यवहारनो उच्छेद करवाथी तीर्थना उच्छेदनो प्रसग प्राप्त थाय छे सर्वज्ञो पण व्यवहारमार्गनो लोप करता नथी ते विषे महाभाष्यमा श्री जिनभद्रगणिए कयु छे के—

> संववहारो वि बली, जमसुद्ध पि गहिय सुयविहिए ।
> कोवेइ न सव्वएणु, वदइय कयाइ छउमथ्थं[१] ॥ २ ॥

१ आ पद अशुद्ध जणाय छे

भावार्थ—"श्रुतव्यवहार पण बलवान् छे.जेथी श्रुतविधि प्रमाणे छद्मस्थे ग्रहण करेला शुद्ध पण केवलीनी बुद्धिए अशुद्ध आहारने पण सर्वज्ञ दुषित करता नथी (वापरे छे), अने ते सर्वनी कांइ कहेता नथी अर्थात् तेने प्रमाण करे छे" -

इत्यादि युक्तिओवडे ते स्थवीर साधुए तेमने समजाव्या, तोपण तेओए पोतानो आग्रह छोड्यो नहीं, त्यारे ते स्थविर साधुओए तेमने कायोत्सर्ग[1] पूर्वक गच्छ बहार कर्या.

तेओ फरता फरता अन्यदा राजगृह नगरे गया. त्यां मौर्यवंशी बलभद्र नामनो राजा राज्य करतो हतो. ते शुद्ध श्रावक हतो. तेणे सांभळ्युं के-'अव्यक्तवादी निन्हवो अहीं आव्या छे, अने गुणशिल नामना वनमां रह्या छे' पछी ते श्रावक राजाए तेमने बोध करवा माटे पोताना सुभटो पासे तेमने बांधीने पोतानी पासे अणाव्या, अने कृत्रिम कोप देखाडीने पोताना सुभटोने हुकम कर्यो के-" आ सर्वेने तेलनी उकळती कढाइमा नाखो अने हाथीने पगे बांधी तेमनु मर्दन करो." ते हुकम सांभळीने ते सुभटो हाथीओने तथा कडाइओने लाव्या. ते जोइने भय पामेला साधुओए राजाने कह्यु के-" हे राजन्! तमे श्रावक छता अमने साधुओने केम हणो छो ?" राजाए कह्यु के-"तमे चोर छो, हरीक छो, के साधु छो ते कोण जाणे छे ?" तेओ बोल्या के-" हे राजन्! अमे साधुज छीए, बीजा कोइ नथी." त्यारे राजाए कह्यु के-" तमारा मतमां तो सर्व वस्तु अव्यक्त (संदेहवाळी) छे. तेथी तमे सत्य साधु छो एम कोण जाणे ? तथा तमे पण केम कही शको ? वळी तमारा मत प्रमाणे हु श्रावक छु के बीजो छु, ते पण शंकित छे. तो तमे मने श्रावक केम कहो छो ? तेम कहेवाथी परस्पर नहीं वांदता एवा तमारा अव्यक्तवादनी हानिनो प्रसंग आवे छे, तथापि हजु पण तमे व्यवहारनयने अंगीकार करो तो उत्तम श्रमण निर्ग्रंथ तरीके तमने हु सद्दहु (कबुल करु)" ते सांभळीने ते साधुओ बहु लज्जा पाम्या, अने राजानी वाणीथी शुद्ध बोध पाम्या; पछी तेओए राजाने वचने कह्युं के-" श्रीमान जिनेश्वरे कहेलो क्रियायुक्त अने ज्येष्ठ लघुना व्यवहारे परस्पर वंदना करनारा अमे श्रमण निर्ग्रंथ छीए." ए प्रमाणे वारवार बोलवा लाग्या. वळी तेओ बोल्या के-" हे साधुराज! अमने चिरकाळथी भ्रांति पामेलाने आजे तमे सन्मार्गे पमाड्या." ते सांभळीने राजा नम्रताथी बोल्यो

1 वोसिरावना पूर्वक

"के-तमोने प्रतिरोध करवा माटे में जे अयोग्य काम कर्युं ते सर्व क्षमा करजो " एम कहीने ते श्रेष्ठ राजाए सर्व साधुओने वंदना करी ते साधुओ पण फरीथी बोध पामीने प्रथमनी जेम पृथ्वी पर विहार करवा लाग्या.

महावीर स्वामीना निर्वाण पछी बसें चौद वर्षे उत्पन्न थयेला त्रीजा निन्ह वनी आ कथा कही छे.

'सूत्रना योगवहननी क्रियामां पोताना शिष्योने विघ्न न थाओ' एम विचारीने श्रुतनी भक्तिमां आसक्त एवा आषाढदेवताए स्वर्गमांथी आवीने तेओनी क्रिया पूर्ण करावी.

" हे " तपस्वीओ ! आ प्रमाणे उपधान नामना शुभाचारनुं वर्णन सांभळीने आगमने अनुसारे ते उपधानविधिमां आदर करो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य द्विपञ्चाशदधिकद्विशततम: प्रबंध: ॥ २६२ ॥

व्याख्यान २६३ मुं.

अनिन्हव नामना पांचमा आचार विषे.

श्रुताक्षरप्रदातॄणां, गुरूणां च श्रुतादीनाम् ।
अनिन्हवोऽयमाचार:, पंचम: श्रीजिनै: स्तुत: ॥ १ ॥

भावार्थ—"श्रुतना अक्षरने आपनारा गुरुओनो अने श्रुतादिकनो अपलाप करवो नहीं. ए पांचमो आचार श्री जिनेश्वरोए कहेलो छे."

जेनी पासे कांइपण अध्ययन कर्युं होय ते गुरु अप्रसिद्ध होय के जाति अथवा श्रुतादिकथी हीन होय, तो पण तेने गुरु तरीके मानवा (कहेवा), पण पोतानुं गौरव करवुं नहीं. पथक नामना शिष्यनी जेम गुरुनुं बहुमान करवुं, तेना दोष ग्रहण करवा नहि निरंतर गुरुथी शंकाता रहेवुं (भय पामता रहेवुं), निःशंकपणुं धारण करवुं नहीं.

श्री आमराजाए मातंगी स्त्रीनो स्पर्श कर्यो ते वृत्तांत गुरुए जाण्यो, त्यारे राजाए मनमां विचार्यु के-"अहो! मारु अयोग्य कृत्य गुरुए जाण्युं हवे हुं गुरुने मुख शी रीते बतावुं ?" पछी ते पापनी शुद्धि करवा माटे राजा तपावेली लोहनी पुतळीनो स्पर्श करवा तैयार थयो. ते वात जाणवाथी गुरुए तेने श्लोको मोकलीने बोध कर्यो. आ दृष्टांत विस्तारथी प्रथम लखी गया छीए.

वळी कुमारपाळ राजाए मुकां घेवर खावतां मांसभक्षणनो स्वाद संभार्यो हतो. पछी तरतज उपयोग आववाथी तेणे विचार्यु के-"अहो! में आ अयोग्य चिंतव्युं. आ वात गुरु जाणशे तो मारुं जीवित धिक्कारपात्र थशे." एम विचारीने राजा पोताना दांत पाडी नांखवा तैयार थयो, ते वखते तेमना श्रावक प्रधानोए तेमने उपदेश आपीने अटकाव्यो. पछी तेणे गुरुए आपेला प्रायश्चित्तमां घेवरना रंग अने आकारवाळो एक हजार ने चौद स्तंभथी युक्त नवीन प्रासाद कराव्यो. विगेरे दृष्टांतोथी गुरु विगेरेनो अपलाप करवामां मोटो दोष जाणवो अन्य धर्ममां पण कह्युं के—

एकाक्षरप्रदातारं, यो गुरुं नाभिमन्यते ।
श्वानयोनिशतं गत्वा, चंडालेष्वभिजायते ॥ १ ॥

भावार्थ-" जे माणस एक अक्षरने पण आपनार (भणावनार) एवा गुरुने गुरु तरीके मानतो नथी, ते सो वखत कूतरानी योनिमां जन्मीने चंडाळनी योनिमां उत्पन्न थाय छे."

तेमज श्रुतादिकनो पण अपलाप करवो नहीं. जेनी पासे जेटलुं श्रुत भण्या होइए तेटलुंज कहेवु,पण तेथी न्यूनाधिक करेवु नहीं, केमके तेम करवाथी मृषावाद, मननुं कालुष्य अने ज्ञानातिचार विगेरे दोषो प्राप्त थाय छे. गुरुना अने श्रुतनो अपलाप करवाथी रोहगुप्त साधुनी जेम सर्व गुणनी हानि थाय छे.

रोहगुप्तनी कथा

अन्तरिकापुरीना उपवनमां श्रीगुप्त आचार्य गच्छ सहित रह्या हता. ते पुरीमां बलश्री नामे राजा राज्य करतो हतो. आचार्यनो रोहगुप्त नामनो एक शिष्य बीजा गाममां रह्यो हतो, ते गुरुने वांदवा माटे ते पुरीमां आव्यो त्यां कोइ एक तापस लोढाना पाटाथी पोतानुं पेट बांधीने जांबुना वृक्षनी शाखा हाथमां राखीने

नगरीमां भमतो हतो. ते जोइने "आ शुं?" एम लोकोए पूछयुं, त्यारे ते तापस बो-ल्यो के-"मारु उदर घणा ज्ञानथी भराइ गयु छे, माटे ते फाटी जवाना भयथी तेने लोहना पट्टथी बांधी लीधु छे, अने आखा जम्बूद्वीपमा मारो प्रतिवादी कोइ नथी एम जणाववा माटे आ जम्बूवृक्षनी डाळी हाथमा राखी छे" पछी ते तापसे "आखी नगरी शून्य छे, सर्व परमवादी छे, पण मारो प्रतिवादी कोइ नथी." एवी घोषणा पूर्वक आखी नगरीमा पडह वगडाव्यो. ते पडह नगरीमा प्रवेश करता रोहगुप्ते जोयो अने घोषणा सांभळी. तेथी "हु तेनी साथे वाद करीश" एम कहीने रोह-गुप्ते ते पडहने निवारण कर्यो. पछी तेणे गुरु पासे आवीने वंदनापूर्वक वाद कर-वानुं कबुल कर्यानो वृत्तांत कह्यो ते सांभळीने गुरुए कह्यु के-"तें ए काम सारु कर्युं नहीं, केमके ते घणी विद्याथी भरपूर छे. तेथी ते कदाच वादमां पराभव पामे छे तो मंत्रविद्याथी प्रतिवादीने उपद्रव करे छे. ते विद्या आ प्रमाणे—

वृश्चिकान् पन्नगानाखून्, मृगशूकरवायसान्।
शकुनिकांश्च कुरुते, स हि विद्याभिरुद्भटान्॥ १॥

भावार्थ—"ते तापस विद्यावडे अति उद्भट एवा वींछी, सर्प, उंदर, मृग, सुवर, कागडा अने समळीओ विगेरे विकुर्वे छे."

ते सांभळी रोहगुप्ते कह्युं के—"एम होय तोपण हवे क्यां नासीने जवाय एम छे? ते पटह तो में निवारण कर्यो छे हवे तो जे थवानु होय ते थाओ." गुरुए कह्युं के-"जो एवोज निश्चय होय, तो मात्र पाठ करवाथीज सिद्ध थाय एवी अने तेनी विद्यानो नाश करनारी आ सात विद्या तु ग्रहण कर.

केकिनो नकुला ओतु—व्याघ्रसिंहाश्च कौशिका।
श्येनाश्च याभिर्जायन्ते, तद्विद्याबाधका क्रमात्॥ १॥

भावार्थ-"आ सात विद्याए करीने अनुक्रमे तेनी विद्याने बाध करनारा मोर, नोळिया, बिलाडा, वाघ, सिंह, घुवड अने बाज पक्षीओ उत्पन्न थाय छे."

पछी ते सात विद्याओ आपी अने ते उपरांत ओघो मंत्रीने गुरुए तेने आप्यो अने कह्यु के-"जो कदाच ते तापस क्षुद्र विद्याथी बीजो काइ पण उपद्रव करे, तो तेना निवारणने माटे आ ओघो तारे तारा माथापर फेरववो. तेम करवाथी इन्द्र

पण तने जीती शकशे नहीं." पछी ते रोहगुप्त राजसभामां गयो त्यां तेणे कह्युं के "आ भिक्षुक तापसमां शुं ज्ञान छे ? तेथी प्रथम तेज पोतानी इच्छा प्रमाणे पूर्वपक्ष करे, तेनो हु उत्तर आपीश." ते सांभळीने तापसे विचार्युं के–"आ साधुओ घणा निपुण होय छे, माटे तेनाज संमत पक्षनो आश्रय करीने हु बोलुं; के जेथी ते तेनुं निराकरण करीज शके नहीं." एम विचारीने ते बोल्यो के–"आ दुनियामां जीव अने अजीव एवी बेज राशि छे, तेज प्रमाणे जोवामां आवे छे माटे धर्म ने अधर्म, द्रव्य ने भाव इत्यादि बबे राशिनी [१]जेम." ते सांभळीने रोहगुप्ते वादीनो पराभव करवा माटे पोताना संमत पक्षने पण छोडी दइने तेने असत्य ठरावना कह्यु के–"तेंज हेतु आप्यो छे ते बीजी रीते जोवामां आवे छे तेथी असिद्ध छे दुनियामां जीव, अजीव अने नोजीव एवी त्रण राशि जोवामा आवे छे. तेमां नारकी, तिर्यंच विगेरे जीव, परमाणु घट विगेरे अजीव अने गरोळीनी कपायेली पूछडी विगेरे नोजीव छे तेथी जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण राशि सिद्ध थइ, तेज प्रमाणे देखाय छे माटे. अधम, मध्यम अने उत्तम राशिनी जेम." इत्यादि अनेक युक्तिओवडे तेना प्रश्नोना उत्तर आपीने ते तापसनो तेणे पराजय कर्यो तेथी तापसे क्रोध पामीने वृश्चिकविद्यावडे रोहगुप्तनो विनाश करवा माटे वींछी मूक्या, ते वींछीओनो नाश करवा माटे रोहगुप्ते मयूरी विद्यावडे मोर छोड्या तेओए वींछीने मारी नांख्या, त्यारे तापसे सर्प छोड्या, तेना पर रोहगुप्ते नोळीया छोड्या ए प्रमाणे उंदर उपर बिलाडा, मृग उपर वाघ, सुवर उपर सिंह अने कागडा उपर घुवड मूक्या. तेथी अत्यंत क्रोध पामीने तापसे अति दुष्ट समळीओ मूकी, तेना पर साधुए बाज मूकीने तेमने हठावी ते जोइने तापसे अति क्रोधथी [२]रासभी मूकी तेने आवती जोइने साधुए पोताना शरीर फरतो ओघो फेरववा माड्यो अने तेवती ते रासभीने मारी, तेथी प्रभाव रहित थइने ते रासभी तापस उपर मूत्र पुरीष करीने जती रही. ते सर्व जोइने सभापति राजाए तथा सभाना समग्र लोकोए ते तापसनी निंदा करीने तेने नगरमांथी काढी मूक्यो. रोहगुप्त मुनि विजय मेळवीने गुरुनी पासे आव्या अने सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळीने गुरुए कह्यु के–"तें तापसने जीती लीधो, ते बहु सारुं कर्युं. परतु सभामांथी उठीने आवतां तें एम केम न कह्यु के– मात्र वादीने जीतवा माटेज में त्रण रा-

---

१ अहीं वादी त्रण वाक्यो बोल्यो छे तेमा पहेलु वाक्य पक्ष, बीजुं हेतु अने त्रीजुं दृष्टांत कहवाय छे. ते त्रणे मळीने अनुमान प्रमाण, छे. ए प्रमाणे सवत्र जाणवुं २ गधेडी.

शिनु स्थापन कर्यु छे, पण वास्तविक रीते तो जीव अने अजीव एवी बेज राशि छे माटे तुं पण सभामां जइने खरी वात कही आव." ए प्रमाणे गुरुए घणी वार घणी रीते कह्यु, त्यारे ते रोहगुप्ते जवाब आप्यो के-"हे सूरि! मारो सिद्धांत पण सत्य छे जो कदाच नोजीव नामनो त्रीजो राशि मानता कांइ दोष आवतो होयतो ते सिद्धांत असत्य छे. पण तेमां काइ दोष आवतो नथी. केमके गरोळीनी पूछडी विगेरे जीवना देशभागने नोजीव कहीएतो तेमां शो दोष? हुं तो एमां काइ पण दोष जोतो नथी सूत्रमां धर्मास्तिकाय विगेरेना दश प्रकार कह्या छे तेमां ते धर्मास्तिकायना प्रदेशने पृथग् वस्तुपणु कहेलुज छे. नहींतो दश प्रकार घटे नहीं तेज प्रमाणे गरोळीनी पूछडी अने छेदायेला एवा मनुष्यना हाथ विगेरे अवयवो ते छेदायेला होवाथी जीवथी भिन्न छे, अने ते अवयवो स्फुरणायमान थाय छे तेथी अजीवथी पण भिन्न छे माटे अवश्य ते अवयवो जूदीज वस्तु छे, एम सिद्ध थाय छे " ते सर्व सांभळीने गुरु तेने साथे लइने राजसभामां गया त्यां सत्य मार्गनी प्ररुपणा करीने शिष्ये करेला प्रश्नोनु आगमने अनुसारे आ प्रमाणे निवारण कर्यु के "सूत्रमां जीव अने अजीव एवा बेज राशि कहेला छे वळी धर्मास्तिकाय विगेरेना प्रदेश ते धर्मास्तिकायादिकथी कांइ जूदा नथी, परंतु विवक्षा मात्रथीज तेनी भिन्न वस्तुपणानी कल्पना करी छे तेवीज रीते पुच्छादिक पण गरोळी विगेरे जीवोथी अभिन्न छे ते जीव सबंधी होवाथी जीवज छे, नोजीव नथी. ते विषे श्री भगवती सूत्रमां कह्यु छे के-"हे भगवत! काचबो के काचबानी श्रेणी, गरोळी के गरोळीनी श्रेणी, वृषभ के वृषभनी श्रेणी, मनुष्य के मनुष्यनी श्रेणी, पाडो के पाडानी श्रेणी तेना बे खंड, त्रण खंड यावत् संख्याता खंड छेदीने करवामां आवे तो तेना आंतरामां जीवप्रदेश प्रगट (स्फुट)पणे छे?" प्रभु कहे छे-"हा गौतम! प्रगटपणे छे" फरी गौतमस्वामी पूछे छे के-"हे भगवंत! कोइ पुरुष ते आंतरामा रहेला जीवप्रदेशने हाथवडे, पगवडे, काष्ठवडे, तीक्ष्णशस्त्रवडे छेदतो सतो अथवा अग्निकायवडे बाळतो सतो तेने काइ अल्प बाधा के विशेष बाधा उपजावी शके?" प्रभु कहे छे-"हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नहीं, निश्चये तेने आक्रमण करी न शके."

१ अहीं शिष्ये प्रश्न कर्यो के-"गरोळीना देह अने पूंछडीनी वचमां पण जीवना प्रदेशो रहेला छे एम सूत्रमां कह्यु, तो ते वचमां रहेला जीवना प्रदेशो केम जणाता नथी?" गुरुए उत्तर आप्यो के-"जीवप्रदेशो अरुपी होवाथी दे-

खातां नथी. जेम दीवानां किरणो पृथ्वी, भींत के कोइ पात्र विगेरे मूर्तिमान वस्तु उपर पड्यां होय तो ते देखवामां आवे छे. पण केवळ आकाशमां फेलाएला होय ते ग्रही शकातां नथी. तेज प्रमाणे वचमा रहेला जीवप्रदेशो पण जोवामां आवतां नथी. बोलवुं, श्वासोश्वास लेवा, दोडवु, वळगवु, स्फुरवुं, विगेरे क्रियाओ देहने विषेज जणाय छे पण वचमां जणाती नथी, माटे सूक्ष्मकार्मणदेहथी युक्त छतां पण ते जीवप्रदेशो औदारिकदेह विनाना होवाथी देखाता नथी, अथवा हे शिष्य! तुं जेने जीव कहे छे, तेना प्रदेशो जीवथी भिन्न छे के अभिन्न छे? जो 'भिन्न छे' एम कहे तो ते जीवनी साथे फरीथी तेनो संगम केम थाय? केमके भिन्न प्रदेश बीजे ठेकाणे पण परमाणुनी जेम मळी जाय अने ते प्रदेशोनो बीजा जीव साथे संगम थवाथी ते बन्ने जीवोना कर्मनो संकर थयो, तेथी बन्ने जीवना सुखदुःखादिक पण मळी जवा जोइए, पण तेम तो छेज नहीं. माटे 'भिन्न छे' एम कही शकाशे नहीं. 'हवे ते प्रदेशो जीवथी अभिन्न छे' एम तु कहे तो, ते प्रदेश जीवनाज अतर्गत छे एम कहेवु जोइए, माटे बेज राशि सिद्ध थया, पण त्रण थया नहीं." वळी शिष्ये प्रश्न कर्यो के–"ते प्रदेश अभिन्न छे तोपण स्थाननो भेद थयो, माटे तेने नोजीव कहेवा. जेम आकाश एक छतां स्थानना भेदथी घडामां रहेलुं आकाश 'घटाकाश' अने घरमां रहेलु आकाश 'गृहाकाश' कहेवाय छे, तेम स्थानना भेदथी नोजीव कहेवामां शु बाध छे?" गुरुए उत्तर आप्यो के–"जो एम कहीश तो 'नोअजीव' नामनो चोथो राशि पण तारे अंगीकार करवो पडशे. केमके आकाशादिक अजीव छे, तेना पण प्रदेशो समये छे, तेथी ते प्रदेशोने स्थानभेदनी विवक्षाथी नोअजीव कहेवा पडशे, अने तेम करवाथी चार राशि थशे. परंतु जेम लक्षणना समानपणाथी नोजीव जीवथी भिन्न नथी तेमज समान लक्षण होवाथी नोअजीव पण अजीवथी भिन्न नथी."

आ प्रमाणे ते गुरु शिष्यने वाद करतां छ मास व्यतीत थया, त्यारे राजाए गुरुने कह्यु के–"हे स्वामी! हवे वाद समाप्त करो, केमके हमेशां आनी व्यग्रताथी मारां राजकार्यो सीदाय छे." त्यारे गुरु बोल्या के–"आटला दिवस सुधी में आ शिष्यने मात्र क्रीडा करावी छे, पण हवे प्रातःकाळे तेनो हुं अवश्य निग्रह करीश." पछी बीजे दिवसे गुरुए राजाने कह्यु के–"आ दुनियामां जेटली वस्तु छे ते सर्व कुत्रिकनी दुकाने मळे छे, ते तमे तथा सर्व लोक जाणो छो. माटे आपणे त्यां जइए अने नोजीवनी मागणी करीए."

(अहीं 'कुत्रिक' शब्दनो अर्थ एवो थाय छे के-'कु' एटले पृथ्वी अने 'त्रिक' एटले त्रण, अर्थात् स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळ ए त्रण पृथ्वीनुं नाम 'कुत्रिक' थयु. ते नामनी दुकान होवाथी 'कुत्रिकापण' शब्द थाय छे आ दुकाने बेठेला वणिक गृहस्थे मंत्रादिकना आराधनथी कोइ व्यंतरदेवने साध्यो छे. ते देवता ग्राहकने इच्छित दरेक वस्तु कोइ पण स्थानथी लावीने आपे छे अने तेनी किंमत ते वणिक् ले छे अहीं कोइनो मत एवो पण छे के-आ वणिक्नी दुकानज देवाधिष्ठित छे, तेथी वस्तुनी किंमत ते देवताज लइ जाय छे पछी गुरु सर्व परिवार सहित ते कुत्रिकापणे जइने रोहगुप्तने पूछीने कुत्रिकापणना व्यंतरदेवने कह्यु के "जीव आप." त्यारे तेणे पोपट, मेना विगेरे जीव आप्या. पछी गुरुए अजीव माग्या त्यारे तेणे पत्थरना खड विगेरे आप्या. पछी नोजीव माग्यो, त्यारे पण पत्थर विगेरेज आप्या. केमके 'नो' शब्दनो अर्थ निषेध वाचक छे अर्थात् अजीव अने नोजीवमा काइ भेद नथी छेवट गुरुए नोअजीव माग्या, त्यारे तेनो अर्थ जीव करीने ते देवताए पोपट विगेरे आप्या कमके "नो" अने "अ" ए बे निषेध वाचक होवाथी अजीव नहीं ते जीव कहेवाय एवो "नो अजीव" शब्दनो अर्थ थाय छे नोजीव मागती वखते ते देवताए जीवनो काइ पण ककडो आप्यो नहीं, माटे जीव अने अजीव ए बे राशि सिद्ध थया पण खरना शृंगनी जेम त्रीजो राशि असत् होवाथी सिद्ध थयो नहीं. पछी गुरुए शिष्यने कह्यु के-"हे भाइ! हवे तु तारो दुराग्रह छोडी दे जो कदाच जगतमा नोजीव वस्तु जुदी होत तो ते देवता केम न आपत?" ए रीते एकसो ने चुमाळीश प्रश्नो करीने राजानी समक्ष गुरुए ते शिष्यनो निग्रह कर्यो.

अहीं द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष अने समवाय ए छ मूळ पदार्थोनी भेदकल्पना करी, तेमा पाच [1]महाभूत, काळ, दिशा, आत्मा अने मन ए नव प्रकार द्रव्यना कर्या, रुप, रस, संख्या, बुद्धि, द्वेष विगेरे सत्तर भेद गुणना कर्या, [2]उत्क्षेपण, [3]अपक्षेपण, [4]आकुंचन, [5]प्रसारण अने [6]गमन ए पाच भेद कर्मना कर्या, त्रण प्रकार सामान्यना कर्या, अने एक एक प्रकार विशेष तथा समवायनो ग्रहण कर्यो. ते सर्व मळीने छत्रीश भेद थया. ते सर्वना [7]प्रकृति, [8]अकार, [9]नोकार अने व-

---

१ पृथ्वी, जळ अग्नि, वायु अने आकाश ए पाच महाभूत कहवाय छ २ उचु फेंकवु ते ३ नीचु फेंकवु ते ४ संकोचाइ जवु ते ५ विस्तारवु ते ६ जवु ते ७ मूळ शब्द ८ अल्प निषेध वाचक ९ सवथा निषेध वाचक

न्नेनो निषेध[1] एम चार चार प्रकार कर्या, एटले सर्व भेद एकसो ने चुमाळीश थया. पछी कुत्रिकापण देव पासे जइने पृथ्वी मागी. त्यारे तेणे पाषाण आप्यो. कारणके ते प्रकृति जात उपपद रहित शुद्ध पृथ्वी छे. अपृथ्वी मागी त्यारे जळ विगेरे आप्यु, नोपृथ्वी मागी त्यारे "नो!" शब्दना 'थोडो निषेध' अने 'सर्वथा निषेध' एवा बे अर्थ करीने थोडो निषेध धारीने पाषाणनो ककडो आप्यो अने सर्वथा निषध धारीने जळ विगेरे आप्यु, अने नोअपृथ्वी मागी, त्यारे तेणे पृथ्वी (पाषाण विगेरे) आपी. केमके नोअजीवनी जेम नोअपृथ्वीनो अर्थ पृथ्वीज थाय छे ए प्रमाणे जळ विगेरेमां पण चार चार भेद जाणवा. निश्चयनयना मते तो जीव अने अजीव ए बेज पदार्थो छे. आवी रीते अनेक प्रकारे गुरुए तेने समजाव्यो, पण ज्यारे तेणे पोतानो दुराग्रह मूक्यो नहीं, त्यारे गुरुए बडखा नांखवानी कुंडीमांथी भस्म लइने तेना मस्तक पर नाखी, अने गच्छनी बहार कर्यो. राजा ते शिष्यनु शाठ्य जोइने क्रोध पाम्यो, तेथी तेणे नगरमां एवी उद्घोषणा करावी के—"गुरुना प्रतिपक्षी थयेला रोहगुप्तने जे मान्य करशे ते राजद्रोही गणाशे." पछी ते रोहगुप्ते पोतानी बुद्धिथी वैशेषिक शास्त्र रच्यु

श्री महावीरस्वामीना निर्वाण पछी पाचसो चुमाळीश वर्षे आ छठो निन्हव थयो, तेनु वृत्तांत कह्यु.

"आखु जगत् षड् द्रव्यथी पूर्ण छे एम जिनेश्वरे जोयु छे तेनुं उत्थापन करतो अने द्रव्य, गुण विगेरे छ प्रकारने सत्यपणे ठरावी विस्तारतो तथा पोताना त्रण राशिना पक्षने स्थापन करतो एवो वैशेषिक छठो निन्हव थयो छे."

देव, गुरु अने श्रुतादिकने उत्थापतो ते वैशेषिक मोटी हानि पाम्यो, माटे आ पाचमा श्रुताचारथी सूत्रना अर्थमां शिष्योए भ्रष्ट थवुं नहीं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तम्भस्य त्रिषष्ठ्यधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २६३ ॥

१ निषेधनो निषेध (मूळ शब्द)

व्याख्यान २६४ मुं.

व्यंजन नहीं ओळववा विषेनो छट्ठो आचार कहे छे.

नाधीतव्यं श्रुत चोक्तवर्णैर्न्यूनाधिकादिभिः ।
व्यंजनानिन्हवाह्वोऽयमाचारः षष्ठमः स्तुतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" कहेला वर्णो (अक्षरो) माथी न्यूनाधिक अक्षरो बोलीने सूत्र भणवु नहीं. ए व्यंजनानिन्हव नामनो छट्ठो आचार कहेलो छे "

व्यंजनभेदतोऽर्थानां, क्रियाभेदोपजायते ।
तेनाभावश्च मुक्ते स्यात्के के दोषा भवति न ॥ २ ॥

भावार्थ—" व्यजनना भेदथी अर्थनो भेद थाय छे अने अर्थना भेदथी क्रियानो भेद थाय छे, क्रियाना भेदे करीने मुक्तिनो अभाव थाय छे. एवी रीते व्यंजनभेदथी कया कया दोषो उत्पन्न थता नथी ? अर्थात् सर्व दोषो उत्पन्न थाय छे

व्यंजननो भेद एटले अक्षरोने अन्यथा करवा ते तेम करवाथी अनेक दोषो उत्पन्न थाय छे श्री आवश्यक सूत्रमा चौद प्रकारे श्रुतनी आशातना कही छे.तेमां प्रथम व्याविद्ध के० आडा अवळा रत्नो नाखीने गुथेली रत्ननी माळानी जेम आडा अवळा अक्षरो बोलवाथी थयेली ज्ञाननी आशातनाए करीने जे अतिचार थयो होय तेनु मिथ्या दुष्कृत छे. (ते रीते सर्वत्र जाण). ते चौद प्रकार नीचे प्रमाणे—

१ एकना एक पदने बे त्रण वार बोलवु ते आम्रेडित, २ अक्षर ओछो बोलवो ते हीनाक्षर, ३ अक्षर अधिक बोलवो ते अधिकाक्षर, ४ पद काढी नांखीने बोलवु ते पदहीन, ५ विनय रहित बोलवु ते विनयहीन, ६ उदात्त विगेरे घोष रहित बोलवु ते घोषहीन, ७ योग वहन कर्या विना भणवु ते योगहीन, ८ गुरुए बराबर नहीं दीधेलु ते सुष्ठु अदत्त ९ गुरुए बराबर दीधा छता दुष्टपणु बतावबु ते दुष्ट प्रतिच्छित, १० मलिन अंतःकरणथी श्रुतपाठ करवो, ११ अकाळे स्वाध्याय करवो, १२ काळे स्वाध्याय न करवो, १३ अस्वाध्याय वखते स्वाध्याय करवो अने १४ स्वाध्याय वखते स्वाध्याय न करवो.

१ व्यजनने ओळववो नहीं ते

'व्यंजननुं अन्यथा करवुं' तेना पांच प्रकार छे. प्रथम तो प्राकृत सूत्र होय तेने संस्कृत भाषामां बोलवु ते. जेमके संयोगाविप्पमुक्कस्स ने ठेकाणे संयोगाद्विप्रमुक्तस्य एम कहेवु. बीजुं पदोने पश्चानुपूर्वीए बोलवा अथवा उलटमुलट बोलवा. जेमके विप्पमुक्कस्स संयोगा. त्रीजु कहेला पदो नहीं बोलतां तेज अर्थवाळा बीजा पर्यायी शब्दो बोलवा, जेमके [1]संबंधा विवज्जिअस्स. चोथु एक वर्णने बदले बीजो वर्ण बोलवो, जेमके सयोगना सकारने बदले गमे ते अक्षर बोलवो. पांचमुं वर्णनु विपरीतपणु करवुं, जेमके सयोगने बदले (संयोगनो अर्थ संबंध छे, अने विप्रमुक्तनो अर्थ विवर्जित छे) वियोग शब्द बोलवो. आ प्रमाणे अर्थमां तेमज व्यंजनार्थ उभयमां अन्यथा करवाथी तेमज न्यूनाधिक करवाथी उत्पन्न थता दोषो जाणी लेवा, तेमां व्यजनने अन्यथा करवाना संबंधमां " चैत्यवदनना प्राकृत सूत्रोने हु संस्कृत भाषामां करू ' एम सिद्धसेन दीवाकर बोल्या हता, तेथी तेने पारांचित प्रायश्चित्त करवु पड्यु हतुं ते दृष्टांत प्रथम कही गया छीए.

व्यजन अधिक वापरवाना संबंधमां कुमारपाळ राजानुं दृष्टांत आ प्रमाणे—

एकदा पाटण नगरमां कुमारपाळ राजा सामतो, मंत्रीओ अने शेठ सार्थवाहादिके परवरेला राजसभामां बेठा हता. ते वखते तेमणे श्री जयसिंह राजाना वृद्ध मंत्रीओने पूछ्यु के—" हु सिद्धराजथी गुणमां हीन छु, अधिक छुं के समान छु ? " ते सांभळीने ते मत्रीओ बोल्या के–" महाराज! सिद्धराजमां अठाणुं गुण हता अने बेज दोष हता, अने आपने विषे तो बे गुण अने अठाणु दोष रहेला छे." आ प्रमाणे मंत्रीनां वचन सांभळीने ते राजाने पोताना दूषित आत्मा उपर खेद थयो, तेथी तेणे खड्ग उपर दृष्टि करी. तेटलामां तेना अभिप्रायने जाणी गयेला ते मंत्रीओ बोल्या के–"हे स्वामिन्! अमे विचार्या विना मात्र बहिर्वृत्तिनीज वात करी छे. पण तत्त्वदृष्टिथी जोतां तो आप तेनाथी अधिक छो." ते सांभळीने राजाए तेनुं कारण पूछ्यु, त्यारे तेओ बोल्या के–" सिद्धराजमां जे अठाणुं गुण हता ते युद्धमां कायरपणु तथा स्त्रीलंपटपणुं ए बे दोषथी ढंकाइ गया हता, अने आपना जे कृपणता विगेरे अठाणुं दोष छे ते संग्रामशूरता अने परनारीसहोदरता ए बे गुणोथी ढंकाइ गया छे, माटे सत्त्वपणु तथा परस्त्रीबांधवता ए बे गुणोना आधारभूत होवाथी आपज सर्व गुणीजनोमां शिरोमणि छो." आ प्रमाणे मंत्रीनां

[1] संबंधा पदोना आ पदो पर्याय

वचन सांभळीने राजानो अंतरात्मा संतोष पाम्यो, ते वखते कोइ विद्वान राजाने उद्देशीने एक श्लोक बोल्यो के—

पर्जन्य इव भूताना–माधारः पृथिवीपतिः ।
विकलेऽपि हि पर्जन्ये, जीव्यते न तु भूपतौ ॥ १ ॥

भावार्थ–"प्राणीओनो मेघनी जेम राजाज आधार छे, परंतु कदि मेघनी अकृपा थइ होय तो जीवाय छे, पण राजानी अकृपा थइ होय तो जीवातु नथी."

ते सांभळीने "अहो राजाने मेघनी उपम्या ठीक आपी" ए प्रमाणे कुमारपाल राजाए कह्यु. ते उपम्या शब्द व्याकरणादिकनी रीते अशुद्ध छता बीजा सर्व सभ्यजनोए तो तेनी प्रशंसा करी, पण कपर्दी नामनो मंत्री घणो विद्वान होवाथी तेणे लज्जा पामीने नीचु मुख कर्यु. ते जाणीने राजाए तेने तेम करवानु कारण पूछ्यु, त्यारे ते मंत्री बोल्यो के–" हे राजन् ! आप उपम्या शब्द बोल्या ते शास्त्रविरुद्ध छे माटे अमारे ते सांभळीने नीचु मुख करवुज योग्य छे केमके राजा विनानु जगत सारु, पण मूर्ख राजा सारो नहीं मूर्ख राजा होवाथी शत्रु राजाओमा पण अपकीर्ति प्रसरे छे उपम्या शब्दने ठेकाणे उपमान, औपम्य अने उपमा इत्यादि शब्दो शुद्ध छे." आ प्रमाणे ते मंत्रीना वचनथी भेराएला राजाए लगभग पचास वर्षनी वये पहोंच्या छतां शब्द व्युत्पत्तिनो बोध थवा माटे श्री देवगुरुना चरणकमळनी सेवा करीने गुरुमहाराजे कृपा करीने आपेला सिद्ध सारस्वत मंत्रनु आराधन कर्यु, तथा सरस्वतीचूर्णनु सेवन कर्यु. इत्यादिवडे सरस्वती देवी प्रसन्न थवाथी तेना प्रसादे करीने एक वर्षमां त्रणवृत्ति व्याकरण द्व्याश्रय विगेरे काव्यो भणीने तेमणे चोवीश तीर्थंकरोनी स्तुति रुप बत्रीशी रची. तेनो पहेलो श्लोक आ प्रमाणे—

यत्राखिलश्रीश्रितपादपद्मं, युगादिदेवं स्मरता नरेण ।
सिद्धिर्मयाप्या जिन तं भवन्त,युगादिदेवं प्रणतोऽस्मि नित्यम्॥१॥

भावार्थ– 'हे जिनेश्वर ! समग्र लक्ष्मीए जेना चरणकमळनो आश्रय कर्यो छे एवा युगादि देवने स्मरण करनार माणस मुक्ति पाम्यो छे तथा मने पण सिद्धि मळी छे, तेवा आप युगादिदेवने हु निरंतर प्रणाम करु छु."

पछी ते राजाए "शास्त्रविचारचतुर्मुख" ए नामनुं बिरुद मेळव्युं. व्यंजनना अधिकपणामां बीजु अशोक राजानुं दृष्टांत कहे छे.

अशोक राजानुं दृष्टांत

पाटलीपुत्र नगरना नवमा नंद राजाने प्रतिज्ञापूर्वक चाणाक्य नामना ब्राह्मणे राज्यथी पदभ्रष्ट करीने मयूरपोषक नामना ग्राममा रहेनारा महत्तरना दौहित्र (दिकरीना दिकरा) चंद्रगुप्तने राज्यासने बेसाड्यो तेने बिंदुसार नामे पुत्र थयो. ते बिंदुसारने अशोकश्री नामे पुत्र थयो ते राज्यासन उपर हतो, ते वखते तेणे पोताना कुणाल नामना पुत्रने तेनी बाल्यावस्था छतां तेने भोगववा माटे अवन्ति नगरी आपी. पछी "अहीं पाटलीपुत्र नगरमां रहेवाथी बीजी सावकी मातानो उपद्रव थशे" एम धारीने ते कुणाल अवन्तिए जइने रह्यो. त्यां राजाए मोकलेला अनुजीवीओए पोताना जीवनी जेम तेनुं रक्षण कर्युं अनुक्रमे कुमार आठ वर्षनो थयो त्यारे राजाए पोताना माणसो द्वारा 'कुमारनुं वय विद्या ग्रहण करवाने योग्य थयु छे' एम जाणीने पोते कुमारना उपर एक पत्र लख्यो के "हे कुमार ! त्वयाऽधीतव्यमिति मदाज्ञाऽचिरेण विधेया—हे कुमार ! तारे हवे अभ्यास करवो, आ मारी आज्ञा तारे तत्काळ मान्य करवी." ए प्रमाणे पत्रमां लखीने राजा कोइ बीजा कार्यमां गुथायो, तेवामां कुमारनी सापत्न माता त्यां आवी चडी. तेणे ते पत्र वाचीने मनमां विचार्युं के "ज्यांसुधी कुणालकुमारना सर्व अवयवो शुद्ध हशे, त्यांसुधी मारा पुत्रने राज्य मळशे नहीं, माटे आ पत्रमा कांइक विरूप लखुं तो ठीक." एम विचारीने ते पत्रमां राजाए जे अधीतव्यम् लख्यु हतुं तेना पहेला अक्षर (अ) उपर नेत्र आंजवानी सळीने थूकथी भीनी करी तेनावडे नेत्रमांथी अंजन लइने अनुस्वार कर्युं. माथे अनुस्वार करवाथी अधीतव्य ने बदले अंधीतव्य थयु. अहो ! अनुस्वार रुपी एक मात्रा वधवाथी एकांत अहितकारी अर्थ थइ गयो.

पछी अशोक राजाए ते कागळने प्रमादथी फरी वांच्या विनाज बीडी दीधो, अने अवन्ति नगरीए मोकल्यो. कुमारे पण पितानी नाममुद्राथी अंकित ते लेखने पोताना बे हाथे ग्रहण करीने मस्तके चडाव्यो. पछी ते लेख वांचीने अत्यंत खेद पाम्यो, नेत्रोमा अश्रु आव्यां, अने लेखनो अर्थ कोइने कही शक्यो नहीं, एटले तेना बीजा अनुचरोए ते लेख वांच्यो. तेथी तेओ पण खेद पामीने बोल्या के ' हे कुमार ! शा माटे खेद पामो छो ? फरीथी अमे आ कागळनो निर्णय करशुं, " ते सांभळीने कुमार बोल्यो के "आज सुधी मौर्य वंशमां कोइ पण,गुरुनी आज्ञा उल्लंघन करनार थयो नथी; माटे जो [illegible] एम आज्ञालोपी थाउं, तो मे चलावेला मार्गने बीजा पण अनुसरशे." [illegible] पोतेज तपावेली शलाकाने

आखमा नाखोने अंध थयो केटलेक दिवसे अशोक राजाए ते वृत्तांत जाणीने विचार्युं के "कूट लेख लखनार तेमज फरीथी बराबर वांच्या विना लेख मोकलनार एवा मने धिक्कार छे। एम पोताना आत्माने निंदवा लाग्यो पछी अनुक्रमे राजाना जाणवामां आव्युं के 'कुमारनी सापत्न माताए आ दुष्ट काम कर्युं छे' ते उपरथी स्त्रीजातिनुं दुष्टपणुं जाणीने राजाए विचार्युं के "आ पुत्र अंध थवाथी हवे ते राज्यने अथवा मांडलिकपणाने पण योग्य नथी अहो! मारुं विष - जेनी आवी भक्ति छे तेनेज आवुं अंधपणुं प्राप्त थयुं." पछी राजाए कुणालने घणो समृद्धिवाळो ग्रास आप्यो अने तेनी सापत्न माताना कुमारने अवन्तिनुं राज्य आप्युं अनुक्रमे कुणालकुमारने शरद्श्री नामनी पत्नीथकी बत्रीश लक्षणवाळो पुत्र थयो ते पुत्र मोटो थयो, त्यारे कुणाल राज्य मेळववानी इच्छाथी पाटलीपुत्र नगरे प्रच्छन्नपणे आव्यो. त्यां राजपुत्रपणे प्रसिद्ध थया विना संगीतविनोद करतो अने स्वेच्छाथी नगरमां भमतो ते सर्व लोकने अति प्रिय थइ पड्यो. ते कुमार ज्यां ज्यां जइने संगीत करतो हतो, त्यां त्यां संगीतथी [1]कुरंगनी जेम आकर्षाइने पौरजनो दोडी जता हता लोकना मुखथी ते नरने गांधर्वकळामां कुशळ सांभळीने राजा पण तेनुं संगीत श्रवण करवामां उत्सुक थयो, एटले राजाए ते अंध माणसने बोलाव्यो. तेणे जवनिकामां रहीने गावानुं स्वीकार्युं राजाए ते प्रमाणे गोठवण करी गावानो हुकम कर्यो, त्यारे ते कुणाल पण यथास्थान मंद्र, मध्य ने तार ए त्रण ग्राम तथा सात स्वर विगेरे सहित रागनुं पोषण करतो सतो मध्यमां आ पद्य बोल्यो—

> प्रपौत्रश्चन्द्रगुप्तस्य, बिन्दुसारस्य नप्तृक ।
> एषोऽशोकश्रिय पुत्रो, अन्धो मार्गति काकिणीम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"चंद्रगुप्तनो प्रपौत्र, बिन्दुसारनो पौत्र अने अशोकश्रीनो पुत्र आ आंधळो काकिणी मागे छे."

पद्यमयधना मध्यमां गवायेला आ अर्थने सांभळीने राजाए पूछ्युं के—' हे गायक ! तारुं नाम शुं ?, ते बोल्यो के—

> स उवाच तवैवास्मि, कुणालो नाम नंदन ।
> त्वदाज्ञालेखमीक्षित्वा, योऽध स्वयमजायत ॥२॥

१ हरणनी जेम. २ पडदामां

"हुं आपनोज कुणाल नामनो पुत्र छुं के जे आपनो आज्ञापत्र जोइने जातेज अंध थयो छे."

ते सांभळीने जवनिकाने एकदम दूर करीने पोताना पुत्रने ओळखीने नेत्रथी अश्रुपात करतो तेने भेटी पड्यो पछी राजाए कह्यु के "हे पुत्र! हुं तने शुं आपुं?' ते बोल्यो के 'हे स्वामी! हुं काकिणी मागु छु.' तेनो अर्थ नहीं समजायाथी राजाए मंत्रीने पूछ्युं के 'आ शुं मागे छे?' मंत्रीए कह्युं के 'हे स्वामी! राजपुत्रोने काकिणी शब्दे करीने राज्य कहेवाय छे.' त्यारे राजाए पुत्रने कह्यु के 'हे वत्स! तुं राज्यने शुं करीश? दैवयोगे तारा नेत्र नाश पाम्यां छे तेथी तने ते योग्य नथी.' त्यारे ते कुमारे राजाने विनति करी के 'हे पिता! मारे पुत्र थयो छे, तेनो राज्यपर अभिषेक करो.' राजाए पूछ्यु के 'तारे क्यारे पुत्र थयो छे?' ते बोल्यो के 'हे स्वामी! संप्रति (हमणां) ज थयो छे.' पछी राजाए ते बाळकने मंगावीने पोताना खोळामां बेसाड्यो अने तेनु "संप्रति" नाम राख्यु पछी पोताना राज्यपर तेने बेसाड्यो.

अनुक्रमे संप्रति राजा वय, विक्रम अने लक्ष्मीथी वृद्धि पाम्यो. ते जन्मथीज परम श्रावक हतो अने तेणे दक्षिण भरतार्धं सा युं हतु आ दृष्टांत सांभळीने श्री सिद्धान्तना वाक्यमां अथवा पदमां कोइ पण वखत वर्णनु आधिक्य करवु नहीं

कोइ वखत वर्णनु अधिकपणुं करवाथी ते श्रेय करनारु पण थाय छे, ते विषे पादलिप्त सूरिनु दृष्टांत प्रथम कही गया छीए, माटे ते फरीने अहीं लखता नथी.

हवे वर्णने न्यून करवाथी पण मोटो दोष प्राप्त थाय छे, अने विद्याधरनी जेम चिंतवेलु फळ प्राप्त थतु नथी. तेनु दृष्टांत आ प्रमाणे—

विद्याधरनु दृष्टांत

राजगृह नगरमां एकदा श्री महावीरस्वामीने वादवा माटे श्रेणिक राजा जता हता तेवामां मार्गमां एक विद्याधरने आकाशमां उडी उडीने पडतो जोयो. तेथी विस्मय पामीने राजाए श्रीवीर भगवानने पासे जइ पूछ्यु के "हे प्रभु! आ विद्याधर अधुरी पांखो आवेला पक्षिनी जेम आकाशमां थोडेक उडे छे अने पाछो पृथ्वीपर पडे छे, तेनु शुं कारण?" भगवाने कह्युं के 'ते विद्याधर विद्यानो एक अक्षर भूली गयो छे, माटे तेम थाय छे.' ते सांभळीने अभयकुमारे ते विद्याधर पा-

से कह्युं के "हे विद्याधर ! जो तुं मने तारी पासेनी सघळी विद्या सिद्ध करावे, तो हुं तारी विद्यानो भूली गयेलो अक्षर तने बतावुं"

विद्याधरे तेनुं कहेवुं कबुल कर्युं. अभयकुमारने एक पद उपरथी अनेक पद तर्क करीने कहेवानी शक्ति हती केमके तेनी बुद्धि पदानुसारीणी हती. तेथी तेनी विद्यामां निस्मृत थयेला अक्षरो पूर्ण कर्या तेने बराबर पूर्ण थयेला जाणीने ते विद्याधर हर्ष पाम्यो. पछी तेणे अभयकुमारने विद्या सिद्ध करवाना उपाय बताव्या अने तेनी साथे दृढ मैत्री करीने पोताने स्थाने गयो. आ दृष्टांत उपरथी न्यून अक्षर भणवाथी यथार्थ फल पण प्राप्त थतुं नथी एम समजवुं. वळी अशुद्ध उच्चार करवाथी एटले सने स्थानके श विगेरे बोलवाथी पण पांडित्यपणुं पमातुं नथी ते उपर दृष्टांत कहे छे—

अशुद्ध उच्चार करवा उपर ब्राह्मणनी कथा

कोइ एक विद्वान ब्राह्मण काशीथी नीकळीने कोइ नाना गाममां आव्यो त्यां लोकोना मुखथी ते गामना रहीश कोइ ब्राह्मणनी प्रशंसा सांभळीने ते विद्वान वाद करवा माटे तेने घेर गयो ते ब्राह्मण पण मोटा आडंबरथी लोकमां पोतानुं पांडित्य बतावनारो हतो. तेथी नवीन विद्वानने आवतो जोइने मोटा शब्दथी बोल्यो के "हे ब्राह्मण ! शा निमित्ते तमे आ गाममां आव्या छो ? जो तमारे काइ 'शदेह' होय तो ते खुशीथी पूछो" ते सांभळीने पेला महा पंडिते विचार्युं के—"अहो ! आ कुत्सित पंडित शब्दनी शुद्धि (शुद्ध उच्चार) विना देडकानी जेम बराडा मारे छे, माटे तेने काइक उपदेश आपुं." एम विचारीने ते बोल्यो के—

शदेहोऽस्ति त्वया प्रोक्त , सदेहा बहवोऽभवन् ।
ते सर्वे विलयं जग्मु , किमन्यद्वच्मि ते जड ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे जड ! मने घणा सदेह हता, पण तुं सदेहने ठेकाणे शदेह बोल्यो ते सांभळी मारा सर्व सदेहो नष्ट थइ गया, बीजुं तने शुं कहुं !"

आ दृष्टांत सांभळीने कंठ, ओष्ठय विगेरे दरेक वर्णना स्थानने अनुसरीनेज व्यंजननो उच्चार करवो.

"वर्णने न्यूनाधिक करीने सूत्रनो पाठ करवाथी अर्थ क्रियानो भेद अवश्य

थाय छे, माटे गुरुनी सेवा करीने तेमनी पासेथी सिद्धांतना पाठनो शुद्ध उच्चार शीखवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य
चतुष्पष्ट्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २६४ ॥

व्याख्यान २६५ मुं.

अर्थानिन्हव नामना सातमा आचार विषे कहे छे.

शब्दार्थानामलोपाह्व, आचारः सप्तमः शुभः
तल्लोपेन महत्पापं, पुण्य वर्यं तदाश्रयात् ॥ १ ॥

भावार्थ—"शब्दना अर्थनो लोप न करवो, ते नामनो सातमो आचार शुभ छे. अर्थनो लोप करवाथी मोटुं पाप लागे छे, अने अर्थनो आश्रय करवाथी श्रेष्ठ पुण्य थाय छे."

शब्दना अर्थना अनिन्हव (लोप न करवो ते) उपर श्री हेमचद्राचार्यनुं दृष्टांत छे ते आचारनो लोप करवाथी वचनवडे न कही शकाय तेवुं मोटुं पाप लागे छे. ते उपर बाराक्षरीने भणनारा भरडानुं दृष्टांत छे, अने ते आचारनो आश्रय करवाथी श्रेष्ठ पुण्य थाय छे, ते उपर पण भरडानुं दृष्टांत छे ते दृष्टांतो कहे छे—

श्री हेमचंद्रसूरिनुं दृष्टांत.

अणहिल्लपुर पाटणमां राजा सिद्धराज जयसिंह राज्य करता हता. ते वखते कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचद्राचार्य पांडवचरित्र वाचता हता. ते चरित्र सांभळीने केटलाक दुर्जनोए राजा पासे जइने विज्ञप्ति करी के "हे राजन! पांच पांडवो हिमालयमां गळी जइने सिद्धि पाम्या छे, एवी वेदव्यासनी वाणीने हेमचद्राचार्य 'शत्रुंजय उपर तेओ सिद्धि पाम्या छे' एम कहीने दूषण आपे छे ते घटित नथी." ते सांभळीने राजाए आचार्यने बोलाव्या, एटले आचार्य राजसभामां आव्या राजाए पूछ्यु के "हे

भगवन् ! आजकाल वणिकजन पासे ज्याश यानमां शुं वंचाय छे ?" आचार्ये कह्युं के 'पांडवचरित्र वंचाय छे' राजाए पूछ्युं के 'तेमां पांडवो क्यां सिद्धि पाम्या छे ?' त्यारे पोते स्वीकार करेला श्री जिनेश्वरना आगमना अर्थनो आश्रय करीने आचार्ये कह्युं के "निर्मळ चारित्र अने तपस्या वडे आठ प्रकारना दुष्ट कर्मोनो नाश करीने अनशनवडे अनेक मुनिओ सहित पांडवो सिद्धाद्रि उपर सिद्धि पाम्या छे." ते सांभळीने राजाए कह्युं के "हिमालय उपर पांडवो सिद्धि पाम्या छे, ए व्यासऋषिना प्रमाणपणाथी आपनुं वाक्य अप्रमाण छे" त्यारे सूरि बोल्या के "हे राजन् ! भारतमां जे कह्युं छे ते सांभळो-रणसंग्राममां अर्जुननी बाणावलिथी वींधायेला अने पृथ्वीपर पडेला एवा जन्मथीज दान देवाना शीलवाळा (दानेश्वरी) श्री कर्ण राजाना दातारपणानी परीक्षा करवा माटे विश्वेश्वर श्रीकृष्णभगवान् ब्राह्मणनुं रूप धारण करीने 'हे कर्ण राजा ! मने कांइक आपो' एम बोलता तेनी पासे आव्या कर्ण राजा पण ते वखते पोतानी पासे बीजुं कांइ न होवाथी हाथमां पाषाण लइने सुवर्णनी रेखवाळा पोताना दांत पाडी तेमांनुं सुवर्ण आपवा तैयार थयो ते जोइ 'हुं तारापर प्रसन्न थयो छुं' एम बोलता श्री पुरुषोत्तम प्रगट थया. ते जोइने कर्ण बोल्यो के "हे परमेश्वर ! आपना दर्शन थवाथी मने सिद्धि तो मळशेज, परंतु जो आप तुष्ट थया हो तो जे स्थाने कोइनी दाहक्रिया थइ न होय, त्यां मारी दाहक्रिया करजो" ते सांभळीने श्री कृष्ण कर्णना शरीरने लइने तेवुं स्थान शोधवा लाग्या परंतु कोइ जग्याए तेवुं स्थान न मळवाथी समुद्रमां स्तंभनी जेवुं एक पर्वतनुं शिखर हतुं, तेने तेवुं स्थान मानीने त्यां कर्णने माटे चिता करवा तैयार थया, तेवामां आकाशवाणी थइ के—

> अत्र द्रोणशतं दग्धं, पाण्डवानां शतत्रयम् ।
> दुर्योधनसहस्रं च, कर्णसंख्या न विद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"आ स्थाने सो द्रोण, त्रणसो पांडवो अने एक हजार दुर्योधननो दाह थयो छे, अने कटला कर्णनो दाह थयो छे तेनी तो संख्याज नथी", १

तेथी हे राजन ! जो त्रणसो पांडवो त्यां बळ्या होय, तो अमारा पांच पांडवो शत्रुंजय उपर सिद्ध थया, अने आपना पांडवो हिमालयमां सिद्धि पाम्या, एम मानवामां शुं खोटुं छे?" आ प्रमाणे श्री हेमाचार्यनी युक्तिथी राजा प्रसन्न थयो, अने श्री हेमाचार्य राजाए विसर्जन करवाथी पोताना उपाश्रये आव्या।

आ दृष्टांत सांभळीने मोटुं कष्ट उत्पन्न थाय तोपण बुद्धिमान माणस सिद्धान्तना शब्दार्थने दूषण लगाडे नहीं. ए प्रमाणे परम मुनिओए परम रहस्य निर्णित कर्युं छे. ते आदरवुं.

बाराक्षरी भणनार भरडानुं द्रष्टांत

धनसार नामना गाममां अति मूर्ख एवा घणा भरडाओ रहता हता. पोताना मध्ये कोइ पण पंडित नथी एम धारीने तेओ सर्वेए एकठा थइने एक भरडाना 'नंदन' नामना पुत्रने कोइ पंडित पासे भणवा मोकल्यो ते नंदन जातिए भरडो होवाथी अत्यंत मूर्ख हतो, तेथी त्रण वर्षे मात्र ते बाराक्षरी भण्यो. पछी "आ नंदन वेदमाता भण्यो छे" एम कहीने ते पंडिते भरडाओने पाछो सोप्यो. ते महाजड भरडाओ पण 'आ नंदन वेदमाता भण्यो छे' एम मानीने तेने बहु मानवा लाग्या, वधारे शुं कहेवुं ! पण जे कांइ नंदन बोलतो ते काम विचार कर्या विनाज सर्व भरडाओ करता हता एकदा रात्रिए समग्र गाम अग्निथी बळी गयुं ते वखते एक घर पासेना वृक्ष नीचे बळेला कागडाओ पड्या हता ते जोइने तेओए नंदन पंडितने पूछ्युं के 'आ बळी गयेला कागडा खवाय के नहीं ?' त्यारे नंदन बोल्यो के "वेदमातामां (क) एटले कागडा अने (ख) एटले खावा लायक छे एम कह्युं छे तेथी एने जलदीथी खाइ जाओ." ते सांभळीने तेओ सर्वे खावाने तैयार थया. तेवामां कोइ परदेशी पंडिते तेमने जोया अने पूछ्युं के 'आ शुं करो छो ?' त्यारे तेओए नंदननुं कहेलुं कही आप्युं ते सांभळीने 'अहो ! आ महा मूर्खाओ छे.' एम मानीने तेणे नंदनने पूछ्युं के 'हे भरडा ! आवुं अयोग्य कार्य केम करे छे ?' त्यारे नंदन वेदमातामां कहेला वाक्यार्थने पोतानी बुद्धिथी कल्पना करीने बोल्यो के 'क' एटले कागडा, 'ख' एटले खावा योग्य, 'ग' एटले गण (समूह), 'घ' एटले घणा पुष्ट थयेला. आ प्रमाणे अनेक पापकारी शब्दोथी दूषण पामेलां तेनां वचनो सांभळीने ते पंडितनुं हृदय दयार्द्र थयुं तेथी तेणे कह्युं के—"हे नंदन ! दयाधर्मनी निंदा करीने आवा अनर्थो केम कर छे ? वेद मातानो अर्थ तें बराबर धारण कर्यो नथी. माटे हुं ते अर्थ बतावुं छुं ते सांभळ 'त थ' एटले तथैव तेज प्रमाणे सत्य छे. 'द ध' एटले दग्धाः काकाः (बळेला कागडाओ) 'न' एटले न भक्षणीयाः (भक्षण न करवा) आ प्रमाणेना सत्य अर्थ छोडीने पोतानी कल्पनाथी अनर्थनुं जल्पन करवुं योग्य नथी." इत्यादि युक्तिथी प्रतिबोध पामेला ते भरडाओ

अयोग्य कार्यथी निवृत्त थया अने सर्वदा ते परोपकारी पंडितनो उपकार मान्यो तेमज तेनी पूजा करी कह्यु छे के—

यो यथात्र समुपैति बोधं, तं तथैव हि नयेद्विबोधम् ।
यत्कखेति वचनाद्द्रिकजज्ञी, बोधितस्तथदधेति न वाक्यात् ॥१॥

भावार्थ—"जे माणस जे प्रमाणे बोध पामे तेम होय ते माणसने तेज रीते बोध पमाडवो कमके 'क ख' ना वचनथी कागडाने खावा तैयार थयेला ते 'त थ द ध न' ना वचनथी बोध पाम्या."

आ दृष्टांतमा नंदने करेलो अर्थ तजवा योग्य छे, अने पंडिते करेलो अर्थ ग्रहण करवा योग्य छे एम समजवु.

डाह्यो माणस शुद्ध अर्थ ग्रहण करवा माटे सारी रीते प्रयत्न करे छे ते विषे कहे छे—

यथार्थं श्रोतुं समीहा, भृशं कार्या दृढादरैः ।
श्रमणोपासकैर्नित्यं, सुज्ञे गुरावुपागते ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्ञानी गुरुनी जोगवाइ थाय त्यारे अति आदरवाळा श्रावकोए हमेशां शुद्ध अर्थ सांभळवा माटे अत्यंत इच्छा राखवी." ते उपर कुहलीक श्रावकनु दृष्टांत कहे छे.

कुरुलीक श्रावकनुं दृष्टांत

कोइ एक नगरमा सकलशास्त्रनिपुण अने स्वपर शास्त्रना रहस्यने जाणनार श्री 'रत्नाकरसूरि' रहेता हता. ते निरंतर राजसभामा जता हता. त्यां साहित्य, न्याय, छंद, व्याकरण अने अलंकारपिका विगेरेमा कुशळ अनेक विद्वानोने तेमणे जीत्या हता, तेथी ते विद्वानो रत्नाकरसूरिनु नाम सांभळीने मौन धारण करी जता हता आचार्य पण एक पद लइने तेना अनेक अर्थ करता हता. तेथी राजसभामा राजाए तेमने 'अनेकार्थवादी' एवु बिरुद आप्यु हतु ते सूरि हमेशा पालखीमा बेसीने राजसभामा जता हता ए प्रमाणे थवाथी अनुक्रमे तेओ चारित्रगुणथी हीयमान थता गया अने राजा, मंत्री तथा सामंत विगेरेनु आपेलु अन्न, वस्त्र विगेरे पण लेवा लाग्या एम करता करता तो राजादिकने प्रसन्न करीने मणि, माणिक्य, मुक्ताफळ विगेरे पण लेवा माड्यु. तेथी

तेमणे मेळव्युं एटले ते त्रण गारववडे युक्त थइ गया, तोपण ते कदाचित् पण वीतरागना वचननी अपेक्षा छोडता नहीं, अने प्रमाद विगेरेना कारणथी पण श्रीतीर्थंकर भगवते यथार्थ अवलोकन करीने प्ररुपण करेला तत्त्वने कोइ वखत दूषण लगाडता नहीं. तेमनो प्ररुपणा पक्ष अति निर्मळ हतो.

एकदा कोइ अन्य गामनो रहेनार जीवाजीवादि तत्त्वने जाणनार अने साधुओने पिता तथा भाइ समान माननार एक श्रावक घी वेचवा माटे ते नगरमां आव्यो. ते घीना भरेलां अनेक कुडलां वेचवा लाग्यो, तेथी लोकमा तेने सौ कुडलीओ कहेवा लाग्या. एक वखत तेणे मार्गमां अनेक चाडी ब्राह्मणोथी परिवृत्त थयेला अने पालखीमां बेठेला तथा राजसेवकोथी सेवाता रत्नाकरसूरिने जोइने विचार्युं के– "अहो ! आ शासनना प्रभावक अने गुणी एवा सूरि प्रमादमग्न थइ गया लागे छे. तेनी पासे मारे काइ पण बोलवुं योग्य नथी, केमके ब्रह्माने भणवानो विधि कोण शीखवी शके ? तोपण जोउं तो खरो के आ आचार्य सर्वथी भ्रष्ट थया छे के देशथी भ्रष्ट थया छे " एम विचारीने राजमार्गमांज विधिपूर्वक तेमने नमीने ते स्तुति करवा लाग्यो के—

गोयम सोहम जंबू पभवो, सिज्जंभवो अ आयरिआ ।
अन्नेवि जुगप्पहाणा, तुह दिट्ठे सव्वेवि ते दिट्ठा ॥ १ ॥

भावार्थ–" आपने जोवाथी गौतमस्वामी, सोधर्मस्वामी, जंबूस्वामी, प्रभवस्वामी अने सय्यंभवस्वामी तथा बीजा पण युगप्रधान एवा सर्व आचार्योने में जोया एम हुं मानुं छुं. "

आ प्रमाणे सांभळीने गुरुए नीचुं मुख करीने तेने कह्यु के " कागडाने हंसनी उपमा शोभती नथी, केमके ते महागुणी आचार्योना अध्यवसायमांथी मात्र एक समय पुरतो शुद्ध अध्यवसाय पण जो मारा आखा भवने विषे थाय तो तेथी हुं निर्मळ थइ जाउं. " ए प्रमाणे सांभळीने ते श्रावके विचार्युं के " अहो ! आ सूरिने धन्य छे अनेक मिथ्यात्वीओनो सत्र छतां पण श्री तीर्थंकरना वचननी स्वल्प अपेक्षा पण तजता नथी, माटे ते सर्वथा भ्रष्ट थयेला नथी. " पछी ज्यारे गुरु उपाश्रये आव्या त्यारे ते श्रावके त्यां आवीने विधिपूर्वक वदना करीने तेमनी देशना सांभळी. पछी ते श्रावके " दोससयमूलजाल० " आ उप-

देशमालामाथी श्री वीरस्वामीना शिष्य जिनदास गणिए रचेली गाथानो अर्थ पूछ्यो, त्यारे सूरिए पोतानी बुद्धिथी व्याकरण, नाममाळा विगेरेने अनुसार सर्व पंडितो मान्य करे एवो नवीन अर्थ कर्यो. ते सांभळीने नम्रतापूर्वक ते श्रावक बोल्यो के-" हे स्वामी ! आपनी बुद्धिने धन्य छे, के जेथी आपे आवो नवीन अर्थ कर्यो, परंतु काले तेनो मूळ अर्थप्रकाशीने मारा आत्माने कृतार्थ करजो." एम कही गुरुने वांदीने ते पोताने कामे गयो.

बीजे दिवसे आवीने तेज गाथानो मूळ अर्थ तेणे पूछ्यो, त्यारे सूरिए मनमां विचार्यु के-" मूळ अर्थमां बतावेली प्रवृत्तिनो व्यवहार मारे विषे बाह्यथी पण शुद्ध नथी, तो अतर्वृत्तिथी तो क्याथीज होय ? माटे तेमां बतावेला अर्थनी शुद्ध प्रवृत्ति विना ते अर्थनुं वर्णन करवु शोभे नहीं, तेम ते मूळ अर्थमां दोष आपवो, ते पण योग्य नहीं " एम विचारीने तेणे ते दिवसे पण बीजो नवीन अर्थ शब्दपर्यायने अनुसारे कर्यो. ते सांभळीने पेलो श्रावक पण तेज रीते प्रशंसा करीने गयो त्रीजे दिवसे पण श्रावके जइने तेज गाथानो मूळ अर्थ पूछ्यो, त्यारे सूरिए कोइ वखत नहीं सांभळेलो एवो कोइ नवीन अर्थ कर्यो. ए प्रमाणे छ मास सुधी नवा नवा अर्थ करवामां तत्पर रहेला सूरिनो, अक्षय ज्ञानभंडार जाणीने ते श्रावके गुरुने विज्ञप्ति करी के-" हे स्वामी ! जेम गंगानदीनी रतीना कणियां गणवामां अनंतज्ञानी विना बीजा कोइनी शक्ति नथी, तेवीज रीते आपना गुणनुं वर्णन करवामां पण मारा जेवो कोइ पण माणस समर्थ नथी हे गुरु ! घी वेचीने उपार्जन करेलुं सर्व धन आजे समाप्त थइ रह्युं छे, तेमज आजे नवुं कार्य पण आव्युं छे तेथी हवे हुं मारे घेर जइश, परंतु मारा मनमां आटलीज वात खटके छे के-आपनी जेवा गीतार्थ गुरु पासेथी पण जो ते गाथानो यथार्थ अर्थ मने प्राप्त न थयो तो पछी ते अर्थ मने बीजे क्याथी प्राप्त थशे ? नहींज थाय." त्यारे सूरि बोल्या के " तारे काले सवारे अहीं अवश्य आववुं." ते सांभळीने तेने हर्ष थयो, अने ते पोताने उतारे गयो.

पछी सूरिए विचार कर्यो के " विषयो जेम जेम वृद्धि पामे छे, तेम तेम आत्मा तेनो वधारे वधारे लोभ करे छे, परंतु शास्त्रमां कह्युं छे के 'मुक्त्वा श्रियं' कामदुधा तत किं' जो लक्ष्मीनो त्याग कर्यो, तो पछी कामदुर्घानुं शुं काम छे ? इत्यादि भावना भावीने सूरिए मुक्ताफळ विगेरे एकठुं करेलुं सर्व धन तजी दीधुं अने द्रव्य तथा भाववडे प्रथमना सूरि जेवा थइने पोतांना आत्माने तारवा माटे श्रण

रत्नने अंगीकार करीने रह्या.पछी प्रातःकाळे ते श्रावक आव्यो; त्यारे तेणे समस्त पापने जेणे दूर कर्या छे, तथा जेणे अपूर्व संयमगुण धारण कर्यो छे एवा सूरिने जोइने तेमनी त्रण प्रदक्षिणा करी, प्रणामपूर्वक स्तुति करीने ते बोल्यो के ' हे स्वामी ! आजे हु आपना दर्शनथीज ते गाथानो मूळ अर्थ समजी गयो. आपना सघळा अवयवोमां ते अर्थ स्पष्ट देखाय छे. अहो ! आपनी योग्यता लोकोत्तर छे आपे 'मूळ स्वरूपे थइनेज मूळ अर्थनो हुं प्रकाश करीश' एवी प्रतिज्ञाने सारी रीते पाळी छे मारा मनोरथ पूर्ण करवाथी मारो भव आपे सफळ कर्यो छे. वळी आपनी क्षमा पण अकलित छे, केमके छ महिना पर्यंत एक ने एक गाथानो अर्थ पूछया छतां कोइ वखत पण आपे कोपनो आवेश मात्र पण कर्यो नथी उलटो ज्यारे ज्यारे हु प्रश्न करतो त्यारे त्यारे सुधादृष्टिनी दृष्टिथी मने पवित्र कर्यो छे " आ प्रमाणे सूरिनी स्तुति करीने तेणे फरीने वंदना करी, पछी सूरिए ते गाथानो मूळ अर्थ कह्यो

दोससयमूलजालं, पुव्वरिसिविवज्जिअं जइ वंतं।
अत्थं वहसि अणत्थं, कीस अणत्थं तवं चरसि ॥ १ ॥

भावार्थ-"सेंकडो दोषोने उत्पन्न करवामां मूळ जाळ समान अने पूर्वना सूरिओए वर्जित करेला तेमज वमी नाखेला एवा अनर्थकारी अर्थ (धन)ने जो तु वहन करे छे, तो पछी निरर्थक तप शा माटे करे छे? अर्थात् धनने ग्रहण करे छे तो पछी तपस्या करवी ए निष्फळ छे."

विवेचन-रागादिक दोषोने उत्पन्न करवामां मूळ एटले कारण रूप अने मत्स्यनी जाळनी जेम बंधना हेतुभूत होवाथी दोषोनी जाळ समान अर्थ (धन) छे, तेथीज पूर्वे थइ गयेला वैरस्वामी विगेरे आचार्योए तेनो त्याग करेलो छे वळी ते धन नरकमा गमन कराववा विगेरे अनेक अनर्थनु हेतु छे. तेवा धनने जो तुं वहन करे छे तो पछी निष्प्रयोजन एवु अनशनादिक तप शा माटे आचरे छे ? कारण के पूर्वापरनो विचार करतां धनसंग्रह अने तप ए बन्ने साथे घटतां नथी.

आ प्रमाणे ते गाथानो मूळ अर्थ यथार्थ सांभळीने ते श्रावक अति हर्ष पाम्यो अने पोताने स्थाने गयो पछी सूरि पण पोताना पापनी आलोचना करवा माटे श्री सिद्धगिरि उपर जइने श्री जिनेश्वर पासे "श्रेयः श्रिया मंगलकेलीसद्म" इत्यादि वैराग्यगर्भित स्तुति[1] करीने पोताना आयुष्यनो अंत समीप जाणी चारे

[1] आ स्तोत्र रत्नाकरपच्चीशी तरीके हालमां प्रचलित छे

आहारना प्रत्याख्यान करवारूप अणसण करीने स्वर्गे गया.

सूरिए मुक्ताफळ विगेरे जे धन प्रथम ग्रहण कर्युं हतुं ते सर्वने गृहस्थोए घंटीमां दळावीने कोइ ठेकाणे उडाडी दीधुं, केमके ते कोइ पण कार्यमां न कल्पे एवुं द्रव्य हतुं. आ प्रमाणे वृद्धना मुखथकी सांभळ्युं छे तेज प्रमाणे में अहीं लख्युं छे, बाकी तत्त्व तो शोधन करीने बहुश्रुत पासेथी जाणी लेवुं.

"सद्गुरुने पामीने ते श्रावके आग्रहपूर्वक गाथानो यथार्थ अर्थ सांभळवानी स्पृहा करी, अने निन्हवपणाना दोषथी रहित ते सूरिए पोतानी बुद्धिथी मूळ अर्थने गुप्त राखी नवा नवा अर्थो कर्या, पण छेवट ते श्रावके सूरिने अर्थानिन्हव नामना सातमा आचारथी युक्त कर्या."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य पंचषष्ठ्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २६५ ॥

व्याख्यान २६६ मुं

सूत्रार्थना अनिन्हव रूप आठमा आचार विषे.

सूत्रार्थयोर्द्वयोर्नैव, निन्हवं कुरुते सुधीः ।
अष्टमः स्यात्तदाचारः, श्रुतवद्भिः श्रुते स्तुतः ॥ १ ॥

भावार्थ—"बुद्धिवंत माणस सूत्र तथा अर्थ ए बन्नेनो निन्हव करतो नथी, ते आचारने शास्त्रज्ञ आचार्योए शास्त्रने विषे आठमो आचार कह्यो छे." आ आचार उपर दृष्टांत कहे छे.

श्री अभयदेवसूरिनुं दृष्टांत

श्री अभयदेवसूरि सोळ वर्षनी अंदर बाल्यावस्थामांज जैनमतना तथा अन्य मतना सर्व शास्त्रोना पारगामी थया हता. एकदा व्याख्यानमां पांचमा अंगमां वर्णवेला रथमूशळ अने मुशल विगेरे चेडा राजा तथा कोणिक वच्चे थयेला संग्रामोनुं वर्णन करतां रौद्र अने वीर रसनुं एवुं वर्णन कर्युं के ते सांभळीने व्याख्यानमां आवे-

ला केटलाक शस्त्रधारी क्षत्रियो परस्पर युद्ध करवा माटे त्यांज सन्नद्धबद्ध थइ गया. ते जोइने अवसरना जाण एवा अभयदेव मुनिना गुरुए नरतज नागनत्तुआनुं वर्णन करीने एवो शांत रस विस्तार्यो के ते सांभळीने सर्वे स्वस्थ थइ गया, अने मनमां विचारवा लाग्या के " अहो ! अमने धिक्कार छे. के व्याख्यानना समयमां अमे प्रमादथी उन्मत्त थइ गया, अमे ते योग्य कर्यु नहीं, पण आ गुरुए वर्णन करेला नागनत्तुक श्रावकने धन्य छे, के जेणे संग्राममां पण पोताना आत्मधर्मनी पुष्टि करी." पछी गुरुए अभयदेवने शिखामण आपी के " हे शिष्य ! तारी बुद्धिनो विस्तार वाणीथी अगोचर छे, परंतु तारे सर्वत्र लाभालाभनो विचार करीने वर्णन करवुं " त्यार पछी एक दिवस सायंकाळनुं प्रतिक्रमण थइ रह्या पछी कोइ एक शिष्ये श्रेणिक राजाना पुत्र नंदिषेण ऋषिए अथवा नेमिनाथजीना गणधर नंदिषेणजीए श्री सिद्धाचळ उपर रचेला अजितशांति स्तवनमांथी "अवरतरविआरणिआहिं" इत्यादि चार गाथानो अर्थ पूछयो, त्यारे श्री अभयदेवे कह्यु के "अनेक प्रकारना शुभ नेपथ्यने धारण करनारी देवसुंदरीओए जेमना चरणकमळने वंदना करी तोपण जेनुं मन जरापण क्षोभ पाम्युं नहीं तेवा श्री अजितनाथने हुं प्रणाम करुं छु." आ प्रमाणे ते देवसुंदरीओना जे बीजां सर्व विशेषणो ते गाथाओमां हतां तेनुं शृंगाररसथी भरेलु विस्तारथी वर्णन कर्यु. ते वखते उपाश्रयनी पासेनाज मार्गेथी चाली जती शृंगाररसमां निपुण एवी कोइ कुमारी राजपुत्रीए ते वर्णन सांभळ्युं कोइ वखत नहीं सांभळेलुं एवु अद्भुत वर्णन सांभळीने तेणे विचार कर्यो के " जो आ पंडितशिरोमणि मारो स्वामी थाय तो मारो जन्म तथा जीवित सफळ थाय, अने हर्षपूर्वक लीलाए करीने तथा शृंगारशास्त्रना विनोदे करीने दिवसो निर्गमन थइ शके; माटे हुं त्यां जइने ए श्रेष्ठ नरने प्रार्थना करीने लोभ पमाडुं." एम विचारी ते उपाश्रयना बारणा पासे आवी, अने मंजुल स्वरथी बोली के "हे शृंगारशास्त्रने जाणनार ! हे श्रेष्ठ बुद्धिमान ! बारणा उघाडो. हुं मदनमंजरी नामनी राजपुत्री गुणगोष्ठी करवा माटे तमारी पासे आवी छु" आ प्रमाणे अकाळे स्त्रीनो शब्द सांभळीने गुरुए अभयदेवने ठपको आप्यो के "प्रथम तमने जे शिखामण आपी हती ते सर्व भूली गया, अने ज्यां त्यां चातुर्य देखाडो छो पण शुं तमने लज्जा आवती नथी ? हवे शुं करशो ? तमारा गुणथी आकर्षाइने सीमंतपाथडाए[1] पहोचाडनारी आ सीमंतीनी[2] आवी छे. ते वियोगीनीनी जेम वारंवार बोलावे छे." ते सांभळीने अभयदेव बोल्या

1 पहेली नरकनो पहेलो नरकावासो   2 स्त्री

के "हे पूज्य! मारा वाक्यथी ते जेम विभ्रम पामी सती आशाए आवी छे, तेमज आपनी कृपाथी ते ससभ्रम थइने आशारहित पाछी जती रहेशे, माटे ते बाबत आप खेद करशो नहीं." एम कहीने अभयदेवे द्वार उघाडी राज्यकन्याने कह्युं के-"हे राजपुत्री! अमे साधु छीए, तेथी अमे एक मुहूर्त मात्र पण एकांतमां स्त्री साथे धर्म संबंधी वार्ता पण करता नथी, तो अमे गोष्ठिनी पुष्टि तो शानीज करीए? वळी अमे कोइपण दिवस दातण करता नथी, मुख धोता नथी, तथा स्नान विगेरे बाह्य देहशुद्धिने इच्छता नथी, तेमज निर्दोष एवुं अत मात अने लुखुं अन्न भिक्षा मागीने लावीए छीए अने मात्र देहना निर्वाहने माटेज खाइने रहीए छीए आ शरीर अस्थि, मळ, मूत्र अने विष्ठा विगेरेथी भरेलुं महा दुर्गंधमय बिभत्स छे. तेमां सारभूत शुं छे? कुत्सित पुरुषोज एवा बिभत्स विषयसुखनी इच्छा राखे छे. अमारा शरीरनो सारवार बाल्यावस्थामां मातपिताएज करी हशे, त्यारपछी अमे तो बिल्कुल करी नथी, माटे आवा अमारा दुर्गंधमय शरीरनो स्पर्श तारा जेवी राजपुत्रीए स्वप्नमां पण करवा जेवो नथी" आ प्रमाणे बिभत्स रसनुं वर्णन सांभळीने ते राजपुत्री तरतज जती रही अभयदेव उपसर्गरहित थइने गुरु पासे आव्या. गुरुए कह्युं के-"तारी बुद्धिनी कुशळता समुद्रना पूरथी जेवी अधिकतर छे, परंतु वर्तमान समयमां तेने शमाववी योग्य छे तेथी तेम करवा माटे तारे छाशमां करेलो जुवारनो ढुमरो तथा कालिंगडानुं शाक शोधी वहोरी लावीने वापरवुं, जेथी तारी बुद्धि न्यून थशे कह्युं छे के—

> तरबूज कलिंग च, जोज्य शीत च वातुलम् ।
> कपित्थ बदरीजंबू-फलानि घ्नंति धीषणाम् ॥ १ ॥

भावार्थ-"तडबूच, कालिंगडुं, ठंडुं तथा वायु करनार भोजन, कोठुं, बोर अने जांबू ए सर्व वस्तु बुद्धिनो नाश करनार छे"

गुरुना वचननो तेणे स्वीकार कर्यो, अने तज प्रमाणे घणे भागे आहार करवा मांड्यो. गुरुए तेने अत्यंत योग्य जाणीने सूरिपद आप्युं पछी अभयदेवसूरि विहार करता करता अनुक्रमे थंभनपुर आव्या त्यां अति तुच्छ आहार करवाथी कुष्टना महा व्याधिथी ते एवा पीडित थइ गया के हाथ पग हलावनानी पण तेनामां शक्ति रही नहीं एक दिवस सायंकाळनुं प्रतिक्रमण करीने सूरिए श्रावकोने कह्युं के "आ

व्याधिनी पीडा बहु वधी पडवाथी हु एक क्षण पण ते सहन करी शकवा समर्थ नथी तेथी काले अनशन करीश " ते साभळीने सर्वने अति खेद थयो. पछी रात्रिमा शासनदेवीए आवीने सूरिने कह्यु के "हे गुरु ! उंघो छो के जागोछो ?" गुरुए कह्यु के "जागु छुं" देवीए कह्युं के "उठो, आ नव सूत्रनी कोकडी उखेळो." गुरु बोल्या के "आवा शरीरे हु शी रीते उखेळी शकु ?" देवीए कह्यु के "नव अगनी[1] वृत्ति करवानु हजु तमारे आधीन छे, अर्थात् तमे करवाना छो तो तेनी पासे आ ते कोण मात्र छे ? माटे आ हाथमां ल्यो हजु तमे चिरकाळ सुधी जीवशो " गुरु बोल्या के "आवा शरीरे हुं श्रीजिनेश्वरना आगमनी नवांगनी टीका शी रीते करीश ?" देवी बोली के "छ मास सुधी आचाम्ल तप करो " पछी शासनदेवीना निर्देशथी सूरिए छ मास सुधी आचाम्ल तप कर्यो, अने कठिन शब्दोनी टीका करीने नवागवृत्ति पूर्ण करी.[2] तेवामा शरीरने विषे फरीथी महारोग उत्पन्न थयो. ते वखते श्री धरणेन्द्रे श्वेत सर्पनु स्वरूप धारण करी त्यां आवीने सूरिना शरीरने चाटीने नीरोगी कर्यु. पछी धरणेन्द्रे सूरिने कह्युं के "सेढी नदीने तीरे श्री थंभननाथनी प्रतिमा पृथ्वीमा गुप्त रहेली छे, तेने तमे प्रगट करो त्या ओचिंती एक गाय आवीने ते प्रतिमा जे स्थाने छे ते स्थानपर दूध झरशे. ते चिन्हथी ते मूर्तिनु स्थान निश्चित जाणजो " आ प्रमाणे कहीने धरणेन्द्र अदृश्य थया पछी प्रातःकाळे अभयदेवसूरि सघ सहित सेढी नदीने काठे आव्या. त्यां गायने दूध झरतो जोइने गोवाळना बाळकोए बतावेली भूमि पासे प्रतिमाना स्थाननो निश्चय थवाथी सूरिए पार्श्वप्रभुनी स्तुतिने माटे नवीन[3] स्तोत्र रचवा माडयु, तेना बत्रीश काव्य कर्या पछी तेत्रीशमु काव्य कहेतां तरतज श्री पार्श्वनाथनु बिंब प्रगट थयु ते तेत्रीशमु काव्य सूरिए देवताना आदेशथी गोपवी दीधु छे[4] ते प्रतिमाना दर्शन मात्रथीज सर्व व्याधिओ मूळथी नाश पाम्या. पछी श्री सघे गुरुने ते प्रतिमानी उत्पत्ति पूछी, त्यारे गुरुए कह्यु के " पूर्वे श्री वरुणदेवे अगियार लाख वर्ष सुधी आ प्रतिमानु पूजन कर्यु हतुं. त्यार पछी* ( ) वर्ष सुधी रामचंद्रे तेने पूजी, त्यारपछी एशी हजार वर्ष सुधी

१ श्री आचारांग ने सुयगडागनी वृत्ति श्री शीलांकाचार्ये करी हता बाकी नव अगनी वृत्ति करवी बाकीमा हती २ स्थभन पार्श्वनाथनी मूर्ति प्रगट कर्या पछी टीकाओ कर्यानु बीज स्थाने कहेलु छे ३ आ स्तोत्र ' जयतिहुअण ' नामे प्रसिद्ध छे ४ जयतिहुअणनी टीकानी पीठिकामा ३२ मा पछी बे काव्य छता गोपव्यानी हकीकत छे ने आ थारे ३१ काव्यज वर्त ।।

* नवाहद्रासिकान् यावत् एवा शब्द पाठ छ ते अशुद्ध जणायाथी कह्या नथ त लखी शकायु नथी.

तक्षक नागे तेनी पूजा करी, त्यारपछी घणा काळ सुधी सौधर्मेन्द्रे पूजी, त्यारपछी द्वारकानगरीमा कृष्णवासुदेवे श्री नेमिनाथना मुखथी मोटा अतिशयवाळी ते प्रतिमानी कथा सामळीने मोटा प्रासादमा तेनु स्थापन करीने पूजा करी. द्वारकानो दाह थया पछी ते नगरीने समुद्रे डुबावी दीधी, एटले प्रतिमा तेवीज स्थितिमा समुद्र मध्ये रही. त्यारपछी केटलेक काळे कातिनगरीनो निवासी धनपति नामनो श्रेष्ठी त्याथी जतो हतो तेवामा तेना वहाणो देखताना अतिशयथी स्खलित थया, तेथी श्रेष्ठी विचारमा पड्यो तेवामां आकाशवाणीथी "अहीं जिनेश्वरनी प्रतिमा छे" एम तेणे जाण्यु पछी श्रेष्ठीना निर्देशथी खलासीओए समुद्रमां सुतर नाखीने सात काचा तातणाथी ते प्रतिमाने बाधीने बहार काढी पछी तेने कातिनगरीमा लइ जइने श्रेष्ठीए मोटा प्रासादमा स्थापी. ते प्रासादमा ते प्रतिमा बे हजार वर्ष रही.

ढकपुरना राजानी पुत्री भोपलदेवी अद्भुत स्वरुपवान् हती तेनापर आसक्त थइने वासुकी देवता तेने भोगववा लाग्यो. तेनाथी नागार्जुन नामे पुत्र थयो. तेनापरना वात्सल्यथी ते नागेंद्र सर्व महौषधिओना फळ मूळ अने पांदडा तेने खवराव्या. तेना प्रभावथी ते सिद्धपुरुष थइने शालिवाहन[१] राजानो गुरु थयो पछी श्री पादलिप्तसूरिना प्रसादथी ते नागार्जुन आकाशगामी विद्या पामीने रसने[२] सिद्ध करवा उत्सुक थयो तेने माटे तेणे अनेक उपायो कर्या, पण रस बंधायो नहीं, तेथी तेणे गुरुने तेनो उपाय पूछयो गुरुए कह्यु के "महिमावाळी श्री पार्श्वनाथनी प्रतिमानी पासे ते प्रतिमानी दृष्टिए सर्व लक्षणवाळी सती स्त्री ते रसनु मर्दन करे तो ते रस स्थिर थइने कोटीवेधी थाय" ते साभळीने नागार्जुने पोतानां पिता वासुकीनु ध्यान धरीने तेने बोलाव्यो पछी तेना पूछवाथी वासुकीए कह्यु के "कातिनगरीमां अति महिमावाळी प्राचीन श्री पार्श्वनाथनी प्रतिमा छे." नागार्जुने कातिनगरीथी ते प्रतिमानु हरण करीने सेढीनदीने काठे एकातमा लावीने तेने स्थापी पछी तेनी पासे रस साधन करवा माटे शालिवाहन राजानी पतिव्रता स्त्री चद्रलेखाने हमेशा रात्रे सिद्ध थयेला व्यतर मारफत मगावीने ते चद्रलेखा पासे रसनु मर्दन करावना लाग्यो. छ मासे ते रस स्थिर थयो. ते ठेकाणे रस करता पण अधिक महिमावाळु अने समग्र लोकोना इच्छित अर्थने पूर्ण करनारु स्तभन नामे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनुं तीर्थ थयु पछी अनुक्रमे देवना वचनथी 'ते प्रतिमा अहीं छे' एम जाणीने "जयतिहुअण

१ सात वाहन एव पण वेनु बीजु नाम हतु

२ सर्वसिद्धि रस.

वृक्कप्पकल्प०" इत्यादि काव्योवडे में तेनी स्तुति करी, एटले ते प्रतिमा प्रगट थइ छे प्रथम आ प्रतिमा कोणे भरावी छे ते सांभळ्युं नथी." आ प्रमाणे श्री अभयदेवसूरिए कहेलो महिमा सांभळीने श्रीसंघे तेज स्थाने प्रासाद करावी त्यां स्तंभनपुर नामे गाम वसाव्युं. सर्व लोको त्यां मोटा मोटा महोत्सवो करवा लाग्या. पछी ज्यारे संवत १३६८ नी सालमां दुष्ट म्लेच्छोए गुजरातमा उपद्रव कर्यो त्यारे वर्तमान स्तंभतीर्थनुं स्थापन थयुं छे. अत्यारे ते प्रतिमा स्तंभतीर्थ बंदरे (खंभातमा) विद्यमान छे.

प्रथम शिलांकाचार्ये पहेला बे अंगनी वृत्ति करी हती. त्यारपछीना नव अंगनी टीका श्री अभयदेवसूरिए शासनदेवीना वचनथी पोतानी प्रतिकल्पनानो उपयोग कर्या शिवाय करी छे. त्यारपछी संवत ११३५ मा श्री अभयदेवसूरि स्वर्गे गया छे. केटलाक ११३९ ना संवतमा स्वर्गे गयानुं कहे छे.

"स्थानांगसूत्र विगेरे नव अंगनी टीका करनारा श्रीअभयदेवसूरि थया. ते आठमा आचारने पाळनारा श्री अभयदेवसूरिने श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्वामीए नवांग आप्या छे, अर्थात् ते प्रभुना प्रसादथीज तेनी टीका रचवाने ते भाग्यशाळी थया छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य षट्षष्ठ्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २६६ ॥

व्याख्यान २६७ मुं

शुभाशुभ श्रुतनो सम्यग् अर्थ करवा विषे.

अप्रशस्तं प्रशस्तं वा, शास्त्रं यत्समुपागतम् ।
प्रशस्तार्थे प्रयोक्तव्यं, मौनीन्द्रागमवेदिभिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" अप्रशस्त (अशुभ) अथवा प्रशस्त (शुभ) गमे तेवुं शास्त्र प्राप्त थाय, तोपण तेनो जिनागमने जाणनारा पंडितोए प्रशस्त अर्थमांज योजना करवी, अर्थात् तेनो ते अर्थज करवो."

-प्रशस्त श्रुत एटले स्याद्वादथी लांछित-स्याद्वादयुक्त शास्त्र, अने अप्रशस्त एटले भृगारादिक शास्त्र. ते सर्व शास्त्रने प्रशस्त अर्थमां-अनेकांत पक्षवाळा अर्थमा-वैराग्योत्पादक अर्थमा जोडी देवा.

क्षुल्लक मुनिनुं दृष्टांत कहे छे

चंपानगरीमां सिंहसेन राजा राज्य करतो हतो. तेने राहुगुप्त नामे जैनधर्मी मंत्री हतो. एकदा राजाए सभामा बेसीने धर्म संबंधी प्रश्न कर्यो अर्थात् धर्मविचार पूछ्यो के'खरो धर्म शु छे?'ते वखते जेओने जे धर्म अभिमत हतो, तेओ ते धर्मनु प्रतिपादन करवा लाग्या.तेमा केटलाक एकांत हिंसाए करीने,केटलाक एकांत अहिंसाए करीने, केटलाक आत्मारामने पीडा नहीं आपतां यथेच्छ भोगादिकें करीने अने केटलाक सहन निःस्पृहताए करीने, इत्यादि पोतपोतानी मतिकल्पनाए करीने धर्मनु स्थापन करवा लाग्या ते सर्व सांभळीने मंत्री तो मौनभ रह्यो, तेथी राजाए मंत्रीने कह्यु के "तमे केम काइ धर्म संबंधी निर्णय जणावता नथी?" मंत्रीए कह्यु के "हे स्वामी! आवा पक्षपातना वाक्योथी शो निर्णय थाय? विचारपूर्वक युक्तिवाळा प्रभोत्तरो जाणीने पोतानी जातेज धर्मनी परीक्षा करवी योग्य छे." पछी मंत्रीए राजानी सम्मतिथी "सकुंडल वा वदनं न वत्ति" "मुख कुंडल सहित छे के नहीं?" ए चोथु पाद समस्यापूर्तिने माटे आखा नगरमा प्रसिद्ध कर्यु. ते साथे कहेवराव्यु के ते आखी गाथा राजाना भंडारमा छे. वळी नगरमा आघोषणा करावी के "जे कोइ आ समस्या पूर्ण करशे तने राजा इच्छित दान आपशे अने तेनो भक्त थशे." ते सांभळीने सर्व लोक ते गाथानु पाद गोखवा लाग्या. पछी सातमे दिवसे राजाए ते समस्यापूर्तिने माटे सभा भरी. तेमा प्रथम एक परिव्राजक बोल्यो के—

> भिक्खापविट्ठेण मए ज्ज दिट्ठं, पमयामुहं कमलविसालनेत्तं।
> वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु दिट्ठं, सकुंडलं वा वदनं न वेति ॥१॥

भावार्थ—"में भिक्षाने माटे आजे कोइने घेर प्रवेश कर्यो त्या कमळना सरखा विशाळ नेत्रवाळु एक स्त्रीनु मुख जोयु, पण मारु चित्त व्याक्षिप्त होवाथी में बराबर दीठु नहीं के ते मुख कुंडळ सहित हतु के नहीं?"

आ प्रमाणे सांभळीने मंत्रीए राजाने कह्यु के "हे स्वामी! आ परिव्राजक पारमार्थिक धर्म जाणतो नथी, केमके बराबर न जोवाना कारणमा चित्तनी व्याक्षिप्तता

(व्याकुळता) बतावी छे, पण वीतरागपणुं बताव्यु नथी. भोजनप्राप्तिना अभावे उपवास थयो, तो तेथी काइ उपवासनु फळ न होय" ते सांभळीने राजाए ते गाथा विसवादी अर्थवाळी जाणीने ते परिव्राजकने तिरस्कारपूर्वक काढी मूक्यो. पछी बीजो तापस बोल्यो के—

फलोदगेणमि* गिहे पविट्ठो, तत्थासणथ्था पमया निरिक्खिया।
वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु दिट्ठं, सकुंडलं वा वदनं न वेति ॥ २ ॥

भावार्थ—"हुं प्रातःकाळे कोइना घरमा पेठो, त्यां एक प्रमदाने में आसन-पर बेठेली जोइ, पण मारुं चित्त व्याकुळ होवाथी में बराबर जोयु नहि के तेनु मुख कुंडळ सहित हतुं के नहीं ?"

ते साभळीने राजाए तथा मत्रीए विचार्यु के "आ गाथामां पण तेणे अज्ञानना कारणमां कायनी व्यग्रता बतावी छे, पण तत्त्व जणाव्यो नथी." त्यारपछी त्रीजो बौधनो शिष्य बोल्यो के—

मालाविहारे मइ अज्ज दिट्ठा, उवासिआ कंचणभूसिअंगी ।
वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नाय, सकुंडलं वा वदनं न वेति ॥ ३ ॥

भावार्थ—"बौध साधुने रहेवाना मठमा में आजे कचनादिना अनेक आभूषणो पहेरी वस्त्रालकारथी विभूषित थइने बेठेली एक उपासिका—स्त्रीने जोइ, पण व्याक्षिप्त चित्त होवाथी में बराबर जोयु नहीं के तेनु मुख कुडळ सहित हतुं के नहीं ?"

ते साभळीने राजाए तथा मंत्रीए विचार्यु के "आ गाथामां पण तेणे स्त्रीना नेपथ्य जोवामां व्यग्रपणु बताव्यु छे, पण ज्ञानतत्त्व जणाव्युं नथी." एज रीते सर्व धर्मीओए कहेल गाथाओ जाणी लेवी. तेमा जैनधर्मी कोइ आवेल न होवाथी राजाए मत्रीने कह्यु के "आमा जैनधर्मी कोइ आवेल नथी" ते सांभळीने मंत्रीए विचार्यु के "'जैनधर्मी पण सर्व आवावा हशे' एम राजानु मानवु थशे, माटे कोइ साधु अहींथी नीकळे तो बोलावु." एम विचार करे छे, तेटलामा कोइ क्षुल्लक साधु भिक्षा माटे ते तरफ नीकळ्या, तेने मत्री सभामां तेडी लाव्यो. ते क्षुल्लक मुनि राजाए कहेलुं चोथु पद सांभळीने बोल्या के—

*आ पद अशुद्ध लागे छे.

खंतस्स दंतस्स जिइंदिअस्स, अज्झप्पजोगे गयमाणसस्स ।
किं मज्झ एएण विचिंतिएण, सकुंडलं वा वदनं न वेत्ति ॥४॥

भावार्थ—" क्षमावान, दांत जितेन्द्रिय अने जेनुं मन अध्यात्मना चिंतवनमां लीन थयेलुं छे एवा मारे ' आ मुख कुंडळ सहित छे के नहीं ? ' एवा विचारे करीने शुं ? अर्थात् एवो विचार शामाटे करवो जोइए ?"

आ गाथामां कुंडळना अज्ञानपणामां क्षात्यादिकनुं कारण बताव्युं छे पण चित्तनी व्याकुळता बतावी नथी, तेथी गाथामां क्षांति, दम, जितेन्द्रियता अने अध्यात्म योगअधिगता कारणरूपे कहेल होवाथी राजाने धर्म पूछवानो उल्लास थयो, तेथी तेणे धर्म संबंधी प्रश्न कर्यो के तरतज क्षुल्लके प्रथमथीज पोतानी पासे राखेला आर्द्र तथा शुष्क एवा माटीना बे गोळा भींत उपर फेंक्या अने त्यार्थी चालवा माड्युं तेने जता जोइने राजाए पूछ्युं के " हे पूज्य ! आ शुं ? में धर्म संबंधी प्रश्न कर्यो, तेनो उत्तर केम आपता नथी ? " मुनि बोल्या के " हे मुग्ध ! शुष्क तथा आर्द्र एवा बे गोळाना दृष्टांतथीज तमारा प्रश्ननो जवाब आवी गयो छे, तोपण ते स्फुट करुं छुं ते सांभळो—

उल्लो सुक्को अ दो छूढा, गोलया मट्टिआमया ।
दोवि य आविय कुड्डे, जो उल्लो तत्थ लग्गइ ॥ १ ॥

भावार्थ—" सूको अने आर्द्र एवा बे माटीना गोळा फेंक्या, ते भींत साथे अफळाता तेमां जे आर्द्र हतो ते त्यां चोंट्यो. "

आ गाथानो उपनय एवो छे के परमात्माना स्वरूपनुं ध्यान करवामां व्यग्र थयेलो आत्मा बाह्यात्मावडे कामिनीना मुखादिक जोइ शकतो नथी, अने तेवा ध्यानथी जेनो आत्मा बहिर्मुख होय ते जोइ शके छे. जे कामांध पुरुषो छे ते सार्द्र छे अने सार्द्र होवाथी कर्मरूपी पंकमां चोंटी जाय छे, अर्थात् कर्मरूपी कादवथी ते खरडाय छे, अने जेओ क्षांति विगेरे गुणोने धारण करनारा तेमज संसारना क्षणिक सुखथी पराङ्मुख सुका काष्ट जेवा मुनिओ छे तेओ शुष्क गोळानी जेम कोइ पण स्थाने वळगता नथी, अर्थात् तेने कर्म पण चोंटता नथी.

एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
विरत्ताउ न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए ॥ २ ॥

भावार्थ-" ए प्रमाणे काममां लुब्ध अने दुष्ट बुद्धिवाला मनुष्यो ज्यां त्यां वळगे छे, पण सर्वथी विरति पामेला तो शुष्क गोळानी जेम कोइ पण स्थाने वळगता नथी. "

जह खलु कुसिरं कठं, सुचिर सुक्क लहु रुहइ अग्गी ।
तह खलु खवंति कम्मं, सम्म चरणठिया साहू ॥ ३ ॥

भावार्थ-" जेम पोलाणवाळां अने घणा काळना सूकां लाकडांने अग्नि जलदीथी बाळी नाखे छे, तेम सम्यक् प्रकारे चारित्रधर्ममां रहेला साधु कर्मने जलदीथी खपावे छे-नाश करे छे "

आ प्रमाणे सांभळीने राजा प्रतिबोध पाम्यो अने हमेशां मंत्रीनी पासे क्षुल्लक मुनिना धर्मनी प्रशंसा करवा लाग्यो.

आवी युक्तिथी राहुगुप्त मंत्रीए राजाने यथार्थ धर्ममां आसक्त कर्यो, ते प्रमाणे बीजाओए पण करवु.

अहीं पापरहित क्षुल्लक मुनिए शृंगाररसवाळी समस्याने पण निरवद्य (निर्दोष) मार्गमां स्थापन करी, अने कुवादीओना शास्त्र करतां जैनशास्त्रने सत्य करी बताव्युं, ए प्रमाणे बीजा पंडितोए पण करवु, परंतु मिथ्यात्व शास्त्रनी युक्तिओवडे एकांतवादीना कहेला सूत्रार्थो प्ररूपीने अनेकांत आगमने [1]कथारूप न करवो. ते सबंधमां कह्यु छे के—

मिथ्यात्वशास्त्रयुक्त्याद्यैः कथीकार्या न सूत्रवाक् ।
सूत्रार्थोभयनैन्हव्य-समं पापं न भूतले ॥ १ ॥

भावार्थ-" सूत्रनी वाणीने मिथ्यात्व शास्त्रनी युक्तिओए करीने कथारूप करवी नहीं, केमके सूत्र तथा अर्थ ए बन्नेना निन्हव समान बीजु कोइ मोटुं पाप पृथ्वीपर नथी. " कथारूप करवानु स्वरूप बताववा माटे [2]भेरीनु दृष्टांत कहे छे.

भेरीनुं दृष्टांत

द्वारकापुरीमां श्री कृष्णवासुदेव राज्य करता हता, त्यारे देवताओ पासेथी मेळवेली गोशिर्षचंदनना काष्ठनी त्रण भेरीओ तेमनी पासे हतीं १ सांग्रामिकी, २ औद्भूतिकी अने ३ कौमुदिकी तेमां पहेली भेरी युद्धना समये सामंतादि-

---

१ कथा एटले घणा थीगडा दीधेल गोदडु विगेरे   २ भेरी एटले नगारुं

कने खबर आपवा माटे वगाडवामां आवती, त्रीजी भेरी कोइ अकस्मात् कार्य सग आवी पडे त्यारे सामंत, मंत्री विगेरेने जणाववा माटे वगाडवामां आवती अन त्रीजी भेरी कौमुदी महोत्सव विगेरे उत्सवो जणाववा माटे वगाडवामां आवती ते शिवाय तेवीज गोशीर्षचंदनमय एक चोथी भेरी पण हती, ते छ छ मासे व गाडवामा आवती. जे माणस ते भेरीनो शब्द सांभळे तेने आगळ पाछळना छ छ मासना उपद्रवो शांत थता हता. आ चोथी भेरी चालु प्रसंगमां उपयोगी छे, तेथी ते भेरीनी उत्पत्ति लखीए छीए.

कोइ वखत सौधर्म देवलोकमा समग्र देवोनी सभा भराइ हती, ते वखते सर्व देवोनी समक्ष इंद्रे कह्यु के "अहो ! कृष्ण विगेरे एवा सत्पुरुष छे के तेओ लक्ष दोषमांथी पण गुणनेज ग्रहण करे छे, तथा नीच युद्धथी युद्ध करता नथी." ते सांभळीने एक देवमाने तेना वाक्यपर श्रद्धा बेठी नहीं, तेथी तेणे विचार्यु के "एवु केम सभवे ? परदोषनु ग्रहण कर्या विना कोइ माणस रही शकतुज नथी." एम विचारीने ते देवता मृत्युलोकमा आव्यो अने द्वारकानगरीना राजमार्गमां एक भयंकर अने अति दुर्गंधवाळा काळा कूतरानु मृतक विकुर्वीने मूक्यु. ते कूत राना मुखमा कुंद पुष्पना जेवा श्वेत अने सुशोभित दंतपंक्ति विकुर्वी तेवामां श्री नेमिनाथने वांदवा माटे कृष्णवासुदेव सर्व सैन्य सहित नीकळ्या. राजमार्गमां चालता सैनिको दूरथीज ते श्वाननी दुर्गंध आववाथी आडे मार्गे चाल्या वासु देव तेनु कारण पूछ्यु, त्यारे तेओए कूतरानु मृतक बताव्यु ते जोइने कृष्णे कह्यु के "पुद्गलना नाना प्रकारना स्वभावो होय छे, तेमां हर्ष शोक करवा जेवुं न थी परतु जुओ, एनु शरीर तो कृष्ण वर्णनु छे, पण दांत श्वेत छे, तेथी ते [1]म रकतमणिना भाजनमा गोठवेली मुक्तावळीनी जेवा शोभे छे" ते सांभळीने पेला देवताए विचार्यु के "खरेखर आ वासुदेवनु सेंकडो दोषोने मूकीने गुण ग्राहीपणु सत्य छे" पछी ते देव बीजा गुणनी परीक्षा करवा माटे वासुदेवना अश्वरत्ननु हरण करीने भाग्यो तेनी पाछळ सैन्य सहित वासुदेव पण गया. युद्ध करता देवताए वासुदेवनु समग्र सैन्य जीती लीधु पछी वासुदेवे ते देवताने क ह्यु के "मारा अश्वरत्नने तु केम हरी जाय छे ?" देवता बोल्यो के "युद्धमा जीतीने तमारो अश्व लइ ल्यो" कृष्णे कह्यु के "हु रथमा बेठो छु अने तु भूमि उपर रहेलो छे, माटे तु मारो रथ अंगीकार कर जेथी आपणु समान

[1] मरकतमणि कृष्ण वर्णना होय छे

युद्ध थाय." देवे कह्युं के "मारे रथनी जरूर नथी." त्यारे वासुदेवे हस्तीपर तेमज अश्वपर बेसीने युद्ध करवानुं कह्युं, ते पण तेणे अंगीकार कर्युं नहीं. पछी बाहुयुद्ध करवानुं कह्यु तेनो पण देवताए निषेध कर्यो त्यारे कृष्णे कह्यु के "त्यारे तारे कया युद्धथी युद्ध करवु छे?" देवताए कह्यु के "आपणे भांड लोकोनी जेवा हलका युद्धथी[1] युद्ध करीए" ते सांभळीने कृष्णे कह्युं के 'हुं एवा नीच युद्धथी युद्ध नहीं करु मारा अश्वरत्नने तुं सुखेथी लइ जा." आ प्रमाणे वासुदेवनु साहस जोइने ते सुर संतुष्ट थयो, अने इंद्रे करेली प्रशसानो विश्वास बेठो. पछी तेणे पोतानुं स्वरूप प्रगट करीने वासुदेवने कह्यु के "देवदर्शन निष्फळ होय नहीं, माटे काइक वरदान मागो." वासुदेवे माग्युं के "उपद्रवने शांत करनारी भेरी मने आपो." त्यारे देवे चंदननी एक भेरी आपीने तेनु फळ कह्यु के "आ भेरीनो शब्द जे कोइ सांभळशे तेना छ मासना थयेला ने थवाना ज्वारादिक रोगो नाश पामशे. तेथी छ छ मासे फरीथी वगाडवी, एटले प्रथम नहीं साभळेला माणसोना उत्पन्न थयेला सर्व रोगो पण नाश पामशे" पछी ते भेरी कृष्णे छ छ मासे वगडाववा माडी.

एकदा कोइ एक दाहज्वरथी पीडा पामतो वणिक् भेरीना रक्षक पासे आव्यो अने तेने कह्यु के "हु तने एक लक्ष रुपिया आपु, अने तुं मने आ भेरी कापीने तेनो एक ककडो आप, केमके जे वखते भेरी वागी, ते वखते हुं हाजर नहोतो, अने हवे तो राजानी आज्ञाथी छ मासे वागशे. तेटला वखत सुधी हु दुःख सहन करी शकुं तेम नथी, माटे मने एक ककडो आप" ते सांभळीने भेरीना रक्षके लोभाधीन थइने एक ककडो कापी आप्यो, अने तेने स्थाने बीजा चदनथी थीगडु दीधुं. एवी रीते बीजाओने पण लोभने वश थइने ते ककडाओ आपवा लाग्यो, अने तेने स्थाने बीजा थीगडा देवा लाग्यो, तेथी ते भेरी कंथारूप थइ गइ. पछी छ मास पूर्ण थया त्यारे कृष्णे ते भेरी वगडावी पण कथारूप थइ गयेली होवाथी ते भेरीनो शब्द वासुदेवनी सभा मात्रमां पण प्रसर्यो नहीं; तेथी तपास करी तो तेने कथारूप करवानु वृत्तात जणायु, एटले भेरीना रक्षकने काढी मूक्यो अने फरीने अट्ठम तप करीने कृष्णे ते देवता पासेथी बीजी भेरी मेळवी, अने तेनो रक्षक बीजाने कर्यो.

आ दृष्टांतनो उपनय एवी रीते समजवो के "जे शिष्य सूत्रने अथवा तेना

[1] अहीं 'आदिउणयुद्धेन पुनपात. युद्धेन' एवो पाठ छ तनो अर्थ बराबर लागतो नथी.

अर्थने परमतना शास्त्र साथे अथवा स्वमतना बीजा ग्रंथो साथे मिश्र करीने कथारूप करे अर्थात् अहंकारथी परमतादिक साथे मिश्र करीने सूत्र अथवा अर्थने सपूर्ण करे ते अनुयोग श्रवणने योग्य नथी, एज प्रमाणे गुरु पण जो सूत्रार्थने कथारूप करे, तो ते पण अनुयोग भणाववाने योग्य नथी. "हुं सारी रीते भणेलो छु, मारे बीजाने शा माटे पूछवु जोइए?" एवो अहंकार आणीने जे पडेलो अथवा विस्मृत थयेलो पाठ स्वमतिकल्पनाथी पूर्ण करे ते सर्वथा अयोग्य छे."

"लोभथी, अहंकारथी, कदाग्रहथी, हठथी के शाठ्यथी सूत्र तथा अर्थने कथारूप करे तो तेने सूत्रार्थनो निन्हव करनार जाणवो, माटे साधु विगेरेए पुरुषोए तेम करवु नहीं".

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तम्भस्य सप्तषष्ट्यधिकद्विशततमः प्रबंध ॥ २६७ ॥

॥ इति ज्ञानाचार ॥

व्याख्यान २६८ मुं.

दर्शनाचारना पहेला आचार विषे

ज्ञानाद्यनन्तसंपूर्णं, सर्वविद्भिर्यदाहितम् ।
तत्तथ्यं दर्शनाचारो, निःशंकाख्योऽयमादिम ॥१॥

भावार्थ—"अनंत ज्ञानादिक करीने संपूर्ण एवा सर्वज्ञोए जे कहेलु छे ते सत्य छे, एम जे मानवु ते 'निःशंक' नामनो पहेलो दर्शनाचार जाणवो."

जिनोक्ततत्त्वसंदेह, सा च शंकाऽभिधीयते ।
शंकातो जियते श्रद्धा, दोषोऽथ स्यान्महांस्ततः ॥२॥

भावार्थ—"श्री जिनेश्वरे कहेला तत्त्वमां जे संदेह लाववो ते शंका कहेवाय छे, शंका थवाथी श्रद्धा भेद पामे छे, अर्थात् श्रद्धारहित थवाय छे, अने तेथी परिणामे मोटो दोष प्राप्त थाय छे."

शंका करवाथी सम्यक्त्व–तत्त्वश्रद्धान भेद पामे छे, ते उपर श्री गंगाचार्यनुं दृष्टांत कहे छे—

गंगाचार्यनुं दृष्टांत

महागिरिना शिष्य धनगुप्त अने धनगुप्तना शिष्य गंग नामे आचार्य थया. ते गंगाचार्य एकदा उल्लुका नदीना पूर्व कांठापर चातुर्मास रह्या हता ने तेमना गुरु धनगुप्ताचार्य ते नदीना पश्चिम कांठे चातुर्मास रह्या हता. एक वखत शरद् ऋतुमां गंगाचार्य पोताना गुरुने वांदवा जता मार्गमां उल्लुका नदी उतरता हता ते वखते तेमना मस्तकमां टाल होवाथी सूर्यना किरणोना स्पर्शने लीधे तेमनुं माथु तपी गयुं, अने पाणीमां चालता होवाथी पगने शीतळता जणाइ. ते वखते पूर्व बांधेला मिथ्यात्व मोहनीनो उदय थवाथी तेमने एवो विचार आव्यो के " सिद्धांतमां एक काले बे क्रियानो अनुभव न होय एम कह्युं छे, पण मने तो अत्यारे एकज समये बे क्रियानो अनुभव थाय छे. हुं शीत ने उष्ण बनेने वेदुं छुं, माटे अनुभवथी विरुद्ध होवाने लीधे आगमनुं ए वचन यथार्थ लागतुं नथी. " एवी शंका धरावता सता गंगाचार्य गुरु पासे आव्या, अने पोताने थयेली शंका निवेदन करी. ते सांभळीने गुरुए शिखामण आपी के " हे वत्स ! छाया अने आतप जेम समकाले न होय तेम एक काले बे क्रियानो अनुभव अन्योन्य विरुद्ध होवाथी थइ शकेज नहीं; केमके जे अनुभव थाय छे ते अनुक्रमेज थाय छे, परंतु समयावलिकादिक काळ घणो सूक्ष्म होवाथी अने मन पण अति चपळ, अति सूक्ष्म अने घणीज त्वरावाळुं होवाथी ते अनुभवनो अनुक्रम तारा जाणवामां आव्यो नहीं मन ए इंद्रियोथी ग्रहण न थइ शके एवा सूक्ष्म पुद्गलना स्कंधोथी थयेलुं छे. ते मन इंद्रियोए ग्रहण करेला स्पर्शनादिक द्रव्य साथे जे वखते संबंध पामे छे, ते वखते इंद्रियोने ते द्रव्यनुंज मात्र ज्ञान कराववामां कारणभूत थाय छे अन्य पदार्थमां उपयोग राखनारो प्राणी पासे उभेला हस्तीने पण जोइ शकतो नथी, तेथी एक पदार्थमां उपयोगवाळुं मन कदापि बीजा अर्थनो उपयोग धरावी शकेज नहीं. जेम एक मुनि एकाग्र ध्यानमां मग्न थइने कायोत्सर्गे रह्या हता, तेवामां तेनी पासे थइने एक चक्रवर्ती पोताना समग्र सैन्य तथा चोसठ हजार अंतेउरीओ सहित नीकळ्यो. ते वखते सैन्यमां रहेलां सर्वा-बध वाजित्रो पण वागतां हतां. चक्रवर्तीए ते मुनिने जोइने विचार्युं के " अहो ! आ मुनिनुं चित्त केवुं एकाग्र छे के जेथी मारुं सैन्य शब्द, रूप, रस, गंध अने

स्पर्श ए पांचे इंद्रियोने सुख आपनारां साहित्योथी संपूर्ण छता पण आ मुनि मनपूर्वक तेने जोता पण नथी." पछी ज्यारे ते मुनिनु ध्यान पूर्ण थयु, त्यारे तेने नमीने चक्रीए पूछयुं के "हे स्वामी ! हस्ती, अश्व, रथ, वाजित्र अने स्त्रीओ विगेरे पांचे इंद्रियोने अनुकूळ वस्तुओथी युक्त मारु सैन्य आपनी पासे थइने गयु, ते सर्व आपे जोयु के नहीं ?" गुरुए जवाब आप्यो के "तमारा सेवकोए मने प्रणाम विगेरे कर्या हशे, पण हु तो परमात्माना ध्यानमाज उपयोगासक्त हतो, तेथी में ते काइ पण जोयु, साभळ्यु के जाण्यु नथी" ते साभळीने, गुरुना उपयोगनी वारवार स्तुति करतो ते चक्री प्रतिबोध पामीने बोल्यो के "पोतानी पासे इन्द्रियोथी ग्रहण थाय एवा अनेक पदार्थो रह्या होय, तोपण मननी प्रवृत्ति विना कोइ पण पदार्थ ग्रहण थतो नथी ते सत्य वात छे" तो हे शिष्य ! प्राणी जे इन्द्रियना उपयोगमा वर्ततो होय, तेज इन्द्रियना विषयमां ते तल्लीन थाय छे, तेथी ते बीजा पदार्थमां लीन थइ शकतो नथी." शिष्ये प्रश्न कर्यो के "हे स्वामी ! जो एक काळे बे क्रियानो उपयोग न थतो होय तो में शीत ने उष्ण एक साथे केम वेदी ?" गुरु बोल्या के "समयावलिकादि काळनो जे विभाग कहेलो छे ते अति सूक्ष्म छे, माटे जूदे जूदे काळे थयेलु बे क्रियानु ज्ञान कमळना शत पत्रना वेधनी पेठे एकज वखते थयेलु तु माने छे. कमळना सो पत्र उपरा उपर राखीने कोइ बळवान् माणस अति तीक्ष्ण सूची (सोय)थी ते पत्रोने वींधे, तोपण ते एक काळे वींधी शकशे नहीं, कमके काळना भेदे करीने असख्यात असख्यात समये एक एक पत्रनो वेध थाय छे अने उपरनु पत्र वींधाया विना नीचेनु पत्र विंधी शकातु नथी, तोपण ए पत्रोने वींधनार माणस एम मानशे के "में एकज काळे आ बधा पत्रो वींध्या छे, केमके काळनो भेद घणोज सूक्ष्म होवाथी ते जाणी शकतो नथी वळी अलातचक्रने[1] घणीज त्वराथी गोळ फेरवीए तो पण ते चक्र काळना भेदे करीने जूदी जूदी दिशाओमा अनुक्रमे अनुक्रमन फरे छे, तोपण फरववानो काळ घणो सूक्ष्म होवाथी ते जाणवामां आवतो नथी, माटे आपणने तो गोळ कुडाळुज लागे छे, तेवीज रीते प्रकृतमा पण शीत तथा उष्ण क्रियाना अनुभवनो काळ भिन्न छता पण सूक्ष्म होवाथी ताराथी जाणी शकायो नथी, तेथी ते बन्ने क्रियानो अनुभव एकज काळे थयो ' एम तारा

१ अलातचक्र एटले उबाडीयु विगर छेडो सळगावेला काष्ठादिक समजवा.

मानवामा आव्यु छे. वळी चित्त पण बधी इन्द्रियोनी साथे एक काळे संबंध राखतुं नथी, पण अनुक्रमेज संबंध राखे छे, तेज रीते उपलक्षणथी मस्तक, हाथ, पग विगेरे स्पर्शेन्द्रियना जुदा जुदा अवयवो साथे पण चित्त एक काळे संबंध राखतु नथी. जेमके कोइ माणस लांबी अने सुकी आंबली खाय छे, तेने चक्षुवडे जोवाथी तेना रूपनु ज्ञान थयु, नासिकावडे सुंघवाथी गंधनु ज्ञान थयु, खावाथी जीह्वाने रसनु ज्ञान थयु, स्पर्श करवाथी स्पर्शनुं ज्ञान थयु, अने तेने चाववाथी शब्द उत्पन्न थयो, ते कर्णवडे सांभळवाथी शब्दनु ज्ञान थयु, परतु ते पाचे ज्ञान अनुक्रमेज थाय छे, नहि तो [1]सांकर्य दोष प्राप्त थाय, अने मतिज्ञान विगेरेना उपयोग वखते अवधि विगेरे ज्ञानना उपयोगनी पण प्राप्ति थइ जाय, अने तेम थवाथी एक घटादिक पदार्थोनी कल्पना करतां अनंता घटादिक पदार्थोनी कल्पनानी प्रवृत्तिनो प्रसग प्राप्त थाय, अने तेम तो छे नहीं. वळी श्रीमज्जिनेश्वर परमात्माना गुणनु स्मरण करीने ध्यानमां उपयोग राखवो तेवखते पण मिथ्यात्वना तर्फ अने असुरादिकना ध्यानना उपयोगनी प्राप्ति थवी जोइए माटे ताग मत प्रमाणे तो उपर कहेला उपरांत बीजा पण अनेक दोषो प्राप्त थशे, अने तेथी चिंतित अर्थ प्राप्त थशे नहि, माटे उपयोग एक काळे एकज वस्तुमा थाय छे, पण अनेक वस्तुमा थतो नथी. तेज प्रमाणे कर्मबंध अने तेनी निर्जरा विगेरे पण घटाववां. आ संबंधमा प्रसन्नचंद्रना दृष्टांतनी भावना करवी. श्रेणिक राजाए श्री महावीरस्वामीने प्रसन्नचद्र मुनिनी गतिनु स्वरूप पूछ्यु, ते वखते प्रभुए ते मुनिना चित्तमां रहेला प्रशस्त अने अप्रशस्त उपयोगना परावर्तमानपणाने अनुसारे वारवार जूदु जूदु गतिनुं स्वरुप कयुं हतुं पण जो एक काळे अनेक उपयोग वर्तता होत तो जिनेश्वर पण एक काळे अनेक गति कहत, परतु तेम होइ शकतु नथी, माटे एक काळे एकज उपयोग वर्ते ए पक्ष सत्य छे. कह्यु छे के—

> यदा स्यात् प्राणिना शीतो–पयोगव्यापृतं मनः ॥
> तदा नोष्णोपयोगे तद्व्याप्रियेत विरोधत. ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्यारे प्राणीनु मन शीत उपयोगमां व्यापारवालु होय छे त्यारे ते मन उष्ण उपयोगमा व्यापार करतु नथी, केमके ते परस्पर विरोधी छे."

---

[1] एक बीजा साथे मळी जइ ते सांकर्य कहेवाय छे

योगपद्याभिमान स्तूपयोगयुगलस्य यः ।
स तु मानससंचार-क्रमस्यानुपलक्षणात् ॥ ८ ॥

भावार्थ—" आ प्रमाणे छतां पण बे उपयोग समकाळे थतां होवानुं जे अभिमान थाय छे ते मनना संचारनो क्रम जाणवामां आवतो नथी तेथी थाय छे."

फरीथी शिष्ये प्रश्न कर्यो के " हे स्वामी ! मतिज्ञानना ३४० भेदनुं वर्णन करती वखते आपेज बहु, बहुविध, क्षिप्र, अनिश्रित, असंदिग्ध, ध्रुव अने तेथी इतर अबहु, अबहुविध, अक्षिप्र, निश्रित, संदिग्ध, अध्रुव-ए प्रमाणे बार बार भेद अवग्रहादि मतिज्ञानना कहेवाने अवसरे एक वस्तुमां जूदा जूदा अनेक उपयोग होय एम कह्युं हतुं ते केम ? " तेनो गुरुए उत्तर आप्यो के " ते बहु बहुविधादि रूप वस्तुमां अनेक पर्यायो होय छे, तेमनुं सामान्य रूपे करीने ग्रहण मात्र करवुं तेज मात्र ज्ञानमां उपयोगना छे एवी व्यवस्था बतावेली छे पण एक वस्तुमां एक काळे अनेक उपयोग कोइ पण स्थाने होयज नहीं. जेम 'सैन्य जाय छे' ए वाक्य सामान्य छे, केमके तेमां कोइनो विशेष निर्देश कर्यो नथी. तेनुं नाम एक उपयोगपणुं कहेवाय छे, परंतु ते (सैन्य) मां दरेक वस्तु भिन्न भिन्न करीए जेमके आ हस्तीओ छे, आ अश्वो छे, आ पत्तिओ छे, आ ध्वजाओ छे, आ उंटो छे इत्यादिक विभाग करीए, तो ते भेदना अध्यवसायरूप अनेक उपयोगना कहेवाय. तेज प्रमाणे हे शिष्य ! एक काळे घणां विशेषनुं ज्ञान थाय नहीं, केमके ते सर्वना लक्षण भिन्न भिन्न छे. लक्षण एटले शीत, उष्ण विगेरे विशेष वस्तुनुं स्वरूप कहेवुं ते ते लक्षण परस्पर भिन्न भिन्न होवाथी तेने ग्रहण करनारां ज्ञानो पण भिन्न भिन्न छे, तेथी बे ज्ञानो एक काळे थाय नहीं. वळी सामान्यनुं लक्षण एवुं छे के जे अनेक विषयवाळुं होय, अने जे अनेकनो आधार होय (अनेकनो बोध करतुं होय) ते सामान्य कहेवाय छे. तो सामान्यनुं प्रथम ज्ञान थया विना विशेष ज्ञाननी उत्पत्तिज थती नथी, माटे एक काळे विशेष ज्ञान न थाय एवुं सिद्ध थयुं. आनुं तात्पर्य एवुं छे के प्रथम "वेदना थाय छे" एम सामान्यनुं ग्रहण करीने पछी इहा[1] मां प्रवेश करवाथी "पगमां शीत वेदना थाय छे" एम वेदनानो विशेष निश्चय थाय छे. मस्तकने विषे पण प्रथम सामान्य रीते वेदनानुं ग्रहण थया

१ इहा एटले विचारणा थयां अने कयी वेदना थाय छे ? विगेरे चिंतववुं ते

पछी ईहामां प्रवेश करवाथी " मस्तके उष्ण वेदना थाय छे " एवो विशेषनो निश्चय थाय छे. वळी घट विशेषनुं ज्ञान थया पछी अनंतरज पटना आश्रयभूत सामान्यनु ग्रहण कर्या विना पट विशेषनुं ज्ञान थशेज नहीं. वळी हे शिष्य ! एकज प्राणी एक काळे क्रियाओ तो घणी करी शके छे. जेम नर्त्तकी अभ्यासनी चतुराइने लीने मुखथी हा, हा, विगेरे शब्दो बोले छे, नेत्रथी कटाक्ष फेंके छे या नेत्र नमावे छे, हाथ पगनु आकुंचन प्रसारण करे छे, आंगळीओ हलावे छे, शरीरने गमे तेम वाळे छे इत्यादि हावभाव एकज काळे करे छे पण तेनो उपयोग तो एक काळे एक क्रियामांज होय छे वळी कोइ जिनेश्वरनी भक्ति करनारो माणस एक हाथे चामर वींजे छे, बीजे हाथे धूप लइने प्रभुने अंगे धूमावळी विस्तारे छे, मुखवडे अद्भुत रचनावाळी प्रभुनी स्तुति बोलीने जिनेश्वरना गुणोनुं गान करे छे, नेत्रवडे परमेश्वरनी अद्भुत प्रतिमा जोइने मस्तक धूणावे छे तथा चालतां पृथ्वीपर उपयोगपूर्वक विधियुक्त पादन्यास करे छे, इत्यादि अनेक क्रिया समकाळे करे छे, परंतु तेनो उपयोग समकाळे बधी क्रियामां वर्ततो नथी. उपयोग तो एक क्रियामांज वर्ते छे." आ प्रमाणे अनेक प्रकारनी युक्तिओथी गुरुए तेने बहु समजाव्यो, तोपण ज्यारे ते शिष्ये पोतानो कदाग्रह छोड्यो नहीं, त्यारे गुरुए तेने गच्छ बहार कर्यो.

पछी ते विहार करतो करतो राजगृही नगरीए आव्यो. त्यां ते पोताना असत्य मतनुं प्रतिपादन करीने बीजा मुनिओना चित्तने पण व्युद्ग्राहित करवा लाग्यो; केमके दुराग्रही माणस हडकाया कुतरानी जेम बीजाने पण पोतानी जेवा करवा इच्छे छे.

राजगृहीमां महातपस्तीरप्रभाव नामे एक द्रह हतो. तेनी पासे मणिनाग नामना यक्षनु चैत्य हतु. त्यां रहीने गंगाचार्य पर्षदानी समक्ष समकाळे बे क्रिया वेदवारुप पोताना असत् पक्षनी प्ररुपणा करवा लाग्यो ते सांभळीने मणिनाग यक्षने कोप चड्यो, तेथी तेणे कह्यु के " अरे दुष्ट ! आवी असत् प्ररुपणा करीने अनेक प्राणीओना मनमां संशय केम उत्पन्न करे छे ? आज स्थाने श्री वर्धमानस्वामीनु समवसरण थयुं हतु, ते वखते प्रभुए एक समये एकज क्रियानु वेदवु होय एम प्रतिपादन कर्यु हतु ते वखते में आ चैत्यमा रहीने सांभळ्यु हतुं. केवळज्ञानीने पण प्रथम समये ज्ञान एटले विशेषात्मक उपयोग होय छे. अने बीजे

समये दर्शन एटले सामान्यात्मक उपयोग होय छे तो तु वीरस्वामी करतां पण शु अधिक ज्ञानी थयो छे के जेथी तेमनु वचन पण अन्यथा करवा तत्पर थाय छे? माटे आ दुष्ट वासना मूकी दे, अने प्रभुना वचनने अंगीकार कर, नहीं तो हमणा तने आ मुद्गरवडे शिक्षा करीश प्रत्यक्ष सिद्ध अर्थने पण तु गोपव छे त यो ग्य नथी जेम कोइ अष्टावधान साधनार माझ माणस श्लोक रचवाने वखत नवीन श्लोक रचे छे, वाजित्रना ताल गणे छे, वात सांभळे छे, पृष्ठ उपर लखेला अक्षर कहे छे- विगेरे आठ प्रकारना अवधान साधे छे, ते सर्व शीघ्र गतिवाळा मनोविज्ञानने आधारेज करे छे, परतु अज्ञानी माणसो अने बाळको आश्चर्य पामवाथी एम छे के ' अहो ! आ साधके समकाळे आ बधु साध्यु ' परतु एम कहेवु युक्त नथी, कारणके अनुक्रमे परतु अति शीघ्रपणे सर्व ग्रहण करीने पछी ते बोले छे " इत्यादि युक्तिथी ते नागयक्षे तेने समजाव्यो, एटले गंगाचार्ये तेनु कहेवु अगीकार कर्यु अने मिथ्यादुष्कृत दीधो. पछी गुरु पासे जइ ते पापनी आलोचना करीने प्रतिक्रम्या. ते विषे श्री महाभाष्यमा कह्यु छे के—

अट्ठावीसा दोवाससया, तइया सिद्धिगयस्स वीरस्स।
दोकिरियाणं दिट्ठि, उल्लुगतीरे समुप्पन्ना ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्री महावीरस्वामीना निर्वाण पछी बसो ने अठावीश वर्षे उल्लूक नदीने काठे बे क्रियानी दृष्टि (गंगाचार्यने) उत्पन्न थइ. "

मणिनागेणारद्धो, भउववत्ति पडिसेहिउं वोत्तुं।
इच्छामो गुरुमूलं, गंतुण तउ पडिक्कंतो ॥

भावार्थ—" मणिनागे प्रेरणा करीने भगवतना वचनथी विरुद्ध कहेतो रो क्यो एटले ते गुरुमहाराज पासे जइने ते अपराधने पडिकम्यो. "

" आ प्रमाणे नागयक्षे शंका दूर करावीने बोध पमाडेलो, गंगाचार्य दर्शनना निन्हवपणाने छोडीने गंगाजळनी जेम निर्मळ थयो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तम्भस्य
अष्टषष्ठ्यधिकद्विशततम प्रबंध. ॥ २६८ ॥

व्याख्यान २६९ मुं.

निष्कांक्षा नामना बीजा आचार विषे.

निष्कांक्षित्वमनेकेषु, दर्शनेष्वन्यवादिषु ।
द्वितीयोऽयं दर्शनाचारो, अंगीकार्यः शुभात्मभिः ॥१॥

भावार्थ—" अन्य वादीओना अनेक दर्शनोने विषे आकांक्षा रहित थवु, ए बीजा दर्शनाचारने सत्पुरुषे अंगीकार करवो. "

हित्वा स्याद्वादपक्षं यः, कांक्षति परशासनम् ।
कांक्षादोषान्वितः स स्या-दन्यान्यदर्शनोत्सुकः ॥२॥

भावार्थ—" जे माणस स्याद्वाद पक्षने छोडीने परशासननी आकांक्षा राखे छे तेने कांक्षा दोषवाळो जाणवो, अने ते अन्य अन्य दर्शनमां वारंवार उत्कंठित थया करे छे. " आ हकीकत दृष्टांतवडे पुष्ट करे छे—

क्षुल्लक शिष्यनु दृष्टांत

वसंतपुरमां देवप्रिय नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो युवावस्थामां तेनी भार्या मरण पामवाथी तेने वैराग्य थयो, तेथी पोताना आठ वर्षना पुत्र सहित तेणे दीक्षा ग्रहण करी ते क्षुल्लक (बालक) शिष्य परिषहोने सहन करी शकतो नहीं, तेथी तेणे पिताने कह्यु के 'हे पिता! हु उपानह (जोडा) विना चाली शकतो नथी मने तो ब्राह्मणोनु दर्शन श्रेष्ठ लागे छे के जेमा पगना रक्षणने माटे उपानह राखवानो विधि छे.' " ते सांभळीने गुरुए विचार्यु के " आ शिष्य बाळकबुद्धि छे, माटे कदाचित् तेने उपानह नहीं अपावु तो ते कदाचित् सर्वथा धर्मरहित थइ जशे " एम धारीने तेणे कोइ श्रावक पासे याचना करीने तेने माटे उपानह करावी आप्या. पछी एकदा पुत्रे कह्यु के " हे पिता! तडकावडे मारु माथु तपी जाय छे, तेथी माराथी चाली शकातु नथी तो तापसोनुं दर्शन श्रेष्ठ लागे छे के जेमा छत्र धारण करी शकाय छे. " ते सांभळीने सर्वथा धर्मपराङ्मुख थवानी भीतिथी पिताए छत्रनी पण अनुमति आपी. वळी एकदा क्षुल्लके कह्यु के " हे तात! भिक्षा माटे हु अटन करी शकतो नथी. मने तो पचाग्नि साधन करनारनो आचार श्रेष्ठ लागे

छे; केमके घणा लोको सन्मुख आवीने तेमने भिक्षादिक आपी जाय छे " पिताए पूर्वेनी जेम विचार करीने पोतेज भिक्षा लावी आपवा मांडी. ए प्रमाणे अन्यदा पृथ्वी पर सथारो करवाने असक्तिमान थयेला पुत्रे प्रातःकाळे उठीने सुवा माटे पलंग माग्यो अने तेने माटे शाक्य मतना आचारनी प्रसंशा करी, त्यारे पिताए लाक डानी पाट सुवा माटे आपी. पछी स्नान कर्या विना पुत्रने ठीक पड्युं नहीं तेथी शौचमूळ धर्मनी प्रसंसा करी त्यारे पिताए प्रासुक जळ लावीने तेनाथी स्नान करवानी अनुज्ञा आपी. ए प्रमाणे लोचने सहन नहीं करवाथी क्षौर कराववानी पण अनुज्ञा आपी वळी एकदा पुत्रे कयुं के " हे पिता ! हुं ब्रह्मचर्य पाळवा समर्थ नथी." एम कहीने गोपी तथा कृष्णनी लीलानी प्रसंशा करी. ए सांभळीने पिताए विचार्यु के " खरेखर आ पुत्र सर्वथा अयोग्य छे, किंचित् पण परमार्थ जाणतो नथी आटला दिवस तेणे जे माग्युं ते में मोहने लीधे आप्युं, पण आ मागणी तेनी कबुल राखुं तो तेनी साथे हुं पण नरकेज जाउं. संसारमां अनंत काळथी अटन करता जीवोने अनंता पुत्रो थया छे, तो आनापर शामाटे मोह राखवो जोइए ?" इत्यादि विचारीने ते पुत्रने तेणे गच्छ बहार कर्यो. अनुक्रमे ते मृत्यु पामीने पाडो थयो अने तेना पिता स्वर्गलोकमां देवता थया.

ते देवताए अवधिज्ञानवडे पुत्रने पाडो थयेलो जाणीने सार्थवाहनु रूप धारण कर्युं, अने तेज पाडाने पाणी लाववा माटे खरीद कर्यो. पछी तेना पृष्ठपर घणु पाणी भरीने पखाल मूकी उची नीची पृथ्वीवाळा रस्ते तेने हांकवा लाग्यो अने उपरथी कोरडाना प्रहार करवा लाग्यो, तेथी ते पाडो मोटेथी बराडा पाडवा लाग्यो, एटले तेणे कयुं के " अरे ! केम बराडा मारे छे ? पूर्वे जन्ममां करेला कर्मनु आ फळ छे." एम कहीने ते देवता " हे पिता ! हुं आम करवा शक्तिमान नथी, तेम करवा शक्तिमान नथी " विगेरे पूर्वे जन्ममां कहेला वचनो वारंवार समजाववा लाग्यो, तेथी पाडाने जातिस्मरण थयुं पूर्वजन्म स्मरण करीने ते वारंवार नेत्रमांथी अश्रुपात करतो विचारवा लाग्यो के " पूर्वे भवे पिताना कहेवा मुजब में चारित्र पाळ्युं नहीं, तेथी हुं मरीने पाडो थयो." पछी देवताए कयुं के " हुं तारो पूर्वभवनो पिता छुं, अने तने पूर्वभवनुं स्मरण करावबा आव्यो छुं. पण जो तारे शुभ गतिनी इच्छा होय तो अनशन ग्रहण कर. " ते सांभळीने ते पाडाए अनशन ग्रहण कर्युं, अने त्यांथी मरीने वैमानिक देवता थयो, माटे

शुद्ध रीते व्रत पाळवुं; अने क्षुल्लक मुनिनी जेम बीजा बीजा दर्शनोना आचारनी आकांक्षा करवी नहीं. केमके जे आचार श्री जिनेश्वरे प्ररुपेल छे तेज सत्य छे, एम जाणवुं. आ संबधमां बीजी पण एक कथा कहे छे—

अश्वमित्र मुनिनी कथा.

मिथिला नगरीमां लक्ष्मीदेवीना चैत्यवाळा उद्यानने विषे श्री आर्य महागिरि नामना सूरि समवसर्या तेने कौडिन्य नामे शिष्य हता, अने ते कौडिन्यने अश्वमित्र नामे शिष्य हता ते दशमु पूर्व भणता हता. तेमां नैपुणिक वस्तु भणतां एवो अर्थ आव्यो के " वर्त्तमान समयना सर्व नारकी जीवो बीजे समये नाश पामे छे. एज प्रमाणे वैमानिकना जीवो माटे पण जाणवु, अने एज प्रमाणे बीजा समय विगेरेना नारकी विगेरे जीवो माटे पण जाणवु " आवु साभळीने ते अश्वमित्रने शका थइ " उत्पत्ति थया पछी तरतज सर्व वस्तु सर्वथा नाश पामे छे." आ प्रमाणेनो बोध थवाथी ते बीजाओने पण भणाववा लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के " सर्वथा सर्व वस्तु इद्रधनुष, वीजळी अने मेघली जेम प्रतिक्षणे उत्पन्न थाय छे अने नाश पामे छे." तेने गुरुए कह्यु के " दरेक वस्तु प्रतिक्षणे नाश पामे छे, एवु मात्र बौद्धमतवाळाज माने छे, अने तेवो ऋजुसूत्र नामना चोथा नयनोज मत छे, सर्व नयनो एवो मत नथी अहीं तो मात्र अपर अपर (जुदा जुदा) पर्यायनी उत्पत्ति तथा नाश थाय छे, एवी अपेक्षाए कोइ पण प्रकार वस्तुनो प्रतिक्षणे नाश कहेलो छे जे समये नारकी विगेरे वस्तु प्रथम समयना नारकीपणे क्षय पामे छे, तेज समये बीजा क्षणना नारकीपणे ते उत्पन्न थाय छे, पण जीवद्रव्यपणे तो स्थायीज छे, माटे मात्र काळनाज पर्यायथी क्षय थयो छे. तेथी सर्वथा वस्तुनो क्षय मानवो ए केम घटे ? केमके दरेक वस्तुना पर्यायो अनंता छे, तेमांथी मात्र एक पर्यायनो नाश थवाथी सर्वथा वस्तुनोज नाश मानवो, ए तो केवळ विरुद्धज छे. वळी हे शिष्य ! कदाच तु सूत्रना आलावाथी भ्रांति पाम्यो हो तो सूत्रनुज वचन हु तने कहु छुं ते साभळ—

> नेरइयाण भंते कि सासया असासया ? । गोयमा !
> सिय सासया सिय असासया । से केणठ्ठेण । गोयमा!
> दव्वठ्ठयाए सासया भावठ्ठयाए असासयात्ति ।

अर्थ—' हे भगवान ! नारकी जीवो शाश्वता छे के अशाश्वता छे ?' त्यारे भगवान कहे छे के ' हे गौतम ! कोइ प्रकारे शाश्वता छे अने कोइ प्रकार अशाश्वता छे.' फरी गौतमस्वामीए पूछयु के ' ते शी रीते ? ' भगवाने कह्यु के ' हे गौतम ! द्रव्य नयने आधारे शाश्वता छे, अने भाव नयनी अपेक्षाए अशाश्वता छे.' इत्यादि. हे शिष्य ! आ सूत्रमा पण नारकादिना सर्वथा नाश कहेलो नथी. पण प्रथम समयना नारकीपणे नाश पामे छे, सर्वथा द्रव्यपणे नाश पामता नथी, केमके द्रव्यपणे तो शाश्वता छे. जो कदाच सर्वथा नाश मानीए, तो प्रथम समयोत्पन्न नारकीनो सर्वथा नाश थवाथी द्वितीय समयोत्पन्न नारकी ए विशेषणज शी रीते घटशे ? अथवा तो हे शिष्य ! अमे तनेज पूछीए छीए के ' सर्व वस्तु क्षणिक छे ' एम तें शाथी जाण्यु ? जो ' श्रुतथी जाण्यु ' एम कहेतो हो तो सूत्रथी थता अर्थनु ज्ञान तो असख्य समयवडे उत्पन्न थयेला सूत्रार्थ ग्रहण करवाना परिणामथीज थाय छे जो प्रतिक्षणे नाश मानीश तो ए शी रीते घटशे ? आनु तात्पर्य एवु छे के चित्तनी स्थिति असख्य समय सुधी रहे छे, पण सर्व क्षणिक नथी. केमके सूत्रमा जे पदो [शब्दो] रहेला छे ते सावयव छे, अने ते पदना दरेक अक्षरनो उच्चार असख्याता असख्याता समये करी शकाय छे, तेथी पदोनु ज्ञान पण असख्याता समये थाय छे ते सर्व क्षणिकवादी पक्षमा घटेज नहीं वळी हे शिष्य ! क्षणिकवादीना पक्षमा बीजा पण घणा दोषो आवे छे ते सांभळ. कोइ एक माणस भोजन करवा बेठो, पण ते क्षणिक होवाथी दरेक कवळनो खानार जूदो जूदो माणस थशे, अने भोजनने अते खानारो पण क्षणिक होवाथी रह्यो नथी. तेथी छेल्लो कवळ खानार कोइ जूदोज छे माटे तेने मात्र एकज कवळथी शी रीते तृप्ति थशे ? वळी भोजन करी रह्या पछी भोजन करनारनोज अभाव छे, माटे भोजननी तृप्ति कोने थट ? एज प्रमाणे मार्गे गति करनार माणस पण क्षणे क्षणे नवो नवो थवाथी तेने कोइ पण वखत श्रम लागशे नहीं. विगेरे दोषो स्वबुद्धिथी जाणी लेवा. आवा दोषो आववाथी समग्र लोकव्यवहारनो उच्छेद थशे कह्यु छे के—

भुक्तिप्रारम्भकोऽन्य स्या-तृप्तिरन्यस्य जायते ।
अन्यो गच्छति पथान-मन्यस्य भवति श्रमम् ॥ १ ॥
पठ्यत्यन्यो घटाद्यर्था-ञ्ज्ञानमन्यस्य जायते ।
अन्य प्रारभते कार्य, कर्ता चान्यो भवेज्जन. ॥ २ ॥

अन्यः करोति दुष्कर्म, नरके याति चापरः ।
चारित्रं पालयत्यन्यो, मुक्तिमन्योऽधिगच्छति ॥ ३ ॥

भावार्थ—"भोजनक्रियानो आरंभ अन्य करे छे अने तृप्ति बीजा माणसने थाय छे. मार्गे कोइ माणस चाले छे, अने तेनो श्रम कोइ बीजाने लागे छे (१) घटादिक पदार्थोने जोनार कोइ माणस छे अने ते पदार्थनुं ज्ञान बीजाने थाय छे. एक माणस कार्यनो आरंभ करे छे, अने ते कार्यनो कर्ता बीजो माणस थाय छे (२) कोइ माणस दुष्कर्म करे छे अने तेना फलरूप नरकमां बीजो माणस जाय छे, अने कोइ माणस चारित्र पाळे छे ने तेना फलरूप मोक्ष मत्ये बीजो माणस जाय छे (३)"

वळी दरेक वस्तु सर्वथा क्षणिक होय तो पदार्थना मूळ स्वरूप विना ते पदार्थ देखायज केम ? कदी " वासनानी परंपराए करीने वस्तु देखाय छे ' एम कहीए तो ते वासनासंतान पण क्षणिक वादमांज ठरी जाय छे. ' विनाश थया छतां पण अनेक क्षण सुधी वासना रहे छे ' एम कहीए तो तो ए तारा मतमांज मोटी हानि आवशे, माटे हे शिष्य ! हृदयमां मिथ्यात्वने केम वधारे छे ? केमके कोइ पण वस्तु एकांते करीने पर्यायमय पण नथी, अने एकांते करीने द्रव्यरूप पण नथी. पण उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्यरूप होवाथी अनेक पर्यायवाळी छे. भुवन, विमान, द्वीप, समुद्र विगेरे सर्व वस्तु नित्यानित्यपणाथी विचित्र परिणामी अने अनेक स्वरूपी छे एम श्रीजिनेश्वरे कहेलुं छे वळी सूत्रमां भगवंते कोइ ठेकाणे व्यवहारनयने उद्देशीने वाक्य कहेलुं होय छे, कोइ ठेकाणे निश्चयनयने उद्देशीने कहेलुं होय छे, अने कोइ ठेकाणे बन्ने नयने उद्देशीने कहेलुं होय छे. ते सर्व यथार्थ बुद्धियी स्वीकारवुं, पण जिनेश्वरना वचनमां पोताना मतनी कल्पना करवी नहीं. माटे एकला पर्याय नयनेज अंगीकार करीए तो—"सुख, दुख, बंध, मोक्ष विगेरे कांइ पण घटे नहीं. (आ पक्ष वाक्य कहेवाय छे).उत्पत्ति थया पछी तरतज तेनो सर्वथा नाश थाय छे माटे (आ हेतु छे) मरेलानी जेम (आ दृष्टांत छे). तेमज केवळ द्रव्यार्थिक नयनो आश्रय करीए तोपण सुखदुःखादि घटे नहीं. केमके ते मतमां सर्व वस्तु एकांतपणे नित्य होवाथी सर्व वस्तु आकाशनी जेम अविचळ थशे, तेथी तेनी विचित्रता घटशे नहीं. माटे बन्ने पक्ष मानवाथीज सर्व घटी शके छे, अने एकांतवादीनो पक्ष तो लाखो दोषथी भरपूर होवाथी त्याग करवा लायकज छे."

आ प्रमाणे अनेक युक्तिओथी तेने समजाव्यो, तोपण ज्यारे ते समज्यो नहीं, त्यारे स्थविर साधुओए तेने निन्हव जाणीने गच्छ बहार कर्यो. पछी ते पोताना मतमां व्युद्ग्राहित थयेला साधुओ सहित पृथ्वीपर अटन करवा लाग्यो एकदा राजगृह नगरे ते गयो, त्यां राजानु दाण लेनारा उत्तम श्रावको हता. तेओए ते निन्हवोने आवेला जाणीने कठोर कर्मथी पण तेओने बोध करवानो विचार कर्यो. पछी तेओए ते साधुओने पकडीने कशा [कोरडा] विगेरेथी प्रहार करवा मांड्या. तेथी तेओ भयभीत थइने बोल्या के "अमे तो लोकमा 'तमे श्रावक छो' एम सामळ्यु हतुं, तो अमने साधुओने तमे केम मारो छो?" ते सामळीने श्रावको बोल्या के "तमारा मतमा तो जेओए व्रत ग्रहण कर्युं छे ते सर्व नाश पाम्या छे, अने तमे तो सर्व बीजाज उत्पन्न थया छो. वळी प्रतिक्षणे तमे स्वय विनश्वर छो, तेथी मार खानार कोइक छे, अने विनाश पामनार पण बीजो कोइक छे तेमज तमारा मतमा अमे पण कोइ बीजाज छीए, श्रावक नथी, तेथी तमे अमने श्रावक केम कहो छो? पण जो तमे जिनेश्वरना उत्तम आगमने प्रमाण करता हो, तो तमने तेवाज उत्तम साधु मानीने अमे श्रद्धा राखीए ने तमने मारीए नहीं केमके जिनेश्वरना मत प्रमाणे तो कालादिकनी सामग्रीए करीने एकज वस्तु एक समये प्रथम समयपणे नाश पामे छे, पण बीजा समयपणे उत्पन्न थाय छे, त्रीजा समये बीजा समयपणाने छोडीने त्रीजा समयवाळी थाय छे एम चार क्षण विगेरेमा पण जाणी लेवु आ अभिप्रायथीज नारकी विगेरे जीवोने क्षणिक कहेला छे" आ प्रमाणे सामळीने ते साधुओ प्रतिबोध पाम्या, अने पोताना क्षणिक पक्षनो कदाग्रह मूकीने प्रभुनी वाणीने सत्यपणे अंगीकार करी एटले ते श्रावको हर्षपूर्वक तेमने खमावीने नम्या, अने तेमणे पोताना समकितने निर्मळ कर्युं.

आ चोथो निन्हव श्री महावीरस्वामीना मोक्ष पछी बसो ने वीश वर्षे उत्पन्न थयो.

"बौद्धोए सर्व पदार्थ क्षणभगुर मान्या छे ते पक्षनो स्वीकार करवाथी अश्वमित्र मोटी हानिने पाम्यो. माटे उत्तम जीवोए बीजा मतने विषे आकांक्षारहित थवु."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य
एकोनसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २६९ ॥

व्याख्यान २७० मुं.

निर्विचिकित्सा नामे त्रीजो दर्शनाचार वर्णवे छे.

विचिकित्सा ससंदेहा, धर्मक्रियाफलं प्रति ।
तद्दोष सर्वथा त्याज्यो, दर्शनाचारचारिभिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" धर्मक्रियाना फळमां संदेह तेनुं नाम विचिकित्सा ए मोटो दोष छे, माटे ते दोषने दर्शनाचारने आचरण करनारा माणसोए सर्वथा तजवो." ते उपर दृष्टांत कहे छे—

भोगसारनुं दृष्टांत

कांपिल्यपुरमां भोगसार नामे बार व्रतने धारण करनारो श्रावक रहेतो हतो. तेणे श्री शांतिनाथ स्वामीनो प्रासाद कराव्यो हतो. त्यां हमेशां निराशी भावथी ते भगवाननी त्रण काळ भक्तिपूर्वक पूजा करतो हतो. एकदा तेनी स्त्री आयुष्य पूर्ण थये मृत्यु पामी. त्यारे "ते स्त्री विना घरनो निर्वाह चालशे नहीं" एम मानी ते बीजी स्त्री परण्यो. ते स्त्री स्वभावे अति चपळ हती, तेथी गुप्त रीते धन एकठुं करीने जुदी गांठ करवा लागी, अने पोतानी इच्छा प्रमाणे खावा पीवा लागी. अनुक्रमे श्रेष्ठीनुं सर्व धन नाश पाम्युं, तेथी ते बीजा गाममां रहेवा गयो. पण बन्ने प्रकारनी[1] जिनपूजा ते कदी भूलतो नहीं. तेमां पण भाव पूजा तो हमेशां त्रिकाळ करतो. एकदा तेनी स्त्रीए तथा बीजा लोकोए तेने कह्युं के "हे श्रेष्ठी! निग्रह के अनुग्रहरूप फळने नहीं आपनारा एवा वीतराग देवने तमे शा माटे पूजो छो? तेनी भक्ति करवाथी तो उलटुं तमने प्रत्यक्ष दारिद्र्य प्राप्त थयुं. माटे हनुमान, गणपति, चंडिका, क्षेत्रपाल विगेरे प्रत्यक्ष देवोनी सेवा करो, के जेथी तेओ प्रसन्न थइने तत्काळ इच्छित तो पूर्ण करे."

आ प्रमाणे सांभळीने श्रेष्ठीए विचार कर्यो के "अहो! आ लोको परमार्थना अजाण छे, अने मोहरूपी मदिरानुं पान करेलुं होवाथी गमे तेम बोले छे. पूर्व जन्ममां न्यून पुण्य करीने आ जन्ममां संपूर्ण पुण्यनुं फळ भोगववानी स्पृहा

---

[1] द्रव्य भाव

आ प्रमाणे अनेक युक्तिओथी तेने समजाव्यो, तोपण ज्यारे ते समज्यो नहीं, त्यारे स्थविर साधुओए तेने निन्हव जाणीने गच्छ बहार कर्यो पछी ते पोताना मतमां व्युद्ग्राहित थयेला साधुओ सहित पृथ्वीपर अटन करवा लाग्यो एकदा राजगृह नगरे ते गयो, त्यां राजानु दाण लेनारा उत्तम श्रावको हता. तेओए ते निन्हवोने आवेला जाणीने कठोर कर्मथी पण तेओने बोध करवानो विचार कर्यो. पछी तेओए ते साधुओने पकडीने कशा [कोरडा] विगेरथी प्रहार करवा मांड्या. तेथी तेओ भयभीत थइने बोल्या के "अमे तो लोकमां 'तमे श्रावक छो' एम सामञ्यु हतुं, तो अमने साधुओने तमे केम मारो छो?" ते सांभळीने श्रावको बोल्या के "तमारा मतमा तो जेओए व्रत ग्रहण कर्यु छे ते सर्व नाश पाम्या छे, अने तमे तो सर्व बीजाज उत्पन्न थया छो वळी प्रतिक्षणे तमे स्वय विनश्वर छो, तेथी मार खानार कोइक छे, अने विनाश पामनार पण बीजो कोइक छे तेमज तमारा मतमां अमे पण कोइ बीजाज छीए, श्रावक नथी, तेथी तमे अमने श्रावक केम कहो छो?" पण जो तमे जिनेश्वरना उत्तम आगमने प्रमाण करता हो, तो तमने तेवाज उत्तम साधु मानीने अमे श्रद्धा राखीए ने तमने मारीए नहीं कमके जिनेश्वरना मत प्रमाणे तो कालादिकनी सामग्रीए करीने एकज वस्तु एक समये प्रथम समयपणे नाश पामे छे, पण बीजा समयपणे उत्पन्न थाय छे, त्रीजा समये बीजा समयपणाने छोडीने त्रीजा समयवाळी थाय छे एम चार भग विगेरेमां पण जाणी लेवु आ अभिप्रायथीज नारकी विगेरे जीवोने क्षणिक कहेला छे" आ प्रमाणे सांभळीने ते साधुओ प्रतिबोध पाम्या, अने पोताना क्षणिक पक्षनो कदाग्रह मूकीने प्रभुनी वाणीने सत्यपणे अंगीकार करी एटले ते श्रावको हर्षपूर्वक तेमने खमावीने नम्या, अने तेमणे पोताना समकितने निर्मळ कर्यु.

आ चोथो निन्हव श्री महावीरस्वामीना मोक्ष पछी बसो ने वीश वर्षे उत्पन्न थयो

"बौद्धोए सर्व पदार्थ क्षणभगुर मान्या छे ते पक्षनो स्वीकार करवाथी अश्वमित्र मोटी हानिने पाम्या. माटे उत्तम जीवोए बीजा भवने विषे आकांक्षारहित थवु."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य
एकोनसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २६९ ॥

व्याख्यान २७० मुं.

निर्विचिकित्सा नामे त्रीजो दर्शनाचार वर्णवे छे.

विचिकित्सा ससंदेहा, धर्मक्रियाफलं प्रति ।
तद्दोषः सर्वथा त्याज्यो, दर्शनाचारचारिभिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" धर्मक्रियाना फळमां संदेह तेनुं नाम विचिकित्सा ए मोटो दोष छे, माटे ते दोषने दर्शनाचारने आचरण करनारा माणसोए सर्वथा तजवो." ते उपर दृष्टांत कहे छे—

भोगसारनु दृष्टांत

कांपिल्यपुरमां भोगसार नामे वारव्रतने धारण करनारो श्रावक रहेतो हतो. तेणे श्री शांतिनाथ स्वामीनो प्रासाद कराव्यो हतो. त्यां हमेशां निराशी भावथी ते भगवाननी त्रण काळ भक्तिपूर्वक पूजा करतो हतो. एकदा तेनी स्त्री आयुष्य पूर्ण थये मृत्यु पामी त्यारे "ते स्त्री विना घरनो निर्वाह चालशे नहीं" एम मानी ते बीजी स्त्री परण्यो. ते स्त्री स्वभावे अति चपळ हती, तेथी गुप्त रीते धन एकठुं करीने जुदी गांठ करवा लागी, अने पोतानी इच्छा प्रमाणे खावा पीवा लागी. अनुक्रमे श्रेष्ठीनु सर्व धन नाश पाम्युं, तेथी ते बीजा गाममां रहेवा गयो पण बन्ने प्रकारनी[1] जिनपूजा ते कदी भूलतो नहीं. तेमां पण भाव पूजा तो हमेशां त्रिकाळ करतो. एकदा तेनी स्त्रीए तथा बीजा लोकोए तेने कह्युं के " हे श्रेष्ठी ! निग्रह के अनुग्रहरूप फळने नहीं आपनारा एवा वीतराग देवने तमे शा माटे भजो छो ? तेनी भक्ति करवाथी तो उलटुं तमने प्रत्यक्ष दारिद्र्य प्राप्त थयु. माटे हनुमान, गणपति, चंडिका, क्षेत्रपाळ विगेरे प्रत्यक्ष देवोनी सेवा करो, के जेथी तेओ प्रसन्न थइने तत्काळ इच्छित तो पूर्ण करे."

आ प्रमाणे सांभळीने श्रेष्ठीए विचार कर्यो के " अहो ! आ लोको परमार्थना अजाण छे, अने मोहरूपी मदिरानुं पान करेलुं होवाथी गमे तेम बोले छे. पूर्वे जन्ममां न्यून पुण्य करीने आ जन्ममां संपूर्ण पुण्यनुं फळ भोगववानी स्पृहा

[1] द्रव्य भाव

करे छे, ते सर्व मिथ्यात्वनी मूढतानु चेष्टित छे अहीं हनुमान, गणेश विगेरे देवो शुन्याल करी दे छे ? 'जेवु वावीए तेवुज लणाय छे ' तेमा कोइनो दोष नथी परतु ससारना दुःखनु विस्मरण करवा माटे परमात्मानु स्मरण अहर्निश करवु जोइए केमके वीतरागना गुणो सभार्या विना ससारनो मोह केम नाश पामे ? मिथ्यात्वमा मग्न थयेला मूढ पुरुषोने धिक्कार छे, के जेओ सासारिक इच्छा पूर्ण करवा माटे प्रथम अथवा पूर्ण थया पछी परमात्मानी स्तुतिना वाक्योवडे स्तुति करे छे के ' अहो ! आ भगवान सत्य छे. तेणे मारु कार्य तरत पार पाड्यु. मारा पुत्रपुत्रीना विवाहादिक सबधो क्याइथी पण लावीने मेळवी आप्या ' केटलाएक एम पण बोले छे के ' परमेश्वरे आ युद्धमा मने मोटो यश आप्यो ' इत्यादि पोतपोताना सासारिक कार्योमा मिथ्या प्रभुनो प्रयत्न माने छे " आम विचारीने श्रेष्ठीए पोताना मनमा जरा पण विचिकित्सा धारण करी नहीं. पछी श्रेष्ठीए धनना अभावने लीधे खेती करवा माडी तेनी स्त्री हमेशा पक्वान्न विगेरे खाय छे अने श्रेष्ठीने चोळा विगेरे कुत्सित अन्न आपे छे तेथी श्रेष्ठी तो मात्र नामथीज भोगसार रह्यो, पण तेनी स्त्री तो खरेखरी भोगवती थइ. अनुक्रमे ते कुलटा थइ, अने परपुरुप साथे यथेच्छ भोग भोगववा लागी

एकदा श्री शातिनाथना अधिष्ठायक देवे विचार्यु के " हालमा अनेक लोकोना मनने आनद आपनारी अने उदार एवी भगवाननी धूपादिक सुगधी द्रव्य वडे पूजा केम थती नथी ? " पछी अवधिज्ञानना उपयोगथी भोगसारनु दरिद्रपणु तेना कारणभूत जाणीने तेणे विचार्यु के " आ श्रेष्ठी जिनेश्वरनो पूर्ण भक्त छे, तेने आज चोळानु खेतर लणवानो वखत आव्यो छे, अने तेनी स्त्री कुलटा थइ छे, तेथी श्रेष्ठी उपर जरा पण भक्तिभाव राखती नथी, माटे मारे आ श्रेष्ठीनु सानिध्य करवु जोइए. " एम विचारीने ते देवताए श्रेष्ठीना भाणेजनु रूप लीधु, अने मामाने घेर जइने मामीने प्रणाम कर्या अने पूछ्यु के " मारा मामा क्या गया छे ? " मामी बोली के " तारा मामा खेतर गया छे, त्या खेतर खेडता हशे " ते साभळीने ते खेतरे गयो, त्या मामाने प्रणाम करीने बेठो, त्यारे मामाए पूछ्यु के " तु शामाटे आव्यो छे ? " भाणेजरूपे देवता बोल्यो के " तमने सहाय करवा माटे आव्यो छु " मामाए कह्यु के " घेर जइने खाइ ले." भाणेज बोल्यो के "आपणे साथे जमशु " मामाए कह्यु के " आजे खेतरमा लणवानु काम चाले छे, तेथी घणु मोडु थशे, त्या सुधी तु बाळक छे माटे क्षुधा शी रीते सहन करी शकीश ?" भाणेज बोल्यो के " काइ हरकत नहीं

हु पण तमारी साथे लणवानु काम करीश." एम कहीने देवीशक्तिथी तेणे वधु खेतर लणीने टुंका वखतमां एकत्र कर्युं पछी मामाए कह्युं के "आ बधा चोळा शी रीते घेर लइ जइशुं?" ते सांभळीने ते देवता सर्वे चोळा उपाडीने घर तरफ चाल्यो. तेमने आवता जोइने पेली स्त्रीए पोताना घरमां आवेला जारने गमाणमां संताडी दीधो, अने लापसी विगेरे मिष्टान्न एक कोठीमां सताडी दीधां. एटलामां भाणेजे आवीने मामीने जुहार करीने कह्यु के ' मामा आव्या छे, तेनी आगतास्वागता करो." एम बोलता बोलता तेणे चोळानो भारो जोरथी गमाणमां नांख्यो, अने दाणा काढवा माटे चोळाने कुटवा लाग्यो. तेना प्रहारथी पेलो जार पुरुष जर्जरित थइ गयो, अने पोते हमणांज मृत्यु पामशे एम मानवा लाग्यो पछी भोगवतीए पोताना जारने मृतप्राय थइ गयेलो जाणीने भाणेजने कह्यु के "तमे बन्ने थाकी गया हशो, माटे प्रथम भोजन करी ल्यो." ते सांभळीने मामो भाणेज जमवा बेठा. एटले मामी चोळा विगेरे कुत्सित अन्न पीरसवा लागी, त्यारे भाणेज बोल्यो के "आवुं खराब अन्न हु नहीं खाउ" मामी बोली के "सारु खावानुं क्याथी आपु?" भाणेज बोल्यो के "हे मामी! हु अहीं बेठो बेठो पेली कोठीमां लापसी प्रत्यक्ष जोउ छु, ते तमे केम पीरसता नथी? स्वामीथी अधिक कोइ नथी एम निश्चे जाणवु" ते साभळीने मामी तो चकितज थइ गइ. पछी लापसी पीरसीने तेणे विचार्यु के "अहो! आ तो मोटु आश्चर्य! मारुं गुह्य आणे शी रीते जाण्यु? खरेखर आनामा कोइ भूत, प्रेत, व्यतर के डाकिनीपणु होवु जोइए, नहीं तो ए गुप्त राखेलु शी रीते जाणी शके?" पछी ते बन्ने जमीने छुट्टा गया. ते वखते लाग जोइने पेलो जार पुरुष नीकळी गयो. ते सर्व देवता तो जाणे छे, तोपण तेणे मोनज राख्यु. पछी भाणेजे मामाने पूछ्युं के "आ तमारा शामलना लग्न केम करता नथी?" त्यारे मामाए कह्यु के "हे भाणेज! ए मनोरथ धन विना शी रीते पूर्ण थाय?" भाणेज बोल्यो के "हे मामा! उठो हु तमने पृथ्वीमां दाटेलु धन बतावु" एम कहीने ते स्त्रीना देखतां तेणे पृथ्वीमां दाटेलु धन काढी आप्यु ते जोइने ते स्त्री विलखी थइ गइ अने मनमां बोली के "में चोरी करीने जेटलु धन गुप्त राख्यु हतुं ते सर्व आणे प्रगट कर्युं, माटे आ खरेखर कोइ डाकीनीज छे, नणदनो दीकरो नथी. ए वळी अहीं क्याथी आव्यो? तोपण हवे तो एनो अनुनय सारी रीते करु, नहीं तो ए कोप्यो सतो मारी बधी गुप्त वात प्रगट करशे." एम विचारीने ते अदरथी कालुष्य भाव राखीने प्रहारथी मीठी वाणीए बोली के "हे भाणेज! [illegible]री बुद्धिने धन्य छे. अमारु दरिद्रपण तमे नाश

प्रमादथुं " पछी शुभ दिवसे श्रेष्ठीए पुत्रना विवाहनो उत्सव आरंभ्यो, ते वखते पोताना इष्ट जारपतिने ते स्त्रीए निमंत्रण कर्युं अने कह्युं के " तारे स्त्रीवेष धारण करीने बधी स्त्रीओ साथे जमवा आववुं. तेथी लग्नने दिवसे भोजन वखते ते जार स्त्रीनो वेष लइने जमवा आव्यो तेने स्त्रीओना मध्यमा बेठेलो जोइने भाणेज बोल्यो के " मामा! आजे तो हुं पीरसवा माटे रहीश." मामाए कह्युं के " बहु सारुं." एटले ते पीरसवा लाग्यो पीरसतां पीरसतां ज्यारे ते पेला जार पासे गयो, त्यारे तेणे धीमेथी कह्युं के " तुं गमाणमा जर्जरित थयो हवो तेज के?" त्यारे तेणे 'ना' कही. ए प्रमाणे बे त्रण वार कह्युं, त्यारे बीजाओए भाणेजने पूछ्युं के " तुं वारंवार ए मुग्ध बाळाने शुं पूछे छे?" त्यारे भाणेज बोल्यो के " आ स्त्रीने हुं पीरसवा जाउं छुं त्यारे ते काइ पण लेती नथी, अने सर्व पक्वान्ननो निषेध करे छे." त्यारे हुं तेने कहुं छुं के " हे स्त्री! ज्यारे तुं जरा पण जमती नथी, त्यारे स्त्रीओनी मध्ये बेसवुं तारे योग्य नथी हुं थोडी भूखी जणायछे." आ प्रमाणे बोलीने ते देवताए तेने कांइ पण पीरस्युं नहीं, त्यारे भोगवतीने तेना विषे घणो उचाट थयो. पछी काइ मिष करीने भोगवती उठी, अने गुप्त रीते लाडवा लइने तेना भाणामां पीरसी दीधा. तेमांथी ते जार थोडा खाधा, अने चार मोदक पोतानी कुक्षिमा संताड्या पछी सर्व स्त्रीओ जमी उठी, त्यारे भाणेज बोल्यो के " दरेक स्त्रीओ मारा मामाना माडवाने अक्षतथी वधावो." ते साभळीने ज्यारे बधी स्त्रीओए मांगलिक माटे ते माडवो वधाव्यो त्यारे ते जार स्त्री माडवो वधाववा आवी नहीं. तेथी भाणेज बोल्यो के " हे माता! तमे केम वधावता नथी? स्त्रीओनी पंक्तिमा जमवा बेठा अने हवे पंक्तिथी जूदा पडवुं योग्य नथी " ते साभळीने ते पण मंडप वधाववा लागी, एटले तेनी कुक्षिमाथी संताडेला मोदक नीचे सरी पड्या. तेथी ते शरमाइने एकदम जतो रह्यो पछी मामाए भाणेजने पूछ्युं के आ मोदक क्याथी आव्या?" ते बोल्यो के " तमारा पुत्रविवाहना उत्सवमां माडवाए मोदकनी वृष्टि करी " मामो बोल्यो के " हे भाणेज! तुं आवो ज्ञानी क्याथी थयो? " ते बोल्यो के " सर्व वात एकाते कहीश " पछी विवाहनुं काम सर्व पूर्ण थयुं, त्यारे तेणे पोतानुं देवस्वरूप प्रगट करीने श्रेष्ठीने सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी श्रेष्ठीनी स्त्रीने देवताए कह्युं के " हे स्त्री! तारो पति केवो परमात्मानी भक्तिमा तत्पर छे? तेवी तुं पण था तुं जारपति साथे हमेशा क्रीडा करे छे, ते विगेर

हु सर्व जाणु छु. परतु त्रण भुवनना अद्वितीय शरणरूप श्री वीतरागना भक्तनी तु भार्या छे तेथी आजसुधी में तारी उपेक्षा करी छे. माटे हवेथी तु समग्र दंभ छोडीने धर्मकार्यमा प्रवृत्ति कर. मनुष्यो पूर्वे अनंतीवार भोग भोगव्या छतां पण अज्ञान तथा भ्रमने लीधे धारे छे के "में हजु कोइ पण वखत भोग भोगव्याज नथी." एम होवाथी मुर्ख माणसोनी कामभोग संबधी तृष्णा कोइ पण वखते शांत थती नथी. तेओने वैराग्य थवो ते पण अति दुर्लभज छे श्री अध्यात्मसारमां कह्यु छे के—

सौम्यत्वमिव हिंस्रानां, पन्नगानामिव क्षमा ।
विषयेषु प्रवृत्तानां, वैराग्यं खलु दुर्लभम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेम सिंहोने सौम्यपणुं दुर्लभ छे अने सर्पोने क्षमा दुर्लभ छे, तेम विषयमा प्रवृत्त थयेला जीवोने वैराग्य दुर्लभ छे "

तेथी हे स्त्री! आत्माने विषे वैराग्य धारण करीने अनेक भवमां उपार्जनकरेला पापकर्मनो क्षय करवा माटे अने अनादि काळनी भ्रांतिना नाशने माटे सर्वथा द्रव्य अने भावथी दंभनो त्याग करीने अनेक उत्तम अने शुभ कार्योने विषे उद्यम कर. दंभ ए सर्व पापनु मूळ छे, तथा अनेक सद्‌गुणोनो नाश करनार छे. कह्यु छे के—

सुत्यजं रसलांपट्यं, सुत्यजं देहभूषणम् ।
सुत्यजाः कामभोगाश्च, दुस्त्यजं दंभसेवनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"जिह्वाना रसनी लोलुपता तजी शकाय छे, शरीरपरनां अलंकारनो मोह तजी शकाय छे, तेमज कामभोग पण तजी शकाय छे, परतु दंभनुं सेवन तजवु ए घणुज मुश्केल छे."

किं व्रतेन तपोभिर्वा, दंभश्चेन्न निराकृतः ।
किमादर्शेन किं दीपैर्यद्याध्यं न दृशोगतम् ॥ २ ॥

भावार्थ—"जो दंभनो त्याग कर्यो नहीं तो व्रत अने तप करवाथी शुं ? केमके जो नेत्रनी अंधता गइ नथी तो आदर्श अने दीपनु शु प्रयोजन छे ? फांइज नथी."

अहो मोहस्य माहात्म्यं, दीक्षां भागवतीमपि ।
दंभेन यद्विलुंपति, [illegible] म् ॥ ३ ॥

भावार्थ-" अहो मोहनु माहात्म्य केवु छे! के जेथी दंभवडे करीने फाजळ वडे शरीरना रूपनी जेम भगवान संबंधी दीक्षानो पण प्राणी लोप करे छे. "

अध्यात्मरतचित्तानां, दंभ स्वल्पोऽपि नोचित ।
छिद्रलेशोऽपि पोतस्य, सिंधूल्लंघयतामिव ॥ ४ ॥

भावार्थ—जेम समुद्रने ओळंगनारा पुरुषोने नावमां एक लेश मात्र पण छिद्र होय तो ते डुबवानु कारण छे, तेम जेनु चित्त अध्यात्मध्यानमां आसक्त छे तेओने थोडो पण दंभ राखवो उचित नथी, केमके ते संसारमां डुबाडनार छे. "

दंभलेशोऽपि मल्ल्यादे , स्त्रीत्वानर्थनिबंधनम् ।
अतस्तत्परिहाराय, यतितव्य महात्मना ॥ ५ ॥

भावार्थ—"मल्लीनाथ स्वामी विगेरेने लेशमात्र दंभ पण स्त्रीपणा रूप अनर्थनु कारण थयो हतो, तेथी ते दंभ तजवा माटे महात्मा पुरुषे अवश्य यत्न करवो."

इत्यादि उपदेश सांभळीने ते स्त्री प्रतिबोध पामी, अने तेणे श्रावकनां बार व्रत अंगीकार कर्यां. पछी देवता लक्ष सोनैया श्रेष्ठीने आपीने अंतर्धान थयो.

अनुक्रमे भोगसार श्रेष्ठी पोतानी पत्नी सहित श्रावकधर्म पाळीने स्वर्गे गयो. त्यांथी अनुक्रमे थोडाज भव करीने ते श्रेष्ठी मुक्तिसुखने पामशे.

" भोगसार श्रेष्ठीनी जेम धर्मक्रियामां विचिकित्सानो त्याग करवो. तेवा जीवोने देवताओ पण सेवकनी जेम सांनिध्य करे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ अष्टादशस्तंभस्य
सप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २७० ॥

॥ समाप्तोऽयमष्टादशस्तंभः ॥

॥ श्रीरस्तु । शुभं भवतु ॥

श्री उपदेश प्रासाद.

स्तंभ १९ मो

व्याख्यान २७१ मुं.

अमूढदृष्टि नामना चोथा दर्शनाचार विषे.

मिथ्यादृशां तपःपूजाविद्यामंत्रप्रभावनाम् ।
दृष्ट्वा मुह्यति यो नैव, सोऽमूढदृष्टि· समतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यादृष्टिओनां तप, पूजा, विद्या अने मंत्रादिकनो प्रभाव जोइने जे माणस तेमा मोह पामतो नथी ते अमूढदृष्टि कहेवाय छे." आ गाथानो भावार्थ लेपश्रेष्ठीना दृष्टांतथी जाणी लेवो

लेपश्रेष्ठीनु दृष्टांत.

राजगृह नगरमां लेप नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो, ते मिथ्यात्व धर्ममां आसक्त हतो तेनो गुरु शिवभूति नामे हतो. तेना उपदेशथी ते श्रेष्ठीए वाव, कूवा, तळाव तथा कुंड विगेरे कराव्यां हतां. त्यां ते हमेशां स्नान करतो, यज्ञादि करतो, वेदवाक्यना रहस्यनुं श्रवण करतो तथा मिथ्यात्वना जे ज्ञाती[1] आचरणो छे, ते सर्व धर्मबुद्धिथी करतो हतो. ज्यारे तेना गुरु बीजा देशथी आवता त्यारे ते मोटी ऋद्धिवडे चार पांच योजन सुधी तेनी सन्मुख जतो हतो

एकदा राजगृह नगरना उपवनमां श्री महावीरस्वामी समवसर्या. ते वखते ते लेपश्रेष्ठी पोताना मित्र जिनदत्त श्रावकनी प्रेरणाथी भगवानने वांदवा तथा आश्चर्य जोवा गयो. श्री भगवाननु सर्वत्र अस्खलित ज्ञान जाणीने लेपश्रेष्ठीए आ प्रमाणेना प्रश्नो कर्या के " हे भगवान ! मारा गुरु अध्यात्म स्वरूपनुं वर्णन करे छे ते सत्य छे के असत्य ?" प्रभुए कह्यु के " हे श्रेष्ठी ! अध्यात्म नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एम चार प्रकारे छे तेमांना पहेला त्रण भेदो भाव अध्यात्मनां कारण रूप छे. जे पुरुषमां भाव अध्यात्म रहेलु होय तेमनां संपूर्ण कार्य सिद्ध थाय छे, बीजा त्रण भेदवाळाना सिद्ध थता नथी. कोइ माणस एम कहे के " हु अध्यात्म ज्ञाउं छुं अने

१ लौकिक देवगुरु मिथ्यात्वना ८३ ... कामां कहेला छे

तेनु सुख अनुभवु छु" ते योग्य नथी. केमके ते शुद्ध अध्यात्मने विषे अध्यात्मनी भजना जाणवी अध्यात्म ए कोइ घटपटादिकनी जेवो मूर्तिमान पदार्थ नथी, के जेनो आपवा लेवामा व्यवहार थइ शके. माटे तेवा शुद्ध अध्यात्मने विषे अध्यात्मनी भजना जाणवी, एटले अध्यात्म होय वा न होय, परतु अर्थ अध्यात्मने विषे निर्विकल्प स्वरूप (सत्य अध्यात्म) रहेलु छे, अने तेवा सत्य अध्यात्म विना बीजु कोइ तेवु आत्माने उपकारी नथी. अध्यात्म ज्ञानना स्वाद रूपी सुखसागरनी पासे इन्द्र तथा दोगुदुकादि देवादिकनु सुख एक बिंदु मात्र पण नथी तर्कशास्त्र अने वैराग्यशास्त्र विगेरेनी युक्तिओने जाणनारा माणसो सत्य अध्यात्मना ज्ञान विना अनेक प्रकारनी शुष्क युक्तिओ करे छे, परतु ते सर्व ससारनी वृद्धिने माटेज जाणवी" ते सांभळीने लेपश्रेष्ठीए पूछ्यु के "हे भगवान! आप जेनु आवु वर्णन करो छो ते अध्यात्म केवु होय छे?" भगवान बोल्या के "हे श्रेष्ठी! मिथ्यात्वना अधिकारनो त्याग करीने आत्माने अवलबी जे शुद्ध क्रियाधर्ममा प्रवर्तवु, ते अध्यात्म कहेवाय छे. कह्यु छे के—

अपूनर्बंधकाद्यावद्–गुणस्थान चतुर्दशम् ।
क्रमशुद्धिमती तावत्, क्रियाध्यात्ममयी मता ॥ १ ॥

भावार्थ—"अपूनर्बंधक नामना चोथा गुणस्थानकथी आरभीने चौदमा गुणस्थानक सुधी अनुक्रमे अनुक्रमे जे शुद्ध शुद्ध क्रिया थाय छे ते अध्यात्ममय क्रिया मानेली छे"

अपूनर्बंधक नामनु चोथु गुणस्थानक प्राप्त थाय त्यारे सपूर्ण सत् योग प्रगट थाय छे, अने नवमा गुणस्थानकथी चौदमा गुणस्थान पर्यंत अनुक्रमे जे विशेष शुद्धिवाळी क्रियाओ निपजे छे ते अध्यात्म क्रिया जाणवी. परतु भवाभिनदी माणस आहार, उपधि, पूजा विगेरेना गौरवने माटे जे क्रिया करे छे ते क्रिया तो अध्यात्मवैरिणी एटले अध्यात्म गुणनो नाश करनारी जाणवी. तेथीज शांत, दांत अने मोक्षार्थी प्राणी यथार्थ प्ररूपणा करनार सद्गुरुनेज भजे छे पूर्वाचार्योए चोथा गुणस्थानथी आरभीने अग्यार गुणश्रेणिओ कही छे ते आ प्रमाणे—

सम्म् देस सव्वविरई, अणविसंजोअ दसखवगेअ ॥
मोहसम सत खवगे, खीण सजोगीअर गुणसेढी ॥७२॥

पचम कर्मग्रथ.

भावार्थ—" १ सम्यक्त्व प्रत्ययिकी, २ देशविरति प्रत्ययिकी, ३ सर्वविरति प्रत्ययिकी, ४ अण के० अनंतानुबंधी विसंयोजना संबंधी, ५ दर्शनमोहनी क्षपक, ६ चारित्र मोहनी क्षपक, ७ उपशांत मोहनीय, ८ क्षपक श्रेणी, ९ क्षीणमोह गुणश्रेणी, १० सयोगी केवली गुणश्रेणी अने ११ अयोगी केवली गुणश्रेणी—एम अग्यार गुणश्रेणी जाणवी

यथाक्रमममी प्रोक्ता, असंख्यगुणनिर्जराः ।
यतितव्यमतोऽध्यात्म—वृद्धये कलयापि हि ॥ १ ॥

भावार्थ—" क्रमे क्रमे आ गुणश्रेणीओ असंख्यगुणी निर्जरा करनारी कही छे, तेथी अध्यात्मनी वृद्धि करवा माटे थोडो पण यत्न करवो."

सम्यग् ज्ञानसंयुक्त क्रिया पांचमा गुणस्थानकथी आरंभीनेज थाय छे चोथे गुणस्थानके तो शुश्रूषा[१] विगेरे उचित क्रियाओ प्रवर्ते छे. ते शुश्रूषादिक क्रिया [illegible] सुवर्णना अलंकारने अभावे रुपाना अलंकारनी जेवी शुभ जाणवी." ते [illegible] श्रेष्ठीए फरीथी वैराग्यनो अर्थ अने तेनुं स्वरूप पूछयुं, त्यारे भगवान [illegible] " संसारना कारणभूत विषयोमां नहीं [illegible] थवाथी भवनी निर्गुणताने [illegible] निराबाध वैराग्य उत्पन्न थाय छे.

अकृत्वा विषयत्यागं, यो वैराग्यं दिधीर्षति ।
अपथ्यमपरित्यज्य, स रोगोच्छेदमिच्छति ॥ २

भावार्थ—" जे माणस विषयोनो त्याग कर्या विना [illegible] इच्छे छे ते कुपथ्यनो त्याग कर्या विना रोगनी शांतिने इच्छे [illegible]
जेओ लज्जाथी अथवा प्रवृत्तिथी[२] नीचु जुए छे, पण [illegible] ते धार्मिकाभासो[३] पोताना आत्माने नरकरूपी कूपमां [illegible] ज्ञानवाळा छे तेओ विषयोने जुए छे तोपण पोताना [illegible]

दारुयन्त्रस्थपांचाली—नृत्यतुल्या प्र[illegible]
योगिनो नैव बाधायै, ज्ञानिनो [illegible]

१ धर्मश्रवणेच्छा
२ मात्र धर्मनो [illegible]
[illegible]

भावार्थ–"योगीओनी विषयो सबंधी प्रवृत्तिओ काष्ठयत्रमा रहेली पाचालीना नृत्य समान छे, तेथी ते प्रवृत्तिओ ज्ञानीने लोकमा वर्तता छता बाध करी शकती नथी."

औदासीन्यफले ज्ञाने, परिपाकमुपेयुषि ।
चतुर्थेऽपि गुणस्थाने, तद्वैराग्यं व्यवस्थितम् ॥ २ ॥

भावार्थ–"उदासीनता रूपी जेनु फळ छे एवु ज्ञान ज्यारे परिपाक अवस्थाने पामे छे, त्यारे चोथा गुणस्थानमा पज ते वैराग्य रहे छे."

वैराग्यना त्रण प्रकार छे. १ दु'खगर्भित, २ मोहगर्भित अने ३ ज्ञानगर्भित. तेमा जे पुत्र, मित्र, धन धान्यादि सुखने आपनार मानेली इष्ट वस्तु प्राप्त न थाय अथवा प्राप्त थइने नाश पामे, त्यारे मनमा दु'ख उत्पन्न थवाथी ससारपर उद्वेग थवा रूप जे वैराग्य थाय ते दु.खगर्भित वैराग्य कहेवाय छे जेने आ वैराग्य थयो होय तेने कदाचित् चिंतित वस्तु प्राप्त थाय छे, तो तरतज ते वैराग्यथकी भ्रष्ट पण थाय छे तेवा वैराग्यवाळो माणस शुष्कतर्क, साहित्य, वैद्यक, गीत, रूपक विगेरे जे काइ बोले छे, साभळे छे के चिंतवे छे, ते सर्व पोताने इच्छित विषयनी अप्राप्तिथीज जाणवु. वळी तेओ लोको पासे एवी भावना भावे छे के' अहो ! आ ससारमा कोइ कोइनु नथी दैवे मारु सर्व हरण कर्यु, नाश कर्यु, मृत्युए सर्वनो ग्रास कर्यो माटे आ दु'खमय ससारने धिक्कार छे ' ए प्रमाणे वारवार बोले छे पण ते सर्व चिंतित पदार्थनी अप्राप्तिथीज बोले छे तेथी ते सर्व व्यर्थ छे. आ वैराग्य पारमार्थिक नथी आवो वैराग्य तो अनेक जीवोने अनेक प्रकारे प्राप्त थाय छे अहीं कोइ शका करे के "आ दु खगर्भित वैराग्यने व्यर्थ कह्यो, तो तेने वैराग्यनी गणनामाज शामाटे गण्यो ?" ते उपर भगवान उत्तर आपे छे के " बीजरूप आ वैराग्ये करीने पण कोइ वखत कोइ जीव पारमार्थिक वैराग्यने पण पामे छे, तेथी तेने वैराग्यमा गण्यो छे "

बीजो मोहगर्भित वैराग्य कह्यो छे, ते कुशास्त्रना अभ्यासथी उत्पन्न थयेला भवनैर्गुण्यना दर्शनथी बाळ तपस्विओने प्राप्त थाय छे. तामलितापस, पूरण, वल्कलचीरि अने प्रसन्नचद्रना पिता सोमचद्र विगेरने आ वैराग्य थयो हतो पृथ्वी विगेरे जीवोना स्वरूपनु वस्तुतत्त्वथी विपर्ययपणे ग्रहण करवाथी तओनो वैराग्य अज्ञान(मोह) गर्भित छे जैनोमा पण जेओ विरुद्ध अर्थना बोलनारा छे, सिद्धातनो अभ्यास करीने ते उपर जेओ आजीविका चलावे छे, अने अल्प शक्तिवाळा छता पण

पोतानो अनाचार गुप्त राखवा माटे मोटी शक्तिथी क्रियाओनो देखाव करे छे तेओनो पण पारमार्थिक वैराग्य नथी केमके—

> अमीषां प्रशमोऽप्युच्चे-र्दोषपोषाय केवलम् ।
> अंतर्निलीनविषम-ज्वरानुद्भवसन्निभ ॥ १ ॥

भावार्थ—"शरीरनी अंदर रहेला विषम [जीर्ण] ज्वरना अनुभवनी जेम आमनो वैराग्य मात्र घणा दोषोनु पोषण करनारज छे."

त्रीजो ज्ञानगर्भित वैराग्य कह्यो छे, ते वैराग्य जे स्याद्वाद समजनारनी बुद्धि स्वपर आगममां यथास्थित प्रवर्तती होय तेने थाय छे. कोइ जीवने विरक्त छतां पण शास्त्रार्थना अल्प बोधथी कोइ एक पक्षमा तणाइ जइ एकांत नय मानवानो कदाग्रह थाय छे, तेनो वैराग्य ज्ञानगर्भित जाणवो नहीं कह्यु छे के—

> उत्सर्गे चापवादेऽपि, व्यवहारेषु निश्चये ।
> ज्ञाने कर्मणि वाद चे-न्न तदा ज्ञानगर्भता ॥ १ ॥

भावार्थ—"जो उत्सर्गमा, अपवादमां, व्यवहारमां, निश्चयमां, ज्ञानमां अने कर्ममा (क्रियामां) वादविवाद होय, तो तेने ज्ञानगर्भपणुं जाणवु नहीं."

जेओ परना अपवादनी चेष्टा करवामां मूक, अंध अने बधिर जेवा छे, जेओ माध्यस्थ बुद्धिवाळा होइने सर्वत्र हितचिंतक छे, अने जेओ आज्ञारुचिवाळा छे तेओज ज्ञानगर्भित वैराग्यने अनुभवे छे कह्यु छे के—

> स्वभावान्नैव चलनं, चिदानंदमयात् सदा ।
> वैराग्यस्य तृतीयस्य, स्मृतेयं लक्षणावलि. ॥ १ ॥

भावार्थ—"सर्वदा चिदानंदमय स्वभावथी चलित न थवु, ए त्रीजा वैराग्यनुं लक्षण कहेलु छे"

आ सर्व हकीकत सांभळीने लेपश्रेष्ठीए पूछ्यु के "हे भगवान्! आपे प्रथम अध्यात्मनु वर्णन कर्यु हतु ते भाव अध्यात्म कया वैराग्यवाळाने होय ?" त्यारे प्रभुए कह्यु के हे श्रेष्ठी !

> विषयेषु गुणेषु च द्विधा, भुवि वैराग्यमिदं प्रवर्तते ।
> अपरं प्रथमं [illegible] ध्यात्मबुधैर्द्वितीयकम् ॥१॥

भावार्थ—" जगतने विषे विषयोमा अने गुणोमा एम बे प्रकारे आ वैराग्य प्रवर्ते छे, तेमा पहेला [विषयमा प्रवर्तेला वैराग्य] ने हल्कु अने बीजाने उत्कृष्ट अध्यात्म पंडितोए कह्यु छे. "

विवेचन—पहेलामा इच्छित वस्तुनी अप्राप्तिथी वैराग्य थाय छे, अने बीजामा गुण उत्पन्न थवाथी वैराग्य थाय छे, माटे पहेलाने मिथ्यात्वादिक पापना हेतु सहित होवाथी अनुत्कृष्ट कह्यु छे. आ अध्यात्ममा पूर्वे कहेला प्रथमना बे वैराग्य [दुःख अने मोहगर्भित] नो समावेश थाय छे अने बीजु अध्यात्ममय छे के जे त्रीजा ज्ञानगर्भित वैराग्यथी उत्पन्न थाय छे, तेने उत्कृष्ट कह्यु छे.

उत्कृष्ट वैराग्यवाळा योगिओ सर्वदा विषयोथी पराङ्मुख होय छे कह्यु छे के–

न मुदे मृगनाभिमल्लिका, लवलीचंदनचंद्रसौरभम् ।
विदुषां निरुपाधिबाधित, स्मरशीलेन सुगंधिवर्ष्मणाम् ॥१॥

भावार्थ—" निरुपाधिक गुणवडे कंदर्पना आचारनो बाध करेलो होवाथी जेनु शरीर सदाने माटे सुगंधी थयेलु छे एवा विद्वानोने कस्तुरी, मालती, लवली अने श्वेतचंदन विगेरेना सुगंध हर्ष आपता नथी अर्थात् कस्तुरी, मालतीपुष्प अने चंदनादिवडे चर्चित करेला शरीरनो सुगंध ज्ञानीओने हर्षने माटे थतो नथी. "

वळी ज्ञानी पुरुषो सम्यक् उपयोगनो पण त्याग करता नथी. ते विषे कह्यु छे के–

उपयोगमुपैति यच्चिरं, हरते यन्न विभावमारुत ।
न तत खलु शीलसौरभा–दपरस्मिन्निह युज्यते रति ॥१॥

भावार्थ—" जे शीलरूपी सुगंध निरंतर उपयोगमा आवे छे अने जेने चिरकाळे पण विभावरूपी वायु हरण करी शकतो नथी, ते शीलरूपी सुगंधने तजीने बीजाने विषे प्रीति राखवी योग्य नथी "

मधुरैर्न रसैरधीरता, क्वचनाध्यात्मसुधालिहां सताम् ।
अरसैः कुसुमैरिवालिनां, प्रसरत्पद्मपरागभोजिनाम् ॥२॥

भावार्थ—" जेम प्रसरता एवा पद्मना परागनो स्वाद लेनारा भ्रमरो रस विनाना पुष्पोथी अधीर थता नथी, तेम अध्यात्म रूपी अमृतनु पान करनारा सत्पुरुषो पण बीजा मधुर रसोथी अधीर थता नथी, अर्थात् तेमनु मन अस्थिर थतु नथी."

हृदि निर्वृतिमेव बिभ्रतां, न मुदे चंदनलेपनाविधिः ।
विमलत्वमुपेयुषां सदा, सलिलस्नानकलापि निष्फला ॥३॥

भावार्थ—"(मिथ्यात्व, अविरति अने कषाय विगेरे मळनो त्याग करीने)-हृदयमां निवृत्तिनेज धारण करनारा पुरुषोने चंदनलेप हर्ष आपतो नथी. तेमज (वैराग्यथीज)निर्मळपणाने पामेला तेओने सदा जळस्नाननो विधि पण निष्फळज छे."

तदिमे विषयाः किलैहिका, न मुदे केऽपि विरक्तचेतसाम् ।
परलोकसुखेऽपि निःस्पृहाः, परमानंदरसालसा अमी ॥ ४ ॥

भावार्थ—"विरक्त चित्तवाळाने आ लोकना विषयो (विषयसुख) हर्षने माटे थता नथी. तेमज तेओ परमानंदना रसने पामेला होवाथी आळसु थया छे, तेथी परलोकना सुखमां पण तेओ स्पृहा राखता नथी."

विपुलर्द्धिपुलाकचारणप्रबलाशीविषमुख्यलब्धयः ।
न मदाय विरक्तचेतसां, मनुषं गोपनतः पलालवत् ॥५॥

भावार्थ—"विरक्त चित्तवाळाने विपुलमति ऋद्धि, पुलाक लब्धि, चारण लब्धि तेमज प्रबलाशीविष विगेरे लब्धिओ पण धान्यनी साथे प्राप्त थयेला पलाळना घासनी जेम आनुषंगिक होवाथी मद करनार थती नथी."

हृदये न शिवेऽपि लुब्धता, सदनुष्ठानमसंगमंगति ।
पुरुषस्य दशेयमिष्यते, सहजानंदतरंगरंगिता ॥ ६ ॥

भावार्थ—"विरक्त पुरुषना हृदयमां मोक्ष मेळववानो पण लोभ होतो नथी. तेमज तेनुं शुभ क्रियानुं अनुष्ठान असंगपणाने पामे छे, अर्थात् असंगानुष्ठानना बळवडे ते क्रिया करे छे. तेवा पुरुषनी अवस्थाज सहजानंदना तरंगोथी रंगित इच्छेली छे."

आ प्रमाणे भगवान पासेथी तत्त्वस्वरूप सांभळीने लेपश्रेष्ठी बोध पाम्यो अने बोल्यो के "हे स्वामी ! आपे (श्री जिनेश्वरेज) प्रत्यक्ष करेलुं आवुं आत्मतत्त्व छोडीने बीजा अनेक पंडितो अने तापसादिको जीवादिक तत्त्वोने जाण्या विना 'अमे धर्मक्रिया करीए छीए' एम माने छे ते सर्व आकाशना चाचका भरवा जेवुं

छे." प्रभुए कह्युं के 'हे श्रेष्ठी ! केटलाएक उत्तम जीवो पूर्वभवथी पुण्य लइने आवे छे अने आ भवमां पण पुण्य उपार्जन करे छे, तेओ भरतचक्री, बाहुबली, अभयकुमार विगेरेनी जेम परलोकमां अविनाशी (मोक्ष) सुखने पामे छे. केटलाएक जीवो पूर्वभवथी पुण्य लइने आवे छे, पण आ भवमां पुण्य कर्या विनाज कोणिक विगेरेनी जेम खाली पाछा जाय छे. केटलाएक जीवो परलोकथी पुण्यरहित आवे छे, पण कालिक कसाइना पुत्र सुलसनी जेम अहीं पुण्य उपार्जन करीने जाय छे तथा केटलाक जीवो पुण्यरहित आवे छे, अने दुर्भागी पुरुषनी जेम पुण्य उपार्जन कर्या विनाज पाछा जाय छे, तेओ तो आलोक अने परलोक बनेमां अति दुःखी थाय छे."

इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने ते श्रेष्ठीए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो, अने मिथ्यात्वनी सर्व क्रियाओ छोडी दीधी. ते जोइने तेना प्रथमना साधर्मिक मित्रो कहेवा लाग्या के "आ श्रेष्ठी मूर्ख छे, केमके कुळक्रमथी आवेला धर्मने तजी दइने जैनधर्मनी क्रियाओ करे छे." ए प्रमाणे सांभळीने पण श्रेष्ठीए तेवा अनेक एकांतवादीओना मतने बीलकुल अंगीकार कर्यो नहीं. पोताने इष्ट एवा जैनधर्ममांज प्रवृत्त रह्यो. कह्युं छे के—

सर्वथा स्वहितमाचरणीय, किं करिष्यति जनो बहुजल्प ।
विद्यते स न हि कश्चिदुपायः, सर्वलोकपरितोषकरो यः ॥१॥

भावार्थ—"मनुष्ये सर्वथा आत्माने जे हितकर होय तेज कार्य करवुं. भिन्न भिन्न बोलनारा माणसो शुं करनार छे? केमके एवो कोइ पण उपाय छेज नहीं के जे सर्व लोकने संतोषकारी थाय."

त्यारपछी एकदा शिवभूति तापस के जे ते श्रेष्ठीनो प्रथम गुरु हतो ते त्यां आव्यो. श्रेष्ठी तेनी पासे गयो नहीं, तेथी तापसे विचार्युं के "ते श्रेष्ठी मारुं आगमन सांभळीने तरतज पांच जोजन सामो आवतो अने अनेक प्रकारनी सेवा बजावतो. आ वखते तो कुशलप्रश्न पण पूछवा आवतो नथी तेनुं शुं कारण?" एम विचारीने पोताना बीजा भक्तोने पूछतां तेओना मुखथी तेने जगद्गुरु श्री वीरपरमात्माथी धर्म पामीने जैनधर्मी थयेलो जाणी पोताना एक शिष्यने तेने बोलाववा माटे मोकल्यो. ते शिष्य श्रेष्ठी पासे जइ गुरुए कहेलो आशीर्वाद आपीने बोल्यो के "अमारा गुरु तमने वारंवार याद करे छे." श्रेष्ठीए कह्युं के "जे पृथ्वी विगेरे छकाय अने छ द्रव्यथी

व्याप्त थयेला लोकना स्वरूपने कहे तथा शुद्ध अध्यात्मादिक तत्त्वनो जे उपदेश करे, तेमज तेने अनुसरती पोतानी चेतना करीने जे तेवा धर्मनु प्रतिपालन करे तेज गुरु कहेवाय, तेनेज हु गुरु मानुं छु, बीजा कोइ गुरु होइ शकेज नहीं. तेथी शामाटे तमारा गुरु मने याद करे छे ? जो अन्न विगेरे जोइतुं होय तो पहेलाना करतां पण अधिक लइ जाओ. पहेलां तो में कदमूळ, शाक, पान विगेरे सदोष तथा अल्प मूल्यवाळी वस्तुओथी भक्ति करी हती, पण हवे तो घणा मूल्यवाळा अने निर्दोष–कालातिपातादिक दोषरहित घी विगेरेथी बनेला पक्वान्नो ग्रहण करो, केमके मारा गुरुए अनुकपादान आपवानो निषेध कर्यो नथी, तेथी हु महादानी थयो छु पण तमारे महात्मा (जिनेश्वर) ना धर्मनी हिलना करवी नहीं " ते सांभळीने शिष्य गुरु पासे आव्यो, अने श्रेष्ठीए कहेलु सर्व वृत्तात कहीने बोल्यो के "श्रेष्ठीनी वाणीनो विवेक तो पहेलांना करतां पण अधिक छे. तेनु चातुर्य आश्चर्यकारी छे " पछी शिवभूति जाते श्रेष्ठीने घेर गयो अने तेने कह्यु के " हे श्रेष्ठी ! कया धूर्ते तने छेतर्यो छे के जेथी मारा आवतां तु उभो पण थयो नहीं ? ते तें योग्य कर्यु नथी. मारु सामर्थ्य तें हजी जोयु नथी. पण मारा भक्तोने प्रत्यक्ष रीते स्वर्गनुं सुख थयुं छे, अने बीजाओ नरकवासी थया छे, ते तु तारा नेत्रोथीज जो." एम कहीने ते शिवभूतिए विद्याना बळथी स्वर्गनरकादि सर्व बताव्यु. ते जोइने श्रेष्ठीए विचार्यु के " खरेखर आ इन्द्रजाळज छे, स्वर्गमां जवु के नरकमां पडवु, ए तो पोतपोताना करेलां कर्मने आधारेज बने छे, परतु श्री वीतराग परमात्मानुं केवु धैर्य छे ! के जेनी पासे अनंत लब्धिओ छता पण ते लेश मात्र मान के अहकारादि धरावता नथी " एम विचारीने तेणे तापसने कह्यु के "विपुलर्द्धि, पुलाकलब्धि तथा चारण विगेरे लब्धिओ प्राप्त थया छतां पण जो ममतानो त्याग थयो न होय तो ते सर्व अयोग्यज छे, केमके निष्कारण विश्ववत्सल एवा श्री जिनेश्वरे कह्यु छे के—

> विषयै किं परित्यक्तै–र्जागर्ति ममता यदि ।
> त्यागात् कचुकमात्रस्य, भुजंगो न हि निर्विषः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जो ममता जागृत होय, तो विषयमात्रने त्याग करवाथी शुं फळ ? केमके मात्र कचुक (कांचळी) नो त्याग करवाथी सर्प कांइ विषरहित थइ जतो नथी. "

कष्टेन हि गुणग्राम, प्रकटीकुरुते मुनिः ।
ममताराक्षसी सर्व, भक्षयत्येकक्रीडया ॥ २ ॥

भावार्थ—"मुनि महा प्रयत्नथी गुणसमूहने प्रगट करे छे,ते सर्वने ममतारूपी राक्षसी क्रीडामात्रमाज भक्षण करी जाय छे "

वळी हे तापस ! कामरु देशनी स्त्रीओनी जेम जीवरूपी भर्तारने पशुरूप बनावीने रागरूपी विद्या तथा औषधीना बळथी ममतारूपी स्त्रीओ क्रीडा करे छे, माटे हे तपोधन ! तमे ममताना संगथी अध्यात्मनो एक लेश पण जाणता नथी, अने स्नानादिकने धर्म मानी ते करो छो, करावो छो अने तेनु अनुमोदन करो छो, तेथी तमे दुःखी थशो, परतु अढार पापस्थानरहित एवा विरतिधर्ममा तमे प्रवृत्त थाओ. आ मनुष्यजन्मने ससाररूपी खाडामा फोगट शामाटे नाखी द्यो छो ? " आ प्रमाणेना ते श्रेष्ठीना वचनो सांभळीने शिवभूति तापस तेने दृढ जैनधर्मी जाणी पोताने आश्रमे पाछो गयो.

लेपश्रेष्ठी सर्व प्रकारना गृहकार्य करे छे, तोपण ज्ञानधर्मने कदापि पण तजतो नथी, सर्वत्र सामेल राखे छे. एम वर्तता तेणे पोताना समग्र कुटुंबने धर्मना आचारवाळु कर्यु पछी पोताने दीक्षा पाळवामा समर्थ जाणीने तेणे चारित्र ग्रहण कर्यु. अनुक्रमे सर्व कर्मनो क्षय करी केवळज्ञान पामीने मोक्षपद मेळव्यु.

"ते लेपश्रेष्ठी श्री जिनेश्वर दूषणयुक्त बतावी आपेला एकात पक्षने छोडीने शुद्ध अध्यात्म तथा वैराग्यथी भूषित थयो पछी ते अमूढदृष्टि थयो सतो, मिथ्यात्वीओना संगथी पण कुदृष्टिवाळो थयो नहीं, पण उल्टो समकितमा वधारे प्रीतिवाळो थयो.

॥ इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य एकसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २७१ ॥

व्याख्यान २७२ मुं.

प्रशंसा नामना पांचमा दर्शनाचार विषे.

धर्मोद्योतो महान् येन, विहितो जैनशासने ।
तस्योपबृंहणा कार्या, गुरुभिर्जात्रवृद्धये ॥ १ ॥

भावार्थ—"कोइए जैनशासनने विषे मोटो धर्मनो उद्योत कर्यो होय तो तेना भावनी वृद्धिने माटे गुरुजनोए तेनी प्रशंसा करवी."

श्लाघिता एव तुष्यंति, सुराद्यो नरादय ।
स्वेष्टकार्यं च कुर्वंति, लोके लोकोत्तरेऽपि च ॥ २ ॥

भावार्थ—"देवतादिक तथा मनुष्यादिकनी जो श्लाघा करी होय तो तेओ प्रसन्न थाय छे, अने लौकिक तथा लोकोत्तर विषयमां पोतानु इच्छित कार्य साधी आपे छे."

लोकमां पण सारुं काम करनारनी प्रशंसा करवामा आवे छे तो ते बहु गुणकारी थाय छे. प्रायः तो प्रशंसावडेज लोकमां अनेक कार्यमां निर्वाह थतो जोवामां आवे छे. सेवक विगेरे प्रशंसा करवाथीज प्रायः सारी रीते मन दइने काम करे छे. वर्ण, भोज अने विक्रम विगेरेनी जेम राजादिक प्रशंसावाळी कविताओ विगेरे सांभळीने संतोष पाम्या सता सहस्र अने लाखो रुपीआ आपे छे तथा सुरप्रिय यक्ष विगेरेनी जेम देवताओ पण स्तोत्र स्तुति विगेरेथी प्रशंसा करी होय तोज प्रसन्न थाय छे, तेवीज रीते लोकोत्तरमां पण तप, स्वाध्याय, कविता, दुष्कर विहार, वादीनो जय तथा परीषहनु सहन करवु विगेरे धर्मकार्य जेणे कर्युं होय तेनी यथायोग्य प्रशंसा गुरुविगेरेए अवश्य करवी. जे गुरुओ प्रमादथी अद्भुत धर्मक्रिया करनारनी प्रशंसा करता नथी तेओनो गच्छ रुद्रसूरिनी जेम सीदाय छे. कह्यु छे के—

जो पुण पमायओ दप्पओ अ, उववूहणे न वट्टिज्जा ।
नासिज्जइ अप्पाण, मुणिजण च सो रुद्दसूरि व्व ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेणे प्रमादथी अथवा ... करेलां उत्कृष्ट

धर्मकार्यनी प्रशंसा करवामा प्रवृत्ति करता नथी तेओ स्वद्सूरिनी जेम पोतानो तथा पोताना गच्छना मुनिजनोनो विनाश करे छे."

श्री महावीरस्वामीए पण सभा समक्ष श्री कामदेव श्रावकनी प्रशंसा करी हती ते विषे सातमा अंगमा कह्यु छे ते आ प्रमाणे—

कामदेव श्रावकनी कथा

चंपा नगरीमा कामदेव नामे मोटो गृहस्थ रहेतो हतो तेने भद्रा नामनी पत्नी हती ते महाधनी होवाथी तेणे छ कोटी द्रव्य पृथ्वीमा निधानरूप कर्यु हतु, छ कोटी द्रव्य व्यापारमा राख्यु हतु, अने छ कोटी द्रव्य घर, घरवकरी अने वस्त्राभूषणादिमा रोक्यु हतु. तेने दश दश हजार गायोवाळा छ गोकुळ हता.

एकदा श्री महावीरस्वामी पूर्णभद्र नामना चैत्यमा समवसर्या. ते वखते श्री जिनेश्वरने वांदवा माटे सर्व लोक जता हता, ते जोइने कामदेव पण गयो त्या श्री वीरस्वामीने प्रणाम करीने तेनी पासे देशना साभळी, तेथी कामदेव प्रतिबोध पाम्यो अने आनंद श्रावकनी जेम तेज वखत श्राद्धधर्म ग्रहण कर्यो. पछी पोताने घेर आवीने उल्लासपूर्वक पोताने धर्म प्राप्त थयानु वृत्तात पोतानी पत्नीने कह्यु ते साभळीने तेणे पण मोटी समृद्धिपूर्वक प्रभु पासे जइने शिवनंदानी जेम श्रावकधर्म ग्रहण कर्यो

निरंतर श्रावकधर्मनु प्रतिपालन करता ते कामदेवने चौद वर्ष व्यतीत थया. पंदरमा वर्षमा एकदा मध्य रात्रिए धर्मजागरिकाए जागता कामदेवने विचार थयो के—"घरनो समग्र कार्यभार पुत्रो उपर नाखीने हवे हु श्रावकनी अग्यार प्रतिमा वहन करु " पछी प्रात:काळे उठीने पोताना पुत्रोने घरनो सर्व कार्यभार सोंपी पोते पौषधशाळामा रही दर्भना संथारापर बेसी श्रीजिनेश्वरनु ध्यान करता आनंद श्रावकनी जेम प्रतिमा वहन करवा लाग्यो एकदा रात्रिए कामदेव ध्यानमा बेठो छे, ते वखते सौधर्मेन्द्रे पोतानी सभामा कामदेवनी प्रशंसा करी तेपर श्रद्धा नहीं राखतो कोइ देव तेनी परीक्षा करवा आव्यो ते देव दैवीशक्तिथी घणा भयंकर रूपो विकुर्वीने तेने भय पमाडवा लाग्यो वळी ते बोल्यो के "जो तु धर्मने छोडी नहीं दे तो तीक्ष्ण खड्गना प्रहारवडे तारु अकाळे जीवित हरी लइश, जेथी तु आर्तध्यानथी पीडाइने अनंत दुर्गतिनु दु ख पामीश" आ प्रमाणे तेणे वारंवार कह्यु पण ते श्रेष्ठी जरा पण भय न पाम्यो, त्यारे ते देवे क्रोधथी तेनापर खड्गना प्रहार

कर्या, तेथी पण श्रेष्ठी क्षोभ पाम्यो नहीं. त्यारे तेणे एक भयानक हस्तीनु रूप विकुर्व्युं अने बोल्यो के "हे दंभना सागर! आ सूंढथी तने आकाशमा उछाळीने ज्यारे पृथ्वीपर पाडीश त्यारे चारे पगोथी दाबीने चूर्ण करी नाखीश" एम कहीने ते देवताए पोतानी सर्व शक्तिथी हस्तिरूपे तेने परीषह कर्यो तेथी पण ते श्रेष्ठी जरा पण क्षोभ पाम्यो नहीं, त्यारे फरीथी तेने क्षोभ पमाडवा माटे तेणे महा भयकर अनेक फणावाळु सर्पनु रुप विकुर्व्युं अने ऊंची फणाए फूफाडा मारतो सतो ते बोल्यो के "अरे अप्रार्थ्य (मृत्यु)नी प्रार्थना करनार! श्री वीरधूर्त्तना धर्मने छोडीने मने प्रणाम कर, नहीं तो हु एवो डंश मारीश के जेना विषनी वेदनाथी पीडाइने तु दुर्गति पामीश."आवां वचनो बे त्रण वार कहेवाथी पण ते श्रेष्ठी क्षोभ पाम्यो नहीं त्यारे ते भयकर सर्पे तेना शरीरपर त्रण भरडा दइने तेना कंठ उपर निर्दयताथी डंश दीधो ते विषनी वेदनाने पण श्रेष्ठीए सम्यक् प्रकारे सहन करी, अने मनमा श्री महावीर परमात्मानुं स्मरण करतो सतो अधिक अधिक शुभ ध्यान ध्यावा लाग्यो. देवताए बीजी पण अनेक रीते पोतानी शक्ति प्रमाणे सर्व वीर्य फोरव्युं तोपण ते श्रेष्ठीना द्रव्यभावनी शक्तिनो अल्पमात्र पण नाश करवाने ते समर्थ थयो नहीं. छेवटे ते देवता थाक्यो, त्यारे श्रेष्ठीने प्रणाम करीने बोल्यो के "हे श्रावक! तने धन्य छे मायारूपी पृथ्वीनु दारण करवामां हळ समान एवा परम धीर श्री महावीरस्वामीए कहेला धर्ममार्गमां रसिक थयेलो तुं साचो छे. तारा आवा सुदृढ समकितरूप आदर्श (अरीसो)मां जोवाथी मारू पण सम्यग् दर्शन स्वरूप प्रगट थयु छे, अने अनादि काळनु मिथ्यात्व नाश पाम्युं छे, तारा धर्माचार्य तो श्री महावीर भगवान छे, पण मारो धर्माचार्य तो तुज छे. चदनना वृक्षनी जेम तें परीषहो सहन करीने मने सम्यक्त्वरुपी सुगध आपी छे, ते सर्व मारो अपराध क्षमा करजे." इत्यादि ते श्रेष्ठीनी स्तुति करीने देवताए पोताने स्वर्गथी त्या आववानु कारण कही बताव्युं. वळी ते बोल्यो के "हुं स्वर्गथी सम्यक्त्व रहित अहीं आव्यो हतो, अने तेनाथी परिपूर्ण थइने पाछो स्वर्गे जइश. तें बहु सारू कर्युं के एक मिथ्यात्वरूप वस्तुथी मने खाली कर्यो, अने एक सम्यक् दर्शनरूप वस्तुना दानथी मने भरपूर कर्यो. अहो! तारू चातुर्य अकलित छे." एम कहीने ते देव श्रेष्ठीने त्रण प्रदक्षिणा दइ तेना उपकारनु स्मरण करतो सतो स्वर्गे गयो.

पछी श्रेष्ठी कायोत्सर्ग पारीने त्यां पधारेला श्री महावीरस्वामीने वंदना करवा गयो. ते वखते बार पर्षदाओनी समक्ष प्रभुए कामदेवने कह्युं के " हे श्रावक ! तें आज रात्रिए महा भयंकर त्रण परीषहो बहु सारी रीते सहन कर्या, अने धर्मध्यानथी जरा पण चलित थयो नहीं. ते देवताए क्रोधथी पोतानी सर्व शक्ति प्रगट करी, अने तें पण आत्मवीर्य फोरवीने अदीन मनथी स्थिरता राखी. तारुं व्रतनुं पाळवुं मेरुपर्वतनी जेवुं अचलित छे. छेवट ते देवता तने खमावीने गयो. आ हकीकत बराबर छे ?" कामदेवे कह्युं के 'तेमज छे.' आ प्रमाणे प्रभुए तेनी धर्मनी दृढता वखाणीने सर्व साधु साध्वी विगेरेने उद्देशीने कह्युं के " हे गौतमादिक साधुओ ! ज्यारे श्रावक पण आवा उपसर्गो सहन करे छे त्यारे तमारे तो तेथी पण वधारे सहन करवा जोइए, केमके तमेतो उपसर्गरूपी सैन्यना समूहने जीतवा माटेज (रजोहरण) रूप वीरवलयने धारण करीने विचरो छो." ते सांभळीने सर्वेए "तहत्ति" एम बोलीने प्रभुनो उपदेश अंगीकार कर्यो, अने तेओ पण कामदेवनी प्रशंसा करवा लाग्या.

पछी कामदेव श्रेष्ठी पोताने घेर गयो, अने आनंद श्रावकनी जेम एकादश प्रतिमा पूर्ण करीने वीश वर्ष सुधी जैनधर्म पाळी आयुष्यने अंते एक मासनी संलेखणा करीने प्रथम देवलोकमां अरुणाभ विमानने विषे चार पल्योपमना आयुष्यवाळो वैमानिक देवता थयो. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ सिद्धिपदने पामशे.

" भयंकर उपसर्गो आव्या छतां पण दृढ रीते व्रतमां तल्लीन रहेला कामदेवादिकने धन्य छे के जेओनी तीर्थंकरे पण श्लाघा करी छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य द्विसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २७२ ॥

व्याख्यान २७३ मुं.

इजु प्रशसा विषज कहे छे.

संभूतिविजयेशेन, स्थूलभद्रो हि सस्तुत ।
नृपामात्यादयो नुनं, श्लाघिता हेमसूरिभि॰ ॥ १ ॥

भावार्थ—" सभूतिविजय गुरुए स्थूलभद्रनी प्रशंसा करी हती, तेमज हेमचद्रसूरिए राजा, अमात्य विगेरेनी प्रशसा करी हती. "

स्थूलभद्र मुनि ज्यारे वेश्याने घेर चातुर्मास करीने गुरु पासे गया, त्यारे तेने दूरथीज जोइने श्री सभूतिविजय गुरुए " अहो ! दुष्कर काम करनार ! अहो !, दुष्कर काम करनार ! " एवा सबोधनथी बोलावीने तेनी श्लाघा करी हती, माटे दर्शनाचारनु पालन करनारे अवश्य गुणीओना गुण वधारवा माटे तेनी प्रशंसा करवी. अहीं हेमसूरिनो संबध कहे छे.

श्री हेमचंद्रसूरि प्रबंध

एकदा श्री कुमारपाळ राजाए सोरठ देशना राजा समरने जीतवा माटे उदयन नामना प्रधानने मोकल्यो. ते पादलिप्त (पालीताणा) नगरमा श्री वीरने नमीने श्री ऋषभदेव भगवानने वादवानी इच्छा थवाथी सामतादिकने आगळ प्रयाण करवानु कहीने पोते शत्रुजय पर्वतपर चढ्यो, त्या द्रव्यस्तव संपूर्ण करीने अवग्रहनी बहार नीकळी त्रीजी निस्सीहि करीने चैत्यवदना करवानी शरुआत करे छे, तेटलामा एक उदर दीवानी सळगती वाट काष्ठना प्रासादमां पोताना दरने विषे लइ जवा लाग्यो. देराना पूजारीए तेने जोयो, तेथी ते वाट मूकावी. ते जोइने मत्रीनी समाधिनो भग थयो, अने काष्ठना प्रासादनो आवी रीते कोइ वखत नाश थवानो सभय लागवाथी दिलगीर थइने तेणे विचार कर्यो के "राज्यादिना अपार व्यापारमा गुथायेला अमने धिकार छे के जेथी अमे आवा जीर्ण चैत्यनो उद्धार करी शक्ता नथी ! राजाओनी पापव्यापारवडे उपार्जन करेली लक्ष्मी शा कामनी छे के जे लक्ष्मी तेना अधिकारीओथी तीर्थादिकमा वापरीने कृतार्थ करातो नथी." पछी जीर्णोद्धार करवानी इच्छावाळा मत्रीए प्रभु समक्ष ब्रह्मचर्य, एकासणु, पृथ्वीपर शयन अने ताबुलनो त्याग इत्यादि अभिग्रहो ग्रहण कर्या, अने [illegible] रथी उतरीने प्रयाण करतां पोताना स्कंधावारनी भेळो थइ गयो समरसेन

साथे युद्ध थता पोतानु सैन्य भागवाथी पोते सग्राममा उतरीने शत्रुनु सैन्य कापवा लाग्यो, तेमा पोते जोके शत्रुओना बाणथी जर्जरित थयो, तोपण तेणे अनेक बाणो-वडे समर राजाने मारी नाख्यो पछी तेना देशमा पोताना राजानी आज्ञा फेरवीने मंत्री स्वदेश तरफ पाछो वळ्यो.

मार्गमा शत्रुना प्रहारनी पीडाथी मंत्री आरवे अधारा आववाथी मूर्छा खाइने पृथ्वीपर पड्यो, तेने पवन विगेरेना उपचारथी सज्ज कर्यो, एटले ते करुण स्वरे रोवा लाग्यो ते जोइने सामत विगेरए तेने पूछ्यु, त्यारे ते मंत्रीए पोतना मनमा चार शल्य कह्यां. पोताना नाना पुत्र अबडने सेनापतिपणु अपाववु, शत्रुजय गिरिपर पथ्थरमय प्रासादनुं बनाववु, गिरनार पर्वत उपर नवा पगथिया कराववा अने आ मृत्युसमये निझामणा करनारा गुरुनो अभाव, आ चार शल्य सामळीने सामतादिक बोल्या के "हे मंत्रीश्वर! प्रथमना त्रण मनोरथ तो तमारो मोटो पुत्र बाहडदेव पूर्ण करशे, तेमा अमे साक्षीभूत छीए, अने आराधना करवा माटे कोइ साधुने अमे हमणाज लावीए छीए." एम कहीने कोइ वठ पुरुषने साधुनो वेप पहरावीने मंत्री पासे लावीने कह्यु के "आ गुरु आव्या." मंत्री तेने गौतमस्वामीनी जेम नमी, समग्र प्राणीओने खमावी करेला पापने निंदी तथा पुण्यकरणीनु अनुमोदन करी स्वर्गे गयो.

ते सर्व जोइने पेला वठे विचार्यु के "अहो! आ मुनिना वेपनो महिमा केवो छे? हु भिक्षुक छता आ सर्व लोकनो पराभव करनार अने जगत् जेनी वदना करे छे एवा मंत्रीए मने वदना करी, तेथी आ जगत्वद्य वेपने हु भावथी पण शरणरूप करु छु." एम निश्चय करीने ते गिरनार पर्वतपर जइ बे मासना अनशनथी काळ करीने देवलोके गयो.

"उदयन मंत्रीए तथा सामतादिके ते मुनिनी शुद्ध प्रशसा करी, जे सामळीने भिक्षुकनी श्रद्धा दृढ थइ, तेथी ते गिरनारपर जइने स्वर्गे गयो."

पछी सामतादिक सैन्य सहित पाटण आव्या, अने श्री चौलुक्य(कुमारपाळ) राजाने शत्रुनी लक्ष्मी विगेरनु प्राभृत (भेटणु) आपीने श्री उदयन प्रधानना शौर्यनी प्रशसापूर्वक तेनो सर्व वृत्तात कह्यो पछी राजा, सामत विगेरे बाहड अने अबडने घेर गया, अने तेमनो शोक उतरावीने बोल्या के—

युवां यदि पितुर्भक्तौ, धर्ममर्मविदावपि ।
उद्भ्रियेथा तदा तीर्थे, गृहीत्वा तदभिग्रहान् ॥१॥

भावार्थ—"जो तमे बन्ने भाइओ खरेखरा पिताना भक्त हो अने धर्मना रहस्यने जाणता हो, तो तमारा पिताए ग्रहण करेला अभिग्रहोने ग्रहण करीने ते बन्ने तीर्थनो उद्धार करो."

ऋणमन्यदपि प्रायो, नृणां दुःखाय जायते ।
यद्देवस्य ऋणं तत्तु, महादुःखनिबंधनम् ॥ २ ॥

भावार्थ—"बीजुं [लौकिक] ऋण पण घणु करीने माणसोने दुःखदायी थाय छे, तो देवनुं ऋण तो महा दुःखनु कारणभूत छे "

स्तुत्याः सुतास्त एव स्युः, पितरं मोचयंति ये ।
ऋणाद्देवऋणात्तात, मोचयेथां युवां ततः ॥ ३ ॥

भावार्थ—"जेओ पोताना पिताने ऋणथी मुक्त करे छे ते पुत्रोज प्रशंसा करवा लायक छे, तेथी तमे तमारा पिताने देवऋणथी मुक्त करो "

सवितर्यस्तमापन्ने, मनागपि हि तत्पदम् ।
अनुद्धरंतस्तनया, निंद्यते शनिवज्जनैः ॥ ४ ॥

भावार्थ—"सविता[1] अस्त पाम्ये सते तेना पुत्रो जो तेना स्थानने जरा पण उद्धार न करे, तो तेवा पुत्रो शनिनी जेम लोकोवडे निंदाय छे."

आ प्रमाणेना राजा विगेरेनां अमृत तुल्य वचनो सांभळीने उत्साह पामेला बाहड तथा अंबड एक एक अभिग्रह ग्रहण कर्यो. पछी बाहडे पोताना ओरमान भाइ अंबडने सेनापतिनुं स्थान राजा पासे अपाव्यु, अने पोते राजानी आज्ञा लइने रैवतक [गिरनार] गयो. त्यां अंबिका देवीए जे मार्गे अक्षत छांट्या ते मार्गे त्रेसठ लाख द्रव्यनो व्यय करीने नवा सुगम पगथीआं कराव्यां. पछी त्यांथी शत्रुंजयनी तळेटीए जइने त्यां आवासस्थान करावी सैन्य सहित पडाव नाख्यो अने देश परदेशना कारीगरोने बोलाव्या. चैत्योद्धारना समाचार सांभळीने बीजा अनेक श्रावक गृहस्थो पण त्यां आव्या ते वखते टीमाणक नामना गामनो रहीश भीम नामनो कुंडलीओ वणिक् मात्र छ रुपियानीज मुडीवडे घी लइने त्यां

१ सविता एटले सूर्य तथा पिता ए बे अर्थ थवाथी—सूर्य अस्त पामे त्यारे जो तेना स्थानने शनि नामनो ग्रह शुए नहीं तो ते घणो रिष्ट गणाय छे, ए वात ज्योतिषशास्त्रमां प्रसिद्ध छे

आव्यो, ते घी वाहडना सैन्यमां वेचीने शुद्ध व्यापारथी तेणे एक रुपियाथी अधिक नफो उपार्जन कर्यो, पछी एक रुपियाना पुष्पो लइने तेनावडे प्रभुनी पूजा करी ते सैन्यमां आव्यो. त्यां आम तेम फरतां तेणे अनेक जनोथी सेवातां वाहड मंत्रीने जोयो. ते वखते द्वारपाळो तेने धक्का मारीने दूर करतां हतां, छतां पण तेणे अंदर पसी जइने विचार कर्यो के—

अहो मर्त्यतया तौल्य–मस्य मेऽपि गुणैः पुनः ।
द्वयोरप्यंतरं रत्नो–पलयोरिव हा कियत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहो ! मनुष्यजातिथी तो मारुं तथा आ मंत्रीनुं तुल्यपणुं छे, पण गुणथी तो अमारा बेमां रत्न तथा पाषाणनी जेम अहो ! केटलुं बधुं अंतर छे ? "

भीमवणिक एम विचारे छे तेटलामां द्वारपाळो त्यां आवी गळे हाथ दइने तेने काढी मूकवा लाग्या ते मंत्रीए जोयुं, एटले तेने पोतानी पासे बोलावीने पूछयुं. भीमे घी वेचवाथी थयेला लाभवडे प्रभुनी पूजा कर्यानुं वृत्तांत कह्युं त्यारे मंत्री बोल्यो के—

धन्यस्त्वं निर्धनोऽप्येवं, यज्जिनेन्द्रसपूजयः ।
धर्मबंधुस्त्वमसि मे, ततः साधर्मिकत्वतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" तने धन्य छे के तें निर्धन छतां पण आ प्रमाणे जिनेश्वरनी पूजा करी, तेथी साधर्मिकपणाथी तुं मारो धर्मबंधु छे "

आ प्रमाणे सर्व गृहस्थोनी समक्ष ते भीमनी प्रशंसा करीने तेने घणा आग्रहथी पोताना अर्ध आसनपर बेसाड्यो. ते वखते भीमने विचार थयो के " अहो ! जिनेश्वरना धर्मनो महिमा केवो छे अने जिनेश्वरनी पूजानी लीला पण केवी छे के जेथी हुं दरिद्रशिरोमणि छतां आवुं सन्मान पाम्यो. " ते वखते मोटा लक्षाधिपति गृहस्थोए मंत्रीने कह्युं के—

प्रभविष्णुस्त्वमेकोऽपि, तीर्थोद्धारेऽसि धीसख ।
बंधूनिव तथाप्यस्मान्, पुण्येऽस्मिन् योक्तुमर्हसि ॥१॥

भावार्थ—' हे मंत्रीश्वर ! आ तीर्थनो उद्धार करवामां तमे एकला पण समर्थ छो, तोपण आ पुण्यमां बंधुनी जेम अमने पण जोडवाने तमे योग्य छो "

पित्रादयोऽपि वंच्यंते, कदापि क्वापि धार्मिकैः ॥
न तु साधर्मिका धर्म–स्नेहपाशनियंत्रणात् ॥ २ ॥

भावार्थ—"धार्मिक पुरुषो कोइ वखत कोइ प्रसंगे पिता विगेरेने पण छेतरे छे, परंतु धर्मस्नेहरुपी पाशथी बंधायेला होवाथी साधर्मिकने कदि पण छेतरता नथी." तेथी अमारु धन पण आ तीर्थना उद्धारमां वापरीने अमने कृतार्थ करो"

आ प्रमाणे कहीने ते गृहस्थो सुवर्णादि द्रव्य आपवा लाग्या, एटले मंत्रीए चोपडामां तेओनां नाम लखवा माड्या ते जोइ भीमे विचार्यु के "मारी पासे सात रुपिया छे,पण जो तीर्थमा उपयोगी थाय तो हु कृतार्थ थाउ, परतु आटली थोडी रकम शी रीते आपी शकाय ?" भीम आ प्रमाणे विचारे छे तेटलामां मंत्रीए तेना आकार उपरथी जाणीने तेने कह्यु के " हे साधर्मिकबंधु ! तमारी पण इच्छा होय तो फाइक आपो, आ तीर्थना उद्धारमां भाग देवो ते मोटा पुण्यबीज बने छे " मंत्रीए आ प्रमाणे कहेनाथी भीमे पोताना साते रुपिया आपी दीधा, ते लइने उचितपणामा प्रवीण मंत्रीए तेनु नाम सर्व गृहस्थोना नामनी उपर लख्यु ते जोइने गृहस्थोए तेम करवानु कारण पूछ्यु, त्यार मंत्री बोल्या के "आणे तो पोतानु सर्वस्व आप्यु छे, अने तमे तो तमारी मुंजीनो शतांश पण आप्यो नथी माटे ते तमाराथी अधिक छे." ते सांभळी ते गृहस्थो हर्ष तथा लज्जा पाम्या

पछी मंत्रीए भीमने पांचसो रुपिया अने त्रण पट्टकुल (वस्त्र) आपवा माड्यां पण भीमे एम कोडीना लाभथी कोटी धन गुमाववा जेवु मानीने ते लीधु नहीं अने पोताने घेर गयो तेनी स्त्री पिशाचणी जेवी हती, तेथी तेनी पासे वात करतां भय पाम्यो, तोपण सर्व वृत्तांत धीरे धीरे कह्यो ते साभळीने पुण्यना उदयथी स्त्रीए कह्यु के "तीर्थना उद्धारमा भाग लीधो ते सारु कर्यु, अने मंत्री पासेथी काइ लीधु नहीं ते तो घणुज सारु कर्यु" पछी ते स्त्री पुरुष गायने बांधवा माटे खीलो नाखता हता, त्यां पृथ्वी खोदतां तेमांथी चार हजार सुवर्ण द्रव्यनो कळश नीकळ्यो ते जोइ " अहो ! केवो पुण्यनो उदय छे ! आ कळश पण पुण्यकर्ममाज आपीए तो ठीक." एम विचारीने पोतानी स्त्रीनी संमतिथी कळश लइने भीम मंत्री पासे आव्यो मंत्रीने ते कळश तथा सर्व वृत्तांत कहीने तीर्थोद्धारने माटे ते आपवा लाग्यो मंत्रीए लेवानी ना [illegible] भीम बळात्कार आपवा

एम खेंचताण करता रात्री पडी. रात्रीए कपर्दी यक्षे आवीने भीमने कह्यु के– "हे भीम! तें एक रुपियाना पुष्प लइने आदीश्वरनी पूजा करी, तेनाथी प्रसन्न थइने में तने निधि आप्यो छे, माटे ते तु स्वेच्छाथी भोगव." एम कहीने यक्ष अंतर्धान थयो प्रातःकाळे भीमे मत्रीने वात करी, पछी सुवर्ण तथा रत्नना पुष्पोथी आदीश्वरनी पूजा करीने ते कळश लइ भीम पोताने घेर आव्यो अने गृहस्थनी जेम पुण्यमार्गमा प्रवृत्त थयो.

अहीं मत्रीए शुभ मुहूर्ते काष्ठनु चैत्य दूर करावी सुवर्णनी वास्तुमूर्ति विधिपूर्वक पृथ्वीमा स्थापन करी, तेनी उपर मोटी शिला मूकी खातमुहूर्त कर्यु पछी चैत्यनु काम शरु कर्यु. ते पाषाणमय प्रासाद बे वर्षे संपूर्ण थयो ते पूर्ण थवाना समाचार आपनारने मत्रीए वधामणीमा बत्रीश सुवर्णनी जीभ आपी. ते सबधी हर्षोत्सव चाले छे तेवामा त्रीजा माणसे आवीने कह्यु के "हे मत्री! कोइ पण कारणथी प्रासाद फाटी गयो." ते साभळीने मत्रीए तेने बमणी वधामणी आपी. ते जोइने पासे बेठेला माणसोए तेनु कारण पूछयु, त्यारे मत्री बोल्यो के "मारा जीवता प्रासाद फाट्यो ते ठीक थयु, केमके हु फरीथी बीजीवार करावीश." पछी मत्रीए सूत्रधारो (सलाटो)ने बोलावीने प्रासाद फाटवानु कारण पूछयु त्यारे तेओ बोल्या के "हे मत्रीराज! भमतीवाळा प्रासादनी भमतीमा पवन पेठो, ते नीकळी शक्यो नहीं, एटले तेना जोरथी प्रासाद फाट्यो छे, अने जो भमती विनानो प्रासाद करीए छीए तो करावनारने सतान न थाय एवो लेख छे." ते साभळीने मत्रीए विचार्यु के—

संतान सुस्थिरं कस्य, स च भावी भवे भवे ।
सांप्रतं धर्मसंतान, एवास्तु मम वास्तव ॥ १ ॥

भावार्थ—"कोनी सतति अचळ रही छे? ते तो दरेक भवमा थयाज करे छे, माटे हाल तो मारे वास्तविक एवी धर्म सततिज हो"

एम विचारीने मत्रीए भमतीनी बन्ने भींतोनी वचमा मजबूत शिलाओ मुकावीने ते पूरी दीधी ते प्रासाद त्रण वर्षे पूर्ण थयो आ जीर्णोद्धार करावता मत्रीने बे करोड ने सत्ताणु लाख द्रव्यनो खर्च कारीगरोने आपवामा थयो छे एम पूर्व पुरुषो कहे छे.

पछी ते प्रासादनी प्रतिष्ठा करवा माटे श्री संघ सहित हेमचंद्राचार्यने बोलावीने मोटा उत्सवपूर्वक संवत ११११ नी सालमां (शनिवारने दिवसे) सुवर्णना दंड, कळश अने ध्वजानी प्रतिष्ठा करीने तेने प्रासाद उपर स्थापन कर्या. त्यां देवपूजाने माटे चोवीश उद्यान तथा चोवीश गाम आपीने तळेटीमा वाहडपुर नामे गाम वसाव्युं. ते गाममां त्रिभुवनपाळविहार नामनो प्रासाद करावीने तेमां श्री पार्श्वनाथनुं बिंब स्थापन कर्युं ते मंत्रीना आवा लोकोत्तर चरित्रथी प्रसन्न थइने श्री हेमचंद्राचार्य बोल्या के—

जगद्धर्माधारः सगुरुतरतीर्थाधिकरण-
स्तदप्यर्हन्मूलं स पुनरधुना तत्प्रतिनिधिः ।
तदावासश्चैत्यं सचिव भवनोध्धृत्य तदिदं,
समं स्वेनोद्दध्रे भुवनमपि मन्येऽहमखिलम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जगतना धर्मनो आधार अने मोटा मोटा तीर्थोनुं अधिकरण अर्हंतमूलक[1] छे. सांप्रत काळमां ते अरिहंतने बदले तेनी प्रतिमा छे, ते प्रतिमाना आवासरूप चैत्यनो तें उद्धार कर्यो, तेथी हुं मानुं छुं के हे सचिव! तें तारा आत्मा सहित आखा भुवननो उद्धार कर्यो. "

ए प्रमाणे सकळ संघे स्तुति करायेला वाग्भट (वाहड) मंत्री पाटणमां आव्या, अने राजाने प्रसन्न कर्या.

हवे आम्रभटे (अंबडे) पण पिताना श्रेयने माटे माटे श्री भृगुपुर (भरुच)मां शकुनिकाविहार नामनो प्रासाद कराववानो आरंभ कर्यो. तेने माटे खाडो खोदतां नर्मदा नदी पासे होवाथी तेनुं पाणी अकस्मात् तेमां भराइ गयुं, तेथी सर्व कारीगरो तेमां डुबी गया ते हकीकत सांभळतां अनुकंपाना सविशेषपणाथी आम्रभटे पोताना आत्मानी निंदा करतां सतां स्त्रीपुत्र सहित तेमां झंपापात कर्यो. ए प्रमाणे पड्या छतां पण तेना अंगने कांइ पण नुकशान थयुं नहीं आवुं तेनुं नि:सीम सत्त्व जोइने प्रसन्न थयेली स्त्रीरूप कोइ देवीए तेने बोलाव्यो, एटले तेणे तेने पूछ्युं के "तमे कोण छो?" ते बोली के " हुं आ क्षेत्रनी अधिष्ठात्री देवी छुं तारा सत्त्वनी परीक्षा

१ अर्हंत् छे मूळ कारण जेनुं.

करवा माटे आ सर्व मे कर्यु छे. हे वीर ! तु खरेखर प्रशसा करवाने योग्य छे, वीर पुरुषोमा अग्रणी छे, तारु सत्त्व अति उत्कृष्ट छे, नहितो बीजा घणा माणसो छतां थोडा माणसनु मरण थवाथी तारी जेम आ प्रमाणे मरवाने कोण तैयार थाय ? आ तारा सर्वे कारीगरो अक्षतागज छे, तेना विष तु चिंता करीश नहीं. हवे तारु धारेलु कार्य पूर्ण कर " इत्यादि कहीने देवी अतर्धान थइ मत्री कुटुब अने कारीगरो सहित बहार नीकल्यो. पछी देवीने योग्य बलिदान आपीने अढार हाथ उचो श्री मुनिसुव्रत स्वामीनो प्रासाद कराव्यो, तथा शकुनिका, मुनि अने न्यग्रोध (वड) नी लेप्यमय मूर्त्तिओ करावी आ शकुनिकाविहारनो उद्धार सवत १२२० नी सालमा अवडे हर्षपूर्वक कराव्यो पछी प्रतिष्ठाने माटे राजाने, हेमाचार्यने तथा सकळ संघने बोलावीने श्री मुनिसुव्रत स्वामीनी प्रतिष्ठा करी. पूर्वे श्री मल्लिकार्जुनने जीतीने अबड मत्री तेनो द्रव्यकोश लाव्यो हतो, ते कुमारपाळ राजाए तेनेज आप्यो हतो, तेमांथी बत्रीश घडी सुवर्णवडे कळश, सुवर्णदड तथा पट्टकुळमय ध्वजा करावी, तेनी यथाविधि प्रतिष्ठा करीने तेने प्रासाद उपर स्थापन कर्या. पछी अति हर्षना आवेशथी चैत्यना शिखरपर चढीने तेणे सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि करी ते जोइने कवि लोको तेनी प्रशसा करवा पूर्वक बोल्या के—

निरीक्षिता पुराप्यासी–द्वृष्टिर्जलमयी जनै ।
तदा तु दद्दशे क्षौम–स्वर्णरत्नमयी पुन ॥ १ ॥

भावार्थ–" सर्व लोकोए पहला पण जळनी वृष्टि तो जोयेली हतीज, पण आज तो क्षौम (वस्त्र), सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि जोवामा आवी. "

पछी शिखरपरथी उतरीने चौलुक्य राजानी प्रेरणाथी आम्रभट मत्रीए आरति उतारवा विगेरनु कार्य शरु कर्यु ते वखते श्री मुनिसुव्रतस्वामीनी पासे कुमारपाळ राजा विधि करावनार तरीके रह्या बोतेर सामतो सुवर्णना दडवाळा चामरने धारण करीने उभा रह्या, अने वाग्भट विगेरे मत्रीओ सर्वे साहित्य तैयार करी आपनारा थया पछी आरति उतारीने मगल्दीप प्रगट कर्यो, ते समये प्रभुना गुण गानारा गायकोने बत्रीश लक्ष द्रव्यनु दान आप्यु तेनु आवु लोकोत्तर चरित्र जोइने चित्तमा आश्चर्य उत्पन्न थवाथी जन्म पर्यंत मनुष्यनी स्तुति न करवानो नियम भूली जइने श्री हेमचद्रसूरि बोल्या के—

कि कृतेन हि यत्र त्वं, यत्र त्वं किमसौ कलिः ।
कलौ चेद्भवतो जन्म, कलिरस्तु कृतेन किम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे मंत्री ! ज्या तु छे त्यां सत्ययुगे करीने शु? अर्थात् ज्यां तुं छे त्या सत्ययुगज छे, अने ज्या तु छे त्या आ कलियुग शुं छे? अर्थात् कलियुगनु कांइ चालतुज नथी, तेथी जो तारो जन्म कलियुगमां होय तो एवो कलियुगज सर्वे काळ रहो, सत्ययुगनु काइ काम नथी. "

कृते वर्षसहस्रेण, त्रेतायां हायनेन च ।
द्वापरे यच्च मासेन, अहोरात्रेण तत्कलौ ॥ २ ॥

भावार्थ—" जे कार्य सत्ययुगमा हजार वर्षे सिद्ध थाय छे, त्रेता युगमां एक वर्षे सिद्ध थाय छे अने द्वापरमां एक मासे सिद्ध थाय छे, ते कलियुगमां मात्र एक अहोरात्रीमांज सिद्ध थाय छे. "

आ प्रमाणे आमभटनी प्रशसा करीने गुरु तथा राजा पोताने स्थानके गया. (पाटण गया.)

अहीं गुरु तथा राजाना गया पछी आम्रभट मंत्रीने अकस्मात् कोइ देवीना दोषथी मरण तुल्य मूर्छा आवी. ते वात कोइए गुरु पासे जइने विनंतिपूर्वक निवेदन करी, त्यारे गुरुए तरतज जाण्युं के " ते महात्माए प्रासादना शिखर उपर चडीने हर्षथी नाच कर्यो. ते वखते कोइ मिथ्यादृष्टि देवीओनो दृष्टिदोष लागवाथी आ थयुं छे." एम जाणीने संध्याकाळे यशश्चंद्र नामना उपाध्यायने साथे लइने गुरु आकाश गतिथी अति अल्प काळमांज भरूचनी परिसरभूमिए आवी पहोच्या. त्यां सिंधुदेवीना अनुनय माटे गुरुए कायोत्सर्ग कर्यो. ते देवीए जीह्वा बघ करीने गुरुनी अवगणना करी, त्यारे यशश्चंद्र गणिए खारणियामा शाळ नाखीने तेनापर मुशळना प्रहार करवानुं शरु कर्युं. तेना प्रथम प्रहारथीज देवीना प्रासादनो प्रकप थयो, बीजा प्रहारे देवीनी मूर्तिज तेना स्थानथी उडीने " वज्रप्रहारथी मारी रक्षा करो, रक्षा करो " एम बोलती प्रभुना चरणमा आवीने पडी. आ प्रमाणे निरवद्य विधाना बळथी मिथ्यादृष्टि व्यंतर देवीओना दोषनो निग्रह करीने श्री आम्रभट मंत्रीने सुखीए स्नानादि सज्ज करीने गुरु स्वस्थाने गया.

"सद्धर्मना कृत्यो करीने अवडादिक सचिवो हेमचंद्रसूरिवडे प्रशंसा पाम्या, तेवीज रीते भावनी वृद्धि करवा माटे धर्मना प्रभावक श्रावक विगेरेनी प्रसंशा सर्वदा अवश्य करवी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य
त्रिसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २७३ ॥

व्याख्यान २७४ मुं

स्थिरीकरण नामना छठ्ठा दर्शनाचार विषे.

मनोविपरिणामेन, गुर्वादिष्टक्रियादिषु ।
स्थिरतापादनं तेषां, सीदतां स्मारणादिभिः ॥१॥

भावार्थ—"गुर्वादिके बतावेली क्रियाओमां मनना विपरीत परिणामे करीने सीदाता शिष्यादिकनी स्मारणादिकवडे स्थिरता कराववी." आनो भावार्थ विवेचन तथा दृष्टांतवडे जाणी लेवो

विवेचन—गुरुए बतावेली विनय, वैयावृत्य, दुष्कर विहार अने दुष्कर व्रतनुं पालन विगेरे क्रियाओमां प्रमाद विगेरेथी सीदाता शिष्यादिकोने योग्यता प्रमाणे भवना अपाय (कष्ट) नुं बताववुं विगेरे हितना उपदेश पूर्वक स्मारणा, वारणा, नोदना, प्रतिनोदना विगेरे करीने तेमनुं मन स्थिर करवुं

जेम दीक्षा लीधी तेज दिवसनी रात्रे द्वारनी पासे संथारो आववाथी जतां आवतां साधुओना पगना संघट्टनथी मेघकुमारने खेद थयो, अने तेनुं मन विपरीत परिणाम पाम्युं, ते वखते तेने स्थिर करवा माटे श्री वीरभगवाने तेना पूर्व भवनो वृत्तांत कहीने तेने स्थिर कर्यो तेम बीजाओए पण करवुं.

हवे सारणादिकनुं स्वरूप कहे छे—

पम्हुट्ठे सारणा वुत्ता, अणायारस्स वारणा ।
चुक्काण चोअणा जुत्रो, निट्ठुर पडिचोअणा ॥ १ ॥

भावार्थ—"व्रत पालन करवामां प्रमादीने माटे सारणा (स्मारणा) कहेली छे, अनाचारीने माटे वारणा (निवारणा) कहेली छे, भूल करनार माटे चोयणा (प्रेरणा) कहेली छे, अने निष्ठुरने माटे पडिचोयणा (वारवार प्रेरणा) कहेली छे

थिरकरणं पुण थेरो, पवत्ति वावारिएसु अथ्थेसु ।
जो जथ्थ सीअइज्जइ, सतबलो तं थिरं कुणइ ॥१॥

भावार्थ—"निरंतरना धर्मव्यापाररूप कार्यमां जे ज्यां सीदातो होय त्यां तेने स्थिर करवारूप स्थविरनी प्रवृत्ति होय छे, तेथी ते बळ सते तेने स्थिर करे छे." जेम श्री हेमचंद्राचार्ये धर्मना वाक्योवडे करीने कुमारपाळ राजाने स्थिर कर्या. तेनो प्रबंध नीचे प्रमाणे—

कुमारपाळ राजानो प्रबंध

श्री हेमचंद्रसूरि कुमारपाळ राजाना बत्रीश दांतनी शुद्धि माटे पोते रचेली जिनस्तुति रूप बत्रीशीनो[1] निरंतर प्रातःकाळे तेने पाठ करावता हता, अने पोते करेलुं बार प्रकाशवाळुं योगशास्त्र कुमारपाळ राजाने भणावता हता. तेमां गृहस्थोना चोथा व्रतना अधिकारमां एक एवो श्लोक आव्यो के—

प्राप्तुं पारमपारस्य, पारावारस्य पार्यते ।
स्त्रीणां प्रकृतिवक्राणां, स्त्रीचरित्रस्य नो पुन ॥१॥

भावार्थ—"अपार एवा पारावार (समुद्र) नो पार पामवा माटे शक्तिमान थइ शकाय छे पण वक्र स्वभाववाळी स्त्रीओना स्त्रीचरित्रनो पार पामी शकातो नथी"

आ श्लोकनो अर्थ भणीने राजाए गुरुने कह्युं के "हे भगवन्! कविजनो मेरुने कांकरा बराबर अने कांकराने मेरु बराबर करे छे ते वात सत्य थइ. कह्युं छे के—

कविजन किमही न ठेडीए, जो होय हयडे सान,
मेरु टळी कर्कर करे, कर्कर मेरु समान ॥ १ ॥

[1] वीतराग स्तवना २० प्रकाश ने योगशास्त्रना १२ प्रकाश मळी ३२ प्रकाशनो कुमारपाळ निरंतर प्रात काळे पाठ करता हता एम कहवाय छ

ते प्रमाणे आप पण स्वभावथीज भीरु एवी अबळाओना चरित्रमा आटली बधी दुरवबोधता जणावी, ते सर्वथा कविजननी कविकल्पनानी कुशळताज जणाय छे" आ प्रमाणे राजानो कदाग्रह जोइने गुरुए कह्यु के "हे राजन्! तेमा कविजननी चतुराइ नथी, सत्य वात छे, ते विषे घणा प्राचीन आचार्योनु प्रमाण छे पूर्वे पण तेवा बहु बनावो बनेला छे ते सांभळोः—

उज्जयिनी नगरीमा परकाय प्रवेश विगेरे अनेक विद्याथी शोभतो विक्रम राजा राज्य करतो हतो एकदा ते सभामा बेठो हतो, ते वखते कोइ पंडित आवीने एक श्लोक बोल्यो के—

अश्वप्लुतं माधवगर्जितं च, स्त्रीणां चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं ।
अवर्षणं चापि च वर्षणं च, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ॥

ते सांभळीने विद्वान एवो ते राजा बोल्यो के "हे पंडित! बीजी सर्व वात तो सत्य लागे छे, पण स्त्रीचरित्र न जाणी शकाय एम कह्यु ते विषे तो मारी श्रद्धा थती नथी" पंडिते कह्यु के "हे राजन्! ते पद तो पूरेपूरु सत्यज छे" राजाए कह्यु के "ते पदनी परीक्षा कर्या पछी तमने हु दान आपीश." एम कहीने ते पंडितने राजाए रजा आपी. पछी रात्रे राजा निशाचर्या[1] जोवा माटे गाममां नीकळ्यो फरतां फरता एक महेलनी नीचे जता कनकश्री अने तिलकश्री नामनी बे बाळाओने वातो करती तेणे सांभळी. तेमा तिलकश्रीए कनकश्रीने पूछ्यु के "तु परणीने पतिने घेर जइश, त्यारे शु करीश?" ते बोली के—

शय्योत्पाटनगेहमार्जनपयःपावित्र्यचुल्लीक्रिया–
स्थालक्षालनधान्यपेषणभिदा गोदोहतन्मन्थने ।
पाकेस्तत्परिवेषणे समुदितैर्जामादिशौचक्रिया–
कार्यैर्भर्तृननान्दृदेवृविनये कष्टं वधुर्जीवति ॥ १ ॥

भावार्थ–"शय्या उपाडवी, घरमा वासीदु वाळवु, पाणी गळवु, चूलो साफ करवो, वासण धोवा, अनाज दळवु वीणवु विगेरे, गाय दोवी, छाश करवी, रसोइ करवी, पीरसवु, सर्व वासणो मांजवा, पति, नणंद अने दियरनो विनय क-

१ रात्रीए थती गामनी हकीकत

रवो विगेरे क्रिया करवाथी बहु घणां दुःखे जोवे छे, अर्थात् बहुनुं जीवतर बहु दुःखी छे." "वळी पतिना चित्तने अनुसरीने हु सर्व काम सारी रीते करीश" ते सांभळीने तीलकश्री बोली के "हे सखी! हु तो तें कह्यु तेथी सर्व उलटुज करीश"

आ प्रमाणे ते बाळाओनी वातो साभळीने राजा पोताना महेलमां गयो. पछी प्रातःकाले तिलकश्रीने पग्णोने स्त्रीचरित्रनी परीक्षा करवा माटे तेने एक स्तभवाळा प्रासादमां राखी, अने तेने भोजन विगेरे सानेला वेताल मारफत मोकलवा लाग्यो, अर्थात् पुरुषप्रवेश तद्दन बंध कर्यो. एकदा ते एकस्तभी सौध नीचे कामनद नामनो कोइ सार्थवाह उतर्यो, तेने जोइने तिलकश्री कामातुर थइ. ते सार्थवाह पण तेने जोइने कामातुर थयो पछी तिलकश्री राणीना संकेतथी कोइ दूर ज्याएथी सुरग खोदावीने ते रस्ते राजा न होय त्यार सार्थवाह तेनी पासे जवा लाग्यो, अने बन्ने सुखेथी भोग भोगववा लाग्या.

एकदा राजा सभामा बेठो हतो, ते वखते एक वननाथ नामना योगीने भिक्षाने माटे चौटामां भमतां भमतां "सब जग भीना एकज कोरी" ए पद वारवार बोलतो सांभळ्यो. ते साभळी राजाए विचार्यु के "खरेखर आ जोगी एक पोतानी ज स्त्रीने सती मानतो सतो आम बोले छे एम जणाय छे, तेथी तेनी चर्चा मारे जोवी जोइए." एम विचारीने सायकाळे ज्यारे ते जोगी भिक्षा मागीने पोताना स्थान तरफ जतो हतो, त्यारे राजा मक्षिकानु रूप लइने तेनी पाछळ चाल्यो. योगीए पण गाममाथी पुष्प, तांबूल, पक्वान्न विगेरे लइने गाम बहार जइ एक सिद्ध वडनी नीचे रहेली मोटी शीला उपाडी, अने तेनी नीचे भोयरु हतु तेमां ते पेठो तेनी पाछळ राजा पण मक्षिकारूपे पेठो पछी योगीए पोतानी जटामाथी एक मृदंग (मादळियु) काढीने तेमा रहेली भस्ममाथी एक युवती स्त्री प्रगट करी, तेनी साथे यथेच्छ क्रीडा करीने ते योगी सुइ गयो पछी ते युवतीए पण पोताना कंठमांथी मृदग काढ्यु अने तेमानी भस्मवडे एक युवान पुरुष प्रगट कर्यो तेनी साथे आखी रात्री क्रीडा करी. पछी योगीने जागवानो वखत थयो, त्यारे ते युवतीए ते पुरुषने पाछो भस्मरूप बनावी मृदगमा नाखी कठे बांधी लीधो. योगीए पण जाग्रत थइने ते स्त्रीने भस्मरूप बनावी मृदगमा नाखी. ते सर्व चरित्र जोइने राजा चकित थइ गयो पछी प्रातःकाळे राजा पोपटनु रूप करीने तिलकश्री राणीना द्वा-

घात करवा माडी, अने ते वात जळमा तेलना बिंदुनी जेम आखा शहेरमा प्रसरी. आ वृत्तान्त गुरुना सांभळवामां आव्यु, तेथी राजमहेलमा जइने गुरुए राजाने कह्यु के "हे राजा! स्त्रीचरित्र जोयु?" राजाए कह्यु के "हे भगवन्! आपनी आज्ञा भंग करी, तेनु फळ मने मळ्यु. हवे कलंकित थयेला आ प्राणनु शु काम छे? माटे हु अनशन करीने मारा प्राणनो त्याग करीश" गुरु बोल्या के "हे राजन्! आम खेद केम करो छो? तमे जन्मथी आरभीने परस्त्रीना बंधु छो. हवेथी श्री परमात्माना वचनने अनुसारे पोतानी कुमति कल्पनानो त्याग करीने शास्त्रमा जे जे वाक्यो कह्या होय ते सर्वपर दृढ श्रद्धा राखो. एक नानु सरखु वाक्य सांभळीने तमे आवी अस्थिरता बतावी तो पछी सूक्ष्म पदार्थोना स्वरूपमा तमारु मन केम स्थिर थशे?" राजाए कह्यु के "स्वामि! मारो अपराध क्षमा करो, पण आ कलंक तो मारा मनमा बहु खुचे छे, माटे ते कोइ प्रकारे दूर थाय तेम करो" त्यारे गुरु बोल्या के "ते महादेवना देरानो एक पशु द्वारपाळ छे, ते आ वृत्तांत जाणे छे" एम कहीने सर्व लोकोनी समक्ष ते पशुने बोलावीने गुरुए तेने रात्रे थयेलु स्त्रीचरित्र पूछ्यु, एटले तेणे यथार्थ वात कही सभळावी. ते सांभळीने लोकोए ते स्वैरिणि स्त्रीनो धिक्कारपूर्वक निंदा करीने राजानी प्रशसा करी

"योगशास्त्रमा कहेलु स्त्रीना चरित्र सबधी वाक्य सांभळीने कुमारपाळ राजाए 'आ तो कविनी चतुराइ छे' एम कहि अश्रद्धा करी, तेने हेमचंद्रसूरिए स्त्रीचरित्र बतावी स्थिर कर्यो, ए आ व्याख्याननु तात्पर्य छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य चतु सप्तत्यधिकद्विशततम प्रबंध ॥ २७४ ॥

व्याख्यान २७५ मुं.

हवे स्थिरीकरण विषेज कहे छे.

सदनुष्ठानसम्यक्त्वमनोशुद्ध्यादयो गुणाः ।
तेषां तत्त्वार्थमाख्याय धर्मे क्ष्माप. स्थिरीकृत ॥१॥

भावार्थ-" सत् अनुष्ठान (क्रिया), सम्यक्त्व अने मन शुद्धि विगेरे गुणोनु तत्त्व समजावीने कुमारपाळ राजाने गुरुए धर्ममां स्थिर कर्यो हतो."

कुमारपाळ राजानुं दृष्टांत

पाटणमां श्री कुमारपाळ राजाने सांख्य, बौद्ध, कपिल, जैमिनीय, चार्वाक विगेरेना शास्त्रोना रहस्यो सांभळीने मनमां संशय उत्पन्न थयो, तेथी बाल्यावस्थाथीज ब्रह्मचर्य व्रत पाळनार श्री हेमचंद्रसूरिने तेणे पूछयु के " हे स्वामी ! सर्वे मतवादीओ पोतपोताना पक्षनी प्रशसा करे छे, अने पोतपोतानी क्रियाओ करे छे. तेमां कयो पक्ष प्रमाणरूप जाणवो ?" गुरुए उत्तर आप्यो के "सर्वे एकांतवादीओने परमात्माए कहेला तत्त्वथी पराङ्मुख जाणवा. अनुष्ठान पाच प्रकारना छे, तेमां १-आहार, उपधि, पूजा अने ऋद्धि विगेरे आ लोक सबंधी सुखभोगनी इच्छाथी करेलु जे अनुष्ठान ते रुडा चित्तने शीघ्र हणनार होवाथी विषानुष्ठान कहेवाय छे. जेम अफीण, वच्छनाग विगेरे स्थावर विष अने सर्पादिक जगम विष जो भक्षण करवामां आव्यु होय तो ते तत्क्षण प्राणनो नाश करे छे, तेम आ अनुष्ठान पण सत्चित्तनो तत्काळ नाश करे छे. २ भवांतरमां देवसबधी भोग प्राप्त थवानी इच्छाथी करेलु अनुष्ठान ते गरलानुष्ठान कहेवाय छे, जेम हडकाया श्वाननु विष तथा कुद्रव्यना सयोगथी उत्पन्न थयेलु गरल जातिनु विष कालातरे हणे छे, तेम आ अनुष्ठाने पण अदृष्ट पुण्यफळनी प्राप्ति थया छतां पण कालांतरे अशुभ फळदायी थाय छे. ३ [1]प्रणिधानादिकने अभावे संमूर्छिम जीवनी वृत्ति जेवु जे अनुष्ठान, ते अन्योन्यानुष्ठान कहेवाय छे, आ त्रीजा भेदमा ओघसज्ञा अने लोकसज्ञा ए बे सज्ञानो समावेश थाय छे, तेमां सूत्र तथा गुरुना वाक्यनी अपेक्षा राख्या विना अध्यवसाय रहित शून्य चित्ते ज्ञान विना जे अनुष्ठान करवु ते ओघसज्ञा कहेवाय छे, अने 'वर्तमानकाळमा शुद्ध क्रिया शोधता जइए तो तीर्थनो उच्छेद थवा सभव छे माटे जेम करता हइए तेम

१ एकाग्र चित्त विगेरे

करीए' एम कहीने सर्व लोक जेम करता होय तेम अनुष्ठान करे ते लोकसंज्ञा कहेवाय छे, पण तीर्थोच्छेदना भयथी अशुद्ध क्रिया करीने गतानुगतिक थवुं, तेथी तो सूत्रोक्त क्रियानोज लोप थाय. वळी 'आ धर्मक्रियाने घणा लोको करे छे, माटे अमे पण करीए छीए' एम कहेवु, त्यारे तो मिथ्यादृष्टिनो धर्म कोइ वखत पण तजवा योग्य थायज नहीं, तेथी गतानुगतिए करीने सूत्रवर्जित ओघसंज्ञाथी अथवा लोकसंज्ञाथी जे क्रिया करवामां आवे ते अन्योन्यानुष्ठान पण असत् (अशुभ) समजवुं. आ अनुष्ठान अकाम निर्जरानुं कारण अने कायकष्टनो हेतु छे. ४ मार्गानुसारी थइने उपयोग पूर्वक शुभ क्रियामां रागसहित अनुष्ठान करे ते तद्धेतुअनुष्ठान कहेवाय छे आ चोथुं अनुष्ठान एक पुद्गलपरावर्तन संसारशेष रहे त्यारेज प्राप्त थाय छे. ते चरमावर्तने धर्मनी युवावस्था जाणवी, तेनाथी अन्यने बाल्यावस्था जाणवी. जेम युवावस्थाने पामेला माणसने बाल्यावस्थामां करेली क्रियाओ लज्जारूप लागे छे, तेम धर्मरागवडे युवावस्था पामेला जीवने असत् क्रियाओ लज्जाने माटेज थाय छे. ५ स्याद्वाद पक्षनी आज्ञा मान्य करीने तथा अंतःकरणमां संवेग धारण करीने चित्तनी शुद्धिथी जे क्रियामां आदर थाय ते अमृतानुष्ठान कहेवाय छे. आ पांचमा अनुष्ठानवाळा जीवने सम्यक् प्रणिधान तथा कालादिक पांचे हेतुनुं यथार्थ ग्रहण होय छे.

सर्व शुभ क्रियाओ (अनुष्ठान) सम्यक्त्व सहित होय, तोज फळदायी थाय छे. कह्यु छे के—

सम्यक्त्वसहिता एव, शुद्धा दानादिका क्रिया ।
तासां मोक्षफलं प्रोक्तं, यदस्य सहचारिता ॥ १ ॥

भावार्थ—"दानादिक सर्व क्रियाओ सम्यक्त्व सहित करी होय तोज ते शुद्ध छे, अने ते क्रियाओनुं मोक्ष रूप फळ कह्यु छे, कारणके ते क्रियामां सम्यक्त्वनुं सहचारीपणुं कह्यु छे."

सम्यक् क्रियानी इच्छावाळा पुरुषे अवश्य चित्तशुद्धि करवी जोइए. कह्युं छे के—

उचितमाचरणं शुभमिच्छतां, प्रथमतो मनसः खलु शोधनम् ।
गदवतां ह्यकृते मलशोधने, किमुपयोगमुपैति रसायनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"उचित एवी शुभ क्रियाने इच्छनार पुरुषे प्रथम मननी शुद्धि करवी जोइए, केमके रोगी माणसनुं मलशोधन कर्या विना तेने रसायण आप्युं होय, तो ते पण शुं गुण करे छे? नथी करतुं."

अहो! मनरूपी पवन एटलो बधो बळवान छे के ते श्री जिनेश्वरना वचनरूपी धनसारनी चोरी करे छे, कामदेवरूपी अग्निने प्रदीप्त करे छे अने शुभ मति रूप वृक्षश्रेणिनुं उन्मूलन करे छे. मन ज्यारे अति चपळ थाय छे त्यारे वचन, नेत्र तथा हाथ विगेरेनी चेष्टा विपरीतज थाय छे. अहो! गाढ दंभने धारण करनारा माणसोए आवी धूर्तताथीज आखा जगतने छेतर्युं छे; माटे प्रथम व्यवहारनयमां रहीने अशुभ विकल्पनी निवृत्ति करवी, केमके शुभ विकल्पमय व्रतनी सेवावडे जेम एक कांटो बीजा कांटाने काढे छे, तेम शुभ विकल्प अशुभ विकल्पने दूर करे छे. त्यार पछी सुवर्णनी जेवा निश्चयनयनी दृढता थवाथी व्यवहारनयनी मर्यादा दूर थाय छे, अने कांइ पण संकल्प विकल्प विना सर्व निवृत्तिओ समाधि माटेज थाय छे, परंतु कदाग्रहनो स्वीकार कर्ये सते चित्तनी शुद्धि थती नथी, मिथ्यात्वनी हानि थती नथी अने तत्त्वनी प्राप्ति पण थती नथी, केमके जेना अंतःकरणमां कदाग्रहरूपी अग्नि प्रज्वलित थइ रहेलो छे, त्यां तत्त्वविचारणारूप वल्ली क्यांथीज रहे? तथा शांतिरूप पुष्प अने हितोपदेशरूप फळनी तो वीजेज शोध करवी, त्यां ते होयज नहीं. निन्हवोए अनेक व्रतो आचर्यां, अनेक प्रकारनी तपस्याओ करी, अने प्रयत्नथी पिंडशुद्धि पण करी, अर्थात् शुद्ध आहार ग्रहण कर्यो, तोपण तेमने कांइ पण फळ मळ्युं नहीं, तेमां मात्र कदाग्रहज अपराधी छे, माटे कदाग्रहना त्यागवडेज क्रियायोग अने ज्ञानयोगनी शुद्धि थाय छे; क्रियायोग शरीरादिकनी चपळता नाश करवामां समर्थ छे अने ज्ञानयोग इंद्रियोनुं दमन करीने आत्मस्वरूपमां रमण करनार छे. अप्रमत्त गुणठाणे वर्तता मुनिओ ध्यानथीज शुद्ध छे, तेथी तेमने आवश्यकादि क्रिया करवानुं नियतपणुं नथी. बीजां शास्त्रोमां पण कह्युं छे के—

यश्चात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे माणसने आत्माने विषेज आनंद छे, आत्माए करीनेज तृप्त छे, अने आत्माने विषेज जे संतुष्ट छे तेने कांइ पण कार्य बाकीमां नथी."

ज्ञानयोगमा रति के अरतिनो प्रवेशज नथी, ज्ञानयोगमा अरति ने आनंदनो अवकाश शास्त्रमा निषिद्ध कर्यो छे, कारणके तेने ध्याननुज अवलंबन होवाथी रति अरतिरूप क्रियानो विकल्पज क्याथी थाय ? वळी मात्र शरीरना निर्वाहने माटे भिक्षाचर्या विगेरे जे जे क्रियाओ ज्ञानी पुरुष करे छे, ते पोते असग होवाथी तेना ध्याननो विघात करनारी थइ शकती नथी एटला माटेज बुद्धिमान ज्ञानी मननी निश्चलता करीने समग्र विषयोनु दमन करवा माटे शास्त्रोक्त क्रियाओ करे छे, बीजु काइ कारण नथी. केमके निश्चयमा तल्लीन थयेला ज्ञानीने क्रियानु अति प्रयोजन नथी, पण व्यवहार दशामा रहेलाने तो ते क्रियाओज अत्यत गुणकारी छे. ज्ञानयोग साधनार शुद्ध ध्यानमग्नता करे छे, ने आ प्रमाणे ज्ञानयोगवाळा मुनि निर्भयपणे, व्रतोमा स्थित थइने, सुखासन वाळी, नासिकाना अग्रभागे दृष्टि राखीने बेसे छे, अन्य दिशामा दृष्टि पण फरता नथी. शरीरना मध्य भागमा मस्तकने तथा ग्रीवाने सरल (सीधा) राखे छे, अने दाते दात अडकाव्या विना बन्ने ओष्ठ मेळा करी राखे छे, आर्त अने रौद्र ध्याननो त्याग करीने प्रमाद रहितपणे धर्म तथा शुक्ल ध्यानमा बुद्धिने स्थिर करे छे

आर्त ध्यानमा प्रथमनी त्रण लेश्याओनो संभव छे ते अनतिक्लिष्ट भाववाळा कर्मना परिणामथी उत्पन्न थाय छे, ते ध्यान प्रमत्त गुणस्थानक सुधी होय छे, अने तिर्यंचनी गतिने आपनार छे, माटे सर्व प्रमादना कारणभूत ते आर्तध्याननो महात्माए त्याग करवो

रौद्रध्यान तो अति सक्लिष्ट भाववाळा कर्मना परिणामथी उत्पन्न थाय छे, पहेली त्रण लेश्याए युक्त होय छे, तथा नरकना दुःखने आपे छे. ते देशविरति गुणस्थानक सुधी रहे छे, ते ध्यान पण धीर पुरुषे तजवा लायक छे.

उत्तम जीवे लोकोत्तर अने प्रशस्त एवा छेल्ला बे ध्याननो स्वीकार करवो, तेवा शुभ ध्यानवालाने इद्रपदनी पण इच्छा थती नथी. कह्यु छे के—

यत्र गच्छति पर परिपाक, पाकशासनपदं तृणकल्पम् ।
स्वप्रकाशसुखबोधमयं तद्ध्यानमेव भवनाशि भजध्वम् ॥१॥

भावार्थ—" जे ध्यानमा अति सतोष उत्पन्न थाय छे, जे ध्यान इद्रना स्थानने पण तृण समान गणे छे, अने जे ध्यान आत्मप्रकाश रूप सुखना बोधमय छे,

एवुं भवनी परपराने नाश करनारु ध्यान हे भव्य जीवो ! तमे सेवो ”

वळी रोगी तथा मूर्ख मनुष्यो पण साक्षात् विषयोनो सुखे त्याग करी शके छे, पण विषय उपरनो राग तजी शकता नथी, परमात्मस्वरूपने जोनार ध्यानीपुरुष तृप्त थयेल होवाथी फरीने तेना पर राग करताज नथी, तेमज आत्मानो परमात्माने विषे भेदबुद्धिथी करेलो जे विवाद छे, ते विवादने ध्यानी पुरुष तजी दइने तरतज ते आत्मा तथा परमात्माना अभेदनेज करे छे सर्व ध्यानमां आत्मध्यानज श्रेष्ठ छे, केमके आत्म याननु फळ आत्मज्ञान छे अने आत्मज्ञान मुक्तिने आपनारु छे, तेथी महात्मा पुरुषे अहर्निश आत्मज्ञानने माटेज यत्न करवो आत्मानुं ज्ञान थवाथी बीजु कोइ ज्ञान अवशेष रहेतुज नथी, अने आत्मज्ञान थयु न होय तो बीजा सर्व ज्ञान व्यर्थ छे. नवतत्त्वोनु ज्ञान पण आत्मज्ञानना प्रकाश माटेज छे, केमके अजीवादिक पदार्थोनु स्वरूप जीवना भेदनेज सत्रय बताये छे अर्थात् जीवनु स्वरूप पृथक् समजवा माटेज छे. धर्मास्तिकाय विगेरे अजीव पदार्थो गमनादिक क्रियामां जीवने सहायभूत होवाथी ते सर्वे पदार्थो आत्मानेज उपकारी छे. जेम रत्ननी कांति, निर्मळता अने शक्ति रत्नथी जुदा नथी. तेमज आत्माना ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी लक्षणो पण आत्माथी भिन्न नथी. मात्र “ आत्मानां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण लक्षण तथा गुणो छे ” ए वाक्यमां ‘ आत्मा ’ शब्दने छट्ठी विभक्ति छे अने ज्ञानादिकने पहेली विभक्ति छे, तेथी व्यवहारदृष्टिथी भिन्नता गणाय छे, पण निश्चयथी तो अभिन्नज छे. तेनो भेद मानवाथी आत्मा अनात्मा थइ जाय, अने ज्ञानादिक गुणो पण जड थइ जाय, माटे निश्चय नयने आधारे चैतन्य लक्षणवाळो एक आत्माज महासत्तावाळो सामान्यथी जाणवो,पण व्यवहारनयने आधारे तो एकेंद्रियादिकना भेदथी अनेक प्रकारे आत्मा मानवामा आवे छे, ते निश्चय नयमां घटतु नथी. ते सर्व नामकर्मथी करेलो भेद उपाधिजन्य जाणवो वळी आत्मा कर्मनी साथे एकज क्षेत्रमां रह्यो सतो पण कर्मरूपपणाने पामतो नथी; केमके ते आत्मा धर्मास्तिकायनी जेम अभव्य स्वभाववाळो छे, अर्थात् आत्मानो स्वभाव बदलातो नथी. जेम उष्ण अग्निना संयोगथी ‘ घी उष्ण थयु ’ एवो भ्रम थाय छे, तेम मूर्तिमान कर्मना योगथी आत्माने विषे मूर्त्तपणानो भ्रम थाय छे, केमके आत्मा दृष्टिथी जोइ शकातो नथी, हृदयथी ग्रहण करी शकातो नथी, अने वाणीथी वर्णवी शकातो नथी, तथा जेनु स्वरूप स्वय प्रकाश छे, एवो आत्मा मूर्तिमान् शी रीते कही शकाय ? मनोवर्गणा,

भाषा वर्गणा अने कार्मण वर्गणाना पुद्गळो आत्मानी समीपे होय छे अने धनादिकना पुद्गळो आत्माथी दूर होय छे; परन्तु ते सर्वे पुद्गळो आत्माथी एकसरखा भिन्न जाणवा. आ रीते जेम आत्मा पाते अजीव द्रव्यथी भिन्न छे, तेम बीजा नयनी अपेक्षाए आत्मानु अजीवपणु पण मानेलु छे. सिद्धना जीवो दश द्रव्यप्राणरूप जीवथी रहित छे अने ज्ञानादिक भावप्राणथी युक्त छे, माटे ते अजीव कहेवाय छे. वळी ते आत्मा पुद्गलात्मक पुण्य पापथी पण रहित छे. अहीं कोइ शंका करे के "पुण्यकर्म शुभ छे, अने पापकर्म अशुभ छे, तो ते शुभ कार्य जीवोने संसारमा केम नाखे छे? अर्थात् तेनावडे पण जन्म मरणादि कर्म थाय छे?" तेनु समाधान करे छे के "जेम कोइने लोढानी बेडीनु बंधन होय, अने कोइने सुवर्णनी बेडीनु बंधन होय, ते बन्नेने परतन्त्रपणु तो समान होवाथी तेना बंधनरूप फळमा कांइ पण भेद नथी; तेम सर्व पुण्यफळ पण कर्मोदय करनार होवाथी दुःखरूपज छे, परंतु मूढ पुरुषोने शुभ कर्मना उदयथी दुःखनो प्रतीकार थाय छे तेथी तेने सुखरूप भासे छे. एडुक नामना विषे पोताना पोषणने माटे पुष्ट करेला मोटा बकरानी जेम नरेश तथा देवेन्द्रना सुख पण परिणामे दारुण परिपाकवाळा छे अर्थात् परिणामे दुःखदायी छे. लोहीनु पान करवाथी सुख मानती जळोनी जेम विषयोथी सुख माननारा मनुष्यो परिणामे माठी दशाने पामे छे. जेम तीव्र अग्निना संयोगथी तपेला लोढा उपर नाखेलु जळबिंदु तत्काळ सुकाइ जाय छे, तेम निरंतर उत्सुकताथी तपेल इंद्रियोने सुखनो लेश पण क्याथी होय? अर्थात् उत्सुकतारूप अग्निथी इंद्रियो निरंतर तप्त रहे छे त्या जळबिंदु जेवा सुखनी स्थिति कमे रही शके? जेम कोइ माणस पोताना एक स्कंध उपर भार उपाडे छे, त्यां भार लागवाथी ते बीजा स्कंध उपर मूके छे, पण तत्त्वथी तेने भार उपाडवानो ओछो थतो नथी; तेम दुःखनो त्याग थवाथी कांइक इंद्रियोए सुख प्रगट कर्यु, पण फरीने ते दुःख प्राप्त थवानु होवाथी दुःखना संस्कार गयेला न होवाथी तत्त्वथी तो तेनु दुःख गयुज नथी. इंद्रियोना सर्व भोग भोगवायमान थयेला सर्पना फणाभोग जेवा छे, तेथी ते भोगथी उद्भवेल अखिल सुख विलासनो चिह्नरूप छतां पण विवेकी माणसने तो भयनुज कारण छे. आ प्रमाणे पुण्य तथा पाप तेना फळ थकी भिन्न नथी, एकरूप छे एम सिद्ध थयु, अने निश्चयथी चिदानंदस्वरूप आत्मा ते पुण्य पापथी भिन्न छे एम पण सिद्ध थयु. जेम वादळानु आवरण नाश पामवाथी सूर्यनो उष्ण उद्योत प्रकाशे छे, तेम कर्मना आवरणनो नाश थवाथी

आत्मानुं चिदानंदस्वरूप तुरीय (चोथी) दशामा स्पष्ट प्रकाशमान थाय छे अर्थात् ते आत्मस्वरूप अयोगी गुणस्थाने सर्व कर्मनो क्षय थवाथी उज्जागृता नामनी तुरीय दशामां प्राप्त थाय छे, वळी कर्मनो बंध रागद्वेषथी थाय छे, जेम चमकपाषाणना सन्निधिपणाथी लोढु पोतानी क्रिया करे छे, अर्थात् ते पाषाण लोढाने खेंचे छे, एटले लोढु आवीने तेने मळी जाय छे, तेम आत्मानी पासे राग द्वेष रह्या होय तो सर्व प्रकारनां कर्म आकर्षण पामीने आत्मानी साथे मळी जाय छे. जेम रक्त तथा कृष्ण पुष्पना संसर्गथी शुद्ध स्फाटिक मणि रक्त तथा कृष्ण थइ जाय छे, तेम पुण्य तथा पापना संसर्गथी आत्मा पण रागी तथा द्वेषी थाय छे. परमात्माना पुण्य पाप रहित शुद्ध स्वरूपनु चिंतन करवु, तेज तेनुं ध्यान, तेज तेनी स्तुति अने तेज तेनी भक्ति करेली छे भगवंतना शरीरना रूप लावण्यनु वर्णन अने समवसरणमां रहेला त्रण किल्ला, छत्र, चामर अने ध्वजा विगेरे प्रातिहार्यादिकनु वर्णन जे वीतराग जिनेन्द्रना संबंधमां करेलु छे ते वास्तविक तेमना गुणनु वर्णन नथी, ते तो मात्र व्यवहारथी स्तुति करेली छे, परंतु श्री जिनेन्द्रमा रहेला ज्ञानादि रत्नत्रयनु जे वर्णन करवु, तेज तेमनी वास्तविक स्तुति छे. तदथी निर्विकल्प तथा पुण्य पाप रहित एवा आत्मतत्त्वनु निरंतर ध्यान करवुं, ते शुद्ध नयनी स्थिति छे.

आश्रव अने संवर ते आत्मविज्ञाननुं लक्षण नथी, अर्थात् आश्रव अने संवर कांइ आत्माने होता नथी. कर्म पुद्गलने ग्रहण करवा ते आश्रव कहेवाय छे, अने ते पुद्गलोनो निरोध करवो ते संवर कहेवाय छे आत्मा जे जे भावे करीने कर्मपुद्गलोने ग्रहण करे छे ते ते मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग रूप आश्रव कहेवाय छे, अने बार भावना, दश प्रकारनो यतिधर्म, पांच प्रकारना चारित्र तथा बावीश परीषह सहन करवा विगेरे जे आश्रवनो नाश करनारा भावो छे ते आत्माने संवरे भावसंवर कहेवाय छे. आश्रवनो निरोध करनार संवरना सत्तावन भेद छे. आश्रवनो रोध करनार जे क्रिया ते पण आत्मा नथी, केमके आत्मा तो पोताना भिन्न आशये करीने अन्यनी अपेक्षा राखतो नथी, ते तो सर्वदा पोतेज समर्थ छे. हिंसा अहिंसादिक जे परप्राणीना पर्यायो छे ते निमित्त मात्रज छे, पण आत्मफळना हेतु नथी. अर्थात् परजीवनु हिंसन करवु ते हिंसा अने तेनुं रक्षण करवु ते अहिंसा कहेवाय छे इत्यादि हिंसा अहिंसादिक परप्राणीना पर्यायो छे. तेथी परजीवनी हिंसा अहिंसा करवाना समये तेमां परनी अपेक्षा आवे छे माटे ते आत्माना चिद्रूपने प्रगट करवामा कारणभूत नथी. आत्मस्वरूप प्रगट करवामा तो आत्मा

पोतेज समर्थ छे, अन्यनी अपेक्षा करवी ते तेनो धर्म नथी, परंतु ते हिंसा अहिंसादिक निमित्तभूत छे तेथी तेनो सर्वथा निषेध कर्यो नथी.

व्यवहार नयमाज विमूढ-तेमाज मग्न रहेता जीवो आत्मस्वरूप प्रगट करवामां ते अहिंसादिकनेज हेतु माने छे. तेथी तेओनु चित्त बाह्य क्रिया करवामाज रक्त रहे छे, एटले तेओ तेना शुद्ध तत्त्वने जोइ शकता नथी निश्चय पक्षवाळा तो शुभाशुभना कारणरूप ते हिंसादिकने हेतु रूपे कोइवार अंगीकार करे छे, अने कोइ वखत अंगीकार नथी पण करता. केमके जेटला आश्रवो कहेला छे तेटलाज परिश्रवो कहेला छे, अर्थात् जेटला बाधकना कारणो छे, ते सर्वे कोइ वखत साधकपणे-संवरपणे परिणाम पामे छे अने कदापि अन्यथा पण परिणाम पामे छे, तेथी बाह्य हेतुमा कोइ पण जातनो नियम छेज नहीं पण निश्चे आत्मा पोतेज भावना विचित्रपणाथी आश्रव संवररूप छे व्यवहारकुशळ पुरुषो शास्त्र तथा गुरुना विनयने अने आवश्यकादिक क्रियाओने संवरना अंग रूप कहे छे वळी तेओ प्रशस्त रागवाळा चारित्रादिक गुणोने विषे पण शुभ आश्रवनो आरोप करे छे अने तेना फळमा भेद कहे छे. आ प्रमाणे अशुद्ध नयने आधारे आश्रव अने संवरनो भेद छे, पण ते बन्ने संसारनु कारण होवाथी शुद्ध नयमा तेवो भेद नथी, शुद्ध नये तो संसारी ने सिद्ध बने सरखा छे.

कर्मनो नाश ए निर्जरा कहेवाय छे ते पण आत्मा नथी, कर्मनो पर्याय छे, पण जे भावे करीने कर्म निर्जराय छे, ते भाववस्तु आत्माज छे. जे शुद्ध ज्ञानथी युक्त छे, आत्मानी शक्तिथी उत्पन्न थयेलु छे अने चित्तवृत्तिनो निरोध करनार छे ते तप कहेवाय छे तेना बार भेद छे जेमा कषायोनो निरोध थतो होय अने जेमा आत्मतत्त्वनु अने जिनेश्वरनु ध्यान थतु होय ते तप शुद्ध जाणवु, बाकी सर्व लंघन (लांघण) जाणवु, केमके भुखे रहेवु तथा देहने कृश करवो, ए काइ तपनु लक्षण नथी, पण तितिक्षा (परीषह सहन करवो ते), त्रण गुप्ति, समिति विगेरे स्थाननु जे ज्ञान ते तपना शरीररूप छे. 'कर्मने तपावनारु जे ज्ञान तेज तप छे' एम जे पुरुष जाणतो नथी ते अंतःकरण जेनु हणायेलु छे एवो पुरुष विपुळ निर्जरा शी रीते पामे? मुनिवरो ज्ञानयोगनेज शुद्ध तप कहे छे, अने तेवा तपथीज निकाचित कर्मनो पण क्षय थइ शके छे. केमके सम्यक्त्व प्राप्त थाय ते वखते अपूर्वकरण अने शुद्ध श्रेणि प्राप्त थाय छे, ते वखते अवश्य पूर्व कर्मनो स्थितिक्षय थाय छे तेथी, करोने

ज्ञानमय शुद्ध तपस्वीज भाव निर्जरा करे छे; शुद्ध निश्चय नयथी जोतां तो सदा शुद्ध एवा तपस्वीने ते भाव निर्जरा पण काइज नथी.

कर्म अने आत्मानो संश्लेश थवो ए द्रव्यबंध कहेवाय छे. ते द्रव्यबंधना चार प्रकार छ, अने ते बंधना हेतुरूप आत्माना अध्यवसायने भावबंध कहेवाय छे. जेम सर्प पोताना देहथीज पोताना देहने वींटे छ, तेज प्रमाणे ते ते भावथी परिणाम पामेलो आत्मा पोताना आत्माए करीनेज आत्माने बांधे छ. जेम शंखनो वर्ण श्वेत छतां नेत्रव्याधिना दोषथी[1] ते शंख पीळो मालम पडे छे. तेज प्रमाणे शास्त्रनुं ज्ञान छतां मिथ्याबुद्धिना संस्कारथी जीवने बंधनी बुद्धि थाय छे. जे पुरुषो सांभळीने, मानीने तथा वारंवार स्मरण करीने तत्त्वनो साक्षात् अनुभव करे छे तेओने बंधनी बुद्धि रहेती नथी, तेनो आत्मा बंधरहित प्रकाश पामे छे.

कर्मद्रव्यनो जे क्षय थवो ते द्रव्यमोक्ष कहेवाय छे. ते आत्मानुं लक्षण नथी, अने ते कर्मद्रव्यनो क्षय करवामां हेतुभूत जे रत्नत्रयीमय आत्मा ते भावमोक्ष कहेवाय छे. ते आत्मानुं लक्षण छे. ज्यारे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रे करीने आत्मा एकत्वने पामे छे, त्यारे सर्व कर्मो जाणे कोप पाम्या होय तेम तत्काळ तेनाथी दूर जतां रहे छे. आथी करीने भिन्न लिंग धारण करनाराओ पण भावलिंगथी मोक्ष पामे छे, ए सिद्ध थाय छे. तेथी मनस्वी पुरुषे कदाग्रह मूकीने ते भावलिंगनी भावना करवी. आ उपरथी एवुं सिद्ध थाय छे के आत्माने बद्ध अने मुक्तनी व्यवस्था अशुद्ध नयने आधारेज घटे छे, पण शुद्ध नयने आधारे तो आत्माने बंध के मोक्ष काइ पण घटतुं नथी.

आ प्रमाणे अन्वय अने व्यतिरेकथी आत्मतत्त्वनो निश्चय करेलो छे एज प्रमाणे पंडिते नवे तत्त्वोथी आत्मतत्त्वनो निश्चय करवो आ सूक्ष्मनयने आश्रय करनारुं गुह्यथी पण अति गुह्य तत्व कोइ अल्प बुद्धिवाळाने आपवुं नहीं. केमके अल्प बुद्धिवाळाने आ तत्त्व विडंबना करनारुज थाइ छे, अर्थात् तेओ अध्यात्म तत्त्वने दुषणज पमाडे छे. जेम क्षुधातुर थयेला दुर्बळ माणसने चक्रवर्तीनुं भोजन अहित करनारु थाय छे, तेम अल्प बुद्धिवाळा माणसने आ अध्यात्म तत्त्व अहित करनारुंज थाय छे जेम अशुद्ध मंत्रनो पाठ करवाथी सर्पनो मणि लेवानी इच्छा उलटी अनर्थ

१ नेत्रमां कमळो नामनो रोग थाय छे त्यारे सर्व वस्तु पीळी लागे छे.

करनार थाय छे, तेम लेश मात्र ज्ञानथी [1]दुर्विदग्ध थयेला कुपंडितोने आ अध्यात्म तत्त्व अनर्थकारीज छे. केमके तेओ परमार्थथी वस्तुतत्व जाणी शक्ता नथी.

वळी हे भव्य कुमारपाळ राजा ! सर्व नयो पोताना एकांत पक्षनोज आधार राखीने स्याद्वादने दूषित करे छे, पण जिनेन्द्रनी वाणी तो सर्व नयमय छे कह्यु छे के—

बौद्धानामृजुसूत्रतो मतमभूद्वेदांतिनां संग्रहात्
सांख्यानां तत एव नैगमनयाद्योगश्च वैशेषिकः ।
शब्दब्रह्मविदोऽपि शब्दनयतः सर्वैर्नयैर्गुंफिता
जैनी दृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्ष्यते ॥ १ ॥

भावार्थ–"बौद्धनो मत ऋजुसूत्र नयथी थयेलो छे वेदांतिओनो मत संग्रह नयथी थयेलो छे, सांख्यनो योगरूपी मत नैगम नयथी थयेलो छे, वैशेषिक एटले नैयायिकनो मत पण ते नैगम नयथीज थयेलो छे, अने शब्द ब्रह्म ज्ञानीनो मत शब्द नयथी थयेलो छे, पण जिनेंद्रनी दृष्टि तो सर्व नयथी गुंफित थयेली छे, तेथी तेमां अत्यंत सारता प्रत्यक्षज जणाय छे."

आ प्रमाणे गुरुना मुखकमळथी आप्त वाक्यो सांभळीने कुमारपाळ राजा निःशंक थया अने जैन धर्ममां दृढ अनुरागी थया.

"सर्व तत्वथी भिन्न अने आत्मतत्वमां लीन थयेलुं एवुं गुरुए कहेलुं अध्यात्म तत्त्वनुं रहस्य सांभळीने परमार्हत् कुमारपाळ राजा संकल्पविकल्पथी रहित ज्ञानव्याप्त थइ धर्मने विषे स्थिर थया."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य पञ्चसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २७५ ॥

---

[1] दुष्ट पंडित

व्याख्यान २७६ मुं.

सार्मीवात्सल्य नामना सातमा दर्शनाचार विषे.

जिनैः समानधर्माण', साधर्मिका उदाहृता ।
द्विधापि तेषा वात्सल्यं, कार्यं तदिति सप्तमः ॥ १ ॥
समानधार्मिकान् वीक्ष्य, वात्सल्यं स्नेहनिर्भरम् ।
मात्रादिस्वजनादिभ्योऽप्यधिक क्रियते मुदा ॥ २ ॥

भावार्थ–"श्री जिनेश्वर समान धर्मवाळाने साधर्मिक कहेला छे. ते साधर्मिकनु द्रव्य अने भाव ए बने प्रकारे वात्सल्य करवु ते वात्सल्य नामनो सातमो दर्शनाचार कहेवाय छे (१) समान धर्मवाळाने जोइने माता पिता विगेरे स्वजनो करतां पण अधिक, गाढ स्नेहपूर्वक हर्षथी तेमनु वात्सल्य करवु (२)

आ बे श्लोकनु तात्पर्य एवुं छे के, समान धर्मवाळा ते साधर्मिक कहेवाय छे. तेमां प्रवचन अने लिंग ए बंनेवडे साधु साध्वी तथा केवळ प्रवचनवडे श्रावक श्राविका साधर्मिक कहेवाय छे. तेमा साधु साध्वीए आचार्य, ग्लान, प्राघुर्णिक (प्राहुणामुनि), तपस्वी, बाल, वृद्ध, नवदीक्षित शिष्य विगेरेनु विशेषे करीने वात्सल्य करवु, तेमज पुष्टालंबनादि अपेक्षाए श्रावक श्राविकानु पण सर्व शक्तिवडे द्रव्य भाव बने प्रकारनु वात्सल्य तेनो उपकारादि करवावडे करवु, अने श्रावके श्रावक श्राविकानुं कुमारपाळ राजानी जेम योग्य वात्सल्य करवु

कुमारपाळ राजानुं दृष्टांत

श्री पाटणमां परमश्राद्ध श्री कुमारपाळ राजा ज्यारे स्नात्रपूजा तथा पौषध विगेर धर्मकार्य करता हता त्यार एक हजार ने आठसो श्रेष्ठीओ तेनी सहायमां रहेवा हता. तेओने राजाए सुखी करेला हता. श्रावक पासेथी दर वर्षे आवतो बोतेर लाख रुपीयानो कर माफ करेलो हतो, तेमज नबळी स्थितिमां आवी पडेलो कोइ पण साधर्मिक राजाने घेर जतो तो तेने राजा एक हजार दीनार आपता हता. ए प्रमाणे करवामां कुल मळीने एक वर्षे एक करोड रुपीयानो व्यय थतो हतो, तेवी रीते चौद वर्षमां चौद करोड द्रव्यनो व्यय कर्यो एकदा कोइ महेश्वरी (मेसरी) वाणीयाए दाणचोरी करी, ते दाण लेनार अधिकारीना जाणवामां आव्यु, तेथी ते

वणिकूने दोरडाथी बांधीने मार मारतां राजानी पासे लइ गया. ते वणिक्ने बीजो कोइ जीवितनो उपाय नहीं सूझवाथी अवसर जाणीने तेणे, श्रावको जिनेश्वरनी पूजा समये उदर, उरस्थळ, कंठ अने कपाळ ए चार स्थाने जेवा तिलको करे छे तेवा केसरमिश्रित चंदनना चार तिलको राजा पासे जती वखत करी लीधा. पछी राजसेवकोए राजा प्रत्ये कह्यु के " हे पृथ्वीपति ! आ वणिके आपनी आज्ञानु उल्लंघन करीने दाणचोरी करी छे, तेने शो दंड करवो ?" ते सांभळीने राजाए भयथी कंपता एवा ते वणिकूनी साम्रु जोयुं, तो तेना कपाळमा तिलक जोइने राजाए विचार्युं के "खरेखर आ तो श्री वीतरागनी भक्ति करनारो श्राद्ध जणाय छे, अने श्राद्धनो कर लेवानु तो मारे प्रत्याख्यान छे, माटे आ निरपराधी छे. " एम विचारीने राजाए तेने बंधनथी मुक्त कराव्यो. ते जोइने राजसेवको बोल्या के "हे स्वामी! आ श्रावक नथी, आ तो अभक्षादिकनु भक्षण करनार महेश्वरी धर्ममा आसक्त छे, पण आजे कपटथी उत्तरासण तथा कपाळमा तिलक विगेरे करीने खोटो श्रावकनो वेष धारीने अहीं आवेलो छे " राजाए कह्यु के " ए वणिक् तर्जना करवा योग्य नथी. ते धन्य अने कृतपुण्य छे, नहीं तो तेना भाल्मा तिलक जोइने मारा मनमा 'आ श्री जिनेश्वरनो भक्त छे ' एम कम आवत ? माटे में तेने मुक्त कर्यो छे, सुखेथी तेने पोताने घेर जवा द्यो " पछी ते महेश्वरी वाणीयो पण श्रावकना वेषनी प्रशंसा करतो जैन राजाने नमीने पोताने घेर गयो आ हकीकत उपर कह्यु छे के—

साधर्मिकस्वरुप यत्, व्यलीकमपि जूजृता ।
सन्मानितं सजायां तत्, तर्हि सत्यस्य का कथा ॥१॥

भावार्थ—" असत्य एवा साधर्मिकना स्वरूपने पण राजाए सभामा मान आप्यु, तो साधर्मिकना सत्य स्वरूपने मान आपे तेमा तो शु कहेवु ! "

आ दृष्टांत सांभळीने सर्व शक्तिथी अवश्य साधर्मिकनु वात्सल्य करवुं.

पूर्वे उदायि राजाए पण चंडप्रद्योत राजाने तेना कपाळमा " आ दासीनो पति छे " एवा अक्षरो लखीने कारागृहमा नांख्यो हतो परंतु पछी सेवकना मुखथी तेने साधर्मिक जाणीने तरतज तेनु बहुमान कर्यु हतु तेथी साधर्मिकनु स्वजनथी पण अधिक सन्मान करवु. कह्यु छे के—

सुहि सयणमाइआण, उवयरण भवपबंधवुड्ढिकर ।

जिनधम्मपवन्नाणं, तं चिय जवजंगमुवणेइ ॥ १ ॥

भावार्थ—"मित्र स्वजनादिकनु बहुमानादि करवाथी भवपरंपरा वृद्धि पामे छे, अने जिन धर्ममा प्रवर्तता साधर्मिकनु सेवन करवाथी ते भवपरंपरानो नाश थाय छे."

अहीं साधुए साधर्मिकनु वात्सल्य करवाना संबंधमा श्री वज्रस्वामीनुं दृष्टांत एवुं छे के—महा उग्र दुष्काळने लीधे सर्व देशना मार्गो ज्यारे बंध पडी गया हता त्यारे श्री वज्रस्वामी पटविद्याए करीने सकळ संघने सुकाळवाळी सुभिक्षापुरीमा लइ गया हता तेवीज रीते विष्णुकुमार विगेरेना दृष्टान्तो पण वाचनारे अन्य स्थळथी जाणी लेवा

कोइ पतिव्रता श्राविका पण पोताना पतिनु लोकोत्तर वात्सल्य करी शके छे तेनु दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

पतिव्रता स्त्रीए करेलु पतिवात्सल्य

पृथ्वीपुर नामना नगरमां एक सुभद्र नामे बार व्रतधारी श्रावक रहेतो हतो. ते एकदा वेपारने माटे राजपुर नगरे गयो. ते नगरमां एक जिनदास नामे श्रावक रहेतो हतो. तेणे पोतानी कन्याने साधर्मिक विना बीजा कोइने नहीं आपवानो नियम ग्रहण करेलो हतो. अन्यदा ते सुभद्रने भोजन, शयन, आसन, [1]जल्पन, [2]चंक्रमण, वार्तालाप विगेरे चेष्टाओवडे साधर्मिक जाणीने तेणे पोतानी पुत्री मोटा उत्सवथी परणावी ते सुशिळा पुत्री घरनु कामकाज करवा उपरांत प्रभुना मार्गने जाणनारी तेमज निर्मळ अन्तःकरणवाळी होवाथी निरंतर पतिनी भक्ति पण करती हती एकदा तेना पति सुभद्रे अति स्वरूपवती अने उद्भट शृंगार धारण करेली पोतानी स्त्रीनी सखीने जोइ तेने जोवाथी सुभद्रने तेणीना उपर गाढ राग उत्पन्न थयो, परंतु लज्जादिकथी काइ पण बोली शक्यो नहीं. ते स्त्रीने मेळववानी चिन्ताथी तेने प्रतिदिन दुर्बळ थतो जोइने तेनी पत्नीए तेने आग्रह पूर्वक दुर्बळ थवानु कारण पूछ्यु, एटले महा कष्टे सुभद्रे ते कारण जणाव्यु ते स्त्री अति चतुर होवाथी तेणे तेने प्रतिबोध करवानो बीजो कोइ उपाय नहीं जाणीने कह्यु के "हे स्वामी! आवा कार्यने माटे तमे आटलो बधो खेद केम पाम्या? मने प्रथमथीज केम कह्यु नहीं? केमके ते मारी सखी मारे आधीन ज छे, तेने हु जलदी लावी आपीश." पछी अन्य दिवसे तेणे पोताना पतिने

---

१ बोलवु   २ चालवु

कह्यु के "ते मारी सखीए तमारी इच्छा पूर्ण करवानु हर्षथी अंगीकार कर्युं छे, तेथी ते आज सांजे अहीं आवशे परंतु ते अति लज्जाळु होवाथी शयनगृहमां प्रवेश करशे के तरतज दीवो बुजवी नाखशे" सुभद्रे बोल्यो के "भले तेम करे, तेमा शी हरकत छे?" पछी ते सुभद्रनी स्त्रीए विचार्युं के "खरेखर विषयरूप महा प्रेतना आवेशवाळो जीव दीनपणु धारण करवु, बगासा खावा, निःश्वास मूकवो, तथा परस्त्री संबंधी विचारमाज तल्लिन थवु विगेरे शु शु चापल्य करतो नथी? अर्थात् सर्व चापल्य करे छे. अहो! अनंत सुखने आपनार एवा व्रतनी पण उपेक्षा करे छे ज्यारे आवो सुज्ञ अने सुशीळ माणस पण विषयमाज एम लीन थइ गयो तो बीजानी शी वात? माटे विषयदशाने अने अन्यनी आशाने धिक्कार छे परंतु आ मारो स्वामी ग्रहण करेला व्रतनो भंग करवाथी नरकादिक दुःखनु भाजन थशे माटे हुज मारी सखीनु रूप धारण करीने तेनुं वांछित पूर्ण करु जो के तेम करवाथी भावथी तो तेना व्रतनो भंग थशे, पण द्रव्यथी भंग नहीं थाय तो एक पक्षनु पालन करवाथी पण कोइ वखत लज्जावान पुरुषने गुणकारी थइ शके छे" आ प्रमाणे भविष्यमां विविध प्रकारना लाभ थवानो विचार करीने तेणे पोतानी सखी पासेथी काइ मिष करीने पोताना पतिए जोयेला तेना उत्तम वस्त्रो तथा अलंकारो मागी लीधा पछी गुटिकाना प्रयोगथी सखीना जेवोज स्वर तथा स्वरूपादि करीने तेज प्रमाणे वस्त्र तथा आभूषणो धारण करी ते सखीनी जेवाज सुंदर विलास (हाव भाव विगेरे) करती ते सुभद्रनी पत्नीए (पोतेज) उत्तम सुगंधी पुष्प, तांबूल, चंदन, अगरु, कर्पूर, कस्तुरी विगेरे समग्र भोगनी सामग्रीवडे तथा निर्मळ दीपकवडे अलंकृत करेला सुंदर शयनगृहमा हर्षथी प्रवेश कर्यो ते वखते गंगा नदीना पुलिननी स्पर्धा करनारा पल्यंकपर उत्कंठाथी विकस्वर दृष्टि धारण करीने बेठेला सुभद्रे नेत्र अने मननी जाणे अमृतमय दृष्टिने धारण करती होय तेवी तेने जोइ तरतज तेणे दीपकने बुजवी दीधो पछी ते पलंग उपर गइ, अने विविध प्रकारनी गोष्ठी करवा पूर्वक आनंदथी ते सुभद्र तेनी साथे क्रीडा करी. प्रातःकाळे तेना गया पछी सुभद्रने विचार थयो के—

सयलसुरासुरपणमिय, चलणेहिं जिणेहिं जं हिय भणियं।
तं परजवसंचलय, अहह मए हारिय सील ॥ १ ॥

भावार्थ—" सकल सुर अने असुरोए जेना चरणकमळने प्रणाम कर्यो छे

एवा जिनेश्वरोए जे हितकारी कह्यु छे ते परभवमां पाथेय समान शील में आजे गुमाव्यु."

मनस्यन्यद्वचस्यन्यत्, क्रियायामन्यदेव च ।
यस्यास्तामपि लोलाक्षीं, साध्वीं वेत्ति ममत्ववान् ॥१॥

भावार्थ–"जे स्त्रीना मनमा काइक होय छे, वचनमां कांइक होय छे, अने क्रियामां तेथी पण कांइ बीजुज होय छे एवी चपल नेत्रवाळी स्त्रीने ममतावाळो पुरुष श्रेष्ठ माने छे"

चर्माच्छादितमांसास्थि, विण्मूत्रपिठरीष्वपि ।
वनितासु प्रियत्वं यत्, तन्ममत्वविजृंभितम् ॥ २ ॥

भावार्थ–"जेनां मास तथा अस्थि चर्ममयी आच्छादन करेलां छे एवी विष्टा अने मूत्रनी हाडी समान स्त्रीओमा जे प्रियत्व छे ते मात्र ममताथीज उत्पन्न थयेलु छे."

गणयन्ति जनु समर्थवत्, सुरतोल्लाससुखेन भोगिनः ॥
मदनाहिविषोग्रमूर्छनामयतुल्यं तु तदेव योगिनः ॥ ३ ॥

भावार्थ–"कामी पुरुषो जे भोगविलासना सुखथी पोतानो जन्म सफळ माने छे तेज सुखने योगी पुरुषो कामदेवरूपी सर्पना विषथी थयेली उग्र मूर्छारूप महा व्याधि समान माने छे."

दरेक पदार्थमा प्रिय अने अप्रियपणु स्वमनोकल्पितज होय छे. खरेखरी रीते तो कोइपण वस्तु इष्ट अनिष्ट छेज नहीं. केमके समग्र विकल्पनो उपरम थवाथी मतिनो भेद रहेतोज नथी कह्यु छे के—

समतापरिपाके स्याद्विषयग्रहशून्यता ।
यया विशदयोगानां, वासीचन्दनतुल्यता ॥ १ ॥

भावार्थ—"समता गुण परिपक्व थाय, त्यारे विषयग्रह शून्य थइ जाय छे (विषयेच्छा नाश पामे छे), अने तेथी निर्मळ योगवाळा ते आत्माने वासी (फरसी) अने चंदनमा तुल्यता थइ जाय छे, अर्थात् ते बन्नेमा भेद जणातो नथी."

आ प्रमाणे सागना वशथी उत्पन्न थयेला पश्चात्ताप रूपी अग्निथी तेनु अतः-करण बळवा लाग्यु, अने हमेशा पोतानी पत्नीने जोताज ते पोतानु मुख नीचु करवा लाग्यो. ते जोइने तेनी भार्याए विचार्यु के "आ मारा पति हजु सुधी लज्जा छोडता नथी, तेथी ते जलदीथी धर्म पामशे, सर्वथा निर्लज्ज अने वाचाळ माणस धर्मने अयोग्य होय छे, पण आ मारा स्वामी तेवा नथी " पछी ते स्त्री हमेशा सामायिकने वखते तथा पठन पाठनने वखते सर्व स्थाने व्रत भग करवानु फळ वारवार कहेवा लागी. "व्रत ग्रहण करवु सहेलु छे, पण तेनु पालन करवु दुष्कर छे. तेना चार[1] भागा थाय छे." इत्यादि वचनो साभळीने सुभद्र पोतानी स्त्रीना स्वभावनी स्तुति करवा लाग्यो, पण तेना मनमा व्रतभगनु दुःख शल्यनी जेम निरतर खटकतु हतु, तेथी ते प्रतिदिन अधिक अधिक दुर्बळ थवा लाग्यो ते जोइने तेनी पत्नीए आग्रहथी दुर्बळ थवानु कारण पूछ्यु, त्यारे ते निःश्वास नाखीने खेद पूर्वक बोल्यो के "हे प्रिया! जे मोक्ष-सुखना हेतुभूत व्रत में चिरकाळथी पालन कर्यु हतु ते व्रतने क्षणिक स्थितिवाळा मनकल्पित सुखने माटे भग करीने मूर्ख पण न करे तेवु अकार्य में कर्यु छे तेनी चिंताथी हु दुर्बळ थाउ छु हवे मने भ्रष्ट थयेलाने एनु प्रायश्चित्त कोण आपशे? मारी भावनानो वृत्तात तो कुभारने घेर जइने मिथ्या दुष्कृत आपनार क्षुल्लक मुनिना जेवो थयो छे जीवोने हणीने पछी 'में मोटु दुष्कृत कर्यु, में मोटु दुष्कृत कर्यु' एम कहेवु ने ध्यान वैराग्य धारण करवा ते व्यर्थ अने वध्य छे." आ प्रमाणे शुभ परिणामथी बोलता तेने अतःकरणथी शुद्ध जाणीने तथा "स्त्रीनी सन्मुख मात्र दाक्षिण्यता साचववा माटे आ बहारनो देखाव नथी" एवी सपूर्ण परीक्षा करीने तेमज 'सवगने वश थयेलु तेनु चित्त इन्द्रनी अप्सराओथी पण पराभव पामे तेवु नथी' एवो निश्चय करीने तेणे निशानी सहित सर्व हेवाल सत्य रीते कही आप्यो तेथी विश्वास पामीने ते सुभद्र शात थइ विचारवा लाग्यो के "लोकोत्तर धर्ममा कुशळ एवी आ मारी भार्याने धन्य छे के 'जेणे मारो स्वामी परस्त्रीना सगथी नरक रूपी सागरमा न पडो' एम धारीने मने तेमाथी उगार्यो. मने अन्तःकरणथी मारी चिंता धरावनारी सुशील स्त्री मळी छे तेनी स्थिरता अने गाभीर्य वा-

[1] व्रत ग्रहण करवु सहेलु न पाळवु दुष्कर, ग्रहण करवु मुश्केल पण पाळवु सुकर, ग्रहण करवु पण सहेलु अने पाळवु पण सहेलु अने ग्रहण करवु पण मुश्केल ने पाळवु पण मुश्केल आ प्रमाणे चाभगी थाय छे तेमा त्रीजा भागा श्रेष्ठ छे, चोथा कनिष्ठ।

णीना विषयनी बहार छे अर्थात् वाणीथी कही शकाय तेवुं नथी. " इत्यादि स्त्रीनी प्रशंसा करीने तेनीज आज्ञाथी गुरु पासे जइ परस्त्रीगमननु सर्वथा प्रत्याख्यान करीने करेला पापनी आलोचना करी. पछी अनुक्रमे पोताना पुत्रने घरनो कार्यभार सोंपीने चारित्र तपादिवडे ते स्त्रीपुरुष अल्पकाळेज इच्छित कार्य साधी मोक्षसुखने पाम्या.

"आ प्रमाणे साधर्मिक वात्सल्यना घणा भेद छे, माटे डाह्या पुरुषो लाभ देखीने तेमां प्रवर्ते छे आ सातमा दर्शनाचारने पालन करनार पुरुषोए पोतानी सर्व शक्तिथी साधर्मिकनी निरंतर अर्चा करवी, तथा तेनु बहुमान करवु."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य
षट्सप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २७६॥

व्याख्यान २७७ मुं.

प्रभावना नामे आठमा दर्शनाचार विषे

अष्टौ प्रोक्ता निशीथाद्रौ, शासनस्य प्रभावकाः ।
मार्गानुसारिण्या शक्त्या, त एवोद्भासयति तत् ॥ १ ॥

भावार्थ-" निशीथादिक सूत्रमां शासनना आठ प्रभावक कहेला छे, तेओज मार्गानुसारी शक्तिए करीने शासनने शोभावे छे.

सूत्रमा जे आठ प्रभावक कहेला छे, ते निशीथ सूत्रनी गाथावडे बतावे छे.

अइसेसीड्ढि १ धम्मकहि, २ वाइ ३ आयरिय ४ खवग ५ नेमित्ती।
६ विज्जा ७ रायगणसम्मते अ ८ तित्थपभावंति ॥ १ ॥

शब्दार्थ-" अतिशयित ऋद्धिवान् १, धर्मकथी २, वादी ३, आचार्य ४, तपस्वी ५, नैमित्तिक ६, विद्यावान् ७ अने राजसमूहमां संमत ८ ए आठ तीर्थना प्रभावक होय छे."

विस्तरार्थ—जेने " अतिशय " एटले बीजाओथी परम उत्कृष्ट " ऋद्धि " एटले तेजोलेश्या विगेरे लब्धिओ छे, ते अतिशयिन ऋद्धि कहेवाय छे. तेने माटे क्षुचिक नामना श्रेष्ठीने शिक्षा आपनार मुनिपति मुनिनु अथवा भावी काळे थनारा सुमंगल मुनिनु दृष्टांत जाणवु ते श्री भगवतिसूत्रना पदरमा शतकमां कहेलुं छे, त्याथी स्वयमेव जाणी लेवु

" धर्मकथी " एटले व्याख्याननी लब्धि जेने होय ते श्रीनदिषेण मुनि वेश्याने घेर रह्या हता, तोपण हमेशा दश दश जीवोने प्रतिबोध पमाडता हता, तेवी रीते बार वर्ष व्यतीत थयां, जेमा ब्रेतालीश हजार ने वसो जारपुरुषो के जेओ कामातुर थइने वेश्याने घेर आवता हता, तेओने धर्मकथावडे प्रतिबोध पमाडीने श्री महावीर स्वामी पासे दीक्षा लेवा माटे मोकल्या हता " हु तो कर्मना वशथी पतित थयो छु पण बीजा दश माणसने दररोज प्रतिबोध पमाड्या विना हु आहार करीश नहीं, " एवो पोते लीधेलो अभिग्रह तेमणे सपूर्ण पाळ्यो हतो ते प्रतिबोध पामनार मनुष्योमा कोइए पण तेनो प्रत्यक्ष एवो दोष पण ग्रहण कर्यो नहोतो. परतु उलटा तेओ एवु विचारता के " अहो ! आ धर्मकथा कहनार कोइ महापुरुष लागे छे, के जेणे मोहजाळमां पड्यां छता पण पोताना गुणोने भस्मीभूत करी नाख्या नथी काजळनी कोटडीमा रह्या छता पण पोताना आत्मस्वभावने मलिन थवा देवा नथी. तेना आत्माने धन्यवाद घटे छे । आ जोके कोइ पण कारणे पतित थयेल छे, पण अवश्य अल्प काळमाज आ कार्यथी पाछा ओसरशे आणे अमारा ज्ञाननेत्रो उघाड्यां, ते बहुज सारू थयु. आ महात्मा मोहसागरमा बूड्या छता न बूड्या जेवाज छे, आवो महात्मा कोइ पण नथी के जेनी आने उपमा आपीए अथवा तो खरेखर अमारी जेवा पापीओने तारवा माटेज आ वेश्याना घरमा नायरूप थइने रह्या जणाय छे. बीजो कोइ पण हेतु कल्पनामा आवी शकतो नथी " इत्यादिक विविध प्रकारना उत्तम वाक्योथी ते धर्मकथा कहनारनी स्तुति करता हता २

" वादी " एटले परवादीनो पराजय करनार. तेनापर वृद्धवादी, मल्लवादी, देवसूरि, सिद्धसेन दीवाकर, थाढीनेवाल श्रीशातिसूरि विगेरना दृष्टातो प्रभावक पुरूष चरित्रमाथी जाणी लेवा. ३.

"आचार्य" एटले गच्छना स्तंभभूत एक हजार वसो ने छत्रुं गुणोथी अलंकृत होय ते. तेनापर प्रभव स्वामी, शय्यंभवसूरि विगेरेनां दृष्टांतो जाणवां. ४.

"क्षपक" एटले प्रकृष्ट तपस्वी. तेना पर छ हजार वर्ष सुधी छठ्ठ तप करनार श्री विष्णुकुमार, छ मासी तप करनार ढंढणकुमार, साठ हजार वर्ष सुधी आचाम्ल-तप करनार सुंदरी, वर्ष पर्यंत कायोत्सर्गे रहेनार बाहुबली, विषम अभिग्रह धारण करनार बहुदामुनि,[१] अगियार लाख ऐंसी हजार ने पांचसो मासक्षपण करनार नंदनमुनि, सोळ वर्ष सुधी आचाम्लतप करनार श्री जगच्चंद्रसूरि तथा गुणरत्न-संवत्सर तप करनार स्कंधकऋषि विगेरेनां दृष्टांतो तपस्वीओना चरित्रवाळा ग्रंथमांथी जाणी लेवां. ५.

"नैमित्तिक" एटले त्रिकाळज्ञानी. आ विषय उपर वराहमेहरने जीतवा माटे निमित्तशास्त्रनी प्ररूपणा करनार श्री भद्रबाहुस्वामीनुं दृष्टांत जाणवुं अथवा दत्त मातुल (मामा) ने सातमे दिवसे मृत्यु कहेनार कालिकाचार्यनुं दृष्टांत जाणवुं. ६.

"विद्यावान्" एटले सिद्ध करेल विद्या, मंत्र, यंत्र, बुद्धि, सिद्धि, चूर्ण, अंजन, योग, औषध अने पादलेप विगेरे प्रयोगवाळा जाणवा. तेमां पाडानो वध कराववामां प्रीतिवाळी कंटकेश्वरीदेवीने वश करनार श्री हेमचंद्रसूरि मंत्रविद्यावाळा जाणवा, अने श्रीपाळ राजाने श्री सिद्धचक्रनो यंत्र आपनार गुरु मंत्रविद्यावाळा जाणवा वळी ते उपर त्रीजुं दृष्टांत कहे छे के—कोइ एक नगरमां एक अति रूपवंती साध्वीने कोइ राजा पकडीने पोताना महेलमां लइ गयो हतो. तेने छोडी देवा माटे श्री संघे राजाने घणो समजाव्यो, पण तेणे छोडी नहीं. पछी एक मंत्रसिद्ध मुनिए राजाना आंगणामां जइ छुटा पडेला थांभलाओ मंत्रीने आकाशमां उडाड्या, तेना खडखडाटथी राजमहेलना स्तंभो पण कंपवा लाग्या. तेथी भय पामीने राजाए ते साध्वीने छोडी दीधी.

पाक्षिकसूत्रमां चोथा महाव्रतना आलावामां "रागवडे अथवा द्वेषवडे मैथुन सेववुं नहीं" एम कह्युं छे, ते उपर शिष्ये शंका करी के "हे गुरु! सर्व पुरुषो रागयुक्त थइनेज विषयो भोगवे छे, पण कोइ द्वेषथी विषय सेवता नथी, तो द्वेष शब्द शामाटे मूक्यो छे?" तेना जवाबमां गुरु बोल्या के "पाक्षिक सूत्रनी वृत्तिमां तेने माटे एक

१ आ नाम अज्ञात छे

दृष्टांत आप्यु छे के "कोइ एक नगरमा एक तापसी परिव्राजिका रहेती हती. तेणे मंत्र-विद्याना बळथी अनेक चमत्कारो बतावीने राजा विगेरे सर्व जनने पोताने वश करी लीधा हता, अने ते सर्व लोको जैन साधुओनी निरंतर निंदा करता हता एकदा राजाए पोतानी राणी पासे ते तापसीना शीलादिकनी वारंवार प्रशंसा करी, पण राणी जैन साधुना गुणोमा रक्त होवाथी तेणे राजानु कहेवु काइ पण सत्य मान्यु नहीं अन्यदा राणीए नगरना उद्यानमा पधारेला गुरु पासे जइने तेने कह्यु के "हे पूज्य! आ गामना एक तापसी रहे छे तेणे पोताना शीलादिक गुणोए करीने राजा सहित समस्त पौरजनोने पोताने वश करी लीधा छे, तेथी तेओ निरंतर जैन साधु-ओनी निंदा करे छे, अने जैन साधुओ नगरमा आवे छे तेमने कोइ आहारादिक पण आपतु नथी आवी रीते आखु शहेर मिथ्यात्वथी व्याप्त थइ गयेलु छे, तेनो जो आप उद्धार करो तो बहु सारु" ते सांभळीने एक मंत्रविद्याथी सिद्ध थयेला मुनिए कोप करीने ते तापसीनु शीलभंग करवा माटे आकर्षण विद्याथी तेनु आकर्षण कर्यु एटले ते तापसी त्या आवी, अने एकांतमा रहेला ते साधुने जोइने कामदेवनी विह्वलताथी तेनु शरीर कंपवा लाग्यु, तेथी "मारा कामज्वरनु औषध करो" एप्रमाणे दीन वाणी बोलती ते तापसीए पोतेज ते साधुने आलिंगन कर्यु. मुनिए पण तेना महत्वनो भंग करवा माटे ते जैननिंदक परिव्राजिकाना साथे द्वेषथी भोगविलास कर्यो त्यारपछी ते तापसी त्याथी नासी गइ अनुक्रमे तेनु उदर अ-नोदरनी जेवु गर्भथी वृद्धि पाम्यु तेथी लोकमा तेनी प्रथम जेवी गुणस्तुति थती हती, तेवीज दोषनिंदा थवा लागी पछी राणीए राजाने कह्यु के "हे प्राणनाथ तमारी परिव्राजिकानु ब्रह्मचर्य जुओ. पापरूपी दमनो समूह प्रगट थयो शीलरूप बख्तर धारण करवामा तो जैनमुनिओज समर्थ छे, बीजा नथी" ते सांभळीने राजाए कह्यु के "हे प्रिया! तु उतावळी न था कोइ वखत ते जैनमुनिनु स्वरूप पण देखाडीश." पछी राजाए पोताना एक सेवकने शीखव्यु के "तु लावण्यादि गुणयुक्त पत्री रूपवती सुंदरकाता नामनी वेश्याने लइने उपवनमा रहेला कामदेवना चैत्यमा रात्रिना आरंभसमये जजे अने ते चैत्यमा काइक धर्मना मिषथी पेला मुनिने लोभ बतावीने लावजे पछी ते बनेने तेमा राखी तु बहार नीकळी जइने बारणा बंध करी मजबूत ताळु मारजे, अने अंदर एक पल्यक नवा जुआ चंदन विगेरे अनेक प्रकारनी भोगसामग्री मूकी राखजे" ते सेवके राजाना कह्या प्रमाणे बधु कर्यु.

पेला दंभरहित मुनि पण ते चैत्यमा पेठा. पछी बहार नीकळवानो मार्ग नहीं मळवाथी तेमणे विचार्युं के "अहो! अनाभोगे करीने हुं आजे मोहजाळमां सपडायो छुं. मने आ वेश्याना हावभावनो तो तिलमात्र पण भय नथी परंतु प्रातःकाळे जैन शासननी अपभ्राजना थशे तेज मात्र मनमा खुंचे छे" पछी ते वेश्याए तेनी अनेक प्रकारे विडंबना करी, तोपण तेणे पोतानुं धैर्य मूक्युं नहीं ते मुनिए विचार्युं के "पूर्वे में कारणसर द्वेषथी अकार्य कर्युं हतुं, पण आजे जो रागथी हुं ते अकार्य करुं तो जरूर मारा महाव्रतरूपी गुणनी हानि थाय, माटे यावज्जीव देव गुरु साक्षीए अंगीकार करेला पंच महाव्रतोनुं पालन करुं तेज योग्य छे." एम विचारीने तेणे रजोहरण विगेरे सर्व साधुना वेषने दीवाथी सळगावीने भस्मीभूत करी नाख्या अने अध्यात्मरूप अमृतवडे भावलिंग धारण कर्युं. परिणामे लाभ जोइने ते भस्म आखे शरीरे चोपडी आवी रीते अवधूतनो वेष धारण करी काचबानी जेम इंद्रियो गोपवीने आखी रात्रि ध्यानतत्परपणे निर्गमन करी पछी वेश्या पोतानुं समग्र पराक्रम बतावीने छेवट थाकी गइ, अने बीजो कोइ उपाय नहीं सूजवाथी ते निद्रावश थइ गइ प्रातःकाल थतां राजा पोतानी राणीओ अने अनेक पौरलोको सहित ते उद्यानमां आव्या. सेवके ताळुं उघाड्युं, तो अंदरथी "अलख निरंजन जगन्नाथने नमस्कार" ए शब्दने मोटा स्वरथी बोलतो अने शरीरे नग्न योगधारी, अविकारी, अलमस्त जेवो एक अवधूत योगी के जेना आखा शरीरे भस्म चोळेली हती तेवो बहार नीकळ्यो तेने जोइने सर्व लोक चमत्कार पाम्या ते वखते राणीए राजाने कह्युं के "हे स्वामी! तमारुं कहेवुं असत्य थयुं. आ तो कोइ योगी नीकळ्यो पण जैन साधु तो नथी." पछी राजाए पोताना सेवकने पूछ्युं के "तें आवुं अवळुं केम कर्युं?" सेवक बोल्यो—"हे स्वामी! में तो आपनी आज्ञा प्रमाणेज सर्व कर्युं हतुं, त्यारपछी शुं थयुं ते हुं जाणतो नथी" त्यारे राजाए वेश्याने रात्रिनुं वृत्तान्त पूछ्युं. वेश्या "बोली के हेस्वामी! हुं शुं करुं? हुं तो भोगनिमित्ते मारुं सर्व सामर्थ्य बतावी बतावीने थाकी गइ, पण तेणे तो इंद्रनी अप्सराओथी पण स्खलित न थाय तेवी महा योगशक्ति बतावी. त्रण जगत्मां तेना जेवो कोइ मुनि नथी" आ प्रमाणे सर्व वृत्तांत जाणीने राजा प्रतिबोध पाम्यो, अने तेणे पोताना चित्तने, वित्तने अने समग्र पुरजनोने जैनधर्ममय कर्या. तेथी जैनसाधुओना ज्ञान, ध्यान, निःस्पृहता, त्याग विगेरे गुणो नगरमां माया नहीं, अर्थात् ते ते गुणोनी अत्यंत प्रशंसा थवा लागी आ प्रमाणे ते साधुए जैनशासननी प्रभावना करीने फरीथी मुनिवेश अंगीकार

कर्यो, अने अल्प समयमाज तेणे पोतानो आत्मधर्म प्रगट कर्यो आ विद्यासिद्धनु दृष्टांत जाणवु बुद्धिसिद्ध उपर अभयकुमार विगेरेना दृष्टांतो जाणवा योगसिद्ध उपर सुवर्णसिद्धि विगेरेना जाणवावाळा श्री कालिकाचार्य विगेरेना दृष्टांतो जाणवा आ सर्वे विद्या प्रभावकमा गणवा. ७ आठमा "राजसमूहमा रूमत" एटले राजा विगेरे समग्र लोके मान्य करेला जाणवा. ८.

आ आठे जैन धर्मना उद्योतक छे तेओना अभावे जैन मतनो महिमा अधिकतर थतो नथी, माटे तेओने जैनशासनरूप प्रासादना स्तंभ समान गणवा.

"दर्शनाचारना विचारने जाणनारा अने शासनना मेढीभूत प्रभावकोए शासनना कार्यमा पोतानी समग्र शक्तिने गोपववी नहीं, पण समग्र शक्तिथी शासननो उद्योत करवामा प्रयास करवो"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य सप्तसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २७७ ॥

व्याख्यान २७८ मु

आठ प्रकारना चारित्राचार कहे छे.

याश्च चारित्रपुत्रस्य, मातरोऽष्टौ प्रकीर्तिता ।
ता एव चरणाचारा, समुपास्या मुमुक्षुभि ॥ १ ॥

भावार्थ—"चारित्ररूप पुत्रनी जे आठ माताओ कहेली छे ते आठे प्रकारना चारित्राचार छे, तेने मुमुक्षु पुरुषोए सेववा"

चरण (व्रत) नु आचरण करवु, ते चारित्राचार कहेवाय छे. ते चारित्राचार पाच प्रकारनी समिति अने त्रण प्रकारनी गुप्तिए करीने आठ प्रकारनो छे. कह्यु छे के—

पणिहाणजोगजुत्तो, पचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तिहिं ।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥

भावार्थ—" पांच समिति अने त्रण गुप्तिए करीने प्रणिधान योगथी युक्त थयेलो आ चारित्राचार आठ प्रकारनो छे, एम जाणवु "

प्रथम समितिरूप पांच प्रकारना चारित्राचारमांथी इर्यासमिति नामना पहेला प्रकारनुं वर्णन नीचे प्रमाणे छे—

युगमात्रावलोकिन्या, दृष्ट्या सूर्यांशुभासिते ।
पथि यत्नेन गन्तव्य–मितीर्यासमितिर्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" गाडानी धुसरी प्रमाण आगळना भागमां जोनारी दृष्टिथी सूर्यनां किरणोथी प्रकाशमान एवा रस्ता उपर यत्नपूर्वक जे चालवुं ते इर्यासमिति कहेवाय छे. "

आ श्लोकमा ' यतनापूर्वक चालवु ' एम कह्युं छे तेमां एम समजवु के ' मुख्य वृत्तिए तो साधुए निरवद्य स्थानमां रहीने स्वाध्याय विगेरे धर्मकृत्यज करवा.' अहीं कोइने शका थाय के " मुनिने ज्यारे निरवद्य स्थानमां रहीने धर्मकृत्यज करवानु छे, त्यारे साधुओने निरतर नवकल्पी विहार करवानो भगवाने शामाटे उपदेश कर्यो छे ? " तेनो जवाब आपे छे के " नवकल्प विहार करवानुं जे भगवाने कह्य छे ते पण घणा गुणनो हेतु होवाथी धर्मनी वृद्धिने माटेज कह्यु छे, तेमा पण रात्रे चक्षुनो विषय नहीं होवाथी अति पुष्ट आलबन (कारण) विना चालवा हालवानी आज्ञा आपी नथी. दिवसे पण छ जीव निकायनी विराधना टाळवाने माटे घणा लोकोवडे चालेला मार्गे विहार करवो, पण आडे मार्गे चालवुं नहीं, तेमा पण पोताना पगथी आरभीने आगळ चार हाथ सुधी (युग प्रमाणे) क्षेत्र (पृथ्वी) ने जोइने काची माटी, जळ, वनस्पति अने बीज विगेरे स्थावर अने कुथुवा, कीडी विगेरे त्रस जतुनी रक्षा माटे पगले पगले सारी रीते जोइने चालवु " इरण इर्या " एटले गति, तेनी जे " समिति " एटले सम्यक् प्रकारे जिनप्रवचनने अनुसारे इनयः आत्मानी प्रवृत्तिरूप चेष्टा करवी ते " इर्या समिति " शब्दनो अर्थ छे.

आगळ जे त्रण गुप्ति कहेवामा आवशे, ते प्रवृत्तिनी निवृत्तिरूप होवाथी तेमां अने समितिमा कांइक भेद छे एम जाणवु. हवे गति करवी ते पण आलंबन, काळ, मार्ग अने यतना ए चार कारणे करीने नियमित रीते करवी. तेमा " आलंबन " ते ज्ञानादिक जाणवु. 'ज्ञान' एटले सूत्र अने तेनो अर्थ ए बने रूप आगम, दर्शन अने

चारित्र. ते प्रत्येक ज्ञानादिकने आश्रय करीने अथवा ने बेना संयोगे करीने¹ गमन करवानी अनुज्ञा आपी छे परंतु ज्ञानादिकना आलंबन विना गति (विहार-जवुं आववु) थइ शके नहीं १. "काळ" एटले गमननुं प्रकरण होवाथी गमनना विषय माटे दिवसज जिनेश्वरे कह्लो छे.२. "मार्ग" एटले उन्मार्गनो त्याग करीने लोको पुष्कळ चालता होय तेवो मार्ग कथो छे.३ अने "यत्ना" ए द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावना भेदे करीने चार प्रकारनी छे तेमां 'द्रव्यने आश्रयीने यतना करवी' एटले युग प्रमाण पृथ्वीमां रहेला जीवादिक द्रव्यने नेत्रवडे जोवां ते. 'क्षेत्रथी यतना करवी' एटले युग प्रमाण पृथ्वीने जोइने चालवुं ते 'काळथी यतना करवी' एटले जेटलो काळ गति करवी तेटला काळ सुधी उपयोग राखवो ते. अने 'भावथी यतना करवी' एटले उपयोगपूर्वक चालवुं ते. अर्थात् शब्दादिक इंद्रियोना विषयने तथा पांच प्रकारना स्वाध्यायने पण तजी दइने चालवुं ते केमके तेमनो त्याग नहींकरवाथी गतिना उपयोगनो घात थाय छे गति वखते बीजो कोइ पण व्यापार योग्य नथी. पाछळ तथा पडखे उपयोग राखवाथी अथवा अति दूर जोवाथी मार्गमां विद्यमान जंतुओ पण जोइ शकाता नथी तेमज अति समीप जोवाथी सन्मुख आवता पशु अथवा भींत विगेरेनु आस्फालन थवा संभव छे, माटे उपयोगपूर्वक गमन करवुं तेज योग्य छे. आवा प्रकारनी समितिपूर्वक गति करनार मुनिने कथंचित् प्राणीनो वध थइ जाय तोपण पाप लागतुं नथी अहीं केवळ गति वखतेज इर्यासमिति राखवी एम नहीं, पण बेठा बेठा पण घणा भागवाळा शास्त्रनी आवृत्ति करती वखते भागानी रचना करता जे हाथ विगेरेनी चेष्टा थाय छे ते पण परिस्पन्दरूप होवाथी तेमां पण इर्यासमितिनी जरुर छे आ समिति वरदत्त मुनिनी जेम पाळवी तेनु दृष्टांत कहे छे—

इर्यासमिति उपर वरदत्त ऋषिनु दृष्टांत

कोइ गच्छमां वरदत्त नामना ऋषि निरंतर इर्यासमितिमां तत्पर हता. एकदा शक्रेन्द्रे पोतानी सभामां तेनी इर्यासमितिनी प्रशंसा करी ते सांभळीने एक मिथ्यात्वी देवे ते सत्य नहीं मानता इन्द्रने कधु के "जीरवानी इच्छावाळो ते मुनि शी रीते इर्यासमितिमां तत्पर रहेशे? हुं तेने समितिथी भ्रष्ट करीश." एम कहीने ते देव मृत्युलोकमां आव्यो, त्यां ते मुनिना चालवाना रस्तापर तेणे माखी जेवडी देडकीओ

¹ ज्ञान न दर्शन अथवा ज्ञान ने चारित्र अथवा दर्शन ने चारित्रना अवलंबनवडे.

विकुर्वी. मार्गमां पग मूकवानी पण जग्या न मळे तेटली घणी देडकीओ जोइने ते मुनि इर्यासमितिमां अति सावधान थइ उभा रही गया. तेवामां ते देवताए मायाथी हाथीना उपद्रववाळु तुमुल चारे बाजुए विकुर्व्युं तेथी पण ते साधु विह्वळ थया नहीं, तेमज उतावळी गति के कुदीने चालवानी गति पण स्वीकारी नहीं त्यारे ते देवना विकुर्वेला माणसो दूरथी साधुने कहेवा लाग्या के "हे ऋषि! हाथीना रस्तामांथी एकदम दूर जता रहो, दूर जता रहो." पण ते मुनि तो पोताना स्वभावमांज स्थिर रह्या, तेवामां हाथीए आवीने ते मुनिने पकडी आकाशमां उछाळ्या, नीचे पृथ्वीपर पडता साधुए विचार्युं के "मारो देह प्रमार्जन कर्या विनानी देडकीओथी व्याप्त पृथ्वीपर पडशे, तेथी घणी देडकीओनो विनाश थइ जशे" आ प्रमाणे देवताए पोतानी सर्व प्रकारनी शक्ति बतावी पण मुनि इर्यासमितिथी भ्रष्ट थया नहीं, एटले पोताना ज्ञानथी तेमज इन्द्रना वाक्यथी मुनिना भावनी निश्चळता जाणीने ते देवता प्रगट थयो, अने पोते करेलो अपराध खमाव्यो पछी सर्व वृत्तांत कही बतावीने ते देव समकितरूपी रत्न प्राप्त करी स्वर्गे गयो.

"आ प्रमाणे वरदत्त ऋषिनी जेम इर्यासमिति नामनो पहेलो चारित्राचार सर्वे मुनिए पाळवो. जुओ, तेनुं शील जोइने देवता पण मिथ्यादृष्टिपणानो त्याग करी सम्यग्दृष्टि थयो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशमासादवृत्तौ नवदशस्तम्भस्य
अष्टसप्तत्यधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २७८ ॥

व्याख्यान २७९ मुं.

भाषासमिति नामना बीजा चारित्राचार विषे.

हितं यत्सर्वजीवानां, त्यक्तदोषं मितं वचः ।
तद्धर्महेतोर्वक्तव्यं, भाषासमितिरित्यसौ ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे सर्व जीवोने हितकारी अने दोषरहित तेमज मित (मान-वाळु—अल्प) वचन होय ते धर्मने माटे बोलवु, तेनु नाम भाषासमिति कहेवाय छे."

अहीं दोषरहित जे वचन कह्यु छे, ते दोष क्रोधादिक आठ छे ते विषे उत्तराध्ययनना चोवीशमा अध्ययनमां कह्यु छे के—

कोहे माणे अ मायाइ, लोभे अ उवउत्तया ।
हासे भये मोहरीए, विगहासु तहेव य ॥ १ ॥
एआइ अट्ठ ठाणाइ, परिवज्जित्तु संजए ॥
असावज्जमिअं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥ २ ॥

भावार्थ—"क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, भय, मुखरता, अने विकथा ए आठ स्थान वर्जीने असावद्य एवा कार्यमां यथायोग्य काळे भाषा बोलवानुं साधुने माटे कहेलु छे." १-२.

विस्तरार्थ—कोइ पिता पोताना पुत्र उपर अति क्रोध करीने तेने कहे के 'तु मारो पुत्र नथी' अथवा पासे रहनार बीजा माणसोने कहे के 'आने बांधो, बांधो' ते क्रोध दोष जाणवो, तेना पर अमरदत्त मित्रानंद विगेरेना दृष्टांतो छे (१). कोइ माणस मरिचिनी जेम अहंकारथी "जाति विगेरेथी मारा जेवो उच्च कोइ नथी" इत्यादि बोले ते मान दोष जाणवो (२) मल्लिनाथ प्रभुना पूर्व भवनी जेम अथवा अभयकुमारने पकडी लाववा माटे चंडप्रद्योत राजाए मोकलेली वेश्यानी जेम जे अन्यने छेतरवा माटे कपटथी बोले ते माया दोष जाणवो (३) धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि विगेरेनी जेम अन्यना भाडादिकने पोताना कहेवा ते लोभ दोष जाणवो (४). "जो महाविदेहक्षेत्रमा विहरमान तिर्थंकरो विचरे छे, तो ते उपकारने माटे आ भरतक्षेत्रमा केम आवता नथी? अहीं क्षणवार रहीने लोकना मनना संदेहो

दूर करीने पछी चाल्या जाय, तो बहु सारु" एम जे बोलवु ते हास्य दोष जाणवो (५) कांइ पण अकार्य करीने कोइना पूछवाथी भयने लीने " मैं आ कार्य कर्युं नथी, कोइ बीजाए कर्युं हशे " एम जे बोलवु ते भय दोष जाणवो (६). जेनु दृष्टांत आगळ कहेवामा आवशे एवी रज्जा साध्वीनी जेम मुखरताथी (वाचाळपणाथी) विचार विना परना अवर्णवाद बोलवा ते मुखरता दोष जाणवो (७). स्त्रीयादिकनी कथामां ' अहो ! आ स्त्रीनां कटाक्ष विक्षेप तथा लावण्यादिक केवां सुंदर छे ? ' इत्यादि बोलवु अथवा भुवनभानु केवळीना जीव रोहिणी स्त्रीनी जेम बोलवु ते विकथा दोष जाणवो (८)

अहीं मुखरता दोष उपर संप्रदायागत रज्जा साध्वीनु दृष्टांत कहे छे—

रज्जा साध्वीनुं दृष्टांत.

श्री महानिशीथ सूत्रमां कह्यु छे के श्री महावीरस्वामी एकदा देशनामां बोल्या के " एकज मात्र कुवाक्य बोलवाथी रज्जा नामनी आर्या महा दुःख पामी." ते साभळीने गौतम गणधरे विनतिपूर्वक पूछ्यु के " हे भगवन् ! ते रज्जा साध्वी कोण ? अने तेणे वाणीमात्रथी शु पाप उपार्जन कर्यु ? के जेनो आ प्रमाणेनो दारुण विपाक आप वर्णन करो छो ? " भगवान बोल्या के " हे गौतम ! आ भरतक्षेत्रमां पूर्वे भद्र नामे एक आचार्य हता. तेना गच्छमां पाचसो साधुओ अने बारसो साध्वीओ हती. तेना गच्छमां त्रण उकाळा आवेलुं, आयाम (ओसामण) अने सौवीर (कांजी) ए त्रण जातनुंज जळ वपरातु हतु. चोथी जातनु पाणी पीवातुं नहोतु एकदा रज्जा आर्याना शरीरमा पूर्व कर्मना अनुभावथी कुष्ट व्याधि उत्पन्न थयो, ते जोइने बीजी साध्वीओए तेने पूछ्यु के " हे दुष्कर संयम पाळनारी ! आ तने शु थयु ? " ते साभळी पापकर्मथी घेरायेली रज्जा बोली के " आ प्रासुक जळ पीवाथी मारु शरीर नष्ट थयु " ते साभळीने "आपणे पण आ प्रासुक जळ वरजीए " एम सर्व साध्वीओना हृदयमा विचार थइ गयो, तेमांना एक साध्वीए विचार्यु के " जो कदापि मारु शरीर हमणाज आ महा व्याधिथी नाश पामे, तो पण हु तो प्रासुक जळ तजीश नहीं उकाळेलु जळ वापरवानो अनादि अनत धर्म कृपाळु जिनेश्वरोए कहेलो छे ते मिथ्या नथी आनु शरीर तो पूर्वे उपार्जन करलां कर्मथी विनष्ट थयु छे. अहो ! ते नहीं विचारवां आ रज्जा अनत तीर्थंकरोनी आज्ञानो लोप करनारु अने महा घोर दुःख आपनारुं केवु दुष्ट वचन बोली ? " इत्यादि शुभ ध्यान करतां विशेष शुद्धिना वशथी ते

साध्वीने केवळ ज्ञान उत्पन्न थयु. तरतज देवोए केवलीनो महिमा कर्यो. पछी धर्मदेशनाने अंते रज्जाए केवलीने प्रणाम करीने पूछयु के "हे भगवन्! कया कर्मथी हु कुष्टादिक व्याधिनु पात्र थइ ?" केवलीए कह्यु के "सांभळ, तने रक्तपीत्तनो दोष छता तें स्निग्ध आहार कंठ सुधी खाधो. ते आहार करोळीआनी लाळथी मिश्र थयेलो हतो. वळी तें आजे एक श्रावकना छोकराना मुख उपर वळगेली नाकनी लींट मोढना वशथी सचित्त जळथी धोइ हती. ते शासनदेवीथी सहन थयु नहीं, तेथी तारो जेम बीजाओ पण तेवु अकार्य न करे तेवा हेतुथी शासनदेवीए तने ते कर्मनु फळ तत्काळ बताव्यु, तेमा प्रासुक जळनो दोष किंचित् पण नथी." ते सांभळीने रज्जाए पूछयु के "हे भगवन्! जो हु यथाविधि तेनु प्रायश्चित्त लउ, तो मारु शरीर सारु थाय के नहीं ?" केवलीए कह्यु के "जो कोइ प्रायश्चित्त आपे तो सारु थाय" रज्जा बोली के "तमेज आपो. तमारा जेवो बीजो कोण महात्मा छे?" केवलीए कह्यु के "तु बाह्य रोगनी शांति माटे इच्छा करे छे, पण तारा आत्माना भावरोग वृद्धि पाम्या छे, ते शी रीते जशे ? तोपण हु तो तने प्रायश्चित आपु परतु तेवु कोइ प्रायश्चित्तज नथी के जेथी तारी शुद्धि थाय. केमके तें पूर्वे सर्व साध्वीओने कह्यु छे के 'प्रासुक जळ पीवाथी मारु शरीर बगड्यु' आवु महा पापी वाक्य बोलीने तें सर्व साध्वीओना मनने क्षोभ पमाड्यो छे, तेवा वचनथी तें मोटु पाप उपार्जन कर्यु छे, तेथी तारे कुष्ट, भगंदर, जळोदर, वायु, गुल्म, श्वासनिरोध, अर्श, गंडमाळ विगेरे अनेक व्याधिवाळा देहवडे अनंता भवोमा दीर्घ काळ सुधी निरंतर दारिद्र्य, दुःख, दौर्गत्य, अपयश, अभ्याख्यान, संताप अने उद्वेगनु भाजन थवानु छे" आ प्रमाणे केवलीनु वचन सांभळीने बीजी सर्वे साध्वीओए मिथ्या दुष्कृत आपीने पोतानु पाप तजी दीधु. माटे हे गौतम! जेओ भाषासमितिवडे शुद्ध एवु वाक्य बोले छे ते केवलज्ञान पामे छे, अने जे भाषासमिति जाळव्या शिवाय जेम तेम बोली जाय छे ते आचारथी भ्रष्ट थयेली रज्जा आर्यानी जेम कुगतिओमा अनेक प्रकारना दुःखसमूह पामी तेम दुःख पामे छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य
एकोनाशित्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २७९ ॥

व्याख्यान २८० मुं

एषणा समिति नामना त्रीजा चारित्राचार विषे.

सप्तचत्वारिंशता यद्दोषैरशनमुज्झितम् ।
भोक्तव्यं धर्मयात्रायै, सैषणासमितिर्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे सुडतालीश दोषरहित अशन (आहार) धर्मयात्राने माटे वापरवु ते एषणा समिति कहेवाय छे " तेनो भावार्थ दृष्टांतथी जाणी लेवो.

धनशर्मा साधुनुं दृष्टांत

अवंति नगरीमा धनमित्र नामे वणिक् रहेतो हतो ते एकदा गुरु पासे धर्मोपदेश सांभळीने अति वैराग्यमग्न थयो, तेथी धनशर्मा नामना पोताना पुत्र सहित तेणे दीक्षा लीधी अनुक्रमे ते बन्ने शास्त्रमां निपुण थया एक दिवस बीजा साधुओनी साथे ते बन्ने मध्यान्ह समये एलगपुरना मार्गे चाल्या ते वखते भयकर ग्रीष्म ऋतुना सूर्यनां किरणो पडवाथी ताप पामेलो ते बाळ साधु तृषाथी पीडाइने धीरे धीरे चालवा लाग्यो, तेथी बीजा साधुओ तो आगळ चालवा मांड्या, पण धनमित्र साधु तो पुत्रना प्रेमरूपी पाशथी नियन्त्रित होवाथी पाछळ रह्या, तेवामां मार्गे एक नदी आवी. ते जोइने पिताए पुत्रने कह्यु के " हे वत्स ! तारी चेष्टाथी हु धारुं छु के तु तृषाथी पराभव पाम्यो छे. पण मारी पासे प्रासुक जळ नथी तेथी शु करु ? योग्य क्षेत्र अने योग्य काळ विनानु जळ मुनिओने तो कल्पतु नथी तो हवे आ नदीनु जळ पीने तुं तारी तृषानु निवारण कर केमके बुद्धिमान पुरुषोए निषेध करेलु कार्य पण आपत्तिमां करवु पडे छे. ते विषे कह्यु छे के—

निषिद्धमप्याचरणीयमापदि,
क्रिया सती नावति यत्र सर्वथा ।
घनाम्बुना राजपथेऽतिपिच्छले,
क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" निषिद्ध कार्य पण आपत्तिमा करवु जोइए. केमके सत् क्रिया सर्व

प्रकारे सर्वत्र रक्षण करती नथी.कोइ वखत मेघना जळथी राजमार्ग अति कादव वाळो थयो होय, त्यारे डाह्या पुरुषो पण आडे रस्ते चाले छे."

तो हे वत्स! आ मृत्यु आपनारी आपत्तिनु कोइ पण प्रकारे उल्लंघन कर. पछी तेनु निवारण करवा माटे गुरु पासे जइने आलोवजे" एम कहीने धनमित्र मुनि नदी उतर्या.वळी तेने विचार थयो के "आ पुत्र मारी शरमथी नदीनु जळ पीशे नहीं केमके लाजवान पुरुषो अकार्य करता पोताना पडछायाथी पण शंका पामे छे. तेथी हु तेना दृष्टिमार्गथी जरा दूर जाउ" एम विचारीने ते आगळ चाल्या पेला बाळ साधु पण नदीने काठे आव्या एटले अत्यंत तृषातुर सता विचार करवा लाग्या के "परमात्माए अनेषणीय भक्त पान लेवानु निषिद्ध कर्यु छे एषणा त्रण प्रकारनी कही छे—गवेषणा, ग्रहणैषणा अने परिभोगैषणा आ त्रणे एषणा आहार, उपधि अने शय्यादि सर्व विषयमा शोधवी जोइए तेमा प्रथम आधाकर्मादि सोळ उत्पादन दोष कहेला छे, अने धात्र्यादि सोळ उद्गम दोष कहेला छे ते बत्रीश दोष पहेली गवेषणामा शोधवाना छे, बीजी ग्रहणैषणामा शंकितादि दश दोष शोधवाना छे, अने त्रीजी परिभोगैषणामा अंगारादि पाच दोष शोधवाना छे ए रीते यतनावाळो मुनि सुडतालीश दोषरहित नव कोटी विशुद्ध एवा भक्तपानादिक आहारने, औधिक अने उपग्रहिक एवा बे प्रकारना उपधिने अने वसतिने ग्रहण करे छे, ते एषणा समिति कहेवाय छे. ते शुद्धिथी रहित अग्राह्य एवु आ जळ हमणा महा कष्टथी हु पीउ छु पछी गुरु पासे तेनी आलोचना लइश." एम विचारीने अंजळीमां जळ लइ ते पीवा माटे मुख पासे हाथ लावे छे, तेवामा तेने बीजो विचार थयो के "हु हमणा जळादिकना जीवोने अभयदान आपु के तृषा निवारण करवा माटे मारा जीवने सुखी करु? जो मारा जीवने आ लोकसबधी सुख आपु छु, तो बीजा जीवोने मोटु दुःख थाय छे वळी तेथी मारु चतुर्गति रूप ससारपरावर्तन वृद्धि पामशे,तेमज अनंत तीर्थकरोनी आज्ञानो लोप थशे वळी आ जीवो सर्वे मारा आत्माना सबधी छे केमके मारो आत्मा आ जीवोना कुळमा अनेकवार रहेलो छे श्रीमान् तीर्थकरोए तो छकाय जीवोनी दया सयमधारी साधुओना उत्सगमा मूकी छे वळी हे जीव! तें नरकमा रहीने आनाथी पण अनतगणी तृषानु दुःख पराधीनपणाए अनतीवार सहन कर्यु छे हमणा तु स्वतत्र थयो छे,तेथी आवा अकार्यमा प्रवर्ते छे, पण हे जीव! शामाटे आत्मगुणने भ्रष्ट करे छे? अथवा हे जीव! तारा एक जीवने माटे अनेक जीवनो वध करवाना भयथी तु जरा पण डरतो केम नथी? अरे मारा चित्तनी मूढ

ताने धिक्कार छे । प्रत्यक्ष रीते मात्र एक क्षण सुखने आपनार तृषाच्छेद रूप आ निर्मळ अने शीतळ जळने तुं अमृत तुल्य माने छे. पण ते अमृतमय नथी, ते तो निश्चे विषनी धाराना पान समान छे, एम तारे जाणवुं. केमके "एक जळना बिंदुमां जिनेश्वरे असंख्य जीवो कहेला छे अने ते बिंदु पण जो सेवाळना लवथी पण मिश्रित होय तो ते अनंत जीवरूप थाय छे." कह्युं छे के—

त्रसाः पूतरमत्स्याद्या, स्थावराः पनकादयः।
नीरे स्युरिति तत्पाता, सर्वेषां हिंसको भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"पूरा, मत्स्य विगेरे त्रस अने पनक विगेरे स्थावर जंतुओ जळमां होय छे, माटे ते जळनो पीनार ते सर्वे जीवोनो हिंसक थाय छे."

तत्कियद्भिर्दिनैर्याति, रक्षिता अपि ये ध्रुवम्।
तान् प्राणान् रक्षितुं दक्षः, परप्राणान्निहन्ति क ॥ २ ॥

भावार्थ—"तेथी करीने जे प्राणो रक्षण कर्या छतां पण केटलाक दिवस पछी तो अवश्य जवानाज छे, तो तेवा प्राणोना रक्षणने माटे कयो डाह्यो माणस परना प्राणने हणे ?"

तेथी "आ सचित जळ सर्वथा हुं पीश नहीं." एम निश्चय करीने दृढ धैर्यवाळा ते बाळके विवेकपूर्वक घणा जळजंतुओने बाधा न थाय तेवी रीते धीमे धीमे अजळीमां रहेलुं जळ नदीमां पाछुं मूकी दीधुं. पछी ते नदी उतर्यो, पण तृषाथी चालवानी शक्ति नहीं रहेवाथी ते तेना कांठापरज पडी गयो. ते वखते तेणे विचार कर्यो के "हमणा आ तृषावेदनीय कर्म कंठ, तालु विगेरेनुं शोषण करीने मारा आत्मामां रहेला रत्नत्रयी रूप अमृतनुं शोषण करवा इच्छे छे, पण हे कर्म ! हवे त्यां तारो लवमात्र पण प्रवेश नहीं थाय केमके समाधि अने संतोषथी आत्मस्वरूपना ध्यानमां हुं मग्न थयो छुं, तेथी त्यां तारो प्रचार थइ शके तेम नथी अहो ! पूर्वे थइ गयेला पूज्य पुरुषोए मोटुं अवलंबन करी राख्युं छे."इत्यादि शुभ ध्यानमां तत्पर थयेलो ते बाळ साधु मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो. स्वर्गमां उत्पन्न थताज तेणे अवधिज्ञाननो उपयोग दीधो, एटले पोताना पिताने नदीथी थोडे दूर जइने उभेला दीठा. पछी ते देव पोताना शरीरमां प्रवेश करीने धनमित्र मुनिनी पाछळ गयो.पुत्रने आव-

तो जोएने धनमित्र पण हर्ष पाम्यो अने आगळ चाल्यो पछी बीजा साधुओ पण तृषाथी पीडावा लाग्या., तेमने माटे ते देवताए भक्तिथी मार्गमां गोकुल विकुर्व्यां. त्याथी तक्र विगेरे लइने साधुओ स्वस्थ थया. त्याथी आगळ चालता ते साधुओमाथी एकनी वींटिका ते देवत,एज पोतानी ओळखाण कराववा माटे भूलावी दीधी दूर जइने ते साधुने पोतानी वींटिका याद आवी, एटले ते साधु उभो रह्यो, अने पाछो फरीने ते स्थाने गयो त्या पोतानी उपधिनी वींटिका जोइ, पण त्यां जे गोकुळ हतु ते जोयु नहीं. पछी ते उपधि लइने सर्व साधुनी भेगा थइ तेणे " उपधि मळी पण त्या गोकुळ तो नथी " ते वात सर्वने जणावी ते साभळी सर्व आश्चर्य पामी विचारवा लाग्या के " खरेखर कोइ देवताना अनुभावथी आ वनमा गोकुळ थयु हतु " तेवामा ते देव प्रगट थइने पोताना पिता सिवाय बीजा सर्व मुनिओने नम्यो. ते वखते " आने केम नम्यो नहीं ? " ए प्रमाणे साधुओना पूछवाथी ते देवे पोतानो सर्व वृत्तात जणावीने कह्यु के " सचित्त जळ पीवा माटे मने ते वखते तेणे समति आपी हती, तेथी तेने पूर्वभवनो पिता छता पण में प्रणाम कर्यो नहीं तेणे स्नेहने लीधे शत्रुनी जेवु कार्य कर्यु हतु तेना वचनथी जो में सचित्त जळनु पान कर्यु होत, तो मने अनत भवभ्रमण प्राप्त थात. कह्यु छे के—

> स एव हि बुधै पूज्यो, गुरुश्च जनकोऽपि च ।
> शिष्य सुत च य क्वापि, नैवोन्मार्गे प्रवर्तयेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे शिष्यने तथा पुत्रने कदापि उन्मार्गे प्रवर्तावे नहीं, तेज गुरु अने तेज पिता डाह्या माणसने पूजवा योग्य छे."

ए प्रमाणे कहीने ते देव स्वर्गे गयो, अने साधुओए पण तेनी प्रशसा करता आगळ विहार कर्यो

" जेम धनशर्मा नामना बाळ साधुए ते वखत अनेषणीय जळनु पान कर्यु नहीं, तेम सर्व साधुओए पापरहित थइने आ चारित्राचारनु पालन करवु. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तम्भस्य
अशीत्यधिकद्विशततम प्रबन्ध ॥ २८० ॥

व्याख्यान २८१ मुं.

चोथा तथा पांचमा चारित्राचार विषे.

ग्राह्य मोच्यं च धर्मोप–करण प्रत्युपेक्ष्य यत् ।
प्रमार्ज्य चेयमादान–निक्षेपसमिति स्मृता ॥ १ ॥

भावार्थ—" धर्मनां उपगरणो जोइने तथा प्रमार्जीने लेवां अथवा मूकवां, ते आदाननिक्षेप नामनी चोथी समिति कही छे "

औधिक ते रजोहरण, मुखवस्त्रिका विगेरे अने औपग्रहिक ते संथारो, दांडो विगेरे अने बीजुं पण कोइ प्रयोजन माटे धूळनुं डेफु तथा काष्ठादिक जे लेवु पडे ते जोइने तथा पडिलेहीने हस्तादिकमां ग्रहण करवा, अने तेवीज रीते पृथ्वी विगेरे उपर मूकवां. ते सर्व वस्तु प्रथम नेत्रवडे जोइने अने रजोहरण विगेरेथी प्रमार्जीनेज लेवी मूकवी, ते विना नहीं केमके जोया प्रमार्ज्या विना लेवा मूकवाथी सूक्ष्म पनक (लील फुल) तथा कुंथुवा, कीडी विगेरे जीवोनी हिंसा थाय, अने तेथी चारित्रनी विराधना थाय कदाचित् वींछी विगेरे डसे तो आत्मानी विराधनादिकनो पण संभव थाय. वस्त्रादिकनी पडिलेहणा पण तेवा प्रकारे करवी के जेथी वायुकाय विगेरेनी जरा पण विराधना न थाय. केमके प्रमार्जना अने पडिलेहणा जीवनी दयाने माटेज करवामां आवे छे, तेथी ते बन्ने क्रियामां साधुए अत्यंत प्रमादरहित थवुं. कह्युं छे के—

पडिलेहणकुणंतो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा ।
देइ व पच्चख्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ १ ॥
पुढवि आउक्काए, तेउवाउवणस्सइतसाण ।
पडिलेहणपमत्तो, छन्न पि विराहणो होइ ॥ २ ॥

भावार्थ—" पडिलेहण करतां करतां परस्पर वातो करे अथवा देशकथा करे, पच्चख्खाण आपे, कोइने वंचावे अथवा पोते वाचना ग्रहण करे तो तेम करता पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय तथा त्रसकायनी पडिलेहणमां प्रमादी साधु विराधना करे छे. " १–२.

ते प्रमाणे शरीरनी प्रमार्जना करवामां पण प्रमादरहित थवु प्रसन्नचंद्र राजाना भाइ वल्कलचिरि धूळथी भराएला वस्त्रोनी प्रमार्जना करता केवळज्ञान पाम्या हता. तथा कोइ सोमिल नामना ब्राह्मणे दीक्षा लीधी हती तेने एकदा गुरुए ग्रामांतर जवाना विचारथी कह्यु के 'पात्रादिकनी पडिलेहणा कर' एटले ते सोमिले पडिलेहणा करी. पछी काइ कारण बनवाथी गुरुए विहार कर्यो नहीं, एटले फरीने गुरुए तेने कह्यु के " पात्रादिक प्रमार्जना करीने तेने स्थाने पाछा मूक." त्यारे सोमिल शिष्य बोल्यो के "हमणांज पडिलेहण करी छे, शु पात्राविकमां सर्प पेसी गयो छे के वारवार पडिलेहण करवानु कहो छो ?" आ प्रमाणे तेनु अयोग्य वचन सांभळीने शासनदेवताए क्रोधथी पात्रमा सर्प विकुर्व्यो. ते जोइने सोमिल भय पाम्यो, अने गुरु पासे क्षमा मागी त्यारे गुरु बोल्या के " ते काइ मारु कार्य नथी " पछी देव बोल्यो के "ते साधुने बोध करवा माटे मे सर्प विकुर्व्यो छे, केमके सर्व कार्यो मुनिए प्रमार्जना पूर्वकज करवाना छे." ते सांभळीने सोमिले आदान निक्षेप समिति धारण करी. अनुक्रमे ते केवळज्ञान पामीने मोक्षे गयो

हवे परिष्ठापनिका समिति नामनो पांचमो आचार कहे छे.

निर्जीवेऽशुपिरे देशे, प्रत्युपेक्ष्य प्रमार्ज्य च ।
यस्त्यागो मलमूत्रादे, सोत्सर्गसमिति स्मृता ॥ १ ॥

भावार्थ-" निर्जीव अने पोलाण विनाना प्रदेशमा जोइने तथा पुजीने मल, मूत्रादिकनो त्याग करवो ते उत्सर्ग समिति (परिष्ठापनिका समिति) कहेवाय छे."

मुनिए मूत्र, पुरीष, श्लेष्म, शुक्र, कर्ण तथा नेत्रनो मेल विगेरे, आहार, जळ, वस्त्र, पात्र विगेरे जे कोइ वस्तु परठववा योग्य होय ते सर्व वस्तु, लीलु घास, बीज, अंकुरा, सूक्ष्म कुंथुवा, कीडी, मकोडी विगेरे न होय तेवा अचित्त स्थानके यतना पूर्वक परठववी ' यतना ' एटले मूत्र, जळ विगेरे प्रवाही वस्तु थोडी थोडी पृथक् पृथक् प्रदेशमा परठववी के जेथी तेनो रेलो चाले नही, अने तरतज सुकाइ जाय. अशन विगेरेने चोळीने परठववु के जेथी कीडी, मकोडी विगेरे तेमा पडे नहीं वस्त्रपात्रादिकना अति सूक्ष्म ककडा करवा के जेथी गृहस्थीना उपयोग रूप दोष न लागे

स्थंडिल (स्थान) ना गुणो उत्तराध्ययनमा " अणावायमसंलोय ", विगेरे पाठमा बताव्या छे ते आ प्रमाणे-' अनापात ' एटले पोताने अथवा बीजा कोइने

ज्यां वारंवार जवु आववु नथी एवु जे स्थान ते अनापात स्थंडिल कहेवाय छे. 'असलोक' एटले पोते दूर छता पण वृक्षादिकना व्यवधानने लीधे ज्या पोताना पक्षना साधुओ विगेरे पण जोइ शके नही तेवु स्थान ते असंलोक कहेवाय छे. अहीं अनापात अने असलोक ए बन्नेना चार[1] भांगा करवा, तेमा प्रथम भांगो शुद्ध छे, जेमां बनेमांथी एके दोप लागतो नथी तेवा स्थानके परठववा जवु (१) 'अनुपघातिकं' एटले ज्या कोइ ताडनादिक करे नो तेथी शासननो उड्डाह थाय तेवुं न होय ते स्थान अनुपघातिक कहेवाय छे तेमा उपघात त्रण प्रकारनो छे. सयम (चारित्र) नो, प्रवचननो अने पोतानो (२). 'समस्थंडिल' एटले जे स्थान उचु नीचुं न होय, सरखु होय, ते समस्थंडिल कहेवाय छे उचु नीचु स्थडिल होय तो त्या मूत्र पुरीप करता विशीर्ण थाय, तेथी छ कायनी हिंसा थाय, अने चारित्रनी विराधना थाय (३) 'अशुपिर' एटले तृण, पर्ण विगेरे ज्यां न होय ते अशुपिर स्थान कहेवाय छे. शुपिर स्थानमा परठववाथी वींछी विगेर होय तो ते डसे छे(४). 'अचिरकालकृत' एटले जे स्थानो जे ऋतुमां अग्नि विगेरे लगाडवाना कारणथी निर्जीव करेला होय, तेज ऋतुमां ते स्थानो अचिरकालकृत कहेवाय छे माटे बे मासना प्रमाणवाळी ते ऋतुमा ते स्थानो शुद्ध जाणवां त्यारपछी बीजी ऋतुमां ते स्थानो मिश्र जाणवां, तेमज जे स्थाने एक वर्षाकाल सुधी गृहस्थो सहित गाम वसेलुं होय ते स्थान बार वर्ष सुधी स्थडिल एटले शुद्ध स्थान जाणवु, त्यारपछी अशुद्ध जाणवु (५) 'विस्तीर्ण' एटले जघन्यथी आयाम तथा विष्कंभ एक हाथनो होय, अने उत्कृष्टथी बार योजननो होय ते स्थान विस्तीर्ण कहेवाय छे. तेमां उत्कृष्ट प्रमाण तो चक्रवर्तिनी सेनाना निवेशमा जाणवु. अन्यत्र मध्यम प्रमाण जाणवु(६). 'दुरवगाढं' एटले जे गभीर (उडु) स्थान होय ते दुरवगाढ कहेवाय छे. तेमा नीचे चार आगळ सुधी अग्नि तथा सूर्यना तापथी अचित्त भूमि थयेल होय ते जघन्य जाणवुं, अने पाच आगळथी आरभीने विशेप होय ते उत्कृष्ट जाणवु (७). 'अनासन्न' एटले उपवनादिकनी अति समीपे न होय ते अनासन्न स्थंडिल कहेवाय छे. आसन्न (समीप)ना बे भेद छे, द्रव्यासन्न अने भावासन्न. तेमा द्रव्यासन्न एटले देवालय, हवेली, गाम, उद्यान, खेतर, मार्ग विगेरेनी समीपनु स्थान. ते स्थानमा परठववाथी संयमनो अने पोतानो घात थवा रूप बे प्रकारना दोपनो सभव छे. केमके ते देवालयादिकनो अधिपति साधुए समीपमा त्याग करेला पुरीपादिकने कोइ चाकर

---

१ अनापात असलोक, अनापात सलोक आपात असलोक अन आपात सलाक ए चार भांगा

पासे बीजे ठेकाणे नखावीने ते स्थान साफ करावे, तथा ते चाकरना हाथ धोवरावे, तेथी संयमनो उपघात थाय, अथवा ते स्थानना अधिपतिने क्रोध आववाथी द्वेषने लीधे कदाचित् ताडनादिक करे, तो तेथी आत्मानो (पोतानो) उपघात थाय. तथा 'भावासन्न' एटले उतावळना कारणथी नजीकमाज परठव ते(८). 'विलवर्जित' एटले जे पृथ्वीमा दर विगेरे काइ छिद्र न होय ते बिलवर्जित स्थंडिल कहेवाय छे (९) तथा 'त्रसप्राणबीज रहित' एटले स्थावर अने जंगम समग्र जंतुजातिथी रहित जे स्थान होय ते त्रसपाणबीजरहित स्थंडिल कहेवाय छे (१०). आ दश पदोना एकसंयोगी बेसंयोगी एम भंग करता एक हजार ने चोवीश भागा थाय छे तेमा छेल्लो दश पदनो थयेलो भांगो मुख्यताए शुद्ध छे. तेवा स्थंडिलमां पुरीषादिक परठवतु

आ प्रमाणे पारिष्ठापनिका समिति श्री ज्ञातासूत्रनामना छठ्ठा अंगमा वर्णवेला श्री धर्मरुचि साधुनी जेम पाळवी

श्री धर्मरुचिनु दृष्टांत

एकदा श्री धर्मघोषसूरिना शिष्य श्री धर्मरुचिमुनि गोचरी माटे गया हता. तेमा एक नागश्री नामनी ब्राह्मणीए कडवी तुबडीनु शाक वहोराव्यु, ते तेणे गुरुने बताव्यु. गुरुए ते शाक अयोग्य अने प्राणनाशक जाणीने शिष्यने कह्यु के "आ शाकने शुद्ध स्थंडिले परठवी आवो" एटले शिष्ये उपर कही तेवा प्रकारनी स्थंडिल भूमिए जइने विचार्यु के "आ शाकमा एवो शो दोष हशे के तेने परठववा माटे गुरुए आज्ञा आपी?" पछी तेना दोषनी परीक्षा करवा माटे शिष्ये ते शाकमांथी एक बिंदु पृथ्वीपर मूक्यु, तेना गंधथी लुब्ध थइने अनेक कीडीओ त्या आवी, अने तेनो रस लेतांज तत्काळ मृत्यु पामी ते जोइने ते साधुने दया आववाथी तेणे विचार्यु के "निर्दोष भूमिमा पण कीडीओ विगेरे दूरथी आवे छे, तो तेवु शुद्ध स्थंडिल तो कोइ पण ठेकाणे जणातु नथी, अने गुरुए तो शुद्ध स्थंडिलमा जइने परठववानी आज्ञा आपी छे, तेथी मारा शरीर जेवु बीजु कोइ स्थंडिल हु शुद्ध जोतो नथी, माटे आ शाक तेमाज परठववु योग्य छे" एम विचारीने ते शाक तेणे पोतेज वापर्यु, अने तेज वखते अनशन लइने सर्वार्थसिद्ध विमानमा देवता थया

आ समिति उपर बीजु पण विशेष समजवा जेवु छे ते छठ्ठा अंगथी जाणी लेवु तेमा आ समिति उपर ढंढणऋषि तथा सिंहकेसरऋषिनु पण दृष्टांत छे,

क जेमां मोदकने परठववानी हकीकत छे. आ विषय उपर पुष्पमाळा प्रकरणमां कहेलुं धर्मरुचिनु दृष्टांत पण जाणवु ते आ प्रमाणे—कोइ गच्छमां धर्मरुचि नामना साधु हता. ते एकदा परोपकारना कार्यमा व्यग्र रहेवाथी स्थंडिलनी प्रतिलेखना करवी चूकी गया रात्रे पेशाब करवानी शंका थवाथी व्यथा थवा लागी. ते व्यथाथी प्राण जवानी तैयारी हती, तेवामा कोइ देवनाए प्रकाश देखाड्यो, तेथी तेमणे शुद्ध स्थंडिल जोइ लीधो अने लघुशंका टाळी त्यारपछी फरी अंधकार थयो. ते जोइने "आ प्रकाश देवताए कर्यो हशे" एम जाणी तेनु मिथ्या दुष्कृत आप्यु. इत्यादि अनेक दृष्टांतो विविध शास्त्रथी जाणवां.

"अहीं जे दश विशेषणो आपीने शुद्ध स्थंडिलनु स्वरुप बताव्यु छे तेवु स्थंडिल धर्मरुचि साधुनी जेम शोधीने मुमुक्षु मुनिओए आ पांचमी समितिनुं पालन करवु, पण तेमा किंचित् मात्र आळसु एटले प्रमादी थवुं नहीं

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य
एकाशित्यधिकद्विशततम प्रबंधः ॥ २८१॥

व्याख्यान २८२ मुं

त्रण गुप्ति विषे

प्रथम मनोगुप्ति नामना छठ्ठा चारित्राचार विषे.

कल्पनाजालनिर्मुक्त, सद्भूतवस्तुचिन्तनम् ।
विधेयं यन्मन स्थैर्य, मनोगुप्तिर्जवेत्रिधा ॥ १ ॥

भावार्थ—"कल्पनाना समूह रहित सत्य वस्तुनु चिंतवन करीने जे मननो स्थिरता करवी ते मनोगुप्ति कहेवाय छे तेना त्रण भेद छे."

मनोगुप्तिना त्रण भेद आ प्रमाणे—आर्त अने रौद्र ध्यानना अनुबंधवाळी कल्पनाना समूहथी रहित ते [illegible] पे छे, आगमने अनुसरनारी, समस्त

लोकने हितकारी, धर्मध्यानना अनुसरवाळी अने मध्यस्थ बुद्धिना परिणामवाळी जे मनोगुप्ति ते बीजी छे, अने शुभ तथा अशुभ समग्र मननी वृत्तिओनो निरोध करीने योगनिरोध अवस्थामा प्राप्त थनारी आत्मामाज रमण करवा रूप जे मनोगुप्ति ते त्रीजी छे. आ मनोगुप्ति जिनदास श्रेष्ठिनी जेम पाळवी तेनु दृष्टांत आ प्रमाणे—

मनोगुप्तिपर जिनदास श्रेष्ठिनुं दृष्टांत

चपापुरीमा जिनदास नामे एक श्रेष्ठि रहेतो हतो ते एकदा पौषध व्रत होवाथी रात्रिए कायोत्सर्ग करीने पोताना शून्य घरमा रह्यो हतो. ते तेनी कुलटा स्त्रीना जाणवामा न होवाथी ते स्त्री तेज घरमा लोढाना खीला वाळा जेना पाया हता एवो पलग लावी तेनो एक पायो श्रेष्ठिनाज पग उपर मूकीने पोताना जारनी साथे क्रीडा करवा लागी तेम्ना भारथी पीडा पामतो सतो ते श्रेष्ठि मनोगुप्ति पाळी मरण पामीने स्वर्गे गयो

हवे वाग्गुप्ति नामनो सातमो चारित्राचार कहे छे

मौनावलबन साधो, सज्ञादिपरिहारत ।
वाग्वृत्तेर्वा निरोधो य, सा वाग्गुप्तिरिहोदिता ॥ १ ॥

भावार्थ—"सज्ञादिकनो पण त्याग करीने साधु जे मौन धारण करे अथवा वाणीनी वृत्तिनो निरोध करे ते वाग्गुप्ति कहेवाय छे "

आ वाग्गुप्तिना बे प्रकार छे ते आ प्रमाणे—मुख, नेत्र अने भ्रकुटिनो विकार, आगळीथी इसारो करवो, उचेथी खाखारो मारवो, हुकार करवो, काकरो विगेरे फेंकवु, इत्यादि कार्यनु सुचवन करनारी सर्व सज्ञा (इसारा) नो त्याग करीने 'आजे मारे काइ पण बोलवु नहीं' एवो अभिग्रह धारण करे ते पहेली वाग्गुप्ति कहेवाय छे परतु चेष्टा विगर करीने पोताना कार्यनु सूचन करवु, अने मौननो अभिग्रह करवो ते तो निष्फळज छे तथा वाचना, पृच्छना अने बीजाना प्रश्नना जवाबमां लौकिक आगमना विरोध रहित मुखवस्त्रिकाथी मुखकमळनु आच्छादन करीने बोलता सता वाग्वृत्तिने जे नियममा राखवी ते बीजी वाग्गुप्ति कहेवाय छे आ बे भेदथी एम सिद्ध थाय छे के सर्वथा वाणीनो निरोध करवो, अथवा यथार्थ सम्यक्

भाषण करवुं ते वचनगुप्ति छे, अने भाषासमितिमा तो मात्र सम्यक् वाणीनी प्रवृत्ति करवी एम छे, एटलो वाग्गुप्तिमां अने भाषासमितिमा तफावत छे. कह्युं छे के-

समियो नियमा गुत्तो, गुत्तो समियत्तणंमि भयणिज्जा।
कुशलवयमुदीरंतो, ज वइगुत्तो वि समियो वि ॥ १ ॥

भावार्थ-"जे समितिवान होय ते अवश्य गुप्तिवाळो होय छे, अने जे गुप्तिवाळो होय तेने समितिनी भजना होय छे, तेथी जे यथार्थ वचन बोलनार होय तेने समिति अने गुप्ति बन्ने होय छे.

आ वाग्गुप्तिना समर्थन माटे अन्य शास्त्रनु दृष्टांत कहे छे-

विष्णुपुरना उद्यानमा शिवशर्मा, देवशर्मा अने हरिशर्मा नामना त्रण तापसो महा उग्र तप करता हता ते त्रणेना तपना प्रभावथी पहेरवाना धोतीयां आकाशमां निराधार सुकाता हतां, एवी सर्वत्र प्रसिद्धि हती एकदा ते त्रणे तापसो सरोवरमां स्नान करवा गया, त्यां तेमनां धोतीयां आकाशमां तडके सुकातां हतां तेवामां ते सरोवरमां कोइ बगलाए आवीने एक मत्स्यने पकडयो ते जोइने "अरे! आ बहु खोटु थयु, आ पापीए निरपराधी मत्स्यने पकडयो. अरे! मूकी दे, मूकी दे." एम बोलीने मत्स्यपर दया अने बगलापर निर्दयता बतावनार शिवशर्मानु धोतीयुं आकाशमांथी नीचे पडयु ते जोइने बगला उपर दया लावीने "अरे! मूकीश नहीं, मूकीश नहीं. आ बिचारो बगलो भुखथी मरी जशे," एम बोलता बगलापर दयाने मत्स्यपर निर्दयता बतावनार देवशर्मानो पट पण नीचे पड्यो. ते बन्नेना पट नीचे पडेला जोइने बगला अने मत्स्य ए बन्नेपर समभाव राखीने हरिशर्मा बोल्यो के-

मुंच मुंच पतत्येको, मा मुंच पतितो यदि।
उभौ तो पतितौ दृष्ट्वा, मौनं सर्वार्थसाधकम् ॥ १॥

भावार्थ-"मूक, मूक" एम कहेवाथी एकनु वस्त्र पडयु, अने "मूकीश नहीं, मूकीश नहीं" एम कहेवाथी बीजानु वस्त्र पण पडयु, ते बन्नेने पडेला जोइने हु धारु छुं के मौन राखवु तेज सर्व अर्थनु साधक छे"

आ प्रमाणे पंडितना विषयमां जेम मौन कल्याणकारी कह्युं, तेम केटलीक वखत अपंडितने पण मौन हितकारी थाय छे. कह्यु छे के-

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा
विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः ।
विशेषतः सर्वविदां समाजे
विभूषणं मौनमपंडितानाम् ॥ १ ॥

भावार्थ-" पोताने आधीन अने एकांत गुणकारी एवुं मूर्खतानुं आछादन (ढांकण) विधाताए निर्माण करेलुं छे. ते ए छे के पंडितोनी सभामां मूर्खनुं विशेषे करीने मौनज उत्तम भूषण छे."

" रागद्वेष सहित एवुं ते बन्ने तापसोनुं वचन वस्त्र पडवानुं कारण थयुं." एम विचारी समभावथी मौन रहेला बीजा हरिशर्मानुं वस्त्र आकाशमांज रह्युं.

आ दृष्टांतथी स्याद्वाद धर्मने जाणनारा मुनिए तो लाभालाभनो विचार करीने अवश्य वाग्गुप्ति अने वाक्समितिनी योजना करवी

हवे कायगुप्ति नामनो आठमो चारित्राचार कहे छे.

काय गुप्तिर्द्विधा प्रोक्ता, चेष्टानिवृत्तिलक्षणा।
यथागमं द्वितीया च, चेष्टानियमलक्षणा ॥ १ ॥

भावार्थ-" आगमने अनुसारे कायगुप्ति बे प्रकारनी कहेली छे. पहेली सर्वथा चेष्टानी निवृत्ति लक्षणवाळी अने बीजी चेष्टाना नियम लक्षणवाळी जाणवी."

अहीं एम समजवानुं छे के देवकृत, मनुष्यकृत, तिर्यंचकृत अने स्वकृत आस्फालन पतन विगेरे एम चार प्रकारना उपसर्गनो तथा क्षुधा तृषा विगेरे परीसहोनो संभव छतां पण कायोत्सर्ग करवा विगेरेथी देहने निश्चळ राखवो ते, तथा सर्व योगनो निरोध करवानी अवस्थाए सर्वथा चेष्टानो निरोध करवो ते पहेली कायगुप्ति छे; अने शयन, आसन, निक्षेप, आदान[1] विगेरेमां स्वच्छंदपणानो परिहार करीने शास्त्रोक्त क्रिया करवा पूर्वक कायचेष्टाने नियममां राखवी ते बीजी कायगुप्ति छे तेमां शयन ते रात्रीने विषे करवुं, पण दिवसे नहीं रात्रिए पण प्रथम प्रहर व्यतीत थया पछी,

१ मूकवुं ते २ लेवुं ते.

गुरुनी आज्ञा लइने, पृथ्वीनुं प्रेक्षण तथा मार्जन करीने, संथारानां बे पड भेळां करीने, मस्तक, शरीर अने पग विगेरे मुखवस्त्रिका तथा रजोहरणवडे पूंजीने, पछी आज्ञा आपेला संथारापर बेसी पोरसी भणवी. पछी बाहुनुं उपधान (ओसीकुं) करीने बन्ने पगने संकोचीने सुबु, अथवा बन्ने जंघाओ कुकडीनी जेम अधर आकाशमां राखवी, अने पूजेली भूमिपर पग राखवा पछी हाथपगनो संकोच करतां फरीने पण तेने प्रमार्जवा. डांस विगेरे उडाडतां तेमज उद्वर्तन (खरज) करता पण मुखवस्त्रिकावडे शरीरने पूंजवु. ए रीते पोताना देह प्रमाण एटले त्रण हाथ जेटला भूमिप्रदेशमां सुइने अल्प निद्रा करवी. तथा जे स्थाने बेसवानी इच्छा होय ते स्थान प्रथम चक्षुथी जोइ, पछी तेने पूजीने बेसवानु वस्त्र पाथरीने बेसवु. अशुद्ध स्थंडिल होय तो कायगुप्ति विशेषे करवी. ते उपर दृष्टांत कहे छे के—कोइ एक साधुए साथे साथे विहार कर्यो. एक दिवस अरण्यमा मुकाम थयो. ते अरण्यमा भूमि बहु जीवव्याकुळ होवाथी शुद्ध स्थंडिल मळ्यु नहीं, तेथी ते साधु रात्रिए एक पग मात्र पृथ्वीपर राखीने उभा रह्या. ते जोइने इंद्रे सभामा ते साधुनी प्रशंसा करी. ते सांभळीने कोइ मिथ्यादृष्टि देवताए परीक्षा करवा माटे त्यां आवीने सिंहरूपे ते साधुने चपेटाथी प्रहार कर्यो ते प्रहारथी पडी जतां साधुए वारवार प्राणीनी विराधनानो संभव जाणीने मिथ्या दुष्कृत आप्यु. छेवट थाकीने ते देवता प्रगट थयो. अने सर्व वृत्तांत कही तथा तेमने खमावीने स्वर्गे गयो. बीजा साधुओए पण ते साधुनी प्रशंसा करी. आ दृष्टांत सांभळीने मुनिए कायगुप्ति अवश्य धारण करवी

उपर कहेली युक्तिथी त्रणे गुप्तिनु मुनिए पालन करवु. ते विषे दृष्टांत नीचे प्रमाणे—

कोइ एक नगरमां एक साधु कोइ श्रावकने घेर भिक्षा लेवा माटे गया तेने ते श्रावके नमन करीने पूछ्यु के "हे पूज्य ! तमे त्रण गुप्तिए गुप्त छो ?" तेना जवाबमां मुनिए कह्युं के 'हु त्रण गुप्तिए गुप्त नथी ' श्रावके तेनु कारण पूछ्यु, एटले मुनिए कह्युं के "हु एक दिवस कोइने घेर भिक्षा माटे गयो हतो, त्यां तेनी स्त्रीनी वेणी जोइ, तेथी मने मारी स्त्रीनुं स्मरण थयु, माटे मारे मनोगुप्ति नथी एकदा भिक्षा माटे श्रीदत्त नामना गृहस्थने घेर गयो हतो. तेणे मने केळां योग्य जाणी आप्यां त्यांथी हुं बीजे घेर गयो. ते बीजा घरवाळा श्रावके मने 'आ केळां कोणे आप्यां ?' एम पूछ्यु, एटले में सत्य वात जणावी. ते श्रावक पेलां केळां आपनारनो द्वेषी हतो,

तेथी तेणे जइने राजाने कह्युं के "हे स्वामी! आपनी वाडीना केळां दररोज श्रीदत्तने घेर जाय छे" राजाए पूछयु के 'तें शी रीते जाण्यु?' ते बोल्यो के "तेणे मुनिने आप्या, अने में ते मुनिना मुखथी साभळ्यु तेवा केळां आपनी वाडी शिवाय बीजे कोइ ठेकाणे थता नथी." ते सामळीने राजाए श्रीदत्तने शिक्षा करी, तेथी मारे वाग्गुप्ति पण नथी केमके ते श्रेष्ठीने दड कराववामा हु कारणभूत थयो एकदा विहार करता हु एक अरण्यमा गयो. त्या थाकी जवाथी निद्रा पाम्यो. ते ठेकाणे एक सार्थ आवीने रह्यो. रात्रिए सार्थपतिए सौने कह्यु के "हे माणसो! प्रातःकाले अहींथी वहेला चालवु छे, माटे वेळासर भोजनसामग्री तैयार करी ल्यो" ते सामळीने सर्व जनो रसोइ करवा लाग्या ते वखते अधकार होवाथी एक माणसे मारा मस्तक पासे एक बीजो पथ्थर मूकीने चूलो कर्यो. पछी तेमां अग्नि सळगाव्यो. ते अग्नि लागवाथी में मारु मस्तक लइ लीधु तेथी मारे कायगुप्ति पण नथी. माटे हु भिक्षा योग्य मुनि नथी."आ प्रमाणेना ते मुनिना सत्य भाषणथी ते श्रेष्ठी बहु हर्ष पाम्यो अने मुनिने प्रतिलाभित कर्या. मुनिनी अत्यत प्रशसा करवाथी ते श्रेष्ठीए अनुत्तर विमाननु सुख उपार्जन कर्यु. मुनि पण पोताना आत्माने निंदवा चिरकाल पर्यंत चारित्र पाळीने अनुक्रमे स्वर्गे गया.

॥ इति त्रिगुप्ति स्वरूप ॥

पूर्वे कहली पाच समितिओ प्रतिचार (प्रवृत्ति) रूप छे, अने त्रण गुप्तिओ तो प्रतिचार (प्रवृत्ति) तथा अप्रतिचार (अप्रवृत्ति) ए बंने रूप छे. प्रतिचार एटले कायानो अथवा वाणीनो व्यापार तेथी गुप्तिओमा समितिओनो अन्तर्भाव पण थइ जाय छे ते एवी रीते के बीजी भाषासमितिनो वाग्गुप्तिमा अतरभाव थाय छे. एषणा समिति मनना उपयोगथी उत्पन्न थाय छे.केमके ज्यारे साधु एषणा समितिमा उपयोगवाळा होय त्यारे श्रोत्रादिक इद्रियो वडे वहोरावनार हाथ के पात्रादिक धोये छे के लेप मूके छे इत्यादिथी थता शब्दादिकमा उपयोग राखे छे माटे तेनो मनोगुप्तिमा समावेश थाय छे बाकीनी त्रण समितिओ कायानी चेष्टाथी उत्पन्न थाय छे, तेथी तेमनु कायगुप्तिसाथे ऐक्यपणु छे, अथवा एक मनोगुप्तिज पाचे समितिओमा अविरुद्ध छे ते आठे प्रवचननी माताओ रहेवाय छे, ते समग्र द्वादशागीने उत्पन्न करनार छे. कमके ते आठेमा समस्त प्रवचन अतर्भाव पामे छे, ते ए रीते के पहेली समितिमा पहेला व्रतनो समावेश थाय छे अने ते व्रतनी वाड समान बा-

कीनां व्रतो होवाथी ते पण तेमांज अन्तर्भाव पामे छे भाषा समिति तो सावद्य वाणीनो परिहार करीने निरवद्य वाणी बोलवा रूप छे, तेथी ते समितिमां समग्र वचनना पर्याय आवी गया, केमके द्वादशांग कांइ वचन पर्यायथी भिन्न नथी. ए प्रमाणे एषणा समिति विगेरेमां पण स्वबुद्धिथी भावना करवी, अथवा आ आठे प्रकार चारित्र रूपज छे. कहुं छे के—

अथवा पंचसमिति–गुप्तित्रयपवित्रितम् ॥
चरित्रं सम्यक् चारित्र–मित्याहुर्मुनिपुंगवा ॥ १ ॥

भावार्थ—" अथवा पांच समिति अने त्रण गुप्तिथी पवित्र एवुं जे चरित्र तेज सम्यक् चारित्र छे, एम श्रेष्ठ मुनिओ कहे छे "

ज्ञान दर्शन विना चारित्र होयज नहीं अने अर्थथी ज्ञान, दर्शन, चारित्रथी भिन्न द्वादशांग छेज नहीं. तेथी आ आठे प्रकारमां सर्व प्रवचननो समावेश थाय छे. " माटे चारित्रधारी मुनिओए प्रमादनो त्याग करीने आ आठे प्रवचन मातानी उपासना करवी केमके ए आठेमां प्रशस्य एवुं सर्व प्रवचननुं रहस्य समायेलुं छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य
द्व्यशीत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २८२ ॥

व्याख्यान २८३ मुं.

तपाचार विषे.

अनादिसिद्धदुष्कर्म–द्वेषिसंघातघातकम् ।
इदमाद्रियते वीरैः, खड्गधारोपमं तपः ॥ १ ॥

भावार्थ—" अनादि सिद्ध एवा दुष्कर्म रूपी शत्रुसमूहनो नाश करनारुं आ खड्गनी धारा जेवुं तप वीर पुरुषो आदरे छे. "

तत्तप. सेव्यतां दक्षा, दुष्कर्मक्षालनोदकम् ।
यत्सेवनादभूद्देव–सेव्य क्षेमर्षिसंयमि ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे डाह्या पुरुषो ! दुष्कर्म रूप मळने क्षालन करवामां जळ समान एवा ते तपनु तमे पण सेवन करो केजेना सेवनथी क्षेमर्षि मुनि देवताओने पण सेव्य (पूज्य) थया छे. "

क्षेमर्षि मुनिनु दृष्टांत

चितोड गढनी पासेना एक गाममा एक थोह नामनो निर्धन श्रावक रहेतो हतो. ते एकदा पाचमे द्राम (पाच रुपीया) नु तेल एक कुडलामा भरीने वेचवा माटे चितोडगढ तरफ चाल्यो. मार्गमा पग स्खलन थवाथी ते पडी गयो, अने कुडलु पण भांगी गयु तेथी खिन्न थइने पाछो पोताना गाममा आव्यो तेनु वृत्तात साभळवाथी लोकोने तेनापर करुणा उत्पन्न थइ, तेथी तेने पांच रुपीया उधराणु करीने आप्या तेथी फरीने तेलनु कुडलु भरीने जता तेज रीते पड्यो अने कुडलु भांगी गयु. पछी वैराग्य पामीने श्री यशोभद्र गुरु पासे जइ वैराग्यमय देशना साभळीने तेणे दीक्षा लीधी. गुरुए बे प्रकारनी शिक्षा शिखवी. अनुक्रमे ते गीतार्थ थया पछी तेणे गुरुने विज्ञप्ति करी के " हे प्रभु ! में जो वैराग्यथी दीक्षा लोधी छे, तो हुं मन, वचन, कायानी शुद्धिथी तेनी प्रतिपालना करवा इच्छु छु, तेथी जो आपनी आज्ञा होय तो जे स्थाने घणा उपद्रव थवानो सभव होय तेवा स्थाने जइने हु कायोत्सर्गे रहु. " गुरुए लाभ जोइने मालव देशमां जवानु कह्यु एटले ते सर्व गच्छने तथा सघने खमावीने मालवा देशमा गया, त्या थामणोद गामनी पासे सरोवरनी पाळ उपर कायोत्सर्ग करीने उभा रह्या. तेवामा ते गामना ब्राह्मणपुत्रो क्रीडा करवा माटे त्या आव्या. तेओए साधुने जोइने विचार्यु के " आ आपणा गाममा अरिष्ट (उपद्रव) आव्यु " एम विचारीने यष्टि मुष्टि विगेरना प्रहारथी तेमने उपद्रव करवा लाग्या मुनिए सर्व उपसर्ग सहन कर्या पण ते सरोवरना अधिष्ठायक देवताए ध्यानस्थ मुनिने निश्चल जोइने सर्व ब्राह्मणपुत्रोने मयूरबधने बांधी लीधा. तेथी ते सर्वे मुखथी रुधिर वमन करता पृथ्वीपर पड्या. तेमना मातपिताओ ते वात साभळी दु खित थइने साधु पासे आवी बोल्या के " हे भगवन् ! तमे तो कृपाळु मुनि छो, माटे आ बाळकोने बधनथी मुक्त करो." तोपण मुनिए ध्यान तज्यु नहीं त्यारेमु

ते देवता एक बाळकना शरीरमां प्रवेश करीने तेमना मातपिता प्रत्ये बोल्यो के "आ मुनिए कांइ पण कर्युं नथी, परंतु जे कर्युं छे ते मेंज कर्युं छे, तेथी जो आ मुनिना चरणोदकथी आ बाळकोने छांटशो तो तेओ बंधनमुक्त थशे, बीजी रीते थशे नहीं " ते सांभळीने तेओए तेम कर्युं, एटले ते बाळक सज्ज थया. पछी ते मातपिताओए पोतपोताने घेरथी द्रव्य लावीने साधुने भेट कर्युं, अने आ ग्रहण करो, आ ग्रहण करो ' एम बोलवा लाग्या साधुए कह्युं के " हे लोको ! मारे द्रव्यनुं कांइ पण प्रयोजन नथी, तेथी आ द्रव्य तमे जीर्णोद्धारमां वापरो " तेथी सर्व माणसोए ते मुनिनी निस्पृहता जोइने तेनुं क्षेमर्षि एवुं नाम प्रसिद्ध कर्युं. त्यां सर्व लोकोने अति भक्त थयेला जाणीने मुनि गिरिकंबल नामना पर्वतपर जइने विविध प्रकारनां तप करवा लाग्या.

ते वखते मालव देशमां धारानगरीमां सिंधुल नामे राजा राज्य करतो हतो. क्षेमर्षि मुनिए विविध प्रकारनां तप करतां पारणाने माटे एवा अभिग्रहो कर्या के ककारवाळी सात चीज जेवी के कूर, कसार, काग, कोद्रव, करंब, केर अने कपट ते मळे तो पारणुं करवुं वळी कोइ वखत पांच खकारवाळी चीज जेवी के खारेक, खुरहडी, खजुर, खाजा अने खांड वळी कोइ वखत गकारवाळी सात चीज जेवी के गहुं (घउ), गोळ, गुद, गुदवडा, गुणा, गोळ, अने गोरस. तेवीज रीते बीजा वर्णवाळी वस्तुवडे करीने पारणाना अभिग्रहो लेता हवा. ते सर्व अभिग्रहो तपना प्रभावथी पूर्ण थया. पछी "आ अभिग्रहो तो कांइ पण दुष्कर नथी " एम जाणीने उग्र अभिग्रहो लेवा माड्या ते आ प्रमाणे—" जो कोइ मिथ्यात्वी राजा राज्यथी भ्रष्ट थयेलो, मध्याह्न समये, कंदोइनी दुकाने, पलांठी वाळीने बेठेलो, राजाना पत्तिपणाने पामेलो, पोताना काळा केशने विखेरतो, तीक्ष्ण भालाना अग्र भागवडे एकवीश मांडा लइने मने आपशे त्यारे हुं पारणुं करीश अन्यथा नहीं करु " ते विषे एक कवित छे—

न्हांणठिय रावल कन्हओ, केशि गवंतड मण डुम्मणो;
मल्लइं इगवीश मण्डा देइ, तओ खिम ऋषि पारणं करेइ[1] ॥१॥

---

१ आ कवितामां न उपरनी हकीकतमां अभिग्रहमां फर छ अमा ता एम कह्युं छे के ' न्हाया बेठलो राजानो राधक केश गळ्तें (पाणी समत) दुमनवाळा मनथी भालावड एकवास मांडो आपे ता क्षेमर्षि पारणुं करे "

आ अभिग्रहमा ते मुनिए त्रण मास ने आठ दिवस अतिक्रमण कर्या अन्यदा मध्याह्नकाले कृष्ण नामनो वणिक् तेवीज रीते कंदोइनी दुकाने बेठेलो, तेणे भिक्षा माटे नीकळेला मुनिने बोलावीने कह्युं के "हे भिक्षु! अहीं आवो, तमारी आशा पूर्ण करुं" ते सांभळीने मुनि तेनी पासे गया, एटले कृष्णे भालाना अग्र भागे मांडा लइने मुनिने आपवा मांड्या मुनिए तेने ते मांडा गणवानुं कह्युं,त्यारे कृष्ण बोल्यो के "एमां शुं गणवुं छे? तमारा भाग्यमां हशे तेटला हशे." मुनिए कह्युं के "मारे एकत्रीश मांडानो अभिग्रह छे, माटे गणो" ते सांभळी कृष्णे गण्या तो एकत्रीश थया." तेथी अत्यंत आश्चर्य पामीने तेणे मुनिने कह्युं के "हे मुनि! तमे तो ज्ञानी जणाओ छो, माटे मारुं आयुष्य केटलुं छे ते कहो मने मारा पित्राइओए मारा मोटा राज्यथी भ्रष्ट कर्यो छे,तेमने जीतवा माटे अहिं सिंधुल राजानी सेवा करुं छुं." ते सांभळीने मुनि बोल्या के "तारुं आयुष्य मात्र छ मासनुं बाकीमां छे." ते सांभळीने कृष्णे तत्काळ वैराग्य उत्पन्न थवाथी दीक्षा लीधी, अने छ मास तप करीने ते कृष्णर्षि स्वर्गे गया

वळी क्षेमर्षि मुनिए त्रीजो अभिग्रह लीधो के—

खंज उम्मूलिय गयवर धाइ, मुनिवर देखी प्रसन्नो थाइ,
मोदक पंचक सुंडीहिं देइ, तओ खिम ऋषि पारणं करेइ॥३॥

"आलान स्थंभनुं उन्मूलन करीने दोडेलो हाथी मुनिवरने देखीने प्रसन्न थाय अने पोतानी सुंढवडे पांच लाडवा आपे तो क्षेमर्षि पारणुं करे."

आवो अभिग्रह लइने पांच मास ने अढार दिवस निर्गमन कर्या, त्यारे एक दिवसे कोइ मत्त थयेलो पट्टहस्ती थरोने पाडतो कंदोइनी दुकान पासे आव्यो त्यांथी सुंढवडे पांच मोदक लइ ऋषिने आपीने तेणे पारणुं कराव्युं मुनिना प्रभावथी हस्ती शांत थयो, एटले तेने महावतोए लइ जइने आलानस्तंभे बांध्यो

वळी मुनिए अभिग्रह लीधो के "सासुथी पीडा पामेली वृद्ध (मोटी) वहु रोती रोती, त्रण उपवासवाळी, काष्ठ लेवा आवेला दरिद्री माणसे घी गोळ मिश्रित, मांडा जेने आप्या छे एवी ते मांडा मने आपशे त्यारे पारणुं करीश."

रामी गोरी वज्जण रंमी, सासुसिउं कली करे पयकि,
बिहु गाम विच्चे मुखसि पोली देइ, तो खिमऋषि पारणं करेइ॥३॥

पछी मुनि पारणा माटे गिरिपरथी उतरता हता, तेवामां कोइ गाममांथी सासुवडे पीडा पामेली कोइ ब्राह्मणी पिताना घर तरफ जती हती ते मार्गथी अजाणी हती. तेथी आडे रस्ते ते वनमां आवी त्या कोइ दरिद्र पुरुष पासेथी घी गोळ मिश्र मांडा तेने मळ्या. तेवामां ते मुनिने जोइने 'आठगणु पुण्य थशे' एम विचारीने ते मुनिने तेणे माडाथी प्रतिलाभित कर्या. पछी ते दाननी प्रशसा करती ते ब्राह्मणी पिताने घेर गइ.

वळी मुनिए अभिग्रह कर्यो के "काळी खांधवाळो, नाक पुंछ विनानो [नाक त्रुटेलो ने बांडो] बळद शींगडावडे गोळ आपे तो पारणु करवुं, नहींतो न करवुं."

कालो कंबल धवलो संढ, नाकिं तुट पुछिहि वड ,
सिग करी गुड भेलो देइ, तो खिम ऋषि पारणं करेइ ॥४॥

अन्यदा मुनि पारणा माटे धारा नगरीमां गया. त्यां उपर कह्या तेवाज बळदे कोइ वणिकनी दुकानमांथी शींगडावडे गोळ लइने मुनिने पारणु कराव्युं ते चमत्कार जोइने ते वणिके विचार्यु के "अहो! आ पशु सामान्य नथी के जेणे आवा मुनिने पारणुं कराव्यु में मूर्खाए तो मनुष्यजन्म वृथा गुमाव्यो." पछी तेणे श्रावक थइने बचेलो गोळ वेची श्री पार्श्वनाथ स्वामीनु चैत्य कराव्यु, अने यशोभद्र गुरु पासे जइ चारित्र लइने स्वर्गे गयो. त्यारथी ते चैत्य गुडपिंड नामनु तीर्थ थयु.

वळी वसंत ऋतुमा मुनिए अभिग्रह कर्यो के "जो सांकळथी बांधेलो कोइ वांदर नगरमां आवीने केरीनो रस आपे तो पारणु करीश"

हासइठेहकि जइ त्रिमासी, कोटि सकल बद्धओ पासि,
जइ अंबरस मरु देइ, तओ खिम ऋषि पारण करेइ ॥५॥

अन्यदा कोइ वखत उष्ण ऋतुमां कोइ श्रेष्ठीए घृतना कुभमा आम्र रस नांख्यो हतो, ते लइने कोइ कपि नाठो रस्तामा ते मुनिने जतां जोइने तेणे ते रस मुनिने आप्यो ते जोइने 'अहो मोटु आश्चर्य' एम परस्पर बोलता घणा लोको जैन धर्मी थया

अन्यदा अवधिज्ञानवडे जोइने कृष्णर्षिदेव स्वर्गमाथी ते मुनि पासे आवी

नमस्कार करीने बोल्यो के "हे प्रभु ! शासननी उन्नतिने माटे सधील राजाना हाथीओनी रोगशांति माटे तमे तमारूं चरणोदक आपजो " एम कहीने ते अदृश्य थयो. ते वखते सधिल राजाना चौदसो हस्तीओ व्याधिग्रस्त थया हता. वैद्योए अनेक उपाय कर्या, तोपण ते निरोगी थया नहीं तेथी तेओए उपचार करवो बंध कर्यो. राजा अति शोकातुर थयो पछी मंत्रीना कहेवाथी राजाए उद्घोषणा करावी के "जे कोइ आ हस्तीओना रोगनी शांति करशे तेने राजा अर्धुं राज्य आपशे " ते वखते आकाशवाणी थइ के " गिरिकज्जल पर्वत उपर क्षेमर्षि तप करे छे. तेना पादशौचना जळथी हस्तीओ निरोगी थशे." ते सांभळीने राजसेवकोए मुनि पासे जइने पादशौचनुं जळ माग्युं एटले मुनिए कह्युं के " हे माणसो ! एक पट्टहस्ती सिवाय बीजा सर्व हस्तीओने आ जळ पावुं, एटले तेओ निरोगी थशे, अने पट्टहस्तीने जैन धर्मी सिवाय कोइ बीजाना पादोदकथी निरोगी करजो." पछी ते राजसेवकोए आवीने ते प्रमाणे बीजा सर्व हस्तीओने निरोगी कर्या. पट्टहस्तीने अन्यदर्शनीनुं पादोदक लावीने पायुं, तेथी ते पट्टहस्ती मृत्यु पाम्यो पछी राजाए मुनि पासे जइने अर्धुं राज्य ग्रहण करवा प्रार्थना करी. मुनि बोल्या के " हे राजा ! राज्य तो छेवट नरकगति आपे छे, तेथी ते मुनिओने सर्वथा त्याज्य छे मुनिने चारित्र शिवाय बीजा कोइ राज्यनो खप नथी. " ते सांभळीने राजा हर्ष पाम्यो. पछी मुनिने नमीने ते पोताने स्थाने गयो, अने एक प्रासाद करावीने तेमां सिंहासन उपर मुनिनी पादुका स्थापन करी.

अन्यदा मुनिए मार्गमां सन्मुख आवता शबने जोइने कोइ माणसने पूछयुं के 'अरे आ शुं छे ?' ते माणस बोल्यो के " धन नामना श्रेष्ठीना पुत्रने सर्प डस्यो हतो ते आज छ मासे मृत्यु पाम्यो छे. " ते सांभळीने मुनि बोल्या के " अहो ! आ जीवता माणसने केम बाळवा लइ जाओ छो ? " ते मुनिना वचनने कोइए श्रेष्ठी पासे जइने कह्युं, एटले धन श्रेष्ठी मुनि पासे आवी नमस्कार करीने बोल्यो के " हे मुनि ! मारा पुत्रने जीवितदान आपवा वडे कृपा करो." मुनिए ते शब उपर परमेष्ठि मंत्रनु स्मरण करीने प्रासुक जळ छांट्युं, तेथी ते बेठो थयो.

वळी एकदा ते मुनिए एवो अभिग्रह लीधो के "जो वनमां प्रसवेली वाघण गाममां आवीने मने बीज वडा आपे तो मारे पारणुं करवुं. "

नव प्रसुत वाघिणि विकराल, नयर मांही वीहावे बाळ,

वडां वीस जो पणमी दीये, तो खिम ऋषि पारणुं करे. ६

आ अभिग्रहने घणा दिवस व्यतीत थया पछी एकदा ऋषिना तपना प्रभावथी तरतनी प्रसवेली कोइ वाघण नगरमां पेठी, तेने जोइने वडांना वेपारीओ वडां मूकीने नाठा; एटले वाघणे तेमांथी वीश वडा लइने मुनिने आप्या.

पछी यशोभद्र गुरुने वांदवा माटे उत्सुक थयेला मुनिए अभिग्रह कर्यो के— "पाटण पहोंची गुरुने वांद्या पहेलां मारे अन्न के जळ कांइ पण लेवु नहीं" एवो अभिग्रह करीने ते मुनि पाटण आव्या अने गुरुने वंदना करी.

फरीथी मुनिए अभिग्रह लीधो के "वृद्ध स्त्रीए वश करेलो राजानो मदोन्मत्त हाथी जो खीचडी, खारेक, खडहडी, खाजा ने खांड ए पांच खकारवाळी चीज आपे तो मारे पारणु करवु." पछी एक मास गयो, त्यारे शासनदेवताए वृद्ध स्त्रीनु स्वरूप धारण करीने राजानो हस्ती वश कर्यो, अने मुनिने पारणुं कराव्यु

इत्यादि प्रकारे ते मुनिए जुदा जुदा अभिग्रहोवडे चोराशी पारणां पूर्ण कर्यां. पछी अनशन करीने ते मुनि स्वर्गे गया.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तम्भस्य
त्र्यशीत्यधिकद्विशततमः प्रबन्धः ॥ २८३॥

व्याख्यान २८४ मुं.

तपस्या करवाना हेतुओ कहे छे.

निर्दोष निर्निदानाढ्यं, तन्निर्जराप्रयोजनम्।
चित्तोत्साहेन सद्बुद्ध्या, तपनीय तप शुभम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" निर्दोष, नियाणा विनानुं, अने मात्र निर्जरानाज कारणभूत एवु शुभ तप सारी बुद्धिवडे ...पूर्वक करवु."

जेनाथी शरीर अने कर्म विगेरे तपे ते तप कहेवाय छे कह्यु छे के—

रसरुधिरमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राण्यनेन तप्यन्ते ।
कर्माणि चाशुभानीत्यतस्तपो नाम नैरुक्तम् ॥ १ ॥

भावार्थ-" रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा अने शुक्र तेमज अशुभ कर्मो तेनाथी ताप पामे छे, तेथी तेनु नाम 'तप' कहेलु छे."

ते तप निर्दोष करवो एटले आलोक तथा परलोकना सुखनी इच्छा रहित करवो. वळी ते निदान रहित करवो. कह्यु छे के—

य पालयित्वा चरण विशुद्ध, करोति भोगादि निदानमज्ञ ।
स वर्धयित्वा फलदानदक्षं, कल्पद्रुमं भस्मयतीह मूढ. ॥ १ ॥

भावार्थ-"जे अज्ञानी माणस शुद्ध चारित्रनु पालन करीने भोगाधिक प्राप्त थवानु निदान करे छे ते मूढ माणस फळ आपवामा दक्ष एवा कल्पवृक्षने वधारीने पछी भस्मसात् करे छे एम जाणवु "

निदान नव प्रकारना छे तेनु वर्णन आज ग्रथमां प्रथम कर्यु छे, तेथी अहीं फरीथी लखता नथी. वळी ते तप चित्तना उल्लासपूर्वक करवु, पण राजानी वेठनी जेम अणगमाथी करवु नहीं, अथवा जेटली शक्ति होय तेटलु करवु कह्यु छे के—

सो अ तवो कायव्वो, जेण मणो मगुलं न चिंतेइ।
जेण न इंदियहाणी, जेण जोगा न हायंति ॥ १ ॥

भावार्थ-"जे तप करवाथी मन दुष्ट (माठा विचार करनारु) न थाय, इन्द्रियोनी हानि न थाय अने योग पण न हणाय तेवु तप करवु."

वळी ते तप सारी बुद्धिथी करवु, अर्थात् पराधीन बुद्धिथी दीनपणे अन्नादिनी प्राप्तिने अभावे आहारत्याग रूप अज्ञान तप करे, तो ते आश्रवनु कारण होवाथी तथा क्रोधादिक कषायना उदयनु आश्रित होवाथी ते तप नथी, पण पूर्वे बांधेला अन्तराय कर्मना उदयथी अशाता वेदनीयनो मात्र ते विपाकज छे, केमके आहारनो त्याग करवो ते द्रव्य तप छे, अने आत्मस्वरूपनी एकाग्रता करवी ते भाव तप छे ते भाव तप तो अहर्निश होइ शके छे, परतु द्रव्य तपपूर्वक भाव तपनु ग्रहण करवु, एवुं शासननु चातुर्य तजवु नहीं. कह्यु छे के—

धनार्थिनां यथा नास्ति, शीततापादि दुःसहम्।
तथा भवविरक्तानां, तत्त्वज्ञानार्थिनामपि ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम धनना अर्थी पुरुषोने शीत तापादिक दुःसह नथी, तेम संसारथी विरक्त थयेलाने तेमज तत्त्वज्ञानना अर्थी पुरुषोने पण ते दुःसह नथी."

तपाचारना बार भेद कहेला छे. ते आ प्रमाणे—

द्वादशधास्तपाचारास्तपोवद्भिर्निरूपिता ।
अशनाद्या षट् बाह्या षट्, प्रायश्चित्तादयोऽन्तगाः ॥ १ ॥

भावार्थ-"तपस्वी परमात्माए बार प्रकारे तपाचार कहेलो छे. तेमां अशन (त्याग) विगेरे छ प्रकारनो बाह्य तप छे अने प्रायश्चित विगेरे छ प्रकारनो अंतरंग तप छे "

बाह्य तपना छ भेद सूत्रमां कह्या छे ते आ प्रमाणे—

अणसण १ मुणोअरीया २, वित्तीसंखेवणं ३ रसच्चाओ ४।
कायकिलेसो ५ संलीणयाय ६ बज्झो तवो होइ ॥ १ ॥

भावार्थ—" अनशन, उनोदरी, वृत्तिसंक्षेप, रसत्याग, कायक्लेश अने संलिनता—ए छ प्रकारनो बाह्य तप छे."

अभ्यंतर तपना छ भेद आ प्रमाणे छे—

पायच्छित्तं १ विणओ २, वेयावच्चं ३ तहेव सज्झाओ ४।
झाणं ५ उसग्गो वि अ ६, अब्भिंतरओ तवो होइ ॥ २॥

भावार्थ-" प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, तेमज स्वाध्याय, ध्यान अने कायोत्सर्ग—ए छ प्रकारनो आभ्यंतर तप छे "

आ सर्वनो काइक विस्तार आगळ युक्तिथी आचारप्रदीपादिक ग्रंथने आधारे कहेवामां आवशे

पहेलो तपाचार कहे छे.

तत्राशनं द्विधा प्रोक्तं, यावज्जीविकमित्वरम्।

द्विघटिकादिकं स्वल्पं, चोत्कृष्टं यावदात्मिकम्॥ २ ॥

भावार्थ—"यावज्जीव अने इत्वर ए बे प्रकारे अनशन तप कहेलो छे, तेमां बे-घटिका विगेरे वाळो ते स्वल्प अनशन तप छे, अने जावजीव पर्यन्तनो ते उत्कृष्ट अनशन तप छे."

इत्वर एटले नमस्कार (नवकार)सहित बे घडीनु पच्चख्खाण करवु ते तेनाथी नानु पच्चख्खाण शास्त्रमां कहेलु नथी. त्यारपछी वधता वधता उत्कृष्ट तप थाय छे श्री वीरस्वामीना तीर्थमां ७ मास पर्यंत, श्री ऋषभदेवना तीर्थमां बार मास पर्यंत अने बीजाथी त्रेवीशमा तीर्थंकरना समयमां आठ मास सुधीनो उत्कृष्ट अनशन तप कहेलो छे अहीं इंद्रियजय तप, कषायजय तप, रत्नत्रयी तप, समवसरण तप, अशोकवृक्ष तप, जिनकल्याणक तप, इत्यादि तपना अनेक भेद छे, ते आचार दिनकर ग्रंथना बीजा खंडथी जाणी लेवा तथा आचाम्ल वर्धमान तप चौद वर्ष त्रण मास अने वीश दिवसे पूर्ण थाय छे ते श्रीचंद्रकेवळीनी जेम करवो इत्यादि विविध प्रकारना तपनो इत्वर काळना भेदमां समावेश थाय छे.

जावजीव अनशन तप पादपोपगम, इंगिनी अने भक्तपरिज्ञा, एम त्रण प्रकारनो छे. ते त्रणेनु स्वरूप सत्तर प्रकारना मृत्युनु स्वरूप जाण्या विना सुखेथी समजी शकाय तेवु नथी, माटे प्रथम सत्तर प्रकारना मरणनु स्वरूप कहे छे -'आवीचिमरणं' वीचि एटले विच्छेद (अंतर) तेनो अभाव ते अवीचि अर्थात् नारकी, तिर्यंच, मनुष्य अने देवतानी गतिमां उत्पत्ति समयथी आरंभीने पोतपोताना आयुकर्मना दळिया प्रतिसमय वेदीने घटाडवा, तेवा प्रकारना मरणने आवीचि मरण कहेलु छे. (१) "अवधिमरण" अवधि एटले मर्यादा, नारकादिक भव संबंधी आयुकर्मना दळियानो अनुभव करीने मरे, अने मरण पाम्या पछी पाछो फरीने ज्यारे तेज दळियानो अनुभव करीने मरे, त्यारे ते द्रव्यथी अवधिमरण कहेवाय छे, केमके परिणामनी विचित्रता छे, तेथी ग्रहण करीने त्याग करेला कर्मदळियानु पण फरीथी ग्रहण संभव छे ए प्रमाणे क्षेत्रादिकमां पण भावना करवी (२) 'अतिक्रमरण' अतिक्र एटले छेल्लु थयेलु, अर्थात् नारकादिक गतिना आयुकर्मना दळियाने अनुभवीने मरण पामे, अने मरण पाम्या पछी फरीथी कोइ पण वखते ते दळियाने अनुभवीने मरेज नहीं ते द्रव्यथी अतिक्रमरण कहेवाय छे, ए प्रमाणे क्षेत्रादिकथी पण जाणवु (३)

'वलन्मरणं' वलत् एटले चारित्रथकी पाछा वळता मरण थाय ते अर्थात् मुनि संबंधी दुष्कर तप तथा चारित्रनुं सेवन करवु, अथवा ग्रहण करेलु चारित्र मूकी देवु, ते बन्नेमां असमर्थ थइने "हवे तो आमाथी जल्दी छुटाय तो ठीक" एम विचारतां जे मरण थाय ते वलन्मरण कहेवाय छे आ मरण व्रतना परिणामथी भ्रष्ट थयेला मुनिओनेज संभवे छे (४) 'वशार्तमरण' वशार्त एटले इंद्रियोना विषयने आधीन थवाथी पीडाता, दीवानी शिखा जोइने आकुळव्याकुळ थयेला पतंगनी जेम आकुळव्याकुळ थइने मरण पामे ते वशार्तमरण कहेवाय छे (५) 'अन्तःशल्यमरण' लज्जादिकना कारणथी, थइ गयेला दुराचरणनी आलोचना न करवी ते अन्तःशल्य कहेवाय छे तेवा शल्यवाळानु जे मरण ते अन्तःशल्य मरण कहेवाय छे. आ मरण अति दुष्ट छे (६). 'तद्भवमरण' हाल जे भवमां प्राणी वर्ते छे, ते ने तेज भवने योग्य एवु आयुष्य बांधीने ते भवनु आयुष्य क्षय करीने मरे ते तद्भव मरण कहेवाय छे. आ मरण सख्याता वर्षना आयुष्यवाळा मनुष्य अने तिर्यचनेज होय छे, पण असंख्याता वर्षना आयुष्यवाळा मनुष्य अने तिर्यचने (जुगलियाने) तेमज देव तथा नारकीने फरीने अनंतर तद्भवनो अभाव होवाथी आ मरण होतु नथी (७); 'बालमरण' बाल एटले मिथ्यादृष्टिनु अथवा अविरत सम्यग्दृष्टिनु जे मरण ते बाळमरण कहेवाय छे (८) 'पंडितमरण' सर्वविरति पामेलानु जे मरण ते पंडितमरण कहेवाय छे (९). 'मिश्रमरण' बालपंडित एवा देशविरति श्रावकनुं जे मरण ते मिश्रमरण कहेवाय छे (१०) 'छद्मस्थमरण' मति, श्रुत, अवधि, अने मनःपर्याय ए चार ज्ञानवाळा मुनिनुं जे मरण ते छद्मस्थमरण कहेवाय छे (११) 'केवलिमरण' जेमणे समग्र भवप्रपंचनो अपुनर्भवपणे नाश कर्यो छे एवा केवळीनुं मरण ते केवलिमरण कहेवाय छे (१२) 'वैहायसमरण' आकाशमां थयेलुं जे मरण ते वैहायसमरण कहेवाय छे, अर्थात् उंचा वृक्षनी शाखादिके पोताना शरीरने बांधीने गळाफांसो खावावडे, पर्वतथी पडतु मूकीने, कुवामां पडतु मूकीने, अथवा शस्त्रादिकना घाते करीने जे मरण पामवु ते वैहायसमरण कहेवाय छे (१३). 'गृध्रस्पृष्टमरण' गृध्र एटले गीध अने उपलक्षणथी समळी, शियाळ विगेरेए जेमां स्पर्श करेलो छे एवु जे मरण ते गृध्रस्पृष्टमरण कहेवाय छे आ मरण हस्ती विगेरेना शबमां पेसीने गृध्रादिकवडे जेनु भक्षण कराय तेनेज संभवे छे (१४) 'भक्तपरिज्ञामरण' भक्त एटले भोजन अने उपलक्षणथी पानादिक जाणवा, एटले के "आ अशनपानादि में घणीवार वापर्यां

छे, ते अवश्य जे पाप तेनाज हेतुभूत छे, तेथी तेनो त्याग करवो जोइए." एम ज्ञपरिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे (भक्त पानादिकनो) त्याग करीने जे मरण पामवु ते भक्तपरिज्ञामरण कहेवाय छे (१५) 'इंगिनीमरणं' नियमित करेला प्रदेशमाज चेष्टा करता जे मरण पामवु ते इंगिनीमरण कहेवाय छे आ मरण चतुर्विध आहारनु प्रत्याख्यान करीने नियमित प्रदेशमाज पोतानी मेळे उद्वर्तनादिक करता एवा मुनिने होय छे (१६) 'पादपोपगममरणं' पादप एटले वृक्ष, उप एटले सदृशपणु अने गम एटले पामवु, अर्थात् जेम पडेलु वृक्ष सम विषम स्थाननो विचार कर्या विना ज्यां जेम पडयु होय छे तेमज निश्चळ रहे छे, अने बीजाना कराव्याथीज मात्र कंपे छे, तेम आ प्रकारना अनशनने अंगीकार करेला पूज्य मुनि पण पोतानु निर्निमेष अंग प्रथमथीज सम अथवा विषम, जेवा स्थानमां पडयु होय तेमनु तेमज रहेवा दे, पोते किंचित् पण हलावे नहीं, तेवा प्रकारे जे मरण पामे ते पादपोपगम मरण कहेवाय छे (१७).

जोके आ छेल्ला त्रण मरणनु फळ वैमानिकपणु अथवा मुक्ति ए बे प्रकारनु त्रणेमां सरखु छे, तोपण विशिष्ट, विशिष्टतर अने विशिष्टतम धैर्यवाळाने ते उत्तरोत्तर संभवे छे, तेवो विशेष मात्र होवाथी पहेलु मरण कनीयस (नानु), बीजु मध्यम अने त्रीजुं ज्येष्ठ कहेवाय छे साध्वीओने ते त्रण मरण पैकी पहेलु एकज मरण होय छे. कह्यु छे के—

सव्वा वि अ अज्जाओ, सव्वे वि य पढमसंघयणवज्जा ।
सव्वे वि देसविरया, पच्चक्खाणेणओ मरंति ॥ १ ॥

भावार्थ—"सर्वे साध्वीओ, सर्वे प्रथम संहनन विनाना जीवो, अने सर्वे देशविरतिवाळा जीवो प्रत्याख्याने करीनेज मरण पामे छे"

अहीं प्रत्याख्यान शब्दे करीने भक्त परिज्ञाज जाणवी. इंगिनी नामनुं अनशन अति विशिष्ट धैर्यवाळानेज होय छे, एम साध्वीना निषेधथी निश्चय थाय छे, अने पादपोपगम तो वय परिपक्व थाय त्यारे देवगुरुने नमस्कार करीने तेमनी पासे अनशन ग्रहण करीने, पर्वतनी गुफा विगेरे त्रसस्थावर जंतु रहित स्थंडिले, वृक्षनी जेम निश्चळ* करवाना पण चेष्टा रहित थइने, प्रथम संहननवाळाने, कोइपण

* ओसनु मटकु मारवु ते

प्रकारनी शरीरनी संभाळ विना, जेवा तेवा संस्थानवडे स्थित थइने प्रशस्त ध्यान करतां प्राणांत सुधी निश्चळ रहेवु ते कहेवाय छे. ते विषे कह्यु छे के—

पढमंमि अ संघयणे, वट्टंतो सेलकुट्टसमाणो ।
तेसिं पि अ वुच्छेओ, चउदसपुव्वीण वुच्छेए ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे प्रथम सहननमा वर्तता होय, अने जे पर्वतना शिखरनी जेवा निश्चळ होय तेमने पादपोपगम अनशन होय छे. तेनो पण चौद पूर्वीनो उच्छेद थाय त्यारे विच्छेद थाय छे. "

आ त्रणे प्रकारना अनशन निर्व्याघातपणामां संलेखनापूर्वकज करवामां आवे छे, नहीं तो आर्त्तध्याननो संभव थाय. पण व्याधि, वीजळी, पर्वत, भींत विगेरेनुं पडवुं अथवा सर्पादिकनु करडवु विगेरे व्याघात प्राप्त थयेल होय त्यारे तो संलेखना विना पण ते अनशन लइ शकाय छे.

आ इत्वर अने यावज्जीव ए बन्ने प्रकारनो अनशन तप समग्र कर्मनो क्षय करनार छे ते उपर दृष्टांत कहे छे—

अनशन तप उपर धन्य मुनिनु दृष्टांत

काकंदीपुरीमां धना नामे एक सार्थवाह रहेतो हतो. तेने धन्य नामे पुत्र हतो ते भोगने समर्थ एवी युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे तेनी माता भद्राए बत्रीश प्रासाद करावीने बत्रीश श्रेष्ठीनी कन्याओ साथे एकज दिवसे तेने परणाव्यो. धन्य ते स्त्रीओ साथे दोगंदुकदेवनी जेम सुख भोगववा लाग्यो ते स्त्रीओ साथे भोग भोगवतां तेणे कटलाक वर्षो व्यतीत कर्यां. एकदा चोवीश अतिशयोथी विराजमान श्री महावीर स्वामी ते पुरीमा समवसर्या, ते वखते धन्य पण भगवानना दर्शनमां उत्कंठित थइने पगे चालतो प्रभु समीपे गयो, अने विश्वबंधु प्रभुने वांदीने तेमनी पासे भवना क्लेशने नाश करनारी देशना सांभळी. त्रिकाळज्ञानी प्रभुनी देशना मनमां विचारतां धन्य वैराग्य पाम्यो, एटले तेणे तेनी माता पासे जइने कह्यु के " हे माता ! भगवाननी देशना सांभळीने मने विषयोमा उद्वेग थयो छे, माटे तमारी आज्ञाथी हुं दीक्षा ग्रहण करीश." ते सांभळीने माताए मुनिना व्रत पालन करवामा अनुकूळ प्रतिकूळ उपसर्गो सहन करवा तथा रस विनाना निरस आहार करवा इत्यादि अनेक प्रकारनां अति दुःख छे एम जणाव्यु, तोपण ते धन्ये पुरीषनी जेम विषयभोगनी इ-

च्छा करी नहीं, त्यारे भद्राए खुशीथी तेनो निष्क्रमणोत्सव कर्यो भगवाने पोतेज तेने दीक्षा आपी, तेज दिवसे धन्यमुनिए स्वामी पासे अभिग्रह कर्यो के " हे भगवन्! आपनी आज्ञाथी हु निरतर छठ्ठ तप करीश, अने पारणे गृहस्थे तजी दीधेली भिक्षाथी आंबिल करीश." भगवान बोल्या के " हे धन्य! जेम सुख उपजे तेम तपधर्ममा प्रवृत्ति कर " एवी जिनेश्वरनी आज्ञाथी हृष्टतुष्ट थइने धन्य मुनि तपस्यामां प्रवर्त्या.

पहेला छट्ठना पारणाने दिवसे पहेली पोरसीमा तेमणे स्वाध्याय करी, बीजी पोरसीमा ध्यान कर्युं, अने त्रीजी पोरसीमा जिनेश्वरनी आज्ञा लइने भिक्षा माटे अटन करी आंबिलने माटे अन्न ग्रहण कर्युं, बीजी काइ इच्छा करी नहीं तेज प्रमाणे दरेक पारणाने दिवसे भिक्षाटन करता कोइ वखत अन्न मळे, कोइ वखत मात्र जळ मळे, तोपण ते खेद करता नहीं जो कोइ पण दिवसे भिक्षा मळे तो ते प्रभुने बतावता, अने पछी प्रभुनी आज्ञाथी मात्र देहने धारण करवा माटेज आहार करता ए प्रमाणे तप करता ते मुनिनु शरीर अति कृश थइ गयु मांस रहित अने मात्र सुका हाडकाथी भरेलु तेमनु शरीर कोयलाना गाडानी जेम रस्तामां चालती वखते ' खड खड ' शब्द करतु हतु

एकदा विहार करता भगवान राजगृही नगरीना गुणशील वनमा समवसर्या. तेमने वादवा माटे श्रेणिक राजा त्या आव्या स्वामीने वांदीने देशना सांभळी. पछी तमणे पूछयु के " हे भगवन्! आ सघळा मुनिओमा कया मुनि दुष्करकारक छे ? " प्रभु बोल्या क " आ गोतम विगेरे चौद हजार मुनिओमा धन्यमुनि मोटी निर्जरा करनार महा दुष्करकारक छे. ते भद्रापुत्र निरतर छठ्ठ तप करीने आंबिलथी पारणु कर छे. " इत्यादि सर्व वृत्तात सांभळीने श्रेणिक राजा हर्ष पामी धन्यऋषि पासे गया, अने ते मुनिने नमीने तेमणे कह्यु क " हे ऋषि! तमने धन्य छे, तमे कृतपुण्य छो " इत्यादि स्तुति करीने राजा पोताना नगरमां गया.

एकदा धन्यऋषि रात्रे धर्मजागरिकाए जागता एम विचार करवा लाग्या के " तपस्याथी शुष्कदेह थयेलो हु प्रभाते स्वामीनी आज्ञा लइ विपुलगिरिपर जइने एक मासनी सलेखनावडे शरीरनु शोषण करी जिवित तथा मरणमा समभाव राखतो सतो विचरीश. " पछी तेणे तेज प्रमाणे कर्यु माते शुभ ध्यानवडे काळ करीने सर्वार्थसिद्ध नामना महा विमानमां ते देवपणे उत्पन्न थया.

पछी गौतम गणधरे भगवानने पूछयुं के हे " भगवंत ! आपना शिष्य धन्य मुनि कइ गतिमां गया ?" भगवन् बोल्या के " हे गौतम ! अहींथी काळधर्म पामीने धन्य मुनि सर्वार्थसिद्ध विमानमां उत्पन्न थया छे, त्यां तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति भोगवीने महाविदेह क्षेत्रमां उंच कुळने विषे उत्पन्न थशे, त्यां दीक्षा लइ केवळज्ञान पामीने मोक्षे जशे."

"आ प्रमाणे धन्यऋषिए समतापूर्वक पापकर्मनी निर्जरा करवा माटे बने प्रकारना अनशन तपनु सेवन कर्यु, तेमज जे क्षणे दीक्षा लीधी तेज क्षणे पौद्गलिक सुखनी तमाम आशाओ तजी दीधी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तम्भस्य चतुरशीत्यधिकद्विशततमः प्रबधः ॥ २८४ ॥

व्याख्यान २८५ मुं.

उनोदरि नामना बीजा तपाचार विषे.

उनोदरितपोद्रव्यभावभेदात्मकं परैः ॥
विशिष्यज्ञायमानत्वात्महत्फलं निरन्तरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"उनोदरि तप द्रव्यथी अने भावथी एम बे प्रकारनुं छे. तेनुं विशेषपणु जाणवाथी ते निरंतर महत्फळने आपनारु छे "

आ अर्थनुं समर्थन करवा माटे आ प्रमाणे भावना करवी के ' हमेशां आहार करतां छतां पण साधु श्रावक विगेरेने उनोदरि तपथी मोटु फळ प्राप्त थाय छे.' तेमां उपकरण तथा भक्तपानादिक संबंधी उनोदरि ते द्रव्यथी उनोदरि जाणवु, अने क्रोधादिकनो जे त्याग करवो ते भावथी उनोदरि जाणवु. " साधु श्रावक विगेरेए कदाचित् पण यथेच्छपणे कंठ सुधी ठांसीने छारैया ओडकार आवे तेटलुं तो शुंज नहीं." नव प्रकारनी पुं... पण एवो निषेध करेलो छे. जो के

छठ, अट्ठम, मासक्षपण विगेरे अनेक प्रकारना तपमा द्रव्यथी तो अशनादिकनो निषेध कर्यो छे, पण ते तप करनारे भावथी क्रोधादिकना त्यागरूप उनोदरि अवश्य करवु जोइए नहीं तो ते उपवासादिक केवळ लांघणरूपज गणाय. कह्युं छे के—

कषायविषयाहार-त्यागो यत्र विधीयते ।
उपवासः स विज्ञेयः, शेषं लंघनकं विदुः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे उपवासादिकमां कषाय, विषय अने आहारनो त्याग करवामां आवे तेनेज उपवास जाणवो, ते शिवाय बीजाने लांघण कहेली छे."

द्रव्यथी उनोदरि तपनो विधि आ प्रमाणे छे—एक कवळथी आरभीने आठ कवळ सुधी खावु, ते पूर्ण उनोदरि कहेवाय छे तेमा एक कवळनु मान जघन्य, आठ कवळनु मान उत्कृष्ट अने बेथी सात कवळनु मान मध्यम छे (१). नव कवळथी आरभीने बार कवळ सुधी खावु ते अपार्ध उनोदरि कहेवाय छे (२). तेर कवळथी आरभीने सोळ कवळ सुधी विभाग उनोदरि कहेवाय छे (३). सत्तरथी आरभीने चोवीश कवळ सुधी प्राप्त उनोदरि कहेवाय छे (४). अने पचीशथी आरभीने एकत्रीश कवळ सुधी किंचित् उनोदरि कहेवाय छे (५). अहीं सर्वत्र जघन्य विगेरे त्रण भेद पहेला पूर्ण उनोदरिनी जेम जाणवा. आज प्रमाणे जळ संबंधी पण उनोदरिनी भावना करवी.

अहीं कवळनु मान आ प्रमाणे कह्यु छे—

बत्तीसं कीर कवला, आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।
पुरिसस्स महिलियाए, अट्ठावीसं भवे कवला ॥ १ ॥
कवलस्स य परिमाणं, कुक्कुडिअंडगपमाणमित्तं तु ।
जं वा अविगयवयणो, वयणंमि छुभिज्ज विसंतो ॥ २ ॥

भावार्थ—"पुरुषोने कुक्षि पूर्ण थाय तेटलो आहार बत्रीश कवळ प्रमाण कहेलो छे, अने स्त्रीओने अठावीश कवळ प्रमाण कहेलो छे (१). कवळनु मान कुकडीना इंडा जेवडु जाणवु, अथवा सहेजे मुख फाडीने क्षुधित मनुष्य मोढामां कोळीओ मूकी शके तेवडु जाणवु."

वळी छट्ठ अट्ठम विगेरे विशेष तपना पारणाने दिवसे पण उनोदरि करवाथीज विशेष लब्धिओ प्राप्त थाय छे. जेम नख सुधीनी एक मुठी जेटला अडद तथा एक चळु जळ नित्य छट्ठने पारणे लेवाथी छ मासे तेजोलेश्या उत्पन्न थाय छे एम पांचमा अंगमा कहेलु छे ते प्रमाणे श्रीमहावीरस्वामीना मुखथी सांभळीने मंखलीपुत्रे तेम करवाथी तेने ते लब्धि उत्पन्न थइ हती. आ प्रमाणे उनोदरि तप आहार तथा अनाहारने दिवसे द्रव्यथी अने भावथी निरतर सेववु.

हवे वृत्तिसंक्षेप नामनो त्रीजो तपाचार कहे छे

वर्तते ह्यनया वृत्ति–र्भिक्षाशनजलादिका ।
तस्याः संक्षेपणं कार्यं, द्रव्याद्यभिग्रहांचितैः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेनाथी जीववु रहेवाय ते वृत्ति कहेवाय छे तेमां भिक्षाथी मळतां अशन जळ विगेरेनो समावेश थाय छे, ते वृत्तिनो द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी अभिग्रह लेवावडे संक्षेप करवो, ते वृत्तिसंक्षेप तप कहेवाय छे"

द्रव्यादिक अभिग्रह आ प्रमाणे समजवा—मुनि गोचरी जवी वखते चार प्रकारना अभिग्रह करे, तेमा द्रव्यथी एवो अभिग्रह करे के आजे मारे पात्रमा लेप न लागे तेवी निर्लेप भिक्षा ग्रहण करवी, अथवा भालाना अग्र भागवडे आपेल एक मांडो के मोदक विगेरे लेवु इत्यादि ते उपर क्षेमर्षि विगेरे मुनिनां दृष्टांत जाणवां (१). क्षेत्रथी एवो अभिग्रह करे के एक घरथी अथवा बे घरथी अथवा पोताना गाममांथीज जे मळे ते लेवुं, अथवा घरनी डेलीमां बे पग वच्चे उंबरो राखीने बेठेलो भिक्षा आपे तो लेवी इत्यादि (२). काळथी एवो अभिग्रह करे के दिवसना पहेला भागमा अथवा सर्व भिक्षुक भिक्षा लइने निवर्ती गया पछी हु आहार लेवा नीकळीश अने पर्यटन करीश इत्यादि (३) भावथी एवो अभिग्रह करे के कोइ हसतां, गाता के रोता आहार आपे तो लेवो, अथवा कोइ वस्त्रादिवडे बधायेलो भिक्षा आपे तो लेवी, नही तो न लेवी इत्यादि (४). आ रीते साधु हमेशा अभिग्रह न करे तो तेने प्रायश्चित्त लागे छे. श्रावको पण सचित्तादिकनो अभिग्रह करे छे

आ तप छट्ठ, अट्ठम विगेरे तप करतां अति दुःसाध्य छे, अने अधिक फळदायी छे केमके छट्ठ, अट्ठम विगेरे नियत तप छे, एटले के प्रत्याख्यान काळ पूर्ण थतां आहार थइ शके छ, अने आ तो क्यारे द्रव्यादिक अभिग्रह पूर्ण थशे ? ते

छठ्ठ, अट्ठम, मासक्षपण विगेर अनेक प्रकारना तपमां द्रव्यथी तो अशनादिकनो निषेध कर्यो छे, पण ते तप करनारे भावथी क्रोधादिकना त्यागरूप उनोदरि अवश्य करवुं जोइए नहीं तो ते उपवासादिक केवळ लांघणरूपज गणाय. कह्युं छे के—

कषायविषयाहार–त्यागो यत्र विधीयते ।
उपवास स विज्ञेय, शेष लघनक विदु ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे उपवासादिकमां कषाय, विषय अने आहारनो त्याग करवामां आवे तेनेज उपवास जाणवो, ते शिवाय बीजाने लांघण कहेली छे."

द्रव्यथी उनोदरि तपनो विधि आ प्रमाणे छे—एक कवळथी आरंभीने आठ कवळ सुधी खावु, ते पूर्ण उनोदरि कहेवाय छे तेमां एक कवळनु मान जघन्य, आठ कवळनु मान उत्कृष्ट अने बेथी सात कवळनु मान मध्यम छे (१). नव कवळथी आरंभीने बार कवळ सुधी खावु ते अपार्ध उनोदरि कहेवाय छे (२). तेर कवळथी आरंभीने सोळ कवळ सुधी विभाग उनोदरि कहेवाय छे (३). सत्तरथी आरंभीने चोवीश कवळ सुधी प्राप्त उनोदरि कहेवाय छे (४). अने पचीशथी आरंभीने एकत्रीश कवळ सुधी किंचित् उनोदरि कहेवाय छे (५). अहीं सर्वत्र जघन्य विगेरे त्रण भेद पहेला पूर्ण उनोदरिनी जेम जाणवा. आज प्रमाणे जळ संबंधी पण उनोदरिनी भावना करवी.

अहीं कवळनु मान आ प्रमाणे कह्यु छे—

बत्तीस कीर कवला, आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ ।
पुरिसस्स महिलियाए, अट्ठावीसं भवे कवला ॥ १ ॥
कवलस्स य परिमाणं, कुक्कुडिअंडगपमाणमित्तं तु ।
ज वा अविगिअवयणो, वयणंमि तुभिज्ज विसंतो ॥ २ ॥

भावार्थ–"पुरुषोने कुक्षि पूर्ण थाय तेटलो आहार बत्रीश कवळ प्रमाण कहेलो छे, अने स्त्रीओने अठावीश कवळ प्रमाण कहेलो छे (१) कवळनु मान कुकडीना इंडा जेवडु जाणवु, अथवा सहजे मुख फाडीने क्षुधित मनुष्य मोढामां कोळीओ मूकी शके तेवडु जाणवु."

वळी छट्ठ अट्ठम विगेरे विशेष तपना पारणाने दिवसे पण उनोदरि करवाथीज विशेष लब्धिओ प्राप्त थाय छे. जेम नख मुठीनी एक मुठी जेटला अडद तथा एक चळु जळ नित्य छट्ठने पारणे लेवाथी छ मासे तेजोलेश्या उत्पन्न थाय छे एम पांचमा अंगमा कहेलु छे ते प्रमाणे श्रीमहावीरस्वामीना मुखथी सांभळीने मखलीपुत्रे तेम करवाथी तेने ते लब्धि उत्पन्न थइ हती. आ प्रमाणे उनोदरि तप आहार तथा अनाहारने दिवसे द्रव्यथी अने भावथी निरंतर सेववु.

हवे वृत्तिसंक्षेप नामनो त्रीजो तपाचार कहे छे.

वर्तते ह्यनया वृत्ति-र्भिक्षाशनजलादिका।
तस्या संक्षेपणं कार्यं, द्रव्याद्यभिग्रहांचितैः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेनाथी जीववु रहेवाय ते वृत्ति कहेवाय छे तेमां भिक्षाथी मळता अशन जळ विगेरेनो समावेश थाय छे, ते वृत्तिनो द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी अभिग्रह लेवावडे संक्षेप करवो, ते वृत्तिसंक्षेप तप कहेवाय छे."

द्रव्यादिक अभिग्रह आ प्रमाणे समजवा—मुनि गोचरी जती वखते चार प्रकारना अभिग्रह करे, तेमा द्रव्यथी एवो अभिग्रह करे के आजे मारे पात्रमां लेप न लागे तेवी निर्लेप भिक्षा ग्रहण करवी, अथवा भालाना अग्र भागवडे आपेल एक मांडो के मोदक विगेरे लेवुं इत्यादि ते उपर क्षेमर्षि विगेरे मुनिनां दृष्टान्त जाणवां (१). क्षेत्रथी एवो अभिग्रह करे के एक घरथी अथवा बे घरथी अथवा पोताना गाममाथीज जे मळे ते लेवु, अथवा घरनी डेलीमा बे पग वच्चे उंबरो राखीने बेठेलो भिक्षा आपे तो लेवी इत्यादि (२). काळथी एवो अभिग्रह करे के दिवसना पहेला भागमां अथवा सर्व भिक्षुक भिक्षा लइने निवर्ती गया पछी हुं आहार लेवा नीकळीश अने पर्यटन करीश इत्यादि (३). भावथी एवो अभिग्रह करे के कोइ हसतां, गाता के रोता आहार आपे तो लेवो, अथवा कोइ बंधनादिवडे बंधायेलो भिक्षा आपे तो लेवी, नहीं तो न लेवी इत्यादि (४). आ रीते साधु हमेशा अभिग्रह न करे तो तेने प्रायश्चित्त लागे छे. श्रावको पण सचित्तादिकनो अभिग्रह करे छे

आ तप छट्ठ, अट्ठम विगेरे तप करतां अति दुःसाध्य छे, अने अधिक फळदायी छे केमके छट्ठ, अट्ठम विगेरे नियत तप छे, एटले के प्रत्याख्यान काळ पूर्ण थतां आहार थइ शके छे, अने आ तो क्यारे द्रव्यादिक अभिग्रह पूर्ण थशे ?

कोइ जाणतुं नथी. माटे आ तप अनियत छे. वळी भिक्षाटन करतो वखते मनमां एवु ध्यान करवु के मननी धारणा प्रमाणे अभिग्रह पूर्ण थाओ के न थाओ, एवी बुद्धिथी अटन करवु, पण आहार ग्रहण करवामा अति मांति राखवी नहीं. आ तप उपर श्री महावीरस्वामी, ढढण मुनि, दृढप्रहारी, शालिभद्र, पांडव विगेरेनां दृष्टांतो छे भीमसेने पण दीक्षा लीधा पछी "भालाने अग्र भागे आपली भिक्षाज हु ग्रहण करीश, बीजी ग्रहण नहीं करु" एवो अभिग्रह लीधो हतो ते पुण्यशालीने ते अभिग्रह पण छ मासे पूर्ण थयो हतो धैर्यवानने काइ पण दुर्लभ नथी. आ विषय उपर दृढप्रहारीनु दृष्टांत कहे छे—

दृढप्रहारीनु दृष्टांत

श्री वसंतपुरमां एक साते व्यसनवाळो दुर्धर ब्राह्मण रहतो हतो. तेणे पोतानुं सर्व धन विषयादिकमा गुमावी दीधु. पछी ते चोरी करवा लाग्यो.लोकोए तेने घणी शिखामण आपी, पण ते पापकर्मथी पाछो ओसर्यो नहीं, एटले राजाए तेने गाम बहार काढी मूक्यो, तेथी ते चोरनी पल्लीमा गयो त्या पल्लीपतिने पुत्र नहीं होवाथी तेणे तेने पुत्र तरीके राख्यो. ते ब्राह्मण जेने प्रहार करतो ते अवश्य मरी जतो. एवो बळवान् होवाथी लोकमा तेनु दृढप्रहारी एवु नाम प्रसिद्ध थयु.

ते एकदा लुटाराना सैन्य सहित कुशस्थळ नामना गामने लुटवा माटे गयो. ते गाममा कोइ एक दरिद्री ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने घणा छोकरा हतां, तेओए एकवखत ते ब्राह्मण पासे खीर खावा मागी, त्यारे ते ब्राह्मण कोइ गृहस्थने घेरथी चोखा दूध विगेरे मागी लाव्यो, अने ते स्त्रीने आपी तेनी खीर करावी. पछी" आजे उत्सवनो दिवस छे,कारण के आजे खीर खाशु"एम विचारीने ते मध्याह्न वखते स्नान करवा माटे गाम बहार नदीए गयो,तेवामा पेला लुटाराओ गाममा पेठा तेमाना केटलाएक चोरो तेज ब्राह्मणना घरमा पेठा,पण कांइ हाथ लाग्यु नहीं शोध करता खुणामा पडेलुं खीरनु वासण दीठु, ते तेमणे लइ लीधु, एटले छोकराओ उचे स्वरे रुदन करतां तेमनी पाछळ दोड्या.तेवामा पेलो ब्राह्मण स्नान करीने आव्यो.ते सर्व स्वरूप जोइने कोपायमान थयो, एटले घरनी अर्गला लइने ते राक्षसनी जेम चोरोनी पाछळ दोड्यो तेना प्रहारथी तेणे केटलाक चोरोने मारी नाख्या. ते वातनी खबर पडता दृढप्रहारी तरतज त्या आव्यो,अने पोताना चोरोने आ मारी नाखेछे एम जाणी क्रोधथी तेणे खड्गवडे तेनु मस्तक कापी नाख्यु पछी ब्राह्मणना घरमा पेसतां गाये तेने

रोक्यो, एटले गायने पण मारी नाखी, ते जोइने ते ब्राह्मणनी स्त्री पोकार करती सती तेने गाळो देवा लागी के "अरे क्रूर ! पापी ! शु करे छे ?" तेनी गाळोथी अत्यत कोपायमान थइने दृढप्रहारीए तेज खड्गथी तेनु पेट चीरी नाख्यु, तेथी तेना गर्भमां रहेलु बाळक पण तरफडतु बे ककडा थइने पृथ्वीपर पड्युं

आ प्रमाणे ब्राह्मण, गाय, स्त्री तथा बाळक, चारेने पोते तत्काळ मारी नाखेलां जोइने तथा "हे पिता ! हे माता !" एम बोलतां छोकरांओने जोइने दृढप्रहारी विचार करवा लाग्यो के "आ प्रमाणेनु दुष्कर्म करनारा एवा मने धिक्कार छे ! आवां पापथी मने नरकमां पण स्थान मळवानु नथी हवे आ बाळकोनु कोण रक्षण करशे ? हवे हुं अग्निमां पेसु के भृगुपात करु ? शाथी मारी शुद्धि थाय ? अहो ! हुं सदाचारनो त्याग करीने दुष्कर्मरूपी पाथेयवाळो पांथ थयो छु." ए रीते महा वैराग्यथी शुभ ध्यान करतो ते गाम बहार नीकळ्यो. गामनो बहार उद्यानमां कोइ महा मुनिने जोइ तेमने नमीने ते बोल्यो के "हे भगवन् ! आवा पापथी हु शो रीते मुकाइश ?" मुनि बोल्या के "चारित्र ग्रहण कर." कह्यु छे के—

इगदिवसं पि जीवो, पव्वज्जमुवागओ अणन्नमणो ।
जइवि न पावए मुक्ख, अवस्स वेमाणिओ होइ ॥ १ ॥

भावार्थ—"जो कोइ जीव शुद्ध मनथी एक दिवस पण प्रव्रज्या अंगीकार करे तो ते कदि मुक्ति न पामे, पण वैमानिक तो अवश्य थाय छे"

आ प्रमाणे ते दृढप्रहारीए मुनि पासेथी पापनो प्रतीकार सांभळीने तरतज दीक्षा लीधी. पछी तेणे एक मोटो अभिग्रह लीधो के "आक्रोश परिषहने सहन करवा माटे मारे आ गाममांज रहेवु, अने ज्या सुधी मारा पापनु बीजाओ स्मरण करे त्या सुधी मारे आहार लेवो नहीं." एवो दृढ अभिग्रह लइने ते दृढप्रहारी मुनि तेज गाममां कर्मनो क्षय करवा माटे विचरवा लाग्या. लोको तेने जोइने आक्रोश करवा लाग्या के "आ पापात्मा स्त्री, ब्राह्मण, गाय अने बाळ ए चार हत्या करनारो छे, तथा गामने लुटनारो छे." एम बोलीने तेओ ते मुनिनी तर्जना करवा लाग्या, अने लाकडी तथा पाषाणादिकथी तेने निरतर मारवा लाग्या. ते सर्व मुनिए पृथ्वीनी जेम सहन कर्युं, अने अत्यंत शांतरस धारण करी पोतानु पाप संभारीने भोजन लीधुं नहीं. ए प्रमाणे छ मास व्यतीत थया त्यारे समतारूपी सूर्यनो उदय थवाथी

तेमना पापरूपी अंधकारसमूहनो नाश थयो. ते वखते ए मुनि भावना भाववा लाग्या के "हे आत्मा! जेवुं बीज वावीए तेवुंज फळ पामीए तेमां पौरलोकोनो काइ पण दोष नथी आ लोको तो मारा दुष्कर्मरूपी ग्रंथिने तोडवा माटे कठोर भाषणादिरूप क्षारवडे तेनी चिकित्सा करे छे, माटे तेओ तो मारा खरा मित्रो छे तेओ मने जे ताडन विगेरे करे छे, तेथी तो अग्निना योगथी सुवर्णनी जेम मारं मलिनपणुं दूर थाय छे वळी आ लोको तो मने दुर्गतिरूपी कारागृहमांथी खेंचीने पोतानेज तेमां नाखे छे, माटे तेवा परोपकारी उपर हुं शा माटे कोप करुं? वळी तेओ पोताना पुण्ये करीने मारा पाप धोइ नाखे छे, तेथी ते परम बांधवोने मारे दोष आपवो न जोइए वळी तेओए मने करेला वध बंधन विगेरे मने संसारथी मुक्त करावनार होवाथी हर्ष आपनारा छे मात्र ते कर्म तेओनेज अनंत संसारना हेतुभूत थवानां छे, तेथी मने दुःख थाय छे वळी आ पौरजनोए मारी तर्जना करी, पण मने मार्यो नहीं, कदाच मार्यो, पण मारुं जीवित नाश कर्युं नहीं कदाच ते पण नाश कर्युं, पण बांधवनी जेम तेओए मारा धर्मनो नाश कर्यो नथी उलटा तेओ तो मारा आत्मारूप घरमां पेठेला अने अनादि काळथी रहेला भावचोरोने काढवा माटे मने सहायभूत थया छे" इत्यादि शुभ ध्यानमां तत्पर थइने ते मुनिए क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थइ केवळज्ञानरूपी सूर्यनी कांतिथी आत्मानो प्रकाश कर्यो.

अहो लोकोत्तरः कोऽपि, तपःकुंभोद्भवः प्रभुः ।
नाविर्भवेत्पुनर्येन, शोषितः कर्मवारिधिः ॥ १ ॥

भावार्थ—"अहो! तपरूपी अगस्त्य ऋषि कोइ अलौकिकज छे के जेणे शोषण करेलो कर्मरूपी समुद्र फरीथी प्रगटज थतो नथी."

मृत्तिका यस्य तत्रैव, पततीत्यन्यथा न हि ।
येन यत्रार्जितं कर्म, स्थाने तत्रैव निष्ठितम् ॥२॥

भावार्थ—"माटी ज्यांनी त्यांज पडे छे ए उक्ति खोटी नथी, केमके जेणे ज्यां कर्म उपार्जन कर्युं ते कर्म त्यांज नाश पमाड्युं, अर्थात् ज्यां कर्म बांध्युं त्यां रहीनेज खपाव्युं"

केवली सुरगणेन निर्मिते, स्वर्णपंकजपदे स्थितश्च सः ॥
तत्तप:स्तुतिवचोमृते शुभे–र्भव्यजंतुमहीनसिंचयत् ॥३॥

भावार्थ–" देवगणोए रचेला सुवर्णकमळ उपर बेसी ते केवळीए ते तपनी स्तुतिना वचनरूपी शुभ अमृतरसे करीने भव्यप्राणीरूपी सारी पृथ्वीनुं सिंचन कर्युं "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ नवदशस्तंभस्य
पञ्चाशीत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २८५ ॥

॥ संपूर्णोऽयं स्तंभः ॥

ओगणीशमो स्तंभ संपूर्ण.

श्री उपदेश प्रासाद ग्रंथनो भाषांतर सहित

चतुर्थ विभाग संपूर्ण.

जाहेर खबर.

श्री उपदेश प्रासाद ग्रंथ भाषांतर.

१ विभाग १ लो—स्थम ४–व्याख्यन ६१ समकितना ६७ बोल सबधी कथाओ सहित आवृत्ति बीजी. १–८–०
२ विभाग २ जो—स्थम ५ थी ९–व्याख्यान ७४ श्रावकना पाच अणुव्रत ने त्रण गुणव्रतोनु स्वरुप. कथाओ युक्त २–०–०
३ विभाग ३ जो—स्थम १० थी १४–व्याख्यान ७५ चार शिक्षाव्रतोनु ने बीजी अनेक बाबतोनु स्वरुप कथाओ युक्त २–०–०
४ विभाग ४ थो–स्थम १५ थी १९–व्याख्यान ७५. जिनपूजादिक अनेक विषयोनुं ने भाते ज्ञानाचारादि आचारोनु स्वरुप कथाओ युक्त २–८–०
५ विभाग ५ मो—स्थंभ २० थी २४–व्याख्यान ६१.तपाचार–अष्टको ३२ उपर व्याख्यान ३८.भाते तपगच्छनी पट्टावली विगेरे अनेक कथाओ युक्त.२–८–०

पाचे भाग साथे खरीद करनारना रु. १०–०–० लेवामा आवशे.

श्री त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र भाषांतर

१ श्री ऋषभदेव तथा भरत चक्रवर्ती चरित्र. पर्व १ लु. तथा श्री अजितनाथजी तथा सगर चक्री चरित्र पर्व २ जु. ३–४–०
२ श्री संभवनाथजीथी श्री मुनिसुव्रत स्वामी सुधी १८ तीर्थकरोना, त्रीजाथी आठमा सुधी ६ चक्रवर्तीना तथा पहेलाथी सातमा सुधी सात सात वासुदेव–बळदेव तथा प्रतिवासुदेवना (कुल ५९) चरित्रो पर्व ३–४–५–६ ३–४–०
३ श्री नमिनाथजी (२१ मा)थी पार्श्वनाथजी सुधी ३ तीर्थकरोना, नवमाथी बारमा सुधी चार चक्रवर्तीना अने ८ मा अने ९ मा वासुदेव, बळदेव ने प्रतिवासुदेवना (कुल १३) चरित्रो पर्व ७ ८-९.रु ४ (पर्व ७ मु रु.१॥ पर्व ८-९ रु २॥)
४ श्री महावीर स्वामीनु चरित्र. पर्व १० मु. २–८–०

(बधा भाग साथे लेनारना रु. १२–०–० लेवामा आवशे.)

श्री उपदेश प्रासाद ग्रंथ मूळ– (भाग १–२ मळता नथी)

१ विभाग ३ जो—स्थम १३ थी १८ ३–०–०
२ विभाग ४ थो—स्थम १९ थी २४ ४–०–०